ध्यः

का

गके

विषय.	पृष्ठांक.

नवमः प्रबन्धः ।

:काल होने पर विश्वामित्रने
ाम लक्ष्मणको जगाना १९२
क्ष्मणको विश्वामित्रके साथ
में स्नान करना और काम
मुनिगणसहित [illegible]
.... ाक . १९४

शमः प्रबन्धः ।

काल होनेपर रघुनाथजीका
र सरयूका शब्द सुन वि-
त्रजीसे पूछना और विश्वा-
ने, सरयूका वर्णन करना १९९
त्रने ताडकाके वधके अर्थ
नाथजीकी प्रार्थना करना
रघुनाथजीने ताडकाका
न्त पूछना २००
ताडकाका वध करना
हुआ देवसमाजका
ा २१०
में ऋषिवृंदका आना
ात्रिमें उसी जगह वि-
करना २१२

कादशः प्रबन्धः ।

होने पर प्रसन्न हुए
मित्रजीने सब अस्त्र शस्त्र
ाथजी और लक्ष्मणको
.... २१३
भगवान् बामनजीका
तार होनेकी और बलिके
यज्ञमें जाकर तीन पैंड पृथ्वी
माँगनेकी कथा कहना २१८
विश्वामित्रजीने वामनजीके प्रभावसे
आश्रमकी पवित्रता कहना और
अपनी यज्ञरक्षाके लिये रघु-
नाथजीको सावधान करना २२१
यज्ञप्रारंभसे छठे दिन यज्ञ विध्वं-
सके अर्थ राक्षसोंका आना २२५
रघुनाथजीने मारीचको शरसे
समुद्र पार फेंकना और अन्य
राक्षसोंके साथ संग्राम होना २२६
रघुनाथजीने राक्षसोंका संहार करना
और प्रसन्न हुए देवताओंने पु-
ष्पोंकी वर्षाकर जय शब्द कर-
ना और अप्सराओंने नृत्य
करना २२९
मुनिवृन्दने रघुनाथजीकी स्तुति
करना २३२

द्वादशः प्रबन्धः ।

रघुनाथजीने तहां रात्रिको विश्राम
कर प्रातःकाल उठ मुनिसे
अन्य कार्य करनेको आज्ञा
मांगनी २३४
ऋषियोंकी सम्मति पाय विश्वा-
मित्रने रघुनाथजीको राजा जन-
कका धनुष यज्ञ दिखानेका
विचार करना २३६
मिथिलापुरीको जाते हुए रघुनाथ-
जीने सोनभद्रमें स्नान करना
और विश्वामित्रसे सोनभद्रका
माहात्म्य सुनना २३८

विषय. पृष्ठाक.

विश्वामित्रने रघुनाथजीके प्रति कौशिक वंश कहना २३९

त्रयोदशः प्रबन्धः ।

सोनभद्रके तट पर रात्रिको निवास करके प्रातःकाल राम लक्ष्मणको विश्वामित्रने उठाना २४६
फिर राम लक्ष्मणसहित विश्वामित्रका गंगाजी पर पहुँचना २४७
विश्वामित्र सहित रामलक्ष्मणको गंगाजीमें स्नान करना और गंगाजीकी कथा सुनना २४८
विश्वामित्रने [illegible]वंशकी कथा कहकर रघुनाथजीके प्रति भगीरथ जैसे गंगाजीको लाये वह कथा वर्णन करना २५९.

चतुर्दशः प्रबन्धः ।

नौका पर चढकर विश्वामित्र सहित राम लक्ष्मणका गं[illegible] [illegible] [illegible] विशालापुरीको देखकर तिसकी प्राचीन कथा विश्वामित्रसे सुनना २७७
विश्वामित्रने रघुनाथजीके प्रति समुद्रमथन कथाके कथनपूर्वक सूर्यवंशीय राजा विशालसे विशालापुरीका निर्माण कहना २७८
राम लक्ष्मण सहित विश्वामित्रजीका विशालापुरीमें जाना और तहां विशाल राजाने इन्होंका सत्कार करना २८५

विषय. पृष्ठाक.

पंचदशः प्रब[illegible] ।

राम लक्ष्मणका रूप देखकर विशाला पुरीके नर नारियोंका मोहित होना और अनेक प्रकारकी उपमाओंसे रूप वर्णन करना २८
राजा दशर[illegible] कुमार जानकर राजा विशालने राम लक्ष्मणका भूषण वसनोंसे सत्कार करना २
रात्रिको वहां निवास कर प्रातःक्रियासे निवृत्त होनेपर मुनिसहित राम लक्ष्मणने मिथिलापुरीको गमन करना २
दूरसे शोभा देखकर मिथिलापुरीकी प्रशंसा करना .... ,,
राम लक्ष्मणका सूने गौतम ऋषिके आश्रममें पहुँचना और विश्वामित्रसे अहल्याके शाप आदि कथाका श्रवण करना २९०
रघुनाथजीने अहल्याको शापसे छुडाना और अहल्याने भगवान्की स्तुति करना २९३
देवताओंने भगवान्की स्तुति करना और अप्सरा गंधर्वोंने नृत्य गान करना २९

षोडशः प्रबन्धः ।

रात्रिमें गौतम ऋषिके आश्रममें निवास करना और प्रातःकाल मिथिलापुरीको गमन करना २

विषय. पृष्ठांक.

उपवनसहित मिथिलापुरीशोभा वर्णन २९७
राम लक्ष्मणसहित विश्वामित्रका मिथिला पुरीमें पहुँचना और अगवानी आकर राजा जनकने सत्कार करना .... ,,
लक्ष्मणका रूप देख राजसमाजका लुभाना २९९
॥ जनकके अनुमानके अनुसार ही विश्वामित्रजीने राम लक्ष्मणको राजा दशरथके पुत्र बताना ३०२
राजा जनकके पुरोहित शतानंदने राम लक्ष्मण और जनकके प्रति विश्वामित्रजीके प्रभावकी पूर्व कथा वर्णन करना ३०५

सप्तदशः प्रबंधः ।

विश्वामित्रके प्रभावकी कथा सुन अतिप्रशंसा करके राजा जनकने प्रदक्षिणा की और आशीर्वाद ले अपने महलोंमें जानेकी आज्ञा लइ ३१७
मुनियोंके मुखसे जनकपुरीकी शोभा सुन देखनेको राम लक्ष्मणका चित्त लुभाना और गुरु विश्वामित्रकी आज्ञा ले पुरी दे .... ,,
अयोध्या
रके नर
और
रूप प्रभाव वर्णन कर सीताके योग्य वर रघुनाथजी ही विचारना ३२५
पुरीकी शोभा देखकर राम लक्ष्मण विश्वामित्रके पास आना और आज्ञा पाय संध्या वंदन आदि कर्म करना ३७४
विश्वामित्रने रामलक्ष्मणके प्रति निमि राजाकी कथा कहना और राम लक्ष्मणजीने विश्वामित्रके चरण चाप आज्ञासे शयन करना ३ ७८

अष्टादशः प्रबन्धः । ॥

प्रातःकाल होनेपर विश्वामित्रकी पूजाके लिये रामलक्ष्मणने पुष्पवाटिकासे पुष्प लाना ३३३
जनकपुष्पवाटिका वर्णन ३३६
पुष्पवाटिकामें गौरीपूजनके अर्थ जानकीजीका आना और रघुनाथजीका दर्शन कर मन मोहित होना ३४१
पुष्प लेकर राम लक्ष्मणका विश्वामित्रके पास आना और पूजन भोजन करके विश्वामित्रने स्वयंवरप्रसंगसे शंभुधनुषकी कथा कहना ३६८
जानकीजीने गौरीका पूजन करना और करकमल जोडकर स्तुति करना ३७१

विषय. पृष्ठांक.

न्न हुई गौरीसे जानकीजीको वांछित वर लब्ध होना और प्रसन्न होकर महलोंको जाना ३७२

कोनविंशतितमः प्रबन्धः।

तःकाल उठ विश्वामित्रकी आज्ञासे वस्त्र आभूषण आदि धारण कर सीता स्वयंवर देखनेको राम लक्ष्मणका तैयार होना ३७४

यंवर देखनेको अपनी पुरीमें डौंडी पिटवाय राजा जनकने विश्वामित्रसहित राम लक्ष्मण और संपूर्ण राजाओंको बुलाना ३७६

प्रथम विश्वामित्रने स्वयंवर देखनेको जाना और राजा जनकने अति सत्कार करना ३८०

राजा जनकके पुत्र लक्ष्मीनिधिके बुलानेसे राम लक्ष्मणका स्वयंवरमें आना और राजा जनकने विश्वामित्रके प्रति शंभुधनुषकी कथा कहना ३८१

ऊंचे मंचपर मुनिमंडलीमें विराजमान राम लक्ष्मणकी शोभा निरखि नर नारियोंका प्रसन्न होना और अनेक प्रकारसे वर्णन करना ३८५

धनुषस्थानमें राजा जनकके संग [illegible] लक्ष्म [illegible] ऋषि विश्वा-

विषय. पृष्ठांक.

मित्रका जाना और धनुषको प्रणाम करना ३९३

सीताश्रृंगारवर्णनं ३९८

धनुषपूजन करनेको सखीसमाजसहित सीताजीका धनुष भवनमें आना और रघुनाथजीका दर्शन होना ३

मिथिलापुरीके नर नारियोंने सीताजीका रघुनाथजी वर होनेकी अभिलाषा होना और ईश्वरसे प्रार्थना करना ४

राजा जनककी प्रतिज्ञा सुन धनुष तोडनेको सब राजाओंने उद्योग करना ४०३

धनुष नहीं उठनेसे संपूर्ण राजाओंका निरादर होना और जनकके अति संताप होना ४०७

राजा जनकमे सब राजाओंको धिक्कार देने पर लक्ष्मणके अति क्रोध उठना और वीरताके वचन कहना ४०९

रणवाससहित राजा जनककी धनुष तोडनेकी अभिलाषा जान और गुरु विश्वामित्रकी आज्ञा पाय प्रणाम कर रघुनाथजीने.. धनुषके पास गमन करना [illegible] में ऋषिके [illegible] में
स्वभाव ध [illegible] वास करना और प्रातःकाल
नाथजी [illegible] मिथिलापुरीको गमन करना
धनुष

विषय. पृष्ठांक.

शब्द होना और जनक आदि नर नारियोंके अति हर्ष होना तथा राजाओंका मानभंग होना ४२१

देवताओंने नगारे बजाय पुष्पोंकी वर्षा करना और रामचन्द्रजीकी स्तुति करना ४२४

सुंदर शृङ्गार कर जयमाल ले सखियोंसहित सीताजीका आना और सब राजाओंके देखते रघुनाथजीको पहिराना. ४२७

रघुनाथजीके कंठमें फूलमालको देख मूर्ख राजाओंने नहीं सहना और युद्धके लिये उद्योग करना ४३२

आकाशवाणी सुनकर सब राजाओंको भय होना और अपने २ नगरोंको जाना ४३४

जयमाल पहिराय सीताजीका राजभवनमें जाना और राम लक्ष्मणका विश्वामित्रजीके पास आना ४३५

विश्वामित्रकी संमति लेकर राजा जनकने रामचन्द्रजीके विवाहके लिये मनोरथ करना.... ४३६

विंशतितमः प्रबन्धः।

विश्वकर्माको बुलाकर राजा जनकने विवाहके लिये मंडप आदि रचना कराना ४३८

विवाहपत्र देकर राजा जनकने दूत अयोध्याको भेजना ४४२

विषय. पृष्ठांक.

जनकपुर जानेको राजा दशरथने वसिष्ठजीकी आज्ञासे बरात सजाना ४५७

अयोध्यासे बरातका चलना और राजादशरथकी आज्ञासे प्रथम डेरा सरयूके तीरपर करना. ४६९

दूसरा डेरा गंडकी तीरपर कर रघुनाथजीके दर्शनोंकी अभिलाषावाली बरातका शीघ्र गमन होना ४७४

मिथिलापुरीके दो योजन रहनेसे बरातने कमला नदीके तटपर डेरा करना ४७८

द्वितीयाके चंद्रकी तुल्य बनाई हुई बरातका जनकपुरके समीप पहुँचना और पेशवाईमें सेना लेकर आये हुए राजा जनकका राजा दशरथसे मिलाप होना ४८३

पुरकी शोभा देखती हुई बरातका स्वर्गतुल्य जनवासेमें पहुंचना और विमान चढे देवताओंने पुष्पोंकी वर्षा करना ४८७

राम लक्ष्मणसहित विश्वामित्रका बरातमें आना और इनके दर्शनोंसे बरातियोंके अवर्णनीय सुख होनां ४९२

विश्वामित्रने राम लक्ष्मणके हाथ पकड राजा दशरथको सौंपना

विषय. पृष्ठांक.

और दई वस्तु लेनी नहीं ऐसे कहकर राजा दशरथका नटना ४९६

एक सखाने कहा कि, रामको किस लिये विवाहते हो ये तो चाहे जहा पत्थरसे नारी प्रगट करसकतेहैं ऐसा सखाओंका रघुनाथजीके संग हास विलास होना ४९८

विवाहके लिये श्रेष्ठ लग्न विचारना और दोनों तरफ अति आनंदसे तैयारी करना ५०२

राजा दशरथने राजा जनककी प्रार्थनासे राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न इन चारों पुत्रोंके विवाहकी तैयारी करना और नांदी मुख श्राद्ध करना ५२०

विवाह उत्सव वर्णन ५२९

प्रथम रघुनाथजीका विवाह सीताजीके साथ होतेही अति आनंदसे देवताओंने पुष्पोंकी वर्षा करना और नगारा बजाना ५५९

पश्चात् अति हर्षसे लक्ष्मणजीका विवाह उर्मिलाके साथ होना ५६१

भरतजीके साथ मांडवीका विवाह होना और शत्रुघ्नके साथ श्रुतकीर्तिका विवाह होना ५६२

कनकथालमें चारों भ्राताओंको जुवा खेलना और हास विलास करना ५७४

विषय. पृष्ठांक.

मिथिलापुरकी अबलाओंके संग राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नका हास विलास होना ५७५

राजा दशरथका महलोंमें भोजनके लिये जाना ... ५९६

जैंनारक पदार्थोंका वर्णन ... ५९९

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न इनका अपनी २ वधू और सखियोंके संग होरी खेलना ६०६

बहुत दिन ऐसे हास विलासोंसे मिथिलापुरीमें निवास कर विश्वामित्रकी आज्ञासे राजा दशरथका अयोध्या जानेको मनोरथ होना ६१२

राजा दशरथ और राजा जनकसे बिदा होकर विश्वामित्रका हिमगिरिको जाना ६१३

एकविंशतितमः प्रबन्धः।

बरात बिदा होनेकी बतकही.... ६१४

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चारों भ्राताओंने बिदा मांगनेको जनकसभामें जाना ६२२

राजा जनकने असंख्य द्रव्य देकर राजा दशरथ और बरातको बिदा करना और पुत्रवधुओं सहित राजा दशरथने अयोध्याको गमन करना ६३४

द्वाविंशतितमः प्रबन्धः।

मिथिलापुरीसे एक योजन चलने

विषय. पृष्ठांक.

पर परशुरामजीके आनेसे भयंकर उत्पात होना ६४३

बरातके नजदीक ही सब बरातको परशुरामजीका दर्शन होना. ६४७

परशुरामजीका स्वरूप वर्णन. ६४८

रथसे शीघ्र उतरकर राजा दशरथका परशुरामजीके चरणोंमें गिरना और धनुष भंग होनेके कारण अतिक्रोधसे राजा दशरथके प्रति परशुरामजीका कठोर वचन कहना ६५०

फिर रघुनाथजीने भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न सहित आकर परशुरामजीके चरणोंमें प्रणाम करना और अपराध क्षमा कराना. ६५२

रघुनाथजीके सौंदर्यको देख परशुरामजीका क्रोध रघुनाथजीसे हट वसिष्ठजी पर होना ६५३

परशुरामजीका अपना पराक्रम वर्णन करना ६५४

राजा दशरथने अतिनम्र वचनोंसे अपराध क्षमा कराने पर क्रोध शांत नहीं होनेके कारण लक्ष्मणजीके क्रोध उत्पन्न होना और रघुनाथजीका लक्ष्मणजीको समझाना ६५५

विषय. पृष्ठांक.

लक्ष्मणजीके प्रति परशुरामजीके सरोष वचन ६५६

लक्ष्मणजी और परशुरामजीका परस्पर सरोष कठोर वचन कहना ६५७

वसिष्ठजीके अपराध क्षमा कराने पर परशुरामजीका शांत होना और लक्ष्मणके हँसनेसे फिर कुपित होना ६६०

राजा दशरथने फिर नम्रताके वचन कहनेसे रघुनाथजीको परशुरामजीने धनुषकथा सुनाना ६६२

सबहीके क्षमा करानेपर भी जब परशुरामजीने क्षमा नहीं की तब रघुनाथजीने धनुष बाण धारण करके परशुरामजीको कालरूप दिखाना ६६७

रघुनाथजीका कालरूप देखकर परशुरामजीका भयभीत होना और हतश्री होकर कुठारका परित्याग करना ६६९

परशुरामजीने रघुनाथजीके शरीरमें विराटरूप देखना और परशुरामजीके शरीरसे वैष्णव तेज निकलकर रघुनाथजीमें समाना ६७०

परशुरामजीने रघुनाथजीकी स्तुति करना और अपराध क्षमा कराना ६७२

धनुर्बाण धारण किये रघुनाथजीने परशुरामजीको अभय करना

विषय. पृष्ठांक.

और अपना अमोघ बाण छोडनेकी जगह पूछना ६७३

ऐसे स्तुति कर प्रसन्न हुए परशुरामजीने रघुनाथजीका स्मरण करके महेन्द्राचलको जाना ... ६७४

त्रयोविंशतितमः प्रबन्धः।

ऐसा वृत्तांत देख गद्गद वाणी राजा दशरथसे अतिहर्ष मानना और रघुनाथजीको गोदमें बैठाय पीठ पर हाथ फेरना और बरातका चलना ६७६

कलश आदि लेकर मंगल गान करती हुई स्त्रियोंका बरातके अगवानी आना ६८०

रघुनाथजी सीताजी आदि दूलह दुलहिनोंका आरती आदि मंगलाचार करना ६८४

राजा दशरथने कौसल्या आदि रानियोंके प्रति अहल्या उद्धार आदि रघुनाथजीका चरित्र कहना और राणियोंने अति आश्चर्य मानना ६८९

राजा दशरथ और कौसल्या आदि राणियोंने पुत्र और पुत्रवधुओंका सुख अनुभव कर अपार प्रमोद मानना ६९१

प्रभात वर्णन ६९४

मृगया वर्णन ६९६

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न आदिकोंका मृगयाक्रीडासे निवृत्त होकर अयोध्यामें आना. और माताओंके प्रति मृगयाविहार वर्णन करना ७१९

भरत शत्रुघ्नका मातुलके संग मातामहके भवन जाना ७२४

रघुनाथजीका सौम्य स्वभाववर्णन ७२६

राजा दशरथने रामचंद्रजीका अभिषेकका मनोरथ करना और अभिषेकमें विघ्नके लिये देवताओंने शारदाका अयोध्यामें भेजना ७३४

रघुनाथजीके अभिषेकार्थ संपूर्ण सामग्री तैयार करना ... ७४१

रघुनाथजीके अभिषेकार्थे समय पुरी उत्साह वर्णन ... ७५४

देवताओंसे प्रेरितहुई शारदाने अभिषेकमें विघ्न करनेके कारण कैकेयीकी मंथरा दासीके द्वारा कैकेयीकी बुद्धि फेरना ७५७

शोकभवनमें जाकर कैकेयीने रामचंद्रजीको चौदह वर्षका वनवास और भरतको राजगद्दी ऐसे दो वर मांगना .... ,,

राम लक्ष्मण और जानकीका वनमें जाना और ऋषियोंको आनंद देना .... ,,

रघुनाथजीके वियोगमें राजा दशरथका स्वर्गवास होना

विषय. पृष्ठांक.

और भरतजीने रघुनाथजीकी खडाऊं लाकर नंदिग्राममें मुनिवेष धारण कर वसना ७५८

राम लक्ष्मण सीताजीका चित्रकूटसे चल पंचवटीमें निवास करना ७५९

मायामृग होकर मारीचका आना और रावणने जानकीजीका हरना ७६१

सीताजीको खोजते समय रघुनाथजीने सुग्रीवके साथ मैत्री करना और वालिका वध करना ७६२

सीताजीकी सुधके लिये मुद्रिका लेकर हनूमान्जीका लंकामें जाना ७६३

हनूमान्जीका जानकीजीसे मिलना और रघुनाथजीके संदेशोंसे आश्वासन कराना ७६८

हनूमान्जीने लंकाको फूंकना और रघुनाथजीके पास आकर संपूर्ण वृत्तांत कहना.... .... ७७४

ऋक्ष वानरोंकी सेना लेकर रघुनाथजीका लंकाको चलना और सिंधुतटपर डेरा करना ७७५

रावणसे तिरस्कृत बिभीषणका रघुनाथजीकी शरण आना ७७६

विषय. पृष्ठांक.

तीन दिन प्रार्थना करनेसे भी जब समुद्रने रघुनाथजीको मार्ग नहीं दिया तब क्रोधयुक्त होकर रघुनाथजीने अग्निबाणको छोडना और मणियोंकी भेट कर समुद्रका शरणागत होना.... ....७७७

नल नील आदिकोंका समुद्रपर सेतु बांधना ७७८

सेनासहित रघुनाथजीका समुद्र उतरना .... ”

रावणके भेजे हुए शुक और सारन मंत्रियोंका कपिरूप धारण करके रघुनाथजीकी सेना देखनेको आना और बिभीषणकी प्रेरणासे इनको पकडकर सेना दिखाना .... ”

भयभीत शुक मंत्रीने रावणके प्रति अगाध समुद्रके तुल्य सेनाका वर्णन करना और कुपित हुए रावणने डरपोक कहकर झडकना ७८०

रावणके मातामह माल्यवान्ने रावणको समझाना और सीताजी सौंपनेको कहना ७८३

लंकापुरीके चार दरवाजे होनेके कारण यहां रघुनाथजीकी सेनामें बिभीषणके कहनेसे

विषय.	पृष्ठांक.
सेनाके चार विभाग कर चार सेनापति करना	७८४
नृत्य देखते हुए रावणके सुग्रीवने मुकुट उतारने और पृथ्वीपर पटककर निंदित वचन कहने	७८५
सुग्रीव और रावणका बाहुयुद्ध वर्णन	७८६
रघुनाथजीके समीप जाकर सुग्रीवने अपने द्वंद्वयुद्धका वृत्तांत कहना	७८८
रघुनाथजीने अपना सेनासे लंकाके चारों दरवाजोंको रोकना और साम उपायके लिये अंगदको रावणके पास भेजना	७८९
रावण और अंगदकी परस्परमें वक्रोक्ति होनी	”
रावणका मान मथकर अंगदका रघुनाथजीके पास जाना और प्रातःकाल होनेपर हल्ला देकर वनस्पतिको टीडीकी तरह लंकाको वानरोंने आच्छादित करना	७९४
राक्षस और वानरोंका घोर युद्ध होना ओर रुधिरकी नदियोंका बहना	७९५
मेघनादके युद्धमें रामलक्ष्मणजीका नागपाशमें बंधनेसे त्रास होना फिर शीघ्र ही गरुडके छुडानेसे आनंद होना ...	८००
प्रहस्त मंत्रीने रावणको जानकीजी सौंपनेके लिये समझाना और गर्वित हुए रावणने प्रहस्तको झडकना	८०२
प्रहस्तका वध होनेके पश्चात् कुपित होकर रावणका युद्धके लिये आना	८०४
रावणका लक्ष्मणजीके संग घोर युद्ध होना	८०७
लक्ष्मणजीके विकल होनेपर हनूमान्जीने रावणके संग घोर युद्ध करना	८०८
रावणका रघुनाथजीके संग युद्ध होना और रघुनाथजीका शर लगनेसे रावणका विह्वल होना	८१०
हार मानकर रावणका लंकामें जाना और युद्धार्थ कुंभकर्णके जगानेके लिये राक्षसोंको आज्ञा देना	८१२
बहुत बाजे बजाने आदि उद्योगोंसे कुंभकर्णका जगाना और कुंभकर्णने मदिरा मांस भक्षण करना	”
कुंभकर्णका रावणके दरबारमें जाना और कुशल पूछनेके पश्चात् रावणका कहा हुआ युद्धका सब वृत्तांत जानना	८१३
कुंभकर्णका संग्रामभूमिमें जाना और इसको देखकर ऋक्ष वानरोंका भागना ...	८१४

विषय. पृष्ठांक.

फिर अंगद हनूमान्के वाक्योंसे कुंभकर्णके सन्मुख आकर ऋक्ष वानरोंने युद्ध करना ८१५
कुंभकर्णका घोर युद्ध वर्णन .... ”
कांखमें सुग्रीवको दबाकर कुंभकर्णका लंकामें आना और लंकावासियोंको आनंद होना ८१६
कुंभकर्णके सुग्रीवने नाक कान काटनेस लज्जित होकर कुंभकर्णने फिर महाघोर युद्ध करना ८१७
कुंभकर्णका रघुनाथजीके साथ घोर युद्ध होनेपर रघुनाथजीने इन्द्रास्त्रसे कुंभकर्णका शिर काटकर लंकामें गिराना ८२०
महोदर, महापार्श्व, त्रिशिरा, अतिकाय, नारांतक, देवांतक इन छः योद्धाओंका युद्धभूमिमें युद्धके लिये जाना और घोर युद्ध करना ८२२
रावणके कहनेसे मेघनादका युद्धके लिये आना और अदृश्य हो युद्ध करना ८२७
कुंभ निकुंभ आदिकोंका रघुनाथजीकी सेनाके सग घोर युद्ध करना ८३३
लक्ष्मण ओर इंद्रजितका घोर युद्ध वर्णन ८३९
लक्ष्मणजीने इंद्रजित्का शिरश्छेदन करना और देवताओंने नगारे बजाय पुष्पोंकी वर्षा करना....८४९
इंद्रजित् मरनेके पश्चात् कुपित होकर रावणका आना और घोर युद्ध करना ८५२
रावणकी छोडी हुई शक्तिसे लक्ष्मणजीका मूर्च्छित होना और रघुनाथजीसहित सेनाको अति क्लेश होना और विलाप करना८६०
सुषेण वैद्यके कहनेसे संजीवनी औषध लेनेको हनूमान्का जाना और औषधिका निश्चय नहीं होनेके कारण पर्वत उखाडकर लाना ८६३
सुषेणने लक्ष्मणको औषधि सुंघानेसे लक्ष्मणकी मूर्च्छा हटना और रघुनाथजी आदि संपूर्णोंके अति हर्ष होना ८६४
अपने २ रथोंमें सवार होकर रघुनाथजी और रावणका युद्धभूमि में आना और संग्राम होना८६५
रावणसे युद्ध होनेके समय जयके अर्थ रघुनाथजीको अगस्त्य मुनिने आदित्यहृदय देना ८६९
रावण रामचन्द्रजीका घोर युद्ध देखनेको विमानोंमें बैठे देवताओंका आना और रावणवधके लिये अनेक उत्पात होने....८७२
घोर संग्राम होते समय रघुनाथजीने रावणको जिस जिस शिरको

विषय पृष्ठांक.

छेदन करना वह २ शिर फिर उत्पन्न होना ८७४
फिर रघुनाथजीने हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु आदिकोंका वध करनेवाला अपना अमोघ शर धनुषपर चढाकर छोडना और उसी शरसे रावणका वध करना ८७५
देवताओंने रावणका वध देख आकाशमें नगारे बजाना और जय जय शब्द कर पुष्पोंकी वर्षा करना ८७६
रावण आदिकोंकी स्त्रियोंने समरभूमिमें आकर अतिविलाप करना ८७९
बिभीषणका अभिषेक कर राज्यतिलक करना और सब निशाचरोंने भेंट करना ८८१
हनूमान्‌का सीताजीके पास जाना और सकल कुशल सुनाना. ८८२
सीताजीने हनुमान्‌को कुशल खबर देनेके कारण बहुत धन्यवाद देना और त्रैलोक्यमें अदेय देखनेके कारण अपनेको ऋणी कहना ८८४
हनुमान्‌जीका रघुनाथजीके समीप आना और सीताजीका सब वृत्तांत कहना ८८८
रघुनाथजीसे जानकीजीके शृङ्गारकी और लानेकी आज्ञा देना.... ”
सीताजीने आकर रघुनाथजीके चरणोंमें प्रणाम करना और संपूर्ण सेनाने जानकीजीको प्रणाम करना ८९१
रघुनाथजीका सीताजीकी परीक्षार्थ दुर्वाद कहना ८९२
पातिव्रत्यकी परीक्षाके मिषसे छाया सीताका अग्निमें प्रविष्ट होना और शुद्ध स्वरूप प्रगट होना ८९३
ब्रह्माने नारायण रूपसे रघुनाथजीकी स्तुति करना ८९४
अयोध्याको चलते समय रघुनाथजी सहित संपूर्ण सेनाका वस्त्र आभूषणोंसे सत्कार करना और बिभीषण रघुनाथजीका परस्परमें संवाद होना ९०३
विमानमें बैठकर रघुनाथजी आदिकोंका अयोध्याको चलना और समरभूमि आदि सीताजीको दिखाना ९०९
भरतजीके पास रघुनाथजीने हनूमान्‌जीको आगमन खबर देनेके लिये भेजना और हनूमान्‌जीको सब वृन्तान्त कहना ९१७
शत्रुघ्नजीसे खबर पानेके पश्चात् रघुनाथजीके अगवानी चलनेके लिये अयोध्यावासियोंने सवारी सजाना और रघुनाथजीका भरतसे मिलाप होना ९२२
भरतजी समेत रघुनाथजीका अयो-

विषय. पृष्ठांक.

ध्यामें आना और अतिशय उत्सव होना ९३२

अयोध्यामें सुग्रीव विभीषण आदिकोंका सत्कार करना ९३३

रघुनाथजीके अभिषेककी तैयारी करना ९४२

अभिषेकके समय ऋषियोंका आना और वेदध्वनि करना ९५६

रघुनाथजीके राज्यतिलक होना और अयोध्यावासियोंके अतिहर्ष होना .... ,,

अपने २ लोकोंसे आकर लोकपालोंने रघुनाथजीकी स्तुति करना ९५७

सुग्रीव अंगद और विभीषण इन तीनोंका अनेक प्रकारके वस्त्र आभूषणों से सत्कार करना ९६१

पवनदत्त हारकी मणि हनुमान्का तोरना और बिभीषणका तर्क करना ९६२

रघुनाथजीका धर्मयुक्त राज्य वर्णन ९६३

सुग्रीव और बिभीषणने लंकासे गमन करना और विभीषणने रंगनाथ भगवान्की याचना करना ९६४

ऐसे राज्याभिषेक होनेके बाद रघुनाथजीने धर्मयुक्त राज्य करना और अश्वमेध यज्ञोंसे पृथ्वी पर धर्म स्थापन करना ९६५

ग्रंथकर्ताने क्षमा करानी और अपने सहायकोंका वर्णन ९६८

ग्रंथकर्ताका स्वरचित्त ग्रंथोंकी गणना करना ९७१

ग्रंथ समाप्तिः ९७२

इति रामस्वयंवरविषयानुक्रमणिका समाप्ता।

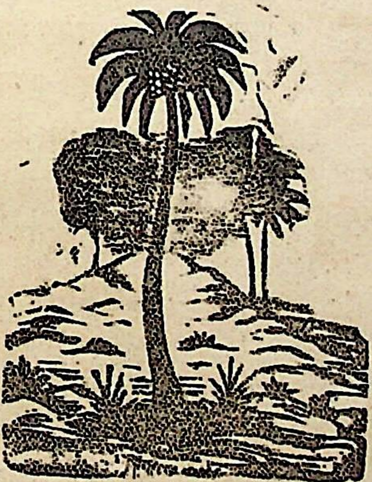

इति
रामस्वयंवरविषयानुक्रमणिका
समाप्ता ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

अथ रामस्वयंवर ।

श्रीमन्महाराजरघुराजसिंहजूदेव-प्रणीत ।

श्रीगणेशाय नमः ।

दोहा--परते पर कारणहु कर, कारण पुरुष प्रधान ।
परविभूति परविभव प्रभु, जय यदुपति भगवान ॥
जग सिरजत पालत हरत, जाकी भ्रुकुटि विलास ।
वसत अचंचल जेहि रमा, जय जय रमानिवास ॥
सुरगण नरगण मुनिनगण, हरत विघनगण जोय ।
एकरदन शुभसदन जय, मदनकदनसुत सोय ॥

कवित्त ।

तेरई भरोस भरो भवमें न भीति भाऊं, भाषि भाषि भूरिभाव रसना
न हारती॥ भेद त्यों अभेद हावभावहू कुभावकेते, भावक सुबुद्धि
यथामति निरधारती ॥ तेरिये भलाईते भलाई कविताई भाई,
माई मति पाई कौन जापै ना निहारती ॥ हारती न हिम्मति
पसारती सुकिम्मति सँभारती सुसंमति जे वंदैं ताहिं भारती ।

सोरठा--इष्टदेव कदवेशु, व्याससुवन वैराग्यवपु ॥
जे जन कृत तुव सेव, तिनहिं पराभव भव न भव ।
प्राचेतस वाल्मीकि, जगत सुकवि रवि आदि कवि ॥
जयति काव्य जेहिलीक, चतुरानन ते आजुलों ।
जय जय तुलसीदास, रामायण जिन निर्मयो ॥
जासुप्रभाव प्रकाश, रसिक होत बाँचत जडउ ।
कृष्णचरित रसपूर, नमोसूर कलिसूर कवि ॥
जासु भनित रसमूर, होत दूर सुनि क्रूरता ।
व्यासदेव पदकंज, बार बार वन्दन करौं ॥

जो सुमिरत मनरंज, मेंटि मनोरंजन करत ॥
जासु मुक्तिप्रद नाम, हरि गुरुपद वन्दन करौं ।
तासु कृपा मम काम, सिद्ध सकल अनयासहीं ॥
रघुपति भक्तप्रधान, काशीपति पितु नामपद ।
धरि शिर करहुं बखान, 'रामस्वयंवर' ग्रंथवर ॥
दोहा--गान करतमहँ अतिसुलभ, ताते गानहिं छन्द ॥
औरौ छन्द अनेक किय, जहँ तहँ मंजु अमन्द ॥
चौबोलाको छन्द रिजु, गान करत सुख होइ ।
गायक जन कहँ प्रीतिप्रद, सब गावत मुदमोइ ॥
दोहा और घनाक्षरी, तथा सोरठा आदि ।
चौबोला विच विच लसत, औरहु छन्द स्रजादि ॥

छंद चौबोला ।

नारायणको रूप नाम अरु लीलाधाम सुहावन ।
तिनको गाइ ध्याइ जगके जन लहत परमपद पावन ॥
जाकी रुचि जेहि रूप नाममें, सो जन तासु उपासी ।
सो तौने रस रसिक रँग्यो रँग विरले सब रस रासी ॥
सज्जन सुमति सुशील साधुवर संसृत विमुख विज्ञानी ।
नाम धाम लीला वपु हरिके कबहुँ भेद नहिं जानी ॥
सहित भेद अथवा अभेद करि कौनहु विधि हरिदासा ।
होतहि हरत भूरि भवकी भय, रहति न पुनि यमत्रासा ॥
पै तिन महँ जे रसिक उपासक, अतिशयमृदुल स्वभाऊ ।
करहिं भावना विविध भाँतिकी, राखि भेद नहिं काऊ॥
जो जेहि देव उपासक साँचो, सो अपने प्रभुकाहीं ।
परहुते पर जानत रति ठानत, तेहि पर दूसर नाहीं ॥
राम उपासक कृष्ण उपासक इनहुनमहँ बहु भेदा ।

मत अनुसार करत प्रतिपादन यद्यपि अनुसर वेदा ॥
शैव शाक्त अरु गाणपत्य बहु सौर वैष्णवहु आदी।
वेद पुराण प्रमाण पृथुलपथ निजनिज मत मरयादी ॥
यह झगरो बगरो जगरोधत हरिपद अति अनुरागा।
ताते सज्जनरसिक शिरोमणि यह झवारि सब त्यागा ॥
ज्ञान विज्ञान विराग भक्ति करि ह्वै अनन्य हरिदासा।
लीला कथा निमग्नचित्त करि नित्यहि लहत हुलासा ॥
दोहा—हरिलीला साधन विमल, लखि उपजत अनुराग।
यह साधन सब भांतिते, लखत सुमति बड भाग ॥

छंद चौबोला।

शांत सख्य शृङ्गार सुवत्सल अरु प्रधान रसदासा।
करिकै विमल भावना पांचौ छोडत जगकी त्रासा ॥
यद्यपि हरिके रूप अनेकन होत अनेक उपासी।
तद्यपि पंच भावना पूरण राम कृष्णमहँ खासी ॥
मुक्ति मिलत हरि रूप ध्याय सब यामे नहिं संदेहू।
पै सुख राम कृष्ण ध्याये जस तस नहिं और सनेहू ॥
ताहू पर जे भावक पूरे ते दुख सुख सुनि गाथा।
दुखी सुखी अति होत भाव उर करि उदोत सत साथा ॥
ते समर्थ सबभांति सुसज्जन पूर परेसहि प्यारे।
हरिलीला महँ लगी सुरति नित तनुकी सुरति बिसारे ॥
पै जे अधम मंदमति पामर मोसम विषय विलासी।
तेऊ चहत कृष्णपद भजिबो मलक गरुडपद आसी ॥
भाग्य विवश सज्जन पद रजधरि कोटि जन्ममहँ कबहूँ।
जो किय हरि महँ नेह छेह बिन देह गेह तजि तबहूँ ॥
सो प्रयात हरिधाम आम अति नाम प्रतापहिं धारी।
एक बार मैं हौं तिहरो सुनि अपनावत गिरिधारी ॥

वेद उचारे साधु पुकारे हरिको दीन पियारे ।
को दयालु देवकीलालसों तीनिहुँ काल विचारे ॥
सन्तकृपा अपने पर जानो पूर्वपुण्य कछु होई ।
रामकृष्णके चरित नीक मोहिं लगत न बर्जत कोई ॥

दोहा--ताते भाषा “भागवत” रच्यो स्वमति अनुसार ।
बहुरि “रामरसिकावली” सन्तचरित विस्तारं ॥
“रुक्मिणिपरिणय”ग्रंथ इक“रघुपतिशतक”सिकार।
“गंगशतक” “सुन्दरशतक” नेसुक कियो उचार ॥
और “ शतकजगदीश”को, ग्रन्थ सु“भक्तिविलास” ।
“विनयमाल” सु “पदावली,”त्यों“रघुराजविलास” ॥
रच्यो संस्कृत ग्रन्थ कछु, शतक एक जगदीश ।
सभा सु “धर्मविलास” इक,“ शंभुशतक” नातिईश ॥
रच्यो “राज रंजन” बहुरि, सब रस मतन प्रकाश ।
कथा रुचिर रामायणी, नहिं कछु कियो विकाश ॥

छन्द चौबोला ।

राम कृष्णके चरित मनोहर पतितन पावनकारी ।
सुखद मनोरंजन भवभंजन दुखगंजन मनहारी ॥
आदि अन्तमें कृष्णचरित सब आनँद अमित उदोतू ।
वृन्दावन रसरास विलास विकास हास नहिं होतू ॥
राजमाधुरी रूपमाधुरी चरित माधुरी सांची ।
तुलसीवन मधुपुरी द्वारका सन्तन मन रति राँची ॥
अति लीला लावण्य देवकीलालन की अघहारी ।
कतहुँ न असवियोग दुख वरणित जेहि सुनि संत दुखारी ॥
लीला पुरुषोत्तम यदुनायक द्वारावती विलासी ।
मरयादा पुरुषोत्तम श्रीरघुनायक अवध निवासी ॥
प्राणहुंते प्रिय सब देहिनके विनाकारण करुणइ ।

विना हेतुके हितू हेरि हरि हुलसावत हित दाई ॥
जो लीलामें लखि ईश्वरता व्यापक विभुहि विचारो ।
रसाभास अनयास होत हठि नहिं विशेष सुखसारो ॥
जो माधुर्य्य भाव तहँ राखहु तौ दुख चरित न गावो ।
ऐश्वर्य्यहि माधुर्य्य भेद यह दोउ यक संग न भावो ॥
मैं असमर्थ नाथ दुखगाथा गावनमें सब भाँती ।
विरह विपत्ति व्यथा वर्णत में रसना रहि रहि जाती ।
यद्यपि सेतुबन्ध लङ्कापति विजय विदित तिहुँलोका ॥
विपिन गमन दशरथकुमारको उपजावत अति शोका ॥

दोहा--अवनि उतारन भारको, हरि लीन्ह्यों अवतार ।
पै न बनत वर्णत विपिन, पद गमनत सुकुमार ॥

छन्द चौबोला ।

बहुरि स्वामिनी हरण महादुख वरणि जाइ कहु कैसे ।
पुनि वियोग जग जननिनाथको लागत कथन अनैसे ॥
ताते मम हरि गुरुनिदेश दिय बालकाण्ड भरि पाठा ।
करहु तजहु दुख कथा यथा लै घृत बुध त्यागत माठा ।
ताते केवल बालकांडको पाठ नेम मम हेरो ॥
श्रीभागवत और रामायण इष्टदेव है मेरो ।
आचारज रामानुज आदिक दक्षिणके आचारी ॥
संध्या जप तप व्रतहु नियम यम रामायण लिय धारी ।
अश्लोकहु अश्लोकारध नहिं जबलौं पाठ कराहीं ॥
तबलौं अम्बु पानहूं त्यागत का पुनि भोजन काहीं ।
ताते रामस्वयंबर गाथा रचन आश उर आई ॥
रघुपति बालचरित्र विवाह उछाह देहुँ मैं गाई ।
बालकांडको विशद चरित संक्षेप कथा षट कांडा ॥
वरणहुँ रीति वालमीकी जेहि सुनि पुनीत ब्रह्मांडा ।

उक्ति युक्ति तुलसीकृत केरी और कहां मैं पाऊँ ।
वाल्मीकि अरु व्यास गोसाईं सूरहिको शिरनाऊँ ॥
युगल आदि कवि युगकालि कविरवि इष्टदेव मम चारी ।
उपजे अधम उधारण कारण सकल विश्व उपकारी ॥
काव्य प्रबंध छंद बन्धनको मैं कछु जानहु नाहीं ।
रचहुँ यथामति रामकथाको भजन मानि मन माहीं ॥
सोरठा--जय जय दशरथलाल, अवधपाल कलिकालहर ।
अनुपम दीनदयाल, दै माति करहु निहाल मोहिं ॥

घनाक्षरी ।

पालत प्रजासमाज करत सधर्म राज, जाको दण्ड परम प्रचंड यमराजसो । लाजको जहाज करै शत्रुन पराजै पर, हित सब काज शील जाको द्विजराजसो ॥ भनै रघुराज भयो भूमिमें दराज राज, निगुणी निवाज निभौ दूजो देवराजसो । अवध विराज भानुवंश शिरताज चक्र वर्ती और कौन दशरत्थ महाराजसो ॥ १ ॥ परमसुजान आठ सचिव सुनीतिवान, तिनमें सुमन्त हैं प्रधान राजकाजके । वामदेव त्यों वसिष्ठ गुरू उपरोहित हैं, रक्षन करैया सदा धर्मके जहाजके ॥ पूरण प्रकृति सात धीर वीर हैं विख्यात, रथी महारथी अतिरथी रणसाजके । भनै रघुराज जाको सुयश दराज जाके, बन्धु मित्र मंत्री मघवानके मिजाजके ॥ २ ॥

छन्द चौबोला ।

सरयू तीर सोहावन कोशल नगर बसत अति पावन ।
निज छबि अमरावती लजावन सुरन मोद उपजावन ॥
द्वादश योजन लम्ब मान तेहि योजन त्रय विस्तारा ।
कनककोट अतिमोटछोटनहिं विमल विशाल बजारा॥
गली चारु चौडी अमली सब मन्दिर सुंदर तुङ्ग ।
अमित कताके लसत पताके मानहुँ रच्यो अनङ्ग ॥
परम मनोहर राजगली मृदु फूलन ते छबि छाई ।

लगी कनक नलिका तिनही के सलिल सुगन्ध सिंचाई ॥
बसत चक्रवर्ती दशरथ जहँ जिमि दिवि देव अधीशा ।
पालित प्रजा वृद्धि सुख पावत लहि प्रताप जगदीशा ॥
बाट बाट बहु द्वार विराजत चामीकर महरावें।
हाटक ठाट कपाट ठटे वर घाटन घाट सोहावें ॥
सरयू तीर हेम सोपानित सब थल करहिं प्रकाशा।
गुर्जमेरु मंदिर सम मण्डित जेहि लखि दुवन निराशा ॥
भिन्न भिन्न सब भौन भौनकी गली न कछु संकेतू।
अतिविचित्र वर कनक रजतके निरमित सकल निकेतू ॥
तोपन तोम तडप तडितासी गुरिज कोटमहँ केतीं।
घहरहिं मनहुँ मेघगण घहरत गोला अवली लेतीं ॥
तिमि घरनाल और करनालें सुतरनाल जंजालें।
गुरगुराव रहँकले भले तहँ लागे विपुल बयालें ॥

दोहा—ऊंची अटा घटान इव, छहर छटा क्षिति छोर।
मनहुँ स्वर्ग सोपानकी, अवली लसैं करोर ॥

छंद चौबोला।

खान पान सन्मान पायकै सदा समर अनियारे।
सकल शिलिपवर औरहु परिचर निशिदिन रहत तयारे ॥
कहूं नृतक कहुँ चतुर नृत्यकी कहुँ नट करहिं तमासे।
रोज रोज मांदिर मांदिर प्राति बहुविधि विपुल विलासे ॥
नौबत झरत द्वार द्वारनमें शंख सुतरि सहनाई।
औरहु विविध मनोहर बाजे बजत मधुर सुरछाई ॥
बंदी मागध सूत वदत रघुवंशिन विरद बडाई।
निरखत नगर नवल शोभा दिगपालहु रहत लजाई ॥
ऊंची अटा घटा इव राजहिं छराति छटा क्षिति छौरें।
मनहुँ स्वर्गकी लगीं सोपानै रवि विश्रामहिं ठौरें ॥

नगर चहूँ दिशि बाग सुहावन अति मंजुल अमराई ।
विहरत विविध कुरङ्ग विहङ्ग मनोहर शोर मचाई ॥
तीनि ओ परिखा जल पूरित उत्तर सरयु सुहाई ।
गजशाला तुरंगशाला रथशाला विविध बनाई ॥
दुर्ग भयावन नगर सुहावन रिपु दुर्गम प्राकारे ।
इंद्र वरुण यमकी गति जहँ नहिं का पुनि भूप विचारे ॥
मदमाते मतङ्ग कहुँ आते कहुँ तुरंग चमकाते ।
घरघरात कहुँ चक्र रथनके सुभट समूह सुहाते ॥
कहुँ ऊँटनके जूट जलद अति वृषभ शकट कहुँ उन्दा ।
महिषी सुरभि पूर पय धारणि वृषभ नदत्त सानन्दा ॥
दोहा–दवन दुवन दल दर्प दिल, दुराधर्ष दिग दंति ।
दशरथके सामन्त अस, दशादिशी कीर्त्ति किरंति ॥

कवित्त ।

केते महाराज रघुराज आवैं देखिबेको, केते महाराज जावैं बलि दै स्वदेशको ॥ केते महाराज ठाढे राजराज द्वारदेश, केते महाराज बसैं शिरधै निदेशको॥ केते चौंर ढारैं केते छत्रको सँवारैं सङ्ग, केते धूरि झारैं पद रसम हमेशको । भूपति हजारैं ते निहारैं रुख बार बारैं, भूप चक्रवर्ती चूडामणि अवधेशको ॥ कहूँ अग्निहोत्र होत होता कहूँ हव्य कव्य, कहूँ वेद वादिनको वेदधुनि छाइ हैं ॥ कहूँ कोइ जप करैं कहूं कोइ तप करैं, कहूं कोइ व्रत करैं चित्तको लगाइ हैं ॥ पूजैं कहुँ देव कोइ करैं कहूं देवसेव, जानैं शास्त्रभेव जे बजाव अधिकाइ हैं ॥ भनै रघुराज प्रजा मोदित दराज हठि, करत परायो काज सुर समताई हैं ॥

दोहा–देश अनेकनके वणिक, धनद सरिस धनवान ।
निवसत कोशल नगर में, जिनके कोटि निसान ॥

छंद चौबला ।

विशद राजमंदिर मणि मंडित मंजुल आठ प्रकारा ॥

आठ लक्ष वासव निवास वर रघुवंशिन आगारा ॥
तीनि प्रकार प्रजा निवसत चौथे महँ रघुकुल बीरा।
पचये वसत राजकुलके सब छठयें नृपतिय भीरा ॥
महाराज मंदिर सतयें अठयें वैकुंठ समाना।
का सुरसदन सुरेश सदनका का विधि भौन बखाना ॥
लसत सुहावन मणिपर्वत तहँ विपिन प्रमोद सु नामा।
नन्दन और चैत्रस्यंदन वन जहि छाविते छविछामा ॥
अति विचित्र विश्वकर्मा कृत जगाति जवाहिर जोती।
सुर गन्धर्व सरिस नर नारी नहिं विद्या बुधि कोती ॥
अति उतंग सुंदर शशिशाला सात मरातिव वारे।
मानहुँ पुहुप विमान भान अस्थान लजावन हारे ॥
हत दूषण पूषण प्रकाश इव नगर विभूषण सोई।
नर भूषण दशरथ निवास जहँ कतहूँ रूख न होई ॥
समथल ऊंच नीच नहिं कतहूँ पूर्ण धर्म धन धानी।
सरस सुरस राजित नीरश हत कोशलपति रजधानी ॥
वीणा वेणु पटह पणवादिक बाजत रोज नगारे।
अवध सरिस शोभा सुर नर मुनि त्रिभुवनमें न निहारे ॥
भावी राम जन्म गुनि प्रगट्यो वसुधामें वैकुंठा।
जहँ ब्रह्मर्षि सुरर्षि राजऋषि विचरहिं बुद्धि अकुण्ठा।

दोहा--जो देख्यो कोशल नगर, सुर नर एकहु बार।
तेहि न रही पुनि कामना, देखन हेत अपार ॥

छंद चौबोला।

चौहट हाट वाट हाटक के वाट वाट रमणीया।
नाटक नात्य घाट घाटनमें सुख पाटत कमनीया ॥
अमित अनुत्तम वीर नरोत्तम सत्तम धीर धुरीणा।
येकाकी लखि कबहुँ वधत नहिं धनुधर परम प्रवीणा ॥

स्वरवेधी सब शस्त्र विज्ञाता वेधक लक्ष विहीना।
परमुख पेखि न पदहु प्रहारत कर लाघव लवलीना॥
विपिन वधत ललकारि हारि नहिं सिंहउ व्याघ्र वराहा।
मत्त मतंग पाणिसों पकरत बली उदोत उछाहा॥
ऐसे सहसन शस्त्र शास्त्र बुध कोशल नगर निवासी।
दिन दिन दून दून दशरथ नृप पुरी बसाई खासी॥
महारथी भाषक यथारथी परमारथी पियारे।
प्रभु अर्थी स्वारथी न कबहूँ कोशलपति सरदारे॥
याचक यज्ञ न याचक धनके सुगुणाकर द्विज ज्ञानी।
अति उदार परिवार सहित बुध वेदाकार अमानी॥
भाषत सत्य असत्य न चाषत राखत सम सब प्रीती।
कतहुँ न माषत कतहुँ न नाषत वेद पंथशुभ नीती॥
महा महर्षि सरिस सब द्विजवर शील सकोच सुभाऊ।
प्रजन परमप्रिय प्राण सरिस जिन मानत दशरथ राऊ॥
ऐसे कोशलपुर को नायक दशरथ भू भरतारा।
जाको सुयश जगत जग जाहिर करत दिगन्त पसारा॥

दोहा--श्रीइक्ष्वाकु नरेश को, वंश हंस अवतंस।
निज सुभाव जन वश कियो, यज्ञ शील रिपुदंस॥
राजत राजा राजऋषि, महा महर्षि स्वरूप।
विदित तीनहूँ लोकमें, जय श्रीदशरथ भूप॥

छंद चौबोला।

महाबली नहिं दुवन दुनी जेहि मित्र सकल जग जाना।
अति ऐश्वर्य्य मान माने सुर धरा महेन्द्र समाना॥
आदि राज जिम भये भुवनमें मनु महराज उदारा।
तैसहिं दशरथ राज आजु महि पाल्यो जगत अपारा॥

सत्यसन्ध जिनके नृप पालित अवधपुरी छबि छाई।
प्रतिदिन वर्द्धमान जेहि सम्पति अमरावती लजाई॥
धरमनिरत हत लोभ तोष भर सत्य वचन सुखरासी।
जग जाहिर धन धनद सरित कुलवन्त अवध पुरवासी॥
कोउ नहिं दीन हीन मति अघ कर असिध मनोरथ वारे।
तरल तुरङ्ग शतांग मतङ्ग बँधे जिन द्वारन द्वारे॥
नहिं कोउ कामी कृपण दया बिन नास्तिक मूढ कुवादी।
मुदित शील सम्पन्न महर्षि समान धर्म मरयादी।
नर नारी हरि धर्म निरत अति देव स्वरूप सोहाये॥
बिनकुण्डल बिन मुकुटमाल बिन कोउ न भोग बिनभाये।
बिनमज्जित बिन अँग अँग रागित बिनसुगन्ध नहिं कोई॥
बिन अङ्गद बिन हार कटक बिन लखि न परै पर सोई।
दाता ज्ञाता दीन न पाता मिष्ट अशन सब खाते।
अग्निहोत्र सब करत विप्र नहिं क्षुद्रहु चोर दिखाते॥
निज निज कर्महिं प्रजा निरत सब कोउ नहिं सङ्कर जाती।
दान देत उत्साह सुमति जिन दान लेत सकुचाती॥

दोहा--विद्या वेद निधान सब, शीलवान रुचिवान।
हेतुवाद हठवाद हत, भाषत वचन प्रमान॥
अवध प्रजा अस कोउ नहिं, जो जग जाहिर नाहिं।
कोउ न भयो परदार रत, सब पण्डित पुरमाहिं॥
श्रम यक वेदाभ्यासमें, व्रत तप रह्यो कलेश।
साधु विप्र ढिग दीनता, परहित विथा हमेश॥
सहस उपर ते दान में, न्यूनाधिक्य विचार।
आसक्ती रहि धर्म में, चुगुली पर उपकार॥
ऋतुपति तरु विगलित सुदल, तहँ कुरूपता बास।

बसी अरुचि यक अघनमें, पाप न बस्यो विनास ॥

छंद चौबोला।

भेदभास यक चारि वरणमें आतिथि देवमें पूजा।
चतुराई कृतज्ञताई थल अवध सरिस नहिं दूजा ॥
विक्रम बस्यो सकल शूरन गण धर्म सत्य तनु माहीं।
कुल कदम्बमहँ बसी वृद्धि तहँ दण्ड वाद्यगण पाहीं ॥
बसता बसी ब्रह्म क्षत्री बिट शूद्र जाति अनुसारा।
धर्म पतिव्रत अवध नगरमहँ नारिन गण आधारा ॥
हंस वंश अवतंस भूप वर दशरथ शील सुभाऊ।
जासु प्रशंस करत सुर नर मुनि भयो यथा मनु राऊ ॥
लसत अयोध्याके सब योधा निगमागम कृत बोधा।
क्रोधा शत्रु समूहन शोधा नहिं गति कहुँ अवरोधा ॥
अवधराजकी विमल विराजति विशद सुवाजिनशाला।
सकल जातिके बँधे तुरंगम रूप अनूप विशाला ॥
बाजि काबुली त्यों ईरानी मिसिर अरब्बी केते।
रूसी रूमी ताजी तुरकी त्यों जङ्गली सुचेते ॥
जापानी पर्वती चीनिया भोटी ब्रह्मा देशी।
धन्नी भीम्राथली काठिया मारवाड माधिदेशी ॥
इँगलिस्तानी औ दरियाई कच्छी ओलन्देजी।
औरहु विविध जातिके बाजी नँघत पवनकी तेजी ॥
विविध रङ्गके मनु अनङ्ग निज हाथन अङ्ग बनाये।
अंग बंग औ त्यों कलिंगके विविध तुरंग सोहाये ॥

सोरठा—अनुपम अवध भुवाल, जाकी गजशाला विमल।
सिंधुर लसत विशाल, विविध जाति अरु देशके ॥

छंद चौबोला।

विंध्यगिरिंद प्रांतके संभव विंध्य सरिस जिन रूपा।

सेतु स्वरूप हिमाचल जन्मित हिमगिरि आभ अनूपा ॥
शुंडादण्ड चण्ड फटकारत सदा बहति मदधारा ।
चौथ चन्द सम चारु दन्त दुति देत दिशभ दरारा ॥
ऐरावतके कुलके केते दिशा गजन कुल केते ।
महापद्म अंजन अरु वामन विरूपाक्ष कुल जेते ॥
भद्र मन्द्र मृगभद्र मन्द्रमृग भद्रमन्द्र मृग जाती ।
भद्र और मृगभद्र आदि बहु जे गज जाति विख्याती ॥
विभव सकल शत शक्रसरिसवर केहि विधि करौं उचारा ।
जाके भवन सो त्रिभुवननायक लैहैं हरि अवतारा ॥
द्वादश योजन अवधपुरी सब युग योजन नृप ऐना ।
विमल राज रानिनके मंदिर मनहुँ रचित कर मैना ॥
ऐसी पुरी बसत दशरथनृप राज समाज सु साजा ।
धरमधुरंधर धीर धुरीन यथा उडगण उडराजा ॥
जासु याम साकेत दूसरो सत्या नाम सोहाई ।
तासु तीसरो नाम अयोध्या वेद पुनराण गाई ॥
भुजबल कलित कपाट कनकके द्वारन द्वारं सोहाये ।
रक्षत वीर विविध वासर निशि जिनके यश जग छाये ॥
चित्रित चित्रावली विचित्र चितेरन चर्चित चारू ।
चमचमात चामीकर मंदिर चौमुख चित्त विचारू ॥

दोहा--अवधपुरी मंगलवती, निरखत मंगलदानि ।
भू वैकुंठ विराजती, को कहि सकै बखानि ॥

कवित्त ।

माया मोहनाशिनी उमाकिनी अविद्यामूल, पापनकी त्रासिनी
है ज्ञान रस रासिनी । शोभाकी अमापिनी सुथापिनी है धर्मधुरा,
साकिनी है तारनकी पुण्यकी प्रकासिनी ॥ भनै रघुराज राज
सिंहनकी बासिनी है, शासिनी आधीनि यमपुरकी उडासिनी ॥

चासनी सुचेतनकी रामदास आसिनी है, रामकी पुरी सो सत्यराम तत्त्व भासिनी ॥

दोहा--मंत्री दशरथ भूपके, उत्तम आठ प्रधान ।
चतुर देवगुरु सरिस सब, करहिं सत्य अनुमान ॥
सकल मंत्र जिनको विदित, जानत लखि आकार ।
नित नरपति हितमें निरत, मितभाषी अविकार ॥
धृष्ट जयंतौ अरु विजय, सिद्धारथ पुनि नाम ।
तथा अर्थ साधक अपर, त्यों अशोक मतिधाम ॥
मंत्रपाल सत यों सचिव, आठों सुमति सुमंत ।
देशकाल ज्ञाता सकल, धर्म निरत यशवंत ॥
श्रीवसिष्ठ ब्रह्मर्षिवर, वामदेव ऋषिराज ।
उभै पुरोहित नृपति के, कारक सब शुभकाज ॥
मांत्रिनके लक्षण कहौं, दशरथ के जेहि भाँति ।
नरपति हितमें हेत नित, चित परहित दिन राति ॥
विद्यावान विनीत अति, राखत गुरुजन लाज ।
परम कुशल सब कामके, वर्द्धक दिनप्रति राज ॥
शोभामान अमान मति, ज्ञाता शास्त्र समूह ।
भक्ति त्रिविक्रममें निरत, दृढ विक्रम द्रुत ऊह ॥
कीर्तिवान कृत काम बहु, सावधान सब याम ।
जस भाषत तैसहि करत, नहिं अनुरत परवाम ॥
तेज तरणि सम प्रथम कारि, क्षमा क्षमा सी छाइ ।
राज काज सब सिद्धि कारि, पावत यश समुदाइ ॥
नीचहु ऊंचहु जननसों, वदत वचन मुसकाय ।
क्रोध कामके वश कबहुँ, कहत न वचन निकाय ॥
नितपुरको वृत्तान्त कछु, तिनहिं न कबहुँ छिपात ।
कियो जो न कर्तव्य जो, तेहि गुण दोष विज्ञात ॥
गुप्त चारते देश को, जानत सब वृत्तान्त ।

सकल लोक व्यवहारमें, कुशल कला अति दांत ॥
नृपाति मित्रता सुहृदुता, पराखि गये बहु बार ।
बारेहु जो अपराध कर, देहिं दण्ड तेहि बार ॥
कोष भरणमें निपुण आति, धरहिं खर्च कारि पूर ।
देत सबन बेतन समय, रक्षत रहत न दूर ॥
यदपि अहित आति होइ निज, हनहिं न बिन अपराध ।
महाबीर रणधीर आति, सदा समरकी साध ॥
राजनीति जानत सकल, जन गाति विपाति विशेष ।
सदाचार सम्पन्न सब, विना हेतु नहिं द्वेष ॥
सकल देश वासीन को, राखत प्राण समान ।
द्विजन क्षत्रियन नाश विन, भरहिं कोष विन मान ॥
देखि बलाबल दुवनको, दै मृदु तीक्षण दण्ड ।
उग्र राज शासन करत, हरत प्रजन पाखण्ड ॥
सकल साचिव संमत साहित, निज निज बुद्धि विचार ।
वाद विवाद विहाय हठ, कारज करत अपार ॥
कोउ न मृषावादी साचिव, कपटी कुटिल कठोर ।
कोउ न भयो परदार रत, कोउ नहिं चंचल चोर ॥
देश विदेश सभा सदन, राखत शांत सुभाव ।
भूपाति कारज करनमें, नित नित दून उराव ॥
धारि वसन भूषण विमल, जात राजदरबार ।
शील सहित बोलत वचन, लखि रुख भू भरतार ॥
जेहि हित होइ नरेश को, सो भाषैं उर भैन ॥
सोवत प्राकृत नैनते, जागत नय के नैन ॥
दोष तजत गुणको गहत, लखत न प्रभुको दोष ।
विश्व पराक्रम विदित जिन, साँकर करत समोष ॥

विदित विदेशहु वृत्त सब, निज बुधि विशद प्रभाव ।
जानत विग्रह सन्धि नय, निज परभाव अभाव ॥
स्वामीसों यांचत न कछु, करत शक्तिलौं काज ।
काज देखि राजी सहित, लेत जो वकशत राज ॥
लोभ क्रोध मद मोह वश, कबँहु न ठानत ठान ॥
कामहि कीन्हें ते भये, जिनके विभव महान ॥
करि सलाह हठ हेतु ताजि, सूक्षम बुद्धि विचार ।
करि सुंदर सम्मत सकल, शासन करत प्रचार ॥
जानत नीति अनीति गति, दीन पीन जन हीन ।
मधुर वचन बोलत सदा, राज काज लवलीन ॥
ऐसे सचिवनते सहित, दशरथ भू भरतार ।
शासत सकल बसुन्धरा, धरा धर्म आधार ॥
चतुर चार गुप्तहु प्रकट, कै सब देश प्रचार ।
पालत प्रजा भुवालमणि, करत धर्म संचार ॥
कहुँ अधर्मका लेश नहिं, धर्म कर्म रत लोग ॥
सुखी सनेह रुखी प्रजा, दुखी मुखी नहिं योग ॥
भुवन विदित दशरथ नृपति, सत्यसिन्धु चतुरेश ।
जाको शासन सान को, मानत सपदि सुरेश ॥
जगत समाधिक रहित रिपु, भयो भूमि भरतार ।
मीत सुरासुर सकल भे, जेहि यश भुवन भँडार ॥
जासु प्रताप प्रताप ते, भई अकण्टक भूमि ।
लोकप इव सामन्त जेहि, वंदत नित पद चूमि ॥
सात द्वीप नव खण्डमें, दशरथ भू भरतार ।
शास्यो जिमि शासत स्वरग, वासव नयन हजार ॥

कुशल समर्थ सु सचिव सब, सहित सु दशरथ राज ॥
अवधपुरी शोभित भयो, जिमि कर युत उडराज ॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुर, श्रीकृष्णचन्द्र-
कृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई.
कृते अवधपुरी वर्णनं नाम प्रथमः प्रवन्धः ॥ १ ॥

सोरठा--यहविधि जासु प्रभाउ, श्रीदशरथ महिपालमणि ।
और सबै चितचाव, सुत बिन तापित रहत हिय ॥

छन्द चौबोला ।

कियो विचार भूप मनमें अस केहिविधि सुत हम पावैं ।
करिकै वाजिमेध मख उत्तम हरि सुत हेतु मनावैं ॥
देहिं ईश सुत वंश विधायक उऋण पितर ऋण होईं ।
याहिविधि करि मतिमान ठीक मति मंत्रिन मंत्र समोईं ॥
बैठि एक दिन भूप सभामहँ कह्यो सुमन्त बुलाई ।
मम हितमें रत सकल पुरोहित गुरु युत ल्याउ लेवाई ॥
सुमति सुमन्त तुरन्त जाइ मतिवन्त गुरुनपहँ भाष्यो ।
गुरुजन चलहु राजमन्दिर सब नृप दर्शन अभिलाष्यो ॥
वामदेव जावालि सुयज्ञहु कश्यप आदि मुनीशा ।
सकल वसिष्ठ संग ल्याये तहँ बैठे जहां महीशा ॥
सादर करि प्रणाम नरनायक दै आसन बैठाये ।
धर्म सहित निज अर्थ विधायक सुन्दर वचन सुनाये ॥
और सबै सुख नहिं सन्तति सुख सुत लालसा हमारे ।
तेहि हित अश्वमेध मख करिबो हम मनमाहँ विचारे ॥
शास्त्ररीतितें सबै विचारहु जेहि विधि सुत हम पामैं ॥
सुनि नृप वचन वसिष्ठादिक मुनि बोले वचन ललामैं ॥
भलो विचार कियो नरनायक करहु यज्ञ संभारा ।

तजहु तुरंग संग सुभटनके दै द्रुत विजय नगारा ॥
यज्ञ भूमि सरयू उत्तर दिशि कीजै विमल विधाना।
पैहो नरपति पुत्र सर्वथा जो तुम्हरे मन माना ॥

दोहा--पुत्र हेतु उपजी सुमति, सहित धर्म नरनाह।
पैहो अवशि कुमार वर, चली वंश जगमाह ॥

छन्द चौबोला।

सुनिकै वचन वसिष्ठादिकके सजल नैन महराजा।
कह्यो हरषि सचिवन अब कीजै सकल यज्ञको काजा ॥
गुरु वसिष्ठ आदिक मुनिजनके विमल वचन अनुसारा।
तजहु तुरङ्ग सङ्ग सुभटन के दै द्रुत विजय नगारा ॥
यज्ञभूमि सरयू उत्तर दिशि कीजै बिमल विधाना।
विघन निवारण शांति करीजै जेहिविधि शास्त्र प्रमाना ॥
जो विधिहीन होत वाजीमख सो हठि राज विनासै।
ताते नहिं अपचार होइ कछु राखहु उर यह त्रासै ॥
हेरत छिद्र ब्रह्मराक्षस बुध वाजिमेध मखमाहीं।
विधि विधान ते हीन होइ तो करता जीवत नाहीं ॥
ताते सावधान ह्वै कीजै सविधि समापत यागा।
सिगरे सचिव समर्थ सबै विधि जानहु शास्त्र विभागा ॥
सचिव सुनत शासन साहिबको सादर कह्यो सराही।
प्रभुशासन अनुसार वाजिमख होइ विधि हत नाही ॥
यह सुनि पुलकि वसिष्ठादिक मुनि दै नृप आशिरवादा।
माँगि बिदा निज निज अवासको गये सहित अह्लादा॥
यहि विधिमुनिन विदाकरिभूपति सचिवनमखहित भाषी॥
तुरत गये रनिवास अवास हुलासित सुत अभिलाषी ॥
कौशल्या ककयी सुमित्रा आदिक जे महरानी।
तिनसों कह्यो पुत्र हित हयमख हम दीन्ह्यो अब ठानी ॥

दोहा--सुनत वचन तिनके वदन, विकसि भये मुदवन्त।
जिमि लहि अन्त हिमन्तको, सर सरोज विकसन्त॥
यहि विधि दशरथ भूमिपति, कौशल्यादिक रानि।
भनत परस्पर वचन बहु, सिगरी रैनि सिरानि॥

छंद चौबोला।

उठि भूपति करि नित्यनेम सब सभासदन पगु धारे।
तहँ सुमन्त यकन्त जाइ शिर नाइ वृतांत उचारे॥
सुनहु नाथ यह कथा पुरानी एक समय वनमाहीं।
गये गलानि मानि मनमें हम भजन हेतु हरि काहीं॥
दीन देखि मोहिं अति दयालु तहँ सनत्कुमार सिधारे।
ज्ञान विज्ञान विराग विविध विधि मंजुल वचन उचारे॥
तेहि पीछे पुनि कह्यो ऐसहू अबै न तजु संसारा।
दशरथ भूपति भवन भुवनपति लैहैं नर अवतारा॥
सनत्कुमार दरश हित मुनिजन औरौ तहँ चलि आये।
तिनके सन्मुख पुनि मुनिपति मोहिं ऐसे वचन सुनाये॥
कश्यप तनय विभांडक ह्वै है जाहिर सकल जहाना।
शृङ्गीऋषि तिनके सुत ह्वै हैं काननमें अस्थाना॥
वर्धमान ह्वै है आश्रममें वनचर संग विहारी।
कछु संसारचार जानिहैं नहिं पितु सेवा सुखकारी॥
नारी पुरुष भेद जानिहैं नाहिं ब्रह्मचर्य महँ राते।
महा महात्मा सिद्ध शिरोमणि सकल जगत विख्याते॥
अग्निहोत्र ठानत पितु सेवत बीति जाइ बहु काला।
अंगदेश महँ रोमपाद यक ह्वै है कोउ भूपाला॥
धर्म व्यतिक्रम करी भूप जब अनावृष्टि तब होई।
परी महादुर्भिक्ष राज्यमें प्रजा दुखित सब रोई॥

दोहा--निरखि घोर दुर्भिक्ष तहँ, भूप दुखी मन माहिं।
बोलि वृद्ध पण्डित द्विजन, नृप कहिहै तिन पाहिं॥
ज्ञाता लोक चरित्रके, धर्म धरा आधार।
जेहि विधि मिटै अकाल यह, सो कीजै उपचार॥

छंद चौबोला।

प्रायश्चित्त करावहु मोकहँ मिटै महा दुर्भिक्षा।
हरबर होइ प्रजा प्रमुदित सब पृथिवी पाय सुभिक्षा॥
सुनि नृप वचन वेदविद ब्राह्मण बोले वचन विचारी।
सुवन विभांडक मुनि शृङ्गीऋषि आनहु इत तप धारी।
शांता सुता भूप दशरथकी दीजै ताहि विवाही।
तब सुकाल महिपाल राज्यमें ह्वै है प्रजा उछाही॥
विप्र वचन सुनि तब वसुधापति चिंता अति उरआनी।
मुनिवर केहि उपावते आवैं पुछि हैं सचिव सुज्ञानी॥
मुनिवर आनन सचिव पुरोहित भूपति विपिन पठै हैं।
भीति विभांडककी तेहि कानन मुनि आनन नहिं जैहैं॥
मुनि आनन उपाय भूपति सों सादर सचिव सुनै हैं।
गणिकागण वन जाय अवाशि शृङ्गीऋषिको लै ऐहैं॥
मुनि आगम प्रभावते वासव वराषि सुभिक्ष बनैहैं।
शांता सुता शांत कांतहि लहि अनुपम सुख उपजै हैं॥
सोई शृङ्गी ऋषि दशरथको अश्वमेध करवैहैं।
चारि कुमार महासुकुमार उदार अवधपति पैहैं॥
इहि विधि सनत्कुमार कह्यो मोहिं सो सब दियो सुनाई।
हैहैं चारि कुमार आपके संशय सकल नशाई॥
सुनि सुमन्तके वचन भूपमणि मंजुल वचन उचारा।
केहि विधि रोमपाद आन्यो पुर शृङ्गी ऋषिहि उदारा॥

दोहा--सो वर्णहु विस्तार ते, तुम सुमन्त मतिमान ।
सुनि शासन नरनाथ को, लाग्यो करन बखान ॥

छंद चौबोला ।

कह्यो वचन सब रोमपादसों सचिव पुरोहित आई ।
शृङ्गीऋषि आनन को यहि पुर ऐसो करहु उपाई ॥
शृङ्गीऋषि नित वेद पढत हैं वनचर सम वनवासी ।
तनक नहीं तिय को सुख जानत संसृति विषय निरासी॥
चन्द्रमुखी जे चित्त हारिनी तिनको तहां पठाई ।
आनव मुनिवर नगर मिटी दुर्भिक्ष महा दुखदाई ॥
रूपवती बहु बारवधू करि भूषण वसन शृँगारा ।
मुनिहिं लोभाय उपाय अनेकनि आनहिं करि सतकारा ॥
अंगराज सुनि सचिव वचन कह करहु ऐसही जाई ।
रचन लग रचना सुनि शासन जेहि आवैं मुनिराई ॥
चन्द्रमुखी बहु बारवधू गण तुरतहिं दियो पठाई ।
मुनि आश्रमके कछुक दूरिते लागीं करन उपाई ॥
पिता विभांडकके सेवनते शृङ्गी ऋषि मतिवाना ।
कबहुँ न आश्रम त्यागि आपनो कीन्ह्यो कहूँ पयाना॥
नगर नारि नर लख्यो न कबहूँ जन्महि ते मुनिराई ।
पुरुष नारिको भेद न जानत मानत सब समताई ॥
विहरत विहरत एक समय मुनि बारबधुन ढिग आये ।
देखि अनूप रूप नारिनको चितै रहे भ्रम छाये ॥
मान्यो तिनहिं अपूरव तापस बारवधू का जानै ।
बारमुखी मुनिवर विलोकि कै करत चलीं कलगानै ॥

दोहा--अति विचित्र युवती सबै, करि कटाक्ष मुसकाय ।
मधुर वचन बोलत भईं, मुनि समीप में जाय ॥

छंद चौबोला ।

आप कौन हौ कहां बसत हौ जाननको हम चाहैं ।
घोर महा यह विजन विपिन में किमि करियत निरबाहैं ॥
अति सुकुमार शरीर मनोहर नोहर नैन विशाला ।
कहहु सकल मुनि हेत आपनो जो कछु उचित उताला॥
मुनि सुनि वचन बार नारिनके मुनिजन तिनहिं विचारी ।
मानि सनेह नाय शिर तिनको कहन लगे तपधारी ॥
पिता विभांडकके सुत हैं हम शृंगीऋषि मम नामा ।
इततें कछुक दूरि मम आश्रम चलहु तहाँ यहि यामा ॥
सुभग वेष मुनि जन तिहरी हम करिहैं विधिवत पूजा ।
सुनत चलीं ऋषि संग आश्रमहि गुण्यो मनोरथ पूजा ॥
ऋषि लै जाइ वारनारिन को पूजन कियो अतूला ।
अर्घ्यपाद्य आचमन दियो फल फूल कन्द अरु मूला ॥
ऋषि कर अर्पित कन्द मूल फल पाइ सुखी सबनारी ।
आवन चहत विभांडक मुनि अब उपजी भयमन भारी ॥
चलन चहीं गणिका तहँतें द्रुत बोलीं वचन पियारे ।
तुम्हरे फल तो पाइ गईं हम लीजै फलन हमारे ॥
ये फल फरै आश्रमहि हमरे भोजन किहहु सुस्वादू ।
असकहि मुनिकहँ मिलीं बारातिय भरिउर अति अहलादू॥
मधुर सुमोदक विविध भाँतिके और विविध पकवाना ।
दियो ऋषिहि कहिनाम फलनके मुनि कछु भेद न जाना॥

दोहा—शृङ्गिऋषि भोजन कियो, मोदकफल जिय जानि ।
कबहुँ न खायो अस फलन, वनचारी तपठानि ॥

छन्द चौबोला ।

पुनि बोलीं गणिका मुनिवरसों आयो संध्याकालै ।
संध्याकरन जाहिं हम सरि तट मिलब तुमहिं पुनिकालै ॥

अस कहि भगीं भामिनी तहँते मानि तासु पितु भीती ।
जो देखि हैं विभांडक हमको दे हैं शाप अप्रीती ॥
जबते गणिका गईं तहांते तबते सो ऋषि शृङ्गी ।
बढी बहुरि तिन लखन लालसा कब मिलिहैं सत्संगी ॥
होत प्रभात तुरत शृङ्गी ऋषि तेहि थलमें चलि आये ।
लखेहु तेज तहँ बारबधुनको सुन्दर रूप सोहाये ॥
बारबधू आवत तिनको लखि भूषण वसन सवाँरी ।
मिलीं दौरि तिन्ह कहँ लै आईं जेहि थल बसीं सुखारी ॥
विहँसि वचन बोलीं मुनिते सब वे फल अब इत नाहीं ।
चलहु हमारे आश्रम जो मुनि तो देहैं तुम काहीं ॥
हमरे आश्रम विमल वाटिका तहां फरे फल सोई ।
जे फल दिये तुम्हें आश्रम चलि देहैं तेइ बहुतोई ॥
गणिका वचन सुनत शृंगीऋषि गमन हेतु ललचाने ।
कह्यो वचन हम मुनि जन तुम्हरे संगहि करब पयाने ॥
सुनि मुनि वचन उठीं सिगरी तिय कर गहि चलीं लेवाई।
शृंगीऋषि पग परत अङ्ग पुर वरषा भै सुखदाइ ॥
मिट्यो महा दुर्भिक्ष शोकप्रद भे सब प्रजा सुखारी ।
रोमपाद लीन्हो आगू चलि वंद्यो पद शिरधारी ॥

दोहा—अर्घ्यपाद्य आचमन दै, पूज्यो सविधि मुनीश ।
राख्यो भवन लेवाइ कै, प्रमुदित भयो महीश ॥

छंद चौबोला ।

शृंगीऋषि सों कियो विनय पुनि तव पितु करै न कोपा।
नातो होइ हमारो आशुहि राज कोष कुल लोपा ॥
शृङ्गीऋषि बोले भूपति सों कछु न तोर अपकारा ।
ईश रजाय शशि सबहिके ऐसो करहु विचारा ॥

शृङ्गीऋषि को रोमपाद नृप गे लेवाय रनिवासा ।
शांता कन्या नाथ रावरी दिय विवाहि सहुलासा ॥
दान मानसनमानसहित नृपराख्यो मुनिनिज गेहू ।
शांता सहित तहां शृङ्गीऋषि बसे विचारि सनेहू ॥
और सुनहु कछु वचन भूपमणि जेहि हित राउर होई ।
सनत्कुमार कह्यो मोसों अस कह्यौं कथा अब सोई ॥
ह्वैहै कोउ इक्ष्वाकु वंशमहँ दशरथ भूभरतारा ।
महा सत्यवादी धरमात्मा सकल भुवन उजियारा ॥
रोमपाद अस नाम नृपति कोउ अंग देशमहँ होई ।
सो दशरथको मित्र होइगो पूरण प्रीति समोई ॥
शांता सुता भूप दशरथके ह्वै है रूप अनूपा ।
रोमपाद दशरथ संबंधी ह्वै है मित्रहु भूपा ॥
शांता सुता भूप दशरथ की बसी अंगपति गेहू ॥
सो विवाहि शृङ्गीऋषि को नृप दैहैं सहित सनेहू ।
अवधनाथके पुत्र न ह्वै है तब अतिशय अकुलाई ॥
तुरत अङ्गपुर कोशल नायक रोमपाद पहँ जाई ।

दोहा-रोमपाद सों हुलसि मति, कही भूप मतिवान ॥
जामाता शांता रवन, मोकहँ देहु सुजान ॥

छंद चौबोला ।

जो शृङ्गीऋषि अवध नगर चलि अश्वमेध करवावैं ।
तौ हम होहिं कृतारथ मख करि तासु कृपा सुत पावैं ॥
रोमपाद सुनि दशरथ वानी सुख मानी अनुमानी ।
दैहैं तपखानी शृङ्गीऋषि ज्ञानी कारज जानी ॥
लै शृङ्गीऋषि अवध आइ नृप अश्वमेध मख ठानी ।
पाणि जोरि करि विनय मुनीशहिं दैहैं वर विज्ञानी ॥
सुयश हेतु अरु स्वर्ग हेतु अरु सुवन हेतु अवधेशा।

करिहैं यज्ञ सहित शृङ्गीऋषि श्रद्धायुक्त सुवेशा ॥
महा विक्रमी वंश विधायक पैहैं नृप सुत चारी।
पूरब सनत्कुमार कह्यो अस मोसों सकल उचारी ॥
ताते राजसिंहमणि आशुहिं अंग देश पगु धारो।
सदल सवाहन जाइ ऋषीशहि ल्यावहु करि सतकारो ॥
सुनि सुमन्तके वचन अवधपतिअतिशय आनँदमानी।
लै अनुमति वसिष्ठसों आशुहि गवनादियो तहँ ठानी ॥
सहित सकल रनिवास सचिवगण सुन्दर सैन्य सजाई।
चल्यो अवध नायक सब लायक अंग देशमन लाई ॥
डेरा करत सरित वन पत्तन मन्द मन्द महराजा।
पहुँचे अंगदेश जहँ निवसत शृङ्गीऋषि द्विजराजा ॥
प्रथम दरश कीन्हों शृङ्गीऋषि पावकसरिस प्रकासा।
रोमपाद सुनि दशरथ आगम पायो परमहुलासा ॥

दोहा--साजि सैन्य चालि दूरि ते, लीन्ह्यो नृप अगुवानि।
सखा सखा मिलि मोद मढि, संबंधी पहिचानि ॥
कर गहि हास विलास करि, रोमपाद महिपाल।
गयो लेवाइ निवसको, डेरा दियो विशाल ॥
सैन्य सहित सत्कार किय, करवाई जेवनार।
रोमपादके भाम हैं, दशरथ भू भरतार ॥

छंद चौबोला।

सखा परमप्रिय संबंधी नृप रोमपाद लहि प्यारे।
पुनि पुनि करत महा सत्कार अघात न मोद अपारे ॥
अंगराज कृत अतिसत्कारिक कोशलनाथ उदारा।
बसे पंचदश दिवस अंगपुर दोउ नृप एक अगारा ॥
कह्यो अंगपतिसों कोशलपति शांताकांत समेता।

हमरे कोशल नगर चलहिं द्रुत मम कारजके हेता ॥
अंगराज तब विनय करी नृप बात कही यह नीकी ।
शृङ्गीऋषि जैहैं कोशलपुर यह हमरेहू जीकी ॥
रोमपाद शृङ्गीऋषिसों पुनि विनय करी करजोरी ।
अवधजाहु शांता संयुत प्रभु मानि विनय यह मोरी ॥
कहि तथास्तु शृङ्गीऋषि आशुहि चलेसहितनिजनारी।
रोमपादसों कह्यो अवधपति देहु बिदा सुखकारी ॥
पुनि२ मिलि२सखा सखा दोउ करि प्रणाम कर जोरी ।
रोमपाद अरु अवधनाथकी बढी प्रीति नहिं थोरी ॥
पुनि कोशलपति रोमपादसों माँगि बिदा तेहि ठौरा ।
सहित सकल रनिवास सैन्ययुत चले अवधकी ओरा ॥
पठयो अवध तुरत हलकार तरल तुरंग चढाई ।
सचिवन दियो निदेश अवधपुर राखेहु सुभग सजाई ॥
छपन छपाके रवि इव भाके दण्ड उतंग उडाके ।
विविध कताके बंधे पताके छुवैं जे रवि रथचाके ॥
दोहा--सींची गली गुलाब ते, अगर धूप चहुँ ओर ।
द्वार द्वारमें रंभ के, खम्भ गडे चितचोर ॥

छंद चौबोला ।

कियो अलंकृत नगर अनूपम खबरि पाय पुरवासी ।
राज रजाइ सिवाइ कियो पुर रचना मंत्रिन खासी ॥
शांता शृङ्गीऋषि संयुत नृप जबहिं नगर नियराने ।
लिये सकल अगुवान पौर जन दर्शन हित ललचाने ॥
होत धुकार दुन्दुभिनके अरु बजत शंख सहनाई ।
खैर भैर चहुँओर मच्यो अति आनँद पुर न समाई ॥
शृङ्गीऋषिको आगे करिकै नगर सुहावन राजा ।

कियो प्रवेश सहित रनिवास हुलासित सकल समाजा ॥
राजकुमारी सहित मुनीशहिं देखि महा मुद ठयऊ ।
भूप चक्रवर्ती दशरथ सुरपति सम शोभित भयऊ ॥
प्रविशि राजमन्दिर महँ नरपति अन्तहपुर महँ जाई ।
शांता सुता सहित शृङ्गीऋषि पूजन कियो महाई ॥
करि पूजन विधान युत नरपति विमल अवास टिकायो ।
अपनेको कृतकृत्य मानि नृप सम्पति विविध लुटायो ॥
त्रिशत साठि त्रय महरानी लखि सुता और जामाता ।
रोज रोज सतकारहिं पुनि पुनि आनँद उर न समाता ॥
रानिन ते पूजित शृङ्गीऋषि शांता नैन विशाला ।
बसत भये प्रमुदित कोशलपुर हरषावत महिपाला ॥
अतिउराउ महराउ मगन अति जान्यो जात न काला ।
आयो विमल वसन्त काल पुनि बीति गयो यक साला॥

दोहा--एक दिवस नरनाथ तहँ, शृङ्गीऋषि ढिग जाइ ।
विनय कियो कर जोरि कै, करहु यज्ञ मन लाइ ॥
नाथ वाजिमख मोहिं अब, करवावहु विधि संग ।
मिलै अवशि सन्तान सुख, यह तुव हाथ प्रसंग ॥

छंद चौबोला ।

शृङ्गीऋषि तब एवमस्तु कहि कह सुनु भूप उदारा ।
तजहु तुरङ्ग संग सुभटनके दै द्रुत विजय नगारा ॥
तब राजा सुख मानि सभा चलि तुरत सुमन्त बुलाई ।
कहो ब्रह्मवादी बोलवावहु सकल पुरोहित जाई ॥
वामदेव जाबालि कश्यपहु अरु सुयज्ञ मतिखानी ।
गुरु वसिष्ठ अरु और सकलमुनि ल्यावहु तुम इत ज्ञानी॥
गयो तुरन्त सुमन्त ऋषिनको ल्यायो सभा बुलाई ।

राजा उठि प्रणाम तब कीन्हों आसन दै बैठाई ॥
धर्म अर्थ युत वचन उचार्यो सुनहु सबै मुनिराई ।
और सबै सुख नहिं सन्तति सुख ताते कछु न सोहाई ॥
अश्वमेध मख पुत्रहेत हम करैं मोद तब पैहैं ।
शृङ्गीऋषि प्रभाव ते मेरे सिद्ध मनोरथ ह्वैहैं ॥
सुनि मुनि जन भूपति मुख निर्गत वचन परम सुख पाये ।
सकल सराहि उछाह भरे पुनि ऐसे वचन सुनाये ॥
तजहु तुरंग संग सुभटनके दै द्रुत विजय नगारा ।
सरयू उत्तर दिशा करहु नृप सकल यज्ञ संभारा ॥
पैहौ पुत्र सर्वथा भूपति चारि अमित बलवारे ।
जहँते भई धर्मकी मति यह करिबो यज्ञ विचारे ॥
अति प्रसन्न तब भये अवधपति सुनि मुनिजनकी वानी ।
हर्षि कह्यो शुभ बैन सुमंत्रिन देहुकाज यह ठानी ॥

दोहा--गुरु वसिष्ठ आदिक वचन, मानि यज्ञ संभार ।
रचहु यथा मुनिगण कहैं, अब नहिं और विचार ॥

छंद चौबोला ।

तजहु तुरंग संग सुभटनके दै द्रुत विजय नगारा ।
सरयू उत्तर दिशा वाजिमख रचहु सविधि संभारा ॥
प्रथमहिं शांति करहु विधि संयुत विघ्न होइ नहिं जामें ।
विघ्न भये वाजीमख नाशत सकल प्रजा वसुधामें ॥
सावधान ह्वै करहु कर्म सब होइ सब जेहि अपचारा ।
हेरत छिद्र ब्रह्मराक्षस वध करि उतपात अपारा ॥
जो कछु विघ्न होइ वाजीमख तौ करता कर नासा ।
ताते करहु यथाविधि हयमख होइ समापत खासा ॥
सब विधि समरथ अहौ सचिवगण कछु न वस्तुकी हानी ।

सकल सिद्धि करि हैं वाजीमख सादर शारँगपानी ॥
भूप शिरोमणि वचन सुनत सब बोले वचन सुखारी ।
ह्वै है तथा यथा प्रभुशासन वृथा न गिरा तिहारी ॥
तहँ मुनिजन सब नृपहि सराहत माँगि बिदा मुद माते ।
गये भवन निजनिज सचिवन युत यज्ञ कर्म मन राते ॥
करिकै बिदा सचिव मुनिगणको कोशलनाथ प्रकासी ॥
अन्तहपुरको गमन करत भे मानि महा मुदरासी ।
शृंगीऋषि शांता युत यहिविधि बसे अवधपुर माहीं ॥
बीति गयो सानंद साल यक जानि परचो कछु नाहीं ॥
आई बहुरि वसन्त जबै ऋतु राजा मनहिं विचारी ।
गुरु वसिष्ठके भवन गयो चलि बोल्यो पद शिरधारी ॥
करहु अरंभ नाथ वाजीमख जेहि विधि विघ्न न होई ।
तुम मुनीश त्रयकालहि ज्ञाता होय सुवन करु सोई ॥

दोहा--आप हमारे सुहृद गुरु, मोपर किय सनेहु ।
रचहु यज्ञ संभार सब, यहभारा तुव देहु ॥

छन्द चौबोला ।

एवमस्तु कहि गुरु वसिष्ठ मुनि बोले वचन विचारी ।
करिहैं हम सब जस समर्थि मम कारज विघ्न निवारी ॥
अस कहि सभा वसिष्ठ सिधारे विप्रन लियो हँकारी ।
जे धर्मज्ञ वृद्ध मंत्री सब वाजीमख अधिकारी ॥
तिनसों कह्यो करहु मख कारज परिचर लेहु बुलाई ।
सकल कर्मकारी कारीगर सकैं जे सुभग बनाई ॥
दारु कर्म कारक अरु खानक अरु दैवज्ञ सोहाये ।
नट नर्तक शुचि शास्त्रविज्ञाता जे बहु द्रुत जग गाये ॥
अरु जिनको उपयोग यज्ञमें वेदवादि मरयादी ।
बोलहु विप्र हजारन पण्डित वाजीमख प्रतिवादी ॥

सानुकूल सब करहु कर्म यह भूपति शासन मानी ।
सहसन कनक ईंट द्रुत आनहु जेहि वेदी निरमानी ॥
औरहु उत्तम वस्तु मँगावहु जौन यज्ञ उपयोगी ।
औरहु ब्राह्मण विविध बुलावहु रचहु भवन सुखभोगी ॥
विविध अन्न सम्पाति सम्पादहु पानहुँ विविध प्रकारा ।
अतिथि अवनिपाति पुरवासिनहित रचहु भुवन विस्तारा ॥
विविध देश वासी जन आवहिं चारिहुँ वर्ण अपारा ।
तिनको अन्नदान विधि संयुत दीजे करि सत्कारा ॥
खेल सहित दीजे नहिं केहू झेल होइ नहिं दाना ।
मेल राखियो सब प्राणिनसों नहिं अकेल सनमाना ॥

दोहा--काम क्रोध वश जननको, होइ न कछु अपमान ।
सावधान कृतकर्म में, रहहु सदा महिमान ॥

छंद चौबोला ।

जे कारीगर यज्ञ वस्तु के सुंदर विरचन वारे ।
ते सब क्रमते अति विशेषि ते जाहिं विविध सत्कारे ॥
अन्न वसन भूषण अरु भोजन विविध भाँति ते दीजे ।
कमैं न कौनहुँ वस्तु समै महँ चित दै सकल करीजे ॥
सुनि वसिष्ठ शासन मंत्री सब बोले वचन तहाँहीं ।
प्रभु शासन अनुसार करब सब कमी वस्तु कछु नाहीं ॥
जस प्रभु को हमरे शिर शासन तामें परी न भेदा ।
होइ सविधि यज्ञ नरपातिकी पाई कोउ न खेदा ॥
सचिव वचन सुनि सुखीभये गुरु लियो सुमन्त बुलाई ।
कह्यो वचन अवनी अवनीपन नेउता देहु पठाई ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रगण आनहु करि सत्कारा ।
औरहु सर्व देशके मनुजन बोलहु वेगि अपारा ॥

महाराज मिथिलाधिप जिनको जनक नाम अतिशूर ॥
लोक धर्म वेदज्ञ सत्य बल ज्ञान विज्ञानहुँ पूरे ।
तिनको तुमहिं सुमन्त जाइ तहँ ल्यावहु नेउति बोलाई ॥
सांचे रघुकुल के संबंधी ताते कहौं बुझाई ।
तैसे काशिराज प्रियवादी सुर सम जासु अचारा ॥
तिनको तुमहिं जाय लै आवहु दशरथ मित्र उदारा ।
वृद्ध परमधार्मिक केकैपति श्वशुर भूप मणि केरो ॥
सादर जाइ ताहि लै आवहु पुत्र सहित मत मेरो ।
दोहा--महाभाग अंगाधिपति, रोमपाद जेहि नाम ।
राजसिंह सारो सुहृद, तेहि ल्यावहु यशधाम ॥
दक्षिण भूपति कौशला, भानुमान जेहि नाम ।
शूरशास्त्रविद मगधपति, दोउ नृप आनहु धाम ॥

छंद चौबोला ।

राजसिंह शासन अनुसर सब बोलेहु राजन काहीं ।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण जे मधि देशहु माहीं ॥
सिंधु और सौवीरहु सोरठ जे भूपति रणधीरा ॥
न्योत पठावहु सकल महीपन बाकी रहैं न वीरा ॥
छोटे मोटे और भूप जे पृथिवी पीठ निवासी ।
सदल सबांधव आनहु तिनको सत्कारहु सुखरासी ॥
सुनिगुरुवचनसुमन्तयथोचित भूपतिन्योति बोलायो ।
यथायोग्य भूपनके घर जन यथायोग्य पठवायो ॥
जनक आदि जे मुख्य महीपति तिनके आपुहि जाई ।
सादर नेउति सदल निज संगहि ल्यायो अवध लेवाई ॥
गुरुशासन जस भयो ठानितस सकलकर्म अधिकारी ।
कियो निवेदन सबै आइ ते लीजै नाथ निहारी ॥
अति प्रसन्न है गुरु वासिष्ठ तब पुनि पुनि कह्यो बुझाई ।

कोहु को दियो न खेल झेल कारि राखैं मेल सदाई ॥
दाता देइ अनादर कारि जो तौ हठि होत विनासा ।
घरकी सम्पति जाति वृथाही होत लोक उपहासा ॥
यहि विधि गुरु कहि परम प्रमोदित गये भवन मख आसी।
देश देशके सकल महीपति आये लै धन रासी ॥
गुरु वसिष्ठ दशरथपहँ चलि कै कह्यो सुनहु महराजा ।
आये वाजिमेध मख देखन सब धरनीके राजा ॥

दोहा-यथायोग्य कीन्ह्यो सविधि, मैं राजन सत्कार ।
भू भरतार तयार हैं, सकल यज्ञ संभार ॥
तुरत पधारहु यज्ञ गृह, सुदिन पूछि नरनाथ ।
हानि कौनिहूँ वस्तु नहिं, सिद्धि करैं सुरनाथ ॥
देखहु चलि मख बस्तु सब, जस मन तस सब कीन ।
सुनि गुरु वचन महीपमणि, भये महा मुद भीन ॥
तब वसिष्ठ शृङ्गीऋषिहु, चरण बंदि महिपाल ।
सुदिन पूछि गमनत भये, मखशाला तेहि काल ॥
मखशाला प्रविशे सकल, मुनि जन शास्त्र विधान ।
करि आगू शृङ्गीऋषिहि, त्यों वसिष्ठ मतिवान ॥
यज्ञ कर्म आरंभ किय, शास्त्रनके अनुसार ।
दीक्षित भयो भुवालमणि, सहित तीनिहूँ दार ॥

छंद चौबोला ।

यहि विधि ते अरम्भ वाजिमख भयो वसन्तहि काला ।
दिशा बिजय कारि यज्ञ तुरंगम आइगयो तेहि काला ॥
उत्तर सरयू तीर मनोरम होन लग्यो हयजागा ।
शृङ्गीऋषि आगू करि मुनिवर करैं कृत्य बडभागा ॥
वेद शास्त्र पारग धरणी सुर करहिं कृत्य सविधाना ।
कहुँ कहुँ अधिक कर्म करते द्विज यथा सिद्धि अनुमाना ॥

इन्द्र आदि देवनको दीन्ह्यो सविधि भूप मख भागा ।
आहुति परै न वेदीतजि कहुँ न कहुँ कर्मच्युत जागा ॥
कोउ नहिं थकै कर्मकरते द्विज कोउनहिं क्षुधित देखाहीं ।
मूरख कोउ नहिं रह्यो विप्रवर असतपंथ नहिं जाहीं ॥
लाखन विप्र करत नितभोजन शूद्रहु नितप्रति खाते ।
तापस अशन अनेकन करते खात यती सुखमाते ॥
बाल वृद्ध नारी जन रोगी यथा मनोरथ खाहीं ।
नितप्रति भोजन करहिं करोरिन देत तोष नृप नाहीं ॥
दश योजन को मखमंडल भो कोटिन मनुज वसंते ।
देहु देहु अस छाय रह्यो ख भोजन वसन अनंते ॥
देत हजारन कहत हजारन खात हजारन पाँती ।
अन्नकूट गिरि सरिस हजारन अशन हजारन भांती ॥
दिन दिन दून दून भोजन हित बने विविध पकवाना ।
पुरुष नारि देशन देशन ते आवैं नित नित नाना ॥
दोहा--अन्न पान सन्मान ते, सिगरे तोषित होत ।
स्वाद प्रशंसि प्रशंसि द्विज, नृप यश करत उदोत ॥

छन्द चौबोला ।

सब विधि हम संतुष्ट भये अस सुनत अवधपति बानी ।
परसहिं वसन विभूषण भूषित पुरुष नारि छबि खानी ॥
धारे कटक मुकुट कुंडल तनु बिचरहिं देव समाना ।
देहु देहु याचक मुख भाषत लेहु लेहु जन नाना ॥
कर्म कर्म अन्तर धरणी सुर करते हेतु विवादा ।
अपनी अपनी विजय चहत सब यथाशास्त्र मरयादा ॥
निज २ आसन बैठि बैठि द्विज नितप्रति कर्म कराहीं ।
करहिं अवाहन सकल देवतन भाग देन मख माहीं ॥
होता शृङ्गीऋषि वसिष्ठमुनि शिक्षा मंत्र विज्ञाता ।

पढि पढि मंत्र देत देवनको भाग सराग विख्याता ॥
सबै षडङ्ग वेद पाठक द्विज बहु श्रुत व्रती सुजाना ।
कारक वाद विवाद शास्त्र मत त्रयकालिक जिन ज्ञाना ॥
वेद शास्त्र विधि सबै निवाहक बाहक हयमख भारा ।
दाहक सकल शोक संसारिन गाहक गुणन उदारा ॥
सविधि रत्न मंडित बहु खंभन अति विशाल मखशाला।
छाये वसन अनूपम जिनमें बंध सुरभि शुभ माला ॥
बडे बडे बहु रत्न चमंकत जिमि सप्तर्षि अकाशा ।
रंभ खंभ मण्डित अखंड अति तोरण तडप तमाशा ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा पतियुत कर्म कराहीं ।
वाजिमेध वाजा छबि राजी बँध्यो तुरंग तहाँहीं ॥
दोहा--पुनि तुरंगको विसस तहँ, कौसल्या करि दीन ।
कियो होम करि घ्राण वपु, दशरथ नृपति प्रवीन ॥

छन्द चौबोला ।

वेद विधान कियो मख राजा हीन कर्म कछु नाहीं ।
शृङ्गीऋषि अरु गुरु वसिष्ठ मुनि करवायो नृप काहीं ॥
प्राची दिशि होता कहँ दीन्ह्यो रघुकुल वंश प्रधाना ।
अध्वर्यहि पश्चिमादिशी ब्रह्महिं दक्षिण दिशि मतिवाना ॥
उद्गातहि उत्तर दिशि दीन्ह्यों यज्ञ दक्षिणा भारी ।
अश्वमेध मख कियो समापत दै पुहुमी निज सारी ॥
याहिविधि सकल राज्य दै विप्रन भयो सुखी नरनाहू ।
मुनिवर आय विनय कीन्ह्यो पुनि यह हमरे उर दाहू ॥
यह पृथिवी रक्षण में समरथ आपुहि एक भुवाला ।
हम ब्राह्मण जप तप व्रत जानैं लेब न मही विशाला ॥
निष्क्रय देहु कछुक भूपति मणि माणि सुवरण पटगाई ।
सदा उग्र शासन रहिये प्रभु आपु सकल महि सांई ॥

सुनि द्विजवचन हर्षि भूपतिमणि निष्क्रय बख्शनलागे ।
दियो लाख दशसुरभी सुन्दरि दान शील अनुरागे ॥
सौ करोरि मोहर पुनि दीन्हों मुद्रा चौगुन तासू ।
दियो ऋत्विजन विविध दक्षिणा हयगयवसनअवासू ॥
शृङ्गीऋषि अरु गुरु वसिष्ठतहँ विप्रन कियो विभागा ।
हर्षि विप्र सब दै आशिष पुनि बोले युत अनुरागा ॥
सब विधि हम तोषित नरनायक अब नाहिं आश हमारे।
द्विज आशिष प्रभाव ते पूजैं सब मनकाम तुम्हारे ॥
दोहा--आये देशन देश ते, जे याचक करि आश ।
दियो कोटि मोहर तिन्हैं, दारिद कियो विनाश ॥

छंद चौबोला ।

दानि शिरोमणि दशरथ भूपति बैठि रह्यो जेहि काला ।
एक दरिद्री द्विज तहँ आयो बोल्यो वचन रसाला ॥
दानी दशरथ राज तुम्हैं हम सुनियत हैं जग माहीं ।
करि मख कोटिन द्विजन दान दिय हमरे लेखे नाहीं ॥
पायो अबहुँ न हम तुम्हरे मख देहु होहु जो दानी ।
सुनत अवधनायक बिहँसे अति लियो ताहि ढिगआनी ॥
नवग्रह इव नवरत्न कलित कल कंकण रह्यो जो हाथा ।
सो सादर पहिराइ दियो तेहि पुनि पुनि नायो माथा ॥
योजन दशमख मण्डल अन्तर दश दिशि मच्यो दकारा ।
मनु महिपमणि महिमंडल ते दियो निकारि नकारा ॥
पुनि वन्दन कीन्हों द्विज वृन्दन अजनन्दन अविषादा ।
कोटिन विप्र वदन ते पायो कोटिन आशिर्वादा ॥
भयो कृतारथ यज्ञ यथारथ करि स्वारथ सिधि मान्यो ॥
कछु न अकारथ भो धर्मारथ परमारथ हुलसान्यो ॥
शृंगीऋषिको बोलि अवधपति कह्यो वचन शिरनाई ।

कुलवर्द्धन अब करहु यज्ञ प्रभु जाते सुत हम पाई ॥
शृंगीऋषि तब कह्यो नरेशहि अब नहिं होहु दुखारी ।
पैहो परम प्रबल कुलनायक सब लायक सुत चारी ॥
सुनि मुनिवरके बचन अवधपति लह्यो महासुख धामा ।
मुनि पद पंकज बार बार किय दंड समान प्रणामा ॥
दोहा--शृंगीऋषि मेधा विमल, कियो दण्ड युग ध्यान ।
सावधान ह्वै नृपति सों, लाग्यो करन बखान ॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी.सी. एस. आई कृते श्रीरामस्वयंवरे द्वितीयो यज्ञप्रबन्धः ॥ २ ॥

छन्द चौबोला ।

पुत्र इष्ट हम करब अथर्वण मंत्र सिद्धि जेहि माहीं ।
अति सुकुमार कुमार चार प्रभु दैहैं हठि तुम काहीं ॥
अस कहि ऋषिन बोलि शृंगीऋषि पुत्र इष्ट आरंभा ।
लाग्यो करन वेदविद संयुत हवन कियो बिन दंभा ॥
भाग देन हित किय आवाहन सकल देवतन काहीं ।
प्रगट भये गन्धर्व सर्व परमर्षि सिद्धि सुर ताहीं ॥
लियो यथाविधि भाग देव सब भयो महा दरबारा ।
समय पाय विधि सों सिगरे सुर ऐसे वचन उचारा ॥
सुनहु पितामह तुव वर केवल रावण भयो बलीना ।
करत महाबाधा हम सबको अति व्याकुल करि दीना॥
सुरपति सकत न शासन करि कछु रावणसों रण हारे ॥
ह्वै प्रसन्न वरदान दियो तुम का सुर करहिं विचारे ।
क्षमा करत तुव वर विचारि सुर को तुव वर नहिं मानै ।
ह्वै गो महाबली दशकन्धर तृण सम देवन जानै ॥

राजहिं जीतन चढत देवपुर राज करत उतपाता ।
महा महासुर ब्रह्म ऋषिनसों बैर किये सुर ताता ॥
पूरब एक समय ताको सुत जीति सकल सुरलोका ।
पकरि लियो वासवको रणमें दियो सबन सुर शोका ॥
अब पुनि चोपि चटक अमरावति चाहत करन चढाई ।
पकरन चहत देवपतिको पुनि तुव वरकी प्रभुताई ॥

दोहा--गन्धर्वन देवन द्विजन, यक्षन ऋषिन प्रतक्ष ।
बार बार पीडत रहत, तुव वर पाइ सपक्ष ॥
तापित तासु प्रताप ते, तपन तापित अति मन्द ।
बहत पवन ताके निकट, तेहि रुखराखि स्वछन्द ॥
दशशिर भ्रुकुटी कुटिल लखि, तरलतरंग निकाइ ।
मानिभीति वारिधि विशद, सर सम थिर ह्वै जाइ ॥

छन्द चौबोला ।

सुनहु देवपति सब देवनको रावणते अति भीती ।
महाघोर वरजोर लंकपति सकै कौन सुर जीती ॥
तात अब कछु तासु वधनकी कीजै नाथ उपाई ।
ना तो सुर निवास हित दूसर दीजै स्वर्ग बनाई ।
यहि बिधि सब देवन पुकार सुनि कारि विचार करतारा ।
बोल्यो वचन सभा माधि सुंदर सुनहु देव युत दारा ॥
हंता दशकन्धर को यह जो वसत चराचर माहीं ।
और उपाय तासु वधकी अब समुझि परत कछु नाहीं॥
महा कठिन तपकारि दशकन्धर पूरब वर अस मांगा ॥
यक्ष रक्ष दानव देवनसों अभय होहुँ सब जागा ॥
मैं ताको तप ताकि तुरत तेहि दीन्ह्यों अस वरदाना।
अवध होइ तैं सुरासुरन ते होइ बडो बलवाना ॥
पै अज्ञानते मानि तुच्छ अति नरते अभय न याँचा ।

तातें मनुज हाथ ताकर वध ह्वैहै यह मत साँचा ॥
चारि वदनके वदन विनिर्गत वचन सुनतऋषि देवा ।
अति अपार आनंद मानि मनकरन लगे विधि सेवा ॥
यहि विधि भाषत वचन परस्पर देव और करतारा ।
तेहि अवसर उत्तर दिशिमें अति होत भयो उजियारा ॥
धरणी गगन दशौ दिशि छायो कोटि भानु सम भासा ।
सबके मूँद गये दृग तेहिक्षण देखि अपूर्व प्रकासा ॥

दोहा--तेहि प्रकास के मध्यमें, पीत वसन फहरान ।
खगनायकके पक्ष को, पवन प्रचण्ड बहान ॥

छन्द चौबोला ।

तेहि अवसर तहँ देवसभा मधि प्रगट भये जग स्वामी ।
अखिल चराचर जीव निवास निरन्तर अन्तरयामी ॥
शंख चक्र शारंग गदा नंदक सोहत भुज चारी ।
खगपति पीठि सवार उदार मनहुँ घनश्याम तमारी ॥
कटक मुकुट कुंडल अंगद भुज चरण कमल कयूरा ।
मेदुर मेघनघटा छटा तन काम कोटि मद चूरा ॥
पीत वसन फहरानि सुछवि जिमि छन छवि घन छहरानी ।
अलकावली लसति मुखशशि जिमि जलदावली निरानी ॥
सोहत हार हिये हीरनको हिमकर सरिस बिशाला ।
अंबरख कौस्तुभ कदंब छवि पद प्रलंब वनमाला ॥
करुणा ऐन मैन मद मोचन नलिन नयन अरुणारे ।
दिवस रैन जिन सैन भैन प्रद कोटिन अधम उधारे ॥
कुण्डल लोल कपोल गोल पर लेत मोल मन काहीं ।
हँसनि अतोल अडोल देति सुख संयुत बोल सदाहीं ॥
कण्ठकान्ति कमनीय देखि भो कंबु अंबुको वासी ।
शिला नीलमणि भै जड ताकि उर उडखग लखि चौरासी ॥

रम्भा खम्भ जघन द्युति देखत नशत जनत जग माहीं।
चारु पदारविन्द जेहि सज्जन सुमन मलिन्द बसाहीं॥
त्रिभुवन भूप अनूप रूप भव कूप उधारन हारा।
अज अनादि अव्यक्त अनन्त अनेकनि धृत अवतारा॥
दोहा—देखि देव जगदीशको, कीन्हे जयजयकार।
वंदे अति सानन्द सुर, सहित शंभु करतार॥

छन्द चौबोला।

ब्रह्मा शङ्कर सुर सुरेश ढिग चलि आये जगदीशा।
करन लगे स्तुति चहुँ दिशि सुर धरे चरणमहँ शीशा॥
प्रस्तुति करि सम्पन्न नाथकी लिखि प्रसन्न सब देवा।
बोले वचन भयातुर कातर करत चरणकी सेवा॥
त्राहि त्राहि शरणागत आरत आरति हरहु मुरारी।
तुव रोपित पादपरण दाहत यह दशवदन दवारी॥
वासुदेव हे विष्णु विश्वपति जग मंगल अब कीजै।
सुर सांकरे सहायक दीनन दया दान द्रुत दीजै॥
तुमहिं न कछु सिखवनके लायक केवल सुरति करावैं।
जब जब महा होति भय देवन तब तब तुम पहँ धावैं॥
देवनकी विनती सुनि जगपति लेहु मनुज अवतारा।
धर्म अधार उदार अवधपति होवहु तासु कुमारा॥
जाको तेज महर्षि सरिस जग विदित सु दशरथ राऊ।
शान्त दान्त वेदान्तन पारग चाहत तुवसुत भाऊ॥
श्री कीरति लज्जा इव जाकी लसहिं तीनि महरानी।
तिनहींके सुत होहु चारि वपु सुन्दर शारँगपानी॥
नर अवतार धारि जगनायक करहु सुरन कर काजा।
सकल लोक कंटक लंकापति हनहु होउ रघुराजा॥
सो अवध्य देवनके करते सिद्ध ऋषिन दुखदाई।
गंधर्वन यक्षन विद्याधर जीत्यो सुर समुदाई॥

दोहा–रावण को सुनि नाम सुर, करत परावन साथ ।
दशकंधरके कंधरन, करहु माथ बिन नाथ ॥

छंन्द चौबोला ।

गाढो गर्व देव गंधर्वन सर्वन करत दुखारी ।
महामूढ मदमत्त मोहरत बाधत विबुध हँकारी ॥
पुण्यजीव जे स्वर्ग विहारी नंदनवन संचारी ।
सुर सुंदरी संग विहरत जे हरत तासु हठि नारी ॥
मुनिवर निरत महातप कानन पंचानन इव नासैं ।
वरबस धरत अप्सरन मगमहँ सून करत सुखासैं ॥
तुम रक्षक शरणागत पालक दूसर दृग न देखाता ।
जगभावन पावन सुखछावन रावन करहु निपाता ॥
सुर मुनिशुनि समरथ जगनायक परे शरणमहँ आई ।
तुम त्राता दाता अभीत के माता पिता सदाई ॥
देव यक्ष गंधर्व सिद्ध मुनि आरत वचन पुकारैं ।
तुमहिं छोडि यहि काल काल इव को दशमुख संहारैं ।
तुम्हीं हो सब देवन के गति जगपति विपति विनाशी ॥
नाथ परमतप तुमहिं परमतप सन्तापित सुखराशी ॥
आशु अमरपति हनन अमरअरि अवनिचरण मनदीजै।
लीला ललित लाभ लोगन को मनुज लोक महँ कीजै ॥
यहि विधि सुनि देवनकी वाणी हर्षित शारँगपानी ।
सर्व लोक वंदित रण पंडित मंडित शोभ अमानी ॥
सुरा सुराधिप चराचराकर नारायण जगस्वामी ।
विधियुत सकल सुरन सों भाष्यो सब उर अन्तरयामी ॥
दोहा–सुनहु त्रिदश अस वचन मम, धर्मविवश सति मानि ।
भीति रीति त्यागहु सबै, जीति आपनी जानि ॥

तुम्हरे हितहि हेत हम हरबर करि आहव अति घोरा।
जाति नाति सुत सचिव सुहृद युत भ्रात नात बरजोरा॥
पूर क्रूर दशकंठ कदन करि तब विकुण्ठ कहँ जैहौं।
सुर सज्जन गो द्विज पालन करि धरा सुधर्म चलैहौं॥
एकादश सहस्र संवत कोशलपुर होहुँ निवासी।
देहौं सानुकूल सुख सन्तन सुर द्विज कंटक नासी॥
यहि विधि कहि सिगरे देवनसों मधुर वचन भगवाना।
मनुज लोक अवतार लेनको कीन्ह्यों मनहिं विधाना॥
अवधपुरी निज जन्म भूमि करि रघुकुल करहुँ प्रकासा।
अस विचारि ह्वै विष्णुचारि वपु हरन देव मुनि त्रासा॥
कियो विचार चारि भुज दशरथ होवैं पिता हमारे।
तीन बंधु बाँकुरे विजयकर समर शूर अनियारे॥
प्रभुके वचन सुनत सुर मुनिगण मानि महा मुदरासी।
सहित स्वयंभु शंभु हरषे अति प्रस्तुति विमलप्रकासी॥
तहँ गन्धर्व लगे कल गावन नचहिं अप्सरा नाना।
पायो मनहु लाभ जीवनको मिले सकल सुरथाना॥
पुनि पुनि करहिं दण्डवतप्रभुको पुनिपुनि मिलहिं सुखारी।
पुनिपुनि प्रभुको विनय सुनावत गुनि गुनि गिरा उचारी॥
करुणासदन वदन अवलोकत कोटि मदन मदहारी।
करहु ऐसही सही नहीं अब दीजै सुरति बिसारी॥
दोहा--हम अनाथ तुम नाथ हौ, काज अवशि सनाथ।
धरहु माथमें हाथ अब, सुनि विनती सुख गाथ॥

कवित्त।

महा मदवारो देव दर्पन दलनवारो उग्रतेजवारो शक्र शत्रुसानवारो है॥ विधिवरवारो लंकनगरीनिवासवारो सदा जयवारो युद्ध कबहूँ

न हारो है ॥ रावणको मारो प्रभु कुल परिवारो युत रोदन करायो साधु देव बहु वारो है ॥ सुयश पसारो पुनि धामको पधारो निज रावरे सों कौन रघुराज रखवारो है ॥

छंद चौबोला

दीननके पारायण श्रीनारायण सुनि सुर बैना ।
जानत रहे सुने सब कारन तदपि मानि मुद ऐना ॥
गयो गिरा गीर्वाणनसों गुणि बहुरि बतावहु बाता ।
कौन उपायपाय सुर ऋषि गुणि करहिं लंकपति घाता ॥
सुनत विष्णुके वचन अमरगण कह्यो चरण शिर नाई ।
मनुज रूप धारि दशरथ सुत ह्वै नाशहु राक्षस राई ॥
रावण परम भयावन संगर करि सबन्धु संहारा ।
करहु पुनीत पुहुमि पदरजसों ह्वै अवधेश कुमारा ॥
पूरब कियो तीव्र तप रावण सहसन वर्ष सनेमा ।
ह्वै प्रसन्न ब्रह्मा वर दीन्ह्यो पायो शठ अति क्षेमा ॥
यद्यपि सबके पूर्वज लोकन कर्त्ता है करतारा ।
रावण के वर देत माहिं कछु कियो न मनहिं विचारा ॥
अति तोषित दीन्ह्यो अनेक वर तैं अवध्य सुर हाथा ।
तोहिं भीति काहू ते है नहिं मम वरवश दशमाथा ॥
मानि मर्कटन मनुज नीच अति तिनहिं दियो बिसराई ।
लहि विरंचि वर महा दर्प भरि बस्यो लंक गढ जाई ॥
जात्यो यम कुबेर वरुणहुको सुरपुर करी चढाई ।
सकल राक्षसन देवनसों तहँ अतिशय परी लराई ॥
तासु तनय घननाद महारथि समर शक्र गहि लीन्हो ।
रावण अपनो शासन सुरपुर फेरि सकल थल दीन्हों ॥
दोहा--कपि नर कर माँग्यो नहीं, अभय हमारे भाग ।
तातें मानुष रूप धारि, करहु घात बडभाग ॥

छंद चौबोला।

नाथ करत अब महा उपद्रव हरत तुरत सुरदारा।
राखि राखि राक्षस थल थलमें तीनिहुँ लोक उजारा॥
जानहु सब कारण सुरनायक पूछहु कस जनु भोरे।
विबुध विप्र मुनि धेनु धर्म गति लगी हाथ अब तोरे॥
सुनि देवन के वचन विष्णु प्रभु पुनि पुनि मनहिं विचारे।
धरा धर्म आधार अवधपति होवैं पिता हमारे॥
दशरथ तनय होब निश्चय करि विधिसों माँगि बिदाई।
अन्तर्धान भये जगनायक मुद महर्षि उपजाई॥
पुत्रइष्टि सुतहीन अवधपति करन लग्यो तेहि काला।
हवन करत विधि मंत्र सहित शृंगीऋषि तेज विशाला॥
तहँ यजमान भूपके सन्मुख हवन कुण्डते प्यारो।
अतुलित प्रभा महाबल सुंदर तीनि लोक उजियारो॥
श्याम शरीर अरुण अंबर तनु दृग विशाल अरुणारे।
सोहत हरित मूछ शिर केश सुवेश राम तनु सारे॥
भयो उदित मन विमल दिवाकर दिव्य विभूषण धारी।
उन्नत शैल शृंग सम अंग अनंग होरि हिय हारी॥
दर्पित शार्दूल सम विक्रम लक्षण लक्षित आछे।
करमें कनकथार लीन्हें कटि कनक काछनी काछे॥
परम दिव्य पायससों पूरित रजतपात्रते ढांपी।
मनहुँ अंक कीन्हे निज नारी प्यारी छाबिमें छापी॥

दोहा—लपटन माधि वर लपटसों, दश दिशि करत प्रकास॥
लिये थार मायामयी, मानहु रूप हुतास॥

छंद चौबोला।

पायस चरी पुरुष थारी लै दोऊ पाणि पसारे।
कह्यो वचन भूपति दशरथसों मानहु बजत नगारे॥

प्राजापत्य पुरुष मोहिं जानो तुव हित लेतहि आयो ।
तब कर जोर कह्यो कोशलपति हे प्रभु भले सिधायो ॥
कहहु प्रसन्न वदन अब मोसन करहुँ कौन सेवकाई ।
प्राजापत्य पुरुष तब बोल्यो बार बार मुसकाई ॥
देवनको पूजन तुम कीन्हों ताको फल यह आयो ।
धन अरोग वर्द्धन सुतदायक तुव हित देव बनायो ॥
लेहु दिव्य पायस भूपति मणि दीजै रानिन जाई ।
अवशि पाइहौ चारि पुत्र तुम जेहि हित यज्ञ कराई ।
ज अनुरूप पट्टरानी तव तिन भोजन हित दीजै ।
पाय प्रबल सुत चारि चक्रवर्ती महि राज करीजै ॥
तब नरेश अतिशय प्रसन्न ह्वै शिर धरि लीन्हो थारी ।
देवदत्त देवान्न प्रपूरित कनकमयी छबि वारी ॥
प्राजापत्य पुरुष चरणनको वंद्यो बारहिं बारा ।
जन्म रंक जिमि लहै देव तुम तिमि सुख लह्यो अपारा ॥
तौन पुरुषको दै परदक्षिण भयो कृतारथ राजा ।
सोऊ अन्तर्धान भयो करि अवधराज कर काजा ॥
पुत्रइष्टि अद्भुत करि भूपति किय समाप्त सविधाना ।
बजन लगे तब अवध नगरमें थलथल निकर निसाना ॥
दोहा—ज्यो मनहुँ अन्तः पुरहि, शारद मोद मयंक ।
भूपति कांता कुमुद गण, विकासित भये निशंक ॥

छंद चौबोला ।

कनक थार लै भूभरतार अपार अनंद प्रकासा ।
सजल नैन पुलकित शरीर द्रुत गौर निवास अवासा ॥
वचन कह्यो अति मंजु मनोहर कौशल्या गृह जाई ।
सुमुखि सयानि लेहु यह पायस सुतदायक सुखदाई ॥
दिया अर्द्ध पायस कौसल्यहि जौन अर्द्ध रहि गयऊ ।

तामें अर्द्ध सुमित्राहि दीन्ह्यो अद्ध युगल करि दयऊ ॥
आधो दियो कैकयी को नृप पुनि आधो जो बाँचो ।
बहुरि विचारि सुमित्राहि दीन्ह्यो तासु नेह महँ राँचो ॥
यहि विधि भाग विभाग दियो करि सानुराग महिपाला ।
भईं सकल सनमानवती ते पायस पाय उताला ॥
उत्तम अवध नृपति महरानी मनकी तजी गलानी ।
उदय अपूरब आनँद उर में भईं सकल छबि खानी ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा पायस भोजन कीन्ह्यो ।
भानु कृसानु समान तेज सब उदर गर्भ धरि लीन्ह्यो ॥
गर्भवती युवती अपनी लखि पूरणकाम नरेशा ।
बसत भयो सानंद अवधपुर सरयूदक्षिण देशा ॥
राज्यो अवध भुवाल काल तेहि रूप विशाल रसाला ।
सुर सुरपाल महर्षि माल मधि जिमि कृपाल जगपाला ॥
देव सरिस द्युति देह प्रकासी अनुपम आनँदरासी ।
पुत्र उछाह लखनके आशी भये अवधपुरवासी ॥

दोहा—देवन हित भूपति भवन, किय हरि गर्भ निवास ।
को दयालु अस दूसरो, जैसो रमानिवास ॥
भये गर्भगत विष्णु जब, दशरथ भवन मुरारि ।
तब सब देव बोलाइकै, कह्यो वचन मुखचारि ॥

छंद चौबोला ।

जन्म लेत जगपति भूपति गृह रावणके वधहेतू ।
महावीर रणधीर धर्म धुर धारण करि खगकेतू ॥
तुम सब तासु सहाइ हेतहित धरहु कपिन अवतारा ।
कामरूप अरु महाबली वपु बली वदन आकारा ॥
महाशूर मायाविद पूर प्रभंजन वेग प्रचंडा ।
नीतिदक्ष मतिवन्त स्वच्छ प्रत्यक्ष रक्ष कृत खण्डा ॥

महादुरासद दुरा धर्ष रण हर्ष अमर्ष प्रतापी ।
सब उपाय ज्ञाता तनु त्राता मृगपति रूप कलापी ॥
सर्व अस्त्र ज्ञाता गुणधाता सुधापान इव कीने ।
रामकाज हित होहु जाइ कपि अमर अनन्त प्रवीने ॥
मुख्य अप्सरा अरु गन्धर्वी त्यों देवनकी दारा ।
विद्याधरी किन्नरा नामा त्यों वानरी अपारा ॥
यक्षसुता अरु ऋक्षतियनमें जनमहु अमित कुमारा ।
बल विक्रम बुधि तुल्य आपने वानर रूप अपारा ॥
ऋक्ष प्रधान सुजांबवान इक मैं सिरज्यों बलवाना ।
पूरब एकसमय जमुहातहि मम मुख कढ्यो महाना ॥
मुनि विरंचिको शासन सुरगण एवमस्तु कहि बानी ।
सिरजत भये पुत्र अपने सम वानरवपु बलखानी ॥
ऋषि विद्याधर सिद्ध महोरग चारण आदिक देवा ।
सिरजत भये कुमार कीशवपु करन रामकी सेवा ॥

दोहा—वासवको सुत होत भो, बाली वानर राज ।
तासु भ्रात सूरजसुवन, भो सुग्रीव दराज ॥

छंद चौबोला ।

भयो कुमार देवगुरुको तहँ तार नाम बलवाना ।
महामुख्य मर्कट मण्डलमें महावीर मतिमाना ॥
भयो कुबेरकुमार गन्धमादन बलबुद्धि निधाना ।
भयो विश्वकर्मा कुमार नल नाम कीश बलवाना ॥
पावकपुत्र नील नोखो कपि पावक तेज प्रकाशी ।
भयो वानरी महा वाहिनी सेनापति बलराशी ।
पुनि अश्विनीकुमार कुमार भये युग द्विविद मयंदा ॥
पितु सम उभै परम शोभाकर मानहुँ मत्त गयंदा ॥

जन्यो सुषेण नाम वानर यक वरुण देव जलराई ।
जन्यो पुत्र परजन्य सरभ कपि जेहि विक्रम विपुलाई ॥
मारुतको औरस कुमार भो महाबली हनुमाना ।
अतिशुभांग वज्रांग सांग बल जेहि जव गरुड समाना ॥
सकल वीर वानरी वाहिनी बुद्धि शिरोमणि साँचो ।
दोरदण्डबल अण्ड खण्ड बीरबण्ड लीक विधि खाँचो॥
औरहु बहुत देव सिरजे कपि निज बल बुद्धि समाने ।
दशकन्धर वध निरत सबै कपि संगर शूर सयाने ॥
महाबली विक्रम विक्रांत क्रांत मन्दर गिरि कीन्हे ।
सकल कामरूपी मायावी रण रिपु पीठि न दीन्हे ॥
महामेरु मन्दर संकाश प्रकाशित विशद शरीरा ॥
ऋक्ष और गोपुच्छ छिप्र सब प्रगट भये रणधीरा ।

दोहा--जौन देवको रूप जस, यथा पराक्रम ओज ।
पृथक्पृथक् तस तस अमर, प्रगटे मंडित मोज ॥
गोलांगूलनमें जने, निज सम सुत बहु देव ।
कोउ ऋक्षनमें प्रगट भे, कोउ किन्नरी तदेव ॥

छंद चौबोला ।

कोउ अप्सरन मुख्य प्रगटे कपि विद्याधर महँ सोऊ ।
कोउ पन्नग कन्या गन्धर्वी तथा किन्नरिन कोऊ ॥
देव महर्षि सिद्ध गन्धर्वहु चारण नागहु यक्षा ।
सिद्ध किंपुरुष विद्याधर गण तारक उरग प्रतक्षा ॥
जने सकल निज निज सम बल सुत हृष्ट तुष्ट बल पुष्टा।
महा भीम काया जिन केरी अरिगण पर अति रुष्टा ॥
जब चाहैं तब करैं रूप तस बहु वानर वनचारी ।
शार्दूल अरु सिंह दर्पतन पादप शिला प्रहारी ॥

नख अरु दन्त अस्त्र हैं जिनके सकल अस्त्रके ज्ञाता ।
मन्दर मेरु डुलावन वारे महा द्रुमन उतखाता ॥
करत छोभ निज वेग वारिनिधि पद क्षिति दारन हारे ।
एक फलङ्कहिं करत महोदधि गगन गैल गतिवारे ॥
खंडत घन घमंड भुज दंडन पकरैं शुंड वितुंडा ।
गिराहिं गगनचर घोर शोर सुनि मनहु फटत ब्रह्मंडा ॥
ऐसे पवन वेगके मर्कट कोटि कोटि प्रगटाने ।
कोटि कोटि यूथप तिनके भे कोटि कोटि अधिकाने ॥
विन्ध्य मेरु मन्दर हिम भूधर कन्दर अन्दर बासी ।
और अनेकन अवनि चरणमें कानन केलि प्रकासी ॥
सूरजसुवन सुकण्ठ शक्रसुत वालि भये दोउ भाई ।
महाबली वानर वसुधापति करैं कीश सेवकाई ॥
दोहा--ता सुषेणहु नील नल, पनस ऋषभ बलवान ।
जाम्बवान आदिकन में हनूमान परधान ॥

छंद चौबोला ।

सिगरे समर विशारद कपि वर गरुड़ गर्व गतिहारी ।
विहरत विपिन हनत गज सिंहन महाभुजग भयकारी ॥
कपिकुलपालक महाबाहु वर वाली भयो अधीशा ।
पाल्यो मर्कट ऋक्ष सैन निज भुजबल मनहुँ दिगीशा ॥
महाशूर वानरी सैन्य सों पूरित भे सब धरणी ।
कानन कुधर सिंधु सरिता सर बसे करत कुल करणी ॥
मेघघटासे शैल छटासे कूरन करत कटासे ।
सिंह सटासे फटिक अटासे फेरत पुच्छ पटासे ॥
महाभीम बल सीम धीम नहिं शाखामृग बहुताई ।
महिमंडलमें छाय रही करिबे हित राम सहाई ॥

श्रीमद्रामायणके अनुसर इतनी कथा बनाई ।
मेरो इष्टदेव रामायण सज्जन अति सुखदाई ॥
वेदसमान जासु महिमा महि मानत देव ऋषीसा ।
चौविस सहस एक आखर जेहि करतमहाअघखीसा ॥
आदि काव्य ब्रह्मा वरदानिन तेहिसम द्वुतिय न कोई ।
श्रीवैष्णव मंडली परमधन सब मत संमत सोई ॥
गुरु निदेश मोहिं पाठ करनको बालकांड पर्य्यन्ता ।
ताते बालकांड विस्तृत मैं विरचौं कथा सुसन्ता ॥
तुलसिदास भाषा रामायण रच्यो सन्त सुखदाई ।
महामनोहर आशु प्रसादक संमत वेद सदाई ॥
दोहा--जहँ तहँ तासु प्रबंध लै, ताहूके अनुसार ।
रामस्वयंवर रचहुँ मैं, जन्म व्याह विस्तार ॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराजश्रीमहाराजावहादुर, श्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजासिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीरामस्वयंवरे अवतारप्रसंगे तृतीयप्रबन्धः ॥ ३ ॥

सोरठा ।

रामायणको मूल, वाल्मीकि नारद मिलन ।
प्रश्न कियो अनुकूल, उत्तर दीन्ह्यो देवऋषि ॥
रामायण जग माहिं, अहैं देव मुनिकृत बहुत ।
अस प्रसिद्ध कोउ नाहिं, वाल्मीकिकृत जस विमल ॥
रह्यो न कवि अस नाम, वाल्मीकि जबलों न जग ।
जब अवतरचो उदाम, वाल्मीकि मुनि आदि कवि ॥
दोहा--वाल्मीकि मुखते लियो, जो वेदन अवतार ।
सोइ रामायण नाम भो, हरि भे भूपकुमार ॥
ताको कारण सो भयो, सकल वेद मर्याद ।

वाल्मीकि नारदहुको, भयो विमल संवाद ॥
सबते वर पर सबहिते, को सब गुणकी खानि ।
कौन आज यहि लोकमें, नारद कहहु बखानि ॥
वाल्मीकि पूछो जबहिं, तब नारद चितचाय ।
कह्यो गुणाकर जानु मुनि, हैं इक रघुकुल राय ॥
गुण वर्णनके व्याजते, हुलसत देव ऋषीश ।
वरण्यो रामायण सकल, नाय रामपद शीश ॥
रामायण सोइ मूल है, पढतहिं पाप परात ।
परमारथ पर पुर सुपथ, पद पद प्रेमहि पात ॥
मैं कीन्ह्यों कोशलनगर, वर्णन मति अनुसार ।
भयो जौन कारण अवध, नारायण अवतार ॥
भूपयज्ञ वानर जनम, आदिक बहु इतिहास
वाल्मीकि मुनिकी कथा, कियो न कछुक प्रकास ॥
जेहि विधि रामायण रच्यो, जस प्रण कारण जौन ।
जस गलानि विधि बानि जस, अब मैं वरणौं तौन ॥

छंद चौबोला ।

वाल्मीकि सुनि नारदमुखते वचन परम सुख पायो ।
करि अर्चन उपचार अष्ट युग चरणकमल शिर नायो ॥
लहि महर्षि सत्कार अपार प्रमोदित देव ऋषीशा ।
हरिगुण गावत बीन बजावत चल्यो सुमिरि जगदीशा ॥
जानि प्रभात महर्षि गयो मज्जन हित तमसा तीरा ।
जो सुरसरिके निकट बहति मर्कत सम नीर गँभीरा ॥
वाल्मीकिको शिष्य विचक्षण भरद्वाज जेहि नामा ।
लै मुनि वसनकलशकुश आदिक गयो संग मतिधामा ॥
तमसातीर जाय निज शिष्यहि तट लखि कह मुनिराई ।

भरद्वाज सुन विगत पंक यह तीरथ ऋषि सुखदाईं ॥
अति रमणीय स्वच्छ निर्मल जल ज्यों मन सन्त सदाही।
धरहु कलश वल्कल मोहि दीजै मज्जन करौं इहाहीं ॥
उत्तम तमसा तीर्थ दुरितहर मम मानस सुखदाईं ।
सुनि गुरुवचन दियो वल्कल तहँ भरद्वाज मुनिराईं ॥
शिष्य पाणि ते लै बल्कल निज इन्द्रियजित मुनिनाथा ।
विचरन लाग्यो विपिन विलोकत रह्यो न तहँ कोउ साथा॥
तहँ तमसा के विपुल पुलिन में लख्यो करांकुल जोरा ।
विहरत मिथुन भावमहँ अतिरत करत मनोहर शोरा ॥
तब निषाद आयो इक पापी मुनिके लखत तहाँहीं ।
मारचो मिथुन विहंग बाण इक मरचो क्रौंच क्षणमाहीं ॥
दोहा--लगत बाण तलफत विहँग, परचो सशोणित गात ।
हत पति देखि करांकुली, रोदन कियो अघात ॥
अरुण शीस बेधित विशिख, पुनि पुनि रमण निहारि ।
सहचारी पतिहीन तिय, रोई करुण पुकारि ॥
रोवत निरखि करांकुली, हतपति कीन निषाद ।
वाल्मीकि मुनिराजको, उपज्यो विपुल विषाद ॥
करुणा वरुणालय ललित, अतिशय मृदुल स्वभाव ।
सजल नयन मंजुल बयन, बोलत भे ऋषिराव ॥
अति अधर्मनहिं सहि सके, मुनि करुणा रसभीन ।
अतिशय दुखी करांकुली, देख्यो कंत विहीन ॥
वाल्मीकि भाष्यो वचन, तेहि निषाद प्रति जौन ।
छंदरूप ह्वै शारदा, प्रकट भईं भव तौन ॥
पूर्व रही नहिं छंद गति, रही गद्यमय वानि ।
युग षोडश अक्षर विमल, छंद अनुष्टुप जानि ॥

यद्यपि साधारण कह्यो, वाल्मीकि मुनिराज ।
छंद अनुष्टुप वचन ते, प्रगट्यो द्रुतहि दराज ॥
जानि शारदा रूप तिहि, छंद मूल सम वेद ।
कियो न भाषा छंदमें, अवगत आर्ष अभेद ॥

श्लोक--मा निषाद प्रतिष्ठान्त्वमगमः शाश्वतीस्समाः ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥ १ ॥

अर्थ--हे निषाद! बहुत वर्ष लौं तुम प्रतिष्ठा न पावो काहेते, कामते मोहित मिथुन भावको प्राप्त, ऐसे एक क्रौंचको तुम वध कियो ॥

दोहा--अस बत्तिस अक्षर कढे, छंदबद्ध सुश्लोक ।
मुनि तेहि भाषि निषाद कहँ,पुनि विचारि किय शोक ॥

छंद चौबोला ।

वचन अनुष्टुप छंदबद्ध सो मुनि चितचर्चन लागे ।
अति शोकारत सकुनि देखि मैं काह कहों दुख पागे ॥
चिंतत बार बार चितमें मुनि बहुरि बुद्धि यह आई ।
छंदबद्ध अश्लोक भयो यह राखहुँ नाहिं छिपाई ॥
वाल्मीकि ऐसो मनमें गुणि भरद्वाज कह बोली ।
कह्यो वचन अतिशय उर विस्मित निज आशयसबखोली॥
कह्यो जो मैं हतविहँग विलोकत भरि करुणा सविषादै ।
छंदबद्ध सोइ वचन कढ्यो मुख बलित वेद शुभ पादै ।
अक्षरसम तंत्री लय संयुत परम मनोहर बैना ।
भयो शोक अश्लोक कहत मम और कछू यह है ना ॥
करो कंठ भूलन नहिं पावै कारण कछुक देखाता ।
भरद्वाज किय कंठ तबै गुरु भे प्रसन्न अवदाता ॥
तब तमसा तीरथ करि मज्जन नेम निबाहि सशोका ।
चल्यो सपदिनिज आश्रमको मुनि सुमिरतसोइअश्लोका ॥

भरद्वाज निगमागम ज्ञाता मुनिको शिष्य विनीता ।
भरिजल कलश कंध धरि पाछे चल्यो चटक जगमीता ॥
शिष्य सहित मुनि धर्म धुरंधर आशुहिं आश्रम आये ।
बैठि कथत बहु कथा वृथा नहिं चित अश्लोक लगाये ॥
वाल्मीकि के देखनके हित चतुरानन चलि आये ।
सकल लोक करता जगभरता तहँ अति तेजहिं छाये ॥
दोहा--लखि महर्षि उठि चलि कछुक, वंद्यो विधि पदकंज ।
बैठे सन्मुख जोरि कर, मौन भरे मनरंज ॥
पुनि महर्षि उठि हर्षि अति, पाद्यार्घासन दीन ।
दै प्रदक्षिणा पूजि विधि, सादर वंदन कीन ॥
पूछि कुशल मुख चारिको, बार बार शिरनाइ ।
आसनमें बैठाइ विधि, बैठ्यो शासन पाइ ॥

छंद चौबोला ।

प्रमुदित बैठ्यो जबै पितामह लोक ओक करतारा ।
मुनि सशोक अश्लोक विचारत कछु नहिं वचन उचारा ॥
मनाहिं विचारत व्याध अकारथ वध्यो विहंगम काहीं ।
रह्यो मनोहर शोर करत खग अपराधहु कछु नाहीं ॥
दुख रंगिनि लखि तासु विहंगिनि मैं जो कह्यो निषादै ।
शोक सोइ अश्लोक कढ्यो मुख चारि समान सुपादै ॥
यहि विधि सोचत लखि महर्षिको हर्षि सुवर्षि अमीको ।
कह्योवचन विधि बिहँसिकियोमुनि यहअश्लोकहिंनीको ॥
मम प्रसाद ते प्रगट भई यह सरस्वती मुख तेरे ।
यहि विधि रचहु महामुनि मंजुल रामचरित्र घनेरे ॥
धर्मधुरंधर सकल गुणाकर लोक विशारद रामा ।
रचहु चरित तेहि सुन्यो यथा तुम नारद मुखसुखधामा ॥

राम लषण सिय चरित मनोहर रजनीचर गण केरो ।
गुप्त प्रकाशित चारु चरित सब जून नवीन घनेरो ॥
अविदित विदित विदित सब ह्वै हैं हस्तामलक समानो।
मृषा वचन यहि काव्य रचन में नहिं ह्वै है सति जानो ।
मुनिवर रचहु दिव्य रामायण रामकथा मनहारी ॥
यही अनुष्टुप् छंदबद्ध कारि औरहु छंद उचारी ।
गंगा सरयू सोन कलिन्दी धारा धरा प्रचारा ।
जब लगि ध्रुव अरु भू अरु भूधर रहैं सकल संसारा॥

दोहा--तब लगि राम कथा विमल, तव निर्मित मुनिराय ।
चलि है चारु विचारु विन, तीनि लोक लों जाय ॥
जबलगि रामायण कथा, चलिहै निर्मित तोरि ।
तब लगि तुम मेरे भवन, बसिहौ आशिष मोरि ॥
पुनि ऊरध गति होहुगे, बसिहौ विमल विकुण्ठ ।
हरिलीला रस मगन मन, कबहुँ न तुव मति कुण्ठ ॥
वाल्मीकि सों अस वचन, हर्षित कहि करतार ।
तहँ अन्तर्हित ह्वै गये, गये ब्रह्म आगार ॥

छंद चौबोला

सुनि स्वयंभुके वचन शिष्य युत मुनिवर विस्मय छाये ।
सकल शिष्य अश्लोक सोइ तहँ बार बार मुख गाये ॥
चतुर पाद सम अक्षर मंजुल बहु विधि अर्थ समाते ।
अतिशय प्रीति प्रमोदहिं पूरित गावत नहीं अघाते ॥
विहँग शोक शुश्लोक भयो सोइ वाल्मीक करुणाई ।
रामकथाको मूल मनोहर कवि जीवन सुखदाई ॥
पुनि रामायण रचन हेतु तहँ मुनिवर मनहिं विचार्यो ।
यही अनुष्टुप रीति रामयश निर्माणन निरधार्यो ॥

मंजुल पद बहु भाँति अर्थ युत पूर्ण प्रबन्ध उदारा ।
रच्यो मुनीश विमल रामायण उद्धारक संसारा ॥
सम अक्षर अश्लोक अनेकन जेहि यश जग उजियारा ।
महायशी सुमहर्षि हर्षि उर रच्यो चरित्र अपारा ॥
सकल समास सन्धिषट्कारक बहुविधिक्रियाकलापा ।
भाव व्यंग्य धुनि रस संचारी स्थायी विषम अमापा ॥
उक्ति युक्ति प्रत्युक्ति मुक्ति गति वचन विलक्षणजामें ।
शब्द मनोहर अर्थ मनोहर पूर्ण प्रबन्ध उदामें ॥
वाल्मीकि सब शिष्य बोलि तहँ कह्यो सुनो मम प्यारे
विधि निदेश रामायण वरणों जागे भाग्य हमारे ॥
रघुनन्दन जानकी सुयश अस दशमुख सकुल निपाता ।
सेतुबन्ध भूभार हरण हरि औरहु चरित विख्याता ॥
दोहा--करहुँ रचन आरम्भ अब, रामायण परबन्ध ।
मन उल्लास विकास करि, मंजुल छन्द निबन्ध ॥
सोरठा--यहि विधि कियो विचार, रामायण निर्माणहित ।
जेहि विधि सुन्यो उदार, नारद मुनिके वदन ते ॥
वाल्मीक मुनिराय, त्रैलोकज्ञ कृतज्ञ वर ।
धर्मज्ञन समुदाय, धर्मरेख जाकी विदित ॥
दोहा--चरित सु रघुकुल चन्दके, मुनिवर कियो विचार ।
दुविध प्रगट अरु अप्रगट, संक्षेपहु विस्तार ॥
धर्म धुरन्धर धीरमणि, वीर विदित रघुवीर ॥
तासु विचित्र चरित्र वर, कथत हरत हठि पीर ॥
आसन रचित पूर्वाग्र कुश, कार आचमन मुनीश ।
रचन हेत रघुवर चरित, नाइ शीश जगदीश ॥
बैठ्यो करत विचार मुनि सुमिरि राम करजोरि ।

निश्चल लगी समाधि मन, गयो राम रस घोरि ॥
राम लषण अरु जानकी, श्रीदशरथ महिपाल ।
कौसल्यादिक रानि गण, सयुत राज विशाल ॥
हँसित वदित हुलसित नमित, चेष्टित चारु चरित्र ।
आदि अन्त देखो पढ्यो, सकल यथावत चित्र ॥
सत्यसिन्धु रघुवंश मणि, सीता लषण समेत ।
कियो चरित जो विपिनमें, देख्यो सकल सचेत ॥
भयो जौन जो होइ गो, वर्तमानहै जौन ।
करामलक सो लखत भो, योगदृष्टि ते तौन ॥
देखि यथावत चरित सब, ज्ञान योगकी दीठि ।
रचन हेत उदित भयो, गुणी पदावलि मीठि ॥
काम अर्थ गण ते वलित, धर्म अर्थ विस्तार ।
रत्नाकर सागर सरिस, श्रवण सुधाकी धार ॥
अनुक्रमणिका देवऋषि, रामचरित को जौन ।
वाल्मीकि मुनि सों कही, लीन्ही शैली तौन ॥
श्रीरघुवंश चरित्र को, रचन सहित विस्तार ।
मुनि कीन्ह्यो सूचन प्रथम, वर्णहुँ सकल उदार ॥

छंद चौबोला ।

जेहि विधि जन्म लियो कोशलपुर नारायण सुखसारा ।
राम नाम अभिराम धाम सुख हरन हेतु भुविभारा ॥
परम पराक्रम प्रथित तीनि पुर निजपरजन अनुकूला ।
सुंदर रूप मनोहर त्रिभुवन कबहुँ न कोउ प्रतिकूला ॥
क्षमासिन्धु पुनि दीनबन्धु प्रभु शील सकोच सुभाऊ ।
वरण्यो सकल महामुनि मंजुल बालचरित्र उराऊ ॥
पुनि वरण्यो कौशिक मुनि आगम राम लषण जिमि माँग्यो ।

लहिवसिष्ठ मुनिको अनुशासन नृपसुतादिय अनुराग्यो ॥
काम कथा कौशिक कुल गाथा यथा ताड़ुका मारी ।
जिमि कीन्ह्यों कौशिक मख रक्षण रजनीचर संहारी ॥
मिथिलागमन सुमति नृपदर्शन जिमि सुरसरिमहि आई।
वर्णन कीन्ह्यो कथा यथाविधि गौतम तिय गतिपाई ॥
वरण्यो पुनि मिथिलेश समागम रंगभूमि धनु भंगा ।
वैदेही विवाह सुख वरण्यो बंधु विवाह प्रसंगा ॥
परशुराम मद मथन कह्यो पुनि अवध नगर आगमनू ।
कियो बहुरि रघुवर गुणवर्णन सकल अमङ्गल दमनू ॥
श्रीरघुपति अभिषेक तयारी विघ्न कैकयी कीन्हा ।
सीता लषण समेत राम वनबास भूप जिमि दीन्हा ॥
दशरथ शोक विलाप मरण पुनि वरण्यो भरत अवाई ।
प्रजा विषादित त्यागि गये जिमि चढि स्यन्दन रघुराई ॥
दोहा--कह्यो निषाद कथा यथा, आयो बहुरि सुमन्त ।
श्रृंगवेर पुर सुरसरी, उतरे जिमि भगवन्त ॥

छंद चौबोला ।

सानुराग जिमि जाय प्रयागै भरद्वाज पद वंदे ।
भरद्वाज शासन लहि रघुपति उतरे यमुन अनंदे ॥
वाल्मीकि मुनि मिलि पुनि निवसे चित्रकूट महँ जाई ।
पर्णकुटी रचि सिया लषण युत लखे विपिन समुदाई ॥
वरण्यो भरतागमन बहुरि मुनि दशरथको जलदाना ।
भरत राम संवाद कह्यो पुनि लहि पादुका पयाना ॥
अवध आय जिमि भये भरत पुनि नान्दिग्राम निवासा ।
जिमि दण्डक अरण्यको गमने रघुवर विपिन विलासा ॥
अत्रि और अनसुइया दर्शन दियो यथा अँगरागा ।

पुनि विराधबध कह्यो यथा शरभंग शरीरहि त्यागा ॥
फेर सुतीक्षण कह्यो समागम बहुरि अगस्त्य मिलापा।
वरण्यो पंचवटीनिवास पुनि जिमि हिम शिशिर प्रतापा ॥
शूर्पणखा कुरूप जिमि कीन्ह्यो करत हास संवादा ।
खर दूषण त्रिशिरा वध वर्णन पुनि दशकण्ठ विषादा ॥
पुनि मार्‍यो मारीच यथा प्रभु वराणि जानकी हरना ।
राम विलाप कलाप कह्यो पुनि गीधराज गति करना ॥
पुनि वरण्यो कबन्ध दर्शन मुनि पंपासरहि पयाना ।
शवरीके फल खाइ दीनगति विरह विलाप बखाना ॥
ऋष्यमूकको गवन पवनसुत मिले जवन विधि आई ।
पुनि सुग्रीव सनेहसीम कहि दुंदुभि आस्थि ढहाई ॥
दोहा--सप्तताल भेदे यथा, वालि सुकण्ठ विरोध ।
पुनि वाली सुग्रीव रण, वध्यो वालि करि क्रोध ॥

छंद चौबोला ।

बहुरि विलाप प्रलाप कह्यो जिमि कीन्हो प्रभुपहँ तारा ।
करि अभिषेक सपदि सुग्रीवहिं दियो राज्यकर भारा ॥
पुनि पावसमहँ बसे प्रवर्षण वर्षा वर्णन कीन्ह्यो ।
शरद सराहि सकोप सुगल पहँ लषण पठै जिमि दीन्ह्यो॥
मर्कट कटक चटक आनन पुनि राम सुकंठ मिलापा ॥
वैदेही खोजन चारो दिशि जिमि वानरदल थापा ॥
भू मंडल वर्णन सुकण्ठ कृत हनुमत मुद्रिक दाना ।
वरण्यो स्वयंप्रभा विल दर्शन सिंधु तीर कर जाना ॥
अनशन करन कपिन को वरण्यो मिल्यो यथासंपाती ।
पवनतनय अंबुधि लंघन हित चढ्यो शैल रिपुघाता ॥
कूद्यो सिंधु सिंधु वाणी सुनि मिलि महिधर मैनाका ।

सुरसै तोषि राहु जननी हनि निरख्यो लंक पताका ॥
प्रविश्यो पवनतनय रजनीमुख लङ्क निशंक अकेला ।
करि ताडन लंकिनी अशंकिनि उदै शशीशुभ वेला ॥
भवन भवन महँ खोजि जानकी रावण महल पधार्यो ।
कनककोट कमनीय कँगूरे निज कर काम सँवार्यो ॥
आमखास में रामदास चलि लख्यो अवास अनूपा ।
मन्दोदरी देखि सिय भ्रम करि गिर्यो मनो दुख कूपा ॥
पुहुपविमानलख्यो पुनि जोहिविधि बहुविधि रावणरानी ।
पुनि अशोक वाटिका गयो कपि जहँ सीता दुखसानी ॥

दोहा--वैदेही दर्शन कियो, जेहि विधि पवनकुमार ।
दियो सुंदरी मुंदरी, बूडत मनहुँ अधार ॥

छंद चौबोला ।

कह्यो जानकी संभाषण जिमि त्रिजटा स्वप्न बखाना ।
चूडामणि दीन्ह्यो वैदेही हर्षि लियो हनुमाना ॥
वन उजारि मार्यो रखवारन मंत्रिन पुत्र निपाता ।
सेना अग्रज हत्यो पंचभट अक्ष कुमारहि घाता ॥
बहुरि इन्द्राजित ब्रह्मअस्त्र कृत हनुमत बंधन गायो ।
सभागमन रावण समुझावन लावन लंक गनायो ॥
बहुरि नाँघि सागर जिमि आयो मधुवन कपिन उजारा ।
कह्यो रामदर्शन चूडामणि दीन्ह्यो पवनकुमारा ॥
मर्कट कटक सहित रघुकुलमणि जिमि सागर तटआये ।
भन्यो नील नल करते जिमि प्रभु सागर सेतु बँधाये ॥
रावण ते अपमान पाय जिमि पार विभीषण आयो ।
प्रभु पद परसि पाइ अभिषेकहि रावण वध विधि गायो ॥

पार जाइ पठवाइ वालिसुत रावण को समझायो ।
घेरी लंक चहूँकित रजनी कपि दल चहुँदिशि धायो ॥
संकुल महायुद्ध वरण्यो पुनि धूम्राक्षादिक घाता ।
पुन प्रहस्त वध रावणको रण कुंभकर्ण वधख्याता ॥
त्रिशिरादिक को कह्यो समर पुनि मेघनाद संग्रामा ।
हनूमान द्रोणाचल आन्यो दहन लंक सब धामा ॥
इन्द्रजीतको पुनि वध वरण्यो लषण बाण लगि भयऊ ।
बहुरि मूलबल निधन कह्यो मुनि जिमिरावणरणठयऊ॥
दोहा—पुनि वरण्यो रावण निधन, सीतामिलन हुलास ।
कह्यो विभीषण को तिलक, पुहुप विमान विलास ॥
अवध नगर आगम कह्यो, भरत सभाग समोद ।
राजतिलक रघुवीर को, वरण्यो प्रजा विनोद ॥
वानर बिदा बखान किय, रघुपति रंजन राज ।
सिय गवनी पुनि विपिन जहँ, सुंदर ऋषिन समाज ॥
अब आगेको चरित जो, कह्यो सो उत्तर पाहिं ।
वरण्यो यह अनुक्रमणिका, ऋषि रामायण माहिं ॥
श्रीमद्रामायण विमल, अक्षर वेद समान ।
आदिकाव्य अनुपम अरथ, अघ बन दहन कृशान ॥
परम पुरुष श्रीविष्णु जब, भे अवधेश कुमार ।
वाल्मीकि मुखते तबहिं, वेद लियो अवतार ॥
लंकापति रण जीति कै, जब आये रघुनाथ ।
सीता अनुज समेत प्रभु, कीन्ह्यों प्रजन सनाथ ॥
राज करत रघुनाथ को, बीति गयो बहु काल ।
सिंहासन आसीन प्रभु, छावत मोद विशाल ॥
रामायण रमणीय अति, मुनि विरच्यो तेहि काल ।
राज करत रघुवंशमणि, भाइन सहित भुआल ।

श्रीमद्रामायण विमल, पद विचित्र मनहार ।
कथा विचित्र विचित्र धुनि, भाव विचित्र अपार ॥
यद्यपि रामायण अमित, रामकथा विस्तार ।
सब रामायण मूल यह, वेद समान उदार ॥
मुनि विरच्यो चौविस सहस, रामायण अश्लोक ।
सर्ग पञ्चशत कांड षट, हरन हार सब शोक ॥
उत्तर कांड रच्यो बहुरि, कांड भविष्य समेत
आठ कांड यहि विधि भयो, रामायण सुखसेत ॥
राजतिलक सियगमन लगि, उत्तर कांडहिं जान ।
ताके उपर भविष्य है, ऐसो मूल प्रमान ॥
रचि महर्षि रामायणहिं, कीन्ह्यो मनहिं विचार ।
काको देयँ पढाइ यह, को भारती भँडार ॥
मुनि के अस चिन्तन करत, कुश लव सीय कुमार ।
आय गहे मुनि पदकमल, बालक बुद्धि उदार ॥

छन्द चौबोला ।

धर्म निरत रघुनन्दन नन्दन अरिवृन्दन जयकारी ।
मधुर कंठ जिन यश जगपूरित निज आश्रम सञ्चारी ॥
लखि महर्षि दोउ बंधुन कहँ तहँ वेदविदांवर दोऊ ।
रामायण इन दुहुँन पढावउँ इन सम और न कोऊ ॥
अस विचारि दोउ बालक बुधिवर अपने निकट बुलाई ।
वेद तुल्य रामायण सुंदर दीन्ह्यो सविधि पढाई ॥
उत्तम आदिकाव्य रामायण राम परायण प्यारा ।
जनक ललीको चरित मुख्य जेहि रावण सकुल सँहारा ॥
अर्थ गँभीर पढत कोमल पद महामधुर जेहि गाना ।
राग ताल सातहु स्वर संयुत वीना लयहु मिलाना ॥

हास वीर शृङ्गार भयानक करुणा रौद्र रसादी ।
रु बीभत्स पांच रस मुख्यहु दास्य आदि मरयादी ॥
सकल कथित रामायण अन्तर जहँ जस कथा प्रसङ्गा ।
जहाँ जौन रस वर्णन कीन्ह्यो रच्यो रूप रति रङ्गा ॥
ऐसी अति अद्भुत रामायण कुश लव काहिं पढाये ।
रूप मनोहर लक्षण लक्षित महामधुर स्वर छाये ॥
मनहु राम प्रतिबिम्ब दूसरे कुश लव गान प्रवीने ।
सकल मुर्च्छनाके अति ज्ञाता अनुपम वैस नवीने ॥
मनहुँ युगल गन्धर्वन ढोटा जोटा इक अनुहारा ।
धर्माख्यान पढाय महाऋषि भयो अतीव सुखारी ॥
दोहा--रचि रामायण मुनि तिलक, दिय कुश लवहिं पढाय ।
कण्ठ गान लागे करन, लय स्वर मधुर मिलाय ॥
भई समाज तहां महा, जुरे विप्र ऋषि आय ।
पढ्यो यथा कुश लव तथा, रामायण दिय गाय ॥

छंद चौबोला ।

राज चिह्न चिह्नित बडभागी अनुरागी सुकुमारे ।
वाल्मीकिके शिष्य महामति रघुकुल तिलक कुमारे ॥
मुनि मंडली मध्य जब दोऊ राज कुँवर किय गाना ।
सुनन लगे निहचल मन मुनिगण रामायण अख्याना ॥
साधु साधु मुख वचन कहत सब बहत नैन जलधारा ।
बिसमितचकितसुखिताहियहुलसितप्रेमितवचनउचारा ॥
यह रामायण गीत मनोहर रच्यो महर्षि अनूपा ।
अति सुंदर अश्लोक शोक हर लोक सुखद रस रूपा ॥
चारु चरित्र विचित्र कियो जस जेहि थल रघुकुल नाथा ।
सो प्रतक्ष अस होत अक्ष पथ स्वच्छ सत्य यह गाथा ॥

यहि विधि सुनत सराहत सज्जन दिन प्रति साधुसमाजा ।
कुश लव गावत मुनिमंडलमहँ सुनि त्यागत सबकाजा ॥
गावत जो रस तदाकार सो देखि परै सब काहीं ।
भावव्यंग्य मृदु शब्द अर्थ बहु सुधा सरिस श्रुति माहीं ॥
यहिविधि अति उत्साहितमुनिगणसुखअंबुधि अवगाही ।
चूमि चारु मुख कुँवरनको तहँ बारहिंबार सराही ॥
ह्वै प्रसन्न दीन्ह्यो वल्कल कोउ दियो कमण्डलु कोई ।
कोउ मृगचर्म मेखला कलशहु कोउ आसन मुद मोई ॥
कहन लगे सज्जन कुश लवसों अचरज कीन्ह्यों गाना ।
सकल गान कोविद दोउ प्यारे तुमसम धन्य न आना ॥

दोहा--जो कोउ रामायण सुनत, आयुष बाढति तासु ।
सकल संपदा लहत सो, होत न कौनहुँ हासु ॥
सबके श्रवण मनोहर, रघुपति चरित प्रबन्ध ।
अतिहि अनूपम प्रगट भे, विविध छन्दके बन्ध ॥

सोरठा--सकल कबिन आधार, भयो समापत क्रम यथा ।
सकल सुकृत आगार, भावुक भक्तन देवतरु ॥

छंद चौबोला ।

यहि विधि मुनिसमाजमहँ कुश लव रामायण जब गायो ।
लहि अनन्द मुनि वृन्द अनूपम अति अनुराग बढायो ॥
तेहि विधि कुश लव श्रीरामायण गान करन नित लागे ।
जहँ तहँ मुनि आश्रमन ग्राम पुर छावत सुख बड भागे ॥
जहँ गावत रामायण कुश लव जन समाज तहँ होई ।
वर्षत आनँद प्रेम मगन सब सुनत गुनत मुद मोई ॥
एक समय रामायण गावत ते दोउ रामकुमारा ।
अवध नगर आये चित चाये रूप युगल जनु मारा ॥

गलिन गलिन तेहि अवध नगरमें गावत विचरन लागे।
अवधनगरवासी सुखरासी श्रमनासी अनुरागे॥
द्वार द्वार सत्कार करत जन बार बार मुद भीने।
रामचरित सुनि प्रेम मगन ह्वै रामचरण चित दीने॥
यहिविधि बीतिगये बहु बासर गावत कुश लव काहीं।
भयो नगरमहँ शोर ओर चहुँ ठौर ठौर सब पाहीं॥
अति सुंदर सुकुमार मनोहर मुनिबालक दोउ आये।
गाइ गाइ रामायण पुरमहँ आनँद धूम मचाये॥
एक समैं रघुनन्दन सुंदर सिंधुर सुभग सँवारे।
भरत लषण रिपुदमन सहित प्रभु सब शृंगार शृँगारे॥
पुर छबि लखन हेतु निकसे प्रभु कोशल नगर बजारा।
रामायण गावत सुख छावत निरखे युगल कुमारा॥

दोहा--कह्यो राम तहँ भरतसों, काकेबालक दोइ।
मोर चरित गावत मधुर, सुर संयुत रस मोइ॥

छंद चौबोला।

ये बालक दोउ राजभवन में भरत वेगि बुलवायो।
इनको गान सुनत मन हुलसत दोउ कर रूप सुहायो॥
अस कहि प्रभुपुर विचरि भवन कहँ गमन कियो युतभाई।
भरत तुरत बोल्यो कुश लव को चारु चार पठवाई॥
कोटि भानु भासित सिंहासन राम विराजत तामैं।
मनहु भानु मण्डलपर मंडित मेदुर मेघ ललामैं॥
भरत लषण रिपुदमन लसत ढिग और सचिव सरदारा।
सुर नर मुनि गंधर्व सर्व तहँ बैठे सभा मँझारा॥
तेहि अवसर दोउ बालक कुश लव ल्यायो दूत लेवाई।
खडे भये दरबार बीच ते सबको चित्त चुराई॥

कोटि मदन छबि कदन करत दोउ रामहिं की अनुहारा।
मनहु तरनि मंडलते प्रगटे मंडल युगल तमारी॥
लखि आतम सम रूप अङ्ग छबि करि विस्मय उर भारी।
रघुकुल मणि तहँ भरत लषण सों विहँसत वचन उचारी॥
अहैं कौन के बालक सुन्दर मम पुर कहँ ते आये।
कहां पढ्यो यह चरित हमारो को पुनि गान सिखाये॥
पूछो भरत कौन के बालक केहि हित अवध सिधारे।
कहां पढ्यो यह चरित मनोहर हैं कहँ सदन तिहारे॥
रघुकुल सभा मध्य कुश लव तब मंजुल वचन उचारे।
वाल्मीकि मुनि के सुत हैं हम तिन ढिग सदन हमारे॥
दोहा—यह प्रबन्ध मुनिसों पढ्यो, तिनको शासन पाइ।
अवध नगर आवत भये, विचरहिं चरितानि गाइ॥
राजदूत ह्वै जाय कै, ल्याये हमहिं लेवाइ।
करिहैं हम सोइ अवाशि, देहिं जो भूप रजाइ॥

छंद चौबोला।

प्रभु कह विहँसि भरत सों हर्षित भाषहु ऋषि युग बालै।
रहे जो गावत गान करैं सो सभा मध्य यहि कालै॥
सावधान ह्वै वीणा लै कर सुर माधुरी मिलाई।
करैं गान सुखदायक सबको भीति त्यागि हुलसाई॥
प्रगट अर्थ अति मंजुल वाणी ढरै अमीकी धारा।
सुनत सभासद तन मनहिय जेहि होहिं अनन्द अगारा॥
सुनत वचन रघुकुलमणिके तब भरत कही मृदु वानी।
गावहु चरित मधुर सुर बालक प्रभु सुख शासन मानी॥
तब कुश लव सब सभासदन उर छावत परम प्रमोदू।
वणि मिलाइ अरम्भ गान किय माच्यो विपुल विनोदू॥

जस विचित्र पद जस चरित्र वर जस रतिरस धुनि भाऊ ।
तस मंजुल सुर वीन मधुरध्वनि गाये सहित उराऊ ॥
सुनत सभासद राजसिंह सब रघुवंशी अनियारे ।
पुलकावली शरीर सजल दृग श्रवण करत प्रभु प्यारे ॥
कह्यो राम निज भाइन भृत्यन सुनत सचिव सरदारा ।
क्षोणिप लक्षण लक्षित स्वच्छ विलक्षण दक्ष कुमारा ॥
बालक वाल्मीकि मुनिके दोउ मम कीरति कल गावैं ।
त्यागि परस्पर वचन करब सब करैं सुश्रवण सभामैं॥
सहित सीय बंधुन कपि कुलयुत उदय विभूति हमारी ।
रघुकुल विभव अवध प्रभुताई निशिचरगण रणभारी ॥
दोहा--रामवचन सुठि सुनि सुखद, सकल सभा हर्षानि ।
सुनन हेत निज प्रभु चरित, परम प्रीति उमगानि ॥
सुनत राम शासन युगल, बालक सभा मँझार ।
रामायण गावन लगे, कोकिल कंठ उदार ॥
भरी गानकी माधुरी, जुरी सभा चहुँ ओर ।
घरी घरी ताही घरी, भयो राम रँग बोर ॥
अति उतङ्ग सिंहासना,--सीन भानुकुल भान ।
निकट बैठि प्रभु श्रवण रुचि, तब कीन्ह्यो अनुमान ॥
उठै सभा जो जाहुँ उठि, होइ महा रस भङ्ग ।
ताते क्रम क्रम उतरिहौं, बैठौं बालक सङ्ग ॥
अस विचारि रघुनन्द तहँ, उतरि सुमन्दहि मन्द ।
बैठि कुमारनके निकट, सुनन लगे सुखकन्द ॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजावहादुर श्रीकृष्णचन्द्र
कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी.सी. एस. आई कृते
रामस्वयंवरग्रंथे पूर्वप्रकरणे चतुर्थ प्रबन्धः ॥ ४ ॥

दोहा--आदिकाव्य अघ गिरि कुलिश, रामायण सुखसार।
वाल्मीकि कृत जग विदित, विंशति चारि हजार॥
विदित रामयश कोटि शत, अति उत्तम विस्तार।
इक इक अक्षर मुख कहत, नाशत पाप पहार॥
जब पुराण वैकुण्ठपति, प्रगटे अवध अगार।
तबहिं चतुर्विंशति सहस, लियो वेद अवतार॥
रामायण विरचे अमित, सुर मुनि मति अनुसार।
तिनमें जान प्रधान यह, श्री वाल्मीकि उचार॥
जस सुर मुनि विरचितनमें, मुनिकृत मुख्य प्रमान।
तिमि नरकृत रामायणहिं, तुलसी रचित प्रधान॥
भगवत अनुरागी पुरुष, विषय विमुख मतिवान।
रामायण सरबस तिन्हैं, नहिं अस दूसर जान॥
वाल्मीकि कृत सुरगिरा, तुलसीकृत नरबानि।
रामचरित सरबस उभै, लियो सत्य मैं जानि॥
तातें तुलसी कृत कथा, रचित महर्षि प्रबन्ध।
विरचौं उभय मिलाइकै, राम स्वयंवर बन्ध॥
वाल्मीकि विरचित सुभग, रामायण सम वेद।
तिमि गोस्वामी रचित वर, रामचरित नहिं भेद॥
लै बहु ग्रंथन संमतहिं, विरच्यो तुलसीदास।
श्रीमद्रामायण विमल, जानहु स्वयं प्रकास॥
कल्प कल्पके भेद में, कथा सत्य सब सोइ।
यह पुराण शैली विमल, और भाँति नहिं होइ॥
तातें कहौं विशेष कछु, रच्यो जो तुलसीदास।
तीनि भाँति रावण जनम, राम जन्म परकास॥

छंद चौबोला।

जन्म्यो जबहिं जलंधर रावण महाबली सुर जेता।

तब भू भारहरण हित प्रगटे केशव कृपा निकेता ॥
दियो देवऋषि शाप रुद्रगण ते दोउ भूतल माहीं।
रावण कुंभकर्ण प्रगटे जिन सरिस कोउ बल नाहीं ॥
भानुप्रताप भयो कोउ भूपति धर्म निरत दोउ भाई।
विप्र शापवश दशकंधर अरु कुंभकर्ण भे आई ॥
कल्प कल्प में सत्य कथा सब जौन गोसाईं गाई।
कबहुँ प्रतापी रावण होतो यहू कथा विदिताई ॥
रामजन्ममें हेतु अनेकन कहँ लों कहौं बखानी।
पै पुराण श्रुति संमत सब विधि जौन कहे मुनि ज्ञानी ॥
सो यहि भांति विदित सब ग्रंथन भागवतादिक माहीं।
वर्णन करहुं तौन यहि औसर है शंका कछु नाहीं ॥
हरि पार्षद जय विजय अनूपम सनकादिक को रोके।
ते प्रचंड दिय शाप दुहुँन कहँ होय अमर्षक ओके ॥
असुर भाव दोउ तीनि जन्म लगि जन्म जगत् महँ पैहौ।
हरिकर लहि वध विगत शाप ह्वै पुनि विकुंठकहँ ऐहौ॥
प्रथम जन्म ते हिरनकाशिपु अरु हिरण्याक्ष भे जाई।
राक्षस रावण कुम्भकर्ण पुनि तेइ भये महि आई ॥
पुनि शिशुपाल दन्तवक्रहु भे तजे न आसुर भाऊ।
महाबली त्रिभुवनके जेता डरैं जिन्हैं सुरराऊ॥
दोहा—कनककाशिपु कनकाक्ष को, हन्यो नृसिंह वराह ॥
कुंभकर्ण रावण हत्यो, ह्वै प्रभु कोशल नाह ॥
दन्तवक्र शिशुपाल को, हन्यो देवकीलाल।
विगत शाप हरि पारषद, बसे विकुण्ठ विशाल ॥

छन्द चौबोला।

तुलसिदास को संमत सोऊ कीन्हो ग्रंथ बखाना।
तीनि जन्म लगि भये असुर दोउ सो द्विज वचन प्रमाना ॥
जब जब होती धर्म गलानी तब हरि धारि अवतारा।

प्रगटत पावन चरित चारु जग हरत भूमि कर भारा ॥
दुखी देखि देवन देवनपति दिय मखमें वरदाना।
अवध प्रगट ह्वै दशरथ नंदन हरिहौं शोक महाना ॥
सोइ सत्य वचन करिबे हित यज्ञभाग के व्याजा।
गर्भवास किय रमानिवास हुलासक देव समाजा ॥
भई समापत अश्वमेध जब गे सुर लै लै भागा।
रानिन सहित राजमणि दशरथ अतिप्रमुदितबडभागा॥
भाइन भृत्यन सचिव सैन युत अवधपुरी कहँ आये।
विप्रवृन्द अति पूजि बिदा किय गे निज गृह सुख छाये॥
निज निज सदन गये भूपति सब पाइ पाइ सत्कारा।
वर्णत दशरथ शील सुयश गुण पुनि पुनि वदन अपारा॥
शांता सहित गये शृङ्गीऋषि बहु विधि पूजन पाई।
गये रोमपादहु तिनके सँग धारि अवधेश मिताई ॥
यहि विधि सबको विदा भूपमणि करिकै आनँदरासी।
पुत्र जन्म चिन्तत भे नित नित कौशल नगर निवासी ॥
नित नित प्रजा मगन आनंद रस निजनिज देव मनावैं।
चारु चारि भुजके प्रताप ते चारि कुँवर नृप पावैं ॥

दोहा--जबते नारायण कियो, नृप घर गर्भ निवास।
तबते कोशल नगर महँ, नित नव होत हुलास ॥

कवित्त--कौशलनगर छाई परम विभूति ताई, आई मनो लेन अगवाई सो बधाईकी। विधि पठवाई घर घर अधिकाई, कविवृन्द मुख गाई तिहुँलोक चारुताईकी॥ रघुराज राजमणि हियकी हरषदाई, भूपकी चलाई कहालोकपासिहाईकी। पाई थिरताई चंचलाकी चंचलाई भाई, साजी सबै साजु रघुराईकी अवाईकी॥ १॥ विविध कताके जिन्हैं ताके सुरवृन्दछाके, वासव धनुष उपमाके तुंग ताके हैं। दंड जाके जाडित सुमणि मुकुताके भाके, 'पेखे जिन्हैं पाप न परापै परैंडाकेहैं॥ रघुराज राके चन्द्रमाके समताके जाके, भासकल साके नाके

नाके नाक नाकेहैं।अंबर उडाके अंशुमानके अरुझैं चाके,फहरें अनूप ऐसे अवध पताकेहैं॥२॥द्वारनमें नारनमें नादिन किनारनमें, विपुल बजारन कतारन अपारहैं । अखिल अखारन अगारन हजारनमें, मनुज अपारनमें आनँद उभारहैं ॥ रघुराज राजदरबारन दुवारनमें, शूर सरदारनमें दारन मँझारहैं । अवध प्रजानके उचारणमें छायो यहि, भूपके कुमार कब देइ करतारहैं ॥ ३ ॥विप्र ब्रह्म ध्यावैं त्यों मनावैं मनकामैं निज, वनिक विदेश जामैं आमैं जब गामैहैं । गमै तब ऐसो मुख भूपति कुंवरपामै अवध प्रजानको प्रमोद धाम धामैहैं ॥ धामै धन हेत धूमधामै कारि कामै वश, भाषै रघुराज दिन रैन जाम जामैहैं । जामै ह्वै सनाथ हम कुँवर देखामैं ईश,सदन भरेकी कब सम्पति लुटामैहैं ॥४॥ कोइ पूछे ज्योतिषिन कोई पूछे पंडितन कोई पूछे सन्तनको सेवा सानुरागते । कोई पूछै ब्रह्मचारी कोई पूछे व्रतधारी कोई पूछे वृद्धनारी कोई युक्त यागते ॥ कोई चेटकीन पूछे कोई खेटकीन पूछे कोई नैष्ठिकिन पूछै कोई पूछे कागते । कौन दिन ह्वै है कृतकाज रघुराजराज पाइचारि कुँवर हमारे बडे भागते ॥ ५ ॥

दोहा--बाढ्यो अवध प्रजान के, अंबुधि उमँगि उछाह ।
धारा ब्रह्मानन्द की, ढरै कौन दिन माह ॥
पल पल पोटन में गनत, पल पल युग सम जात ।
रामजन्म आनँद अवधि, अधिक अधिक अधिकात ॥
जैसे तैसे बीतिगे, कलपत द्वादश मास ।
आई बहुरि वसन्त ऋतु, विमल भई दश आस ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

फूलि उठी काननमें कुसुमकी राजीभली, झूमि रहे भूमितरुफलको संभारना । पादप पुहिमि नव पल्लवते पूरि आये हरी आये सियराय भायते शुमार ना ॥ रघुराज लोनीलोनी लता लहरान लागीं अनुरागी भौंर भरी गुंजैं मंजु पारना । सरिता विमल जल सजल जल-

द जूह पावस शरद त्यों वसन्तको विचारना ॥ १ ॥ तरल तरङ्ग मन्दमंद भईं अंबुधिकी अंबर अमन्द चन्द चन्द्रिका पसारी है। शीतल समीर धीर कलित उसीर बास लाग्यो बेगि बहन प्रसून धूरि धारी है ॥ चक्रवाक कोकिल मराल चारु चातकहुँ करै रघुराज मोर शोर मनहारी है। षट ऋतु निजनिज वैभव विलास छाये देखिके अवधराम जनम तयारी है॥ २॥ सस्यवती भई जगतीहू जागि जोमवारी धनधान्य पूरित प्रजाके गण ह्वै गये। बिकसे विमल कमलाकर दिवाकरसों प्रगट अमित रतनाकर भूज्वैगये ॥ अतिशै प्रसन्न हव्यवाट हव्य लेन लागे घाटघाट बाटबाट ठाटे ठाट ठै गये। सदन सदन शुभ सोहिलो सुहावनीते गाईं उठीं भाईं उठीं क्षणाक्षिति छैगये ॥ ३ ॥

सोरठा—दिनकर किरिनि उदोत, कियो न अति शीतल गरम।
निशि तारागण होत, जून जून में दून दुति ॥
मेष राशि गत भानु, नखत अश्विनी संग में।
मास मनोहर जानु, चैत चारु चहुँकित सुखद॥

कवित्त--गहगहे गगनमें बाजे बहु बाजि उठे लहलहे ललित विमानन गरट्टहैं ॥ महमहे लोक दशचारिहू सुगन्धनते उमहे महेश अज आदि सुरठट्टहैं। रघुराज विद्याधर चारण गंधर्व यक्ष, किन्नर कुतूहल करन लागे पट्टहैं। प्रेमरङ्ग लट्टपट्ट आवैं जायँ झट्टपट्ट देव वृन्द देखे परैं मानो नट्टवट्टहैं ॥ १ ॥ चौदह भुवन माच्यो बार बार जैजैकार सिद्ध सुर अस्तुति अनूपम उचारेहैं ॥ एक ओर जलदके माचे घहरारें मंजु एक ओर नाकनके नदत नगारेहैं ॥ मंद मंद वारिबुन्द सज्जित सुगन्ध अति विमल प्रसून वृन्दहीसे व्योम ढारेहैं ॥ भनैं रघुराज ब्रह्मलोकतें अवध लागि गगनमें गसिगे विमानके कतारेहैं ॥ २ ॥ विमल वसंत ऋतुतामें मधु मास शुभ स्वच्छ सित पक्ष नौमी तिथि शशिबार हैं ॥ अभिजित विजय प्रदाता है मुहूरत सो शूलयोग कौलौ नाम करण उदार हैं ॥

रघुराज वेला मध्य दिवसकी आई जबै अति मन भाई सुखदाई निर्विकारहैं ॥ सगुन सोहावन अनेक तहाँ होन लागे परै लागे खलन परावन अपारहैं ॥ ३ ॥ कुँवर जनम जानि अवसर आनँदको माच्यो खैर भैर राज मंदिरमें भारीहै ॥ अति अतुराई एक सखी चलिआई तहँ बैठे रघुवंशीराज वंशी दरबारी हैं ॥ भूपमणिकानमें सुधासमान वाणी कही सावन सलिल जनु सूखत कियारीहैं॥ रघुराज मानो प्राचीदिशिते उदोत भयो शोक शर्वरीको नासि आनँद तमारीहैं ॥ ४ ॥ द्विजन बोलावो द्वार तोरन बँधावो इष्टदेव शिरनावो औध आनँदते छाइगो ॥ तुरत वसिष्ठजी को भवन लेवाई ल्यावो रंगनि घोरावो अब सुख न समाइगो ॥ अन्नन के औनिघर अंगन लगावो ल्याइ विशद वितानन तनावो शोक जाइगो । रघुराज अखिल खजानन खुलावो खूब आवो सुत जनमको अवसर आइगो ॥५॥ एक सुनि द्वैसों कह्यो दोउ कह्यो चारिहूसों चारि कह्यो चौदहसों चौदैं शत चारिसो । फैलिगई बात रघुराज राजमंदिरमें, पुत्रको जनम शुभ समयो निहारिसो ॥ धाये धरणीके याचकानके महान वृन्द भूमि भूति भामिनी हू भौनको विसारिसो । धनी धनहीन ह्वैहैं दीननको दान दैकै ह्वैहैं धनी निर्धनी दरिद्र सिर टारिसो ॥ ६ ॥ हल्ला पर्‍यो अवध महल्लाते महल्ला मध्य गल्ला मच्यो बाहरहू जनम कुमारको । तियनको तल्ला पियतियन पियल्ला त्यागै ढौसत प्रबल्ला मल्ला धाये राजद्वारको ॥ कल्ला करे आगू जन देत लेत बल्ला केते अतिहि उतल्ला ना संभार वृद्धबारको । चल्ला चल्ला छायो रव ह्वैगयो बहल्ला हमैं लल्ला देत ईश आजु अवध भुवारको ॥ ७ ॥ सादर सखीके साथ बादर वदनह्वैकै भूपति पधारे महारानीके महलको ॥ कौशलाके अंगनामें अंगनाकी भीर भारी आवैं जायँ नारी सुकुमारीते टहलको ॥ कौन काको पूछे नहिं छूछे हाथ काहुनके वरणि सकै को कवि चह-

लपहलको । रघुराज आनँद को दहल अवध भयो कढिगो कलेश कोटि कलमष कहलको ॥ ८॥

सोरठा--तब आयो सो काल, जो दुर्लभ बहु कलपमहँ ।
प्रगटे दशरथ लाल, कौशल्याकी सेजपर ॥

कवित्त ।

सिद्धिनकी सिद्धि दिगपालनकी ऋद्धिवृद्धि, वेधाकी समृद्धि सुरसदन झुरैपरी ।ब्रह्मकी विभूति करतूति विश्वकरमाकी,साहिबी सकल पुरहूतकी लुरैपरी ॥ रघुराज चैत चारु नौमीसित शशिवार, अवध अगार नवनिद्धिहू धुरैपरी । वैभव विकुण्ठ ब्रह्मानन्दकी अपार धार कौशलाकी कोखि यकबारहीं कुरैपरी ॥ १ ॥ शंभु औ स्वयंभु जाकी भ्रुकुटि निहारैं नित, लोकपाल जाके पदकंज शिर धारे हैं। देवऋषिब्रह्मऋषिराजऋषि महाऋषि, महिमाविचारपै न पावैं नेकु पारे हैं ॥ वाणीके विलासहै प्रकाशचारि वेदनको, विश्वसृष्टिपालन सँहार खेलवारहै ॥ सोई रघुराज भूमि भारके उतारैहेतु, लीन्ह्यो अवतारै अवधेशके अगारै है ॥ २ ॥ जपत जपत बहु भांति त तपत कोटि, जन्मनमें आवै जेहि भासको चमंका है । जेहि अवराधै सिद्ध करत समाधै केती, बाँधै सहि विश्वकी उपाधैं नहि शंकाहै ॥रघुराज सोई सुरनायक विकुण्ठ धनी, कौशिलाकी सेज दामिनीही सो दमङ्काहै । धामधाम बजत बधावनो अमरपुर, धामधाम परिगो परावनो त्यों लंकाहै ॥ ३ ॥

छंद मनोहरा ।

नव कंज सुनैना मंजुल वैना, कृत जग चैना भुजचारी, मुनि मन हारी । पट पीत विलासा विद्युत भासा रमानिवासा सुखकारी, मूरति प्यारी । शिरमुकुटललामा मणिगणधामा कचउपमामा हिय हारी, आल द्युतिकारी । मृदु गोल कपोला कुंडललोला अतिहिअमोलाछबिभारी, मकराकारी। युग अधर प्रवाला बाहु विशा-

ला दीनदयाला दुख नाशी, घटघटवासी । उरमें वनमाला कंठ रसाला त्रिभुवन पाला नहिं आसी, माया दासी । पग मणि मंजीरा संयुत हीरा,हर जन पीरा अनयासी, सत रिपु नासी। रावणवधकामी त्रिभुवनस्वामी, अन्तर्यामी गंगासी, कीरतिपासी ।

सोरठा–अद्भुत रूप निहारि, कौशल्या कर जोरि कै ।
बोली उचन उचारि, जय सज्जनपति अमरपति ॥
जय जय अधम अधार, पूरण ब्रह्म अपार गति ।
जय वैकुण्ठ विहार, विष्णु सच्चिदानन्द हरि ॥
उत्पाति थिति संहार, बार बार संसार कर ।
जय त्रिभुवन संचार, करुणा पारावार प्रभु ॥
जय जय दीनदयाल, मधुसूदन सुरमाल मणि ।
जय सज्जन रिपु काल, जयातिपाल शशिभाल अज ॥
ध्यावत जेहि मुनि वृन्द, परहु ते पर परपुरुष सोइ ॥
ताजि विकुण्ठ आनन्द, आजु अवधपुर अवतऱ्यो ॥

दोहा–यहिविधि प्रस्तुात कारि विमल, पुनि बोली शिरनाइ ।
नाथ अनूपम रूप यह, को वरणै मुखगाइ ॥
जो मोपर प्रभु कारि कृपा, प्रगटे अवध अगार ।
बालचरित सुख ज्यों लहौं, करहु तौन उपचार ॥
कौशल्याके वचन सुनि, माधव मृदु मुसकाइ ।
कह्यो वचन सुनु मातु मैं, भयो तोर सुत आइ ॥
नीति रीति जस रावरी, सो करिहौं सब भांति ।
बालविनोद प्रमोद तू, जेहि पैहै दिन राति ॥
अस कहि श्रीवैकुण्ठपाति, कौशल्या के अङ्क ॥
बालक ह्वै रोवन लगे, सुरपालक निश्शङ्क ।
भयो शोर चहुँ ओर तब, कौशल्या के आज ॥
श्रीरघुराज अनन्द दै, प्रगटे श्रीरघुराज ।

बधाई।

धनि धनि मधु वर मास हुलास विलास नयो।
धनि धनि ऋतुपति शुकुलपक्ष बुधवार ठयो॥
धनि सुपुनर्वसु नखत मेष रवि राशि गयो।
धनि नवमी तिथि मध्य दिवस मङ्गल समयो॥
धनि दशरथ जेहि भवन राम अवतार लयो।
धनि धनि कोशल नगर ब्रह्म सुख जहँ उनयो॥
धनि धनि रघुकुल जासु सुयश तिहुँलोक छयो।
तीन घरी ब्रह्मांड धन्य आनँद मयो॥
धनि रघुराज समाज आज कृतकाज भयो।

माची धौसनकी धुधुकारी।

कोशल नगर डगर डगरन बिच ढरकतनहरन बहुरँगवारी।
भूप भवन महँ भवन भवनते मणिन लुटावत सब नरनारी॥
राम जन्म आनंद मच्यो जग जन रघुराज जात बलिहारी।

मच्यो री रंगमहलमें रंग।

केसरि कीच बीच नर नारी बिछलत उमँगि उमङ्ग।
एक ओर रघुवंशी राजे साजे अभरन अङ्ग॥
एक ओर युवतिनको मण्डल लीन्हे वीण मृदङ्ग।
नाचि रहे कोउ गाइ रहे कोउ करत खेल खुलि जङ्ग॥
सरयू भई भारती धारा पाइ गुलाल प्रसङ्ग।
रह्यो न सुरति सँभार सबन के ह्वैगे आनँद दङ्ग॥
श्रीरघुराज मनोरथ पूरण भयो सकल दुखभङ्ग।

कौशलपुर बाजै बधैया।

रानिकौशला ढोटा जायो रघुकुल कुमुद जोन्हैया॥
फूले फिरत समात नाहिं सुख मग मग लोग लोगैया।
सोहर शोर मनोहर नोहर माचि रह्यो चहुँ घैया॥

छिरकत कुंकुम रंग उमंगित मृगमद अतर मिलैया।
धार अपार बही सरिता सम सरयू पीत करैया॥
श्रीरघुराज जगतमहँ जागो वर्ण दकार सदैया।
कोउ न रह्यो तीनौ पुरमें अस एक नकार कहैया॥

दोहा--चैत शुक्क नौमी नखत, पुनर्वसू विधुवार।
कौशल्या के भवन में, भयो राम अवतार॥
चैत शुक्क दशमी विमल, नखत पुष्य कुजवार।
भयो कैकयी के भवन, भरत चन्द्र अवतार॥
चैतशुक्क एकादशी, अश्लेषा बुधवार।
भयो लषण रिपुदमनको, जन्म जगत सुखसार॥
अबै कह्यों संक्षेप सों, जन्म चारिहू बंधु।
आगे विस्तर भाषिहौं, जिमि कुण्डली प्रबंधु॥

बधाई--आली आज भूपके द्वार, नौबति बाजि रही है।
कुँवर जन्यो कौशल्या रानी, अवध प्रजा उमही है॥

क०--हरद दधि दूबभरिथार सुरदारतेहि, बारनृपबार बहुबारआवन लगीं। प्रजापरिवार रघुवंश सरदार आनंद आगार रति रंग रंगन रँगीं॥ पुर द्वारहो द्वार दुंदुभी धुधुकार झांझै, झनतकार आपारजालिम जगीं। कौशलहि बाजार संघर्षसंचार उत्साह पारावारतोंप अगणित दगीं॥

बधाई--चारि कुँवर कोशल नरेश के आजु लियो अवतार।
नृप दशरत्थ उदार शिरोमणि दीनन देत हजार॥
मंदर सरिस मंदिरन मंदिर तुंगतरल नीसान।
चय चारु चंदिर इव चहूँकित वजत नवल नीसान॥
याचक अयाचक दान राचत माचि मोद महान।
सुर सुंदरी अगुरीन गहि गहि नचहिं लैलै तान॥

दोहा--बिछे बिछौने जरकसी, लसी ललित दरबार ।
पीत वसन भूषन बने, रघुवंशी सरदार ॥

छंद त्रिभंगी ।

सुर चढे विमाना सुखन समाना वरषैं नाना कुसुमगनै ।
गुणिकन निज ज्ञाना जै भगवाना करहिं बखाना छनै छनै ॥
रक्षक नहिं आना दयानिधाना हमनहिं जाना तुमहिं विनै ।
अजइन्द्र इशाना अमरप्रधाना तनु पुलकाना करहिं विनै ॥

पद ।

अन्तहपुर चौगान लौं निकसत कसमस होइ ।
नर नारी धावत सुख छावत पूछत कोउ नहिं कोइ ॥
कुंकुम के रँगकीच मच्यो महि उडत गगन बरबादले ।
मिलत गुलालल्लाल तेहि काल मनो सुठि सावन बादले ॥
देत रत्न गण जो जेहि भावत धरे कितेकन फादिले ।
खेलत खुलि खुलि आमखासमें रघुवंशी साहिजादिले ॥
चैत शुक्ल नौमी तिथै मध्यादिवस भे राम ।
बजत बधाई धाम धाम रघुराज भयो कृतकाम ॥
आनँद मगन अवधपुरवासी प्रगटआजुअवनिआबिनासी ।
भूपतिअवधबजारलुटावत गावहिं नारि पियारि रमासी ॥
दुरिगै देवन दीह दाह दिल छायो त्रिभुवन अमित उछाहू ।
भरि पूरण याचक धन पायो श्रीरघुराज आजु सब लाहू ॥
कौशलनगरडगर डगरन बिच जगरमगरमाचिरह्यो आजरी ।
हरद दूबदधिथारनभरिभरिभामिनिगमनहिं साजिसाजरी ॥
भूरिभीर भै भूप भवन महँ दुख दारिदको भो अकाजरी ।
नर समसुर गहगहे बजावत मनउमहेतहँ विविध बाजरी ॥
जो पावतसोउदेतदेतसो उकोउनलेत मढि सुखदराजुरी ।
सुरसुंदरीमहलप्रतिनाचहिंमहलमहलरघुकुलसमाजरी ॥

कौशल्याकैकयीसुमित्रा जन्योचारिसुत सुछंबिछाजरी ॥
को वरणै सुख पाय एक मुख श्रीदशरथ रघुराजराजरी।
दशरथ गृह नौबत बाजै सब देव भये कृत काजै ॥
अशरन शरन सुभरन भूरि सुख असुरन करन पराजै ।
दीनबन्धु भे चारि बंधु सुत राजसिंह महराजै ॥
को बरणै सुख भयो जौन निज नाथ पाय रघुराजै ।
चलिये अब भूपति भौन भटू जहँ चारि सुचारु कुमारभये
नृप याचक वृन्द अयाच कियो पुरके जन मोदअपारमये
गणिकागण नाचिरहीं चहुँघा बहु बाजन द्वारहिं द्वार ठये ।
बर गायक गायरहे सुरसों धरनीसुर वेद उचार किये ॥
पुरघाटन घाटन हाटन हाटन बाँधि सुबंदनवार दये ।
नहिं आनँद औध समात सखी सुर सन्त कलेश विकारगये
रघुवंशिन राज समाज सजी रघुराज तिन्हैं बलिहार लये॥

बधाई देन चलु बारी ।

कौशल्या केकयी सुमित्रा जन्म्यो सुत चारी ॥
अस अवसर अब बहुरि न पैहैं धनि निज भाग्य विचारी ।
श्रीरघुराज निरखि लालनको पुनि पुनि ले बलिहारी ॥

दोहा—ल्याईं सखी लेवाय तहँ, आये भवन भुवाल ।
नांदीमुख क्रमसों कियो, हर्षि शराध उताल ॥

छन्द चौबोला ।

भवन भवनमें परम मनोहर सोहर गावन लागीं ।
आनँद उमँग उराव अटक नहिं इन्दुमुखी अनुरागीं ॥
भई भीर भूपतिके द्वारे रज पषाण है जाहीं ।
देश देशके वेश नरेश सुद्वार देश दरशाहीं ॥
कोउ तुरङ्गचाढि कोउमतङ्गचाढि कोउ सतांगचाढि आये।
अति उछाह नरनाह भरे सब सम्पाति विपुल लुटाये ॥

जिनके धन नहिं ते पट आयुध देत लुटाइ उछाही ।
जे लूटत तेउ तुरत लुटावत कोउ न भये धनग्राही ॥
कञ्चन मयी भयी बसुधा तहँ कोउ धन सञ्च न करहीं ।
रामजन्मते लाभ लोकमें कोउ न लाभ उर धरहीं ॥
देहु देहु अरु लेहु लेहु यह छाय रह्यो रव भारी ।
कसमस परत कढत कौशलपुर को सुख सकै उचारी ॥
कोउ मतङ्ग कोउ देत तुरंगन कोउ भूषण पट कोई ।
कछु न अदेय रह्यो तेहि अवसर ग्राम धाम धन जोई ॥
द्वारे द्वारे बजत नगारे घनकारे घहरारे ।
विपुल कताके विविध पताके चपलाके छबिहारे ॥
तारन मनहु इंद्रधनु सोहत मोरकूक सहनाई ।
वर्षत आँनद आँसु अंबु सोइ अवध प्रजा समुदाई ॥
देश देशके याचक आये ते बहु जीव सोहाहीं ।
सुरभित सलिल धार सरयू मिलि सरिता सिन्धु समाहीं ॥
दोहा--किसलय अंकुर दूब नव, भरि थारन पुरनारि ।
लसहिं चँदैनी चारु सम, हरित तृणन मनहारि ॥
द्वारदेश अवधेशके, लखि सुत जन्म उराय ।
वर्षाऋतु आई मनहु, देन बधाई धाय ॥

छन्द चौबोला ।

विविध रंग अंबर कम्मर कसि विविधरंग शिर पागे ।
विविध रंग तेइ कुसुम विराजत अंगराग सुख रागे ॥
विविध सुगंधित अनिल बहत तहँ जनसमूह बस मन्दा ।
छै सरयू शीतल अति आवत परसत परम अनन्दा ॥
बहु मुरचङ्ग मृदङ्ग सरङ्ग उपङ्ग सुसलिल तरंगा ।
बाजत रंगभूमि रस रंगने, तेइ मनु वदत विहंगा ॥
नर्तक नचत मयूर मनहु बहु भवन कुञ्ज छबि छाये ।

सोहर मंजु पुंज सुखको अति भौंरन गुंज सोहाये ॥
दान अखंड अमल अंबर सम कीरतिकर दिशि छाजै ।
उडुमंडल द्विज मंडल सोहत तिमि वसिष्ठ द्विज राजै ॥
राज राज रघुराज तनय सुख उदय देखि कृतकाजा ।
मानहु सकल समाज जोरिकै मिलन चल्यो ऋतुराजा ॥
निर्मल अवध जलाकर सोहत विकसताहित जलजाता ।
फटिक अटा ते शरद घटा मनु कोक वृन्द बुध ख्याता॥
पूरित सस्य प्रमोद मही सब शाशि भूपति शशि शाला ।
लघु बड सोहत रत्न कलश बहु तेइ तोरनकी माला ॥
देव विमानावली विराजति गगन पंथ मल हीना ।
सारस सुखित मराल कराकुल जनु सोहत पख पीना ॥
रघुवंशी सरदार रत्नकी खोसे शीश कलंकी ।
मनहुँ सालि की वालि विविध अति सोहि रहीं बहुरंगी ॥
दोहा—अवध भुवार अगारमें; लखि कुमार अवतार ।
मनहुँ शरद ह्वै शारदा, खडी करति बलिहार ॥

छंद चौबोला ।

देश देशके विप्र महाजन भूपति धनी भिखारी ।
कवि नट भाट सूत मागध बहु बंदी परम सुखारी ॥
गायक वादक नरतक हीन प्रवीन दीन बल पीना ।
कौतुककार अपार कलाकर जे प्राचीन नवीना ॥
बाल वृद्ध नारी नर अगणित चारौ वर्ण अपारा ।
आये सकल हुलास प्रकाशित दशरथ भूप दुवारा ॥
ग्राम ग्रम महँ धाम धाम महँ खर वट खेत अखारा ।
व्रज पुर पत्तन नगर नाकलों नद्दत नवल नगारा ॥
देहु देहु अस छाइ रह्यो रव संयुत जय जय कारा ।

रामजन्म उत्साह प्रवाह गयो बाहि भुवन नकारा ॥
सुरपुर नरपुर नागलोकलों बाजै विविध बधाई ।
जे जहँ ते तहँ धनहिं लुटावत आँनद उर न समाई ॥
गावहिं मङ्गल गीत प्रीति भरि भुवन चारिदश माहीं ॥
भरे भूरि ब्रह्मांड छोरलों सोहर शोर सोहाहीं ।
अगणित विमल विमान वियत पथ झरहिं कुसुमसमुदाई ।
पुरी पुहुप पर्वत सम सोहति पुहुमी परिमल छाई ॥
रामजन्म आनंद उदित रवि कंज प्रजा विकसाई ।
दुर्जन मूक उलूक लुकाने दुख निशि गई सिराई ॥
सुर मुनि कियो अरंभ कर्म सब शङ्का नींद विहाई ।
त्यों याचक नर नारि कोक सम मिले वियोग विहाई ॥
सोरठा--को कहि सकै उछाह, रामजन्ममें जस भयो ।
है कौन विधि थाह, मनुज महोदधिमें प्रविशि ॥

छन्द चौबोला ।

सकल राजवंशी रघुवंशी राजकुँवर सब आये ।
हय गय भूषण वसन रत्न राति संपति विपुल लुटाये ॥
महल महलमें महा मनोहर लागि गयो दरबारा ।
नहिं आनन्द अमात अवधपुर बह्यो सरयु मिसि धारा॥
साजि सजिभूषण वसन विविधविधि लियेकनककरथारा।
दधि दूर्वादल सुफल हरिद्रा चलीं लगाय कतारा ॥
गावत मङ्गल गीत भामिनी गजगामिनी सिधारी ।
दमकि रही दामिनी सरिस द्युति दिन यामिनी सुखारी ॥
वृन्द वृन्द नारिनके प्रविशत निकसत कसमस परई ।
नहिं उछाह वश पीर गनत कोउ नाहिं तहँते कोउ टरई ॥
भई भीर भूपतिके मंदिर रह्यो न देह सँभारा ।
फटत छोर जरकस जामनके टूटत हीरन हारा ॥

कोउ नहिं करत सम्हार हर्ष वश को पूछै पुनि केही ।
जो पावत कछु सोउ लुटावत सिगरे राम सनेही ॥
कोउ नाचत कोउ गावत भावत बाज बजावत केते ।
कोउ कूदत मूँदत नहिं पाये कोउ करतालहि देते ॥
अवध प्रजा अंगन परसन सुर अवनिप अङ्गन माहीं ।
ह्वै लघु बालक सहित अंगनानि अनुपम नाच कराहीं ॥
कसि फेंटे कटि प्रेम लपेटे इक इक भेंटत जाहीं ।
दुख मेटे रावण लघु सेटे दुलहेटे बतराहीं ॥
दोहा--भये जे बालक विबुध गण, ते मिलि बालक वृन्द ।
वचन व्याज स्तुति करत, प्रगटे देखि मुकु
भजन-भूपके अनंद भयो जै मैया रघुलालकी ।
याचक अनेक पाये हाथी घोडा पालकी ॥
देवन सनाथ कियो जै जै रघुलालकी ।
जागी ज़ोर भाग आज कोशला भुवालकी ॥
ज़ैति जै विकुण्ठ धनी जैति जै कृपालकी ।
जैति कोशलेश पुत्र कौशलाके लालकी ॥
जैति सर्वकाल लोकपाल मालपालकी ॥
जैति हाल काल व्याल मोचन दयालकी ॥
जैति चारी भाल चन्द्रभाल शोक कालकी ।
नाशन अकाल जैति करन सुकालकी ॥
जैति विश्वको भुवाल देव आलवालकी ।
जैजै द्युति जीत मेघ माल त्यों तमालकी ॥
जैति दीन दाहिनो सुबाहु जे विशालकी ।
जैति सिंधुजा सु प्रान वल्लभ रसालकी ॥
जैति पाद कंज मंजु दीनन निहालकी ॥

जैति चक्र चण्ड खण्ड नक्र वक्र गालकी ॥
जैति भूमि भार हार वानि दीनपालकी ।
जैति जै महेश चित्त मानस मरालकी ॥
जैति रघुराज पै करैया कृपा जालकी ।
जैजै रघुवंश हंस कोशलेश लालकी ॥

दोहा—जे सुर बालक ह्वै कहत, तिन्हैं अवधके बाल ।
यह सुनि कहत कहा बकतु, जगत केर जंजाल ॥

छंद चौबोला ।

इतनेहीं अवसर महँ मंदिर भीर भई जन भारी ।
सकल राजवंशी रघुवंशी और अवध नर नारी ॥
भई विभिन्न समाज उभै तहँ यक नारिन यक नरकी ।
खुलि खुलि खेलन लगे रंग सब रंगभूमि मणिवरकी ॥
कनक कुम्भ सहसन केसरिके पीतहि रंग भरेहैं ।
सहसन राजत कुम्भ भरे दाधि राजत फरस धरेहैं ॥
भरे अतरके अमल विराजत राजत कनक पराता ।
चारु चंद्र चंडांशु अकारहि थार विविध अवदाता ॥
तिनमें धरचो गुलाल विविध रंग विविध बादले पूरे ।
दाधि कर्दम खेलत रघुवंशी नर नारी नव नूरे ॥
बाँधि बाँधि बाला निज वृन्दन राजकुँवर धरि लेहीं ।
मलि मुख लाल गुलाल ताल दै बोरहिं रङ्गसनेही ॥
तैसहि राज समाज जोरि जन धावैं हरष उमाहे ।
गहि गहि सकल सुंदरिनको तहँ गेरहिं कुण्ड उमाहे ॥
मच्यो कीच केसरिको वेसरि बिछलत तेहि नर नारी ।
तेहि ऊपर अरगजा वादले परि सुखात रँगवारी ॥
भयो धुन्ध ऊपर गुलालको नभमंडललौं परसै ।

मूँदत भानु विमान वितानन दशहु दिशानन दरसै ॥
बहुरि कनक पिचकारिनते जब उड़त सुरंग फुहारे।
तब मिटि जात गुलाल धुन्ध नभ प्रगटत रंग पनारे॥
दोहा--केसरि रंग धारा मिलति, सरयू धारहिं जाइ।
रामजन्म मनु पीत पट, पहिरि लियो हरषाइ॥

छंद चौबोला।

कबहूँ बहति श्वेत दधि धारा सरयूमें मिलि जाईं।
नृपहि बधाई देन हेतु मनु सुर सरिता चलि आईं॥
कबहुँ उसीर अतरकी धारा हरित वर्ण छबि छाईं।
मनहुँ कलिन्दी परम अनंदी पति देखन हित धाईं॥
अधिक कहूँ रोरीकी घोरी अरुण धार प्रगटानी।
सोहत मनहुँ भारती धारा सुख लूटन ललचानी॥
कबहूँ हरित सुरंग पीत रंग उमडहिं तीनिहुँ धारा।
रामजन्म मनु मानि त्रिवेणी लिय सरयू अवतारा॥
धारे अरुण बसन सुखमाते रंगित अरुण शरीरा।
मनहुँ जीति घायल रण घूमत रघुवंशी रणधीरा॥
खेलत टूटि गये मुकुता सृग मुकुत वृन्द छहराने।
मनु अपार सुख लेन तारगण द्वार द्वार दरशाने॥
पुरुष नारि खेलत उमंग भरि त्यागि शरीर सम्हारा।
मिलत मोद भरि हटत हारि नहिं धसत गसत बहु बारा॥
नारि पुरुषकहँ नारि बनावहिं दै दै चहुँकित तारी।
पुरुष लजाय पराय जात कहुँ सुनि सुनि मंजुल गारी॥
खेलत कोउ न अघात मोद रस प्रविशत धाइ देखैया।
दशरथ भूप भाग भाषत मुख दै दै विविध बधैया॥
रथ तुरङ्ग मातंग चढे कोउ यक एकन ललकारैं।

मिश्रित रोरी रत्न मूठि तहँ बारहिं बार पवारैं ॥
दोहा--वारन वाजी आदि सब, वाहन भये सुरङ्ग ।
रह्यो न अस कोउ अवध पुर, जो खेल्यो नहिं रङ्ग ॥
फटिक फरश पर वादलो, छायो केसरि कीच ।
जलद पटल रविकर निकर, मनु गिरिहस्त नगीच ॥

छंद चौबोला ।

खेलत खेलत रघुवंशिनको भयो विलंब महाना ।
आनँद रसवश अति उछाह दिन काल जात नहिं जाना ॥
खेलत खुशी भये रघुवंशिन कोशलपति सुख छाये ।
दै नवीन भूषण पट सुंदर जस तस कै बरकाये ॥
बोलि वसिष्ठ आदि गुरु वृद्धन कुँवरन भवन सिधारे ।
नांदीमुख शराध आदिक नव जातकर्म निरधारे ॥
जो राजर्षि यज्ञ भागन ते अबलों नाहिं अघायो ।
ताहि कनक मुद्रा महँ मधु धरि दशरथ भूप चटायो ॥
हिरण्याक्ष अरु हिरनकशिप भट आदिक जो संहार्‍यो ।
ताहि प्रेतबाधा वारन हित राई लोन उतार्‍यो ॥
जासु चरण प्रगटित सुरसरिता कीन्ह्यों विश्व पुनीता ।
तेहि शुचि करन हेत कौशल्या नहवावैं अति प्रीता ॥
जो बलि छल्यो बाढि वामन वपु द्वै पद किय संसारै ।
धन्य भाग्य तेहि रानि कौशला छोट रूप महँ पारै ॥
जासु नाम मुख लेत रोग भव छूटत विनहिं प्रयासा ।
ताहि देत घूँटी नृप भामिनि देखहु अजब तमासा ॥
जो सच्चिदानन्द विग्रह प्रभु पीतांबर छबि छावै ।
तेहि दशरथ रानी हुलसानी नीलो वसन वढावै ॥
जाके वचन वेद वाणी विधि विबुध बँधे सुख सोवैं ।

दशरथ भौन कोन सूपा तेइ कहाँ कहाँ प्रभु रोवैं ॥
दोहा--जासु नैनकी सैनते, विश्व पलत नाशि जाय।
ते नयनानि में कौशला, काजर दियो लगाय॥
जातकर्म जस कौशला, कीन्ह्यो निज सुत केर।
तेहि विधि तीनों कुँवर कर, करी मातु सुख ढेर॥

छंद चौबोला।

घर घर मङ्गल विविध वधावा माच्यो परम उरावा।
ह्वै गो आजु सनाथ अवधपुर सकल जगत सुख छावा॥
जिमि सुन्दर मंदिर महीपके छायो परम उछाहू।
तेहि विधि अवध नगर घर घर नर नारि उछाह अथाहू॥
कंचन केतु कलित कदली के खम्भ अनेकन द्वारे।
धरे पुरट घर भरे सलिल शुचि चमचमात द्युतिवारे॥
घर घर तोरण ध्वजा पताके विविध किता के सोहैं॥
सींची गली सुगन्ध सलिल भल थल थल मानस मोहैं॥
घर घर नाचत घर घर गावत घर घर बाज बजावैं।
घर घर हुलसत घर घर विलसत घर घर रतन लुटावैं॥
घर घर रचित चितेर चतुर कर चित्रावलि अतिचारू॥
घर घर धूम धाम माच्यो पुर विमल विनोद विहारू।
आवत आसु अवधवासी सब कौशलनाथ जोहारैं।
धन लुटाइ धन पाय राज ते सादर सदन सिधारैं॥
यहि विधि मच्यो अवधपुर आनँद को वरणै सुख एकू।
अति संघर्ष हर्ष वर्षत नहिं सुर नर रह्यो विवेकू॥
अवध अनन्द निहारि गगन पथ रुके भानु गात भूली।
रुक्यो चक्र शिशुमार वार तेहि राम जन्म सुख फूली॥
अवध जौन दिन जन्मलियो हरि सो दिन भो षट्मासा।

हरि गुण गावत चले दिवाकर त्यागि खलनकी त्रासा ॥

दोहा--बहुत काल में सुरति करि, जब डोल्यो शिशुमार ।
तब संध्या भै भानु किय, अस्ताचल संचार ॥

छन्द नाराच ।

प्रदीप पांति भावती प्रदीप पांति भावती ।
सुमङ्गलानि गावती सुमङ्गलानि गावती ।
सुदाम दाम पावती सुदाम दाम पावती ॥
फुलेहरानि ल्यावती फुलेहरानि ल्यावती ।

कवित्त ।

पेषिकै प्रदोष काल भौन महिपालजूके, चामीकर थारनमें परम प्रभादली । धैंधै हेम दीपक प्रदीपति सुपंथ छाइ, पहिरे सुरंग पटधारे भूषनावली ॥ मंगलामुखी न संग गावैं मङ्गलानि गीत, मङ्गलानि द्रव्य लीन्हे चारु कुसुमावली । रघुराज आई राजमन्दिर अवध नारा, तारावली आगे करि मानो चपलावली ॥ १ ॥

भूपति भवनमें विराजी दीपराजी खासी, प्रगट भईहै पुनि अवध तमाममें ॥ घाट घाट वाट वाट हाट हाट दीप ठाट, जागा राशनाई जगतीके ग्राम ग्राममें ॥ प्रगट्यो प्रकाश स्वर्गलोक ब्रह्मलोकहुँलौं, कीन्हे तेंहि याम धाम देवधाम धाममें ॥ भनै रघुराज रघुराजके जनम दिन, जोतिभै उदोति सो विकुण्ठ अभिराममें ॥ २ ॥

सवैया--दीपति दीपावली दशहूँ दिशि, दीह देवारन द्वारन द्वारन ।
तैसे हजारन ऊंचे अगारन, बाग बजारन त्योंहीं वगारन ॥
यों सरयूके किनारन धारन,सोहि रहे माणि दीप कतारन ।
श्रीरघुराज मशाल अपारन, वाजिन वाजिन बारन बारन ॥

घनाक्षरी ।

रोशनीके वृक्ष रोशनीके बने ऋषि बहु, रोशनीके गुच्छ रोशनीके रक्ष अच्छेहैं । रोशनीके वाजी ताजा रोशनीकी गजराजी,रोशनीके

राजिव तडाग गन स्वच्छैहैं। चंद चाँदनीसों कहूं विमल प्रकाश पूरो, कहूं भान भासहीसों फूल जात लच्छैहैं। भनै रघुराज कहूं श्यामरंग पीत रंग, हरित सुरङ्ग रङ्गभूमि रङ्ग लच्छैहैं॥

दोहा--कारीगर केते तहां, कारीगरी देखाय।
करी रोशनी विविध विधि, द्वारन द्वार बनाय॥

सवैया।

सम्पति केती लुटावत पावत, गावत बाज बजावत प्रीते।
बात बतावत मोद बढावत,त्यों हँसिकै हुलसावत हीते॥
रङ्ग उडावत साजु सजावत, खात खवावत प्यावत जीते।
यद्यपि याम भये षट मास, पै आवत जावतही जनु बीते॥

दोहा--बिते याम युग द्योसके, बिते चारि निशि जाम।
भये जाम षट मास षट, राम जन्म अभिराम॥

छंद चौबोला।

मोदमई यहि भांति चैत की नौमी निशा सिरानी।
भयो भोर चहुँ ओर शोर मग करन लगे सुखदानी॥
उठि भूपति करि प्रात कृत्य सब लियो वसिष्ठ बोलाई।
दीन्हों द्विजन दान संपति बहु बार बार शिरनाई॥
महा महर्षि वसिष्ठ आदि नृप लै अन्तहपुर गयऊ।
कुल व्यवहार चार संसारी सकल निवाहत भयऊ॥
पुनि भुवाल मणि जाय सभा महँ बैठे परम उदारा।
बोलि बोलि सिगरे रघुवंशिन कीन्हो अति सतकारा॥
नट भाटन वन्दी वर सूतन पंडित कविन सुजाना।
दश स्यन्दन स्यन्दन गज वृन्दन दै दै अति सन्माना॥
कोउ नहिं बाकी रह्यो भुवन अस जेहि दशरथ नहिं दीन्हो।
ऐसहु रह्यो न कोउ कोशलपुर जो सम्पात धरि लीन्हो॥
ऋतु अनऋतु गति तजै महीरुह फूले फले अपारा।

जहँ जस सलिल प्रयोजन तहँ तस घन बरसै जल धारा॥
बीति गये यहि भांति दिवस दश मङ्गल मोद उराये।
एकादशयें दिवस भूपमणि मुदित वसिष्ठ बोलाये॥
सिंहासन बैठाय पूजि पद बार बार शिरनाई।
अति विनीत ह्वै विनय कियो नृप आनँद अंबु बहाई॥
देव मनोरथ सकल हमारे पूरे दया तिहारे।
यदपि रहे दुर्लभ परमेश्वर करुणा नैन निहारे॥

दोहा--नाथ घरी सुख शोधि कै, द्विजन सहित विन देर।
नामकरण अब कीजिये, चार कुमारन केर।
सुनि वसिष्ठ प्रमुदित भये, एवमस्तु कहि बैन।
उठि मंदिर आवत भये, बोलि मुनिन भरि चैन॥
नामकरण को दिवश शुभ, करि मुनि संग विचार।
नृपहि बुलाय सुनाय दिय, आनँद बढ्यो अपार॥

छंद चौबोला।

माधव कृष्ण पंचमी शुभ तिथि नामकरण अब होई।
यह सुनि अवध प्रजा उछाह वश लहे नींद नहिं कोई॥
नई साजु साजन सब लागे बाँधे पीत निसाना।
तोरण कदलिखंभ द्वारन प्रति ताने विशद विताना॥
भूप चौक महँ चंद चाँदनी सरिस चाँदनी सोही।
तोरणविमल मदनमुखमोरन जेहिलखिमुनिमति मोही॥
कदली खम्भ कनकके राजहिं रत्न पुहुप छबिछाये।
द्वार दिवार अपार दिवारन चित्र अगार बनाये॥
मीन बिहङ्ग कुरङ्ग रत्नके रङ्ग रंगके सोहैं।
धवल धाम पर नवल निसान पवन पथ मानहुँ पोहैं॥
खैर भैर माचि रह्यो नगरमहँ नामकरण उतसाहू।

कियो जनाव जाइ रनवासहि यह उराउ नरनाहू॥
नामकरण सुनि सकल कुमारन अति हुलास रनिवासा।
लगीं सजावन चारु चौक सब परम उतङ्ग अवासा॥
विविध कनकके खम्भ वितानन मुक्त झालरैं झूमैं।
चौक चारुमहँ रत्नचौक रचि किय विचित्रता भूमैं॥
तहँ वसिष्ठ कौसल्याके घर शासन जाइ सुनायो।
चारों भाइन नामकरण हित बरहौं साजु सजायो॥
सूरज चन्द्र कनक बनवाये औरहु वेद विधाना।
नाम लिखन हित पान कनकके अति सुंदर निरमाना॥
दोहा—औरौ सामग्रा सकल, विरची वेद विधान।
मुनि उर लागी लालसा, कैसे होय विहान॥

छंद चौबोला।

जैसे तैसे बीतिगई निशि प्रगट्यो विमल प्रभाता।
उठिअवनीपतिनित्यकृत्यकरिबोल्योगुरुहि विख्याता॥
लै मुनि मंडल गुरु वसिष्ठ तहँ भूपति सदन सिधारे।
यह सुनि द्वार द्वार कोशल पुर बाजन लगे नंगारे॥
नौबत झरन लगी नृप मन्दिर तुरत गुणीजन आये।
बाज बजाय गाय सुख छावत नाचन लगे सुहाये।
सकल राजवंशी रघुवंशी बैठे चाल दरबारा।
अतिसंघर्ष भयो नृप मंदिर उमँग्यो मोद अपारा॥
और राजमंत्री सेवक सब राजभवनमहँ आये।
लहि सत्कार बैठ दरबारहिं संपति विपुल लुटाये॥
लहत अनेक इनाम गुणीजन यदपि न कछु जियआशा।
तहँ अनेक कौतुकी कला करि लागे करन तमाशा॥
छूटन लागी तोप तडातड शोर दिगन्तर छायो।
चढ विमान सुमन वरषैं सुर जय रव जगत सुहायो॥

अवसर जानि मुदित जगतीपति पहिरि पीतपट भाये।
करि आगे द्विजवृन्द वसिष्ठहि अन्तहपुर कहँ आये॥
पढहिं विप्र सुस्तैन चैन भरि मंगल साजु सवाँरे।
कौसल्या कैकयी सुमित्रा भूपति सँग बैठारे॥
बैठे भूपति कनकासनमें करन लगे कुलरीती।
गौर गणेश पूजि पृथिवीपति करी श्राद्ध जस नीती॥

दोहा--महा मनोहर सोहरो, गावन लागीं नारि।
त्रिशत षष्टि रानी तहां, बैठीं मणिगण वारि॥

छंद चौबोला।

चारि कुमारन धरि सूपनमहँ धाईं हर्षित ल्याईं।
लीलक वसन वोढाइ गौरि ढिग धरत भईं सुखछाईं॥
प्रथम रंगनाथै नृप पूज्यो करि षोडश उपचारा।
यथायोग्य कुलदेवन पूज्यो यथायोग्य सतकारा॥
सब देवन पूज्यो पृथिवीपति सन्त विप्र वर गाईं।
दीन्ह्यो आशिर्वाद सकल मुनि धनिधनि कौशल साँईं॥
होयँ चिरायुष पुत्र तिहारे जीवहु नृप युग चारी।
उदै धर्मपथ रहै सर्वदा सुख साहिबी तिहारे॥
पुनि वसिष्ठ पद पराशि भूपमणि विनै करी कर जोरी।
नाथ नाम कीजै पुत्रनको यही विनय अब मोरी॥
सुनि वसिष्ठ पुलकित तन नैनानि ढारत आनँद धारा।
कियो विचार मनहिंमन ऐसो धनि धनि भाग्य हमारा॥
उपरोहिती कर्म अति निंदित यदपि होत जगमाहीं।
तदपि आज मोहिं भयो सकल फल मो सम दूसर नाहीं॥
जग कारन कारन तारन जग अज महेश सुर साईं।

तासु करौं मैं नामकरण अब नृप बालककी नाईं ॥
अस विचारि शिर नाइ मनहिं मन बैठे निकट मुनीशा ।
बोलि भूप कहँ सूप निकट तब सुमिरि सत्य जगदीशा॥
इनके अहैं अनेक जगतमें नाम कर्म अनुसारा ।
सकल नाम इनहींके जानहुँ कहि न सकैं करतारा ॥
दोहा–गुण अनेक अभिराम अति, विदित तीनिहू धाम ।
आम जगत विश्राम अति, अहै नाम श्रीराम ॥
पुनि कैकयी कुमारको, लीन्हो अंक उठाइ ।
मुनि वसिष्ठ बोले वचन, कोशलपतिहि सुनाइ ॥
भरतखंड वासिन सकल, भरिहै सब मनकाम ।
ताते यह कहवाइहैं, जगत भरत अस नाम ॥
लक्षित सकल सुलक्षणनि, महावीर जग आम ।
तीजो सुत नृप रावरो, लहै सुलक्ष्मण नाम ॥
वैरिवृन्द बाधक विदित, विश्व विजय वपु वाम ।
चौथो सुत नृप रावरो, लहै शत्रुहन नाम ॥
अस कहि मुनिवर कनकके, चारि पान कर लीन ।
चारि कुमारनके तुरत, चारि नाम लिखि दीन ॥

घनाक्षरी ।

पालन करन विश्व मङ्गल करन विश्व, अन्तहू करन जाको नित्य
आचरन भो । दीन दुख दरन हरन महि भारहेत, सन्तन भरन
हित जासु औतरन भो ॥ अधमोद्धारन दीन दुःखको दरन जौन,
पोषन करन अशरनको शरन भो । भनै रघुराज सब नामको
करन जाते, ताको आजु औधपुर नामको करन भो ॥
सोरठा--करुणासिंधु मुरारि, करुणाई को कहि सकै ।
जाको वेद पुकारि, नेति नेति भाषत रहैं ॥
जाते सब अवतार, सो अवतार लियो अवध ।
को कहि पावै पार, जासु कृपा महिमा अमित ॥

दोहा--मुनि वसिष्ठ बोले वचन, सुनहु अवध भरतार ।
जनमकुंडली सुतनकी, सुनिये सहित विचार ॥

छंद चौबोला ।

संवत सर्वजीत त्रेता युग ऋतु वसन्त मधु मासा ।
नखत पुनर्वसु शुक्लपक्ष वर शशिवासर सहुलासा ॥
शूल योग तिमि करन कौल शुभ नौमी तिथि सुखदाई ।
मध्य दिवस अरु कर्क लग्नमें जन्म लियो रघुराई ॥
परे प्रथमही गुरु शशि सुंदर गुणगाहक सुत होई ।
चौथे शनिको सुनहु नृपति फल सकल भांति मुद मोई ॥
पित्त वातकी प्रकृति कछुक तनु कछु आलस सुकुमारी ।
बहुत थूल नहिं होय शरीरहुँ कबहुँ विपिन संचारी ॥
धर्म हेतु सुखशील साहिबी गुरु पितु मातु रजाई ।
ताजि कछु दिन परहेत वसहिंगे विपिन दूरि कहुँ जाई ॥
छठयें केतु आतिथि सुर भूसुर कवि दीनन सतकारी ।
आति दयालु तनु द्युति तमाल वर बहु तीरथ पगधारी ॥
सतयें मंगल तिय विरही है प्रबल शत्रुसों लरिहैं ।
करिहैं कपि मित्रता महानी सुयश सकल जग भरिहैं ॥
नवयें शुक्र बुद्धि विद्यामय अतिकृतज्ञ नृप सोई ।
परम उदार विचारमान पुनि विभव विष्णु सम जोई ॥
दशयें रवि वसु वाहन त्यों निगमागम सकल बतैहैं ।
बुधि बल विद्या विपुल विशारद शत शक्रन सुख पैहैं ॥
धन अरु धान्य धाम पूरित ध्रुव कहुँ मुनि वेष बनैहैं ।
महाराज शिर मुकुट माणिन मंडित नख ज्योति सुहैहैं ॥

दोहा--द्वादशयें बुध राहु को, फल सुनु महामहीप ।
साधुन हेती होहिंगे, शासक सातहु द्वीप ॥

छं०चौ०—निशानाथ फल पुनि सुनु नरपति धर्म कर्म मन लाऊ।
अतिविनीतशुभशीलडीलरिजुअतिशयसरलसुभाऊ॥
और बृहस्पति को फल नृपमणि जयी प्रताप सुरालै।
दृढ मंत्री शरणागत पालक संतनके सुख आलै॥
अब शुभ योग बतावतहौं कछु बालक जेठ तिहारा।
जन्म पंच ग्रह उच्च योग यह ह्वै है भू भरतारा॥
सातद्वीप नवखंडनरं जन अकथ अलौकिक करणी।
सांचो सकल भुवनको स्वामी यहि पति मनिहै धरणी॥
केंद्री है नवयेंकर स्वामी योग चन्द्र चूडामणि।
गुरुद्विजभक्त सकलगुणसागर दाता शूर शिरोमणि॥
सब ग्रह निरखतहैं निशिपतिको योगकही कलपद्रुम।
श्रीरघुराज सो जगत जियावै दोष हरै कैमद्रुम।

श्रीराम जन्मकुंडली।

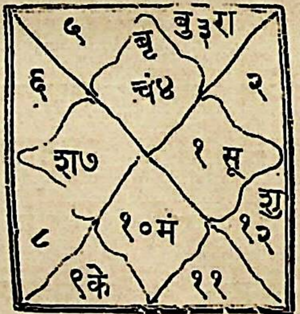

या सुतके गुण योग भोग वर पुहुमी प्रतिथ प्रभाऊ।
मेरीका गति कहन सकल फल कहिन सकैं. आहिराऊ॥
नहिं जानों को आइ अवतरो जागे भाग्य तिहारे।
किधौं रमावल्लभ तुम्हरे घर करिकै कृपा सिधारे॥
सुनहु भरतकी भूप कुण्डली कुँवर कैकयी केरो।
पुष्य नक्षत्र चैत्र शुदि दशमी मीन लग्न शुभ हेरो॥
दंड निशा बाकी जन्म्यो यह सकल जगत सुखदाई।

प्रथम शुक्र दूजे रवि शशिजहु राहु चतुर्थ गनाई ॥
दोहा--पँचयें गुरु शशि आठयें, शनि दशयें है केतु ।
अहै ग्यारहें भौम अस, भरत कुण्डलीमेंतु ॥
धर्मधुरंधर वीर मणि, अग्रज प्राण पियार ।
इष्टदेव सब मानि है, जेठो भ्रात उदार ॥
नेम निबाहक अति सहज, सुन्दर शील सुभाव ।
जेठ भ्रात अनुहार तन, दायक मुनिन उराव ॥
बुद्धिमान मंजुल वचन, विक्रम शक्र समान ।
परकृत लगी कलंक कछु, कछुदिन दुखी महान ॥
तजि कुटुंब धार वेष मुनि, करिहै तप अतिघोर ।
बंधु प्रीति यहि सम न कहुँ, बंधु वियोगहु थोर ॥
लषण कुण्डली अब सुनहु, चैत्र शुक्ल बुधवार ।
तिथि एकादशि चौदहें, दंडमाहँ अवतार ॥
कर्क लग्नमें जन्म भो, प्रथमें गुरु शशिजान ।
चौथे शनि छठयें कह्यो, केतु महाबलवान ॥
सतयें मंगल नवम पुनि, शुक्राचार्य सोहाइ ।
दशयें रवि बुधबारहें, राहु पऱ्यो ग्रह आइ ॥
यहू कुंडलीके सुफल, सुनहु सकल महिपाल ।
कनकवर्ण तनु अतिसुभग, सुंदरबाहु विशाल ॥
महाबली धनु शर निपुण, वीरशिरोमणि सत्य ।
सर्वस अग्रज मानिहै, तेहि पद निरत सुनित्य ।
अति प्रचंड खंडल हवन, यश भरिहै नव खंड ॥
शील रूपगुण निधि नवल, दलिहै पुहुमि पषंड ॥
विद्यामानगमान वित, निरभय सहज सुभाव ।
गौरवर्ण सरासिज नयन, जिमि पूरण उडराव ॥

दीन सनेही हीन दुख, कछु दिन नारि वियोग।
काननचारी कछुक दिन, जेठ भ्रात संयोग॥
सुरजेता नेता अवनि, भुवन उदग्र प्रताप।
करी मिताई कपिनसों, करि वैरिन सन्ताप॥
महाशत्रु संगर वधी, दिन प्रति युद्ध उछाह।
अति आतुरक्रोधी कठिन, दलनायक जगमाह॥
तीनिहुँ बंधुनते कछुक, आयुष ओछि निदान।
लषण कुण्डलीको कियो, फल नरनाह बखान॥

घनाक्षरी।

जे जे फल भूप सुन शत्रुशाल कुंडलीके, चैत्र शुक्ल एकादशी
नषत सरेखा है। चौदै दंड बीते दिन लीन्हो अवतार यह, करक
लगनमें अतीव सुखरेखा है॥ मूरतिमें गुरु शशि चौथे शनि छठौ
केतु, सातयें सुभौम नौम शुक्र शास्त्र लेखा है। दशयें तमारि
बुध राहु बारहें विराजै, ताको फलादेश सुनै सो मति सरेखा है
॥१॥ महा बली धीरवीर अग्रगण्य धरा धन्य, विदित ब्रह्मण्य त्यों
शरण्य सर्व काल है। पूरण शशी सों वेष भ्राता भक्त रेख जाकी,
राखैगो न शत्रु शेष तेष सुरपाल है॥ भनै रघुराज मथुराको
यह होई राज, करी सब काज भ्रात हुकुममें हाल है। संगर कराल
सदा दीनजन जूहपाल, तेज ग्रह पाल इव ह्वै है शत्रुशाल है॥२॥

दोहा—चारि कुमारन कुंडली, फल दीन्ह्यो मुनि गाइ।
सुनि भूपति रानी सकल, बोलीं पद शिर नाइ॥

छन्द चौबोला।

औरहु चार करावहु मुनिवर शशि सूरज सुत देखैं।
तुम्हरी कृपा नाथ यह आनँद हमको भयो अलेखैं॥
चारि कुमारनके करते कछु दीजै दान कराई।
धर्म निशामहँ करहु नाथ पुनि षष्ठी कृत्य बनाई॥
सुनि मुनि वचन पुलकि तनु बोले सो अवसर अब आयो॥

कुँवरनको लै जाइ बाहिरे सूरज चन्द्र देखायो ॥
उठीं सकल रानी हुलसानी पीतवसन तनु धारे।
दशरथ पीतांबर पहिरे तहँ मंजुल वचन उचारे ॥
देव तिहारी कृपा भये सुत ताते तुमहिं उठाई।
लै अंगन प्रभु चारि कुमारन रवि शशि देहु देखाई ॥
मुनि वसिष्ठ अभिलषित सिद्ध गुणि रामहि लियो उठाई।
विहँसि देखावन शशी दिवाकर अंगनमें लै आई ॥
रामहि प्रथम देखायो रवि शशि पुनि लषणैं मुनिराई।
बहुरि भरत रिपुसूदन कहँ तहँ अति आनँद उर छाई॥
मङ्गल गीत कामिनी गावैं अति मंजुल सुर छाई।
बाहर दगैं तोप अगणित जन सम्पति रहे लुटाई ॥
मुनि समीप दशरथ नृप सोहत पुनि तीनों महरानी।
पुनिसै तीनि साठि रानी सब सोहि रहीं छबि खानी ॥
करहिं कुमारनकी, नेउछावरि चूमहिं वदन सरोजू।
करहिं बहुरि दशरथ नेउछावरि रह्यो न दुखकर खोजू।

दोहा--कौसल्या कैकैसुता, तथा सुमित्रा पाहिं।
करहिं निछावरि सकल तिय, कनक रत्न शिर माहिं ॥
रघुवंशिनकी दार बहु, साचिव सुहृद पुर नारि।
करी निछावरि विविध विधि, प्रमुदित सुतन निहारि ॥

सवैया।

प्रभु आपने आपने देखनको, अँगनामें कढे मुनि अंक लसैं।
धनि भाग्य विचारि तमारि तहां, रथ रोकि रहे हियमें हुलसैं॥
तिनको कारि वन्दन बारहिंबार, शशियुत मोद लहे सरसैं ॥
रघुराज गुने हम देखे तिन्हैं, अजौं देखनको जो अजौं तरसैं॥ १॥

जाको अहै मन चन्द्रमा चारु, सुनैन हैं सूरज बाहु सुरेशू ।
जो करता भरता हरता जग, मानत लोकप जासु निदेशू ॥
को वरणै रघुराजकी भाग्य, हरी प्रगटे जेहि आइ निवेशू ।
अंगनमें शशि सूर देखावत, पाणि में सूपन लै अवधेशू ॥ २॥

दोहा--कहां कहां रोये हरी, मुनि कह भरि अनुराग ।
कहँ विकुण्ठ कहँ वसुमती, धनि धनि दशरथ भाग ॥
मुनि कह तुमहुँ देखावहू, लै सूपन कर माहिं ।
सुतन सूर शशि यह छने, मङ्गल होत सदाहिं ॥
पृथक पृथक सूपन सुतन, भूपति पाणि उठाइ ।
देखरायो रवि चन्द्रमा, अंबक अंबु बहाइ ॥

घनाक्षरी

सातलोक ऊरध त्यों सातलोक अधहूके, संयुत अखंड ब्रह्म अंड
एक फनमें।धारै अहिराज जौन सर्षप समान विश्व, सोई तेजाविश्व
ते समेत छनछनमें । कमठावतार धारि धारै पीठि पंकज सो,
भुवन अधार सरदार सुरगनमें । ताको सूप पारिकै उठाइ निज
हाथनसों भूप देखरावै भान कौसिला अँगनमें ।

सोरठा--शीतभानु अरु भान, यहि विधि सुतन देखाइकै ।
दियो विविधविधि दान, अवधनाथ आनँद मगन ॥
यहि विधि करि सब चार, भूप बाहिरे गमन किय ।
जहां सचिव सरदार, बैठे वर दरबार महँ ॥
सिंहासन आसीन, भयो भूप मघवा सरिस ।
पुरजन सचिव प्रवीन, आइ जोहारे भृत्य भट ॥
यथायोग्य सतकार, यथायोग्य बैठाइ किय ।
बोले वचन सुवार, तुम्हरी कृपा उछाह यह ॥

दोहा--मुनिवर कुंवरन पाणि ते, लक्ष लक्ष वर धेनु ।
दान करायो सविधि तहँ, भयो दीन गण चेनु ॥

करि रक्षन पठि मंत्र मुख, यंत्र बाँधि मुनिराइ।
सावधान कहि तियनको, गे मन्दिर हरषाइ॥
सभाभवनमें भूप उत, बैठे सहित समाज।
पौर प्रकृति भट जान पद, रघुवंशी सब राज॥

छंद चौबोला।

बार बार सत्कार करहिं नृप मंजुल वचन सुनाई।
अतर पान सुरभित जल माला सबको देत देवाई॥
ईश मनावहिं अवध प्रजा सब पुत्र चिरायुष होवैं।
को महीप मानद तुम्हरे सम हम तुव बल सुख सोवैं॥
कह्यो राजमणि पुनि रघुवंशिन आजु जाति जेवनारा।
भोजनभवन चलहु बांधव सब हिलिमिलि करहिं अहारा॥
अति राजी रघुवंशिन राजी विकसित दृग राजीवा।
भोजन भवन जाइ धोये पद कर हिय हरष अतीवा॥
यथायोग्य बैठे सब बांधव तब नरनाथ उदारा।
मध्य बंधुमंडली विराजे तुरतहि बोलि सुवारा॥
भरि भरि विविध भाँति पकवानन विविध हेमके थारा।
परुसहु सकल राजवंशिनको करहिं यथेच्छ अहारा॥
कासि पट आछे सबके पाछे ल्यावहु मम पनवारा।
जस हमको तस सब भाइनको करहु न भेद विचारा॥
सुखी सूद सुनि सपदि चले तहँ सरदारन अनुरागे।
कञ्चन थारन भोज्य अपारन प्रमुदित परुसन लागे॥
ओदन दुदल बटी बट व्यञ्जन पय पकवान अपारा।
मनरञ्जन व्यञ्जन बहु भांतिन कलिय कबाबहु सारा॥
विविधभाँति पूरी सुख पूरी झूरी सरस सुहाई।
विविधभाँति मेवा षटरस युत तिमि बहु भाँति मिठाई॥

दोहा--को वरणै अवधेशके, व्यञ्जन विविध प्रकार
करि सत्कार उदार नृप, करवाये जेउनार ॥

छन्द चौबोला ।

सकल राजवंशी रघुवंशी भोजन करि सुख छाये ।
अचवन करि नरनाथ हाथसों तांबूलनको पाये ॥
बहुरि प्रजनको कियो निमंत्रण व्यञ्जन विविध जिवाँये ।
पौर जानपद दै अशीष सब निज निज भवन सिधाये ॥
भाइन मंत्रिन भृत्यन प्रकृतिन प्रजन सुहृद्‌गण काहीं ।
यथायोग्य भूषण पट दीन्हें बाचि रह्यो कोउ नाहीं ॥
यथा कियो सत्कार बाहिरे दशरथ नृप मतिखानी ।
तिमि बांधवन पौर नारिनको सतकारी सब रानी ॥
खात खवावत हँसत हँसावत भै संध्या सुखदाई ।
छठी चारु उपचारु करन नृप कह्यो वसिष्ठ बोलाई ॥
परम हुलास प्रकाश हिये महँ गुरु रनिवास सिधारे ।
षष्ठी भवन साजु सब सुन्दर वेद विधान सवाँरे ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा बैठीं सुतन समेतू ।
कनककुम्भ मणिखचित सप्तशतधारिगे कनक निकेतू ॥
मणिन दीप अवली अति राजति आगे गौरि गणेशू ।
पुरट पात्र सामग्री सोहति जैसी वेद निदेशू ॥
अवसर जानि सुमन्त तुरन्तहि भूपति गये लिवाई ।
गुरु वसिष्ठ तहँ वेद मंत्र पढि कृत्य अरम्भ कराई ॥
दासी परिचारिका पौर तिय रघुकुलकी सब नारी ।
बैठीं सकल अङ्गना अङ्गन जिन लखि सुरतिय हारी ॥

दोहा--पूजन पावत व्याजते, राम दरशके हेत ।
भै प्रत्यक्ष षष्ठी तहां, षटमुखयुत सुख देत ॥

जिन जिन देवन होत है, पूजन छठी विधान।
राम दरश हित देव ते, प्रगटे मूरतिमान ॥

छंद चौबोला।

निज निज पाणि लेत पूजन सुर राम पदुमपद परसी।
करहिं मनहिं मन रघुनन्दनको वन्दन आशिष बरसी॥
गावहिं गोरी गीत मनोहर सोहर सदन सुखारी।
नृपकी रानिनकी कुँवरनकी करहिं निछावरि नारी ॥
जिनको यथाविभव रघुवंशिन ते तस मणि समुदाई।
ल्याइ ल्याइ भूषण धन देते छठी कुम्भमहँ नाईं ॥
खैर भैर माचिरह्यो राज घर दीपावली विराजै।
छठी होत दशरथ कुँवरनकी हठी न कोउ सुख काजै ॥
रघुकुलकी सब सुभग सुवासिनि शीशन लिये चँगेरी।
विविध भाँतिकी जटित जवाहिर दीपावली घनेरी ॥
वसन विचित्र अनेक रङ्ग शुभ कलश विचित्र प्रकारा।
शिर धरि नचहिं अङ्गना अङ्गन सोहर गाइ अपारा ॥
युग युग जियहिं राज दुलहेटा दै अशीश द्विज नारी।
पाय भीख लै सखि जाइ घर कोउ आवतीं सुखारी ॥
राजभवन बाहर अरु भीतर मङ्गलमुखी सुनाचैं।
गाइ गाइ वर अनँद बधाई अति आनँद रस राचैं ॥
छठी भवन भूपति रानिनयुत छठीकृत्य सब करहीं।
खड्ग कमान बाण करियारी मंथ पूजि सुख भरहीं ॥
यहि विधि करिकै छठी कर्म सब लक्ष गऊ नृप दीन्हें।
गुरु वसिष्ठ विप्रन कहँ बाँटे ते सादर सब लीन्हें ॥
दोहा–छठी भवनते काढि नृपति, सहित सकल रनिवास।
सभाभवन अन्तहपुरहि, बैठे सहित हुलास ॥

छन्द चौबोला।

कौसल्या कैकयी सुमित्रा त्रिशतसाठि सब रानी।
औरहु सब रघुवंशिन दारा लसहिं सभा सुख सानी॥
औरहु नगर नारि दासिगण परिचारिका अनेका।
पृथक पृथक सत्कारहिं रानी करि करि विमल विवेका॥
अवसर जानि रैनि आधी गत सैन अयन प्रभु धारे।
छठी भवन जागरण करी तिय गाइ बजाइ अपारे॥
यहि विधि बरहौं छठी सुतनकी भूपतिमणि निरधारी।
बसे अवध आनन्द अवधि लहि निरखि कुमारन चारी॥
दिन दिन दूनदून आनँद रस अवध नगर अधिकातो।
दशरथ सुकृत सुसम्भव विभव विलोकत शक्र सिहातो॥
वर्षहिं वारिद काल काल महँ समौ सुहावन होई।
कोउ नहिं दीन हीन सम्पाति जन दुख जानै नहिं कोई॥
नित नवमङ्गल भवन भवन प्रति अवध प्रजा सुखरासी।
कब कढ़िहैं बाहिरे राजसुत देखनके सब आसी॥
आठ सिद्धि नव निधि सुरपादप चिन्तामणि सुरधेनू।
अवधनगरमहँ डगर डगर जनु वास किये भरि चेनू॥
अवधनगर अवलोकि अमर सब शिर भरि वन्दन करहीं।
कौशलदेश जन्म हित ललकत सरयू रज शिर धरहीं॥
जहँ प्रगटे नारायण जगपति चारि भ्रात भगवाना।
तहँकी सम्पाति विभव साहिबी को करि सकै बखाना॥

सोरठा--राम जन्म उत्साह, मैं वरण्यों संक्षेप कछु।
को अस कवि जग माँह, पावत पार समग्र कहि॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुर, श्रीकृष्णचन्द्र-कृपापात्राऽधिकारी· श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीरामस्वयंवर ग्रंथे रामजन्मोत्सवे पञ्चमप्रबन्धः॥ ५॥

दोहा–कवि कोविद ज्ञानी रसिक, वरणैं रामचरित्र।
कथन व्याज कीन्हे भजन, इत उत होन पवित्र॥
हरिलीला वर्णत यथा, चित्त अचञ्चल होइ।
योग याग साधन विविध, तथा करै नहिं कोइ॥
ताते हरिलीला कथन, सब साधन शिरमौर।
कहत सुनत वर्णत गुणत, अस आनँद नहिं और॥
भागवतादिक ग्रंथको, जानहु यही निचोर।
हरिलीला गावत सदा, पावत अवध किशोर॥
चले ग्रंथ पुहुमी प्राथित; सुकवि प्रशंसहिं मोहि।
यहि हित मैं रघुवरकथा, नहिं वरणों सुख जोहि॥
महाघोर कलिकाल यह, मोसम अघी अनेक।
निरत विषय रस मोह वश, त्यागत भक्ति विवेक॥
योग याग जप तप नियम, ज्ञान विज्ञान विराग।
हरिलीला अनुराग ताजि, करत विषय अनुराग॥
सुत दारा सम्पाति सदन, अति अशक्त निज मानि।
खानपानताजि आननहिं, जानत सुख जिय आनि॥
कहो कौन विधि होइ भल, दीन्हे प्रभुहि बिसारि।
निरत जगतके कर्मनित, हारेहु गुणत न हारि॥
पिता पितामह आदि सब, सुतहू नाति पनाति।
बन्धु कुटुंबहु नारि नित, मरत लखत दिनराति॥
महा मोहवश तदपि जन, हम जीहैं शत वर्ष।
मानि ठानि जग काज नित, मृषा गुणत दुखहर्ष।
सो कलिकालप्रभाव साति, नहिं देही को दोष॥
मोसम अघी अलाल बहु, करत कछू न समोष।
सो ऐसे कलिके समय, केवल नाम अधार॥

कौनहु मिस मुखते कढत, पीसत पाप पहार ॥
पूरव पुण्य रही कछुक, ताते लहि सतसङ्ग ।
सन्तनके उपदेशते, रँग्यो कछुक हरिरङ्ग ।
श्रीगुरुकृपाप्रसादवश, उपज्यो कछुक विचार ।
मोसम अघी न और कोउ, करौं कौन उपचार ॥
श्रीहरि गुरु पितुकी कृपा,कियो मनहिं अस ठीक ।
जैसे तैसे राम यश, विरचहुँ नेवर नीक ।
कृष्ण रामके नाम गुण, लीला धामहु रूप ॥
वर्णन व्याजहिंते वदौं, यह उधार भवकूप ॥
नहिं जानौं कछु छन्द गति, नहिं साहित्य सँयोग ।
नहिं शास्त्रन सम्बन्ध कछु, तापर अस भव रोग ॥
रामकृष्णलीलाकथा, करहु यथामति गान ।
और उपाय प्रकार कछु, मोहिं न सरल देखान ॥
रामकृष्ण कीरति विमल; जो कछु वर्णन होइ ।
मोर भाग्य सन्तन कृपा, कारण और न कोइ ॥
रामजन्म उत्साह यह, वरण्यो मतिअनुसार ॥
बालचरित अब कछु कहौं, रसिकनको आधार।

छंद चौबोला ।

नामकरण जबते पुत्रनको कीन्हे दशरथ राई ॥
तबते होत रहत नित नव नव मङ्गल मोद बधाई ।
राजहि मुनि मण्डली महीपति सादर नेवति जेवावैं ॥
दीन द्विजन गृह बोलि बोलि बहु व्यंजन विविध खवावैं ।
न्योति न्योति पुरवासिनको नृप रचि रचि अशनप्रकारा॥
सादर सूपकार हाथनते करवावते अहारा ॥

रोज रोज विप्रन वसुधापाति रत्न दक्षिणा देहीं।
रोज रोज दीननके दारिद दारत रामसनेही॥
उमा रमा शारदा शची सब औरहु देवन दारा।
अवधनगर नारिन स्वरूप धरि करि षोडश शृङ्गारा॥
कौनहु काज व्याज अन्तहपुर प्रमुदित करहिं प्रवेशा।
करि कौनेहु उपाय देखहिं प्रभु त्यागहिं सकल कलेशा॥
सुंदर कनक अमोल खटोलन नील निचोलन धारे।
किलकत कबहुँ हँसत कहुँ रोवत सोवत चारि कुमारे॥
कबहुँ निहारत कर मुख डारत कबहुँ उचारत गूँगा।
पय प्यावति जननी लखि सूखत अधर निदारे द्युति मूँगा॥
सखी डुलावहिं विजन बैठि कोउ राईलोन उतारैं।
तैल बोरि पट अनल जरावहिं दीठि दोष द्रुत झारैं॥
गुरु वसिष्ठ बुलवावहिं रानी आवहिं सांझ सबेरे।
हाथ देनके व्याज पराशि पद पावहिं मोद घनेरे॥

दोहा--भूमि धेनु पट कनक तिल, अन्न करावहिं दान।
वाक्य वसिष्ठ पठैं विहँसि, रक्षहिं सुत भगवान॥

छंद चौबोला

कोउ मुठुकी घुनघुना डुलावैं कोउ करतालबजावैं।
अङ्क उठाइ कोउ हलरावैं सुत रोवन नहिं पावैं॥
सखि कज्जलको परम सलोना भाल डिठोना देहीं।
मनु पङ्कज कोना पर बैठो अलिछोना मधु लेहीं॥
कबहूँ अङ्क उठाइ भामिनी मणिन चित्र दरशावैं।
कबहुँ अंग धारि माणिन खिलौनन अनुपम खेलखिलावैं॥
कबहुँ पालने पारि मनोहर जननी मन्द झुलावैं।

कहां कहां रोवन जब लागैं कहा कहत दुलरावैं ॥
जिन बालनके नाम सुनत भव भूत भीत भजि जावै ।
तिन बालकन धूप देतीं तिय भूत भीति नहिं आवै ॥
करन चरण मुख चूमहिं जननी लखि नैननि तृण तूरी।
तेहि ओषधि मूरी तिय प्यावै जो जग जीवनमूरी ।
कुँवर कहूँ रोदन अति करहीं नहिं रगाइ रगवावैं ॥
तब झारहिं पढि मंत्र अनेकनि भूपहि खबरि जनावैं ।
आवहिं तब रनिवास राजमणि गुरु कहँ सङ्ग लेवाई ।
तुलादान घृत अन्न मधुन के विप्रन देहिं दिवाई ॥
वृद्ध वृद्ध नारी पुरवारी बाल चिकित्सा ज्ञानी ।
तिनहिं बोलाइ झराइ विविध बिधि तजहिं शङ्क सब रानी॥
वामदेव आदिक मुनि ज्ञानिन सुतन निकट बैठाई ।
शंकर विष्णु सहस्र नामकर पाठहु देहिं सुनाई ॥

दोहा--यहि विधि अवध अनन्द महँ, बीत्यो पंचम मास ।
लाग्यो छठवाँ मास पुनि, अति हुलास रनिवास ॥
एक दिवस नरनाह तब, गुरु मंदिर महँ जाइ ।
गुरुपद पंकज परशिकै, बार बार शिर नाइ ॥
बोले वचन विनीत है, सुनिये देव दयाल ।
अब आयो कुँवरन सकल, अन्नप्राशनी काल ॥
यथा उचित तस कीजिये, करि लीजिये विचार ।
मंत्रिन आयसु दीजिये, करन हेत उपचार ॥

छंद चौबोला ।

सुनत वसिष्ठ हुलसि हिय बोले भले कह्यो महराजा ।
चारि कुमार अन्नको प्राशन करवावहु कृत काजा ॥
असकहि शुभदिन शोधि ब्रह्मऋषि तुरत सुमन्त बोलायो।

भादौं मास श्रवण द्वाद्वाशिको सुदिवस सुखद सुनायो॥
जेहि दिन वामन जन्म लियो जग तेहि दिन भूप दुलारे।
करहिं अन्नप्राशन दुखनाशन रङ्गनाथके द्वारे॥
सुनत सुमन्त पुलकि तनु बोले भले कह्यो मुनिराई।
हौं अब जात साज सजवावन जस मुनिराज रजाई॥
बगरि गई यह मोदमयी सब खबरि अवधपुर माहीं।
नृप कुँवरनकी अन्नप्राशनी होति द्वादशी काहीं॥
नगर नारिनर अति आनंदित यथाविभव जिनकेरे।
लगे बनावन बाल विभूषण हीरा हेम घनेरे॥
सुनि कँवरनकी अन्नप्राशनी भरि उमंग अनुरागीं।
पृथक पृथक दशरथ महरानी साज सजावन लागीं॥
घर घर तोरण विमल पताके कञ्चन कुम्भ धराये।
क्रमुकरंभके खंभ विराजत पथ जल सुरभि सिंचाये॥
सचिव सुमंत आदि जेहि विधि मुनिराज रजायसु दीन्हें।
तेहि विधि साजुसाजि सब विधिसों राजकाज सब कीन्हें॥
आइगइ द्वादशी हुलासिन अन्नप्राशनी वाली।
खैरभैर माच्यो कौशलपुर चलीं सकल जुरि आली॥
दोहा—उठि प्रभात नरनाह तब, सहित उछाह नहाय।
नित्य कृत्य निरबाहि सब, जावक चरण दिवाय॥

छंद चौबोला।

चले रंग मंदिर अति सुंदर जहँ इंदिरा प्रियालै।
तहँ कौसल्या अरु कैकेयी लषण जननि तेहिं कालै॥
औरहु त्रिशत साठि महरानी रची शची इव साँची।
परिचारिका सहस्रन सोहैं रति रंभा छवि राँची॥
गावहिं मंगल गीत प्रीत भरि कनक कुंभ शिर धारे।
कोउ दधि दूब हरद अक्षत भरी चलीं कनक कर थारे॥

यहि विधि सहित सकल रनिवास हुलास भरे महिपाला ॥
रंगनाथ मंदिर महँ आये लै चारिहु निज लाला ॥
करि वन्दन पुनि दै परदक्षिण बैठे मंदिर माहीं ।
पौर जानपद सचिव आदि सब नहिं तेहि चौक समाहीं ॥
विविध भांति बाजन तहँ बाजैं सुमन सुमन झरि लाये ।
गायक नर्तक गावत नाचत कौतुक कला देखाये ॥
तब सुमंत कहँ बोलि महीपति शासन दियो सुनाई ।
रघुवंशिन कहँ वेगि बुलावहु सादर नेवत पठाई ॥
कियो महीपति रंगनाथको पूजन सकल प्रकारा ।
बार बार वंदन करि शिरसों करि अस्तुति बहु बारा ॥
चारि कुमारनके करते तहँ नेउछावरि करवाई ।
बोलि परम परवीन सुवारन बहु व्यञ्जन मँगवाई ॥
धरयो रंगपतिके आगे सब थारन पुरट भराई ।
गुरु वसिष्ठ तहँ रंगनाथ कहँ दियो निवेद लगाई ॥
दोहा--मनरञ्जन गंजन अरुचि, बहु विधि बने विरंञ्जु ॥
पय प्रकार बहु भांतिके, कलित मसाले मंञ्जु ॥

छंद चौबोला ।

दधि प्रकार ओदन प्रकार बहु तिमि कृसरान्न प्रकारा ।
मृदु मिष्टान्न प्रकार अनेकन सुधा स्वाद सुख सारा ॥
विविध वटी-वट फल प्रकार बहु पूरी पूप सुहाये ।
तिमि प्रकार आचारनके बहु षटरस रुचिर मिलाये ॥
चारि भाँतिके परम मनोहर औरहु सब पकवाना ।
सुरभित सलिल अनेक भाँतिके सूपकार मतिवाना ॥
यथा योग्य रघुवंशिन परुसे भृत्यन कहँ तिमि दीने ।
औरहु साधुन विप्रनको तहँ परुसे परम प्रवीने ॥

भोजन प्रथम सन्त सब कीन्हें पुनि द्विज वृन्द जेवाँये।
दै दक्षिणा भूपमणि निज कर पुनि सादर शिर नाये॥
पाय अशीष महीश शीश धरि गुरु वसिष्ठ ढिग जाई।
गुरुके अंक कुमारन को तहँ बैठाये शिरनाई॥
रंगनाथ को लै प्रसाद मुनि रामहिं दियो खवाई।
बहुरि भरत कहँ तिमि लषणहुँ कहँ रिपुहनको सुखछाई॥
मुनि कह सुनहु महीप शिरोमणि लै निज अंक कुमारा।
करहु अन्नप्राशनी पाणि निज यथा वंश व्यवहारा॥
पठन लगे स्वस्त्ययन ब्रह्म ऋषि गाइ उठीं सब नारी।
लै नरनाथ अंक रघुनाथहि रंगनाथ संभारी॥
तनक तनक सिगरे सुख व्यंजन सुतहि खवावन लागे।
मोचत युगल विलोचन आनँद बारि परम अनुरागे॥
दोहा--लषण भरत रिपुदमन की, अन्नप्राशनी कीन।
लघु लघु भूषण कर चरण, पहिराये मुद भीन॥

कवित्त।

अति अनुरागनते ब्रह्माजूकी जागनके,भागनते आजुलौं न तोष कछु पायोहै। महाभाग देवनके सेवनते साहेब जो, पायकै कितेक बलि चित्त नहीं लायोहै॥ बलि प्रहलाद अंबरीष आदि भक्तनते, लहिकै निवेद भूरि भोज कहवायो है। सोई रघुराज राज राज दशरत्थजूके, पाणि चारि चाउरते आसुरी अघायोहै॥

दोहा--जो षटरस नव रस स्वरस, रस अनरसमय देव।
ताहि चटावत षटरसन, धन्य अवध नरदेव॥
चारि कुमारनकी करी, अन्नप्राशनी भूप।
पुनि रघुवंशिनके सहित, भोजन कियो अनूप॥

छंद चौबोला।

रानी सकल कुमारन को तब राई लोन उतारी।
भाल डिठौना दै अति लोना फेरि उतारयो बारी॥
वीर सिंह रघुवंशी को तहँ लीन्ह्यों तुरत बोलाई।
रतनालिका तासु वर दारा धोवा धाइ बनाई॥
भूपति लै चारों कुँवरनको सपदि बाहिरे आई।
शत्रुंजय सिंधुर हरि गज सम तापर दियो चढाई।
पुनि तुरङ्गपर पुनि स्यन्दनपर दशस्यन्दन चढवाई॥
कुँवरन कर छुवाय संपति बहु दीनन दियो लुटाई॥
जयजयकार मच्यो तीनहु पुर भयो महा सँघर्षा।
देव विमानन हने दुंदुभी करि फूलनकी वर्षा॥
सचिव पौर बांधव उत्साहित लै लै भूषण दीन्हें।
सहित सकल रनिवास राज वर गृह प्रवेश तब कीन्हें॥
को कहि सके आज़ दशरथकी भाग्य विभूति बडाई।
जासु भवन अवतरयो भुवनपति कृपासिंधु रघुराई॥
देखि कुमारन अवध प्रजा सब आनँद मगन महाना।
अनिमिष निरखत वदन अनूपम चन्द्र चकोर समाना॥
कोउ दुलरावै कोउ खिलावै कोउ हलरावैं आई।
चारु चौंर चहुँ ओर चलावैं मोरछलान डोलाई॥
देहिं अशीश अवध नर नारी युगयुग जीवहिं प्यारे।
कब कर शर धनुधारि विचरहिंगे अङ्गन अटनि अखारे॥

दोहा--अन्नप्राशनी राम की, यहिविधि भई विशाल।
अवध प्रजा आनँद मगन, वसे सहित महिपाल॥

छंद चौबोला।

जब ते अन्नप्राशनी है गै रङ्गनाथ कै द्वारें।

तब ते कुँवर कढहिं नित बाहर प्रमुदित प्रजा जोहारैं ॥
मणि मंदिरमें रत्न पालने मंजुल रेशम डोरी ।
राजकुँवर तिनमें अति राजत करत चित्तकी चोरी ॥
जननी सुखित झुलावहिं निज कर मन्दहि मन्द अनंदी ।
कनक खिलौने सुतन खेलावहिं सबै प्रीति की फंदी ॥
रोजहिं चलि वसिष्ठ मुनि झारहिं ग्रहके दान करामै ।
मास मास पूतना विधानहुँ करवावैं निशि जामै ॥
छोटे कर पद छोटि अँगुरियां छोटि नखावलि राजै ।
पंकज कोस ओस कण मानहु सुखमा कोस दराजै ॥
कहुँ विहँसत कहुँ चरण चलावत कहूँ करत किलकारी ।
कहुँ रोवत जननी मुख जोवत पय प्यावति महतारी ॥
कबहुँ उठाय अली कोउ अंकहि चित्र विचित्र देखावैं ।
निरखि २ तिन विहँसि २ कहुँ आपहु भुजा उठावैं ॥
कहुँ रूसत रोवत नहिं सोवत रगवाये न रगाहीं ।
घीके तुला करावहिं जननी विविध उतार कराहीं ॥
नीलक वसन उढाय चारहू बालक सेज सोहाहीं ।
मानहु पूरण चारि चन्द्रमा जलद पटल मधि माहीं ॥
साँझ समय भूपति नित आवत सुखी होत सुत देखी ।
अङ्क उठावत अति दुलरावत निज कहँ धनि जग लेखी॥

दोहा—एक समय पयपान को, विलम भई वश काम ।
पदको अँगुठो निज मुखै, मेलि लियो तब राम ॥

कवित्त ।

चौंकि उठे शंकित विरञ्चि सञ्च रञ्च नहिं, शंकर सशंकित विचारैं
तेहि याम हैं । छोनी छोडिबेको चहैं दिग्गज दहंस मानि, हौल खौल
माचि रहे देव धाम धाम हैं ॥ भनै रघुराज उठी तरल तरङ्ग सिंधु,
प्रलैके पयोद धाये व्योम ठाम ठाम हैं । डोल्यो शिशुमार त्यों
तरणि तारा तारापति, चरण अँगूठो जब मेले मुख राम हैं ॥

छंद चौबोला ।

नित नित पुरवासिनी अङ्गना ल्यावैं नवल खिलौना ।
तेहि मिसि देखि राजकुँवरन को भाषहिं अबै चलौना ॥
कोउ झँगुली कोउ मृदुलवढनियां कोउल्यावैं रचिताजा ।
कोउ बनाय पट तुरँग मतंगन कोउ लावैं लघु बाजा ॥
जे लखि जातीं लालन को ते कहहिं निरखि हम आईं ॥
सुनि सुनि जे न लखीं ते धावहिं देखन को हुलसाईं ॥
रत्ननकी छोटी बहु खुरियां त्यों थरियां मनहारी ।
तिनमें कछुक पान भोजन धरि चखवावहिं महतारी ॥
रामहिं करत पियार कैकयी कौशल्या त्यों भरतैं ।
राम कैकयी भरत कौशला मानहु जन्यो उदरतैं ॥
सहज सुभाउ सुमित्रा मानहिं भरत राम ममवारे ।
त्यों कैकयी कौशला जानहि रिपुहन लषण हमारे ॥
जो प्रभु समर सुरासुर धावत खगपति पीठि सँवारा ।
तेहि घोरिल चढाइ नृपरानी करवावैं संचारा ॥
कब चलि पद पूरिहौ मनोरथ लालन अवशि हमारा ।
कबहुँ कहैं होरिल कब कानन खेलिहौ जाइ शिकारा ॥
गाइ गाइ पालने झुलावैं विजन डोलावैं माता ।
जून जून में जोहि जगावैं पुलकित साँझ प्रभाता ॥
जननिनको तहँ सुनन प्रीतिवशबिसराति सुरतिवचनकी।
धनकी मनकी सदन मदनकी भोजनकी छन छनकी॥

दोहा--काकहुँ दाकहुँ बाकहत, हँसि हँसि बूझहिं मात ।
कबहुँ बोलावत अंगुलिन, पलन परे किलकात ॥
यहि विधि बीत्यो वर्ष यक, आनँदमय सब याम ।
औचक हीं यक दिवस में, लियो करौटा राम ॥

छंद चौबोला ।

रतनालिका आदि सब नारी देखि महासुख पायो ।
राम करौंटा लेवजाय तहँ रानिन तुरत जनायो ।
रानी परममोद उर मानी भूपहिं खबरि जनाई ।
द्वारमें नौबति सहनाई बजवायो सुखछाई ॥
सुनत भूप मणि दान दिये बहु पूरी याचक आसा ।
गुरु वसिष्ठ अरु वामदेव लै सपदि गये रनिवासा ॥
रानी सकल राजमणि मोदित सुतकर दान दिवायो ।
गावन नाचन लगे गुणीजन अवधनगर सुखछायो ॥
यहिविधि दिनप्रति भूप भवनमहँ आनँद मंगल होई ।
देखि देखि चारिउ कुवँरनको धन्य होत सब कोई ॥
चारहु बालक चलहिं घुटुरुवन जननी लेहिं उठाई ।
दशरथ भूपति अजिर महासुख दून दून अधिकाई ॥
किलकहिं कबहुँ लरहिं आपुसमहँ पुनि यक एक मनावें ।
मणि खंभनमहँ लखि प्रतिबिंब चहैं तेहि हम गहिल्यावैं ॥
लघु लघु कंचनके हय हाथी स्यन्दन शुभग बनाई ।
तिनमहँ धाय चढाय कुमारन ल्यावहिं अजिर बगाई ॥
कबहुँक रूसत त्यागि पान पय अंगन मचलि परैहैं ।
बार बार जननी समुझावहिं मानि न रुदन करैहैं ॥
मणि मुठकी कंचन घुनघुनियां जननी जाय बजावैं ।
हाऊते डरवाइ उठाइ अङ्क पय पान करावैं ॥

दोहा--एक समय बैठी रहीं, कौसल्यादिक मात ।
पय प्यावत हलरावतीं, कहि कहि लालन तात ॥

छन्द चौबोला ।

सखी सयानि एक तहँ आई ऐसे वचन सुनायो ।
योगी बाबा नारि लिये यक द्वारदेशमहँ आयो ॥

बैल चढो अँग भस्म चढाये भानु समान प्रकासू ।
बालक करतल देखि कहत सब जन्म हाल अनयासू ॥
जहँ जहँ गयो अवधपुर घर घर तहँ तहँ शिशुकर देखी ।
जन्म भरेकी खबरि कही सब रक्ष्यो शिशुन विशेखी ॥
बडो चेटकी है वरज्ञानी कह्यो सु मोहिं बोलाई ।
एकबार दशरथके लालन दे देखाय तैं माई ॥
मोहिं न कछु अभिलाष राजघर लालच लाल लखनकी ।
हमहिं लखत आयुष बहु बाढी सुंदरि राम लषणकी ॥
जो आयसु अब होइ स्वामिनी ल्यावहुँ ताहि लेवाई ।
योगी बाबा बडो जनैया लखै कुँवर सुखदाई ॥
ल्याउ लेवाइ तुरत योगीवर कौसल्या कह बानी ।
गई लेवाइ ताहि अन्तहपुर महामोद मन मानी ॥
योगी बाबा देखि रामकहँ कीन्ह्यों मनहिं प्रणामा ।
करी मनहिं मन तासु नारि नति पूर भयो मनकामा ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा चलि आईं सब रानी ।
तेहि बैठाय पीठ पद धोयो लै पानी निज पानी ॥
ल्याइ चारिँहू लालनको तब डार्यो चरणन माहीं ।
योगी कह्यो जियै युग युग सुत इन कहँ कछु डर नाहीं ॥
दोहा--कौसल्या कह नाइ शिर, कहँते आये आप ।
अपनो नाम बताइये, करहु कौनको जाप ॥

छंद चौबोला

योगी कह्यो सुनहु महरानी मम कैलास निवासा ।
यह पषाण कन्या मम नारी नाम मोर कृतिवासा ॥
दैव बैलवाहन मोहिं दीन्ह्यो वसन मोर गजखाला ।
सुन्यो उछाह अवधको आयो देखनको तुव लाला ॥

भये मनोरथ पूर हमारे देखि कुमार तिहारे ।
तोहिं सम भाग्यवन्त नृपघरणी हम नहिं जगत निहारे॥
तब रानी शिर नाइ कह्यो अब सुतगुण वर्णहु ज्ञानी ।
कहन लग्यो योगी बाबा तहँ धन्य भाग्य निज मानी॥
षोडश वर्ष न्यून नेसुक जब ह्वैहै बालक तोरा ।
तब विदेश ब्राह्मण सँग जैहै अनुज सहित वन घोरा ॥
परम अपावनि परम भयावनि यक नारीको मारी ।
पुनि राक्षसन मारि संगरमें करिहै मख रखवारी ॥
प्रगट करी पाथरते वनिता पुनि धनुहीं यक तोरी ।
महा अमरषी यक ब्राह्मण कर बातनते मद मोरी ॥
तब दुलहिन पैहैं अति सुन्दरि कौनहुँ राजकुमारी ।
यक नारीके वचन पाश परि देहै पिता निकारी ॥
ल तिय अनुज चली काननको घर अनरथ अस होई।
तापस वेष विपिन बासि बहु दिन मुनिन महा मुदमोई॥
पुनि यक अनुज लेवावन जैहै नहिं ऐहै घरमाहीं ।
जैहै विपिन पराय दूरि बहु हानिहै निशिचर काहीं ॥
दोहा-महामुनिन मिलि पुनि बसी, बटतर करत अहेर ।
नाक कान कटवायहै, अनुजहाथ तिय केर ॥

छंद चौबोला ।

तहँ कोउ आय अधर्मी राजा हरिहै याकी नारी ।
वनचर सँग यह करी मिताई यक वनचरको मारी ।
कहूँ सेतु सागरमहँ रचिहै लै कपिकटक अपारा ।
सकुल सदल निजरिपुको करिहै करि सङ्गर संहारा ॥
बहुरि आपने भवन आय है करी राज बहुकाला ।
तुव सुत पाय प्रताप देव मुनि ह्वैहैं सकल निहाला ॥
द्वै द्वै सुत चारिहू सुतनके ह्वैहैं बली विशाला ।

अश्वमेधमख करी कितेकन ह्वैहै दीनदयाला ॥
तेरे सुतके नाम धाम गुण वर्णि सकौं मैं नाहीं ।
तुव सुतते सनाथ सिगरो जग नहिं संशय यहि माहीं ॥
सुनि अवधूत वचन रानी सब गुनि अहलाद विषादा।
कह्यौ मिटै बाधा सिगरी जेहि अस कछु करहु प्रसादा ॥
लै योगी निजगोद रामको मोद मानि मन भूरी ।
छूशिरकर पुनि पराशि कञ्जपद धारयो शिर पद धूरी ॥
मंत्र सुनावन व्याज शंभु तब कह्यो रामके काने ।
बहुरि विवाह समै लखिहैं हम मिथिलापुर सुखसाने ॥
सुनहु राजतिय कबहुँ पुत्र तुव ठाकुर रह्यो हमारो ।
ताते याको औ हमरो नित है सम्बन्ध अपारो ॥
पूजि गई कामना हमारी लालन देखि तिहारो ।
अब मैं जान चहौं अपने घर करि रक्षण तुव प्यारो॥
अस कहि उमासहित परदक्षिण दीन्ह्यों चारि पुरारी ।
बार बार पद पराशि पाणिसों कीन्ह्यों गमन सुखारी ॥
दोहा--नित नवलीला करत प्रभु, अम्ब अनन्द बढाइ ।
जेहि श्रुति ढूंढत सो रह्यो, दशरथ भवन लुकाइ ॥

कवित्त ।

योगी जाहि अचल समाधिको लगाइ ध्यावैं, पावैं नहिं साधन
अनेकन करत हैं । शंभु औ स्वयंभु शक्र सकल सुरासुरादि
सिद्ध मुनि जाकी बाँह छाँह विचरत हैं । वाक मन गोचर अतीत
मोह माया जीत, परब्रह्म परधाम विश्वको भरत हैं । सोई रघुराज
आज अवध अधीशजूके, अजिरमें धूरि धूसरित बिहरत हैं ॥

सवैया ।

खेल रहे अँगनामें लला, अबला त्यों उढाइ कहूं रज झारैं ॥
त्यों मचला मचली कबहूँ करि, केती कलाकरि मोद पसारैं ।

श्रीरघुराज छला कचके शिर, मानो झलाझल रेशम तौरैं ।
कीन्हें बलाबली बालनसों, अवधेशलला सबके मनहारैं ॥
जानुसों धावत मंदहि मंद, स्वछंद गिरै उठिकै पुनि धावैं ।
त्योंही परस्पर पाणि गहे, घसिलैं हँसि हेरि हुलास बढावैं ॥
श्रीरघुराज नृपांगनमें निज, अंगनको अँगराग लगावैं ।
लै रजपाणि उडावैं लला नहिं, आवैं जबै उठि मातु बोलावैं॥

दोहा--यहि विधि बीते वर्ष युग, एक दिवस मुद बाढ ।
कनककुँभ कर पकरिकै, भये राम महि ठाढ ॥

छंद चौबोला ।

धाई लखि धाई सुखछाई मातन खबरि जनाई ।
ठाढ भये कुँवर यहि अवसर कृपा करी जगसाई ॥
आनँद अम्बु अम्ब अम्बक भरि सबै तहां जुरि आई ।
दीनन दीन्ह्यों दान मान करि कुंभ सो धाई पाई ॥
खबरि पठाइ दई दशरथपहँ राम भये अब ठाढे ।
उभै पाणि नृप मणिन लुटावत आये अतिमुद बाढे ॥
फैलिगई सुधि डगर डगरमहँ अवध नगर चहुँ ओरा ।
ईश कृपाते आजु ठाढ भे चारिहु भूपकिशोरा ॥
ग्रामदेवतन नगर नारि नर लागे करन पुजाई ।
धाम धाममें धूम धामते लागी बजन बधाई ॥
अति उरावते रावद्वार महँ परे निसानन घाऊ ।
नौबत लागी झरन घरन बहु अवध न हर्ष अमाऊ ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा सकल ग्राम सुर पूजें ।
भाषैं सकल पुजारिन तहँकी सकल मनोरथ हूजें ॥
ग्रामदेव कुलदेव देव वर इष्टदेव अरु देवी ।

रोजहिं पूजहिं दशरथ रानी सुत मंगल हित सेवी ॥
जासु कृपा उपजत जग मंगल नशत अमंगल जाते ।
मङ्गल चहति तासु नृपरानी लघु देवन पूजाते ॥
पुरकी कुलकी और देशकी वृद्ध नारि जे आवैं ।
पावन हेतु अशीष भूपतिय, तिनके पगन परावैं ॥
दोहा--पुनि पुनि सुतन सिखावहीं, जननि अंक बैठाइ ।
जाय पितापहँ बाहिरे, रहहु न विलम लगाइ ॥

छंद् चौबोला ।

लुटरे केश शेष शावक सम छोटे मृदु घुँघुवारे ।
जननि पाणि पोंछे ओछे नहिं सुरभित अतर अपारे ॥
अर्ध इंदु इव लघु ललाटपर लागे तीनि दिठोना ।
सुधा पियन हित मनहुँ शीश माधि लसैं भुवंगम छोना ॥
त्रिकुटीते कानन लगि सोहत भ्रुकुटि रेख लघु लोनी ।
मनहु काम लिखि दियो लीक द्वै इतनी ही छबि छोनी ॥
शील अयन युग नलिन नैन वर अति विशाल कजरारे ।
मनहु मीन छबि जाल फँसे द्वै शोभा सिंधु करारे ॥
मन हुलासिका नवल नासिका लघुमुकुतायुत राजे ।
मानहुँ चम्पककली भलीविधि ओस बिंदु अति भ्राजे ॥
अति मृदु वदन अधर अरुणारे लसहिं दँतुरिया प्यारी ।
मनहु कंज बिच धरे बिम्ब युग अंतर बीज निहारी ॥
लसत कपोल अमोल गोल अति तनक अलकछहराहीं ।
मनहु शोभ सरसी मणि मंडित काम केतु फहराहीं ॥
मधि हीरा दुहुँ दिशि मुकुतावलि कठुला कंठ विराजा ।
बंधु कंबु कहँ भुज पसारि जनु मिलन चहत द्विजराजा ॥
छोटी मुकुत माल लहरै उर जननी करन सँवारी ।
मानहुँ यमुनधार हंसावलि बैठी पंख पसारी ॥

छोटे छोटे भुजन विजायठ छोट कटक करमाहीं ॥
मनहुँ भरी छबि छरी मदनकी बंधन कनक सोहाहीं ॥
दोहा--कटि करधन छुगुनू छजित, श्यामल वदन सोहाय ।
मनहुँ नीलमणि मंदरै, वस्यो वासुकी आय ॥
लघु ऊरू लघु जानु लघु, जंघ पृथुल छबि छाज ।
युगल नवल कदली मनहुँ, उलटायो रतिराज ॥
लघु नूपुर लघु कटक पद, लघु मुकुतनकी पांति ।
मनु मराल शावक अवलि, सरसिज चहुँकित भांति ॥
लघु अँगुरी लघु नख अवलि, लघु कोमल पद मंजु ।
मनु तारा निज प्रभु दुवन, किय कारागृह कंजु ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

कोशलेश लालजूके लाल लाल पदतल,
अंकुश कुलिश कञ्ज चक्र धुज रेख है ।
ठुमुकि ठुमकि वागैं कौशिलाके आंगनमें,
झुमुकि झुमुकि बाजैं भूषण विशेष हैं ॥
द्रवीभूत होती मणि उपटैं चरण चारु,
चूमैं चन्द्रवदनी अनन्दित अशेष हैं ।
रघुराज तेइ पद पावनकी लाख लाख,
करै अभिलाख लेखा लोकन अलेख हैं ॥
छोटे छोटे शीश तापै टोपी लसै छोटी छोटी,
छोटीसी रतन राजी छोटे लगे गोटे हैं ।
छोटी छोटी मोती कान छोटे कठुला त्यों कण्ठ,
छोटेसे विजायठ कटक द्युति मोटे हैं ॥
छोटी छोटी झंगुली झलाझल झलकदार,
छोटीसी छरीको लिये छोटे राज ढोटे हैं ।

छोटे छोटे पायँन विहारि रघुराज आज ॥
करत विकुण्ठ सुख औध आगे छोटे हैं ॥
छोटे छोटे हीरनके हार पहिरांये कण्ठ,
छोटे नख नाहरके रक्षा हेतु साजे हैं।
छोटे छोटे यंत्र जे बनायें हैं सुमंत्र गुरु,
तंत्रन विधानते सुनाभिलों विराजे हैं।
माजूफल शंख रुद्र अक्ष त्यों बजरबट्ट ॥
तुलसीको गुलिका सुधारे छबि छाजे हैं।
रघुराज राजैं राज अङ्गनमें चारों लाल,
कहूँ कौन कहूँ भौन कहूँ दरवाजे हैं ॥
छोटे छोटे नूपुर सो छोटे छोटे पायँनमें,
छोटी जरकसी लसी सामरी सुपामरी।
छोटे फाल छोटी चाल छोटे मुख नैन भाल,
छोटी करवाल ढाल मोरछल चामरी ॥
छोटे छत्र छोटे आतपत्र हेमपञ्ज छोटे,
छोटे कजरोटे त्यों जरोटे धूप कामरी।
भनै रघुराज छोटे छोटे मणि खम्भन में,
छोटे छोटे चारों लाल देत वागै भामरी ॥
माय पय प्याय पहिराई पट भूषण को,
भाल दैं दिठोना केश अतर लगाइ कै।
सखिन सयानिनको सङ्गमें कराइ चाइ,
रायके समीपमें पठावैं छोह छाइ कै ॥
ललकि बढाय पाणि दोऊ पसराय लेहिं,
भूप उर लाय सुख सिन्धुमें समाइकै।
भनै रघुराज कोई गादी गिरदामें चढै,

कोई गोद गरे हरे हरे लपटाइकै ॥
जागे एक द्योस राम भोरही ते रोवैं,
पय करत न पान राई लोनको उतारी हैं ।
वामदेव औ वशिष्ठ तुरत बोलायो भौन,
हाथहू देवायो नारी मंत्र पढि झारी हैं ॥
लै लै हलरावैं रगवावैं त्यों देखावैं चित्र,
अखिल खिलौनन खिलावैं देत तारी हैं ।
रघुराज पालने झुलावैं बजवावैं बाज,
जननी अनेकन जतन करि हारी हैं ॥
जब ना रगाने राम रमणी चतुर कोई,
आसुही कनक पट वारन बनायो है ।
हे हे लाल हाथी एक आयो भागो भौन जाइ,
करो पय पान अस कहि डरवायो है ॥
भभरि भगाने मातु अङ्कमें लुकाने जाइ,
किये पय पाने रघुराज इमि गायो है ।
डरयो हरि सोई हेम हाथी को जो ग्राह ग्रस्यो,
हाथनसों हाथा हाथी हाथी ऐंचि ल्यायोहै ।

दोहा--यहिविधि बीती वैस कछु, करत विनोद विशाल ।
अवध अजिर विचरत भये, पञ्च वर्षके बाल ॥

छन्द चौबोला ।

भानु उदै कै कछु आगे ते जागहिं रोजहिं रानी ॥
सखिन बोलाइ लगाइ जुगुति सब छानि धरावहिं पानी ॥
उठैं लाल जब मींजत नैनानि कज्जलकलित कपोला ।
मनहुँ श्याम सरसिजमहँसोहतिमधुकर अवलिअलोला ॥
अम्ब अंब कहि जननि बोलावहिं दे भोजन मोहिं भूखा ।
तुरत उठाइ अङ्क सजनी तहँ पोंछहिं पट मुख रूखा ॥

मचलि परहिं भोजन विनु पाये तब जननी उठि धावैं ।
रचि रोटी माखन मिश्री धरि कनक थरुलियन ल्यावैं ॥
नेसुक सुतन खवाइ पोंछि मुख नेसुक दै करमाहीं ।
आप करैं मज्जन आदिक सब बालक खेलन जाहीं ॥
तहँ सम वैस अवधपुर बालक खेलन सङ्ग सिधारैं ।
कहुँ अङ्गन कहुँ भवन भीतरे कहुँ बाहेर कहुँ द्वारैं ॥
माखन मिश्रा विविध मिठाई लै कर चारिहु भाई ।
बाँटहिं सखन काटि कछु दांतन कछुक फेंकि कछु खाई ॥
एक हाथ रोटी प्रभु लीन्हें एक हाथ में लकुटी ।
खात खात डोलत आँगन में मटकावत कहुँ भ्रुकुटी ॥
किलकत हँसत लरत मुख भाषत मंजुल तोतरि बानी ।
षट अष्टादश चारि वारि कै सुनि शारदा बिकानी ॥
छीन लेत इक केकर ते इक मंजुल माखन रोटी ।
सो माखन अतिधाइ गहत द्रुत कुसुम कलितकल चोटी॥
दोहा--यहि विधि अवध अधीश के, अंगन में जगपाल ।
परम स्ववश करुणा विवश, नाम धरायो लाल ॥

कवित्त ।

नील शैल वासी बाल राम को उपासी काग,
जानि कै अवध अवतार अविनाशी को ।
आयों सो दरश आसी परम हुलासी हिये,
जाको वरदान अहै विश्व के प्रकाशी को ।
कबहुँ न तोहिं महामाया मोह भासी भव,
हैहै तू अज्ञान नासी कल्प कल्प नाशिको ।
वायस विलोकि औधवासी रघुराज राम,
बालक विलासी भूल्यो ब्रह्म गति खाशी को ॥

वायस विचारचो बुद्धि शुद्धि सत्त्वरूप जाको,
सत्तातें जगत व्यापी माया जासु दासी है।
सत चिदानन्द रूप है अनूप रघुराज,
सृजत हरत पालै विश्व अविनाशी है॥
सोई परब्रह्म लीन्ह्यों औध अवतार सुन्यो,
देख्यो आइकै सो तहँ ब्रह्म तेजराशी है।
रोटी गहे हाथ में सुचोटी गुहे माथ में,
लँगोटी कछे नाथ साथ बालक विलासी है॥ २॥
दोहा--जान्यो प्रभु यह काग को, माया व्यापी मोरि।
दरशाऊं महिमा कछुक, लेहुँ भक्त भ्रम चोरि॥

कवित्त।

भरि अनुराग काग वागै प्रभु पाछे लाग, पद्मराग अङ्गनमें भाग बड मानिकै। भूमि गिरे जूटे कन खात न अघात उर, जात कहुँ आगे गति चञ्चलसी ठानिकै॥ एक वार पाणिसों गिरायो राम रोटी टूक, भाग्यो चोंच दाबि द्रोण भीति अति आनिकै। हाथको पसारे नाथ माथको उघारे धाये, वायसके साथ रघुराज जन जानिकै॥

सवैया।

वायस पीठको औ प्रभु पाणिको, अन्तर अंगुल द्वैक देखानो।
भाग्यो महा भभरो भव लोकन सातहु स्वर्ग पताल परानो॥
मेरुके कन्दर अन्दर हू धस्यो, देख्यो जबै मुरिकै डर मानो।
अंगुली द्वै निज पीठितें पाणि, पसारे भुजा रघुराज लखानो॥
वायस भीतिसों मूँद्योदृगै पुनि, खोलि लख्योपुर कौशल आयो।
पांचही वर्षके अङ्गन खेलत, ताहि विलोकि हरी मुसकायो॥
ताही समै प्रभुके विहँसात, तुरन्तही सो मुख जाय समायो।
श्रीरघुराज अनेकन अण्ड, कटाह लख्यौ कछु अंत न पायो॥

बीते अनेकन कल्प तहां, भटकात कहूं थिरता नाहिं पाई
देखो विचित्र भली रचना बहु, साँसहि लेत सो बाहर आई ॥
श्रीरघुराज लख्यो प्रभुको कर, रोटी सुखेलत अङ्गन धाई
काग कह्यो हरि सों शिरनाइ, हरयो भ्रम मो माहिमा दरशाई॥
श्रीरघुराज को वन्दन कै गिरि, नील को वायस कीनो पयानो
भक्त शिरोमणि ताहिको ह्वै कै, दियो निज भक्तिहिको वरदानो ॥
खेलन लागे सखानके संग, कोऊ यह चित्त चरित्र न जानो॥
जानि विलम्ब तुरन्तहि अम्ब, बोलाइ कराइ दियो पय पानो ॥
दोहा--पुनि तीनिहुँ जननी रच्यो, विविध कलेऊ मीठ।
कनक कटुरियन थरूलियन, धरयो मूँदि माणि पीठ ॥

छन्द चौबोला ।

तुरत बोलावन लालन के हित जननी सखिन पठाई।
कहत भई ते जाइ सुतन सों माता तुमहिं बोलाई ॥
चलहु कुँवर सब करहु कलेऊ अतिशय होति विलम्बा ॥
विरचि विविध व्यंजन मन रंजन परिखै बैठी अम्बा ॥
खेल रंग महँ रँगे लाल सब कीन्ह्यो कछू न काना।
विहरत सखन सङ्ग अंगन में मारत लकुट निशाना ॥
सखी उठाइ अंक लै गमनीं मचलि परे अङ्गन में ॥
खेलन लगे खेल पुनि सोई लाल सखन सङ्गन में ॥
बहुरि सखी चलि कह रानिन सों खेलत सकल कुमारे।
तुमहिं चलहु महरानी ल्यावहु कहा न करत हमारे।
कह्यो कैकयी जाइ सुमित्रा लालन करहु कलेवा।
जो विलम्ब होइ भोजन की रिस करिहैं नरदेवा ॥
अस कहि लियो उठाइ कुमारन भोजन भवन सिधारी।
कौसल्या के निकट सुतन को जेवन हित बैठारी ॥

चारि पिढ़ुलिया चारि थरुलिया चारिहु कनक कटुरियां ।
चारिहु लालनको बैठाइ धरी पुनि लघु बहु खुरियां ॥
पायस पूरी ओदन अद्भुत मोदक विविध प्रकारा ।
विविध भाँतिकी बनी मिठाई गोरस दधि घृतसारा ॥
माखन मिश्री मधुर मलाई सुरभित विविध मसाले ।
लालन लगीं खवावन जननी कहि कहि वचन रसाले ॥
दोहा—करन लगे चारिहु कुँवर, भोजन विविध प्रकार ।
जननि डोलावहिं कर विजन, निरखहिं मुख बहु बार ॥

छंद चौबोला ।

हिलि मिलि भोजन करत लाल सब हँसत हँसावत प्यारे ।
छीनत यक कर कौर और कर कहि कहि चोर पुकारे ॥
कोउ उठि भागत पुनि नहिं आवत घिरवत अँगुलि देखाई ।
तब बरबस जननी गहि ल्यावै देहिं पीठ बैठाई ॥
सुरभित सलिल पियावहिं कुँवरन कथा अनेक बखानैं ।
खेल मगन सुधि करहिं न भोजन बार बार सन्मानैं ॥
एक कौर लीजै पितु की बदि एक कौर बदि मोरा ।
एक कौर कैकेयी की बदि एक सुमित्रा कोरा ॥
जासु कौर नहिं लाल लेहुगे सो मानी अपमाना ।
यहि विधि करवावहिं महतारी भोजन व्यंजन नाना ॥
इमि भोजन करवाइ माइ सब निज कर कर पग धोई ।
पोंछि बदन पौढायो लालन पालनमें मुद मोई ॥
चापहिं पद पंकज कर कंजन सजनी विजन डोलावें ।
मन्द मन्द रघुनंदन को तहँ प्रिय पालने झुलावें ॥
कथा कहन लागी कौसल्या सुनियो लाल कहानी ।
तनक सोइ पुनि खेलन जैयो पचै पेट कर पानी ॥

रह्यो एक दैत्यन को राजा हिरणकशिपु जेहि नामा ।
कीन्ह्यो सकल भुवन अपने वश जीति सुरन संग्रामा ॥
ताके चारि कुमार भये पुनि अति सुंदर सब भाई ।
छोट सुवन कर पिता दियो प्रहलाद नाम धरवाई ॥
दोहा–लग्यो पढावन सुतनकों, गुरुके सदन पठाय ।
लगे पढावन आसुरी, विद्या कवि समुझाय ॥
सबै बाल तहँ आसुरी, विद्या पढे अजान ।
पढ्यो नहीं प्रहलाद सो, यदपि गुरू अनखान ॥

छंद चौबोला ।

जब गुरु जाहिं करन गृह कारज तब प्रहलाद सुजाना ।
बोलि सकल बालकन भक्ति रस करवावहिं हठि पाना ॥
आवहिं गुरु जब लेहिं परीक्षा तब बालक सानन्दा ।
ज्ञान विराग भक्तिरस भाषहिं कहि माधव गोविन्दा ॥
तब गुरु महाकोप करि भाषत इनको कौन नशावै ।
जानि परत कोउ विष्णु पक्षकर मोहिं चोराइ इत आवै ॥
एक दिवस बालक बोले सब सिखवावत प्रहलादा ।
गुरू कछू नहिं दोष हमारो करियत वृथा विवादा ॥
तब गुरु कह्यो कोपि प्रहलादहि सिखवावत तू कारे ।
कौन आइ धौं तोहिं बिगार्यो तू बालकन बिगारे ॥
अस कहि गहि प्रहलाद-पाणि को लैगो राजसभा में ।
कह्यो दैत्यपति सों यह बालक चलत न मोर कहामें ॥
सुनि बैठाइ अंक दानवपति पोंछि वदन पुचकारी ।
बेटा पढो कौन विद्या तुम देहु परीक्षा सारी ॥
तब प्रहलाद विष्णु प्रतिपादन कीन्ह्यों सब संवादा ।
हिरणाकशिपु कोपि बोल्यो तब करि मन महाविषादा ॥

रे मम कुलघालक तैं बालक सुरपालक कर दासा ।
अजहुँ छोडि दे बुद्धि बावरी नहिं पैहै अति त्रासा ॥
दे देखाइ अपने प्रभु को मोहिं तौ जानों तोहिं सांचो ।
नातौ शीश काटिहौं तेरो तैं मेरो सुत कांचो ॥

दोहा--बिहँसि कह्यो प्रह्लाद तब, मम प्रभु सब थल बास ।
मोमहँ तोमहँ खड्ग महँ, खम्भहु अवनि अकास ॥
इतनो सुनि करि लाल दृग, लै कराल करवाल ।
उठ्यो मसकि माहि जानु युग, मनहुँ कालको काल ॥
कह्यो दैत्यपति तोर प्रभु, जो सब थलमें होइ ।
कढै न क्यों यहि खम्भ ते, तुहिं रक्षै उर गोइ ॥
जबते कहन लगी कथा, तब यतनी लगि राम ।
औंघाने हूंके दियो, जहँ जहँ रह विश्राम ॥
हिरणकशिपु प्रह्लाद को, लै कराल करवाल ।
कह्यो तोर रक्षक कहां, दे देखाइ यहि काल ॥
शरणागत पालक प्रबल, यह सुनि कृपानिधान ।
परे पालने राम को, भूलिगयो शिशु भान ॥

घनाक्षरी ।

कहत कथाके कौशिलाके पति सिंधुजाके,
फरके प्रचण्ड दोरदंड तेहि काल हैं ।
उठि पलना ते ललना के मध्य रघुराज,
कीन्ह्यो महा गाजसी गराज विकारल हैं ॥
हाल्यो भूमि मंडल सुहाल्यो है अमर वास,
चौंके चारि भाल शशि भालहू उताल हैं ।
हर बर माची महा खभँर असुर पुर,
भभरि भगाने देव भभँर विहाल हैं ॥

दोहा—महाअशुभ मन मानि कै, उठी अम्ब अतुराइ ।
शिशु शिर कर धरि कहति भै, लल कहां को आइ ॥

छन्द चौबोला ।

लियो उठाइ अङ्क महँ जननी पोंछि वदन पुचकारी ।
राई लोन उतारि बार बहु पढि मंत्रन दिय झारी ॥
पुनि गौ पुच्छ भ्रमाइ शीश महँ तुरत वसिष्ठ बोलाई ।
बोलि चेटकिन मातु तुरतही भूपहि खबरि जनाई ॥
भूप जानि भूकम्प भीति भरि भीतर भवन पधारे ।
जुरि आयो रनिवास तहां सब पूछहिं भ्रम उरधारे ॥
कहा भयो यह शोर घोर अति छाइ गयो चहुँ ओरा ।
सबते कहति कौशिला रानी नहिं जानो कछु मोरा ॥
पलन परे मम ललन उँघाने मैं कछु कही कहानी ।
वज्रपात सम भै अघात धुनि एकहि बार महानी ॥
भूप कह्यो भूकंप भयो अति ताको शोर महाना ।
और न जानि परत कारण कछु यही सत्य अनुमाना ॥
गुरु वासिष्ठ अरु वामदेव तहँ दान करावन आये ।
सुनि वृत्तांत नितांत राम के बार बार मुसकाये ॥
कह्यो बहुरि राजा रानिन सों तजहु सबै भय भारी ।
भूमिकंप को भयो शब्द यह नहिं कछु अशुभ विचारी ॥
अस कहि दान करायो पुत्रन शांति कछुक तहँ कीन्हे ।
कियो गवन मुनि भवन आपने राम चरित चित दीन्हे ॥
भूपति सब कहँ सावधान करि अति अचरज मन मानें ।
बाहरजाय सभा सामंतन सब वृत्तांत बखानें ॥

दोहा—तबते जब सोवहिं लला, तब जननी निज पानि ।
धरे रहैं कहनी कहहिं, महा भीति मन मानि ॥

छंद चौबोला।

दुपहर जानि जगे चारिउ सुत उबटन मातु लगावैं।
गर्म सुगंधित सलिल विमल रचिं सुतन सपदि नहवाहैं॥
देह पोंछि पुनि ऐंछि· श्याम कच चोटी सुभग बनावैं।
एक एक मणि भाल उपर गहि फिरि भूषण पहिरावैं॥
पुनि झँगुली तनु ताज शीश पर चरण वसन पहिराई।
देहिं ललाट· दिठोना सुंदर कज्जल नयन सोहाई॥
बहु विधि करि शृंगार कुमारन सखि मंडल करि संगा।
छोटि छोटि पहिराइ पनहियां नृप दरबार उमंगा॥
कोउ कजरौट जरौट लिये कर कोउ मुरछल कोउ छाता।
राई लोन उतारहिं कोउ सखि कोउ पंजा अवदाता॥
यहि विधि चारौं कुंवर सखिन सँग भूपति सभा सिधारे।
पिताहि विलोकन प्रथम जाब हम धाये करि किलकारे॥
लषण दौरिकै चढे ग्रीवमहँ मुकुट पकरि दोउ हाथा॥
रिपुहन भरत बाठि युग जानुन मध्य अंक रघुनाथा॥
चूमहिं वदन सुतनकर भूपति ठोढी धरि बतवावैं।
सुनि सुनि तोतरि बानि विनोदित हँसै हेरि हँसवावैं॥
यदपि राजमणि चारिहु पुत्रन करहिं सनेह समाना।
तदपि प्रीतिकी रीति नीति लखि राम प्रेम अधिकाना॥
अति सुन्दर सुकुमार मनोहर राम लषण दोउ ढोटा।
तैसइ सुभग शीलमय सोहत भरत शत्रुहन जोटा॥
दोहा—कहुँ सिंहासनते उतरि, दौरि चढैं नृप अङ्क।
उदित उदैगिरिमें मनहु, पूरण चारि मयंक॥

छंद चौबोला।

यहि विधि सुनत खिलावत नृपमणि सिंहासन आसीने।
लहत मोद भट सचिव सभासद पंडित प्रजा प्रवीने॥

तेहि अवसर गन्धर्व युगल तहँ प्रभुदर्शनकी आसा।
चित्रसेन विश्वावसु आये दशरथ नृपति निवासा॥
करि सत्कार उदार शिरोमणि सभा बीच बैठाये।
करहु गान बालक हुलासहित शासन तिनहिं सुनाये॥
करि प्रणाम गन्धर्व भूपको प्रभुको वंदन कीन्हें।
महामुदित सारंग राग तहँ करि अरंभ दोउ दीन्हें॥
वीण बजावत मंजुल गावत उपज अमित उपजावैं।
लै सुर ताल डिगत नहिं नेको कोशलनाथ रिझावैं॥
सुनि गंधर्व गान तानन युत चारिहु राजकुमारे।
मन्द मंद सानन्द दुहुँन ढिग रघुनन्दन पगु धारे॥
सफल जानि गन्धर्व जन्म निज लिये अंक बैठाई।
प्रभु पदरज शिर धारि सुखी भे प्रेम वारि झरि लाई॥
प्रेम मगन गावन लागे पुनि निरखत चारिहु भाई।
मंजुल पद लै छन्द ताल युत दशरथ सुयश बनाई॥
बेला बीति गई बहु गावत वासवकी सुधि आई।
शक्रसभाका समय बीति गो बोले वचन डेराई॥
हमकहँ देहु विदा भूपतिमणि जाहिं इंद्र दरबारा।
करिहैं कोप जो हम नहिं जैहैं यहा काल नटसारा॥

दोहा—गन्धर्वनके वचन सुनि, गान जानि जिय नन्द।
सजल नयन विमनस भये, तहँ चारिहु रघुनन्द॥
विमन कुमारनको निरखि, भूपति करि कछु गर्व।
मेघ गिरा बोलत भये, सुनहु युगल गन्धर्व॥

छंद चौबोला।

तिहरो गान सुनत मन मोहे चारिहु कुँवर हमारे।
ताते अबै न जाहु इन्द्रपुर गावहु सभा मँझारे॥
भीति पुरंदरकी जो मानहु तौ हम लिखि यक पाती।

बाँधि बाणमहँ पठवत याहि क्षण जहँ वासव रिपुघाती ।
अस कहि धनुष मँगाय महीपति लिखि वासव कहँ पत्री ।
बाँधि बाणमहँ तज्यो जोर करि पहुँची सभा पतत्री ॥
बँधी बाणमहँ पेखि पुरंदर पाती पढ्यो पियारी ।
चित्रसेन विश्वावसुको तब दियो हुकुम असुरारी ॥
रहैं आजुते अवध नगरमहँ दोउ गन्धर्व सुजाना ।
करहिं गान नित राज सभामहँ खुशी होहिं भगवाना ॥
दशरथ धन्य धन्य कोशलपुर धन्य सभासद सर्वा ।
धन्य भये नृप सभा जाइकै मेरे दोउ गन्धर्वा ॥
तबते चित्रसेन विश्वावसु सभा जाय नित गावैं ।
अमित इनाम राम दर्शन युत रोज रोज दोउ पावैं ॥
पुनि वसुधाधिप बोलि बालकन कही विनोदित वानी ।
जननि भवन कहँ गवन करहु अब भै सन्ध्या सुखदानी ॥
करिकै बिदा कुमारनको नृप सन्ध्योपासन कीन्ह्यो ।
वदन प्रसन्न सदन गुरु गमने मुनि वन्दन करि लीन्ह्यो ॥
पुनि गुरुसों कर जोरि कह्यो नृप सुनिये देव कृपाला ।
चूडाकरण करणबेधनको आयो यह शुभ काला ॥

दोहा--सचिवन आयसु देहु प्रभु, करहिं सकल संभार ।
तुम्हरी दया मिले हमैं, ये सुकुमार कुमार ॥

छन्द चौबोला ।

मुनि कह भली बात भाषी नृप अब विलंब नहिं होई ।
चूडाकरण करणवेधनको सुख लूटै सब कोई ॥
अस कहि बिदा कियो भूपतिको सचिवन सपदि बुलायो ।
चूडाकरण करणवेधनको शासन सुखद सुनायो ॥
सचिव कहैं कर जोरि सुनहु गुरु है तयार संभारा ।
तेहि दिन होय उछाह अमित जब शासन होय तुम्हारा ॥

शोध लगन सुदिवस मुनिनायक किय रनिवास जनाऊ।
चले सचिव शिर धरि मुनिशासन जाय जनाये राऊ॥
चूडाकरण करणवेधनको जब आयो दिन सोई॥
खैरभैर माच्यो कोशलपुर प्रजा सुखी सब कोई॥
भोरहिते जागीं रानी सब भूषण वसन सँवारी।
जोरि सखिन मंगल गावत कल रङ्गभवन पगुधारी॥
इतै राजवंशिन रघुवंशिन जोरि राजमाणे आये।
विशद रङ्गमंदिर अङ्गनमें द्रुत दरबार लगाये॥
गुरु वसिष्ठ अवसर विचारि तहँ चारिहु कुंवर बुलाये।
गौरि गणेश पूजि पुण्याह सुवाचन सविधि कराये॥
सोहर परम मनोहर घर घर गावन लागीं नारी।
बाजन बाजन लगे विविध विधि सुम वर्षहिं असुरारी॥
कोउ गावैं कोउ बाज बजावैं कोउ नाचहिं दै तारी।
राजभवनमहँ महामोद गुणि कोशल प्रजा सुखारी॥

दोहा--गये कुमारनके निकट, दशरथ भूप उदार।
बैठायो निज अंगमें, चारिउ राजकुमार॥

छन्द चौबोला।

भूपति कह्यो मिठाई दैहैं लालन कान छेदाये।
अति विचित्र भूषण पुनि दैहैं शिरमुंडन करवाये॥
परमनिपुण सुखकर वर नापित लीन्ह्यो तुरत बुलाई।
क्रमसों चारि कुमारनको नृप दिय मुंडन करवाई॥
परममनोहर काकपक्ष युग शिखा राखि शिर दीन्ही।
करणवेध पुनि कियो सुतनकर रङ्गनाथ नति कीन्ही॥
सम्पति अगणित दियो भिखारिन कीन्ह्यो दारिद दूरी।
बजे नगारे गगन अपारे पुहुपवृष्टि भै भूरी॥
पुनि भूपति चारिहु सुत संयुत भोजन करन विराजे।

रङ्गनाथको पाइ प्रसादहि पूरण भे सब काजे ॥
बैठी तहँ सिगरी महरानी पीत वसन तनु धारे ।
मनहुँ क्रिया सब ब्रह्म वपुष ढिग सोहत तहँ फल चारे ॥
छोटी शिखा छोटि जुलफैं युग मुंडित शिर अति सोहैं ।
मानहु पुंडरीकमहँ चहुँकित भवँर वृन्द मन मोहैं ॥
फुलिया लसहिं कनककी कानन हीरन जडित नगीने ।
मनहु देत कवि जीव मंत्र कछु पूरण शशिहि प्रवीने ॥
पीत पाग जामा कटि फेटो चारिहु कुँवर सोहाहीं ।
मनु आतप रंजित घन घेरे चारि दिवाकर काहीं ॥
पुनि कुँवरन आगू करि राजा बाहर सभा सिधारे ।
सचिव पौर सामन्त आदि सब कोटिन मणिगण वारे ॥

दोहा--चढि नालकी नरेश तहँ, संयुत चारि कुमार ।
रङ्गमहल गमनत भये, सङ्ग सचिव सरदार ॥
यहि विधि विहरत अवधपुर, नितानित नव आनन्द ।
आठ वर्षके होतभे, चारिहु भूपति नन्द ॥

घनाक्षरी ।

छोटी छोटी ताजैं शीश राजैं ग्रहराजैं सम, छोटी छोटी फिनियाँ फबी हैं छोटे कानमें । छोटी कण्ठी कठुले विराजैं छोटे कण्ठनमें, छोटे छोटे अङ्गद सु छोटीसी भुजानमें ॥ छोटे जामा छोटे पायजामा पांयपङ्कजलों, छोटी छोटी घुँघरू सुबाजैं नूपुरानमें । छोटी बहियांमें लीन्हें छोटीसी धनुहियाँ पै, नहियाँ पगन रघुराज चलैं सानमें ॥ छोटे नैन छोटे बैन शोभ ऐन चैन भरे, खेलिरहे खूब छोटे छोटेसे सखानमें । छोटे छोटे छत्र छोटे छोटे आतपत्र तत्र, छोटेसे पतत्र छोटे तूण तेजवानमें ॥ भनै रघुराज राज राजके दुलारे राजैं, मदन पराजै होत और को जहानमें । छोटी ढाल छोटी द्वाल तामें करवाल छोटी, छोटे छोटे लाल औधपाल अंगनानमें ॥ जननी जगावैं प्रात मज्जन करावैं वेगि, मेवाके अनेकन

कलेवा करवावैहैं। अति सुकुमारन कुमारन सिंगारि नीके, सखन समेत पितापास पठवावैहैं ॥ रघुराज राज राज देखि रघुनन्दनको, परम अनन्दनसों अंकमें बैठावै हैं। दानको सिखावैं मान करन सिखावैं त्यों, कृपाण चलवावैं त्यों कमान चलवावै हैं ॥

सोरठा--सुदिवस सुखद शोधाइ, भेज्यो भवन वसिष्ठके।
विद्यारम्भ कराइ, लगे परीक्षा लेन नित ॥

छंद चौबोला।

थोरेही दिनमें सब अक्षर अक्षर प्रभुको आये।
भाषाबन्ध प्रबन्ध छन्दयुत चारहु बन्धु सोहाये ॥
जौन पढैं गुरु भवन सुवन सब सो नित पितहिं सुनावैं।
सुनत सराहत सकल सभाजन जननि जनक सुख पावैं ॥
एक दिवस इक गुणी अपूरव राजसभामहँ आयो।
लहि नृप शासन सामग्री निज कौतुककी फैलायो ॥
देखनको धाये नर नारी शोर भयो रनिवासा।
राजकुमार तुरत चलि आये देखन हेतु तमासा ॥
बैठे पिता अंक रघुनन्दन भरत शत्रुहन जानू।
लषण कूदि चढिगये कंधमहँ मनहु मेरुपर भानू ॥
करणाटकी हाटकी सुंदर सभा तुरन्त बनाई।
ढोल बजाय बखानि भूपकहँ दिय आवर्त लगाई ॥
पुनि अति मंजुल विविध भाँतिके लग्यो बजावन बाजे।
जेहि सुनि विद्याधर चारण किंन्नर गंधर्वहु लाजे ॥
करणाटकी नटी प्रगटी पुनि घटी घटी सो नटती॥
चलति चटपटी परम अटपटी नटनमाहिं नहिं नटती ॥
नेसुक गाइ देखाइ भाव बहु कारिकै कला कितेकी।
नृपहि किया पुनि विनय जोरिकै देखहु कृतयुग नेकी।
सकल प्रजा अतिसुखी भये जब कृतयुग जगमहँ आयो।
त्रेता द्वापर सुख दुख किय समकालियुग दुखहि बढायो ॥

दोहा--सो सतयुगको आगमन, प्रथम लखो महिपाल।
अस कहि अन्तर्धान भे, मध्य सभासों बाल॥
बजे नगारे सुमति के, श्वेत ध्वजा फहरान।
मनहुँ अपूरव धर्म को, पूरब प्रगट्यो भान॥

घनाक्षरी--सोहत वसन श्वेत तरल तुरङ्ग श्वेत, केतु त्यों सफेद गले तुलसीकी माल है। रघुराज मूरति मनोज्ञ मनो धर्महीकी, उर्द्धपुंड्र चन्दनकी छाई द्युति भाल है॥ हरे राम हरे राम हरे कृष्ण हरे कृष्ण, वदन उचारन करत सब काल है। धर्मको पसारत विदारत अधर्मनको, आयो दरबार सतयुग महिपाल है॥

दोहा--बैठ्यो सिंहासन जबै, सतयुग भू भरतार।
दूतनको दीन्ह्यों हुकुम, ल्यावहु मम सरदार॥

सवैया--दूत सुनिर्मल मानस दौरिकै, मंत्री विवेक सुनायो रजाई।
भूप बोलायो तुम्हैं सबको, जग कारज हेत चले अतुराई॥
श्रीरघुराज चले सिगरे तहँ, लीन्ह्यों विवेकहिको अगुवाई।
सत्य सुशील सकोच सुसाहस, धीरज धर्मनकी समुदाई॥
धर्म अधर्मको भेद देखावत, हंससों क्षीर औ नीर समानै।
ईश औ जीवके बीचमें सेवक, स्वामिको भाव विभासत ज्ञानै॥
श्रीरघुराज सतोगुण श्वेत, विराजत रूप अनूप महानै।
पुण्य औ पाप पथै प्रगटावत, आयो विवेक प्रधान दमानै॥

सोरठा--उठि सतयुग महिपाल, बैठायो अपने निकट।
सचिव विवेक विशाल, करि वन्दन बैठत भयो॥

सवैया--विश्वको द्रोह दुरावत दीह, देखावत नादु बनै दुनियामें।
मित्रता मंजुल मोद बढावत, आपनेही सबको वश कामें॥
भूमिको भूषण श्रीरघुराज, वशीकर मंत्र यही सब यामें।
अंबर चित्र विचित्रविराजत, आयो सुशीलय शीलसभामें॥
पापको मूल उखारत टारत, धर्मको मूल महीमें जमावत।

त्यों यमराजको वास उजारत, नर्ककी आमद आशु घटावत॥
श्रीरघुराज अनेकन धर्म, सहाय करावत सन्तन भावत।
आइ सभामहँ सत्य जू सोहत,लालची औ लबरानको लावत॥
गोवत औरनके अपराधन, औरके हेतु सहैं दुख केते।
छोडैं नहीं कबहूँ मरयाद, करै सबको अह्लाद सचेते॥
औरके काजके हेतु तजै निज, काज सुलाजके बांधत नेते।
श्रीरघुराज सभामहँ आयो, सकोच अपोच विमोच सँकेते॥
दोहा--मेटत अमित अनर्थको, करि शुभ अशुभ विचार।
साहस आयो तेहि सभा, सहत सुखहु दुख भार॥
सवैया--केती विपत्तिनकी प्रभुता, जग मेटत सो अपने परभाऊ।
शोकमें मोहमें त्यों दुख में, सुखमें नहिं मानत हानि उराऊ॥
श्रीरघुराज अचञ्चल सर्वदा, उन्नतमें नतमें चित चाऊ।
धीरज ऐसो बडो जेहि वीरज, आयो सभामहँ शुद्ध सुभाऊ॥

घनाक्षरी ।

बाजत नगारे जाके नाकलों सुयशहीके, सदा सतपंथ शुद्ध सिंधु
रसवारो है। एक ओर ब्रह्मचर्य्य एक ओर जप तप, एक ओर व्रत
यम नियम अपारो है॥ योग याग त्यों विराग हरि अनुराग आदि
रघुराज वर्णाश्रम सकल अचारो है। क्षमा दया शान्ति तोष मृदुता
औ शम दम, आयो धर्म सङ्ग सखा पर उपकारो है॥
सोरठा--सतयुग भूप उदार, दिव्यसभा लखि आपनी।
कीन्ह्यो हुकुम प्रचार, निज सरदारनको सपदि॥

कवित्त ।

बोलिकै तुरन्त परधर्म औ स्वधर्महूको, कृतयुग दीन्ह्योहै नियोग
सुखछावने। प्रथम वर्णाश्रमको धर्म प्रगटावो धरा, ब्रह्मचर्य्य गा
रहस्थ वानप्रस्थ पावने॥ भनै रघुराज चतुर्थाश्रमको धर्म खोलो
वेदके विधानते प्रमाण प्रगटावने॥ सुनिकै निदेश सब देशनमें
धर्म धायो, परिगये पापनके पुहुमी परावने॥

एकादश वर्षनलौं होन व्रत बन्ध लागे गुरू गृह पढैं विद्या ब्रह्मचर्य्य धारिकै। विद्या पढि बारे वर्ष करिकै विवाह करैं, गारहस्थ धर्म वेदविधि अनुसारिकै ॥ बहुरि विपिनवासि वानप्रस्थ धर्म करैं, फेरि यतिधर्म जरठागम विचारिकै । भनै रघुराज कोई करत परमधर्म, लेतैंहं परेश परम्पदको प्रचारिकै ॥ फलि रहे याग योग जप तप व्रत नेम, यम प्राणायाम ध्यान तीरथ गवन है ॥ काम क्रोध लोभ मोह मदमत्सरादि जेते, त्यागिकै प्रबल ताते रहे त्रिभुवन है ॥ भनै रघुराज महाराज सतयुगकेरा; हाकिमी हुकुम छायो भवन भवन है ॥ मीन कूर्म कोल नर हरिबटु वामनहूं, औनि अवतार लीन्हे इन्दिरारवन है ॥

सोरठा–कियो राज चिरकाल, पुहुमि प्रजा आनँद मगन ।
तहँ यक दूत कराल, विधि पठयो आवत भयो ॥
प्रतीहार तब धाइ, दूत खबरि आवन कह्यो ।
भूपति लियो बोलाइ, आइ चार शिर नाइ कह ॥

कवित्त ।

पायकै स्वयंभुजूको शासन नरेश त्रेता, दीन्ह्योहै निदेश सुनो कृत महाराजसो ॥ पालत जगत तुम्हैं बीतिगे बहुतादिन, छाइ रह्यो सतोगुण विश्वमें दराजसो ॥ पूजिगो प्रमाण अब अपने मकान जाहु, अबतो जहानमें हमारो आयो काजसो । धर्महू चलै हैं कछु अर्थहू चलैहैं कछु, कामहू चलैहैं कछु भनै रघुराजसो ॥ त्रेता जग नेता जानि विधि अभिप्रेता मानि, सतयुग परम सचेता कह्यो दूतको । मेरो लघुभाई त्रेता होइ राजा करै राज, हौंतो अब जाउँ जहां धाम पुरहूतको ॥ अस कहि सतोगुणी सतयुग शील भरो, साधारण सपदि सिधायो राखि सूतको । वेदमें पुराणमें बखान रघुराज जाको, कृतयुग सम युग भावी नहिं भूतको ॥

सोरठा–सिंहासन आसीन, भयो आइ त्रेता नृपति ।
ताके सुभट प्रबीन, आये सब दरबारमें ॥

कवित्त।

धर्म आयो अर्थ आयो काम आयो आशा आई, राजनीति आई सुख दुख आदि आयेहैं। जप तप योग रहे शुद्ध जे सतोगुणमें, थोरी क्षति थोरी क्षमा थोरे छल छाये हैं॥ एक अंश धर्म घट्यो तैसे सतोगुण हट्यो, रजोगुण आइ सट्यो प्रजा अर्थ भाये हैं। भृगुकुलराज रघुराजरघुवंश राज, हरि अवतार भूमि भारको नशाये हैं॥ त्रेता जग जेता महाराजको हुकुम चल्यो, यज्ञ करि दान करि पावै निरबानको। क्रियाकरि अर्थ पावै अर्थ युक्त धर्म भावै, रजोगुण सहित सतोगुण प्रमानको॥ जौन जस कर्म ताको तौन तस फल दीजै, राखो क्रिया मुख्य हानि लाभ अनुमानको। भनै रघुराज सब काज करो लाज राखि, अर्थ धर्म मोक्षहेतु भजो भगवानको॥ करै लागे याग जन जगत विधानवेद, कोऊ निहकाम कोऊ करत सकाम हैं। कामना रहित कीन्हे पाये निरबाण फल, कामना सहित कीन्हे पाये स्वर्गधाम हैं॥ यजनक यागत जनार्दनको जीव जोहे, अर्थ नहिं व्यर्थ भे अनर्थ के न नाम हैं। त्रेता महाराज रघुराज राज कीन्ह्यों खूब, पाये प्रजा विश्वबीच वेश विसराम हैं॥ ताही समै चपलासी चमाकि चहूंघा चाय, कढि आई चष चमकाय चारु नटीहै। राजके करत त्रेता राजसों वचन बोली, बोली नहिं मानों मेरे वैन यही घटीहै॥ भनै रघुराज विधि आयसुते आश अब, द्वापर अवांइकी देखाई चटपटी है। पूरो ह्वैगयो प्रमाण आप कीजिये पयान, चलिहै न रावरी नरेश नटखटी है॥

दोहा–सुनि विरञ्चि शासन प्रबल, त्रेता गयो झुराय।
कुसुमित फलित महीरुह, गाज परे ज्यों आय॥
उतरि सिंहासन ते तुरत, मनमें मानि सँभार।
त्रेता गयो विरञ्चि पुर, तजि जगको संभार॥

कवित्त ।

रजोगुण तमोगुण दोऊ उभै ओर राजैं, सतोगुण पीछे चलो उदासीन आवै है । काम क्रोध लोभ मोह मत्सर उराउ भरे, सत्य औ असत्य दया हिंसा संग भावै है ॥ धर्म युग पाद अह्लाद ते विहीन वेश, ग्रंथ सतपंथ सत सुखदुख छावै है । पुण्य पाप जाप ताप सरिस प्रताप थाप, द्वापर दिगन्तनलों दाप दरशावै है ॥ द्वापर दिवाकर सो बैठोहै सिंहासनमें, हाकिमी हुकुम कर सरिस पसारा है । करैं धर्म कर्म सब स्वारथके हेत परमारथको जानिवो अकारथ उचार है ॥ भनै रघुराज परिचर्य्याहीते सिद्धि होइ, जप तप याग योग दम्भको सहारा है । कलह कुरीति कूट कपट कृपणताई, काम कामिनिको कछु भयो अधिकारा है ॥

सोरठा--द्वापर कीन्ह्यो राज, यदपि प्रमाणहिं आपने ।
अधिक अधीनं समाज, पुण्य प्रवीण विहीन बल ॥
लीन्ह्यो प्रभु अवतार, यदुवंशिनके भवन में ।
श्री वसुदेव कुमार, हरन हेतु भू भार के ॥
भयो दुती अवतार, दया करन जीवन उपर ।
बुध जेहि नाम उदार, जैन धर्म प्रगट्यो अवनि ॥

कवित्त ।

एक दिन बैठे दरबार मध्य द्वापरके, हल्ला परचो चारों ओर हाइ-हाइ ह्वै रही । आयो दूत आयो दूत बडो मजबूत द्वार, भूप बोलवाइबेको प्रतीहारसों कही ॥ भनै रघुराज आइगयो सो सभाके बीच, ताको देखि कौन जाके भै न उर भै नहीं । अति विकराल लाल लोचन विशाल कह्यो, हाल कालिकाल महिपाल दूत हौं सही ॥

सोरठा--कलियुग पठयो मोहिं, मन्त्र कहन तुमसों कछू ।
विधि निदेश दिय तोहिं, जाहु भवन मिति पूजिगै ॥
भयो हमारो राज, जो न हुकुम अब मानिहौ ॥

हैहै बडो अकाज तुमहिं निकासब दण्ड दै ॥
द्वापर सुनत डेराइ, कह्यो दूत सों अस वचन।
हौं यह राज्य विहाइ, चलो जात विधिके सदन॥
अस कहि द्वापरराज, कलियुगके भय भागिगो।
भयो दूत कृतकाज, गयो भूप कलिकाल पहँ॥

कवित्त।

पाइकै खबर खूबी खुशी मानि खक्खामारि, खलकके खाली कारिबेको खैरभैरसों। सैनहीसो सैन बोलि चैन ऐन आनि उर, सैनपति मैन करि भैन ऐर गैरसों॥ भनै रघुराज डंका दैकै कलिकाल चल्यो, महिषसवार अघ तोपनकी फैरसों। सचिव अधर्म आगे असति अनीति पाछे, अतिशै उराउ धरे धर्महीके वैरसों॥ कुयश पताके कारे कुपथके नाग कारे, कूरता तुरङ्ग कारे पैद कपटके। काम है हरौल कोह प्रबल मुसाहिब है, मुख्य मन्त्री मोह मित्र मत्सर विकटके॥ लोभ है खजानची महामद है न्यायकारी, पुत्र अविश्वास जामें अघी सब अटके। भाषै रघुराज त्यों असत्यके अन्यायके, अनेक उमराव भट पाप नटखटके॥ कीन्हे है पोशाक कारी अङ्ग राग कज्जलको, लोहके विभूषण त्यों दूषण हथ्यार हैं। धूर्तताई मूढताई तृष्णा त्यों कुशीलताई, लाल लबारी चेरी माया मुख्य दार हैं॥ द्रोह कोतवाल त्यों अज्ञान तहसीलवाल, गर्भ गढवाल रोग सेवक अपार हैं। भनै रघुराज कारपाण्य पण्य चौधरी है, जगके विकार जेते सबै सरदारहैं॥ आइ कलिकालकी करालकाली साहिनी सो, देखि रघुराज भूप विहँसे ठठाइकै। बैठिकै सिंहासनमें शासन पसारयो कलि, नाशत विवेक निज नामको सुनाइकै। सचिव सुभट सरदारनको

बोलि बोलि, बीरा दैदै भेज्यो तुम देशनमें जाइकै । साधुनको मारो पुण्य पुरको उजारो धर्म, मूलको उखारो यज्ञशालन जराइकै ॥ सुनि कालिकालके प्रवीर रणधीर धाये, आशु अविवेक ढाहि दीन्ह्यो ज्ञान कोटको । लोभ हन्यो तोषै त्यों दयाको दौरी कोह हन्यो, काम मार्यो लाज औ विवेक अति मोटको ॥ मद मार्यो शीलको कुशील मार्यो सौहृदको, मत्सर निपात्यो नीति प्रीतिहूकि जोटको । भाषै रघुराज परमारथको स्वारथहू, कैदियो अधर्म धर्म बन्द लोट पोटको ॥ छल नाश्यो शुद्ध बुद्धि दम्भ नाश्यो साधुताई, अहंकार नाश्यो ब्रह्म विमल विचारको । नाश्यो अपकार दौरि पर उपकारहूको, ॥ विपुल विकार शुचि आलस अचारको ॥ नाशी कुटिलाई सरलाईको भलाई भ्रम, नाश्यो शठताई सतसंगन अपारको । भनै रघुराज त्यों विचारको हटायो हठ, विषै जग लूटि लीन्ह्यो भक्तिके भँडारको ॥ राग त्यों विरागै वध्यो मोह मेट्यो मुक्तिपथ, मार्यो मृषा सत्यको अधीरज त्यों धीरको । कामना अकामै कूट्यो भवकी त्यों भावना, भगायी हरि भावनाको कोदौ दल्यो खीरको॥ भनै रघुराज तैसे अतिथिके आदरको, आशुही अनादर उदार्यो कारि पीर को । जप तप योग याग अरुचि उडाइ दीन्ह्यो, कारपण्य कैद कै लियो उदार वीरको ॥ व्रत प्राणायाम यम नियम त्यों संयमहूं, नाशे रोग रारि कारि कालिको प्रताप है । दुष्कृत विनाश्यो सब सुकृत सहज ही में, कीन्ही क्षमा छान दीह दंड कारि दाप है ॥ भनै रघुराज तैसे चातुरीको

आतुरीहूँ, पातुरी विसन नाश्यो सम्पति अमाप है। निठु
निकास्यो नेह शूरताकी कदराई, पुण्यको पराज्यो कालि छाप
कारि पाप है ॥

दोहा--पर्यो हुकुम हल्ला जगत, कलिनृपको अति घोर ।
धर्मधुरा धरणी धस्यो, भग्यो धर्म जिमि चोर ॥

कवित्त ।

छोडि छोडि धर्म कर्म मनुज मलीन अति, करै लागे पाप परमा-
रथ विहाइकै । नारी तजि पतिन परोसिनसों प्रीति कीन्ह्यो, पुत्र
पिता देखि दांत पीसैं रिसिहाइक ॥ माताको निकारैं त्योंही भ्राताको
निनारै करैं, जोवैं मुख दारैं बारबार शिर नाइकै । भनै रघुराज प-
नारिनसों प्रेम कैकै, सम्पातिको खोवैं पुनि रोवैं पछिताइकै ॥
ब्राह्मण कहाइ सब वेद समबन्ध छोडे, तीनि ताग सूत्रहीते राखैं
बँभनाई है । जेवै पावैं दैजा पांच चारिसै विवाहनमें, तेई चोख
ब्राह्मण ह्वै पावत बडाई है ॥ संध्या शाखा सूत्र संहिताहूको न लेश
कछु, भनै रघुराज ज्ञान भक्तिको चलाई है । वामके गुलाम कहैं
काम निज यम याम, धाम धाम माँगैं भीख लंघन सुनाई है ॥
खेतीमें निपुण घास छोलैमें निपुण बोझा, ढोवैमें निपुण मूर्खतामें
निपुणाई है । ऋणमें निपुण व्याज लेनमैं निपुण भये, व्योहा
निपुण स्वर्ग कौडीकी कमाई है ॥ चोरीमें निपुण चानडालीमें
निपुण तैसै, चुगुली निपुण त्योंही निपुण ढिठाई है । भनै रघुरा-
ज घर काजमें निपुण नहीं, एकमें निपुण जाते रीझे यदुराई है ॥

सवैया।

किङ्कर कामके कोह के कूकुरे, कूरता कादरीमें कठिनोई।
कोक कलानके काम करैया, कहैया कुढंग कपार कराई॥
कञ्चन कामिनी काजके काजिल, काजीकुशास्त्रनकृत्यकुबोई।
भूसुर कर्म कहौं कहँलों करनैल बने कलिके सब कोई॥
काम कलानिमें खासे प्रवीण, रचैं रसग्रंथनि नायका नायक।
काम कथैं हरिहीकी कथा नहिं, भक्तिविरक्तिमहासुखदायक॥
रासको हासको त्योंही विलासको, भाषै सबै नहिंभाषनलायक।
नाम सिंगारीनहैं अधिकारी, महीप भिखारी अकीरति मायक॥
केते करैं रोजिगार सदा तर, वारको लीन्हे जुझार महावैं।
वेद विधान के ज्ञान नहीं कछु, धर्म अधर्मको ज्ञान भुलावैं॥
श्रीरघुराज सिखाये ते खीझत, रोजही रीझे रहैं गणिकावैं।
शाखा न सूत्र न संहिता जानत, सांचे महापशु विप्र कहावैं॥
हीन अचार विहीन विचार ते, पालत हैं परिवार सदाहीं।
खेतीमें खोय दियो सिगरी वय, पै परमारथ लेशहु नाहीं॥
श्रीरघुराज भनै धनके हित, द्वारहि द्वार न जात लजाहीं।
ठानि उपास जनेऊ को तोरत, फोरत मूँड ते विप्र कहाहीं॥
सम्पति भूमिके हेत अचेत न, भूपतिको कछु शासन मानैं।
बेटिन मारैं तिया वधि डारैं, करैं कछु औरहि और बखानैं॥
पेटको मारि मरैं पुनि भूत है, चौरा पुजावत देव समानैं।
श्रीरघुराजभनै तिनको बुध, विप्र कहैं नहिं राकस जानैं॥
ऐसे अनेकन भांतिके कौतुक, जे कलि धर्मनि कर्मनि साने।
कीन्ह्यो विदूषक राजसभामधि, देखत बालक नाहिं अघाने॥
ज्यों ज्यों नचैं करै कौतुक कौतुकी, त्योंत्योंनिरातलखैंललचानै।
श्रीरघुराज विलंब विचारि, महीपति वैन कहे हरषाने॥
कौतुकीकौतुककीन्ह्योभलोयुग, यामव्यतीते भयो अतिकालै।

बन्द करौ अब फन्द सबै जननी, बोलवावतीं लालन हालै॥
यों कहि भूप तुरन्त सुमन्तको, शासन दीन्ह्यो उदार उतालै॥
देहु इनाम इन्हैं गज वाजि, विभूषण सम्पति शाल दुशालै॥

दोहा–तहां सुमन्त तुरन्तही, नटको निकट बोलाय।
नृप आज्ञा अनुसारते, दीन्ह्यो सकल मँगाय॥

छन्द चौबोला।

चारिहु बालन निकट बोलि नृप वदन चूमि अस बोले।
मातु भवन अब सुवन जाहु सब भोजन करहु अमोले॥
कहे कुँवर तब पिता संग तुव भोजन करब तहाँही।
नहिं जैहैं नहिं खैहैं तुम बिन बैठे रहब इहाँही।
सुनिशिशुबचन विहँसि भूपतिमणि आशुहिं उठे अनन्दे।
उठे सकल सामन्त शूर सरदार नरेशहि वंदे॥
गवने मन्द मन्द सानन्दित चहुँकित चारि कुमारा।
मानहु लोकपाल चारिहु दिशि मध्य लसत करतारा॥
परिचर सहसन चले संग लै छरी छत्र औ चौंरा।
फिरे तीनि डेवढीते परिजन चली अली चहुँ ओरा॥
अंतहपुर प्रवेश करि राजा गये कौसिला अयना।
नृप सँग चारि कुमार निहारि सुफल भे सबके नयना॥
भूपति भोजन भवन पधारे बैठि करन जेउनारे।
कनक रजत भाजन बहु सोहत चहुँकित चारि कुमारे॥
चारु चारि चामीकरके तहँ धरे सुवारन थारा।
पंचम थार भूपके आगे व्यंजन विविध प्रकारा॥
लगे भोजन करन भूमिपति नारायण मुख भाषी।
विविध बात बतरात हँसत कछु महामोदमिति नाषी॥
भूपति भोजन करत श्रवण सुनि सहित कुमारन चारै।
आई तहँ कैकयी सुमित्रा द्रुत कौसिला अगारै॥

दोहा-औरहु सब रानी तहां, कौसल्याके ऐन ।
आय अवनिपति सुत सहित, देखि सुफल किय नैन ॥

कवित्त ।

नृप बतरात जात मन्द मुसक्यात जात, मन्दमन्द खात जात आनँद विचारिकै । निरखि कुमार सब छोडि छोडि थार निज, बैठे पितु भाजनके निकट सिधारिकै ॥ भनै रघुराज जौलों सानै नृप व्यंजन लै, वचन बखानै बहु युक्तिन उचारिकै । तौलों खाय लेत सानो व्यञ्जनको चारों नंद, हँसत नरेन्द्रखाली थालीको निहारिकै॥

दोहा-पायस अपने हाथ सों, सानि सानि रचि कौर ।
जात खवावत सुतनको, नरनायक शिरमौर ॥

छंद चौबोला ।

भोजन करत एक व्यञ्जन जो सो तीनों सुत लेहीं ।
जो वारत ताते पुनि झगरत जो न देत तेहि देहीं ॥
कतहुँ कतहुँ झगरत चारिहु सुत भूपति रारि बचावैं ।
कोउ काहूके ऊपर डारि कछु अवनिप अंकहिं आवैं ॥
सूपकार सब देव सरिस तहँ वृद्ध वृद्ध वर बैठे ।
बालकेलि लखि रघुनन्दनकी मोद महोदधि पैठे ॥
हाँकत विजन वदन कहुँ पोंछत मृदुल अँगोछन माहीं ।
कबहुँ उठाइ अंक बैठावत राजकुमारन काहीं ॥
यह मीठो कहि कबहुँ खवावत हुलसि हँसावत जाहीं ।
पानि पियावत कबहुँ खेलावत पावत मोद तहाहीं ॥
लरत बचावत कथा सुनावत दुलरावत बहुबारा ।
हँसत हँसावत रीझि रिझावत लूटत सुख संसारा ॥
धनि धनि दशरथ सूपकार सब हरि भोजन अधिकारी।
यज्ञ भाग जो नहिं अघात सो जिन कर रचित अहारी॥
करि भोजन नृप सहित कुमारन गवने अँचवन हेतू ।

अँचै शयनके अयन सिधारे चैनभरे नृप केतू ॥
धात्री सकल कुमारनको तहँ जननि निकट लै आईं।
बीरी बदन खवाइ शयन महँ पाइ पलोटि सोवाँई ॥
याहि विधि रोज रोज रानी सब राजासहित सुखारी।
बालकेलि लखि निज बालनकी सालन जात विचारी ॥
दोहा--एक समय मधुमासमें, रामजन्म दिन जानि।
कौसल्या आनंद भरि, मज्जन करि अतुरानि ॥
छंद चौबोला--पहिरि पीतपट रंगनाथके भवन गईं सुखसानी।
करि पूजन षोडश उपचारन कही जोरि युगपानी ॥
अचलकरहु अन्न सुखसम्पतिप्रभुयह सब विभवतुम्हारा।
अस कहि गईं पाकमंदिरमहँ व्यंजन रचन अपारा ॥
तहँ खेलत देख्यो रघुनन्दन तब चित भै दुचिता।
सुतहि कौन ल्याई यहि थलमें हौं सोवाइ उत आई ॥
अस कहि ललन लखनको दौरी जहां पलन प्रभु सोये।
तहौं लख्यो सोवत अपनो सुत महामोद मन मोये ॥
दौरि पाकमंदिरमहँ आईं भोजन करत निहारी।
महाभीति उपजी मनमें यह शंका टरै न टारी॥
चकित जानि जननी जिय रघुपतिवपु विराटदरशायो।
कोटि स्वयंभु शंभु शक्रादिक बहु सुर कौन गनायो ॥
वदन हजारन चरण हजारन नैन हजारन सो हैं।
गिरि कानन सर सरितसिंधु युत महि मंडल वन मो हैं॥
रोम रोम प्रति कोटि कोटि ब्रह्मांड निहारचो माता।
कालहु कर्म सुभाउप्रकृति जिय माया अति अवदाता॥
देखि विराटरूप सुतको तब नारायण जिय जानी।
अस्तुति करनलगी कौसल्या जोरि जलजयुग पानी ॥
विश्वाधार विश्वपालक प्रभु सिरजक नाशक साईं।
आदि अनंत अचिंत्य अनादि अगोचर अज तुम ओई।

दोहा--वात्सल्य रस हानि लखि, हरि लीन्ह्यो हरि ज्ञान।
पुनि पलना सोवन लगे, प्राकृत बाल समान ॥

छंद चौबोला।

यहि विधि लीला करत अनेकन देत मोद पितुमातै।
विहरत अवध नगर रघुनंदन सहित तीनिहूं भ्रातै ॥
बीति गये कछु काल मोदमय भे नव वर्ष कुमारा।
जननी जनक करन तब लागे मनहीं मनै विचारा ॥
एक समय दशरथ नरनायक अंतहपुर पगु धारे।
कौसल्या कैकयी सुमित्रा सपदि सहर्ष हँकारे ॥
लै लै सुतन संग अति आतुर महरानी सब आईं।
औरहु त्रिशतसाठि महिषी सब आईं तहँ सुख छाईं ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा कह्यो महीपति बैना।
भये कुमार वर्ष नवके सब केशवकृपा सचैना ॥
चाही कियो हमहुँ तुमहूँको अब व्रतबंध विचारा।
एकादश हायनके अन्तर लहैं जनेउ कुमारा ॥
कह्यो कौसल्या पुलकि २ तनु बुलकि उछाह अपारा।
गुरु वसिष्ठ सँग करि सुमन्त्र पिय करहु सकल संभारा ॥
निज अभिमत सब रानिनको मत जानि उठे अवधेशा।
गये सुमन्त्रसहित अति आतुर तेहिक्षण गुरूनिवेशा ॥
करि वन्दन पद जोरि कंज कर विनय कियो शिरनाई।
उचित होइ तौ कुँवरनको व्रतबन्ध करौं मुनिराई ॥
गुरु कह अब न विलंब करौ व्रतबंध काल यह साँचो।
बोलि विविध दैवज्ञ तज्ञ उपवीत यज्ञ दिन राँचो ॥

दोहा--अस कहि मुनि पुनि पुलकि तनु, सुनहु सुमन्त्र सुमन्त।
सुदिन रचन हित ज्योतिषी, आनहु इते तुरन्त ॥

छंद चौबोला।

तहाँ तुरन्त सुमन्त गणकगण ल्यायो ललकि लिवाई।

गुरु वसिष्ठ आज्ञानुसारते दीन्ह्यो सुदिन बनाई ॥
वचन कह्यो गुरु रचन हेतु व्रतबंध यज्ञ संभारा।
पगुधारो नरनाथ निलै अब दूसर नाहिं विचारा॥
करि प्रणाम गुरुपदपंकजको भूपति भवन सिधाये।
अनुजन सहित राम व्रतबन्ध करनकी साज सजाये॥
फिरचो निमन्त्रण महिमण्डलमें होत राम व्रतबन्धा॥
देश देशके सब नरेश जिन कोशलेश सम्बन्धा॥
ते सब हर्षि अवधपुर आये भयो महा संघर्षा।
परै रामके कन्ध जनेऊ यहै हर्ष उत्कर्षा॥
सकल सुयोग सहित सोसुदिवस आइ जबहिं नजिकाना।
अवधनगर घर घर बहु बाजन बाजन लगे निसाना॥
माडो गडो रंगमन्दिरके अंगन वेदविधाना।
ता ऊपर जरकसी कसी रजु मणिमय विशद विताना॥
जानि प्रभात काज कौसल्या उठी रैन कछु बाकी।
करिमज्जन पट पीत पहिरि तनु अति आनँद रसछाकी॥
गई रङ्गमंदिर वन्दन करि सादर पूजन कीन्ह्यो।
बहुत मनाइ नाइ शिर प्रभुपद गवन भवन मन दीन्ह्यो॥
लगीं मातु सब साज सजावन भै व्रतबन्ध तयारी।
मुनिन सहित तहँ गुरुवसिष्ठ पगुधारे आनँद भारी॥

दोहा--जेहि जस देत निदेस गुरु, सो तस ठानत काज।
विप्र सचिव परिजन प्रजा, पूरण सदन समाज॥

छंद चौबोला।

जानि मुहूरत गुरु वसिष्ठ तहँ चारिहु कुँवर बोलाये।
राज समाज सहित दशरथ महराज कुँवर युत आये॥
बाजत विविध मनोहर बाजन घर घर मङ्गल गावैं।
राचहिं नारि मनोहर सोहर मोहर मुदित लुटावैं॥
नारी सहसन शिर धरि कलशन गावत आईं आगे।

तिनके पीछे कुँवर चारि युत भूप चले बड भागे ॥
जबहिं यज्ञमंडपमहँ भूप कुमारन संयुत आये।
तेहि अवसरको आनँद सहसानन मुख चुकै न गाये ॥
राज समाज विराजत वैदिक विप्र समाज दराजा।
उतै रङ्गमन्दिर महँ नारि समाज सोहात सलाजा ॥
छाइ रही मख मण्डप अन्तर विप्र वेद धुनि धारा।
नचहिं नर्तकी विविध कला करि दशरथ भूपति द्वारा ॥
रघुवंशी सरदार नाग चढि सम्पति हुलसि लुटावैं।
खैरभैर मचि रह्यो अवधपुर कोउ आवैं कोउ जावैं ॥
तहँ वसिष्ठ मुनिसों महीप कह कृत्य करावहु नाथा।
तुम्हरी कृपा लहे हम यह दिन रघुकुल भयो सनाथा ॥
तहँ महीप चारिहु कुँवरनकी अलकावली निहारी।
जानि क्षौर व्रतबन्ध विहित विधि भरि आये दृग वारी॥
चारि कनक चौकिनमें चारि कुमारन को बैठाये।
दान कराइ वेद विधि अनुसर मुनि मुंडन करवाये ॥
दोहा--अलक विगत मुख लसत अस, जलद पटल विलगाइ।
मनहुँ कढ्यो पूरण शशी, युग अहि सुत उर लाइ ॥

छन्द चौबोला।

वेद विधान कराइ मंजु मेखला प्रभुहि पहिरायो।
मनहुँ नीलमणि महिधरके मधि वासुकि अहि लपटायो॥
जासु नाम श्रुति पन्थ परतहीं पाप परावन होई।
तेहि प्रभुके श्रुति पथ गायत्री मुनि उपदेश्यो सोई ॥
मंजु मेखला धारि दंड लै प्रभु पहिरे कौपीना।
भिक्षा माँगन हेतु ठाढ भे चारिहु बन्धु प्रवीना ॥
श्याम वर्ण तनु कनक जनेऊ सोहि रह्यो छवि खानी।
मनु तमाल में सोनजुहीकी ललित लता लपटानी ॥
विश्वभरन पोषण जिन कर सों सुर मुनि नर कर होई।

सो माँगन को पाणि पसारे देहु भीख सब कोई ॥
औसर जानि उठे जगतीपति सङ्ग चलीं सब रानी ।
मुक्ता मणि प्रवाल माणिक लै दियो भीख मन मानी ॥
सकल राजवंशी रघुवंशी आये संयुत दारा ।
दै दै भीख सीखलै सिगरे निज निज गये अगारा ॥
मुनि वसिष्ठ चारिहु बंधुनको अपने निकट बोलायो ।
विहँसि विहँसि जग उपदेशक को बहु उपदेश सुनायो ॥
लै भिक्षा शिक्षा अरु दिक्षा इच्छा के अनुसारा ।
शासन लहि गुरु पितु मातन को माँगन चले अगारा॥
प्रथम रङ्गमन्दिर महँ माँगो पुनि वसिष्ठके ऐना ।
बहुरि गवन किय पिता भवन को त्रिभुवनपति भरि चैना॥

दोहा--कौसल्या अरु कैकयी, और सुमित्रा भौन ।
माँगि भीख भ्रातन सहित, किय सुमन्त गृह गौन ॥

छंद चौबोला ।

आवत माँगन हेत राजसुत देखि सुमन्त तुरन्ता ।
धाये घरनिसहित अति विह्वलकहिजय जयतिअनन्ता॥
गिर्‌यो चरणमहँ पाणि जोरि पुनि खडो भयो सुखछाई ।
क्षण क्षण रूप अनूप निहारत मनहुँ रङ्क निधि पाई ॥
कह्यो जोरि कर जो कछु मेरो सरबस ग्रहण करीजै ।
चरण कमलकी भक्ति पावनी यहि अवसर मोहिं दीजै॥
मन्द मन्द प्रभु एवमस्तु कहि कौसल्या गृह आये ।
तहां कियो भोजन भ्रातनयुत मातन मोद बढाये ॥
पहिराई पोशाक पीत तहँ कौशल्या महरानी ।
भाल डिठोना डीठि निवारन दियो त्रिकुटि हरषानी ॥
सुतन नैन दिय कज्जल रेखा रेखा शिति छबि सीमा ।
अलि अवली जनु घेरिरही शारद सरसिज अवलीमा ॥
गये पिताके भवन कुँवर सब भूपति देखि जुडाने ।

लियो ललकि बैठाइ कुमारन सिंहासन हरषाने ॥
लागी होन कुँवर नेउछावर मणिगण रत्न अमोले ।
गुरु वसिष्ठको बोलि महीपति अपनी आशय खोले ॥
सकल वेद विद्या कुँवरनको दीजै नाथ पढाई ।
धनुर्वेद गांधर्ववेद अरु वेद अङ्ग समुदाई ॥
मुनि तथास्तु कहिगवनभवन किय संध्याकाल विचारे ।
उठे भूप सत्कारि सभासद कुँवर सदन पगु धारे ॥

दोहा--बीती रजनि अनन्दसों, भयो महा सुख भोर ।
पठनहेतु विद्या गये, गुरुगृह राजकिशोर ॥

छंद चौबोला ।

राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारिहु कुँवर अनोखे ।
गुरु वसिष्ठ लखि दै अशीष बहु बैठायो मति चोखे ॥
जानि सकल विद्यानिधि प्रभुको विद्यारम्भ करायो ।
जौन जौन प्रभुको दरशायो विन श्रमसो सब आयो ॥
चारि वेद वेदांग पुराणहुँ राजनीति इतिहासा ।
धनुर्वेद गन्धर्ववेद पुनि आयुर्वेद प्रकासा ॥
कोउ न रामसम कौनहुँ गुणमहँ तैसहि तीनिहुँ भाई ।
औरहु रघुवंशी कुमार सब पढे शास्त्र समुदाई ॥
थोरे कालहिमें रघुनन्दन भाइन सखन समेतू ।
वेद शास्त्र पढिलियो दियो पुनि गुरु दक्षिण कुलकेतू॥
अतिरणधीर वीर नृपनन्दन सखा सकल सँगमाहीं ।
सरयूतीर शरासन शर लै सिगरे खेलन जाहीं ॥
तहँ ऋजु पृथुल दूर अरु निकटहु सूक्ष्म रोपि निसाना ।
बार बार अभ्यासहेतु सब मारहिं ताकि ताकि बाना ॥
जो हुकि जाइ ताहि तारी दै हँसत सबै तेहि ठामा ।
लक्षवेध जो करै राम तेहि देत सराहि इनामा ॥
राम शिरोमणि धनुविद्यामहँ लषण भरत रिपुनासी ।

औरहु सकल राजवंशीसुत भये शस्त्र अभ्यासी ॥
करहिं शस्त्र अभ्यास पहर युग पुनि अन्तहपुर आवैं ।
मातु विरचि मनरंजन व्यंजन चारिहु सुतन खवावैं ॥

दोहा--यथा आपने सुतनको, तथा सखन समुदाइ ।
मानहिं मातु विभेद विन, प्रीति रीति दरशाइ ॥

छंद चौबोला ।

रहे याम यक दिवस कुँवर सब भूषण वसन सँवारी ।
दशरथके दरबार जात जुरि धनु सायक कर धारी ॥
लक्षवेधकी कथा कहत सब जौन हुक्यो जस मारो ।
भूपति हँसत हुलास हिये भरि देत इनाम अपारो ॥
संध्यासमय जानि रघुनन्दन सखा बन्धु सँग लीन्हे ।
करि संध्या वन्दन सरयूपहँ गमन नगर कहँ कीन्हें ॥
चढि तुरंग झमकावत वागत लागत परम सलोने ।
मानहु कढि मन्दर कन्दरते नवलसिंहके छौने ॥
देखनहेतु सकल पुरवासी होत आसुपथ ठाढे ।
रामरूप छबि आनँद राशी टरैं न तहँते गाढे ॥
जहँ जहँ जात बंधु चारिहु पुर तहँ तहँ नगर निवासी ।
संग संग प्रभुके विचरत सब पानिप पीवन प्यासी ॥
यहि विधि सकल अवधपुरवासिन आनँद अमितपसारैं ।
यथायोग सुनि प्रजा विनय प्रभु तथा योग निरधारैं ॥
रजनी आगम जानि राम तहँ बंधु सखा नि समेता ॥
गमनत मन्द मन्द मुख भनत अनन्दित आइ निकेता ।
करहिं प्रजनकी विनय पिता सन सकल मनोरथ पूरे ॥
राम रूप छबि देखि सभासद क्षण क्षण कर तृणतूरे ।
बेला जानि बियारीकी प्रभु जनानि सदन पगुधारे ॥
कनक थारमहँ मातु परोसहिं सालन करहिं अहारे ।

दोहा--शयन करहिं निज निज सदन, अति सुकुमार कुमार ।
जननी सकल सुवावतीं, कहि कहि कथा अपार ॥

कवित्त ।

कहाति कहानी कौसिलाजु क्षीरसिंधु मध्य, भूधर त्रिकूट रह्यो गज बलवार है । ग्रस्यो तेहि आइ एक महाबली ग्राह गाढे, भयो युद्ध दोहुनको हायन हजार है ॥ हारयो करि कोहूको निहारो नहिं रखवारो, आरत पुकारो अब अच्युत अधार है । ल्याउ चक्र मेरो अस कहि उठि धाये राम, मातुमुख सुनत गयंदकी गोहार है ॥ चौंकि उठी जननी धरयो है दौरि अंगन लौं, अंकमें उठाय लाय पलना सोवायो है । भनै रघुराज मुख चूमति चरण चापि, चीलही करवाय राई लोन उतरायो है ॥ कैसो कियो लाल देख्यो सपन कराल कछू, काहे है बिहाल यहि काल उठि धायो है । डर माति मान मैंतो तेरेई समीप बैठी, कहूँ नहिं ग्राह नहिं कहूँ गज आयो है ॥

दोहा--यहि विधि करत कला विविध, वसत अवधपुरमाँह ।
अवध प्रजानि उछाह नित, राम बाँहकी छाँह ॥

छंद चौबोला ।

सत्य शीलनिधि कोमल कटु बिन वदत बैन मुसकाई ।
प्रीति रीति सबसों अति राखत सहज सदा रघुराई ॥
कोहुको निरखि कलेश सहत नहिं रहत हमेश दयाला ।
शुद्ध बुद्ध उद्धत उदार वर डरत न कालहु काला ॥
पर तिय डीठि पीठि रिपुगण रण युगल वस्तु कृपणाई ।
शूर सपूत सुजान सुसाहेब साँकर सहज सहाई ॥
धर्म धुरन्धर धीर शिरोमणि मति गम्भीर विचारी ।

उदै दिवाकर इव प्रतापगुण आकर जग सुखकारी ॥
वस्तु यथारथ ज्ञान मान विन परस्वारथ रत रोजू ।
खलता मृषा विषमता खरता खोजेहु मिलत न खोजू ॥
कौन कौन गुण कहौं रामके सहस जीह कहँ पाऊं ।
पाऊं तौ अहिपति असत्य लखि वार्णि पार किमि जाऊं ॥
वरण्यो जिमि रघुनंदनके गुण तैसहि तीनिहु भाई ।
भाई भाई सहज मिताई सो कहँलौं कहि जाई ॥
यद्यपि चारिहु भ इनकी है सब विधि ते समताई ।
तदपि रामगुणसिंधु थाह जग कोउ न आजु लगि पाई ॥
प्रथित पृथुल पुहुमी पराक्रमी पर पयोधि घट योनी ।
तेजवन्त गुणवन्त सन्त प्रिय हन्ता हठि अनहोनी ॥
निर्मल शारद शशी सरिस प्रभु उदित अवध दिशि प्राची ।
कौन भुवन अस भयो रामसों जाकी रुचि नहिं राची ॥

दोहा—चलनि कहनि विहँसनि रहनि, गहनि सहनि सब ठाम ।
चहनि नेहकी नहनिसों, कियो जगत वश राम ॥

छंद चौबोला ।

चारिहु बंधु कबहुँ सखिन हित सखन सहित अह्लादे ।
सज्जित सिंधुर सकल भाँतिसों बैठहिं आपु कलादे ॥
अति निशंक अंकुश लै लै कर मत्त मतंग धवावैं ।
कहुँ बैठावहिं मंद चलावहिं अद्भुत कला देखावैं ॥
परम निपुण जे पील पाल वर तिनहि बुलाइ बुलाई ।
गज चालनकी लियो कला सिखि चतुर चारिहू भाई ॥
तीनिहु भ्राता और सखा सब यदपि सिख्यो यक साथै ।
तदपि गुणीजन जे प्रवीणजन कहत अधिक रघुनाथै ॥
अति सुकुमार कुमार चारिहू कबहुँ तुरंग सवारे ।

लै दिनकर तेजा कर नेजा संगहि जात शिकारे ॥
तैसहिं राजकुमार छबीले सकल अश्व असवारा।
वाजी कला सकल विधि सखित राम सङ्ग सुकुमारा ॥
तरल तुरङ्गन चपल कुरङ्गन सङ्गहि सङ्ग धवावैं।
कहुँ बरछी कहुँ बाण कृपाणहुँ पहुँचि समीप चलावैं ॥
कहुँ कूकर शूकर पर छोडत हूँकारि दपटत वाजी।
कहुँ चीते झपटत रपटत मृग लपटत लखि अति राजी ॥
हय मुरकावनि सपदि चलावनि थहरावनि झमकाई।
वाजी कला सकल सखि सब तदपि अधिक रघुराइ ॥
कबहुँ पिताके आगे फेरत वाजिन चारिहु भाई।
भूप विलोकत कला कुतूहल हुलसि देत मुसक्याई ॥
दोहा--विस्तर राम शिकारको, इतै न वर्णन कीन।
ब्याह अन्त मृगयाशतक, कहिहौं कछुक नवीन ॥

छन्द चौबोला।

आवहिं कबहुँ चढे स्यंदन लै लै तेहिकै जग आमैं।
आमैं विपिन कबहुँ संचारैं चारैं वर दुनियामैं ॥
उपजामैं सुख जब घर जामैं रथचर जामैं जामैं।
जामैं दुख जन जूह न जामैं सो ठानत वसु जामैं ॥
हरि कुल हरि रथ हरि सञ्चारत हरि हरि हरि रथवेगू।
हरि मुख हरिप्रिय हरि मद गंजित हरि हरि हरिकर तेगू॥
धामैं धाम धाम धामैं रवि वामैं वामैं वामैं।
वसुधामैं जिन वाजि सुधामैं वसुधामैं सुद्धामैं ॥
बाण चलामैं रिपु विचलामैं दीठि लक्ष विचलामैं।
वेधत विशिख चलामैं तामैं तामैं है रुच लामैं ॥

हारैं हारैं करत विहारैं सिंहारैं संहारैं।
अस हारैं कबहूँ नहिं हारैं देव देत उपहारैं॥
हारैं हीमें युवति निहारैं बार बार बलिहारैं।
हारैं नहिं सुहृदन व्योहारैं प्रथमहिं गुरुन जोहारैं॥
चारैं बन्धु सुधर्म प्रचारैं परचारैं बहु चारैं।
चारैं नेग जनन सञ्चारैं अपचारैं उपचारैं॥
खंडैं खंडैं दांडिन खंडैं नहिं खंडै श्रुति खंडैं।
खंडै इव मीठे निज खंडै खंडै खंड पखंडै॥
शुचिताई गुणिताई ताई है न रहै उचिताई।
ताई नहिं प्रभुताई के महि जग जाहिर शुचिताई॥

दोहा--बाग गहनि स्यन्दन चढनि, हय फेरनि संग्राम।
तजनि विशिष बैठनि गठनि, सिख्यो सकलविधि राम॥

कवित्त।

कमलसी कमलासी कौशिक करिन्दहीसी, कामसी अकामसी कपूरहीसी केशसी। केशवके कंबुसी सुकेशव के कौस्तुभसी, कौमोदकीसी कौमुदीकीसी कुमुदेशसी॥ कहैं रघुराज कामधेनु कल्प कुंज कैसी, कंजकैसी कुंदकैसी कन्द कुधरेशसी। कोलहीसी कच्छप कमुच्छ कोशलेशजूकी, कीरति कसायनी है कलिकी कवेशसी॥ बाण सनधानमें कमानहूकेताननमें, शरके पयानमें सु खैंचि निज वानमें। लक्षपात बनमें प्रत्यक्ष दर्शवानमें, विपक्ष छ्यवानमें त्यों कर्तब कृपानमें॥ भनै रघुराज धनु मुष्टि दृढ ताननमें, बैठनि त्यों जाननमें चलनि प्रमानमें। लक्ष धीरमाननमें वीर वे प्रमाननमें, कोई ना धनुषवान रामसो जहानमें॥

दोहा–धीर शिरोमणि बीर वर, लसत पाणि धनु तीर ।
बुद्धि गिरा गम्भीर अति, वसत अवध रघुवीर ॥

छन्द चौबोला ।

कबहूँ चारिहु बन्धुनको लै खेलत विपिन शिकारा ।
कबहूँ चढे मतंग तुंग वर विहरत अवध बजारा ॥
भाइन सहित सदा रघुनन्दन करतजनक सेवकाई ।
राखे रहत सदा पितुकी रुख मानत रोचि रजाई ॥
सदा कहत करजोरि वचन मृदु मनहु खसत मुखफूला ।
पितु शासन सुनि सपदि सँवारत देत अनन्द अतूला॥
पूंछि पूंछि पितुसों रघुनायक करत पौर पुरकाजा ।
राम सनेह शील रति रांचे मगन रहत महराजा ॥
कबहुँ चरण चापत पितुके प्रभु कबहूं विजन डोलावैं ।
पितुसों विदा माँगि रघुनन्दन भोजन करन सिधावैं ॥
जबलों रहत राम अन्तहपुर करत जननि सेवकाई ।
जननी वचन सुनत त्वारित कारि जात काजहित धाई ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा औरौ मातु अनेका ।
भेद विगत मानत समान सब जानत धर्म विवेका ।
वृद्ध वृद्ध रघुवंशिनको प्रभु जानत जनक समानैं ॥
तेऊ निज सुतते प्रभु सौगुण मानत मानहु प्रानैं ॥
धनि दशरथ धनि अवध प्रजा धनि कौसल्या महरानी ।
ताजि विकुण्ठ जाके अंगनिमें खेलत शारँगपानी ॥
पितु सेवन जस करत राम नित तैसहि तीनहुँ भाई ।
राम संग डोलत मृदु बोलत पुरजन आनँददाई ॥

दोहा–यद्यपि सकल समान सुत, शील सनेह सँकोच ।
तदपि अधिक कछु राजमणि, करत राम रुचिरोच ॥

छंद चौबोला।

भोरहिंते चारिहु भाइन को पट भूषण पहिराई।
लघुकरवाल ढ्राललघु ढालैं पग पाँवरी सोहाई॥
मेवा विविध कलेवा दै दै सेवा सखनि सजाई।
पठवहिं मातु भूप दरबारै टीको श्याम लगाई॥
यद्यपि संग संग विहरत सब सखन सहित सब भाई।
तद्यपि लषण सनेह रामपर दिन दिन दून देखाई॥
लषण करन लागे बालहिंते रघुपति पद सेवकाई।
अति सुन्दर सुकुमार गौर तनु देखत मदन लजाई॥
खेलत बैठत बागत धावत आवत जावत माहीं।
सोवत जोवत विविध तमासे विपिन शिकार सदाहीं॥
सकल समयमहँ सब कारजमहँ लछिमनपरम सुजाना।
जग अभिराम रामपद सेवत बहिर्भूत जिमि प्राना॥
जेठ बन्धु पुनि दीनबन्धु गुनि कुमुद बन्धु सु उदोते।
सो रघुपति पद सेवत लछिमन छन भरि विलग न होते॥
जहिंमहँ होहिं प्रसन्न राम अति सोई मनते करहीं।
यथा राम सबके प्रिय तैसहि लषणहु सुख भरहीं॥
यथाराम सीख्यो धनुविद्या लषण सिख्यो तिमि सोई॥
यथा राम सेवत पितुके पद तिमि लछिमन मुद मोई।
रामहुको तैसहि लछिमन प्रिय सकलकाल सब थलमें।
विना लषण नहिं लहत नींद प्रभु रजनी सेज अमलमें॥

दोहा—विना खवाये लछिमनहिं, भोजन करत न राम।
विना पियाये जल तिन्हैं, पियत न जल अभिराम॥

छंद चौबोला।

कौसल्याके भवन कबहुँ प्रभु चारिहु बन्धु सिधारैं।

व्यञ्जन विविधप्रकार सुधा सम संयुत सखन अहारैं ॥
कबहुँ कैकयी चारि बन्धुको व्यञ्जन विरचि बोलावैं ।
सुधा सरिस व्यञ्जन परोसि यक थारहि माहँ खवावैं ॥
कबहुँ सुमित्रा चारि कुमारन करवावतीं कलेवा ।
दुलरावत निज पाणि खवावत महामधुर रस मेवा ॥
लछिमनको प्रभु अपने करते भोजन विविध करावैं ।
तैसहि भरत शत्रुसूदनको बहु अनुमोदि खवावैं ॥
जब भोजन छलिमन करि चुकते तबप्रभु खायसुखारी ।
मातनसों मृगया हित माँगत बिदा पाणि धनुधारी ॥
चारिहु बन्धु उमङ्ग भरे अति होत तुरङ्ग सवारा ।
लै बरछी तिरछी गति गमनत संयुत राजकुमारा ॥
कहूँ जमावत कहूँ कुदावत कहूँ धवावत वाजी
कहूँ फिरावत कहुँ बैठावत कहूँ उड़ावत ताजी ॥
देखि कुरङ्गनको काननमें हय आनन करि सूधो ।
रघुकुल पञ्चानन दपटत द्रुत जेहि जब कतहुँ न रूधो ॥
भागत मृग मारत बरछिनसों इक एकन ललकारैं ।
कबहुँ खड्गसे कबहुँ बाणसे हनि मृग करत शिकारैं ॥
जहँ जहँ राम धवावत वाजी तहँ तहँ पाछे पाछे ।
धनु शर लै रक्षत रामहिं तहँ गच्छत कम्मर काछे ॥
दोहा--गिरि कानन सम विषम थल; जहँ जहँ विहरत राम ।
तहँ तहँ रक्षत रामकहँ, गच्छत लक्ष्मण वाम ॥

छन्द चौबोला ।

कौने समय कौनहूँ थलमहँ जहँ जहँ प्रभु चलि जाहीं ।
लषण तजत नहिं रघुकुलमणिकहँ रहत समीप सदाहीं ॥
जैसे रहत राम ढिग लक्ष्मण रक्षन हित वसु यामा ।

तैसे भरत समीप शत्रुसूदन सोहत अभिरामा ॥
प्राण समान रामजस मानत लछिमनको सब काला।
भावत तैसहि भरतभक्त निज जियसम मम रिपुशाला॥
राम भरतको जस सनेह तस कवि न लहत कहि पारा।
प्रीति रीति चारिहु भाइनकी मैं किमि करौं उचारा ॥
राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारिहु राजकुमारा।
विहरत अवध नगर पुरवासिन आनँद देत अपारा ॥
चारिहु कुँवरन सहित भूपमणि जब बैठत दरबारा।
सोहत चारिहु लोकपाल युत मनहुँ मुदित करतारा ॥
दिन रजनी जननी सजनी युत सुत सेवत क्षण जाहीं।
भव संभव दुख सुख अनुभव जब जानि परतकछुनाहीं॥
मचो रहत नित नव अभिनव सुख सब पुरवासिन पूरो।
दशरथको आनंद कहौं किमि जासु राम सुत रूरो ॥
एक समय दशरथ वसिष्ठ मुख सुनते रहे पुराना।
निकसी कथा विराग योग जप करि पावत भगवाना॥
इतनेमें रघुनन्दन आये बैठिगये पितु अंका।
लखि मुनि सजल नयन भूपतिसों बोले वचन अशंका॥
दोहा—योग याग जप तप नियम, कथा वृथा सुनि लेहु।
सकल सुकृतको जौन फल, तुमहिं चहो तेहि देहु॥

छंद चौबोला।

तुमहिं न बाकी कछु भूपतिमणि जगमहँ सुकृत अधारा।
ज्ञान विराग योग जप तप व्रत जाके राम कुमारा॥
दशरथ वंदि वसिष्ठ चरण युग जोरि कहैं कर दोई।
जापर राउर कृपा नाथ अस असन होय कस सोई॥
ताही समय भरत लक्ष्मण रिपुदमन पिता ढिग आये।
चारिहु बन्धुनको विलोकि दशरथ अति आनँद पाये॥

नीति विवेक अनेक गुणनयुत नेकु नीति नहिं हीना।
ज्ञानमान जग जान शिरोमणि वीर प्रधान प्रवीना॥
नहिं सुन्दर त्रिभुवन महँ अस कोउ जस दशरथ सुतचारी।
धनुधारी हितकारी भारी सुर नर मुनि मनहारी॥
दिग सिन्धुर कुंभनमहँ मण्डित जिनकी कीरति माला।
करामलक इव विद्या सिगरी सबको ज्ञान त्रिकाला॥
नहिं अनीति रत नहिं कुसङ्ग कृत नहिं अधर्म व्रतधारी।
सदा दीर्घदरशी नृपनन्दन पितु पद वंदनकारी॥
दीपति दीप शिखासी दीपति अवनीपति सुत चारी।
तेज प्रताप ओज माधुर्य्य महा सौंदर्य जितारी॥
कौशलपति पुत्रनकहँ देखत बहुरि वसिष्ठ उचारे।
जगतीपाति व्याहन के लायक भये कुमार तुम्हारे॥
गुरु के वचन सुनत सकुचे सब भरत कह्यो कर जोरी।
भे तयार ज्योंवनार भवनमहँ मातु बोलायो मोरी॥
दोहा—राम लषण रिपुहन सहित, बालन वृद्ध समेत।
चलिय पिता भोजन करन, अब बिलम्ब केहि हेत॥

छंद चौबोला।

सुनत भरत के वचन विहँसि कछु उच्यो भूप शिरताजा।
रघुकुल राज समाज उठी तहँ कहि जै जै महराजा॥
वृद्ध वृद्ध रघुवंशिन को लै बालन बोलि भुवाला॥
करिकै गुरु वसिष्ठ पद वन्दन चले नरेश उताला।
आगे आगे चले चारि सुत पाछे दशरथ राऊ।
वृद्ध वृद्ध रघुवंशिन लीन्हे अतिशय सहज सुभाऊ॥
सोहत अवध नाथ सुत संयुत बंधुन सहित उदारा।
मानहु लोकपाल देवनयुत जात भवन करतारा॥

वृद्ध वृद्ध रघुवंशी सोहत मनहुँ सतोगुण रूपा।
चारि फलन इव चारिहु नंदन शुद्ध सतोगुण भूपा॥
ककयि भवन भूप पगु धारे करन हेतु ज्योंनारे।
राम जाइ जननी सों आतुर ऐसे वचन उचारे॥
मातु मोहिं अति क्षुधा सतावति देहु सुधा पकवाने।
मैं खैहौं सबके प्रथमहिं इत पिता सङ्ग नहिं खाने॥
मातु चूमि मुख सुत दुलरावति कह्यो वचन हे लाला।
पाक भवनमहँ भोजन कीजै सहहु न क्षुधा कशाला॥
त्रिभुवनधनी भवन भोजनमें भोजन करन लगैहैं।
खात खात खायो सिगरे जे व्यंजन स्वाद जगे हैं॥
सूपकार सब जाइ हँसत केकयी सों वचन उचारयो।
राजपट्ट महिषी तिहरो सुत सिगरो अशन अहारयो॥
दोहा–सुनत कैकयी उठि तुरत, देख्यो व्यं[illegible] भौन।
रह्यो अन्न संपन्न जो, बच्यो न सो [illegible]गवान॥

छंद चौबोला।

सूपकार सब जाय भूपसों विस्मित कह्यो हवाला।
अन्न पाकशालाको खायो तिहरो जेठो लाला॥
सुनि भुवालमणि रघुवंशिनयुत लागे हँसन ठठाई।
जननी मानि अजीरणका भय गुरु वसिष्ठ बोलवाई॥
गये तहां तुरतै वसिष्ठ मुनि कही कैकयी बानी॥
जेठो लाल अन्न बहु खायो रही न पाक निशानी।
मोहिं अजीरनका भय लागत नाथ करहु उपचारा॥
रु वसिष्ठ हँसि कह्यो रामसों खायो भोजन सारा।
[illegible]म कह्यो मैं क्षुधित अहौं गुरु अबलौं नाहिं अहारी॥
[illegible]ानहुँ मृषाजाय व्यंजन घर लीजै नैन निहारी।

लै सँग सकल सूपकारनको जाइ वसिष्ठ निहारे ।
दून दून व्यंजन सब देखे भोजन भवन मँझारे ॥
प्रभुचारित्र गुणि मुनि मनहीं मन रामहिं कियो प्रणामा ।
कह्यो कैकयीसों नृप हू सों राम न कियो कुकामा ॥
तिहंरो सुत भूखो मुख सूखो झूठहि वदत सुआरा ।
लेहु बोलाइ खवाइ देहु नृप और न करहु विचारा ॥
राउ रानि सिगरे रघुवंशी गुणे वसिष्ठ प्रभाऊ ।
सुतको अमित प्रभाव न जाने जामें है सब भाऊ ॥
पुनि कुमारसंयुत कोसलपति लै सिगरे परिवारा ।
केकयसुता भवनमहँ कीन्ह्यों व्यञ्जन विविध अहारा ॥
दोहा--यहि विधि करत अनेक तहँ, कला कुतूहल राम ।
जननी जनक प्रजानको, नित पूरत चितकाम ॥
बालकेलि महँ हरि मगन, जननी जनक सनेह ।
अवलोकत अनुदिन अमर, उपज्यो अति संदेह॥
कहहिं परस्पर वचन अस, दशरथ मखमहँ आइ ।
करी प्रतिज्ञा जगतपति, चतुराननहिं सुनाइ ॥
दशरथ भूभरतार घर, लै अवतारहि आशु ।
दशकंधर को मारिकै, करिहैं सुर दुख नाशु ॥
बिसरिगयो सो प्रण प्रभुहि, राजभवनमहँ आइ ।
किधौं विकुंठ धनी अबै, नहिं प्रगटे महि जाइ ॥
ताते चलहु विरंचि पहँ, पूँछि मिटावहिं शोक ।
जबलों दशकंधर जियत, तबलों सुखी न लोक ॥
अस विचारि करि देव सब, गे करतार अगार ।
है दशमुखसों अति दुखी, कीन्हे विकल पुकार ॥ उद
दशरथमखमें विष्णु प्रभु, कीन्ह्यों प्रणहिं उदार । र

मैं रावणको मारिहौं, लै मानुष अवतार ॥
सो प्रभु दशरथ भवन में, प्रगटे भ्राता चार ।
बालकेलिरत लखि तिन्हैं, हमहिं होत श्रमभार ॥
राजसम्पदा पाय प्रभु, भूलि गये प्रण सोइ ॥
धौ अबलौं अवनी प्रगट, भये न श्रीपति ओइ ।
लोक लोक अरु लोकपति, काहिन रावण भीति ॥
को अब शोक निवारिहै, बली लंकपति जीति ॥
सुनि विधि विबुधनके वचन, विहँसि वदे वर वैन ।
भयो महा श्रम सुर तुम्हैं, अब पैहो सब चैन ॥
अवधनगर दशरथभवन, हरि लीन्ह्यो अवतार ।
शम्भु कही मोंसे कथा, सो मैं करौं उचार ॥

छंद चौबोला ।

रघुपति बालचरित्र विलोकन धरि धरि मनुजशरीरा ।
कागभुशुण्डि और हम गवने जहँ विचरहिं रघुवीरा ॥
सङ्ग सङ्ग देखत चरित्र सब परम विचित्र अपारा ।
करत प्रणाम मुदित मनहीं मन बहति नयनजलधारा ॥
बालविनोद विलोकत प्रभुको पुरबालक सँगमाहीं ।
संग संग खेलत जस प्रभु रुचि जन जानै कोउ नाहीं ॥
कहुँ कहुँ कागभुशुंडि अकेले मेरो संग विहाई ।
धरि लघुरूप काग देखत नित प्रभुचरित्र लरिकाई ॥
उठि प्रभात कछु लैकर भोजन खेलत चारिहु भाई ।
गिरत टूक जो कछु प्रभुकरते काग लेत सो खाई ॥
अति सुन्दर मंदिर अंगनमहँ खेलत चारिहु भाई ।
मंजुल श्यामल गौर कलेवर अंग अंग छवि छाई ॥
नवराजीवकमल कोमलपद नख द्युति शशि छबिहारी ।

कुलिशध्वजादिक उपटत महिमहँ जहँ जहँ प्रभुसञ्चारी ॥
मणि मञ्जीर मंजु मनरञ्जन छाइ रहत झनकारी ।
कटि किङ्किनि अंगदभुज सोहत मुक्तमाल मनहारी ॥
रेखा तीनि उदर माधि राजत जनु विधि जग शुभगाई ।
खांचि दियो त्रै बार लीक कहि अस नाहिं कतहुँ देखाई ॥
चारु चिबुक कलकंठ कंबुसम सुन्दर बाहु विशाला ।
शिशुवर वपुष चौतनी शिरपर गोरोचन छबि भाला ॥

दोहा–कढति तोतरी बाणि कछु, सुनत मोद पितु मात ।
खग निहारि धावत धरणि, कहि मुख वायस जात ॥

छंद चौबोला ।

बालकेलि रत देखि नाथ को वायस उर भ्रम आयो ।
प्राकृत शिशुसम इनकी लीला वेद ईश कस गायो ॥
इतना ताके मनमहँ आवत धरनहेत प्रभु धाये ।
भज्यो भभरि वायस अंबर उडि गुणि हरि कहँ नियराये ॥
जहँ जहँ जात परात काग नभ बहुरि विलोकत पाछे ।
द्वै अंगुलको रहत बीच कर भजत वेग करि आछे ॥
सात लोक ऊरधके भाग्यो सातहु लोक पताला ।
गयो विरञ्चिलोक कहँ वायस हट्यो न भुजा विशाला ॥
प्रभुचरित्र जिय जानि बहुरि पुनि अवधपुरी कहँ आयो ।
प्रभु विलोके वायसको विहँसे सो द्रुत वदन समायो ।
तहँ ब्रह्मांड अनेकन देख्यो पृथक पृथक बहु रचना ॥
नील निषध आदिकसुमेरुगिरि कहि न जाय सो वचना ।
एक एक ब्रह्मांडन वायस शत शत वर्ष बितायो ॥
तदपि राम मायाको नेकहुँ उडि उडि पार न पायो ।
देख्यो विविध भांति जग वायस सुर नर आनहिं आना ।
एक न देख्यों आन रूप कहँ दशरथ सुत भगवाना ॥

गयो बहुरि अपने आश्रम कहँ नील शैलके शृङ्गा ।
यकशतकल्प बैठि ध्यायो हरि तदपि न मनभ्रम भङ्गा ॥
सुन्यो श्रवण प्रगटे कोसलपुर राम विकुंठ अधीशा ।
देखन बालचरित पुनि आयो जहँ खेलत जगदीशा ॥
दोहा--विहँसे तब दशरथ सुवन, कढ्यो बाहिरे काग ।
उतै बीतिगे कल्प बहु, इतै दंड युग लाग ॥

छंद चौबोला ।

यहि विधिकरत अनेकन लीला शुभ शीला तनु नीला ।
अवध वसीला चरित रसीला नृप घर राम रँगीला ॥
यहि विधि बीति गये कछु वासर करत मातु पितु चायन।
राम लषण रिपुदमन भरतकी भई वैस दश हायन ॥
शशि चौतनी कानन कुंडल नासा मणि मन मोहै ।
कठुला कण्ठ बिकुण्ठनाथके मुक्तमाल उर सोहै ॥
अंगद भुजनि काम रद हद प्रद कञ्चन कटक कलाई ।
चौरासी कटि परम प्रकासी लघु धोती छबि छाई ॥
मणि मञ्जीर नवल नूपुरपग लघु झँगुली झलकाती ।
लघु फेटे कटि कसे कनकमय तोतरिवाणि सोहाती ॥
लघु लघु लसत उपानत लघु पद लघु धनुहीं कर माहीं।
लघु सायक लायक शिशु ढालैं लघु लघु तूण पिठाहीं॥
लघु ढालैं लघु लघु करवालैं लघु लघु कर उरमालैं।
लघु लघु उरमालैं छबि जालैं लघु बालैं लघु हालैं ॥
लघु बोलनिलघुचलनिहँसनिलघुलघुचितवानिलघुधावनि ।
लघु लघु सखा सङ्गमहँ खेलत नहिं लघु सुख उपजावनि।
भोरहि मातु उठावति लालन सम्बल कछुक खवाई ॥
पोछि शरीर ऐंछि कारे कच भूषण पट पहिराई ॥
भूपति सभा शृंगारनके हित सिगरे सखन बोलाई ।
निजसुत सरिस खवाइ प्याइ जलकारि शृँगार सुखदाई ॥

दोहा--भाल विशालहि लालके, दियो दिठौना विंदु।
मीत मदन मनु मानिकै, लियो अंक करि इंदु॥
घुघुवारी अलकैं लटकि, इलकैं अमल कपोल।
मनहुँ शशांक सशङ्कि शनि, पहिरयो नील निचोल॥
जलज युगल लर गल उभै, महापदिक माधि भाइ।
मनहुँ कम्बु गुनि बन्धु विधु, मिलत करन पसराइ॥
कज्जल रेख विशेष चष, कोरन लों छवि देत।
श्याम जाल मनु रेशमी, फँसे मीन युग सेत॥

कवित्त।

छोटी करवालैं कर छोटी पीठि ढालैं ढकीं, छोटी कसी कम्मर दुआलैं मणीजालकी। छोटी उरमालैं मंजु छोटी उरमालैं मुक्त, छोटी चारु चौतनी बिशालैं द्युति भालकी॥ पगन पनहियां सुछोटी मणि आलवालैं, हालैं रघुराज जन करन निहालकी॥ सङ्गसम वैसवालैं आव पितु आलै राम, चटपट चाल चित्त सालै नृप लालकी॥ कहूँ नृप अंगनमें खेलैं बाल सङ्गनमें, कहूं नृपअङ्गनमें दौ[illegible]तेहैं। चढते मतंगनमें कबहूँ तुरंगनमें कबहूँ सतांगनमें दूरि काढि जाते हैं॥ सौधानि उतङ्गनि अरोहिके उमंगनमें, मणिन कुरङ्गन विहंगन लराते हैं। बालकेलि जंगनमें जीति रसरंगनमें, रघुराज चित्तचोषि चंगन चढाते हैं॥

दोहा--अति चञ्चल अति चारु वपु, चित चोखे सुत चार।
चमत्कार सब गुणनमें, चतुर सुविमल बिचार॥
यहि विधि भाष्यो शंभु मोहिं, अवधनगरते आय।
थोरे कालहिमें हरी, दैहैं शोक नशाय॥
सुनि विरंचिवाणी विबुध, मानि प्रबल विश्वास।
दशकन्धरकी मानि भय, गे निज निजै निवास॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुर, श्रीकृष्णचन्द्र-
कृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते
श्रीरामस्वयंवर ग्रंथे बाललीला वर्णनंनाम षष्ठः प्रबन्धः॥ ६॥

दोहा--वसत अवधपुर देत सुख, रघुनन्दनयुत भ्रात।
द्वादश वर्षहिके भये, मुदित करत पितु मात॥

छंद चौबोला।

कोउ न रामसम वेद विज्ञाता त्राता जग सुखदाता।
अति अवदाता गुणनि विधाता प्रजा सनेह अघाता॥
चढि तुरङ्ग झमकावत आवत जब कहुँ खेलि शिकारा।
सखन बन्धुयुत अति छबि छावत करत अवध उजियारा।
लषण कुमारनके आवन हित जांय उतङ्ग अगारा॥
खडे होत पुहुमीपतिनायक लहत अनन्द अपारा।
जहँते लखत पिता कहँ रघुपति त्यागत तुरतहि याना॥
करत प्रणाम पिताढिग आवत बन्धुनसहित सुजाना।
जैसी पितुके उर अभिलाषा तैसे करत अगारी॥
सुखी होत सब प्रजा बन्धुजन सचिव पिता महतारी।
बाल जननि ढिग पितु ढिग सेवक स्वामी प्रजनसमीपा।
सुहृदसखन ढिगकविकाविजन ढिग नृपगण निकटमहीपा॥
परम विचक्षण सकल सुलक्षण रक्षण वाणि सदाकी।
लक्षणसहित रहत प्रभुक्षण क्षण छबि अक्षन फलदाकी॥
यहि विधिनिरखि कुमारनको तहँ मनमोदित नरनाहू।
कियो विचार सार: सब सुखको होइ विवाह उछाहू॥
तब तुरन्त बोल्यो सुमन्तको ल्याउ वसिष्ठ लेवाई।
सुहृद सचिव पुर प्रजा वृद्ध जन दीजै सभा लगाई॥
कछु आपनकी अभिलाषा उर उपजी अवशि हमारे।
करि हैं गुरुशासन शिर धारि जो सम्मत होइ तिहारे॥
दोहा--सुनत सुमन्त तुरन्त चलि, ल्याये गुरुहि लेवाइ।
सुहृद सचिव पुरजन सुजन, आये सुनत रजाइ॥

छंद चौबोला।

वृद्ध वृद्ध सिगरे रघुवंशिन पौर सचिव मतिवाना।
नृपकी सभा मध्य सब बैठे करत विचार विधाना॥
बंधु पुरोहित सचिव पौर जन प्रभुमुख रहे निहारी।
कहि न सकत पूछे बिन कोई भै समाज तहँ भारी॥
सब कहँ देखि भूपमणि बोले सुनहु सकल मम बैना।
भये कुमार विवाहन लायक उचित झेल अब है ना॥
ईश कृपा भे कुँवर चारि मम तुम्हरे पुण्य प्रभाऊ।
अस विचारि अब करत मोर मन करहुँ विवाह उराऊ॥
जो तुम्हार सबको संमत अस होइ हिये हुलसाये।
तौ जेहि जहँ जस परै योग लखि बनतो अबहि सुनाये॥
निजअभिलषित सुनत सिगरे जन बोलि उठे इक बारा।
राम ब्याह अब करहु भूपमणि दूसर कछु न विचारा॥
सबको संमत सबको यह सुख सब ऐसहि अभिलाषी।
राम ब्याह कब लखब नयन इन सत्य कहै शिव साषी॥
बांधे मौर चारि भ्रातनको कब देखन दिन होई।
अस अनन्द महँ जेहि संमत नहिं ताते मंद न कोई॥
सुनहु भूमि भूषण इत दूषण कह वसिष्ठ मुसकाई।
जो प्रभु दियो पुत्र तुमको सोइ देहै जोग लगाई॥
इतने ही में द्वारपाल द्वै आतुर आये धाई।
करि बंदन ते अजनंदनको दीन्हे वचन सुनाई॥

दोहा--महाराज महिपति मुकुट; जासु महा मुनि ख्याति।
सोई विश्वामित्र इत, आये विनहि जमाति॥

छन्द चौबोला।

बोलि द्वारपालन इमि भाष्यो दीजै द्रुतहि जनाई।
महाराजके दरशन आशी हम आये इत धाई॥

सब अमोघ दुर्धर्ष ते, जानत गाधि कुमार ॥
विश्वामित्र चहैं जो नृप, विरचैं अस्त्र नवीन।
ऐसो समरथ धर्मवित, मुनि सर्वज्ञ प्रवीन ॥
त्रिकालज्ञ यह गाधिसुत, कछु नाहिं जो नहिं जान ॥
तिनके सँग रघुपति गमन, नृप संशय जनि मान।
यदपि निशाचर हननमें, समरथ गाधिकुमार ॥
तव सुतके हित हेतु हठि, याचत जानि उदार ॥

सवैया ।

ऐसी सुनी वर वानी वसिष्ठकी, भूपतिके मन आनँद आयो।
कौसिकके सँगमें सुतको गुन्यो, गौन सुमंगल भौन सोहायो।
श्रीरघुराजको शोक मिट्यो रघुनंदन देन हियो हुलसायो।
फेरि महीप विचारि मनै मन, एकको गौन न योग जनायो।

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीरामस्वयंवरग्रंथे विश्वामित्रागमन वर्णननाम सप्तमः प्रवन्धः ॥ ७ ॥

दोहा--यदपि गाधिसुत सङ्गमें, नहिं दुख पैहैं राम।
लषण गमन सँग उचित है, मारग सेवन काम ॥

छंद चौबोला ।

अस विचारि मनमहँ धरणीपति तुरत सुमन्त बोलायो।
गद्गद गर अतिशय धीरज धरि मंजुल वचन सुनायो ॥
जाहु सुमन्त राजमंदिरमहँ लै आवहु इत रामैं।
लै आइयो लषणहूंको इत जो उनके सँग आमैं ॥
सुनत सुमन्त नाथ वन्दन करि रघुनन्दन ढिग आयो।
चलहु राम अभिराम जनक ढिग भूपति तुमहिं बोलायो॥
सुनि पितुशासन शाणि दुखनाशन उठि आसनते आशू।

गहे लषण कर कमल जगतपति चले पिताके पासू ॥
रामहिं लषण सहित आवत लखि दुखी सुखी समराजा।
कियो जनकवन्दन रघुनन्दन उठी तुरन्त समाजा ॥
भूपति दै अशीस अपने ढिग बैठायो रघुनाथै।
विश्वामित्र वसिष्ठ कमलपद धरचो राम निज माथै ॥
तैसहिं लषण वन्दि मुनि पितु पद बैठे रघुपति पासा।
रघुपति वदन विलोकि गाधि सुत पायो परम हुलासा ॥
राम जाहु कौशिक मुनिके सँग कढत न नृपमुख वानी।
राज समाज जकीसी ह्वैगे मनमहँ परम गलानी ॥
अवसर जानि वसिष्ठ कह्यो तहँ सुनहु राम मम प्यारे।
आइ परचो इक द्विज कारज अब बनतो गये तिहारे ॥
कौशिक मुनि मख रक्षणके हित चहत पठावन राजा।
मुनि प्रतापते काज सिद्धि सब तुमको सुयश दराजा॥
दोहा--मातु पिता गुरु सदनते, तिहरो अधिक सुपास।
तुम क्षत्रिय रघुकुल धनी, कीजै वैर विनास ॥

छंद चौबोला।

मुनि वसिष्ठके वचन धीरधरि धरणीपति पुनि भाष्यो।
विप्र काज लगि आजु देहुँ मैं नाहिं सरबस कछु राष्यो॥
धर्म धरा सुरहितं क्षत्रिनके लागत तन धन धामा।
ते क्षत्री त्रिभुवनमहँ पूजित होत सिद्धि सब कामा ॥
सुनहु प्राणप्रिय राम आजुते जबलागि मुनि सँग रहियो।
मातु पिता गुरुभाव गाधि सुत महँ सब विधिते गहियो ॥
जननि जनकते अधिक गाधिसुत कारि हैं संच तिहारो।
कौशिक शासन सकल शीशधरि सिगरो काज सिधारो ॥
अस कहि सजल नयन गद्गद गर भूपति भये दुखारी।

उठि तुरन्त करजोरि सुखी सुठि रघुवर गिरा उचारी॥
विप्रकाज लगि पुनि पितुशासन गुरुनिदेश पुनिभायो॥
मोते कौन धन्य धरणीमहँ सकल सुकृत फल पायो॥
जाउँ मातुपद वन्दन करिकै गुरु पितु पद शिर नाई॥
विश्वामित्र सङ्ग जैहौं हठि करिहौं सब सेवकाई॥
अस कहि उठे लोकलोचनफल जननी सदन सिधारे॥
तब पितुपद प्रणाम करि लछिमन हर्षित वचन उचारे॥
रघुपति संग विप्र कारज लगि मोरेहु गमन उराऊ॥
देहु निदेश नाथ निहशंकित यहि महँ मोर बनाऊ॥
भूपति कह्यो उचित अस तुमको जाहु रामहित लागी॥
सावधान रहियो निशि वासर ज्येठ बन्धु अनुरागी॥

दोहा--लषण मनहु सर्वस लहे, चले रामके संग।
जननी सदन सिधारिकै, भाषे भरे उमंग॥
आयो विश्वामित्र मुनि, नृपसों मध्य समाज।
माँग्यो रघुपतिको हुलसि, मखरक्षणके काज॥
महि सुर काज विचारिकै, पिता राम को दीन।
हौंहू संग सिधारतो, रहौं न राम विहीन॥
जननी शंक न कीजिये, सादर देहु रजाय।
दश दिनमें द्विज काज करि, ऐहौं इत अतुराय॥

कवित्त।

सुनत ठगीसी रही मातु नहिं वाणी कही, महादुख सानी सोचन समात है। तुरत सँभारि नैन परत अमित वारि, बो पुकारि कौसिलाजू ऐसी बातहै॥ भनै रघुराज मेरो जीवन अ सुकुमारहै कुमार न विदेशरीति ज्ञात है। भूपै किधौं लाग्यो रोक्यो है न मजबूत, हाय मेरो पूत अवधूत लीन्हे जात है॥ समाज कैसी लागत अनैसी ऐसी, जैसी होत आज ऐसी क

देखात है । अहैं सबकोऊ शूर सचिव सुहृद वोऊ, बरजैं न सोऊ
दोऊ मुनि का बतातहै ॥ भनै रघुराज सूध दूधमुख मेरो लाल,
जानै ना भुआल यह काल करामात है । करि कौन करतूत
मुनिको लग्यो धौं भूत, देखो मेरो पूत अवधूत लीन्हे जातहै ॥

सोरठा--सुनि कौसिला प्रलाप, आईं सब रानी तहां ।
लागीं करन विलाप, राम गमन काको रुचत ॥
जननी विकल विचारि, रघुनन्दन बोले वचन ।
तोको शपथ हमारि, करै खेद जो नेकु मन ॥

छन्द चौबोला ।

द्विज कारज लगि क्षत्रिनको तन गाधिसुवन सेवकाई ।
गुरु अनुमत पुनि पितु निदेश शिर तामें मोरि भलाई ॥
क्षत्री कुलमहँ जन्म विप्र दुख कानन सुनि नहिं जातो ।
सो अति अधम तासु यह अपयश जननी जग न समातो ॥
गुरु पितु अरु तुव पद प्रतापते मोर सिद्ध सब काजा ।
जो अनुचित कछु जानत तौ कस जानदेत महराजा ॥
ताते अब नहिं कछु शङ्का करु मङ्गल करु महतारी ।
रञ्चक नहिं विसंच कौशिक सँग जात लषण सहकारी ॥
सुनत सुवनके वचन कौसिला धरि धीरज उर भारी ।
बोली वचन सूँघि सुतको शिर जैसी खुशी तिहारी ॥
अस कहि मंगल द्रव्य साजि सब दधि दूर्वा धरि थारी ।
गौरि गणेश पुजाय पूतकर मंगल वचन उचारी ॥
रक्षहिं नारायण सब थलमहँ सहित विरंचि पुरारी ।
सकल देव दाहिने दशो दिशि रहैं शोक भयहारी ॥
रंगनाथको हौं सुत सौंपति इष्टदेव भगवाना ।
मो गरीबिनीके दोउ बालक रक्षैं कृपानिधाना ॥
अस कहि सावित्री तियके शिर धरि धरि कलश सदीपा ।

पढि स्वस्त्ययन दही टिकुली दै कह्यो जाहु कुलदीपा ॥
जननी पदपंकज प्रणाम करि हर्षि चले दोउ भाई ।
लौटीं सकल मातु मंगल पढि द्वारदेश पहुँचाई ॥
दोहा--बोलि भरत अरु रिपुदमन, कह्यो राम समुझाइ ।
तुम्हैं मोर पदकी शपथ, किह्यो मातु सेवकाइ ॥

छंद चौबोला ।

जो जननी जनत्यों अधार कछु जात्यों तुम्हैं न छोडी ।
दिवस दशकमहँ करि द्विज कारज ऐहौं आनँद वोडी ॥
सुनि पद शपथ भरत रिपुसूदन विमनस कहत न वानी ।
प्रभु पद पंकज परशि पाणि पंकज ते हिये गलानी ॥
बार बार उर लाइ राम भरतहि शिर सूँघि सुखारी ।
बिदा कियो तैसहि रिपुहनको बोधन वचन उचारी ॥
गये पिता दरबार बंधु दोउ दीनबंधु बलरासी ।
उठी समाज सकल रघुराज विलोकत अवध विलासी ॥
शीश किरीट कान कुण्डल छबि कर कोदंड विराजै ।
कटि निषंग करवाल बाण कर पीत वसन छबि छाजै ॥
महाराजको करि प्रणाम तहँ राम लषण दोउ भाई ।
गुरु वसिष्ठके पदवन्दन करि सब वृद्धन शिरनाई ॥
कौशिक संग गमन कानन कहँ मखरक्षणके हेतू ।
पूषण कुल भूषण हत दूषण रूषण चित धृत सेतू ॥
माँगी बिदा पितासों रघुपति मख रक्षण उतसाही ।
उठि तुरन्त दशरथ भुआल माणि गहि पुत्रनकी बाही ॥
सौंप्यो गाधिसुवन कर अस कहि तुम, इनके पितु माता ।
अहो विधाता मुनि गुरु भ्राता सुखदाता दोउ त्राता ॥
अस कहि धरा धान्य धन बहु विधि पुत्रन दान कराई ।

पढनलगे स्वस्त्ययन भूपमाणि सब संदेह विहाई ॥
दोहा--विजयमंत्र पढि सहितविधि, अभिमंत्रित करि अंग ।
मंगल लागे पढन पुनि, गुरु वसिष्ठ दुखभंग ॥

छंद चौबोला ।

कुशिकतनय पुनि दशरथनृपको दीन्हे आशिरवादा ।
तुमहीं विन को राखै मेरी सकल धर्म मर्य्यादा ॥
शीश सूंघि दशरथ पुत्रनको फेरि पीठिमें पानी ।
दियो कुमारन कुशिकतनयको जै मंगल अनुमानी ॥
राम लषणको आगे करिकै विश्वामित्र सिधारे ।
चले कछुक भूपति पहुँचावन सहित वसिष्ठ उदारे ॥
आगे राम लषण पुनि कौशिक गुरु वसिष्ठ महराजा ।
राम लषण दशरथ आसी सब सोहति राजसमाजा ॥
द्वारदेशला जाय गाधिसुत बोले मंजुल वानी ।
सीखदेहु तौ अब हम गमनहिं बसहु अवधसुखखानी ॥
भूपति चरण पकरि पुनि पुनि कह ये तुम्हरे दोउ बारे ।
इनको सौंपत सकल भांतिसों मुनिवर हाथ तिहारे ॥
राम लषण पुनि गुरु वसिष्ठ कहँ कीन्ह्यो दंड प्रणामा ।
आशिर्वाद दियो मुनि हर्षित होहिं सिद्ध सब कामा ॥
पुनि नरेश रघुनाथ लषणको शीश सूंघि उर लाई ।
बिदा कियो पढि मंगल मंत्रन दुख सुख आंसु बहाई ॥
फैलगई सुधि सकल अवधपुर धाये सब पुरवासी ।
मुनि भयवश कछु वचन कहत नहिं सङ्ग गमनके आसी ॥
राम तिन्हैं समुझाइ कह्यो बहु ऐहौं दशादिन माहीं ।
धरहु धीर नेसुक प्रिय पुरजन मुनि सँगमें भय नाहीं ॥
दोहा--राम लषण लै मुनि चले, धन्य जन्म निज मानि ।

शीतल मंद समीर तहँ, बहन लग्यो सुखखानि ॥

छन्द चौबोला ।

जगत प्रसन्न भयो तेहि अवसर देव महा सुख माने ।
दै दुंदुभी धुकार गगनमहँ बरषैं फूल अमाने ॥
रञ्चक रज नहिं गगन पंथमहँ अतिनिर्मल दश आशा ।
वदहिं परस्पर देव दुखी सब भयो अवशि दुख नाशा॥
चढि विमान जब गगनपंथ महँ देवन दिये नगारे ।
सो सुनि अवध शंख सहनाई बाजन लगे अपारे ॥
सगुण होत अति सुखद दशोदिशि विप्र करत जै कारा ।
फरकत दाक्षिण नयन बाहु भ्रुव चित उत्साह अपारा ॥
सावित्री द्विज नारि कलश शिर लै शिशु सन्मुख आवैं ।
बछरा प्यावत मिलैं धेनु ढिग मृगगण दाक्षिण धावैं ॥
क्षेमकरी ऊपर थहराती मिलहिं पढत द्विज वेदा ।
दधि तंदुल कहुँ मिलहिं मीन पथ बारवधू विन खेदा ॥
बोलहिं विविध विहङ्ग सोहावन लोवा दरशन देती ।
अग्निहोत्र पावक ज्वाला माला हवि बढि बढि लेती॥
नीलकण्ठ उडि बैठत तरुपर हंसावली उडाती ।
आवत सन्मुख सजे वाजि गज पीठि पवन रिपुघाती॥
आगे विश्वामित्र चले तहँ पाछे राम सुजाना ।
लषण चले तिनके पाछे पुनि लिहे शरासन बाना ॥
जहँ जहँ जात राम लछिमन मुनि तहँ तहँ अम्बर माहीं ।
मन्द मन्द मृदु बिंदु वराषि घन करत पन्थमहँ छाहीं ॥

दोहा--अति सुकुमार कुमार दोउ, मुनिमुख निरखत जात ।
करत पान पीयूष छबि, तदपि न नेकु अघात ॥

कवित्त ।

भानुसेकिरीटवारेंकुंडलझलकवारे,कुंचित अलकवारे गौरतन

हैं। मन्द मुसकानवारे नेकु नैन अरुणारे, कटिमें निषङ्ग कर बालन को धारे हैं ॥ बाम कर चाप बारे दाहिने सुधारे शर, पीत पट वारे तीनों लोक रखवारे हैं। भनै रघुराज मुनि संगमें सिधारे दोऊ, काकपक्ष वारे दशरत्थके दुलारे हैं ॥ हाथनमें सोहते दस्ताने गोध चर्मनके, कठिन कराल करवाल कटि कालसी। लोचन बिशाल हिये लालनकी माल पीठ, सोहै ढकी ढाल मूर्ति कोटि रति पालसी ॥ भनै रघुराज रघुराजवंश पाल मुख, उदै उड पाल हारावला उड जालसी । आगे मुनिपाल मुनि सोहैं रघुलाल त्यों, लषणलाल पीछे शोभा सांचीहुती व्यालसी ।

छन्द गीतिका ।

ग्रामीण निरखत कुँवर दोउ मुनि सङ्ग विपिन सिधारहीं ।
सुकुमार अति सुकुमार काके मदन मदहि उतारहीं ॥
नर नारि जुरि जुरि ते परस्पर विविध वचन उचारहीं ।
कानन कठिन कोमल चरण कोउ सुजन कस न नेवारहीं ॥
भल जननि जनक दया विहीन पठाय दीन सुकानने ।
अवधूत यह निर्दय अकूतन बरिजहूपर मानने ॥
कोउ कहत पुनि कारण कवन मुनिसङ्ग बालक आनने ।
हमको लगत अनुचित अमित नहि हेतु कछु पहिचानने ॥
कोमल वदन नहिं घोर आतप चलत पथ कुँभिलात हैं ।
श्रमबिंदु वदन विराजते मनु ओसकण जलजात हैं ॥
कोउ कहत क्षत्री कुँवर दोउ संग्राम हेत जनात हैं ।
करि अमित छल उपजाय भ्रम मुनि माँगि लीन्हें जात हैं ॥
कोउ आय पूछहिं निकट चलि बालकयुगल मुनि कौनके ।
केहि हेतु तुम लै जाउ कहँ कस भये प्रिय नहिं भौनके ॥
कौशिक कहत दोउ तनय मेरे रहैं सँग पुनि कौनके ।
जिमि तुम सुतन निज चहहु जहँ लै जाहु कारज कौनके ॥

लखि ग्रामनी तिय युगल जोडी कहहिं वचन विचारिकै।
यह मुनि कठिन अतिशै निठुर नहिं द्रवत कुँवर निहारिकै॥
कोउ कहहिं हमरे ग्राममहँ मुनि बसहिं कहहु सुधारिकै।
कोउ कहहिं जो नहिं बसहिं तौ अब जाहिं धूप नेवारिकै॥
कोउ सलिल शीतल ल्याय भाषहिं कुँवर कछुक पिआइये।
कोउ ल्याय भोजन विविध व्यञ्जन कहहिं नेकु खवाइये॥
कोउ नारि नर निज भवनद्वारहिं कहहिं मग इत आइये।
कोउ कहहिं कौशिक करहु करुणा इतहिं रजनि बिताइये॥
दोउ राज कुँवरन लखन हित नर नारि सङ्ग सिधारहीं।
कोउ निकट चलि पूछहिं भवन कहँ कौन हेत पधारहीं॥
रघुपति कहत हँसि मुनिजनक मम और कछु न विचारहीं।
जहँ जात मुनि तहँ जात हम सेवा धरम निरधारहीं॥
जिन चरण पुहपन पाखुरी चाहति गडनि अति कोमले।
ते कठिन कंकर सहत किमि पठये जनक जननी भले॥
कोउ कहत क्षत्री जाति राजकुमार हैं सँग निर्मले।
नहिं गनत परहितहेत निज दुख वंशके अति उज्ज्वले॥
कोउ कहति लखि तें जा दिठौना बिंदु दीजै भालमें।
जामें न टोना लगै दोहुँन उचित है याहि कालमें॥
कोउ कहत गमनत पीर ह्वै है चरण वरण प्रवालमें।
मैं जाहुँ नेसुक दाबि आऊं चलत चाल मरालमें॥
जुरि जुरि कहहिं नर नारि अस छबि आजलों देखी नहीं।
नर नाग सुर गन्धर्व सर्व अखर्व यद्यपि है सही॥
कोउ कहहिं सुन्दरता समेत रच्यो विरंचि उमाहहीं।
सुनियत मदन की परम छबि सो सत्य इनकी छाहहीं॥
दोहा—दोउ घन तन समता चहत, शरदवर्ण सित श्याम।
चढे गगन हिय हारि पुनि, उडत रहत वसुयाम॥

कवित्त ।

वीररस रङ्गवारे जुरे जङ्ग जैतवारे, नैन अरुणारे बाण धनुपाने ॥ धारे हैं । मूरतिपै कोटि मैन वारे खड्ग तूणवारे, वदन प्रकाश दश दिशन पसारे हैं ॥ भनै रघुराज दोऊ विश्वामित्र सङ्गवारे, मुनि मख रक्षणके हेतु पगु धारे हैं । क्रीट यक तूण यक कर शर नोक तीजे, मनो तीनि फनके भुजंग भयकारे हैं ॥ पंकज पगनि विश्वामित्र संग पंथ डोलैं, आप तौ अक्षुद्र क्षुद्र रक्षकुल घाती हैं । कर शर सहित शरासन कृपाण तूण,चमकैं अनेक रङ्ग भूषणकी जाती हैं॥ भनै रघुराज मुनि पाछे पाछे आछे लसैं, काछे कटि काछनी न सङ्गमें जमाती हैं । मानो करतार विश्वव्याधिके निवारनको, लीन्ह्यो सङ्ग अश्विनीकुमार छबि माती हैं॥भाषै मुख एक राम लषणकी शोभा कौन,शेष शिव शारदा उचारि हिय हारे हैं । मोहत मनुज मन मंडित करत महि, मन्दमन्दमगमें गयन्द गतिवारे हैं ॥ भनै रघुराज विश्वभूषण विराजें दोउ, धर्मके धुरन्धर धरामें धाक धारे हैं । कोमल कमलहूते कठिन कुलिशहूते, मानो शीत भानु भानु कानन पधारे हैं ॥

सवैया ।

मुनि संग चले रघुनन्दन सोहत, निन्दत मैन अनन्दित रूप हैं ।
दोउ अनन्दित वन्दित विश्वते, आपही ते अपने अनुरूप हैं ॥
पावकके हैं कुमार मनो युग, गो द्विज रक्षक धर्मके जूप हैं ।
गाधितनै मख राखनके हित, भेजे कुमारन कोशल भूप हैं ॥

दोहा–यहि विधि विश्वामित्र सँग, चलत चलत मग राम ।
अवध नगरते कोश षट, आये अति अभिराम ॥

बरवै ।

अति कठोर लागि आतप कोमल गात । श्रम जल कण तनु निकसे अतिहि सोहात ॥ तरु तमाल महँ मानहु सीकर ओस । झलमल झलकत चहुंकित पाय प्रदोस ॥ गौर लषण तनु सोहत ज-

लकण चारु। मानहु रजताचल पर तार विहारु ॥ अतिशय को
मल आनन कछु कुम्हिलान। साँझ समय जिमिअंबुज नेकु मलान॥
देखि महामुनि मनमें मानि गलानि। तरुछाया लखि सीरी श्रमसु
दानि ॥ ठाढे भये महामुनि समय विचारि। मधुरवचन बोले पु
राम निहारि॥ सुनहु राम रघुनन्दन राजकुमार। कौसल्या सु
कारी प्राण पियार ॥ बन्यो न ल्यावत मोसे मन पछितात। का
वशकाकरिये बनत न जात॥ अमलकमल पद कोमल भूमि कठोर।
कैसे पन्थ सिरैहै राजकिशोर॥ इतै सलिल अति शीतल कीजै पान।
तरुछायामें बैठो मुखकुम्हिलान॥ असकहि ऐंचि कमंडलु जल भ
रिल्याय। राजकुमारन मुनिवर पानकराय॥ पोंछिप्रस्वेदपाणिनि
व्यजन डोलाय। रामलषणसे बोले मुनि अकुलाय॥ सुनहु वत्स म
प्यारे मंत्र उदार। बला अतिबला विद्या मोद अगार ॥ पढे युग
विद्याके सकलसुपास। नहिंश्रमतनुनहिं भ्रम मन नहिंबुधिनास॥ न
विपरीतरूपकी कबहूँ होय। बला अतिबला विद्या पढे जो कोय।
सोवत जागत बैठत वागत माहिं। करै धर्षणा निशिचर कबहूँ नाहिं
जो विद्या पढिलेहौ रामसुजान। तौतुम्हरेभुजबलसमजगनहिं आन
तीनि लोकमहँ तुमसम होइ न कोय। पढै जो कोउ यह विद्या जा
सोय॥ भाग्यमान अरु चतुरहु तेहिसमकौन। सब प्रश्नको उत्तरभ
षत तौन॥ निश्चय काज करनमें सोइ प्रबीन। ज्ञानमान मति
नहु धीरधुरीन ॥ जो विद्या पढिलेहो तुम रघुवीर। तौ तुम
सम होइँ कोइ न धीर॥ पन्थ पढत युग विद्या दुख नहिं होइ। सक
ज्ञानकी माता जानहु दोइ॥ क्षुधातृषा नहिं बाधति लगति न था
जो कोउ पढे पन्थमहँ तेहिबल धाक ॥ लेहु युगल विद्या तु
राजकुमार। सकललोकके रक्षणहेत उदार ॥ बला अतिबल
तुम पढिहौ राम। तौ तिहरो यश व्यापी तीनिहु धाम॥ दोउ वि

श्विकी तनया तेजअपार । तुम लायक विद्याके धर्मअधार ॥ सुर
नर मुनिके कारज तुमसे लाग । तपकरि पावत विद्यासहित विभाग॥
लेहु राम रघुनन्दन विद्या दोय । तुम सम कोउ प्रिय मोरे परै न जोय॥

दोहा--सुनि प्रभु मुनिके वचन वर, चरण करन जल धोय ।
अति प्रसन्न मन शुचि सदा, बैठे मुनि मुख जोय ॥

छंद चौबोला ।

अवसर जानि गाधिनंदन तहँ विद्या मंत्र उचारे ।
कण्ठ कराय सिखाय न्यास सब बोले वचन सुखारे ॥
जन अभिराम राम यहि रजनी इतहीं करहु निवासा ।
सकल वासको है सुपास इत आगे चले प्रयासा ॥
राम लषण लहि विद्या मुनिसों शोभित भये प्रकाशी ।
मनहु हजारन किरणि पसारत उदित शरद तमनाशी ॥
परमरम्य सुन्दर अमराई सरयू सुखद किनारे ।
विश्वामित्र निवास कियो तहँ संयुत राजकुमारे ॥
संध्यासमय विचारि गाधिसुत राम लषण सँग लीन्हें ।
चलि सरयूतट शुचि निर्मल जल संध्यावंदन कीन्हें ॥
पुनि आये तीनौं निवास थल मुनिवर बोले वानी ।
शयन करब अब उचित लाल इत मम आँखी अलसानी ॥
सुनि कौशिकके वचन बंधु दोउ कोमल तृण बहु ल्याई ।
निजकरकमल सुधारि शयन हित दीन्हीं सेज बनाई ।
विश्वामित्र बहुरि अपने कर कियो सेज बिस्तारा ॥
करहिं शयन सुखसहित उभय दिशि जामें राजकुमारा ।
शयन करन जब परे महा मुनि राम लषण दोउ भाई ॥
लगे चरण चापन कौशिकके करपंकज पसराई ।
जाके कौशिक आदि ब्रह्मऋषि पदपंकज रज ध्यावैं ॥
सो प्रभु कुशिकतनयपद मींजत यह अचरज सुर गावैं ।

दोहा--ऋषि बोले मंजुल वचन, करहु शयन अब लाल।
कौन तुम्हारे सरिस जग, सत्य धर्मको पाल॥
गुणि गुरुशासन बन्धु दोउ, शयन कियो तृण सेज।
लागे कहन कथा कछुक विश्वामित्र सुतेज॥

कवित्त।

पावनि परम यह रजनी सुहावनी है, आवनि मयंककी अन
आधिकाई है। उदै उडुगण उपजावनि शयन प्रीति, धावनि सम
अलसावनि सदाई है॥ रघुराज दिन श्रम सकल नशावनि,
नंककी बढावनि मयंक प्रभुताई है। चोर सुख छावनि बिछा
नयन नींद, शांतगति भावनि बिभावनि सुहाई है॥

दोहा--ऐसी कहि नेसुक कथा, शयन कियो मुनिनाथ।
सोवत गुरु गुणि लषणयुत, शयन कियो रघुनाथ॥

कवित्त।

कोमल कलित सुम सेजक सोवैया दोऊ, मंदिर मणिन मातु
जन डोलावई। सरस सुगन्ध फैली रहति अनेक भांति, म
प्रदीपकी प्रकाशता जहां छई॥ सोई रघुराज दोऊ सोवैं तृण
जहींमें, वृक्षनकी छाया वनभूमिका तमोमई। तदपि ऋ
मुख लालनते पालनते, औधते अधिक सुख शर्वरी सो दैगई

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमाहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्रकृ
पात्राऽधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई कृते राम-
स्वयंवरग्रन्थे रामगमनवर्णनं नाम अष्टमः प्रबन्धः॥ ८॥

दोहा--सुख सोवत रघुपति लषण, आगम जानि प्रभात।
विश्वामित्र उठे प्रथम, राम दरश ललचात॥

छंद चौबोला।

झलझल गगनपंथ तारागण निरखि मयंक मलानो।
मनो समर करि भानु संगमहँ हारो हहरि परानो॥

विकसनलगींकमलकलिकाकलकुमुदिनि गण सकुचाने ।
मनो विभाकर वीर विलोकत निशिकर सुभट सकाने ॥
करन लगे कलरव विहंग वर बैठे वृक्षन डारैं ।
अंशुमान आगम गुणि मानो द्विजगण वेद उचारैं ॥
तमहिं हटावत क्रम २ आवत पूरब दिशि अरुणाई ।
मनहुं राम आवनि गुणि छीजत निशिचर आयुदाई ॥
कोकी कोक अशोक लोक महँ मिलन लगे मुदमाती ।
विजयकरनगुणि रामगमनजिमिसुखितसाधुसुरजाती ॥
पसरत पवन मंद अति शितल भूतल परिमल सानो ।
रामप्रताप प्रयात प्रथम मनु कीरति करत बखानो ॥
अंशुमान भे उदैमान दिशिप्राची कर पसराई ।
मनु निज वंश निशान जानिकै लेत राम अगुआई ॥
उदयाचल रवि अस्ताचल शशि बसुधा बीच बिराजैं ।
मनहुँ राम कीरति करनीके युग घंटा छबि छाजैं ॥
गोगण चरन चले कानन कहँ द्विज संध्या अवराधे ।
मनहुं राम रक्षक गुणि सुर मुनि निज निज कारज साधे॥
कन्दर दुरे उलूक मूक है दीपावली बुझानी ।
राम प्रताप तापते तापित जिमि निशिचर भय मानी ॥

दोहा--पाय प्रमोद प्रभात मुनि, मज्जन समय विचारि ।
चहे जगावन रामको, छके स्वरूप निहारि ॥
मुख विथुरी अलकैं अमल, रहीं वदन कछु आय ।
मनहुं श्याम घन पटलते, कढत शशी बिलगाय ॥
राम वदन सोहत रह्यो, वामपाणि निश्शंक ।
मनहुँ तरणि रिपु गुणि कमल, कीन्ह्यो अंक मयंक ॥
युगलबन्धु सोवत श्रमित,सुन्दर वदन सोहाय ।

समर सुरासुर जीति मनु, रवि शशिके इक ठांय॥
पंथ श्रमित सोवत सुखित, छकित रह्यो मुनि देखि।
सकत जगाय न रामको, समय प्रभात परेखि॥
जस तस कै साहस सहित, जागन समय विचारि।
मुनि बोल्यो मंजुल वचन, सुन्दर वदन निहारि॥

छन्द चौबोला।

पुरुषसिंह जागहु रघुनन्दन कौसल्याके प्यारे।
करहु विमल सरयू जल मज्जन सज्जन प्राण अधारे॥
हे रघुनन्दन सन्ध्या वन्दनको अब अवसर आयो।
उदै उदैगिरि अंशुमान भो तुव दर्शन ललचायो॥
विश्वामित्र वचन सुनि रघुपति उठे नयन अलसाने।
लषणहुँको जगाय मुनिवर पद वंदे हिय हरषाने॥
पर्ण सेज तजि प्रातकृत्य करि सरयू तीर सिधारे।
सविधि कियो सरयू जल मज्जन धौत वसन तनु धारे॥
दै दिनकर को अर्घ्य मन्त्र पढि उपस्थान पुनि कीन्हे।
गायत्री को जपन लगे पुनि ब्रह्मबीज मन दीन्हें॥
यहि विधि करि संध्या वंदन रघुनन्दन मुनि ढिग आये।
मुनिपद पद्म पराग शीश धरि भूषण बसन सोहाये॥
कसि निषंग कोदण्ड चण्ड शर लै कर कटि सवांरी।
पहिरि युगुल दस्ताने दोउकर कीन्हें चलन तयारी॥
राम लषणको देखि गाधिसुत अतिशय आनँद पाये।
लै मृगचर्म कमण्डलु मुनिवर आगे चले सोहाये॥
राम लषण गमने तिन पाछे आछे बेष बनाये॥
गगा सरयू संगम पहुँचे तहँ मध्याह्न नहाये॥
करि मध्याह्न कालकी संध्या मुनिवर निकट सिधारे।
मुनि दीन्हें फल मूल सुधा सम दोऊ बंधु अहारे॥

दोहा–मुनिके आगे आयके, बैठे लषणहुँ राम ।
लखि गंगा सरयू मिलनि, लहत भये सुखधाम ॥

छन्द चौबोला ।

गंगा सरयू संगमके तट आश्रम लखि बहु मुनिके ।
करत रहे पूरब जहँ वर तप निकट सरयु सुर धुनिके ॥
राम कह्यो कर जोरि सुनहुँ मुनि काके आश्रम अहहीं ।
देहु बताय कृपा करि हमको सुनन बन्धु दोउ चहहीं ॥
सुनि कोशल किशोरकी वाणी कौशिक मुनि सुख पाई ।
कह्यो विहँसि अवधेश लाल सुनु आश्रम जासु सोहाई ॥
मदन रह्यो जब मूरतिवन्त काम जेहि बुधवर भाखैं ।
योगी तपी ब्रह्मचारी जन जासु सदा भय राखैं ॥
तौन काम को बोलि शक्र ढिग ऐसे वचन उचारा ।
हर गिरिजा को व्याह भयो अब कैसे जनै कुमारा ॥
सेनापति सो होइ हमारो भयो व्याह यहि हेतू ।
आई गौरि गेह जबते तबते किय शिव तप नेतू ॥
जाहु करहु तुम विघ्न शम्भु तप यह उपकार हमारो ।
चल्यो शक्र शासन सुनि मनसिज उरमें जन्यो खँभारो ॥
शीतल मंद सुगन्ध समीर वसन्त लिये सँगमाहीं ।
हन्यो कुसुम शर शंकरके उर पूरब राम इहाँहीं ॥
सावधान तप करत रहे इत निश्चल अङ्ग गिरीशा ।
हेरचो करि हुंकार कोपि हर जरचो काम नहिं दीशा ॥
जबते काम जरायो शङ्कर गिरिगे यह थल अङ्गा ।
कहवावन लाग्यो तबहींते जगमें मदन अनङ्गा ॥

दोहा–गिरे अङ्ग यहि देश में, अङ्गहीन भो काम ।
अंग नाम यहि देश को, भयो तबहिं ते राम ॥

छंद चौबोला ।

सो अनङ्गको है यह आश्रम ये मुनि शिष्य हमारे ।
सबै निरन्तर निरत धर्ममहँ विगत पापहैं प्यारे ॥
आजु रहहु इतहीं रघुनन्दन सिगरी रजनि सुखारी ।
महा पुण्यप्रद दोउ सरिता वर उतरब उये तमारी ॥
रजनीमें उतरन नहिं लायक उतरब भये प्रभाता ।
चलब सबै पुनि सिद्धाश्रमको महापुण्य फलदाता ॥
रघुनंदन निज पद रज पावन यह आश्रम करि दीजै ॥
तुव दर्शन अभिलषित सकल मुनि लोचन सफल करीजै ।
करि मज्जन जप हवन सकल मुनि बैठे आश्रम माहीं ॥
तप विज्ञान दृष्टिते जाने आये राम इहाहीं ।
निजगुरु सहित लषण रघुपतिकी सब मुनि जानि अवाई ।
आये आशु दरशके आसी मनहुँ महानिधि पाई ॥
गुरुको कियो प्रणाम चरणमहँ रामहि दियो अशीशा ।
कंद मूल फल आगे राखे पूछी कुशल मुनीशा ॥
अर्घ्यपाद्य आचमन आदि दै पूजे गुरुहिं अपारा ।
अनुपम अतिथि विचारि राजसुत कीन्हें बहु सत्कारा ॥
मुनिजनते सत्कार पाय बहु कहि निज कुशल कहानी ।
सरयू सुरसरि सङ्गम गमने संध्याकालहिं जानी ॥
राम लषण कौशिक करि मज्जन संध्यावन्दन कीने ।
मुनि लेवाइ लै गये आश्रमहिं करि विनती मुद भीने ॥

दोहा--राम लषण कौशिक तहाँ, बैठे मुनिन समाज ।
कामाश्रम वासी मुनिन, भयो अनंद दराज ।
मुनि कहि कथा विचित्र अति, सब अभिमत अभिराम ।
लषण राम अभिराम को, कीन्ह्यो मन विश्राम ॥
शयन काल पुनि जानिकै, तृण साथरी बिछाय ।

सोये विश्वामित्र मुनि, लषणहुँ राम सोवाय ॥
यहि विधि कामाश्रम सुखी, राम लषण मुनि सङ्ग।
वसत भये मुनिगण सहित, लहि आनंद अभङ्ग ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुर, श्रीकृष्णचन्द्र-
कृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते
रामस्वयंवरग्रन्थे कामाश्रमनिवास वर्णनं नाम नवमः प्रबन्धः ।

दोहा--भानु आगमन जानिकै, लालशिखा धुनि कीन ।
सबते आगे जगतपति, जागे राम प्रवीन ॥

छंद चौबोला।

कह्यो लषण कहँ उठहु लाल अब भयो भोर सुखदाई ।
इतनेमें मुनिनाथ उठे पुनि हरि हरि हरि मुख गाई ।
राम वदन तब निरखि गाधिसुत मंजुल वचन उचारे॥
सुरसरि सरयू संगम मज्जन गमनहुँ संग हमारे ।
कौशिक संग चले सरिमज्जन राम लषण रणधीरा ॥
विश्वामित्र शिष्य सिगरे मुनि गवने बुद्धि गँभीरा ॥
सुरसरि सरयू संगममें सब सविधि कियो अस्नाना ।
दै रवि अर्घहि उपस्थान करि गायत्री जप ठाना ॥
नित्य नेम निर्बाह उछाही आश्रम आइ तुरन्ता ।
करी गमनकी सपदि तयारी कह्यो मुनिन मतिवन्ता ॥
आनहु नाव उतारनके हित उतरैं गंग सुखारी ।
अस कहि तीर भये सुरसरिके मुनियुत सुरभयहारी ॥
ल्याये सुखभरनी मुनि तरनी गुरुसों कहैं सुवैना ।
उतरहु नाथ विलम्ब करहु जनि होइ पंथप्रद चैना ॥
कौशिक कह्यो भली भाषे मुनि को तुम सम उपकारी।
अस कहि चढि मुनिवर कुँवरन युत नाउ नवीनहिं भारी॥
राम लषणयुत लखण लगे तहँ सरयू गंग हिलोरे ।

जल उच्छलत स्वच्छ मच्छनयुत कच्छप पीठि कठोरे॥
मंद मंद कहुँ चलत विमल जल कहुँ सवेग धुनि धारा॥
भूरि भ्रमर गम्भीर परत कहुँ शोर घोर घहरारा॥
दोहा--उठतीं तुंग तरंग बहु, बोलत विपुल विहंग।
सरयू सुरसरि दरश ते, होत तुरत अघ भंग॥
सरयूजल जब गंगजल, मिलत मध्यमहँ जोर।
घोर शोर तब होत तहँ, लहिकै पवन झकोर॥

छंद चौबोला।

लरिकाई वश करि चपलाई सहित लषण रघुराई।
पूछत भये शोर कस होतो देहु मुनीश बताई॥
अतिकौतुक मोहिं लगत शोर करि मिलहिंनाथजबधारा।
हहरत कहुं घहरत पुनि घनसों सरयू शोर अपारा॥
राम वचन सुनि कौशिक मुनि हँसि सरयू कथा बखानी।
गिरि कैलास माँह इक मानसरोवर सर सुखदानी॥
रच्यो सरोवर सो विरंचि मन ते मंजुल हंसालै।
ताते मानस नाम कहायो विमल सलिल सबकालै॥
सोई मानसरोवर ते सरयू सरिता निकसी है॥
राम रावरे अवध नगरते उत्तर दिशि बिलसी है॥
कढी सवेग सरोवर ते यह घोर शोर है ताते।
मिली जाह्नुकन्या मै पुण्या घहरारे अधिकाते॥
सकल मनोरथ पूरणवारी अहै पापकी आरा।
करहु प्रणाम प्रतीति प्रीतियुत कोशलराजकुमारा॥
किया प्रणाम राम लछिमनयुत सुरसरि सरयू काहीं।
दाक्षिण तीर जाय नउकाते चले विपिन पथ माहीं॥
महाघोर वन सघन भयानक परत पंथ अँधियारी।
देखि राम पूछ्यो मुनिवरसों नाथ कौन वन भारी॥

मुनिवर महाभयानक कानन झिल्लीगण झनकारा ।
महा भयानक बोलत पक्षी दारुणपंथ अपारा ॥
दोहा--विविध सिंह अरु बाघ बहु, वारण विविध वराह ।
गर्जत तर्जत ओर चहुँ, कैसे पथिक निबाह ॥

छंद चौबोला ।

औरहु आमिष भक्षक जे पशु विचरहिं वन भयकारी।
रहहिं न मूक उलूक दिनहुँ महँ नादत काक सियारी॥
अश्व करन धव ककुभ विल्व बक पाटल तिंदु पलासा।
बंस झौर गंभीर भीति कर नहिं सूझत दश आसा ॥
तापर बदरी खदिर बबूरन कण्टनकी अधिकाई ।
खेले बहु शिकार सरयू वन लखी न अस वनताई ॥
मुनिवर देहु बताय कौन वन सूझत मारग नाहीं ।
रवि प्रकाश आवत नहिं धरणी शाखा पत्रन छाहीं ॥
सुनि रघुपतिके वचन गाधिसुत कही बिहँसि वर वानी।
सुनहु वत्स रघुवंश विभूषण जासु विपिन सुखदानी ॥
पूरव मलद करूष देश द्वै देव किये निरमाना ।
पूरण रहे धान्य धन जन ते सरित तडागहु नाना ॥
प्रथमहिं जब वृत्रासुर मार्‍यो समर मध्य मघवाना ।
लगी ब्रह्महत्या वासवको क्षुधा कलेश महाना ॥
सुर मुनि जानि दुखी सुरपतिको मज्जन गङ्ग कराई।
कलशनभरि अभिमंत्रित करि जल दियो शक्र नहवाई॥
द्विजहत्या वासवके तनुते दीन्ह्यो सकल छोडाई ॥
मिटी क्षुधा पुरहूत उदरते विमल भयो सुरराई ॥
विगत क्षुधा मल देखि देवपति सुरमुनि भे सुख भीने।
सो मल क्षुधा देवपति दोहुँन देशनको पुनि दीने ॥

दोहा--ताते मलद करूष भो, दोउ देशनको नाम।
द्विज हत्या लहि देश दोउ, सब विधि भये निकाम॥

छंद चौबोला।

निज उपकार जानि सुरनायक दिय देशन वरदाना।
मम मल धरयो करूष मलद दोउ देश लहैं सुख नाना॥
रहैं धान्य धन जनगण पूरण आधि व्याधिते हीने।
सुर सुरपतिके वचन देव सब परम प्रशंसा कीने॥
मलद करूष देश दोउ जैसे किये शक्र उपकारा।
तथा पाकशासन वर दीन्ह्यो लहे देश सुखभारा॥
बहुत काल लगि मलद करूषहु रहे पूर धनधामा।
आध व्याधि अरु सकल उपाधि विहीन भये सबठामा॥
कछुक कालते पुनि इक यक्षी कामरूपिणी घोरा।
धारण करि हजार हाथी बल होत भई बरजोरा॥
सुन्द नामको यक्ष भयो यक रही ताहिकी दारा।
नाम ताडुका भूरि भयावन जेहि मारीच कुमारा॥
जाको शक्र समान पराक्रम भयकर महाशरीरा।
महाबाहु अरु महाशीश जेहि वदन दरी गम्भीरा॥
सोइ राक्षस मख मोर विनाशत त्रासत देश निवासी।
जननि तासु ताडुका भयावनि खाति मनुजकी रासी॥
मलद करूष देशमहँ जबते किय ताडुका निवासा।
तबते दियो उजारि देश दोउ दै जीवनको त्रासा॥
भये भयावन देश सकल थल गये मनुज सब भागी।
यह पन्थाते वसति कोश षट धावति रोज अभागी॥

दोहा--कौशलनाथ कुमार तुव, होइ सदा कल्यान।
यही पन्थ पगु धारिये, वन ताडुका महान॥

सवैया--निज बाहुनके बल केवल राम, करौ वध ताड़ुकाको तुरतै ।
निहकण्टक देश करौ रघुनन्दन, आशुमरी तुम ते जुरतै ॥
यह शासन मोर गुनो रघुराज, करौ, द्विजकाज सुबन्धु युतै ।
अवधेशके लाडिले वीर शिरोमणि,केतिकबात तुम्हैंकरतै ॥

दोहा--राम ताड़ुका भीति ते, इत नहिं आवत लोग ।
पापिनि के वध करन को, मिलो भलो संयोग ॥
दारुण वन वृत्तांत यह, मैं वरण्यों रघुनाथ ।
देश उजार्यो ताड़ुका, अब तुम करौ सनाथ ॥
विश्वामित्र मुनीशके, सुनत बैन वर राम ।
जोरि पाणि शिर नाइकै, बोले वचन ललाम ॥

छंद चौबोला ।

यक्षी होति अल्प बल मुनिवर सुनी सनातन रीती ।
यह ताड़ुका सहस गज बलयुत कैसे भय विपरीती ॥
महाधीर रघुवीर वचन सुनि कौशिक कहे सुखारी ।
भई जोर वारी जेहि नारी सुनहु राम धनुधारी ।
पूरब भयो सुकेत यक्ष यक स्वर्ग लोक बलशाली ॥
शुभ आचार धर्मको ज्ञाता रह्यो तनय ते खाली ।
कियो महातप जाय विपिनमें भे प्रसन्न करतारा ॥
कन्या रत्न ताड़ुका दीन्हीं तेहि बल नाग हजारा ।
सहस नाग बलवारी कन्या पायो यक्ष सुकेतू ।
पुत्र दियो नहिं ताहि चारि मुख जानि तासु कछु हेतू ॥
नाम ताड़ुका नाग सहस बल कन्या पाइ उछाही ।
जम्भ पुत्र इक रह्यो सुन्द तेहि दुहिता दियो विवाही ॥
पाय जंभ संयोग ताड़ुका जन्यो पुत्र अतिपापा ।
नाम जासु मारीच भयो जग भो राक्षस लहि शापा ॥

दै अगस्त्य मुनि शाप सुन्दको कीन्हों जबै विनाशा।
सुत मारीच समेत ताड़ुका चली करन मुनि नाशा॥
महाकोप करि गर्जत तर्जत धाई भक्षण हेतू।
आवत देखि अगस्त्य ताड़कै दियो शाप मुनिकेतू॥
रे मारीच होहि राक्षस तैं महाभयंकर वेषा।
पुनि ताड़कै शाप दीन्ह्यों मुनि कै कै कोप विशेषा॥
दोहा--मनुज भक्षणी होसि तैं, महा कुरूप कराल।
सुन्दर रूप विहाय यह, दारुण वपु यहि काल॥

छन्द चौबोला।

पाय शाप मारीच ताड़ुका मुनि भयते तहँ भागे।
सो अगस्त्य को वैर विचारत देश उजारन लागे॥
भो मन्त्री मारीच जाय पुनि दशकन्धरको प्यारो।
महाक्रोध करि तौन ताड़ुका मलद करूष उजारो॥
रहै अगस्त्य देश दोउ अति प्रिय विचरत रहे मुनीशा।
मुनिको कछु करिसकी न पापिनि किये देशदोउ खीशा॥
अति दुर्धर्ष महादारुण यह यक्षी द्विज दुखदाई।
गो ब्राह्मण हित हनहु राम यहि मुनिपालक रघुराई॥
महादुष्ट अतिशय पराक्रमी शाप विवश विकराला।
याके सन्मुख होत न कोउ भट वसुधा वीर विशाला॥
तुमहिं विना सुनिये रघुनन्दन असको त्रिभुवनमाहीं।
हनै ताड़ुकाको विक्रम करि मृषा कहौं कछु नाहीं।
नहिं नारीवध दोष गुणो तुम नेकु दया न करीजै।
चारि वर्णके हेत राम अब पापिनिको वध कीजै॥
तुम हौ राजकुमार अनोखे अविचल है तुव धर्मा।
रक्षण प्रजाहेतु करिबो हित क्रूर अक्रूरहु कर्मा॥
पातक होय सदोष होय वा निन्दै कोउ कितनाई।

जामें रक्षण प्रजन होय हठि करै जु रक्षक होई ॥
जिनके शिरमें राजभार है करै राजको काजा ।
तिनको धर्म सनातन है यह होत न दूषण भाजा ॥
दोहा--महा अधार्मिनि ताड़ुका, है न धर्मको लेश ।
हनहु याहि रघुवंशमणि, मेटहु मनुज कलेश ॥

छन्द चौबोला ।

दैत्य विरोचनकी दुहिता इक नाम मन्दरा जाको ।
रही महाबलवंतितिनि चाही नाशन वसुंधराको ॥
तेहि लै वासव बली वज्रकर जाय तुरंत सँहारचो ।
नारी वधको पाप नेकु नहिं अपने मनहिं विचारचो ॥
एक समय महँ शुक्राचारज कीन्ह्यो मनहिं विचारा ।
शिवप्रसादते सुर पुरोहिती पाऊं मिटै खभारा ॥
अस विचारि मुनि कियो महातप गिरि कैलासहिं जाइ ।
इतै असुर सब शुक्र जननि सों भाषे जाय डेराई ॥
शुक्र चहत सुरपति पुरोहिती हम सब भये अधीरा ।
अबतो वासव ओर विना श्रम होत असुर हर पीरा ।
शुक्रजननि अब शक्रनाश करु तबतो असुर सुखारी ॥
अंब करी अब कौन शुक्र बिन असुरन की रखवारी ।
सुनि भृगुरमणी शुक्र मातुसों करन लगी अभिचारा ॥
शुनासीरते सून होय जग रहै न अमर अधारा ॥
अपनो जानि विनाशव वासव जाय मुकुंद पुकारचो ।
करुणानिधि लै चक्र चटक चलि शुक्र मातुको मारचो ॥
यह सब कथा प्रसिद्ध पुराणन चतुरानन शिव गाई ।
राजसुतन कर मारि गई जे भई नारि दुखदाई ॥
ताते मम शासन शिर धरिकै रघुपति दया विहाई ।
करहु तुरंत ताड़का ताडन नहिं वैरिनि बाचि जाई ॥

दोहा--सुनि मुनिवरके वचन वर, जोरि पंकरुह पाणि।
नाय शीश नेसुक बिहँसि, राम कही मृदुवाणि॥

छंद चौबोला।

जब मुनि गये आप कौशलपुर पिता सभा मधिमाहीं।
मांग्यो मोहिं यज्ञ रक्षण हित दियो पिता हमकाहीं॥
तबते तुमहिं अहौ पितु माता भ्राता त्राता मोरे।
हम दोउ बंधु रावरे सेवक वचन सूत्रमहँ जोरे॥
जो कछु कहौ तौन करिहैं सब तुव शासन है शीशा।
पिता वचन गौरव पितु शासन नहिं उलंघ भल दीशा॥
चलन लगे जब अवध नगरते तब पितु मम गुरु आगे।
मोहिं बुझाय कह्यो नरनायक बार बार अनुरागे॥
पिता मातु भ्राता गुरु सुहृदहुँ कौशिक अहैं तिहारे।
जो कछु देहिं तुम्हहिं शासन मुनि कीन्ह्यो विनहिं विचारे॥
सो पितु शासन पुनि तुव शासन लंघन केहि विधि करिहैं।
इष्टदेव पितु आप ब्रह्मऋषि यह अपयश कहँ धरिहैं॥
गो ब्राह्मण हित सकल लोक हित तुव शासन हित नाथा।
मैं करिहौं ताड़का निधन हठि जो ह्वैहौं रघुनाथा॥
अस कहि श्रीरघुवीर वीरमणि गहि कोदण्ड प्रचण्डा।
कियो धनुष टंकोर घोर रव भरिगो भुवन अखण्डा॥
भगे विहंग कुरंग विपिनके वज्रपात जिय जानी।
धुनि टंकोर कठोर घोर अति सुनि ताड़का डेरानी॥
करिकै क्रोध बोध नहिं कीन्ह्यो कौन योध वर आयो।
काके काल शीश पर नाच्यो को यह शोर सुनायो॥

दोहा--उठी तुरंतहि राक्षसी, दीन्ह्यो काल जगाय।
महा मीच मूरति मनहुँ, ऐडानी जमुहाय॥

छंद वामन--जेहि दिशि भयो टंकोर। गिरि धरणि कानन फोर॥
तेहिं दिशि चली अतुराय। धावत सुधरणि कँपाय॥
जेहि रूप अति विकराल। मुख वमति पावक ज्वाल॥
भुज मनहुँ पादप शाल। वपु शैल सरिस विशाल॥
बहु वृक्ष टूटत जात। मनु वेग वन न समात॥
अस वदन बोलत बात। को कियो शोर अघात॥
मग चली आवति कोपि। निज शत्रु भक्षण चोपि॥
आनन अमर्षित ओपि। वन धूरि धुन्धहि तोपि॥
करि दियो धुंधकार। अवनी अकाश मझार॥
फूटत पषाण अपार। टूटत तड़ा तड डार॥
जहँ जहँ चली सो जाति। तहँ धूरि भूरि देखाति॥
तेहिं देह नहिं दरशाति। केवल अवाज सुनाति॥
वनजीव भगत चिकारि। वपु बिकट तासु निहारि॥
घन घटाकी अनुहारि। विकराल वदन बगारि॥
सो काल रजनि समान। जनु चहति खान जहान॥
रद दरत उडत कृशान। चिक्करत शोर महान॥
को धस्यो यहि वन आय। यमसदन भीति विहाय॥
को कियो सोर कठोर। नहिं जानतो बल मोर॥
अस कहत आई दौरि। जग पापिनी शिर मौरि॥
शिर नील चन्दन खौर। बहु खुली केशर झौर॥

दोहा--यहि विधि आई ताडुका, कीन्हे भषन उमङ्ग।
राम लषण मुनि जहँ खडे, पावक मनहुँ पतङ्ग॥

छन्द झूलना।

तेहि निरखि रघुवीर रणधीर कर तीर लै, वचन गम्भीर सौमित्रिसों कहतभे॥ अरुण नेसुक नयन सकल सुखमा अयन, भये संग्रामके चयन धनु गहतभे॥ यह पर्वताकार विकरार वपुताडुका

झरत अंगार मुख मीचुकी जनानिसी । उर फटत वादरनसे लख
कादरनके, भगत बाँदरनसे भट प्रलय रजनिसी ॥ दुर्धर्ष मा
प्रबल करत गलबल चपल, भरी छलबल सकल भीति बल
सिका । कोदण्ड संधानि लगि कान युग वानते, करत हों हा
यहि करन अरु नासिका ॥ विन नाक औ कानकी भई पु
भजिगई कुपथ पुनि ना लई मीचुते बाचि गई । नारि अनुमा
नहिं उचित वध जानि जु परान परणते कहो वीर छाति का ठं

दोहा--यही विधि भाष्यो लषण सों, राम ताड़ुका देखि ।
राजकुमारनको निरखि, धाई सो लघु लेखि ॥

कवित्त ।

कीन्हे बाहु ऊरधको मूरधके खोले केश, लेश न दयाको ता
कोपाहिको भारा है । करत चिकार विकरार मुखको बगा
धावत धराणि धाइ धूरि धुन्ध धारा है ॥ भनै रघुराज मुनि प्रीति
विवश ह्वैके, करिकै हुंकार मुख वचन उचारा है।समर मँझार प
विजय अबार यह, श्याम सुकुमार रण बांकुरो कुमारा है ॥

सवैया ।

श्यामल गौर महा सुकुमार, कुमारन अंगन कोमलताई
त्यों मुख माधुरी मंजु विलोकत, कोटिन कामकी सुंदरताई
ताडन ताड़ुका आई हुती सो, जकीसी सकी नहिं सामुहे धा
श्रीरघुराज विचारै लगी छबि, आजुलों ऐसी न आंखिन आ
दैत्यन देवन देखे कितेकन, चारन सिद्धनकी समुदाई
राजकुमारन देखे अनेकन, पै नहिं देखे यथा द्वोउ भाई
श्रीरघुराज कहा करिये नहिं, खात बनै नहिं जात परा
ताते उडायकै धूरिकी धार, कुमारन देहुँ मैं आशु भगाई

दोहा--अस विचारि जिय ताड़ुका, धुरी धूरिकी धार ।
अति गर्जन तर्जन लगी, कियो महा अँधियार ॥

छंद गीतिका ।

वरजोर भुजनि उठाय करति कठोर शोर भयामिनी ।
वरषन लगी पाषाण दशो दिशान किय नभ यामिनी ॥
माया करति बहु भाँति पापिनि गिरत गगन पषान हैं ।
तब भये नेसुक कुपित दोऊ बन्धु समर सुजानहैं ॥
कोदण्ड करि टंकोर घोर करोर शर छोडन लगे ।
अवनी गगन शर भये पूरित सुर विमानन लै भगे ॥
तहँ ताडुका कृत उपल वृष्टि समान रजकनसी भई ।
दश आश परम प्रकाश प्रगट्यो तासु माया मिटिगई ॥
तब यातुधानी कोप सानी कियो मन अनुमान है ।
शिशु लखत छोटे परम खोटे लेन चाहत प्रान है ॥
अस गुणि भयंकर रूप करि दोउ भूपनन्दन खानको ।
धाई धसावत धरणि गर्जत राहु जैसे भान को ॥
तहँ ताडुका तकि तीर लै तुकि तज्यो श्रीरघुवीर है ।
काट्यो युगल कर तासु तुरतहिं भई अतिहि अधीरहै ॥
भ छिन्न भुज अति खिन्न तनु शरभिन्न नदति करालहै ।
काट्यो कुपित तेहि कान नाशा शरन लक्ष्मण लालहै ॥
तहँ ताडुका बिन बाहुकी विन कानकी विन नाककी ।
शोभित भई जनु वृक्ष शाख विहीन भयप्रद नाककी ॥
तनु बही शोणित धार समर मँझार सहित प्रवाहसी ।
मायाविनी कीन्ह्यो अनेकनरूप रण जलबाहसी ॥
दोहा—कहुँ घनसम कहुँ शैल सम, कहुँ तरु सम विकराल ।
कहूँ सिंहसम व्याघ्र सम, कियो वपुष ततकाल ॥

छंद जयकरी ।

रघुबीर लक्ष्मण धीर हनि हनि तीर तहँ सहसान ।
कीन्ह्यो व्यथित नहिं रुकन पाई भई अन्तरधान ॥

वरषन लगी सो विविध वृक्ष पषाण शैल समान।
नभ पंथ धावति रव सुनावति मनहुँ फोरति कान॥
कहुँ रहति आगे जाति पाछे भ्रमति दशहु दिशान।
नहिं देखि परति अकाशमें अँधियार करति महान॥
कहुँ लूक वरसावति उलूकन सरिस लेति उडान।
करि कोप कहुँ प्रगटाति दूरि देखाति पुनि नियरान॥
कहुँ मांस बरषाति हाड बरषाति रुधिर बरषाति भूरि।
कहुँ दूरिते तरु तूरि हनि पुनि पूरि देती धूरि॥
तहँ लखत लक्ष्मण राम कौतुक सरल बाण चलाय।
प्रभु करत क्रीडा समरकी व्रीडा न मनमें ल्याय॥
खेलत समरमहँ राम लक्ष्मण जोहि मुनि मति धीर
कर कमल गहि कोमल वचन बोलत भये गंभीर॥
अवधेश लाल न कीजिये यह पापिनी सँग खेल।
लरिकई अबलों ना गई बडि होत वधकी झेल॥
याकी कला लखि हँसहु तुम सुर मुनिन उपजत शोक।
यापै दया करिबो न योग कुरोग मेटहु लोक॥
यह महापापिनि यज्ञनाशिनि करति अतिहि अधर्म।
कर कान नासा विन बचै तौ होइ निन्दित कर्म॥
रघुलाल आवत साँझ अब होई बली लहि रैन।
रजनीचरन रजनी लहत बल दून होत सचैन॥
दोहा--जबलों आवै साँझ नहिं, तबलों राजकिशोर।
हनहु ताडुका को तुरत, पुनि होई बरजोर॥

छंद चामर।

उतै महाभयंकरी निशंकरी अमार्षिकै। अतूल शूल खड्ग आ
शस्त्रको प्रवर्षिकै॥ उडाति आसमानमें देखाति ना पयानमें
निपात वज्र शोरसो कठोरकै दिशानमें॥ पषाण पादपानक

समूह भूमि डारती । नरेन्द्रके कुमारको अदृश्य ह्वै प्रचारती ॥ प्रचण्ड धूरि धुन्धकार अन्धकार कैदिया। अनेकतारभासकार चन्द मन्द सो कियो ॥ देखात ना दिशा निशा भई मनौ सुसामनी । अनेक भाँति गाँजैं तार्जैं ताड़ुका भयावनी॥ अनेक लूक बारती विदाहती वसुन्धरा । प्रकाशती अनेक शैल सानुमान कन्दरा ॥ तहाँ सबन्धु कौशलेशको कुमार कोपिकै । प्रचण्ड लै कोदण्ड तासु अन्त चित्त चोपिकै ॥ पतत्रि घार बारबार बारबार छोडते । बचै न तैं यही उचारि शस्त्रधार ओडते ॥ देखात न अकार तासु शब्दही सुनात है । विचारि शोर ओर बाणमारते अघातहै॥ नरेशके कुमार मारि शब्द वेधि बाणमें । कियो सुतासु गौनरोध जौन आसमानमें ॥ पयान कैस कीन व्योम बाणजाल छाइगो । रही न संधि नेकु ताहि शोक ओक आइगो ॥ प्रचण्ड कोप ताड़ुका अखण्ड ओज मायनी । गिरी धरा धडाकदै सुरेश शोकदायनी ॥ अमर्षि घोर शोर कै नरेशके किशोरपै । सबन्धु रामपै चली चमंकि चित्त चोरपै ॥ अकाज देव कारिणी सु गाजसी गराजिकै । यथा मयंक ओर जात राहु ओज साजिकै॥ विलोकि देव रामओर जात घोर ताड़का । किये हहा पुकार भाषि भाषि आजु आडका ॥ डगै धरा मनो मतंग नावमें सवार भो । वसुन्धरा धरौ गिरै दिगीश शोक भार भो ॥ न रामको न लक्ष्मणै न कौशिकै ततक्षणै । बचा इहो विशेषि ते करौं तुरन्त भक्षणै ॥ अनेक बार यों पुकारि ताडुका भयंकरी । नगिच आय जोरसों मनो कला सु संकरी ॥ न पाणि हैं न कान हैं न नाक है भयामिनी । रँगी शरीर शोणितै मनो सु कालकामिनी ॥ नरेशके कुमारको न नेकु भीति होतिभै । विजैप्रभा प्रमोदिनी क्षणै क्षणै उदोति भै ॥

दोहा—जब तडितासी तडपिकै, सो ताड़का तुरन्त ।
महाविकट आई निकट, करती कटकट दन्त ॥

तब नेसुक मुसकाइकै, चितै लषणकी ओर।
साज्यो धनु सायक सहज, वीर धीर शिरमोर॥

छन्द तोटक।

हरि वज्र समान सुबाण लियो। दुख देवन देखत कोप कियो
धनु सायक साजि सुकाननलौं। गुण खैंचि अकाम्पित आननलों
तकिकै तुकिकै उर पापिनिको। लखिकै द्विज देवन साँपिनिको
अस ठीक विचार कियो मनमें। वधको अब काल यही छनमें
प्रभु सो शर त्यागि न दीठि दई। पविपात अघात अवाज भ
दिशिदामिनिसोदमक्यो शर सो। नहिं देखिपरयो निकरयो करसो
उर जाय लग्यो तिय पापिनिके। द्विज देवनकी दुखदायिनिके
तनुको शर फोरि धस्यो धरणी। तहँ तासु विलायगई करणी
शर लागत घोर चिकार कियो। सिगरे सुर कानन मूँदि लियो
तहँ याक्षिणि सो भ्रमि भूमि परी। पुहुमी जनु गाज गराज गिरी
गिरते धरणी तहँ डोलि उची। मुनि कौसिकको यह बात रुची
उलटे दृग भे रसना निकरी। वह राक्षसि सो पुहुमी पसरी
मरिगै जब याक्षिणि संगरमें। सुर दुन्दुभि दीन सुअंबरमें
सुर फूलनकी बहु वृष्टि किये। निजको निहकण्टक जानि लियो
जगमें जयकारहि माचि रह्यो। धनि हौ धनि राघव शक्र कह्यो
अति भीम अपावनि यक्षिणिया। तेहि दीन परागति अक्षिणिया
तुमहीं विन को यहि नाश करै। द्विज देवनको दुख दीह हौं
मुनि कौशिक मोदित होतभये। रघुनन्दनको मुख चूमि लये
ऋषि बारहिं बार अनन्द भरे। निज आँखिनते अँसुआन ढरे
रघुनायक मोहिं सनाथ कियो। यहि पापिनिको परधाम दियो
तुमही सम कौन दयाल अहै। जन दीननको भल कौन चहै
कार हैं अब शैन सुखी सिगरे। जन जे यहि पापिनिते विगरे

दोहा—हन्यो ताडुका राम जब, सुखी भयो सुरराज।
आयो कौशिकके निकट, लै सब सुरन समाज॥

छंद चौबोला ।

सकल देव अति भये प्रमोदित वासव सँगमहँ आये ।
देव देवपति करि कौशिक नति जोर पाणि अस गाये ॥
सुनहु महामुनि राम ताड़का हत्यो भयो कल्याना ।
हम अरु देव मरुतगणसंयुत सन्तोषित विधि नाना ॥
ताते कहत सबै मुनि तुमसे रघुपतिको कछु दीजै ।
लखैं लोक तुव नवल नेह फल अनुपम जग यश लीजै ॥
नाम प्रजापति जो कृशाश्व है ताके पुत्र अपारा ।
दिव्य अस्त्र अरु शस्त्र तेज जिन मानहुँ भानु हजारा ॥
तप बल ते सिगरे अमोघ जे जानहुँ सब मुनिराई ।
ते सब लषण रामको दीजै तासु पात्र रघुराई ॥
दिव्य अस्त्र पावनके लायक रघुनायकयुत भाई ।
अबै बहुत करिहैं सुरकारज राजकुँवर कहुँ जाई ।
अस कहि देव देवपति सिगरे करि प्रणाम पुनि रामैं ॥
वन्दि चरण लक्ष्मण कौशिकके गये सुखी सब धामै ॥
विश्वामित्र चरण वंदे पुनि राम लषण दोउ भाई ।
लियो उठाय अंक महँ मुनिवर मनहुँ महानिधि पाई ॥
बैठे इक तरुतर मुनिवर लै गोद लषण अरु रामै ।
बार बार शिर सूँघि सराहत पूरण भो मन कामैं ॥
फेरत पीठि पाणि पोछत मुख चूमत वदन सुखारी ।
अङ्ग अङ्ग पुलकावलि छाई ढारत नैननि वारी ॥

दोहा–इतनेमें संध्या भई, अस्ताचल गे भान ।
राम लषणसों कहत भे, कौशिकमुनि हर्षान ॥

सवैया ।

पायो महाश्रम राजकिशोर, इतै यह ताड़काके रण माहीं ॥
ह्वै हैं पिरात सुपंकज पाणि, प्रस्वेदके बिंदु शरीर सोहाहीं ।
श्रीरघुराज सुनो रघुराज, विचारि कह्यो नहिं बात वृथाहीं ।

आजनिवासकरौ रजनी इत, कालिह चलौ मम आश्रमकाहीं
कौशिकके सुनि बैन मनोहर, राजकिशोर महा सुख पाई
पङ्कज पायँ गहे मुनिके शिर, नाइकै कीन्हे विनै दोउ भाई
श्रीरघुराज सुनौ मुनिराज, न नेसुक है हमरी प्रभुताई
आप प्रताप ते ताप विना जग, ताडनि ताडुकै मीचु सताई

दोहा--रहहु आज रजनी इतै, यह सलाह भल कीन।
भोर चलौ जेहि ओर मन, चलब सङ्ग श्रम हीन॥
तेहि रजनीमें सुख सहित, वन ताडुका मँझार।
विश्वामित्र वसे सुखी, लै दोउ राजकुमार॥
गयो शाप ते छूटि वन, ताही दिन ततकाल।
लसतभयो जिमि चैत्ररथ, बाग कुबेर विशाल॥

कवित्त घनाक्षरी।

मारि ताडुकाको राम वसे तेहि काननमें, सुयश दिशान
फैलिगो दराजहै। आये ऋषिवृन्द रघुनन्दकी प्रशंसा करैं, आति
अनंद पाय मुनिन समाजहै। शापहूँते तापहूँते विगत विपिन भया
रजनी विमल सजनीसी सुख साजहै॥ मुनिराज काज कौं
मुनिन समाजयुत, लषण समेत सोयो सुख रघुराजहै॥

दोहा--सजनी सी रजनी भई, वन भो भवन समान।
कौन शोक जेहि लोकमें, वस्यो भानु कुल भान॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीरामस्वयंवरग्रंथे ताडुकावधो नाम दशमः प्रवन्धः॥ १०॥

दोहा--अरुणाई प्राची दिशा, नेसुक कियो पसार।
शशी विकास कछु हास भो, जहँ तहँ झलमल तार।
विश्वामित्र उठे प्रथम, सुनि धुनि लालशिखान॥
आति मंजुल बोले वचन, सुनहु भानु कुल भान।

समर श्रमित शोभित विजै, शमित शत्रु सुख पाय ।
सूर मिलन आवत ललकि, उठहु लषण रघुराय ॥
मुनिवरकी वाणी सुनत, दृग मींजत अलसान ।
परन सेजमें जगत भे, दिनकर वंश प्रधान ॥
मुनिपद वंदन करि मुदित, रघुनन्दन दोउ भाय ।
संध्यावंदन करत भे, निर्मल सरित नहाय ॥
मुनि मज्जन करिकै तुरत, नित्यकृत्य निरवाहि ।
आये ताही तरु तरे, जहँ सोये सुख माहिं ॥
वेला विमल विलोकि कै, वासव बात विचार ।
विश्वामित्र वदे वचन, बंधुन विगत विकार ॥

छंद चौबोला ।

दीनबंधु दोउ बंधु वीर वर आवहु निकट हमारे ।
दिव्य अस्त्र सब लेहु शत्रुजित कौसल्याके प्यारे ॥
अस कहि निकटबोलाय गाधिसुत रामलषण दोउ भाई ।
न्यास अंग युत मंत्र अस्त्र सब कहन लगे हरषाई ॥
मैं संतुष्ट अहौं तुमसे अति कीन्ह्यो बड उपकारा ।
देउँ अस्त्र अरु शस्त्र दिव्य सब कौशलनाथ कुमारा ॥
जिन अस्त्रन शस्त्रनते रघुवर दानव देव भुजङ्गा ।
दैत्य सर्व गंधर्व सिद्ध चारण जीतहुगे जङ्गा ॥
तीनहुँ लोक वशीकर ह्वैहौ नहिं तुव विश्व समाना ।
कीजानत शिवकी हम जानत नहिं जानत जगआना ॥
ते सब अस्त्र शस्त्र रघुनंदन शत्रु विजय कर वारे ।
प्रीति प्रतीति सहित देतो मैं तुमको पात्र निहारे ॥
महादंड अरु महाचक्र जे दिव्य लेहु रघुराई ॥
धर्मचक्र अरु कालचक्र पुनि ग्रहण करहु युत भाई ।
वज्रअस्त्र लीजे नर भूषण शंभुशूल वरजोरा ।

पुनि ऐषीक अस्त्र लीजै अब महा ब्रह्मशर घोरा॥
देहुँ राम ब्रह्मास्त्र अवारन महाबाहु रघुराई।
शिखरी त्यों मोदकी गदा युग दीपति भरी सदाई॥
धर्मपाश अरु कालपाश पुनि दुव दारन दोउ फाँसी।
सूख ओद लीजै असनी युग रघुनंदन सुखरासी॥
दोहा–पाशुपतास्त्र अमोघ नहिं, सकै सुरासुर वारि।
त्यों नारायण अस्त्र यह, सकत क्षणैं जग जारि॥

छन्द चौबोला।

अग्निअस्त्र अरु पर्वतास्त्र पुनि त्यों पवनास्त्र प्रमाथी।
है शिर अस्त्र क्रौंच अस्त्रहु पुनि लेहु लषणके साथी॥
रुद्रशक्ति अरु विष्णुशक्ति दुउ लीजै दशरथ लाला।
किंकनि अस्त्र कराल काल सम त्यों कपाल कंकाला॥
ये सब अस्त्र देव धारत नित जौन तुम्हैं शिखवाऊं।
महाअस्त्र विद्याधर लीजै पुनि नंदन जेहि नाऊं
खड्गरत्न देतो नरवर सुत अस्त्र महा गन्धर्वा।
मोहनअस्त्र लेहु रघुवल्लभ मतिमोहन रिपु सर्वा॥
प्रस्वापन अरु प्रशमन ये युग लीजै प्राणपियारे।
सूरज अस्त्र लेहु रघुनंदन सूरजके कुलवारे॥
घर्षण शोषण अरु सन्तापन वैरि विलापनकारी।
मदन और कंदर्प अस्त्र दुर्धर्ष हर्ष प्रद भारी
तथा पिशाच अस्त्र अरिमोहन लेहु राज दुलहेटे।
तामस सोमन लेहु बार बहु शत्रुनको दरभेटे।
महादुरासद संवर्तक यह अस्त्र लेहु रघुनाथा॥
मौसल अस्त्र महारण कौशल फोरत शत्रुन माथा॥
सत्यअस्त्र मायास्त्र महाबल घोर तेज तनुकारी।
पुनि परतेज विकर्षण लीजै सौम्यअस्त्र भयहारी॥

शीतल अस्त्र त्वाष्ट अस्त्रनहु पुनि सकल मनोरथ दाता ।
पुनि दारुण गभस्तिको अस्त्रहु लेहु जगत विख्याता ॥

दोहा--शीतअस्त्र अति मानवै, लीजै राम सुजान ।
कामरूप सब अस्त्र हैं बल है विगत प्रमान ॥

छंद चौबोला ।

परम उदार वार नहिं कीजै दशरथ राजकुमारा ।
दीन विप्र यह क्षिप्र देत सब लेहु अस्त्र सम्भारा ॥
अस कहि विश्वामित्र महामुनि बैठि पूर्व मुख करिकै ।
सकल अस्त्रके मन्त्र रामको दियो सविधि मुद भरिकै ॥
त्रिभुवन वशकारक रिपुदारक दुर्लभ सुरासुरनके ।
राम लषनको दियो अस्त्र ते जैकर जगत नरनके ॥
जस जस मंत्र पढत मुनिनायक अस्त्रन के तेहि काला ।
तस तस प्रगटत रूपवान सब अस्त्रहु शस्त्र विशाला ॥
जोरि पाणि रघुनंदन सन्मुख खडे भये सब आई ।
कीन्ही विनय राम तुम्हरे वश दीजै नाथ रजाई ॥
तुम्हरे किङ्कर सकल अस्त्र हम जो जो शासन दीजै ।
सो सो करब ततक्षण सब हम कछु संदेह न कीजै ॥
कहे महाबल अस्त्र शस्त्र जब तब भाष्यो रघुराई ।
बसौ हमारे मनमें सिगरे करियो काज सदाई ॥
अस कहि तिनको पाणि पकारि प्रभु धारण करि मनमाहीं ।
जानि आपने सेवक सबको दीन्ही बिदा तहाँहीं ॥
अस्त्र शस्त्र सब पाय राजसुत मुनिवरके पद वंदे ।
विश्वामित्र अशीष दियो तब रहहु सदैव अनंदे ॥
चलहु लला अब सिद्धाश्रमको पद रज पावन कीजै ।
नेसुक रह्यो और उतकंटक निज भुजबल हरि लीजै ॥

दोहा--सुनि कौशिकके वचन वर, राम लषण कर जोरि।
कह्यो चाय चालिये चटक, नहिं विलंब मति भोरि॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि पाय अस्त्र अरु शस्त्रहु प्रभु प्रसन्न सुखभयऊ।
परमपवित्र लोक पावन पद चलनपंथ मन दयऊ॥
चलत समय पुनि विश्वामित्रहिं कह्यो जोरि युग पानी।
सकल सुरासुर दुराधर्ष सब अस्त्र लहे सुखदानी॥
करिकै कृपा देहु मुनिवर मोहिं अस्त्रनको संहारा।
सुनि मुनि सकल अस्त्र संहारन कीन्हे सविधि उचारा॥
सत्यवन्त अरु सत्यकीर्ति अरु हर्षन अरु संरंभा।
नाम परांगमुख और अवांगमुख प्रतीहार विन दंभा॥
लक्ष अलक्ष युगल दृढनाभ सुनाभ दशाक्ष शतानन।
दश सिरषन अरु महा सतोदर रिपु गण गज पंचानन॥
पद्मनाभ अरु महानाभ दोउ दुन्दहु नाभ सुनाभा।
ज्योति निकृन्त निरास विमल युग जो गंधर बड आभा॥
अरु विनिद्र तिमि मत्तहि प्रसमन तैसहि साराचिमाली।
रुचिरवृत्ति मतपितृ सौमनस धन धानहुँ धृत माली॥
तिमि विभूति अरु वनर कह्यौ युग तैसहि वन कर बीरा।
कामरूप मोहन आवरणहुँ लेहु काम रुचि बीरा॥
जृम्भक सर्वनाभ सन्धानहु बरन आदि संहारा।
ते कृशाश्वके पुत्र प्रकाशी सदा काम संचारा॥
अस्त्रनके संहार सकल ये लीजै राजकुमारा।
तुमहीं ग्रहण करनके लायक दुतियन दुनी निहारा॥

दोहा--मुनि अस्त्रन संहार मनु, कीन्हे सविधि बखान ।
गुरु पद वंदि अनंदितै, लीन्हे राम सुजान ॥

कवित्त ।

प्रगट भयेते मूर्तिमन्त अति भासमन्त, कोई धूमधाम कोई मनहुँ अँगार है । चंद रवि तुल्य कोई जोरे हाथ हर्ष मोई; मधुर वचन कीन्हे रामसे उचार है ॥ भनै रघुराज हम रावरेके किंकर हैं, कीजै जौन शासन सोकरें विन बारहै । हँसि रघुवंशमणि कह्यो वसौ मेरे मन, करियो सहाइ अबै जाइयो अगारहै ॥

दोहा--रामवचन सुनि हर्षि कै, दै परदक्षिणचार ।
मन बसिहैं अस कहि गये, ते सब उपसंहार ॥
गये जानि तिनको मुदित, विश्वामित्रहि राम ।
चरणवंदि बोलत भये, चलहु नाथ जहँ काम ॥
शीश सूंघि मुख चूमि मुनि, आगे करि दोउ भाइ ।
चले प्रमोदित पंथमहँ, बार बार हरषाइ ॥

छन्द चौबोला ।

महाभयावन रह्यो ताडुका विपिन वृक्ष समुदाई ।
भयो सोहावन अतिशै पावन परशत पद रघुराई ॥
निकसि ताडुका वनते रघुपति निरख्यो दूरि पहारा ।
ताके निकट मेघ इव मंडित देख्यो श्याम पतारा ॥
तब अति मधुर वचन रघुनायक मुनिनायक सों बोले ।
नाथकौन बन श्याम मनोहर पादप अतिहि अमोले॥
वृक्ष खंड अतिरुचिर विराजित अति अचरज मन मोरे ।
कुसुमित लता ललित लहराती तरुगण जिमि करजोरे॥
लौरें आय भूमि तरु शाखा फल फूलनके भारा ।
नाना रङ्ग कुरङ्ग सङ्ग यक चरैं सुढंग अपारा ॥
बोलत सुखी विहङ्ग रंग बहु अङ्ग अङ्ग छबि माते ।

मंडित मधुकरके गुंजारन थल थल विमल दिखाते ॥
यह ताड़ुका भयावन बनते निकसी पंथा सूधी ।
सोइ विपिन मनोहर जाती नाथ कतहुँ नहिं रूधी ॥
यही पंथ है चलब सहित सुख देश मनोहर लागै ।
नव पल्लव पिक वल्लभ मंजुल पिक कूजै बड भागै ॥
कहुँ सर कहुँ सरसी रस संयुत सरस सरस सरसाते ।
अति गंभीर नीर मणि सन्निभ सीर समीर चलाते ॥
कल कुञ्जन गुंजत मंजुल अति वंजुल सुरभि सोहाई ।
मनरंजन कंजनकी शोभा मंजन योग जनाई ॥
दोहा--कहहु नाथ कानन कवन, पंचाननते हीन ।
काको यह आश्रम विमल, देखतही सुखदीन ॥

कवित्त ।

केती दूर नाथ रावरी है भली यज्ञथली, पुण्यते पलीहै कौन ग
गुरु ताकी है । आवैं जहां ब्रह्मघाती राक्षस जमाती दुष्ट,
उतपाती सुनै गति अति बांकी है ॥ भन रघुराज मख राखन
हेतु मोहिं, भेज्यो महाराज वसुधाके धर्म धाकी है ॥ राक्षसन मा
मख रक्षण क्रियाको करि, पूरण करोंगो आशु आश मनशाकी
दोहा--यह सुनिबेकी आश मोहिं, वर्णन करहु मुनीश ।
कहँ आश्रम तुव कौन मग; काको वन यह दीश ॥

छन्द चौबोला ।

सुनत वैन रघुकुल नायकके मुनिनायक मुदमानी ।
सो काननकी आदि अन्त ते लागे कहन किहानी ॥
यहि आश्रममें वर्ष हजारन सौ युग लों भगवाना ।
करत कठिन तप नारायण प्रभु वसे मुदित विधि नाना ॥
यह पूरुब वामनको आश्रम छल्यो जो बलि असुरेशै ।
याको नाम राम सिद्धाश्रम भे सिध करत कलेशै ॥

पुरा सुरा सुर भयो समर जब सुधाहेत अति घोरा।
जीते देव दैत्य भागे रण दानव मरे करोरा॥
शुक्राचारज सबन जिवायो पढि पढि मन्त्र महाना।
बलिहि विश्वजित यज्ञ करायो असुर भये बलवाना॥
चढ्यो महाबल बलि वासव पै अमरावति कहँ घेर्यो।
भगे देव सब देखि दैत्य बल बलि शासन निज फेर्यो।
सुरपुर नरपुर और नागपुर बलिकी फिरी दोहाई॥
लग्यो करन राज त्रिभुवनकी वासव लुक्यो डिराई।
महायज्ञ कीन्ह्यो अरंभ बलि विमल नर्मदा तीरा।
आप भयो यजमान शुक्र आचारज भे मतिधीरा॥
देव अग्निको आगे करिके यहि आश्रमको आये।
विष्णु जगतपतिको विपत्ति निज आतुर बचन सुनाये॥
हे करुणानिधान नारायण अखिल जगतपति स्वामी।
कौन भांतिते विनय करैं हम तुम हौ अन्तर्यामी॥
दोहा--लीन्ह्यो बलि सुरराज्य सब, शक्रहि दियो निकारि।
आये हम तुम्हरे शरण, राखहु लाज हमारि॥

छन्द चौबोला।

हे प्रभु जबलौं यज्ञ समापति होइ न यहि बलि केरी।
तबलौं करौ देव कारज प्रभु हानि होति लहि देरी॥
सत्यसन्ध असुरेश यज्ञमें जे जे याचक जाहीं।
जो जो मांगत सो सो देतो रहत आस पुनि नाहीं॥
बलिको दान पाय याचक जग होत दरिद्र दरिद्री।
समरथ महामनोरथ पूरत होत अभद्री भद्री॥
ताते प्रभु सुरकारजके हित करहु देव कल्याना।
माया वटु ब्राह्मणको वपु धरि बलि पहँ करहु पयाना॥

प्रभु हँसि सुनि देवनकी वाणी एवमस्तु मुख भाषे।
तोहि अवसर कश्यपहु अदितिहारि आराधन अभिलाषे॥
अदिति और कश्यपहु करत तप बीते वर्ष हजारा।
करि समाप्त व्रत मधुसूदनकी प्रस्तुति किये अपारा॥
कृष्ण तपोमय तपोराशि तुम तप मूरति तपरूपा।
तप करि देखत तुमहिं यथारथ पुरुषोत्तम सुरभूपा॥
यह जग सब तुम्हरे शरीर महँ जोहत यदुपति योगी।
तुम अनादि मन वच अतीत हौ जग विकारविन भोगी॥
परब्रह्म परपुरुष परात्पर परगति परम प्रभाऊ।
हम शरणागत हैं तिहरे प्रभु करुणा मृदुल स्वभाऊ॥
कश्यप वचन सुनत जगनायक बोले मंजुल वानी।
तुम हौ विगत सकल कल्मष मुनि माँगहु वर विज्ञानी॥
दोहा--वर पावनके योग हौ, अभिमत तोहिं वर देव।
पैहौ तुम कल्याण बहु विफल कतहुँ मम सेव॥

छन्द चौबोला।

सुनि मुकुन्दके वैन अनंदित कह्यो मरीचि कुमारा।
मम अरु अदिति अमर आभिलाषा पूरहु परम उदारा॥
देहु यही वरदानि शिरोमणि होवहु पुत्र हमारे।
पुत्रवती ह्वै अदिति आपसे त्यागै सकल खभारे॥
लहुरे होउ बंधु वासवके बहुविधि विबुध विषादी।
करहु सहाय नाथ देवनकी होय आशु अहलादी॥
यह आश्रम राउर प्रसादते सिद्धाश्रम कहवाई।
उठहु देवाहित देव देव अब कर्म सिद्ध ह्वै जाई॥
कश्यप कही मानि मधुसूदन अदिति गर्भमहँ आये।
प्रगट भये लहि श्रवण द्वादशी वामन नाम कहाये॥

इक कर छत्र कमण्डलु इक कर शिखा सूत्र अति सोहै ।
तरुण तरणि सम तेज प्रकाशित तनु सुन्दर मन मोहै ॥
वामन वपु धरि वासुदेव अस वैरोचनपहँ आये ।
बटुवपु अति विचित्र अवलोकत बलिविस्मय रस छाये ॥
असुरराज शिर नाइ कह्यो पुनि माँगु विप्र मन जोई ।
तोर मनोरथ पूरण करिहौं बात और नहिं होई ॥
तीन पाद पुहुमी प्रभु माँग्यो देन लगे बलिराई ।
शुक्राचारज वारन कीन्ह्यो दीन्ह्यो विष्णु जनाई ।
सत्यसंध बलि तदपि न मान्यो पुहुमा दियो त्रिपादा ॥
पावत दान बढ्यो तहँ वामन जहँ लग जग मरयादा ॥

दोहा--तीन पाद महि माँगि इमि, नापि जगत निज पांय ।
वासुदेव वासवहि दिय, तीनि लोक सुखछाय ॥
जानहु तुम अपनी कथा, पूछहु यथा अजान ।
जो जानो मेरो रह्यो, नेसुक कियो बखान ॥
यह आश्रम संसार को, श्रमनाशन रघुराज ।
वामन प्रभु परभाव ते, सिद्धाश्रम; कृतकाज ॥
वामन प्रभु पदभक्ति वश, मैं इत करहुँ निवास ।
को पूँछहु जानहु सबै, रवि किन जान प्रकाश ॥

सवैया ।

याही लिये लला माँगि महीप सों, ल्याये लेवाय इतै दोउ भाई ।
आवैं इतै रजनीचर घोर, करैं उतपात महा दुख दाई ॥
श्रीरघुराज सुनो रघुराज न, दूसरी आश तिहारी दोहाई ।
धीर धुरंधर वीर शिरोमणि, देखि हौं रावरेकी मनुसाई ॥
खेलि उतै मृगया सरयू वन, मारे अनेकन बाघ बराहू ।

सीखी कला विकला धनु की लहे, अस्त्रन तामें निहोर न काहू
श्रीरघुराज गरीब निवाज, करौ सुधि ज्यों गजराज औ ग्राहू
ज्यों मधुकैटभ ज्यों मुरको तिमि, मारिये आजु मरीच सुबा

दोहा--सुनि धुनि संयुत मुनि वचन, विहँसे राज किशोर ॥
तुव प्रताप सब सिद्ध गुरु, नहिं कछु मोर निहोर ॥

छंद चौबोला ।

सुनि रघुनन्दन वचन मनोहर मुनिवर हिय हरषाने।
मिटी शंक सब ह्वै निशंक अति कहे बैन सुखसाने ॥
पहुचब आजु राम सिद्धाश्रम हम तुम प्राणपियारे।
यथा हमारो तथा तिहारो भेद न परत निहारे ॥
अस कहि मुनिनायक रघुनायक लषण सहित पगुधारे।
मनहुँ पुनर्वसु युगल तार बिच इंदु प्रकाश पसारे ॥
सिद्धाश्रम महँ राम लषण मुनि कीन्ह्यो जबै प्रवेशा।
लखि तहँ के वासी तपराशी धाये विगत कलेशा ॥
विश्वामित्र चरण पंकज महँ प्रमुदित किये प्रणामा।
गुरुको पूजन कियो सविधि पुनि जाने हम कृतकामा॥
रामलषणकोमुनि सिगरे पुनिअनुपम अतिथि विचारी।
कन्द मूल फल फूल भेंट दै दीन्हे शीतल वारी ॥
दीनबंधु दोउ बन्धुन को मुनि किये परम सत्कारा।
दियो अशीस मुनीश ईश गुणि स्वागत वचन उचारा॥
बैठे राम लषण मखशाला विश्वामित्रहि आगे।
मुनि मण्डल मंडित रघुनन्दन निरखहिं सब अनुरागे॥
कुशल प्रश्न पूछत रघुवर को बीति गये द्वै दण्डा।
तब कर जोरि कह्यो कौशिक सोंप्रभु करि करकोदण्डा॥
आजुहिं ते बैठो मुनिनायक निज मख दीक्षा माहा।
करहु निशंक यज्ञ विधि संयुत ऐहैं निशिचर नाहा ॥

दोहा—होइ सिद्ध सिद्धाश्रमहु, वाणी सत्य तुम्हारि ।
आप प्रताप न दाप कछु, पाप शाप गे जारि ॥
राजकुमारनके वचन, भरे वीररस रङ्ग ।
सुनि कौशिक मुनिमुदित मन, कियो अरम्भ प्रसङ्ग ॥
राम लषण मुख भाषि अस, कियो निशा सुख शैन
कौशिक मुनि सब मुनिन युत, शैन किये भरि चैन ॥
पाय प्रभात प्रहर्षि उठि, करि मज्जन दोउ भाय ।
तिमि संध्यावन्दन विमल, दियो अर्घ्य दिनराय ॥
गायत्रीको जाप करि, प्रातकृत्य निर्बाहि ।
होम करत कौशिक चरण, गहे तुरन्त उछाहि ॥
देश काल ज्ञाता युगल, त्राता राज किशोर ।
देशकाल अनुरूप तहँ, कहे वचन बरजोर ॥
जानन चाहैं नाथ हम, रजनीचर जेहि काल ।
विघ्न करन ऋतु आवते, प्रेरित काल कराल ॥
रहैं सजग तौने समय, नहिं भ्रम होइ मुनीश ।
हमको समय बताइकै, सुचित भजौ जगदीश ॥
समर उमङ्ग भरे सुनत, राम लषणके वैन ।
सिगरे मुनि बोलत भये, तिनहिं सराहि सचैन ॥

सवैया ।

सुंदर साँवर राजकिशोर, भली यह बात कही मन भाई ।
हौ समरत्थ सबै विधिते, दशरत्थके लाडिले आनँददाई ॥
कौशिक दीक्षा लई मखकी, भये मौन वदे विधि जैहै नशाई ।
आजुते औ षटवासरलौं, रघुराजजू रक्षण कीजै बनाई ॥
दोहा—सुनत मुनिन वाणी विमल, यशी अवधपति लाल ।
सयुग कसे कम्मर कठिन, करन समर तत्काल ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

चामीकर कवच विराजत वपुष दोऊ, कटिमें कराल कर
कालके समान। मुकुट विशाल माथे माणिक प्रवाल गाथे,
विशाल चाप दाहिने दिसत वान ॥ भनै रघुराजयुग कंधन
सोहैं, अंग अंग वीररस रंग अति उमगान। जंग जैतवारे दशरत्थ
दुलारे भये, समर तयारे अरुणारे दृग दरशान ॥

दोहा--सुनत दुगुण देखत त्रिगुण, चौगुन समर मँझार।
मनहुँ फोरि बख्तर कढत, राम अंग सुकुमार ॥

कवित्त ।

लसत दुकूलपति भूषण नखत ज्योति, उदैमान शीतभान
विराजते । करन सुहाने दसताने मणि कंचनके, जाने जगवीर
बखाने मुनिराजते ॥ भूपति किशोर बागै यज्ञशाला चारों
तपोवन रक्षित है राक्षस समाजते। भनै रघुराज कोशले
कुमार, सुकुमार मार पद मार त्यागे नींद आजते ॥

दोहा--राम लषण षट निशि दिवस, नींद भूख अरु प्यास।
तजे तमकि संगर सजे, मख रक्षणके आस॥

सवैया ।

बीति गये जब पंचनिशा दिन, आयो छठौ दिन पूरणमासी
पूरण आहुति को समयो भयो,भे मुनिवृन्द विषादित त्रासी।
श्रीरघुराज कह्यो लषणै लला, होउ तयार विलंब विनासी
जानि परै हमहीं हठि आजु, निशाचरसैनकी आवनि खासी।

दोहा--राम वचन सुनि मुनि सकल, भरे समरके जोम ।
उपाध्याय उपरोहितौ, करन लगे विधि होम ॥
स्रुवा कुशा अरु चमस युत, कुसुमहु समिध समेत।
विश्वामित्रहि हवनमें, ज्वलित धूमको केत ॥
ज्वालमाल लखि वेदिका, मुनि सब अशुभ विचारि।
कौशिकते बोलतभये, गुणि आगम निशि चारि ॥

पंच दिवस मख विधि सहित, भयो मन्त्रयुत काज ।
छठवें दिन अब विघ्न कछु, जानि परत मुनि आज ॥

कवित्त ।

भाषत परसपर ऋषिनके भीति भरे, मौनमुनि कौशिक न बोल्यो राम हेरिकै । दक्षिण दिशाते मनो भदँव निशाहै घोर, उठ्यो अंधकार चारों ओरन ते घेरिकै ॥ मूँदिगयो भासमान आसमान हीते तहां, होत भै भयानक अवाज कान पेरिकै । हल्ला मखशाला मच्यो सकल विहाला भये, रक्षौ रघुराज आज भाषैं मुनि टेरिकै ॥ कोऊ भगे पात्र छोडि कोऊ भगे होम छोडि, कोऊ भगे स्रुवा छोडि भूसूर विचारेहैं । कोऊ मृगचर्म त्यागे लै लै मुनि जीव भागे रहे मख कर्म लागे भरे भीति भारे हैं ॥ हाहाकार माचि रह्यो विश्वामित्र आश्रममें, हँसि रघुराज राम केतन नेवारे हैं । बैठ्यो गाधिनन्दन भरोसे रघुनन्दनके, जानत हमारे रघुबीर रखवारेहैं ॥

दोहा—उठैं यथा कारीघटा, पूरब पवनहिं पाय ।
श्याम मेघमाला गगन, दक्षिण परी देखाय ॥

छन्द भुजंग प्रयात ।

धरामें मच्यो धूरिको धुन्धकारा । प्रलै यामिनीसो भयो अंधकारा ॥
भई गाज कैसी गराजै दराजै । कहैं विप्र कैधौं प्रलै होति आजै ॥
करैं रात्रिचारी महाघोर शोरा । कि हे मूढ माया सो दाया न थोरा ॥
चले आवते आशु आकाशचारी । महा भीम काया निशाके विहारी ॥
इतै व्योम धावैं यथा राहु केतू । किये यज्ञके विघ्नको भूरि नेतू ॥
लखे यज्ञ धूमै हियेमें उराये । चहूँ ओरते शस्त्र लै वेगि धाये ॥
महामूढ मारीच तैसे सुबाहू । सुनें गात को घात आघात दाहू ॥
महाराक्षसी सैनके बीच माहीं । प्रचारैं दोऊ बार बारै तहाहीं ॥
धरादेवको अध्वरै ध्वांसि डारौ । रची यज्ञशाला भटौ जाय जारौ ॥

बचैं विप्र नाहीं सबैको अहारो। लगे यज्ञ जूपै जरै ते उखारो
भरो यज्ञवेदी मलो मूत्र धारा। उपाधी महा गाधिको है कुमा
करै यज्ञ मानै नहीं बार बारा। सहाई बोलायो उभै भूप बारा
सुनै बैन मारीचके रात्रिचारी। चले चाय चारों दिशा शस्त्रधा
नहीं जानते आपनो हाल काला। करैं यज्ञकी रक्ष त्रैलोक्यपाल
महाभीम काया करैं भूरि माया। चढे व्याघ्र वाराह व्यालौ निकाय
कहूं भास होते कहूं अंधकारा। कहूं मेघ धावैं तजैं रक्त धारा
भरी वेदिका शोणितै ओघमाहीं। लगे वर्षने माँस हाडौ तहांहीं
यही भाँति कीन्ह्यो महायज्ञ भंगा। न जानै महा मीचको मूढ सं
करै शोर भारी कहूं देत तारी। निशा काल चारी कहूं देत गा
कहूं दन्त पीसैं कहूं खीस काढैं। कहूँ छोट होते कहूँ बेगि बाढैं
यही भाँति सों राक्षसी सैन भारी। कियोहै उपद्रव महाभीति कारी
नहीं धर्मको लेश नेको शरीरा। करै नित्य गौ विप्रको भूरि पी

सोरठा--यहि विधि जब मारीच, सहित सुबाहु अनेक भट।
जानि न आपन मीच, किये उपद्रव अति कठिन॥
उडि उडि आशु अकाश, भरे कुण्ड शोणित समल।
करि करि कोप प्रकाश, धाये दाहन मख भवन॥

कवित्त।

आयगे निशाचर विलोकि रघुवंश वीर, वेदीको विलोकै
शोणितकी धार है। धाये कंज पांयनसों दोऊ बंधु कोप कै
राक्षसी चमू निहारे गगन मँझार है॥ प्रबल मरीच औ सु
चोंपि चले आवैं, भाषत वचन आजु कौन रखवार है। भनै
राज नवनलिन विशाल नैन, बोले मंजु बैन चैन उरमें अपारे
देखो देखो लषण भषनको भरोस कीन्हे, चखन निकारे
भखन पियारे हैं॥ धाये चले आवैं धर्म धुरा धसकावैं भीरु,भी
उपजावैं नहिं समर जुझारे हैं॥ भनै रघुराज सीखे दिव्य

कौशिकसे, तिनकी परीक्षा लेन मनमें हमारे हैं । मारि मानवास्त्र
को उड़ाय देतो अंबरमें, कादर कुटिल क्रूर कौन फल मारे हैं ॥
भाषि रघुवीर सनधानि एक तीर धनु, मानवास्त्रको प्रयोग कीन्हो
मंत्र पढिकै । खैंचि गुण कानलों समान पवि शोर कैकै, तकि उर
अरिको चलायो बाण बाढिकै ॥ भनै रघुराज रामसायक उडायो
ताहि, फेंक्यो शतयोजन समुद्रहूते काढिकै । भ्रमत भ्रमत गिऱ्यो
अतिहि अचेत ह्वैकै बस्यो पारवार पार आयो नहिं चढिकै ॥

दोहा--ताते कारज जानि कछु, हरन हेत भुव भार ।
प्रानदान मारीचको, दीन्ह्यो राम उदार ॥
उडै यथा घनकी घटा, पौन प्रचंडहि पाय ।
उड्यो तथा मारीच रण, पऱ्यो सिंधुमहँ जाय ॥

छन्द मोतीदाम ।

मारीचको लखि राम । बोले सु करुणाधाम ॥
यह मानवास्त्र महान । मैं हन्यो करि संधान ।
लै गयो शत्रु उडाय । दिय सिंधुमध्य गिराय ॥
कीन्ह्यो न तेहि विन प्रान । लखि लेहु लषण सुजान ॥
राक्षस अनेक प्रचंड । आवत इतै वरिबंड ॥
सबमें सुबाहु प्रधान । आवत इतै अनखान ॥
मानत नहीं यह दुष्ट । मोपर भयो अति रुष्ट ॥
हनिहौं निशाचर वृन्द । बचिहैं न करि बहु फन्द ॥
ये सकल धर्म विहीन । आति हैं अधर्म प्रवीन ॥
छावत पुहुमि महँ पाप । मुनिजन करत संताप ॥
बहु विघ्न करते यज्ञ । हैं मूढ मति अति अज्ञ ॥
नित करत शोणित पान । अबलौं न अघनि अघान ॥
राक्षस पिशाची योनि । हठि हरि ते अनहोनि ॥
ताते हनैंगो आजु । आये विघन मख काजु ॥

इनके बधे नहिं दोष। कर धरहु धनु करि रोष॥
अस वचन कहि अभिराम। कोपे समर श्रीराम॥
उत उडत लखि मारीच। शुभ बाहु कोप्यो नीच॥
बोल्यो भटन ललकारि। करि कठिन कर तरवारि॥
धोखो दियो मुनि मोहिं। मैं लिय प्रथम नहिं जोहि॥
ल्यायो, कुमार बोलाय। निज करन हेत सहाय॥
दोहा--रूप अनोखे अति नवल, चोखे रण संचार।
धोखे धोखे युध करत, हैं कोउ राजकुमार॥
सरल युद्ध मारीच किय, इन दिव्यास्त्र चलाय।
धोखे धोखे रोषि रण, दीन्हो ताहि उडाय॥

छंद पद्धरी।

मुहि तदपि शंक नहिं लगति नेक। अब मारि युगल राखिहौं टेक
धावहु प्रबीर बचैं न भागि। मख भवन मध्य करिदेहु आगि
अब खायलेहु दोउ भूप बाल। अब दयाकेर कछु है न काल
पुनि दौरि खाहु कौशिकहि जाय। द्विज बचैं नहीं कतहूँ पराय
मारीच बहुरि आवत तुरंत। हम करब उभै द्विजवंश अंत।
बाचिहैं न धेनु धरणी मँझार। नहिं रही धर्मको कहुँ प्रचार।
कहि यों सुबाहु करि घोर शोर। धायो तुरंत जहँ नृपकिशोर।
बोल्यो प्रगर्भ वाणी कठोर। धोखे उठाय दिय भ्रात मोर।
बचिहौ न आज ताजि समरठोर। मैं लखत तिहारो बाहु जोर।
प्रभु कह्यो मंद मुसकाय बैन। हम क्षात्रि जाति कछु लगति भै न
नहिं शंक करौं मम भगन हाल। रण क्षात्रि जाते पीछे देवाल
तुम वीर बडे बहु पाप कीन। ताते विरंचि अब फलहु दीन
तुम हने वापुरे द्विज वृथाहि। अबलों न परचो रण क्षात्रिपाहि।
कस करौ न विक्रम भूरि आज। मैं खडो समर मख रखन काज।
करियो सचेत संग्राम काम। मम विश्व विदित है राम नाम।

तुम संग सैन ल्याये अपार । हम हैं अकेल भ्राता हमार ॥
अब कठिन परी मख भवन जाब । साकिहौ न लंकपति दै जवाब॥
सुनि अस सुबाहु रघुनाथ वैन । भरि कोप महा करि लाल नैन॥
करवाल काढि कर करि कराल । धायो प्रचण्ड मनुकाल काल॥
भूधराकार ताको शरीर । करि घोर शोर द्विज देत पीर॥

दोहा--धावत आवत भीम भट, समर सुबाहु सुबाहु ।
सन्धान्यो शर भानुकुल, कुमुद नवल निशि नाहु ॥

कवित्त ।

परमकराल मानौं कालहूको काल व्याल, मुनिन निहाल कर तेज आलबाल है । अतिहि उताल बढ्यो पावकको मंत्रजाल,उठी ज्वालमाल डग्यो दिग्गजको माल है ॥ चन्द्र भाल चारिभाल लोकपाल भे विहाल, हल्ला पर्यो स्वर्ग ते रसातल पताल है॥ सूखे ताल बंदगाल विहँसे लषण लाल, रघुराज जबै शर साज्यो रघुलाल है ॥

दोहा--छोडत बाण कठोर तहँ, भयो धनुष टंकार ।
दिग दान्तिन के फोरि श्रुति, चल्यो विशिख वरजोर ॥

कवित्त ।

कोटि पवि पातसों अघात घोर शोर छयो, अवनी गगन उतपात अतिछायगो । दिशि अवदात होन लाग्यो है प्रभात दाह, उल्कापात वज्रपात धरणि देखायगो ॥ भनै रघुराज राम सायक प्रबल शत्रु, छाती को विदारि कै निषंग पुनि आइगो ॥ सहित सनाहु भरो समर उछाहु महा, बाहुसो सुबाहु वारि बुल्लासों विलायगो ॥

इनके बधे नहिं दोष। कर धरहु धनु करि रोष॥
अस वचन कहि अभिराम। कोपे समर श्रीराम॥
उत उडत लखि मारीच। शुभ बाहु कोप्यो नीच॥
बोल्यो भटन ललकारि। करि कठिन कर तरवारि॥
धोखो दियो मुनि मोहिं। मैं लिय प्रथम नहिं जोहि॥
ल्यायो, कुमार बोलाय। निज करन हेत सहाय॥

दोहा--रूप अनोखे अति नवल, चोखे रण संचार।
धोखे धोखे युध करत, हैं कोउ राजकुमार॥
सरल युद्ध मारीच किय, इन दिव्यास्त्र चलाय।
धोखे धोखे रोषि रण, दीन्हो ताहि उडाय॥

छंद पद्धरी।

मुहि तदपि शंक नहिं लगति नेक। अब मारि युगल राखिहौं टेक।
धावहु प्रबीर बचैं न भागि। मख भवन मध्य करिदेहु आगि।
अब खायलेहु दोउ भूप बाल। अब दयाकेर कछु है न काल।
पुनि दौरि खाहु कौशिकहि जाय। द्विज बचैं नहीं कतहूँ पराय।
मारीच बहुरि आवत तुरंत। हम करब उभै द्विजवंश अंत।
बचिहैं न धेनु धरणी मँझार। नहिं रही धर्मको कहुँ प्रचार।
कहि यों सुबाहु करि घोर शोर। धायो तुरंत जहँ नृपकिशोर।
बोल्यो प्रगभ वाणी कठोर। धोखे उठाय दिय भ्रात मोर।
बचिहौ न आज ताजि समरठोर। मैं लखत तिहारो बाहु जोर।
प्रभु कह्यो मंद मुसकाय बैन। हम क्षात्रि जाति कछु लगति भै न।
नहिं शंक करौं मम भगन हाल। रण क्षात्रि जाते पीछे देवाल।
तुम वीर बडे बहु पाप कीन। ताते विरंचि अब फलहु दीन।
तुम हने बापुरे द्विज वृथाहि। अबलों न परचो रण क्षत्रिपाहि।
कस करौ न विक्रम भूरि आज। मैं खडो समर मख रखन काज।
करियो सचेत संग्राम काम। मम विश्व विदित है राम नाम।

तुम संग सैन ल्याये अपार । हम हैं अकेल भ्राता हमार ॥
अब कठिन परी मख भवन जाब । साकिहौ न लंकपति दै जवाब॥
सुनि अस सुबाहु रघुनाथ वैन । भरि कोप महा करि लाल नैन॥
करवाल काढि कर करि कराल । धायो प्रचण्ड मनुकाल काल॥
भूधराकार ताको शरीर । करि घोर शोर द्विज देत पीर॥

दोहा--धावत आवत भीम भट, समर सुबाहु सुबाहु ।
सन्धान्यो शर भानुकुल, कुमुद नवल निशि नाहु ॥

कवित्त ।

परमकराल मानौं कालहूको काल व्याल, मुनिन निहाल कर तेज आलबाल है । अतिहि उताल बढ्यो पावकको मंत्रजाल,उठी ज्वालमाल डग्यो दिग्गजको माल है ॥ चन्द्र भाल चारिभाल लोकपाल भे विहाल, हल्ला पर्यो स्वर्ग ते रसातल पताल है॥ सूखे ताल बंदगाल विहँसे लषण लाल, रघुराज जबै शर साज्यो रघुलाल है ॥

दोहा--छोडत बाण कठोर तहँ, भयो धनुष टंकारे ।
दिग दान्तिन के फोरि श्रुति, चल्यो विशिख वरजोर ॥

कवित्त ।

कोटि पवि पातसों अघात घोर शोर छ्यो, अवनी गगन उतपात अतिछायगो । दिशि अवदात होन लग्यो है प्रभात दाह, उल्कापात वज्रपात धरणि देखायगो ॥ भनै रघुराज राम सायक प्रबल शत्रु, छाती को विदारि कै निषंग पुनि आइगो ॥ साहित सनाहु भरो समर उछाहु महा, बाहुसो सुबाहु वारि बुल्लासों विलायगो ॥

दोहा--पावक शर छोड्यो इतै, प्रभु, करि जै अभिलाष।
उतै समर महँ शत्रुकी, उडत देखानी राष॥

छन्द गीतिका।

उडिगो मरीच सुबाहु जरिगो देखिकै रजनीचरा।
करि घोर शोर अथोर भूप किशोर पै धाये धरा॥
भूधराकार शरीर धरु धरु मारु मारु उचारहीं।
तलवार पैनीधार धारे बार बार प्रचारहीं॥
कोउ लिये कुन्तल फरश तोमर आस पाश पसारहीं।
कोउ परिघ मुद्गर मुशल हल गल वलक्किरण संचारहीं॥
कोउ करत माया भीमकाया वमत पावक ज्वालहैं।
कोउश्वानमुखकोउस्यारमुख कोउविकवदन बिडालहैं॥
कोउ नागमुख कोउ कागमुख कोउ नाग छोरे वार हैं।
मुख मुच्छ मानहु भ्रमर गुच्छ बुभुच्छ कुच्छ अपारहैं॥
सब समर चोखे सकल रोषे स्वामि जोखे जीतिकै।
कुलके अनोखे बाल धोखे चले पुषित अनीतिकै॥
राक्षस हजारन घनाकारन नृप कुमारन मारने।
रणमें न हारन शस्त्र डारन लगे प्रबल प्रचारने॥
लखि लषण तैसहि लक्ष्मणाग्रज तज्यो तुकि शर धार हैं।
कोदंड मण्डल करत रण संचरत बारहिं बार हैं॥
सायक चले विकराल व्याल विशाल इव तेहि काल हैं।
निशिचर करत वश काल हाल कृपाल कौशल पालहैं॥
भट कटत चटपट हटत नहिं कटकट करत खल दन्तहैं।
लट पट गिरत झटपट उठत अटपट न मानत अन्तहैं॥
भै घुसी घट घट कहत हट हट समर नटखट करत हैं।

कोउबढत मढत प्रमोद रणको गढत असिमुख लरत हैं ॥
रणधीर श्रीरघुवीर छोडत तीर वेग समीरहैं ।
अरि पीरदैत्यन जीरकै भयभीर किय खल भीर हैं ॥
कोउ कटे कन्धहु कमर बन्धहु उठे अमित कबन्धु हैं ।
अरिअन्ध किय सतिसन्ध हनि रण बाँकुरे दोउ बन्धु हैं ॥
परिगयो हाहाकार समर मँझार खलन अपारमें ।
तनु कटे अति विकरार शोणित धार बहि संहारमें ॥
महि मुंड रुण्डन झुण्ड मंडित कुण्ड शोणितके भरे ।
जिमि चण्ड मुण्डन दल्यो चण्डी राम तिमि खल संहरे ॥
तहँ काक विपुल बलाक गीध शृगाल आमिष भखतहैं ।
योगिनि जमाति कराल कीकैं देत पल अभिलषत हैं ॥
कर खड्ग खप्पर विगत कप्पर पुहुमि उप्पर नचत हैं ।
वैताल भूत पिशाच केती कला गहि महि रचत हैं ॥
अंबर उडत निशिचर निकर शर लगत झरि पुनि परत हैं॥
भरभर भगत खरभर मचत कोउडरत कोउ उठि लरतहैं॥
छाये गगन मंडल अखंडल बाण मण्डल रामके ।
चंडांशु परम प्रचंड कर मूंदे भये संग्रामके ॥
लै भगे देव विमान नहिं अवकाश रह्यो अकाशमें ।
शर भरे नाग निवास नरन अवास नाक निवासमें ॥

दोहा–समर कोपि रघुवंशमणि, जानि मुनिन बड रोग ।
निशिचर निकर विनाश हित, किय पवनास्त्र प्रयोग ॥

छन्द तोटक ।

जब छोडि दियो पवनास्त्र हरी । प्रगटे शर लाखन ताहि घरी ॥
शर झुण्डन झुण्डन छाइ गये । रजनीचर बीर विलाय गये ॥
अवशेष रहे रिपु जे सिगरे । इक एकनपै शर लाख गिरे ॥
पद जानहु जंघ भुजा शिरको । किय खण्ड अखंड रहे थिरको ॥

ओत आरत शोर मच्यो रण में । छनदाचर क्षीण भये क्षणमें ॥
कोउ तात न भ्रात पुकार करैं । कोउ आँतन गातन ऐंचि मरैं ॥
सब सैन सुबाहु मरीचहुकी । हतिगे रण दूर नगीचहुकी ॥
नहिं बाचि कोऊ घर फेरि गये । रघुनन्दनके शर प्राण लये ॥
पुनि पौन प्रचण्ड अखंड चल्यो । रजनीचर सैन बहोरि मल्यो ॥
सब एकहि बार उडाय दियो । रण लोथिनसों तहँ सून कियो ॥
रघुवीर विचित्र पराक्रमको । लखि देव सबै न कछू श्रमको ॥
यक बार बजाय नगारनको । बरषे तहँ फूल अपारनको ॥
जय शोर मच्यो चहुँ ओर तहाँ । सुर पावत भे मनमोद महाँ ॥
नभ अप्सर नाचि रही अमला । सुर गायक गाय रहे सकला ॥
जय कौशलपाल कृपाल हरी । सुरवृन्दनकी भय भूरि हरी ॥
निज सायक ते इन पापिनको । निज लोक दियो द्विजदापिनको ॥
इमि गाय बजाय नवाय शिरै । सुरगे निज धाम विचारि फिरे ॥
इत कौशिक आय प्रमोद भरे । मुनिसंग सुनावत जैति हरे ॥
दोउ बन्धु खडे रणजीति जहाँ । चलि आवतभे मुनिनाथ तहाँ ॥
सुत बन्धु लखे रघुनन्दनको । जिन काटि दियो दुख द्वन्दनको ॥

दोहा--आनँद वश मुनिनाथ सों, बोलि न आयो बैन ।
लखन लगे दोउ बन्धुकी, शोभा अनमिख नैन ॥

कवित्त ।

सहज निशाचर समर अवगाहि ठाढे, उरमें उछाहि तनु आति
रणधीर हैं । नेकु श्रमबिंदु इन्दु वदन विराजमान मन्दमन्द फेरत
सुबाम कर तीर हैं ॥ भनै रघुराज रघुराज दुलहेटे दोऊ मेंट
महिदेवनकी देवनकी पीर हैं । मानहुँ निहार फारि युगल तमारि
कढे, मढे सुखमाते तैसे युग रघुवीर हैं ॥ कहूँ कहूँ शोणितके
कन तनु राजैं आति, उडि रिपु तनुते परे हैं बाण जोरते । सुभग
तमाल तरु डारन विहार करैं, चुनीराय मुनी मानो आनँद

अथोरते ॥ भनै रघुराज मुनिराज काज कीन्ह्यो पुर, देवन
समाजको उबारचो दुख घोरते । कटिमें निषंग कसे लखण प्रवीर
संग, कौन रणधीर आजु कौशल किशोरते ॥ अस्तुति करत
मुनिवृन्द ठाढे चारों ओर, विश्वामित्र चूमैं मुख लेतहैं बलैयाको ।
झारिकै तमीचर सँहारिकै पसारि यश, दुखसों उबारचो मोहिं
लीन्हें संग भैयाको ॥ भनै रघुराज वेद विप्रको पलैया पायो,
सँगको डोलैया रघुकुलके जोन्हैयाको । बोले मुनि भैया सत्य
वचन कहैया किधौं, याको धन्य मैया किधौं मेरी धन्य मैयाको ॥

दोहा--राम बाँह पूजे मुनिन, अस्तुति करत तहांहिं ।
यथा सुरासुर रण जिते, सुर पूजे हरि काहिं ॥

सवैया ।

कौशिकको लखि श्रीरघुनन्दन, धाय गिरे पदपंकज माहीं ।
जोरिकैपङ्कज पाणि सुखी मुख, मंजुलवाणि कही मुनिपाहीं ॥
श्रीरघुराज सुनो ऋषिराज, न मोर है जोर निहोरहु नाहीं ।
केवल रावरेकी कृपा पाय, जित्यौं क्षणमें रणमें रिपु काहीं ॥
कीजै समापत यज्ञ द्रुतै, रघुराज प्रमोदित शंक विहाई ।
आये इतै शठ मारि गये जरि, जैहैं बहोरि बचैं न पराई ॥
हाजिर मैं हौं हुजूरमें रावरे, सेवा बरे सहितैं लघु भाई ।
जो दशकन्धरहू चढि आइहै, तौ हनि जाइहै नाथ दोहाई ॥
मुनिनायक बोले सुनो रघुनायक, आप हमारे सहायकहौ ।
अति दीनन आनँददायकहौ, कहँ लौं बरणौं सब लायकहौ ॥
रघुराज सुनो रघुराजकुमार, धरे करमें धनु सायक हौ ॥
मखपूरणमें अब शोच कहाँ, तुमहीं यह रक्षविधायक हौ ।
दोहा--सुनि मुनिकी वाणी विमल, राम परम सुख पाय ।
सज्जन प्रिय मज्जन किये प्रथम लषण नहवाय ॥
रघुपति शासन पायके, मुनि अरम्भ मख कीन ।

सविधि सऋत्विज यागकी, पूर्णाहुति करि दीन ॥
कौशिक यज्ञ समाप्तकरि, लखिदश दिशि निरबाध ।
राम लषणका बोलिकै, बोले बुद्धि अगाध ॥

सवैया ।

कीन्ह्यो यथारथ मोहिं कृतारथ, है न अकारथ कर्म तिहारो
स्वारथ सत्य कियो पितु वैन, तथा परमारथ पूरो हमारो
सत्य भयो अब सिद्धको आश्रम, छायरह्यो यश विश्व मँझारो
श्रीरघुराज सुनो रघुराज, अहै तुव हाथ पदारथ चारो

दोहा--प्रभु विहँसे मुनिवचन सुनि, कह्यो जोरि युग पानि ।
हम सेवक तुम स्वामि हौ, लेहु सत्य यह जानि ॥
मुनि मोदित मनमें भये, जानि शयन को काल ।
सुखा शयन कीन्हे सुचित, तिमि सोये रघुलाल ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुर, श्रीकृष्णचन्द्रकृ
पात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवर ग्रन्थे
यज्ञरक्षणमारीच सुबाहु वधो नाम एकादशप्रबन्धः ॥ ११ ॥

दोहा--सिद्धाश्रम सोवत सुखी, लषण राम मुनिव्रात ।
आनँदप्रद प्रगट्यो तहाँ, निशा पयान प्रभात ॥

चौपाई ।

करन लगे कोयल मृदु कूका । होनलगे सब मूल उलूका
शशि मलीन झलमल भे तारे । कोकी कोक अशोक निहारे
कलरव लागे करन विहङ्गा । वन को चारि चरि चले कुरङ्गा
शीतल मन्द सुगन्ध समीरा । बहन लग्यो नाशक सबपीरा
तजन लगे तरु कुसुम अपारा । कहुँ कहुँ खग बैठहिं उडि डारा
बिकसीं बहु राजिवकी राजी । चले पथिक पन्थनमहँ काजी
निशा सिरानि भयो भिनसारा । पूषन पूर्व प्रकाश पसारा
कली गुलाबनकी चटकातीं । दै चुटकी मनु विश्व जगातीं

जानि प्रभात गाधिसुत जागे । रघुपति लषण जगावन लागे ॥
उठहु लाल शुभ भयो प्रभाता । मज्जन करहु देव मुनि त्राता ॥
उठे राम तब लषण जगायो । तजि आलस मुनिपद शिर नायो ॥
धौतवस्त्र लै मुनि सँगमाहीं । मज्जनहेत चले सरि काहीं ॥
प्रातकृत्य करि समिधि नहाये । अर्घ्य प्रदान दीन सुख छाये ॥
करि संध्यावन्दन रघुनन्दन । रघुकुल चन्दन दीन्हो चन्दन ॥
आये मुनि आश्रम रघुराई । लषणसहित शोभत सुखदाई ॥
दे शिर क्रीट विभाकर भासी । काननमें कुण्डल दुति खासी ॥
कसि निषंग लै कर धनु सायक । सजे सुभग लछिमन रघुनायक ॥
मुनि आश्रम मज्जन करि आये । पूजन हवन कियो सुख छाये ॥
बैठे मुनि मनु पावक ज्वाला । मुनि समाज तहँ लसीं विशाला ॥
अवसर जानि राजसुत आये । सानुराग मुनिपद शिरनाये ॥

दोहा--निरखि युगल जोरी सुभग, दशरथ राज किशोर ॥
अनमिष मुनि सिगरे लखत, जैसे चन्द्र चकोर ॥

चौपाई ।

सहज सुभाउ सहज दोउ भाई । कौशिक लियो अंक बैठाई ॥
शीश सूँघि फेरत तनु पानी । पढत रामरक्षा मुनि ज्ञानी ॥
समय जानि बोले रघुराई । सुनहु मोरि विनती मुनिराई ॥
हम किङ्कर दोउ बंधु तुम्हारे । सौंप्यो तुमको पिता हमारे ॥
मातु पिता भ्राता तुम ज्ञाता । स्वजन बंधु गुरु प्रिय अवदाता ॥
हौ सरबस मुनिनाथ हमारे । तुम्हरी कृपा शत्रु सब मारे ॥
अब जो शासन करहु मुनीशा । सो करिहौं निशंक धरि शीशा ॥
शासन होइ अवधपुर जाऊं । मातु पिता कहँ सुखी बनाऊं ॥
अथवा चलौं संग जहँ जाहू । तुव सँग सब सुपास मुनिनाहू ॥
सुनि विनीत मंजुल प्रभुवानी । कौशिक भन्यो त्रिकाल विज्ञानी ॥

इत रण रुधिर बही सरिधारा। प्रगटाति है दुर्गन्ध अपारा
ताते चलहु और थल प्यारे। जहँ सुपास सब भाँति तुम्हारे
देखि देखि देशन रघुराई। जाहु भवन कहँ आनँददाई
पुनि जो मुनि सब संमत करहीं। हमहुँ तुमहुँ तेहि विधि अनुसरहीं
अस कहि कह्यो मुनिन मुनिराई। काह उचित भाषहु सबभाई
सिगरे मुनि कौशिक रुख जानी। एकबार बोले मृदुवानी
अस संमत मुनिनाथ हमारा। सुनहु तुमहु अरु राजकुमारा
मैथिल महाराज विज्ञानी। धर्मधुरन्धर यज्ञ विधानी
तिनके भवन सुनी अस बाता। धनुषयज्ञ होई विख्याता
है यक धनुष धरणिपति धामा। हरकोदण्ड कहावत नामा

दोहा--धनुष रहा अद्भुत परम, अप्रमेय अति घोर।
परम प्रकाशी गुरु परम, कोटिन कुलिश कठोर॥

चौपाई।

देवन आय यज्ञमहँ दीने। लिये बिदेह महा मुदभीने
देव दैत्य गन्धर्वहु नाना। चारण सिद्ध सबै बलवाना
सके न कोऊ ताहि चढाई। मानुषकी का कथा चलाई
रच्यो स्वयंवर भूप विदेहू। सुनियत मुनि कीन्ह्यो प्रण येहू
सकै जो कोउ कोदंड चढाई। सीता सुता लेइ सो भाई
यह सुनि केते राजकुमारा। गये विदेहनगर बलवारा
राज राजसुत जुरे तहांहीं। सके चढाय अबै लगि नाहीं
तहां चलहु लै राजकुमारा। हमहुँ चलब तुव संग उदारा
रंगभूमि देखब छबिछाई। लखब स्वयंवर अतिसुखदाई
तुमहूं राजकुमारन काहीं। धनुष देखायो अवसर माहीं
अति विचित्रमखभूमि सोहाई। चित्र विचित्र विदेह बनाई
धरो धनुष तेहि जनक निवेसू। पूजित चन्दन पुहुप हमेसू

धूप दीप नैवेद्य अपारा। पूजत नृप षोडश उपचारा॥
देवन रचे धनुष निज हाथा। दियो शंभु कहँ अतिसुख साथा॥
लह्यो यज्ञफल धनुष विदेहू। तबते धनुष धरयो तेहि गेहू॥
रच्यो स्वयंवर सोइ धनु केरा। जनक चहत भूपन बल हेरा॥
चलहु जनकपुर गाधिकुमारा। लै कोशलकुमार सुकुमारा॥
अस हमरी सबकी अभिलाषा। प्रथमहिते संमत करि राषा॥
पूरहु गुरु अभिलाष हमारी। जो कौशिक रुचि होइ तुम्हारी॥
सुनि मुनिवचन महामुद पाई। विश्वामित्र कह्यो अतुराई॥

दोहा--भली कही मुनिजन सकल, संमत सब विधि मोर।
चलिहौं मैं हठि जनकपुर, लै सँग राजकिशोर॥

चौपाई।

अस कहि कौशिक सुदिन बनायो। तहँ तुरन्त प्रस्थान पठायो॥
भई जनकपुर गवन तयारी। साज सहस शकट तपधारी॥
अग्निहोत्र पात्रन धरि लीने। उचित वस्तु सब भरे प्रवीने॥
लै मुनिमण्डल गाधिकुमारा। राजकुमारन संग उदारा॥
गह्यो जनकपुर पंथ सुहाई। वनदेवता सकल शिर नाई॥
गमनसमै मुनि वचन उचारा। पावहु तुम कल्याण अपारा॥
सिद्धाश्रमते हम अब जाहीं। रक्षण कियो सदा यहि काहीं॥
उत्तर दिशा गंगके तीरा। तहँ है जाब सहित रघुवीरा॥
यह हिमवंत शिलोच्चै नामा। शृंग गंग तट अति अभिरामा॥
ताके दक्षिण शुभ पंथाना। तहँ है हम सब करब पयाना॥
सुखी रहौ वनदेव इहांहीं। कबहूँ मिलब बहुरि तुम काहीं॥
अस कहि मुनिवर सुखी अपारा। आगे करि दोउ राजकुमारा॥
मुनिसमाज लै तहां ततक्षिन। सिद्धाश्रमको करि परदक्षिन॥
कौशिक चल्यो जनकपुर काहीं। गौरि गणेश सुमिरि मनमाहीं॥

तहँके सकल कुरंग विहंगा । बोलि उठे सब एकाहि संगा
भये शकुन मंगलप्रद नाना । मंगल मूल संग भगवाना
कछुक दूर लगि कौशिक काहीं । पहुँचायो पशु पक्षि तहाँ
चली सकल मुनिराज समाजा । मध्य सबंधु लसत रघुराजा
युगल यामलों पंथ सिधारे । पहुँचे जब सब सोन किना
लख्यो महानद सोन सुहावन । पुण्य बढावन पाप नशाव

दोहा--युगल याम बीत्यो दिवस, निरखि पुण्यप्रद सोन ।
सोन कूलमें वसत भे, श्रमित दूर कारि गौन ॥

चौपाई ।

सोनभद्र महँ सबै नहाये । अतिनिर्मल जल अतिसुख पा
कीन्ह्यो होम सविधि मुनिराई । जानि अस्त गमनत दिनरा
राम लषण दोउ सोन नहाये । संध्यावंदन कारि सुख पा
गये गाधिसुत निकट तुराई । कौशिकसहित मुनिन शिरना
मुनि लीन्ह्यो निज निकट बोलाई । आगे बैठायो दोउ भा
सोन महानद पाप विनाशी । लगे प्रशंस करन तपराशी
लषणसहित प्रभुवर्णन कीन्ह्यो । मुनि मण्डल अति आनँद दीन्ह
विश्वामित्रहु सोन प्रभाऊ । कीन्ह्यो वर्णन सहित उरा
लषण राम मुनि भये सुखारी । सुनिकै सोन महातम भा
राम कह्यो कौशिकहि बहोरी । सुनहु देव विनती कछु मो
परम सोहावन है यह देशा । वसन चहत चित इहाँ हमेश
ताते अचरज मनमहँ लागै । सोन निरखि मन अति सुखपा
कौन देश यह वन अभिरामा । सब सम्पत्ति भरी सब ठा
कुंज मंजु अलिगंज विराजै । लसत कुरंग विहंग समा
कहौ नाथ यहि देश कहानी । इत को भयो भूप यशखा
कथा कहौ विस्तार समेतू । आति आभिलाष सुनन मुनि के

सुनत रामके वचन सोहाये। कौशिक मुनि अति आनँद पाये ॥
चूमि वदन बोले मृदु वानी। पूँछो भले राम गुणखानी ॥
अस कहि विश्वामित्र सुजाना। लगे करन निजवंश बखाना ॥
तौन देशको सब इतिहासा। मुनिमण्डल माधि सहितहुलासा ॥

दोहा--रघुपति अनुमति पाय कै, त्रिकालज्ञ मुनिराय।
लग्यो सुनावन राम को, कथा प्रबन्ध लगाय ॥

छंद चौबोला।

ब्रह्म योनिते प्रगट भयो इक कुश नृप महायशीला॥
सज्जन पूजित सतिव्रत धारत धर्म कर्म शुभ शीला।
वैदर्भी ताकी पटरानी रूपवती कुलवारी ॥
ताके भये कुमार चारि गुण गण युत विक्रम भारी।
अपने सम विचारि पुत्रनको युत उत्साह प्रकासी ॥
सतिवादी धर्मिष्ठ सुतनसों बोल्यो वचन हुलासी।
करौ धर्मपालन पुहुमी को पैहो धर्म महाना।
पितुके वचन सुनत चारिहु सुत करि संमत सुख माना॥
निज निज नगर वसाय निपुण अति वसे चारिहू राजा।
नाम कुशांबु रच्यो कौशांबी संयुत प्रजा समाजा ॥
धर्मात्मा कुशनाभ रच्यो पुर भयो महोदै नामा।
नृप अमूर्तिरज धरमारण्य रच्यो पुर अति छबिधामा ॥
वसु जोहि नाम भूप सो विरच्यो गिरिव्रज नगर सोहावन।
यह वसुमती भूमि वसुकी है पंच शैल ये पावन ॥
नदी मागधी अति रमणीया मगध देश है बहती।
पंच पुहुमि धर मध्य विराजत गिरिमाला इव महती ॥
वसु नृप के पूर्वज ते सेवित अन्न प्रदाइनि भूरी।
नदी मागधी अति निर्मल जल इत ते है नहिं दूरी ॥

नृप कुशनाभ राजऋषि के जो रही घृताची रानी।
सो शत सुता जनी अति सुन्दर युवती भूषण जानी॥
दोहा--ते भूषण पट पहिरि कै, निकसी बागन बाग।
जिमि घन महँ बहु दामिनी, शोभित सहित सोहाग॥

छन्द चौबोला।

गावहिं नाचहिं बाज बजावहिं पावहिं आनँद भारी।
मची सकल वाटिका मनोहर नूपुरकी झनकारी॥
चितवनि चलनि अनूप रूप तिन समनहिं भूमि मँझारा।
कुशथली महँ भली बिराजहिं जिमि घन बिचबिच तारा॥
गुणाकरी लखि भरी सुयौवन पवन मोहि अस भाष्यो।
राजसुता तुम होउ दार मम मेरो मन अभिलाष्यो॥
बड आयुष पैहो सिगरी तुम त्यागहु मानुष भाऊ।
मनुष योनिमहँ यौवन चल है होवहु देव प्रभाऊ॥
अक्षै यौवन लहहु अमरता का तुम्हरी है हानी।
पवन वचन सुनि बिहँसि कन्यका बोलीं मंजुल बानी॥
अन्तर चरहु पवन प्राणिन के कछु नहिं तुमहिं छिपाना।
सुनहु देव वर वृथा करहु तुम कस हमरो अपमाना॥
हम कुशनाभ भूप की कन्या धन्या धर्म समेतू।
निजतप बल जो चहहिं अनिल तोहिं देहिं छुडाय निकेतू।
होसि कालवश कुमति प्रभञ्जन पिता सुनत अति माखी।
हठि कै तोर विनाश करैंगे सत्य चन्द्र रवि साखी॥
बरहि कहौ किमि अपने ते बर पिता अनादर होई।
अहै पिता प्रभु भाग्य हमारे जेहि देहै बर सोई॥
सुनत कन्यका वचन प्रभञ्जन प्रविशि कोप तनु माहीं।
कियो कूबरी सकल कुमारिन रहिगै शोभा नाहीं॥

दोहा--पवन प्रपीडित नृपसुता, व्रीडित दुखी दराज ।
जनक भवन को गवन किय, रोदन करत नराज ॥
सुता दीन लखि कूबरी, विस्मित कह्यो नरेश ।
कहाभयो को कूबरी, कियो तुमहिं कोहि देश ॥
को अधर्म कीन्ह्यो महा, भाषहु कस न कुमारि ।
तडफराहु अति ताप भरि, करहु विलाप पुकारि ॥
अस कहि भूपति योगिवर, कीन्ह्यो अचल समाधि ।
जानन हित दुख कन्यका, कीन्ह्यो कौन उपाधि ॥

छन्द चौबोला ।

सुनि कुशनाभ वचन कन्या सब कही गिरा शिरनाई ।
पिता पवन गहि अशुभ पंथ यह कीन्ह्यो धर्म विहाई ॥
हमहिं कह्यो तुम होउ दार मम देहैं देव बनाई ।
तब हम कह्यो ताहि अस मम पितु जेहि देहैं विधि ल्याई ॥
होई सो पति अवाशि हमारो जेहि विवाह पितु करिहैं ।
नहिं वरिहैं हम अपनेते पति यह अधर्म कहँ धरि हैं ॥
सुनि मम वचन पवन कोप्यो अति परख्यो नहिं तुव वानी।
प्रविशि अंगमहँ कियो भंग सब अनिल भयो दुखदानी ॥
सुनि दुहितनके वचन धरणिपति धार्मिक सो कुशनाभा ।
शत कन्या सों कह्यो वचन वर भूप तेज रवि आभा ॥
क्षमामान जे क्षितिमहँ सज्जन सदा क्षमा ते करते ।
क्षमा कियो तुम संमत करि सब याते अघ सब जरते ॥
राखी कुलकी लाज आज तुम कीन्हीं क्षमा कुमारी ।
क्षमा होति दुर्लभ देवन महँ मनुजन काह उचारी ॥
जैसी क्षमा कह्यो दुहिता तुम सिगरी धर्म विचारी ।
तैसी क्षमा होति कतहूँ नहिं वेद पुराण विचारी ॥

क्षमा दान अरु क्षमा सत्य तिमि क्षमायज्ञ तुम जानो।
क्षमा अहै यश क्षमा धर्म पर क्षमा जगत तिथि मानो॥
देव आभ कुशनाभ भाषि अस कीन्ही विदा कुमारी।
कीन्ह्यो मंत्र बोलि मंत्रिन सब सुता विवाह विचारी॥
दोहा--सचिव किये स्वीकार सब, सुता विवाह विचार।
उचित कुमारी व्याह अब, देश काल अनुसार॥

छंद चौबोला।

तौने कालमाहँ रघुनन्दन भयो महा मुनि चूली।
सिद्ध ऊर्द्धरेता शुभचारक किय तप ब्रह्म न भूली॥
ताहि करत तप लखि गन्धर्वी सेवन कियो तहांहीं।
नाम सोमदा सुता उर्मिला धर्म सहित वन माहीं॥
परमप्रीति करि मुनिसेवनरत बसी विपिन मुनि सङ्गा।
कछुक कालमहँ चूलि नाममुनि बोले वचन अभङ्गा॥
हे गन्धर्वी तुव सेवासे भो प्रसन्न मन मेरो।
कौन करौं उपकार कहौ तुम माँगु जौन मन तेरो॥
अति सन्तुष्ट जानि मुनिको तहँ गन्धर्वी भरि चैना।
कह्यो जोरिकर परमप्रीतिसों अतिशय मंजुल वैना॥
ब्रह्मतेजसंयुत मोहिं दीजै धार्मिक एक कुमारा।
नहिं मेरे पति नहिं मेरे सुत नहिं काहूकी दारा॥
सुनहु विप्रवर मैं शरणागत दीजै विमल कुमारा।
सुनि गन्धर्वी वचन चूलि मुनि दीन्ह्यो पुत्र उदारा॥
संकल्पहि ते दियो ताहि सुत ब्रह्मदत्त अस नामा।
ब्रह्मदत्त सोमदा तनय सों भयो तेज बल धामा॥
बस्यो कांपिलीपुरी सोहावन जिमि सुरपुर सुरराजा।
सोई ब्रह्मदत्त भूपतिको नृप कुशनाभ दराजा॥

चाह्यो देन सतौ दुहिताको तुरत बरात बोलाई।
क्रमसों दियो विवाहि उछाहित दै संपति समुदाई॥
दोहा--ब्रह्मदत्त कन्या करन, कियो ग्रहण जेहि काल।
मिट्यो पवन क्रम कूबरो, विलस्यो रूप विशाल॥
देखी सुंदर सब सुता, विगत पवनकृत रोग।
महाराज कुशनाभ तब, हर्षित भो बिन शोग॥
ब्रह्मदत्तको ब्याह करि, दै दाइज धन भूरि।
कीन्ह्यो बिदा सदार तेहि, पहुँचायो कछु दूरि॥
पुत्रवधू लखि सोमदा, पायो परम अनन्द।
कर गहि गहि गृह लै गई, नृपहि सराहि सुछन्द॥
इतै भूप कुशनाभ तहँ, करि कन्यका विवाह।
पुत्रइष्टि सुतहेत किय रह्यो पुत्रहित दाह॥
इष्टि समापति जब भई, तब कुश ब्रह्म कुमार।
कह्यो आप कुशनाभते, पैहौ पुत्र उदार॥
तुव समान धार्मिक महा, नाम गाधि अस जासु।
सो पैहौ सुत तासु बल, कीरति करी प्रकासु॥
अस कहि कुश कुशनाभसे, गगनपंथ ह्वै आशु।
गयो सनातन ब्रह्मपुर, कुश करि सुयश प्रकाशु॥

छंद चौबोला।

थोरे काल माहिं रघुकुलमणि सो कुशनाभ अगारा।
धर्म धुरन्धर जग महँ जाहिर जन्म्यो गाधिकुमारा॥
सोई मोर पिता रघुनायक धर्म धीर धन धामा।
है हमार कुशवंश राम यह ताते कौशिक नामा॥
सत्यवती जेठी भगिनी मम पिता ऋचीकहि व्याही।
गमनी सहित शरीर स्वर्ग सो पति सेवन उतसाही॥

धर्मवर्द्धिनी सत्यवती सो पातिव्रत धर्म प्रचारा।
महानदी सो भई कौशिकी जगमें परम उदारा॥
दिव्य पुण्य जल अति रमणीया हिमगिरि ते प्रगटानी।
करत अमल परशतजल जगमें लोकन मङ्गलदानी॥
हमहुँ बसे हिमवान कंदरा नदी कौशिकी तीरा।
भगिनि सनेह सने कीन्हे तप कछुक काल रघुवीरा॥
नेमहेत पुनि सिद्धाश्रम में आये भगिनि विहाई।
सो सिद्धाश्रम सत्य भयो तुव विक्रम ते रघुराई॥
यह वरण्यों उत्पात्ति आपनी वंशहु कियो बखाना।
जो पूछ्यो तुम दशरथनंदन देशहु कर अख्याना॥
कथा कथत रघुनायक तुमसों बीति गई अधराता।
युगल बंधु अब शयन करीजै ह्वै हैं पाउँ पिराता॥
बहुत दूरि चलि आये मारग अति सुकुमार कुमारे।
तुमहिं चलावत होत पंथ दुख कौसल्या के बारे॥
दोहा–मुनिजन कीजै शयन सब, हमहुँ कछुक अलसान।
नवल नृपति नंदन युगल, नलिन नयन अरुणान॥

चौपाई।

यह यामिनि कामिनि सुखदाई। जगउ जीव कहँ आलसदाई
तरु निहचल जनु अति अलसाने। मुकुलित कंज कुमुद बिकसान
शशी प्रकाशित भासित तारा। भयो मंद मनु जन संचारा
सोवन लगे बिहंग अपारा। सोवहिं चरहिं कुरङ्ग सदारा
अंधकार छै रह्यो दिशानन। झिल्ली झनक परैं सुनि कानन
प्रचरहिं प्रचुर निशाचर घोरा। प्रेत पिशाच प्रमोद न थोरा
कहुँकहुँ कूकत मुदित मयूरा। करत मनहुँ वंशी रव पूरा
कहुँकहुँ चातक बोल सोहावन। भये अमूक उलूक भयावन
क्रम क्रम सन्ध्या सकल सिरानी। मनु नखतनकी मिटी गलानी

उयो सिंधु ते शशी सोहायो। मनहुँ जीति रण रविहि भगायो॥
निरखत शशि हरषत जग प्रानी। कौन इंदु सम आनँद दानी॥
रवि कर घोर ताप जग छावत। कहु मयंक बिन कौन मिटावत॥
फैल रही फावि फरश जोन्हाई। मानहुँ हिम वितान सुखदाई॥
नव पल्लव चमकत चहुँ ओरा। मुकुतमाल जनु बिपिन करोरा॥
अंधकार रजनी कर भारी। कौन बिना हिमकर हठि हारी॥
संयोगिनि रजनी सजनी सी। होति वियोगिनि सोइ अहिनीसी॥
भयो निशा वश विश्व सनाका। पर्‌यो मनौ रविकर पर डाका॥
तोयतरंग मंद मृदु बाता। कोकी कोकन शोक अघाता॥
चरहिं फणी धरि मणी सुखारी। कंजन कोस ओसकन धारी॥
यहि विधि कौशिक निशा बखानी। आलसबालितबन्दाकियबानी॥

दोहा--लगे प्रशंसा करन मुनि, साधु साधु मुख गाय।
अति उज्ज्वल कुशवंश यह, निरत धर्म समुदाय॥
जे नर भे यहि वंश महँ, ते करतार समान॥
पुनि विशेषि कुश कुल कमल, विश्वामित्र प्रधान॥
नदी कौशिकी सरित बर; कुल को कराति उदोत।
सुयश रावरो धरणि में, वराणि पार को होत॥
यहि विधि सुनि मुनिजन वचन, मुनिवर मुदित अगाध।
गाधिसुवन सोवत भये, जानि बिगत सब बाध॥
राम लषण सुनि सुयश युत, विश्व विदित कुशवंस।
हंस वंश अवतंस दोउ, विस्मित किये प्रशंस॥
सोवत जानि मुनीश को, भयो अस्त जनु भान।
तृण साथरी बिछाय कै सोये राम सुजान॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमाहाराजा बहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई कृते श्रीरामस्वयंवरग्रंन्थे कौशिकवंशवर्णनं नामद्वादशः प्रबन्धः॥ १२॥

दोहा--सुखद सोनतट मुनिनिकट, सोवत लक्ष्मण राम।
ब्रह्म मुहूरत होत भो, जागे मुनि मतिधाम॥
अरुणाई छाई ललित, प्राचीदिशा निहारि।
मुनि मंजुल बोले वचन, करि अस्मरण मुरारि॥

सवैया।

हे रघुवंशके वारिज भान, प्रधान प्रधानन में सुखदाता
श्रीअवधेशके नंदन बांकुरे, बीर शिरोमणि विश्वविख्याता
श्रीरघुराज सुनो कृतकाज, सुदेव मुनीन समाज के त्राता
श्यामल गात दृगै जलजात, उठो अब तात भयो है प्रभाता
मोहि गईं इन नैनन में, ताजि है नहिं नींद तुम्हैं ताजि दीजै
आलस त्यों अँगिरानकी व्याजन, छोडति अंगन संग करीजै
श्रीरघुराज दिनेश हुलासित, अर्घके आसित तोषित कीजै
पायन पर्शन को पुहुमी पथ, केमिस चाहति प्रेम पतीजै
रविके यशसों लजिके, भजि चंद्र दुरयो गिरि अस्त मँझारी
आप प्रतापते कोमल तेज, विलोकन आवत तोषि तमारी
श्रीरघुराज लला लखो कौतुक, सांझ गये फँसि भौंर दुखारी
वारिजके विकसे निकसे, पिकसे तनुके परै पीत निहारी
दोहा–करत शयन बीती निशा, भयो राम भिनसार।
उठहु तात मज्जन करहु, सज्जन के आधार॥

छन्द चौबोला।

सुनि मुनि वचन उठे रघुनायक अलसाने अँगराने।
करसों कर गहि लषण उठाये मुनि वंदे सुख साने॥
मज्जन हेत गये नद तट पर प्रातकृत्य निरबाही।
सविधि नहाय कियो संध्या पुनि दीन्ह्यो अर्घ्य उछाहीं॥
ह्वै तयार कर लै धनु सायक रघुनायक दोउ भाई।

विश्वामित्र संग पगुधारे लखे सोन सुखदाई ॥
सुनि सो मृदुल बैन बोले प्रभु सोनभद्र यह पावन ।
अहै महानद महा पुण्यप्रद दुहुँ दिशि पुलिन सोहावन ॥
मज्जन करत रहे पापन को हेरि हद हुलसावै ।
सकल नदिन महँ नद विराजत सद सुयश जगछावै ॥
विमल नीर गंभीर न कहुँ थल तीर तीर वन सोहै ।
कट्यो महीधर मेकल सो यह हरत कलुष जो जोहै ॥
फोरत विविध धराधर आयो वसुंधरा छबिदाई ।
निर्मलजल भल उथलसकलथलमलतमनुजमलिनाई ॥
मुनिवर उतरब अब पायँन सों नहिं तरनी कर कामा ।
विश्वामित्र बैन बोले हँसि सुनहु लषण अरु रामा ॥
जो मारग मुनिजन दरशायो तेहि मारग ह्वै जैहें ।
आजु दूर नहिं गंग तीर महँ तुमरो वास करैहैं ॥
अस कहि राम लषण सँग लैकै मुनिवर सहित समाजू ।
उतरे सोन भौन आनँद के चले पंथ कृतकाजू ॥
दोहा—चलत चलत तेहि पंथमहँ, बीति गये युग याम ।
विष्णुपदी सरिता लखे, गंगा जग जेहि नाम ॥

कवित्त ।

स्वच्छहै कछारा हँसि करत विहारा महा, तुङ्गहै कगारा मुनि मज्जत अपारा है । एक ओर देवदारा देव करतारा लिहे, विविध प्रकारा कोलि करत हजाराहै ॥ रघुराज हीरनके हारा इव धौल धारा, धरणी मझारा धावे करि घहरारा है । पुण्यको पसारा अघ मानको अधारा कर, पापनको छारा कलिकालको पछारा है ॥

दोहा—कलरव सारस हंसको, मच्यो गंग दुहुँ ओर ।
चक्रवाक माला विमल, करत मनोहर शोर ॥

देखि सरिस वर सुरसरी, मुनि युत राजकुमार ।
करि प्रणाम अस्तुति किये, आँनद लहे अपार ॥
विष्णुपदी के तीर में, कीन्ह्यों कौशिक बास ।
राम लषण मुनि मंडली, पाये सकल सुपास ॥

छंद चौबोला ।

कीन्ह्यो मज्जन सविधि गंग महँ देव पितर संतोषे।
सविधि कियो पुनि होम अनल में सकल धर्मके चोषे॥
यहि विधि मुनि तहँ राम लषण को मज्जन विधि करवाई।
ऋषिन सहित आपहु मज्जन करि बासथली महँ आई ॥
कंद मूल फल सुधा सरिस लै राजकुमारन दीने ॥
अपने ढिग भोजन कराय कर पायँ धोवाय प्रबीने ॥
बैठे राम लषण संयुत मुनि मुनि मंडली बिराजी।
सुचितचित्तकरिनित्यकर्मसबलखिसुरसरिअतिराजी ॥
अवसर जानि जोरि कर पंकज राम कह्यो शिरनाई।
नाथ सुनन की कछु अभिलाषा सो अब देहु सुनाई ॥
कौन भाँति त्रैलोक्य नाकि कै गंग धरा महँ आई।
पावन करत अपावन जन को मिली नदीपति जाई ॥
सुनत राम के वचन महामुनि मधुर महा सुखदाई।
वृद्धि जन्म गंगा को वर्णन करन लगे हुलसाई ॥
है हिमवान महान महीधर आकर धातुन केरो।
जहाँ लसत सुंदर बदरी वन तपसिन वृन्द बसेरो ॥
ताके प्रगटीं परम सुंदरी युग सुकुमारि कुमारी।
नाम मेनका हिमगिरि का तिय मेरु सुता छबिवारी॥
सोइ मेनका सुता जनी द्वै जेठि गंग भो नामा।
ताकी अनुजा भई दुतीया उमा नाम छबि धामा।

दोहा--हिमिगिरि की जेठी सुता, गङ्ग नाम की जोय ।
सुरकारजके करन हित, सुर माँगे सुख मोय ॥

छंद चौबोला ।

सुनि देवनकी बिबिध याचना अति हर्षित हिमवाना ।
लोकपावनी अघनशावनी कियो सुता कर दाना ॥
तीन लोक मङ्गलके कारण कामचारिणी गङ्गा ।
लै तेहि सुखी स्वर्ग गमने सुर माने सिद्ध प्रसंगा ।
तीन लोक हित जब गंगाको लै सुर स्वर्ग सिधारे ।
उमा दूसरी हिमागिरि कन्या तब तप करन विचारे ॥
गई विपिन कहँ कियो महातप शिव पति होयँ हमारे ।
जानिसुता रुख हिमपति व्याह्यो शंकरको सुखधारे ॥
लोकवंदिनी पापक्रंदिनी हिमिगिरि युगल कुमारी ।
तिनको यह चरित्र कछु वरण्यो राम लषण धनुधारी ॥
गङ्गा जेठी उमा दूसरी देवी शंभु पियारी ।
जेहि विधि गमनी गंग सुरालै सो सब दियो उचारी ॥
प्रथम गई गिरवान सदन कहँ गगनपन्थ ह्वै गंगा ।
सोई सुरसरिता रमणीया कराति कलुष कुलभंगा ॥
सुनहु सुजन गतिदान शिरोमणि तुव पद पाथ प्रवाही ।
कस पूछहु अनजानतसे मोहिं तुम्हहिं विदितका नाहीं ॥
जब सुरलोक गई सुरसरिता सुरपुर अघ हरि लीन्ही ।
मन्दाकिनी नाम अस पायो अमरन आनँद दीन्ही ॥
सोई यह राजति अवनीमहँ कालि कल्मषकी आरा ।
अधरम धुरा विध्वंस कराति ध्रुव धरणी धावति धारा ॥
दोहा-जे मज्जत पीवत सलिल, नैनन निरखत गंग ।
नाम उचारत नित बदन, होत पाप तिन भङ्ग ॥

छन्द चौबोला।

यहि विधि सुनि मुनिवरकी वाणी राम लषण सुख पाई।
चरण बंदि बोले अति हर्षित मन विस्मित दोउ भाई॥
ब्रह्मवंश शिरमौर धर्मयुत तुम वरणी यह गाथा।
हिमगिरि जेठि सुताको चरित कहो सिगरो मुनिनाथा॥
दिव्य लोक अरु मानुष लोकन किमि सुरसरि चलि आई।
तीनिहुँ लोक प्रवाह प्रथित भो कौन हेत मुनिराई॥
यह सुरधुनी कथा न सुनी हम कहहु मुनीश उदारा।
त्रिकालज्ञ तुम सुनन आश मोहिं करहु कथा विस्तारा॥
केहि विधि गंगा भई त्रिपथगा जाहिर तीनहुँ लोका।
हे धर्मज्ञ कर्म कैसे किय तीनहुँ लोक अशोका॥
विश्वामित्र तपोधन सुनिकै राजकुँवरकी बानी।
लागे कहन गंग गाथा मुनि मंडल मध्य विज्ञानी॥
प्रथमहिं भयो विवाह शंभुको उमा बरच्यौ बरिआई।
निरखि भवानीको शंकर प्रभु मोहित भे ललचाई॥
रास विलास करत गौरी हर बीति गये शत वरषा।
नहिं जन्म्यो कुमार सुरसैनप भये देव बिन हरषा॥
तब विरंचि आदिक सिगरे सुर गमन किये कैलासा।
करि अस्तुति शिरनाइ बार बहु कह्यो सुनहु कृतवासा।
देव देव हे महादेव तुम लोकन के हितकारी।
वंदत देव वृन्द तुमको प्रभु करहु प्रसाद पुरारी॥
दोहा--नाथ तिहारो तेज यह, सकै लोक नहिं धारि।
विहित वेद विधि करहु तप, उमा सहित त्रिपुरारि॥

छंद चौबोला।

तीन लोक हित हेतु शंभु प्रभु धारण कीजै तेजा।
रक्षहु सकल लोक लोकनपति कंपत सुरन करेजा॥

सुनत महेश्वर देवन वाणी वचन तथास्तु उचारा।
कह्यो सुरनसों पुनि गिरिजापति शोक टरै नहिं टारा॥
धारण करब तेज अपनेमें होइ त्रिलोक सुखारी।
पतित तेज जो भयो हमारो कहहु देव को धारी॥
तब बोले सब देव जोरि कर धरणी धारण करिहै।
सुनहु महेश शंभु वृषभध्वज यहि विधि जग सुख भरिहै॥
वामदेव सुनि विबुधन विनती त्यागो तेज कराला।
रह्यो छाइ पृथिवी गिरि कानन जगी ज्वलन इव ज्वाला॥
सकी न धरणि सम्हारि तेजसो तब भे देव दुखारी।
कह्यो पाकशासन अति दुखित हुताशन काहि हँकारी॥
प्रविशहु शम्भु तेजमहँ पावक पवन सहाय बोलाई।
सुनत शक्र शासन कीन्हों तस पवन हुताशन जाई॥
प्रविशत पावक पवन तेज हर भयो श्वेत गिरि रूपा।
कछुक काललहि सरवन भयऊ दिनकरअनलस्वरूपा॥
सो सरवनमें भयो स्वामिकार्तिक जेहि नाम उचारा।
सकल देव मुनि है अति हर्षित गे कैलास पहारा॥
उमा शंभुकी अस्तुति कीन्हें जै जै शंभु भवानी।
भये प्रसन्न सुनत गिरिजापति सुरसमाज हरषानी॥

दोहा—गीर्वाणको देखिकै, गौरी गुणि सुर दोष।
अरुणनयन बोली वयन, करि देवनपर रोष॥

छन्द चौबोला।

सुत अभिलाष हमारी हरिलिय किये देव अपकारा।
ताते सुनो कुमार आजुते नहिं जनिहै तुव दारा॥
सुत संभव पौरुषते हीने हैहौ नाक निवासी।
पुत्र जन्म सुख कबहुँ न पैहौ रैहौ संतत आसी॥

तबते देवनकी दारनमें जन्मैं नहीं कुमारा।
गौरी शाप आजुलौं लखियतु है रघुराज उदारा॥
यहि विधि देवन शिवा शाप दे दई शाप धरणीको।
धर्यो तेज तैं मेरे पतिको धिक २ तुव करणीको॥
पृथ्वी तेरे होइँ रूप बहु होइँ बहुत पति तेरे।
पुत्र प्रमोद लहै कबहूँ नहिं शाप प्रभावहि मेरे॥
मोर पुत्र सुख तुही निवार्यो ताते सुत नहिं होई।
रे कुमतिन पातिव्रत धर्म रही नहिं बहुपति जोई॥
शिवा शाप सुनि सुरसमाज सब शोकित भे सुखहीने।
देवन दुखी देखि गिरिजा हर गमन वरुणदिशि कीने॥
जाइ हिमाचलके उत्तरदिशि गौरीयुत गौरीशा।
करन लगे तप कठिन उमा हर मिलनहेत जगदीशा॥
भन्यो चरित्र भवानीको यह करि नेसुक विस्तारा।
सुनहु बहुरि गंगाचरित्र अब दशरथराजकुमारा॥
जप तप करन गये गौरी हर हिमगिरि उत्तर आसा।
अनिल अनलयुतअमर सिद्ध मुनि गे तब ब्रह्म अवासा॥

दोहा--सेनापतिको सुरनको, होइ यही अभिलाष।
इन्द्र अनिल यम वरुणशिखि, आदि देव ऋषि लाष॥
वंदन किये स्वयंभुको, अस्तुति करि नहिं थोरि।
सुनहु पितामह यह विनय, कहत देव करजोरि॥

छन्द चौबोला।

जो प्रथमहिं दीन्ह्यो सेनापति देवनको करतारा।
सो अबलों नहिं भयो भूमिमें करै को रिपुसंहारा॥
उमा शंभु तपकरत हिमाचल सेनापति कामि पामैं।
याको करि विचार करतार करो पूरण मनकामैं॥

देवनके अज अहौ परम गति पूरक उर अभिलाषा।
सुनि सुर बैन प्रबोधि विबुधगण मधुर चारिमुख भाषा॥
अब नहिं ह्वैहै देवनके सुत दीन्ह्यो शाप भवानी।
शिवाशाप को मेटि सकै जग लेहु सत्य सुर जानी॥
यह आकाश गामिनी गंगा पावक पाय सहाई।
महाप्रबल सुरगणको नायक सेनापति प्रगटाई॥
जेठि सुता हिमगिरिकी गंगा जबहिं पुत्र ले आई।
तबै उमा अमर्ष नहिं करिहै लैहै सुत अपनाई॥
ऐसे सुनि करतार वचन सुर अतिशय आनँद पाई।
गमनत भये देव कैलासे चतुरानन शिर नाई॥
देख्यो अति उतंग भूधर मणि मंडित धातु हजारा।
पुत्र हेतु पावक बोलाइके ऐसे वचन उचारा॥
धूमकेतु सुरकारज के हित शम्भु तेज जो धारा।
सो अब तजहु तुरत गंगामहँ प्रगटै प्रबल कुमारा॥
सुनत गीर्वाणनकी वाणी अग्नि गंग ढिग जाई।
कह्यो देवि अब गर्भ धरहु उर देवनको सुखदाई॥
दोहा--अनल बैन सुनि सुरनदी, धरयो दिव्य निज रूप।
लखि सुरसरि महिमा अनल, त्यागो तेज अनूप॥

छंद चौबोला।

त्यागत तेज सुनो रघुनन्दन गंगा सोतन माहीं।
गयो पूरि सब थल दौड़ पारन ज्वालमाल दरशाहीं॥
अतिविकरालज्वालनिकसतजलमनहुँ कुंडघृत डारयो।
सकल देवके आनि पुरोहित गंगा ताहि उचारयो॥
तुव उद्भूत त्रिनेत्र तेज यह सकौं न मैं अब धारी।
भई व्यथित अतिजरत अंग सब क्षणमहँ चाहत जारी॥
पावक भाष्यो विष्णुपदीसों शंभु तेज अति घोरा।

तजहु हिमाचलके पाषामें यह सम्मत है मोरा॥
सुनत अनलके वचन जाह्नवी तेज ऐंचि सो तनते।
तज्यो हिमाचल कन्दर अंदर बंदर भागे वनते॥
तजत तेज जो गिऱ्यो धरणिमें कनक भयो पुनि सोई।
तप्त सु जांबूनद सम भाषित लखे देव सब कोई॥
तीक्षणता जो रही तेजकी तामें लोह सु भयऊ।
रह्यो तेज कोमल जो सोई सीस राँग है गयऊ॥
यहि विधि धरणि तेज धूर्जटिको परत भई बहुधातू॥
शंकर तेज प्रभाव हिमाचल भयो कनक संघातू॥
पर्वत कानन लता कुंज तरु तृण पाषाण अपारा।
भये कनकके चटक चारु अति पुरुष सिंह यक बारा॥
जातरूप तबते कहवायो यह सुवरण जगमाहीं।
प्रगट्यो एक कुमार चारु अति शंकर तेज तहाँहीं॥
दोहा--देव मरुतगण सङ्ग लै, आयो बासवधाय।
अतिसुकुमार कुमार लखि, लीन्ह्यो अंकलगाय॥

छंद चौबोला।

को बालक को क्षीर पियावै यह शंका प्रगटानी।
षट कृत्तिका सुरेश बोलायो कही विमल तिन बानी॥
जो यह बालक होइ हमारो तौ हम दूध पियावैं।
देव कह्यो शिशु अहै तिहारो यह संमत ठहरावैं॥
षट कृत्तिका मानि सुत आपन बालक क्षीर पियायो।
तब बासव तेहि कार्तिकेय अस शिशुको नाम धरायो॥
पुनि तहँ सकल देव अस भाषैं यह कृत्तिका कुमारा।
ह्वैहै तीनि लोक महँ जाहिर बल विक्रमी अपारा॥
षट कृत्तिका सुनत सुर वाणी गर्भमालिन सुत जानी।

नहवायो तेहि विमल गङ्गजल शिशु आभा प्रगटानी ॥
पावक ज्वाल सरिस बालक सो अति सुन्दर सुकुमारा।
भो असकंद गर्भ ताते असकंदहि नाम उचारा ॥
क्षीर पियावन लगी कृत्तिका यक बालक षट नारी।
षटमुखकरि शिशु षटजननीको किय पय पान सुखारी॥
एक दिवसमें षट जननीको षटमुख करि पय पाना।
भयो युवा सुकुमार मनोहर विक्रम ओजनिधाना ॥
बाहन भयो मयूर तासु पुनि लै कर शक्ति प्रचण्डा।
कीन्ह्यो दलन दैत्यदल निज बल तारक हन्यो उदण्डा॥
सुखित भये सुर कार्तिकेयको सुर सेनापति कीन्हे।
किय अभिषेक देवदलनायक नाम तासु करि दीन्हे ॥
दोहा--अग्निसहित सिगरे अमर, देखि अतुल द्युति तासु ।
हर्षवन्त सब होतभे; पूरण भयो प्रयासु ॥
यह गंगाको चरित मैं वरण्यों राज कुमार।
महा धन्य अति पुण्यप्रद, संभव कह्यो कुमार ॥
कार्तिकेयके भक्त जे, हैं अनन्य महि माहिं।
बड आयुष सुत नाति लहि, तासु लोकको जाहिं ॥
यह कौशिकमुनि रामसों, कथा माधुरी गाय।
लगे कहन इतिहास पुनि, रविकुलका हरषाय ॥

छंद चौबोला ।

भयो अयोध्या अधिपभूप यक बल प्रताप तपधामा ।
कीन्ह्यो नवौ खण्डमँह शासन रह्यो सगर अस नामा ॥
यक वैदर्भभूपकी दुहिता नाम केसिनी जाको ।
भई जेठ महरानी नृपकी धारयो धर्म धुराको ॥
द्वितिय अरिष्टनेमकी दुहिता सुमति नाम नृपनारी ।

रह्यो न पुत्र सगर भूपतिके ताते भयो दुखारी ॥
भूप सगर लै दोऊ रानी गयो हिमाचल माहीं ।
भृगु प्रश्रवन निकट तप कीन्ह्यो भृगुमुनि रहे तहांहीं ॥
करत करत तप बिते वर्ष शत भृगुमुनि भये प्रसन्ना ।
दिय वरदान सगरभूपतिको ब्रह्मतेज सम्पन्ना ॥
महाराज तुम संतति पैहौ अति कीरति ससारा ।
यकतिय जनी वंश करसुतयक यक तिय साठि हजारा ॥
भृगुके वचन सुनत दोउ रानी कह्यो वंदि कर जोरी ।
कैसो यक सुत साठि सहस कस भाषहु नाथ बहोरी ॥
सुनि रानिनके वचन ब्रह्मऋषि दीन्ह्यो वचन उचारी ।
एक कुमार वंश कर होई करी उपद्रव भारी ॥
साठि हजार कुमार अपार बली ह्वै हैं उत्साही ।
दुइमें कौन कौन वर लैहै कौन आश केहि काही ॥
सुनि मुनि वचन केसिनी लीन्ह्यो पुत्र वंश कर जोई ।
लहुरी सुमति गरुड भागिनी तहँ लियो बहुत सुतसोई ॥

दोहा--कीर्तिवंत बलवन्त सुत, होवैं साठि हजार ।
लीन्ह्यो अस वर सगर तिय, भृगुसों राजकुमार ॥

छन्द चौबोला ।

सगरभूप रानिनते संयुत भृगु परदक्षिण दीन्ह्यो ।
अति आनन्दमसों रघुनन्दन अवध आगमन कीन्ह्यो ॥
काल पाय जेठी महरानी जन्म्यो एक कुमारा ।
भयो भुवन जाहिर असमंजस ताकर नाम उचारा ॥
गरुड भागिनि जन्म्यो यक तुंबा तामें बीज अपारा ।
बीज भेदते भे कुमारते सुन्दर साठि हजारा ॥
सुमति कुम्भ तब साठि सहसलै भरि भरिघृत सबमाहीं

यक यक बीज डारि यक यक घट दीन्ह्यो धाइन काहीं ॥
यक यक बीजन ते यक यक सुत होत भये दुति खासी।
धाय सकल पय प्याय बढायो भये युवा बलराशी ॥
यहि विधि सगर अवधपतिके तहँ अतिशै प्रबल कुमारा।
जेठ भयो असमंजस आत्मज लहुरे साठि हजारा ॥
जेठो सगरसुवन असमञ्जस करनलग्यो अघ भारी।
अवध प्रजनके पुत्र पकारिकै देतो सरयू डारी ॥
बूडत तिनहिं निरखि कै विहँसत रोवत प्रजा दुखारी।
हाहाकार मच्यो कौशलपुर देहिं प्रजा सब गारी ॥
प्रजा अहित रत निरखि पुत्रको नहिं सहिगयो पुकारा।
दियो निकारि सगर भूपति तब कानन कुटिल कुमारा ॥
रह्यो एक असमञ्जसके सुत अंशुमान अस नामा।
महाबली भो परम धर्मरत सम्मत लोक ललामा ॥

दोहा--यहि विधि बीत्यो काल कछु, रघुवर सगर नरेश।
अश्वमेधके करनको, कियो मनोरथ वेश ॥
मंत्रिनसों करि मन्त्र नृप, ज्ञाता वेद विधान।
कीन्ह्यो यज्ञ अरम्भ को, सगर नरेश सुजान ॥

छन्द चौबोला।

रघुनंदन सुनि मुनिवरवाणी बोले करि अति प्रीती।
सुनन चहत विस्तार सहित हम कथा यथा मख रीती ॥
कैसे कियो यज्ञ वेदज्ञ सो पूरव पुरुष हमारे।
सुनि नरनायक कुँवर वचन वर मुनिवर वैन उचारे ॥
सुनहु राम नृप सगर यज्ञ जस कीन्ह्यो परम उदारा।
शङ्कर श्वशुर हिमाचल नामक है अति तुङ्ग पहारा ॥
तैसहि दक्षिण दिशा विंध्यगिरि पावन परम उचारा।

दोउ धरणीधर बिचकी धरणी अति शुचि वेद विचारा
यज्ञ दान जप तपके लायक तेहि माहि सगर भुआल
यज्ञ अरम्भ कियो मुनिसंयुत रचि विशाल मखशाल
देखि परैं जहँ ते दोउ पर्वत विंध्य और हिमवाना
अंतर्वेद इक नाम देशको भारतखण्ड प्रधाना
छूट्यो अश्वमेध को वाजी अंशुमान रखवार
कीन्ह्यो ताहि सगर नरनायक भेज्यो कटक अपारा
यज्ञपर्वमहँ वासव आयो राक्षस रूप बना
हरचो तुरंत तुरंग यज्ञको भये दुखित द्विजरा
उपाध्यायगण जाय कह्यो तब सुनहु भूप यजमा
मखवाजी लै गयो चोर कोउ यह भयो विघ्न महान
मारहु तुरत तुरंगचोरको ल्यावहु वेगहि वा
विगत विघ्न ऋतु करहु समापत हम ह्वैहैं तब रा
दोहा—यज्ञ विघ्न हठि करत है, सबहिं अमंगल घ
करहु वाजिमख निर्विघन, हनहु हेरि हय चो

छंद चौबोला ।

सगर राज मुनि सभा बैठि अस उपाध्यायकी बा
बोल्यो साठि हजार कुमारन शासन दियो विज्ञा
मन्त्र पवित्र ब्रह्मऋषि मण्डल करहिं यज्ञको क
तहँ राक्षसन शक्ति नहिं आवनि हरै तुरंग अध
ताते तुरत जाहु हय हेरहु मंगल होय तुम्हा
यह समुद्र माला महि मण्डल बचै न विना निहा
जो बसुधा विस्तार विलोके नाहिं विलोकहु वा
तौ खनि डारहु सकल मेदिनी इक इक योजन रा
जहँ लौं मिलै न मखको वाजी तहँ लगि कारिसुत क

यक २ सुत यक २ योजन लगि खोदि धसावहु धरनी ॥
मख दिक्षित हम उपाध्याय युत बैठे लै निज नाती ।
जबलगि नहिं तुरंग देखब हम तबलगि अति दुख छाती॥
सुनि पितु शासन साठि हजार कुमार, महाबलवारे ।
चले अश्व खोजन अवनीमहँ पितु रजाय शिर धारे ॥
डारे खोजि सकल धरणी कहँ लखे न कतहुँ तुरंगा ।
साठि हजार कुमार महाबल रँगे कोपके रंगा ॥
एक कुमार एक योजन लों वज्र सरिस निज बाहू ।
डारचो खोदि खूब धरणीको भयो मेदिनी दाहू ॥
कुलिश सरिसलै शूल करनमहँ तिमि दारुण हलधारा ।
गई खोदि वसुमती विकल अति कीन्ह्यो, घोर चिकारा ॥
दोहा--मारे गये भुजंग बहु, भो बहु असुर विनास ।
राक्षसहू केते हते, भय जीवन बाढ़ि त्रास ॥

छन्द चौबोला ।

हाहाकार मच्यो महि मंडल प्राणिन कियो पुकारा ॥
सगर सुवन खनि डारचो धरणी योजन साठि हजारा ॥
सुनहु पुरुष पंचाननते सब खनत खनत महि काहीं ।
पहुँचे जाइ रसातल सिगरे अंत धरातल माहीं ॥
यहि विधि जंबूद्वीप शैल युत खोदत सगर कुमारा ।
चारिहु ओर अवनि फिरि आये नहिं मख वाजि निहारा ॥
तब सुर असुर और गन्धर्वहु पन्नग भये दुखारी ।
जाय सत्यलोकै अति विस्मित जहाँ वसत मुखचारी ॥
सुर सब करि अस्तुति विरंचि को अति विषन्न मुख कीने॥
कहे पितामहसों सन्तापित वचन भूरि भय भीने॥
हे चतुरानन सगर कुमारन धरणि खोदि सब डारे ।

अपने बलते विन अपराध वृथा जल जीवन मारे ॥
यही हमारो यज्ञ विघ्न किय यही तुरंग चोराये।
अस कहि कहि मारे बहु जीवन सगर सुवन भ्रम छाये ॥
सुनि देवनके वचन पितामह तिनको देखि दुखारी।
काल प्रभाउ सकल मोहित गुनि कही गिरा सुखचारी ॥
जाकी यह सिगरी वसुधा है वासुदेव भगवाना।
कपिल रूप ह्वै पालत पुहुमी नाशत नेवर नाना ॥
तासु कोप पावकमहँ जरिहैं सिगरे सगर कुमारा।
कल्प कल्पमहँ खनत मही जारत तिन कपिल उदारा ॥
दोहा--सगर सुवनको और विधि, कबहुँ होत नहिं नास।
सुनि विधि शासन तेंतिसौ, देव गये निज बास ॥

छंद चौबोला ।

इतै प्रचंड सगरके नंदन साठि हजार उदंडा।
खनन महीको हनत भूमिचर माच्यो शोर अखंडा ॥
मनहुँ होत पविपात पुहुमिपर धुंधकार भो भारी।
उछलत सिंधु सलिल अंबरलौं लागत शूल कुदारी ॥
यहिविधि खनतखनत धरणीको चारिहुदिशि फिरि आये।
सगर सुवन चलि अवध नगरमहँ जनकहि वचन सुनाये ॥
डारचो ढूँढि भूमि भूधर वन मारचो जंतु अपारा।
दानव देव पिशाच उरग निशिचर किन्नर संहारा ॥
मिल्यो न पिता अश्व मख वाजी हरनहार नहिं पायो।
काह करैं दीजै अब शासन बुद्धि विचारि सुनायो ॥
सुनि पुत्रनके वचन सगर नृप करि अमर्ष अतिघोरा।
बहुरि कुमार खनहु वसुधातल लौटो हनि हय चोरा ॥
मख वाजी बाजी कर हरता जब लगि मिलै न प्यारे।

तब लगि खोजहु खनहु खूब महि पालत वचन हमोर ॥
सुनि पितु शासन सगर सुवन सब साठि सहस्र बलीने ।
खनत खनत महि गये रसातल पितु शासन साति कीने ॥
लखे पर्वताकार महा दिग्गज धरणी धारि ठाढो ।
वन पर्वत सरि सिंधु सहित महि धरे शीश बल गाढो ॥
बहत गण्ड मद रद उदण्ड अति विरूपाक्ष जेहि नामा ।
सगर सुवन दै दिग्गज को परदक्षिण किये प्रणामा ॥

दोहा--पर्व पाय दिग्गज जबै, अमित कँपावत माथ ।
तबहिं होत भूकम्प महि, ताहि दिशा रघुनाथ ॥

छन्द चौबोला ।

यहिविधि खनि पूरब दिशिधरणी लखि दिग्गज सनमानी ।
दक्षिण दिशि लागे महि खोदन सगर सुवन बलखानी ॥
तहँ दिग्गज देखे नृप नन्दन महापद्म जेहि नामा ।
महा पर्वताकार शरीर धरे शिर धरा ललामा ॥
अति विस्मय करि सकल सगरसुत दै परदक्षिण ताको ।
साठिहजार कुमार सगरके लगे खनन वसुधाको ॥
पूरब दिग्गज दक्षिण दिग्गज देखत सगर कुमारा ।
खनत खनत महि पश्चिम आये दिग्गज तहाँ निहारा ॥
नाम सौमनस धरे धरा शिर विंध्य गिरिन्द्र समाना ।
पूछि कुशल शिरनाय सगर सुत कीन्हे खनत पयाना ॥
खनत रसातल उत्तर आये दिग्गज लखे महाना ।
भद्र नाम तनु श्वेत विराजत मनहुँ खडो हिमवाना ॥
दै परदक्षिण करि प्रणाम तेहि धरी धराणि शिर देखी ।
साठि सहस्र सगर नृप नन्दन तहाँ तुरङ्ग न पेखी ॥
लागे खनन कोप करि पुहुमी पूरब दिशा पधारे ।

गये जबहिं ईशान दिशामहँ सिगरे सगर कुमारे
महा भीमकाया जिनकेरी अति उदण्ड बल बाहू
खोदत महि तुरङ्ग नहिं देखत भरै दीह उर दाहू
सगर कुमार जाय कछु आगे कीन्हें कोप महाना
लखे सनातन वासुदेव अवतार कपिल भगवाना

दोहा--कछुक दूरमहँ कापिलके, देखो चरत तुरंग।
रघुनन्दन सब सगर सुत, ह्वै गये आनँद दंग॥

छंद चौबोला।

करिकै कोप कराल काल दृग आपुसमहँ अस गाये
धावहु धावहु धरहु धरहु अब घोर चोर हम पाये
अस कहि कोउ कर किये कुदारी कोउ करमें हलधारी
कोउ धाये पाषाण पाणि गहि कोउ बहु वृक्ष उखारी
धाये सगर कुमार कोप कारि साठि हजार अपारा
ठाढो रहु ठाढोरहु भाषत बचिहै नाहिं गवाँरा
हमरे पिता यज्ञको वाजी ल्याये चोर चोराई
अब नहिं बचत मचु नगचानी पहुँचि गये हम आई
तेरे हेत खोदि महि डारे जीव कनेक सँहारे
भाग्य विवश पाये अब तोको लहब मोद तोहिं मारे
अस कहि महा कराल काल सम सगर कुमार अपारा
आये कपिल देव सन्मुखते कहत मारु धरु मारा
कपिल कुमारनको आवत गुणि नेसुक नैन उघारा
करिकै कोप कराल, काल सम पुनि कीन्ह्यो हुंकारा
कपिलदेवके करत तहाँ यकबार नेकु हुङ्कारा
साठि हजारहु सगर कुमार भये तुरतै जरि छारा
जरिगे सकल सगरके नन्दन लाग्यो भसम पहारा

रघुनंदन करिये नहिं अचरज कपिल कृष्ण अवतारा॥
परि पावकमहँ ज्यों पतंगगण जरिगे करि अपकारा।
जसको तस बैठो समाधि करि कपिल कछू न बिचारा॥
जो राउर दासनको रघुबर करत कछुक अपचारा॥
ताकी होत दशा यहि विधिकी वेद पुराण पुकारा॥

दोहा--बिते बहुत दिन सुतनको, गये सगर जिय जानि।
अंशुमान निज नातिसों, बोल्यो वचन बखानि॥

छन्द चौबोला।

शूर शिरोमणि शास्त्र विलासी अपने तेज प्रकाशी॥
अंशुमान तुम नाति हमारे शुद्ध बुद्ध बलराशी॥
गये तुम्हारे काकनको अब बीते वर्ष अनेका।
अबलों पायो खोज कतहुँ नहिं अवनी खनी कितेका॥
पायो तुरँग किधौं नहिं पायो ताते सुनु नपतारे।
खोजन साठि हजारन काकन बनिहै गये तिहारे॥
बसत बली बहु जीव धरातल ताते लै धनु बाना।
गमनहु सहित युद्ध सामग्री तुम बल बुद्धि निधाना॥
वंदन लायक वंदन करिकै युध लायक युध ठानी।
सिद्ध अर्थ करि लौटहु नाती मम मख पारख ज्ञानी॥
सुनि आजा राजाको शासन अंशुमान बलवाना।
चल्यो धनुष शर लिहे विक्रमी कटिमें कसे कृपाना॥
निज काकनको खनित धरातल तेहि पथ कियो पयाना।
सगर भूप शासन शिरधरिकै अंशुमान मतिमाना॥
दानव दैत्य पिशाच राक्षसहु सिद्ध विहंग भुजंगा।
सादर लहत प्रशंसा तिनसों देख्यो दिशा मतंगा॥
करि प्रणाम परदक्षिण दै तेहि सादर पूछि भलाई।

निजकाकन के वाजि हरनकी पूंछी खबरि तुराई॥
अंशुमानके वचन सुनत दिगसिंधुर वचन उचारा।
लौटहुगे लहि सिद्ध वाजि युत हे असमंज कुमारा॥

दोहा--दिशा नागके सुनि वचन, अंशुमान हरषाय।
चल्यो यथाक्रम दिग्गजन, मिल्यो सुखित शिरनाय॥
सकल दिशा गज कहत भे, अंशुमान तुम जाहु।
पैहौ वाजी अर्थ सिधि, रही न उरमें दाहु॥

छंद चौबोला।

अंशुमान सुनि दिग्गज वाणी चल्यो चपल बलवारा।
पहुँच्यो जाय इशान दिशांमें देख्यो राख पहारा॥
ताके निकट चरत वाजी तहँ विस्मित भयो अपारा।
जानि भस्म अपने काकनकी आरत कियो पुकारा॥
इनकी प्रेत क्रिया किमि कीजे किमि दीजेजलदाना।
अंशुमान अतिशोकित दुःखितभयो न हो अनुमाना॥
सलिल देन को चहत तहीक्षण सलिलाशय नहिं देखै।
चकित व्यथित अकुलाय चहूँ कित चख फेरत वनपेखै
एकबार देखत अति दूरी देख्यो विहँग अधीशा।
निज काकनके मातुलको तहँ तुरत नवायो शीशा।
अंशुमानको गरुड कह्यो तब करहु न शोक कुमारा।
जारच्यो साठिहजार कुमारन करिके कपिल हुँकारा॥
तुव काकनको वध जग सम्मत भयो करौ न खँभारे।
साधारण जल देन योग्य नहिं काका कुँवर तिहारे॥
जेठी सुता हिमाचल केरी इतै ल्याय द्रुत दीजै।
त्रिभुवन पावन गङ्गा जलमें काकन क्रिया करीजै॥
तुव काकन की भस्म राशिपर परी गङ्ग जब धारा।

जैहैं सकल स्वर्ग लोकहिं तब तारि हैं साठि हजारा ॥
वाजी लै तुम जाहु अवधपुर यज्ञ समापाति कीजै।
सगर पितामहसों हेवाल सब काकन को कहि दीजै ॥

दोहा–पन्नगारिके वचन सुनि, अंशुमान सुखपाय।
लै वाजी आयो बहुरि, कह्यो सगरसों जाय ॥
अंशुमान मुख सुनत नृप, गरुडवचन दुख पाय।
कियो समापाति वाजिमख, गयो अवध अकुलाय ॥
केहि विधि आवैं गंग महि, तारैं मोर कुमार।
लाग्यो करन विचार बहु, पावत शोक न पार ॥
करत विचार न पार लहि, हायन तीस हजार।
सगर भूप करि राज महि, गमन्यो स्वर्ग अगार ॥

छन्द चौबोला।

सगर भूप जब गयो देवपुर काल धर्म कहँ पाई।
अंशुमानको भूप कियो तब प्रकृत प्रजा समुदाई ॥
अंशुमान तहँ महा धर्मरत पाल्यो प्रजन महीपा।
ताके भयो सुनहु रघुनन्दन भूपति नाम दिलीपा ॥
सो दिलीप शिर राजभार दै तपाहित गो हिमवाना।
गंगा ल्यावनहेत भूप सो अति दारुण तप ठाना ॥
बत्तिस सहस वर्ष हिमगिरिमें अंशुमान तप कीनो।
कियो तपोवनमें तनु त्यागन गयो स्वर्ग सुख भीनो॥
भयो दिलीप महीपमें सुनि आजन मुनि जारा।
कौन भांति ते लहैं सगरसुत विमल गङ्ग जलधारा।
कैसे धरणी सुरसरि आवैं किमि होवै जलदाना।
तरैं सगरसुत साठि हजारहु यह उर शोक महाना ॥
निश्चय नहिं पायो दिलीप सुत कीन्ह्यो बहुत विचारा।

भयो भगीरथ तासु कुमार धर्म धुर धारण वारा ॥
कियो दिलीप यज्ञ जगतीमें सविध अनेकन राजा।
तीस हजार वर्ष महि पाल्यो संयुत प्रजा समाजा ॥
करिकै राज्य दिलीप महीपति गङ्गा गवन खँभारा।
व्याधि पाय तनु तज्यो कालवश गवन्यो देव अगारा ॥
इन्द्रलोक जब गो दिलीपनृप अपने कर्म प्रभाऊ।
भयो भगीरथ भूपति धार्मिक सो कोशलपुर राऊ ॥

दोहा--सुनहु राम राजर्षि सो, भूप भगीरथ नाम।
पायो नहीं कुमार सो, यत्न कियो सुतकाम ॥

छन्द चौबोला।

कपिलदेव कृत जारन सुनिकै सगर कुमारन काहीं।
गंगधार बिन साठि हजारन अहै उधारन नाहीं ॥
सगर अंशुमानहु दिलीपनृप कीन्ह्यो तप याहि हेतु।
भूप भगीरथ सुनि वृत्तांत नितांत कियो तप नेतू ॥
बोलि सचिवगण सौंपि राज्य तब गयो हिमाचल राजा।
तहँ गोकर्ण नाम यक तीरथ सुखित बस्यो रघुराजा॥
भूप भगीरथ किय अरम्भ तप करि निज ऊरध बाहू।
तापत पञ्च अग्नि इन्द्रियजित रोजाहि सहित उछाहू ॥
एक मासमहँ इक वासर तहँ भूपति करत अहारा ॥
यहि विधि करत घोर तप ताको बीते वर्ष हजारा ॥
मिलै मोहिं गङ्गाकी धारा तारौं सगरकुमारा।
भूप भगीथके मनमें यह दूसर नाहिं विचारा ॥
की गंगाको आनि स्वर्ग ते सगरकुमारन तारौं।
की तप करि गोकर्णक्षेत्रमें यहि शरीरको जारौं ॥
तीसर बात लिखी नहिं ब्रह्मा यह संकल्पहि मोरा।

अस विचार करि भूप भगीरथ किय तप परम कठोरा ॥
भूप भगीरथको तप लखि कै भो प्रसन्न करतारा।
देववृन्द लै संग चारिमुख नृपति निकट पगु धारा ॥
अति संतापित करत महातप भूप भगीरथ काहीं।
बोल्यो वचन विरंचि सुधासम अतिप्रसन्न मनमाहीं ॥

दोहा–तेरे तपते भूप मैं, तोषित हौं बडभाग।
जौन कामना होय मन, तौन आज वर माँग ॥

छंद चौबोला।

लखि स्वयंभुको भूप भगीरथ गुणि निज भुवि बडभागा।
करि प्रणाम युग पाणि जोरिकै मनवांछित वर माँगा ॥
मोपर होहु प्रसन्न पितामह तो ऐसो वर देहू।
सगर सुवन सुरसरि जल पावैं मिटै मोर संदेहू ॥
जो तपको फल देहु पितामह तौ प्रपितामहँ मेरे।
मो कर पाय गंगजल सिगरे सुरपुर करहिं बसेरे ॥
सगरकुमारन साठि हजारन कपिलदेव मुनि जारा।
मेरे संग गंगकी धारा बोरै भस्म पहारा ॥
सन्तति देहु मोहि त्रिभुवन पति नहिं कुल होय दुखारी।
यह उपकार करौ रविकुलको ऐसी विनय हमारी ॥
भूप भगिरथको सुनि याचन ह्वै प्रमुदित करतारा।
बोल्यो महा मनोहर वाणी सिगरे देव मँझारा ॥
सुनहु महारथ भूप भगीरथ महाराज मम बैना।
सिद्ध मनोरथ होय तिहारो मृषा वचन मम है ना ॥
हे इक्ष्वाकुभूप कुल वर्द्धन तप कीन्ह्यो अति घोरा।
होई सकल सुलभ चितचाही सुनहु वचन कछु मोरा ॥
सुता हिमाचलकी जेठी यह त्रिभुवन पावनि गंगा।

ताकी धार धरनको समरथ है इक दहन अनङ्ग ॥
गंगप्रवाह पतन पुहुमी यह सकिहै नाहिं सँभारी।
अति बरजोर धार सुरसरिकी विना शंभु को धारी॥
दोहा--ताते करहु उपाय नृप, होहिं प्रसन्न पुरारि।
अस कहि देवन वृन्दयुत, गये धाम सुखचारि॥
सत्यलोकमहँ जाय विधि, गंगै कह्यो हँकारि।
करहु धरणि संचार तुम, सगर कुमारन तारि॥
ब्रह्मा जब वरदान दै, गये आपने धाम।
हर प्रसन्नहित तप कठिन, कियो भूप तेहि ठाम॥

छन्द चौबोला।

भूप भगीरथ एक वर्षलगि इक अँगुठाके भारा।
ठाढो रह्यो धरणिमहँ निहचल मानस प्रणव उचारा॥
पूरण भयो जबै संवत्सर शंकर औघड दानी।
सर्वलोकवंदित गिरिजापति पशुपति परम विज्ञानी॥
आये भूप भगीरथ आश्रम शंकर वृषभ सवारा।
देखि भगीरथ गिऱ्यो चरणमें प्रस्तुति कियो अपारा॥
जै शंकर जै जै गिरिजापति जै जै औघड दानी।
जै महेश मुनि मानसबासी जै जै रमन भवानी॥
जै कैलासबास कृतवास निराश विषै विज्ञानी।
जै करुणाकर जनतारण हर महिमा वेद बखानी॥
जै जै शंभु, दंभु दुखभंजन रंजन सन्त सदाहीं।
जै जै आशुतोष सन्तापित शोषित कबहूँ नाहीं॥
जै जै दानदयाल काल सब कालहुके तुम काला।
जै गजचरमांबर विशालधर जै कपाल उरमाला॥
जै काशीपति जै त्रिभुवनपति जै त्र्यम्बक भगवाना।

जै यदुपतिगुरु जै यदुपति प्रिय जै सब गुणनि निधाना॥
जै जै दक्षयज्ञ विध्वंसन जै जै त्रिपुर विनाशी।
जै गणेश षटवदन पिता प्रभु जै शशिभाल प्रकाशी॥
जै धुरजटी जटनमें धारहु शंभु सुरधुनीधारा।
शरणागत हम अहैं बावरे यह अभिलाष हमारा॥

दोहा--भूप भगीरथके वचन, सुनि शंकर हरषाय।
कह्यो दिलीपकुमारसों, गिरा अमीरस प्याय॥
हम प्रसन्न तुमपर अहैं, सुनहु भगीरथ भूप।
धारण करिहैं सुरधुनी, धारा धरणि अनूप॥
अस कहि शंकर नृपतिसों, गवन कियो कैलास।
बैठे जटा बगारि शिर, गंग धरणकी आस॥
उत स्वयंभुशासन लहत, गङ्ग बेग करि घोर।
चलीं चपल सुरलोकते, धसीं धरणिकी ओर॥

कवित्त।

रघुराज भूपति भागीरथके प्रणहेत, भद्रहेत भवके अभद्र कालिकालके। स्वर्गते गिरी है धारा हारावली मुक्तकैसी, शोभाकी अगारा गन मंडित मरालके। शरद घनावलीसी गगन गलीमें भली, चली आवै चपल उधारन उतालके। पुहुमी परन लागे पापन परावने त्यों, पापिनके आये अब बखत निहालके॥

दोहा-- गंग दुरासद वेग करि, किय विचार तेहि काल।
शंकरको निज धार धरि, करहुँ प्रवेश पताल॥
अति दुरधर्ष सहर्ष तहँ, अति उत्कर्षहि धार।
गिरी गंग अति कोप करि, शंकर जटन मँझार॥

कवित्त।

गंगधार भार भूमि सहिहै न एकौ बार, जाइहै रसातल मँझार पाय झोकको। माचिहै हाहाकार प्राणिन सँहार ह्वैहै, ह्वै है करतारजू अगार एक शोकको॥ रघुराज ऐसो करि विमल विचार शंभु, कृपा-

पारावार दीन्ह्यो मंगल त्रिलोकको । शरद घटानके छटानसौं गङ्गधार, धारयो है जटान काम कीन्ह्यो नोकझोकको ॥ कों युगन योगी जपत तपत तप, अंबुको पियत विश्व बासना है । पावत न जाको अन्त नेतिनेति भाषैं सन्त, वेदविधि बखानैं बारबारे हैं ॥ रघुराज आनँदके कंद देवकीके नंद, पद विंद मकरंदके पनारे हैं । नैन वारि ढारे धन्य जनम विचारे जटी जटाजूटनमें गंगधार धारे हैं ॥ दुरित विदारा दीन दु उधारा हरि, कीरति अकारा कालिकर्म कृतछारा है । पुण्य पसारा बिरजाको अवतारा सबै, सुकृत अगारा तीनों लोकमें प्र है ॥ मुक्तिको नगारा बयकुंठको दुआरा रघु, राजकी अधारा नगर उजारा है । भुवनको हारा परम्पदको करारा जटा, ज मझारा शंभु धारयो गंगधारा है ॥

दोहा–गंग गरूर गिरीश गुणि, करिकै कोप अपार ।
जटाजूटमें लेत भे, घोर गंगकी धार ॥
जटाजूट मेरे परत, कैसे कढिहै गंग ।
देखत हौं अब जोर मैं कहँ लगि करिहै जंग ।

छन्द भुजंगप्रयात ।

परी शंभुके शीशमें गंगधारा । महा जोरसों शोर कै एक बा
यथा शैलमें सोहती मेघमाला । जटाजूट त्यों गङ्गधारा विशा
धसी त्यों जटाजूटमें वेग भारी । सुकेशाटवी में भ्रमै गङ्ग वा
न पावै जटाजूटको अन्त गंगा । भ्रमै ओर चारो भयो वेग भं
बिते भूरि सम्वत्सरै गंगकाही । हिमाधार शैलाटवीसी तहांही
नहीं बिंदुलों गंगकी धार जाती । जटाजूटमें बारबारै भ्रमाती
तहां ह्वैगयो गंगको गर्व भङ्ग । भयो भूपके शोकको सो प्रसं
न धाई धरामें जबै गंग धारा । तपस्या भगीरत्थ कीन्ह्यों अपा
महादेवते पाइबेको प्रसादा । रखो मोर मर्य्याद नाशौ विषा

भगीरत्थको शंभु देख्यो कलेशा । जटाको निचोयो तुरंतै महेशा ॥
परी बिंदुनामा सरैमें सुधारा । भयो भूमिमें गंगधारा प्रचारा ॥
कढी बिंदु नामा सरैसे विख्याता । तहाँ ह्वैगई गंग की धार साता ॥
चलीं तीनि पूर्वै शुभै मालिनीते । कहै ह्लादिनी पावनी नालिनीते ॥
गईं तीनि धारा जबै पूर्व ओरा । चलीं तीनि धारा प्रतीचीस जोरा ॥
शतद्रू सुतीता तथा सिंधु नामा । हरैं लोकके पापको पुण्यधामा ॥
रही सातईं धार जो गंग केरी । चली भूप के संग आनन्द घेरी ॥
भगीरत्थ हूँ स्यन्दनै ह्वै सवारा । कहै कौन आनन्द ताको अपारा ॥
महा जोरसों स्वर्धुनी धार आई । भगीरत्थ के रत्थ के सत्थ धाई ॥
गिरी व्योमते शम्भु के शीशमाहीं । जटाजूट में सो भ्रमी थोर नाहीं ॥
निकार्यो जबै गंग को सो पुरारी । तबै सात धारा भईं भूमिचारी ॥

दोहा--चल्यो भगीरथको सुरथ, जेहि पथ आगे धाय ।
तेहि पाछे भागीरथी, चली महारव छाय ॥

छंद चौबोला ।

गिरि गगनते गंग शम्भुशिर फेरि धरणि महँ आई ।
बगरि गयो जल चहुँकित जगती घर्घरधुनिक्षिति छाई ॥
मच्छ कच्छ शिशुमार ग्राह बहु देते उछलि हिलोरा ।
गिरे सकल जलधार संग महँ सोहत धरणि करोरा ॥
हल्ला पर्यो त्रिलोक महल्ला गिरी गंग की धारा ।
धाये सकल विलोकत कौतुक सुर नर सिद्ध अपारा ॥
तहँ देवर्षि महर्षि असुर सुर विद्याधर गन्धर्वा ।
चारण यक्ष राक्षसहु आदिक त्यों महि मानव सर्वा ॥
गिरत गगन ते गंगधार को सकल विलोकन आये ।
चढे विमानन हय गै आनन गगन पंथ छबि छाये ॥
गिरी धरणि महँ जहँ सुर धुनि की धारा अघ की आरा ।
लागे ठट्ट विमानन के तहँ सोहत सुर सुरदारा ॥

गंग पतन अवनी महँ अद्भुत अवलोकनके आसी।
देखि देखि सुर सकल बखानत सुरधुनि धार सुधासी॥
जस जस गंगा गिरत गगनते तेहि धारा के साथै।
आवत चले विमान करोरिन देव नवाये माथै॥
चमकत अंबर अमर आभरण मनु रवि उये अनेका।
तरल तरंग गंग की राजहिं उछलत जल लगि ठेका॥
महा मीन शिशुमार ग्राह तहँ उठैं तरंगन माहीं।
अतिचञ्चल छलकत जलझलकत चपलासम चमकाहीं॥
दोहा--मनहु हजारन दामिनी, गगन पंथ दरशाहीं।
प्रगटी तहँ सुखमा अमित, कबहुँ लख्यो कोउ नाहिं॥

चौपाई।

विमल खेत जल उछलत आवै। धारन रूप हजारन भौं
मिलिमिलि धार बहुरि विलगाहीं। चारुचलत चमकत चहुँ घाहीं
मनहु शरद जलधर नभ धावैं। माल मराल विशाल सोहावैं
चक्रवाक सारस करि शोरा। गंग संग नभ उडत करोरा
कहुँ द्रुततर गमनत जलधारा। कहूँ जाति पुनि कुटिल अपा
कहुँ कहुँ कराति महा विस्तारा। कहूँ सूध धावाति जलधारा
क्रम क्रम जाति कहूँ पुनि गंगा। कराति अपार करारन भंगा
मन्द मन्ह कहुँ चलति स्वच्छन्दा। नीच होति कहुँ होति बलन्दा
कहुँ सुरसरि अतिसरल सिधावति।कहुँपुनि जोर शोरकरि धावति
परम भयावन भवँर महाना। उछलत तुंग तरंगनि नाना
कहूँ भिरहिं धारनि सों धारा। जल उतङ्ग मनु लसत पहार
पर्वत फोरि कहूँ कढि जाती। दरशत विमल नीर बहु भाँती
प्रथम उतंग गंग की धारा। चली गगनपथ तुंग अपारा
पुनि सुरधुनी धार ढरकानी। भरतखण्ड सागर समुहानी
गिरी शम्भु शिर पुनि महि आई। भय सुरधुनी धार चकराई

पापिन पापन परयो परावन । परपद पाथ पोंषि पर पावन ॥
तहँ महर्षि गन्धर्व अपारा । दनुज मनुज सुर असुर कतारा ॥
जीव सकल वसुधातल वासी । रहे और जे नाक निवासी ॥
हरिपदजलज परत शिव अङ्गा । आयो धरणि जानि जलगङ्गा ॥
मज्जन कीन्हे सकल सप्रीता । कोटि जन्म अघ भये पुनीता ॥

दोहा--शापी पापी जगतके, सन्तापी जन वृन्द ।
ते परशत सुरसरि सलिल, भे हत कलुष अमंद ॥
शाप पाप वश जे विबुध, किये धरातल वास ।
ते सुरधुनी नहाइ कै, कीन्हे नाक निवास ॥

चौपाई ।

भयो लोक सब मुदित महाना । सुरसरि तोय तेज पसराना ॥
विविध विहङ्ग पतङ्ग कुरंगा । गङ्ग नहाइ लहे सुर संगा ॥
सुरसरि तोय तेज उजियारा । रह्यो न लोकन अघ अँधियारा ॥
कौतुक निरखि भगीरथ राजा । मान्यो सिद्धिसकलनिजकाजा ॥
चढो दिव्य स्यन्दन नृपनंदन । चल्यो गंग संगहि कुलचंदन ॥
भयो गंग धाराके आगे । चल्यो भूप अतिशय अनुरागे ॥
भूप भगीरथ रथके पाछे । गङ्ग तोय धायो अति आछे ॥
हर्षि महर्षि सहित सुरवृन्दा । राक्षस दानव दैत्य सुछन्दा ॥
तहँ गन्धर्व सर्व गण यक्षा । किन्नर चारण भुजग सपक्षा ॥
सुर सुंदरी करत कल गाना । किये भगीरथ संग पयाना ॥

दोहा--मच्छ मकर कूरम उरग, ग्राह गोक्ष शिशुमार ।
बिछलत पछिलत उच्छलत, धावत सुरधुनि धार ॥

कवित्त ।

ढाहत करारे त्यों करत अररारे शोर, बोरत बगारे बेशुमारे चली त्रिपथी ॥ पुण्यको पसार पाप पुंजनको जारे सोहै, देवन विमानन

कतारहीमें ज्योनथी। भनै रघुराज देवलोकनके द्वारे खों
अधम अपारे तारे पापके महारथी। बड भागी भूपति भगीर
पाछे लागी, जात ज्यों भगीरथ त्यों जाति है भगीरथी॥

छन्द चौबोला।

आवत आवत धार गङ्गकी जह्नुआश्रमहिं आई।
करत रहे तहँ यज्ञ जह्नु नृप सिगरो साजु सजाई॥
जह्नु यज्ञ सामग्री सिगरी बोर्‌यो धारन गंगा।
जानि राजऋषि गंग गर्व अति कीन्हो कोप अभंगा॥
जह्नु नरेश तपोबल कीन्ह्यो गंग सलिल सब पाना।
यह अद्भुत लखि करन लगे सुर हाहाकार महाना॥
ठगि सो रह्यो भगीरथ भूपति जान्यो सरवसु हानी।
लाग्यो अस्तुति करन जह्नुकी मनमहँ मानि गलानी॥
वे यक्ष गन्धर्व आदि सब करि अस्तुति शिरनाये।
निज दीनता देखाय विविध विधि राजऋषीश मनाये॥
तज्यो जह्नु गंगा काननसों अपनी सुता बनाई।
तबते तीनिहुँ लोक सुरसरी नाम जाह्नवी पाई॥
पुनि सुरसरी प्रचण्ड वेग सों चलीं सिंधुकी ओरा।
मिली कलिंदी और गण्डकी सरयु सोन बरजोरा॥
लगी भगीरथ रथके पाछे भागीरथि बडभागी।
पहुँचीं जहां सगर कुँवरनकी रही राख बुझि आगी॥
भूधर रह्यो भस्मको भारी परी गंगकी धारा।
रंचक रही न राख लखनको माच्यो जैजकारा॥
सगर कुमारन खाख धार धरि गंगा सिंधु समानी।
गईं रसातल फोरि धरातल चक्र पाणि पदपानी॥

दोहा--गङ्गाजल परशत भसम, नृपसुत साठि हजार ।
देव महल्लामें घुसे, हल्ला करि इकबार ॥
भये देव कल्मष विगत, नन्दन विपिन विहार ।
करत रहत नितप्राति अछै, पूरण पुण्य अगार ॥
भूप भगीरथ भाँति यहि, तप करि ल्यायो गङ्ग ।
सगरसुवन तार्यो तुरत, पायो सुयश अभंग ॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि लै सुरनदी भगीरथ सगर कुमारन तारा ।
आय कह्यो तब अति प्रसन्न ह्वै सकल लोक करतारा॥
सुनहु भगीरथ तुव कर तारित सिगरे सगरकुमारा ।
वसे देव सम दिवि लोकनमें सुन्दर साठि हजारा ॥
सुनहु भगीरथ जबलागि जलनिधि जलैहै जगमाहीं ।
तबलों सुरसम सगर कुमार स्वर्ग वसिहैं क्षति नाहीं ॥
यह गंगा जेठी दुहिता तव ह्वैहै पुण्य प्रचारा ।
तुव कृत भागिरथी नाम अस करिहैं मनुज उचारा ॥
गङ्गा और त्रिपथगा दिव्या भागीरथी ललामा ।
तीनिहुँ लोकनमें प्रवाह तेहिं हेत त्रिपथगा नामा ॥
देहु तिलांजलि पितामहनको गंगाजल महराजा ।
पूरण करी प्रातिज्ञा अपनी भये भूप कृतकाजा ॥
पूर्व पुरुष जे रहे तिहारे धर्मात्मा यश वारे ।
तिनके पूर भये न मनोरथ जैसे भये तिहारे ॥
अंशुमान महराज कियो तप जिन सम भयो न दूजो ।
ल्याय सके नहिं गंग जगतमें नाहिं मनोरथ पूजो ॥
पुनि राजर्षि महर्षि तेज जिन मम सम तप जिन केरो ।
क्षत्रधर्म महँ एक महीप दिलीप पिता रह तेरो ॥

दोहा–तीन दिलीप महीपहूं, सुरसरि आनन काज।
करत करत तप तनु तजे, भये न अस कृतकाज॥

छन्द चौबोला ।

जस तुम उतरे प्रण पयोधि नृप करि तप कठिन अपारा।
तुम्हरे यशते भयो भगीरथ आज सेत संसारा॥
जो तुम कियो गंग अवतारन अधम उधारन राजा।
तेहि कारन वैकुण्ठ अगारन बसिहौ सहित समाजा॥
तुमहु करहु मज्जन सुरसरि महँ सत्य ब्रह्मद्रव नीरा।
भूप भगीरथ सकल पुण्य फल रूप अहौ मतिधीरा॥
करिकै पूरव पुरुषन को अब तर्प्पण श्राद्ध विधाना।
जाहु अवधको हमहुँ जाहिं घर लहौ भूप कल्याना॥
अस कहि भूप भगीरथते विधि गये आपने धामा।
तर्पण कियो भगीरथ विधियुत सगर सुतन कृतकामा॥
दै जल सविधि श्राद्धकरि भूपति अवध नगरको आयो।
सुयश भगीरथको परिपूरण तीनिहुँ लोकन छायो॥
पूर मनोरथ प्रजा प्रमोदित कियो राज्य बहु काला।
संशय शोक तापत्रय निरगत भयो प्रताप विशाला॥
रघुकुल चन्दन हे रघुनन्दन यह गंगा इतिहासा।
मैं वरण्यों विस्तार सहित सब तुव पुरुषन यश खासा॥
संध्याकाल लाल अब आयो पूछौ अब कछु नाहीं।
सन्ध्याकरन चलहु गंगातट मुनिन संग सुखमाहीं॥
धनप्रद यशप्रद आयुषको प्रद सुखप्रद स्वर्ग प्रदाता।
यह गंगा इतिहास अपूरब मैं वरण्यों अन्नदाता॥

दोहा--जो विप्रन अरु क्षत्रियन, वैश्य शूद्रन काहिं।
गंगाचरित सुनावतो, अथवा सुनहिं सदाहिं॥

ताके उपर प्रसन्न अति, देव पितर सब होत।
सहजहि कारज सिद्धि सब, दश दिशि सुयश उदोत॥
यह गंगा अवतरन महि, श्रद्धा करि जो कोय।
सुनत तासु मन कामना, सकल सिद्ध द्रुत होय॥
यह गंगा गाथा सुनत, सिगरे पाप परात।
बढत आयुषा जगत में, कीरति अति अवदात॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्ये महाराजाधिराज श्रीमहाराजावहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीरामस्वयंवरग्रंथे गंगावतरणं नाम त्रयोदशः प्रबन्धः॥ १३॥

दोहा--गंगकथा कौशिक कथित, सुनत लषण अरु राम।
अतिशय विस्मित चित्त ह्वै, बोले वचन ललाम॥

छन्द चौबोला।

यह गंगा अवतरन पुण्यप्रद अति अद्भुत मुनिराई।
मोहिं सुनायो जेहि विधि सुरसरि मिली सिंधुमहँ जाई॥
ममपूरव पुरिखनकी गाथा बिच बिच सकल सुनायो।
आजु नाथ तुम्हरे मुख सुनिकै अति आनँद हम पायो॥
अस कहि राम लषण मुनि संयुत सन्ध्यावन्दन कीन्हे॥
मुनि शासन लहि तृणशय्या महँ सुखद शयनमन दीन्हे।
कौशिक कथित देवसरि वर्णन मनमहँ करत विचारा॥
युगलबंधु सुखशयन किये तहँ उठे जानि भिनुसारा।
प्रात कृत्य करिकै रघुनंदन सहित लषण लघु भाई॥
विश्वामित्र समीप आइकै कहे चरण शिरनाई॥
नाथ व्यतीत भई रजनी सब क्षण समान हम काहीं।
चिन्तत गंगचरित्र भनित तुव चुक्यो न सो मन माहीं॥
तुमहिं जानि उतरनके आसी मुनिन उतरनी तरनी।
आई सुख भरनी मनहरनी गंगपारकी करनी॥

राजकुमार वचन सुनि मुनिवर मुनिन सहित चढि नाऊ।
उतरे गङ्ग सङ्ग दशरथ सुत त्रिभुवन विदित प्रभाऊ॥
उत्तरकूल जाय मुनिनायक सब ऋषिगण सत्कारे।
कियो निवास राम लक्ष्मण युत सुंदर गङ्ग किनारे॥
महामनोहर पुरी सुहावनि जाको नाम विशाला।
देखि सकल मुनि लगे सराहन पाय अनंद विशाला॥

दोहा--राम लषण युत गाधिसुत, चले नगरकी ओर।
अमरावती समान छबि, रमणीयता अथोर॥
पुरी मनोहर पेखिप्रभु, जोरि सुपंकज पानि।
कौशिक मुनि सर्वज्ञ सों, कही वाणि सुखदानि॥
कौन राजको वंश यह, बसत कौन अब राज।
पुरी विशाला किमि भई, कहौ सकल मुनिराज॥
सुनि दशरथनन्दन वचन, विश्वामित्र प्रवीन।
पुरी विशालाकी कथा, कहन लगे प्राचीन॥

छन्द चौबोला।

सुनहु राम वासवकी गाथा भयो जौन यह देशा।
पूरवादीति अरु आदीति सुवन सुर असुर भये बल वेशा॥
पुरुषसिंह तहँ बैठि सुरासुर दोऊ किये विचारा।
केहि विधि अजर अमर होवैं हम रहै न रोग अपारा॥
चिन्तत सकल सुरासुर के तहँ एक बुद्धि दृढ कीन्हे।
क्षीरसिंधुमाथि अमी निकासैं सकल यही मन दीन्हे॥
मथन क्षीरसागर निश्चय करि रज्जु करि वासुकि नागा।
मंदरगिरिकी विरचि मथानी मथन लगे बडभागा॥
बीते मथत हजारन हायन दव्यो वासुकी नागा।
वमत महाविष बहु मुख दंशत शिलन कोप अति जागा।

मथत क्षीरनिधि कढ्यो महाविष हालाहल जेहि नामा ।
ताते जरन लग्यो सिगरो जग सुर नर असुर सधामा ॥
जरत सुरासुर जानि जगतको गे कम्पत कैलासा ।
त्राहि त्राहि शंकर संकटहर अब रक्षहु कृत्तिवासा ॥
जै जै देव देव पशुपति प्रभु शंकर शरण निवाजी ।
जयति रुद्र गिरिजापति जै हर तुम देवन हित काजी ॥
करत सुरासुरके अस्तुति, तहँ प्रगट भये भगवाना ।
शंख चक्र शारङ्ग गदाधर देवन वृन्द प्रधाना ॥
रुद्र शूलधर सों भाष्यो हरि नेकु मन्द मुसकाई ।
मथत क्षीरनिधि कढ्यो प्रथम विष जारत जग समुदाई ॥

दोहा--तुम पूर्वज सब सुरन के, कढ्यो पूर्व विष घोर ।
ताते तिहरो भाग है, पान करहु मत मोर ॥
अस कहि नारायन भये, तेहि थल अन्तर्धान ॥
हरिको शासन हर सुनत, कियो मनहिं अनुमान ।
देवनको दुख देखि शिव, प्रभुशासन शिरधारि ।
हालाहल विष सुधा सम, पान कियो त्रिपुरारि ।
देवनको तहँ त्यागि हर, गवन कियो कैलास ।
लगे सुरासुर मथन पुनि, करि करि अमित प्रयास ॥

छंद चौबोला ।

धस्यो महा मन्दर अधार बिनु पहुँच्यो जाइ पताला ।
तब गंधर्व सर्व सुर असुरहु ध्याये कृष्ण कृपाला ॥
तुमहीं हौ सब प्राणिनके गति सुरगति नाथ विशेशा ।
मंदरको उधार कीजै अब रक्षहु हमहिं रमेशा ॥
सुनि देवनकी आरतवाणी प्रगटे शारँगपानी ।
धरि कमठावतार नारायण गे पताल बलखानी ॥

धर्‍यो पीठिपर मन्दर गिरिको तहँते ताहि उठायो।
एक रूपते बैठि शैल शिर पद्ते ताहि दबायो॥
तीसर रूप धारि जगनायक मिले देवन बडभागे।
कंज करन सों मन्दरको गहि आपहु मंथन लागे॥
बिते हजार वर्ष हरि मंथत धन्वन्तरि तब निकसे।
आयुर्वेद लिहे इक कर इक दण्ड कमण्डलु बिलसे॥
तिनके पीछे कढी अप्सरा अति सुन्दर सुकुमारी।
अप मंथनते कढी ताहिते नाम अप्सरा धारी॥
कढीं अप्सरा साठि कोटि तहँ छाई वदन जोन्हाई।
परिचारिका असंख्यन तिनकी रहीं जगत मन भाई॥
ग्रहण कियो नहिं तिन्हैं सुरासुर साधारन जिय जानी।
ताते साधारणी नाम तिन लह्यो जगत छबिखानी॥
वरुण सुता पुनि कढी वारुणी वर वर खोजन लागी।
असुर कियो नहिं ताहि ग्रहण सुरग्रहण कियो अनुरागी॥

दोहा--सुरा लियो सुर ताहिते, सुर पाये सुर नाम।
असुर सुरा नहिं ग्रहण किय, असुर कहाये आम॥
देव बारुणी पाइके, पाये परम अनन्द।
उच्चैश्रवा तुरंग मणि, कौस्तुभ कढ्यो अमन्द॥
क्षीरधिते निकस्यो बहुरि, सुधा सकल सुखदान।
देखत देव अदेव सब, लेन हेत ललचान॥

छंद चौबोला।

भयो सुधाहित महाभयावन देवासुर संग्रामा।
हने देव दैत्यन कहँ रणमहँ भये पूर मन कामा॥
पुनि राक्षस असुरन सहाइ करि बहु देवनकहँ मारे।
श्रीरघुवीर महारण माच्यो भे त्रिभुवन भय भारे॥

जानि पियूष लेत असुरन कहँ कियो मोहिनी माया ।
हरचो महाबल विष्णु सुधाको तडाकि तुरत रघुराया ॥
भय देव देवेश शरन सब पुरुषोत्तमके जाई ।
हरि करि कृपा सुरनको संगर करन दियो पठवाई ॥
दैत्य दानवन मारि देव सब दीन्ह्यो समर भगाई ।
दैत्य दानवन जीति देवपति कियो राज्य बरिआई ॥
शासन कीन्ह्यो सुखित पुरंदर ऋषिन सहित त्रैलोका ।
है गन्धर्व सर्व सिधि चारण वसे सकल निज ओका ॥
निजपुत्रनको लखि विनाश दिति कश्यप निकटसिधारी।
अतिशय दुखित मरीचि सुवनसों रोवत गिरा उचारी ॥
मारिगये प्रियपुत्र हमारे तुव पुत्रनते रणमें ।
ताते शक्र विनाशी बालक पावनको मम मनमें ॥
महा घोर तप करब कन्त हम देहु गर्भ करि दाया ।
सो बालक मारै वासवको रहै अछै तेहि काया ॥
दितिके वचन सुनत कश्यप मुनि बोले वचन प्रमाना ।
सहस वर्ष लगि जो शुचि रैहै सुत पैहै बलवाना ॥
दोहा—समर शक्रजेता अवशि, है है तोर कुमार ।
जो तप विघ्न न ठानि है, बीतत वर्ष हजार ॥
जो शुचि रैहै दिति प्रिया, पूरण वर्ष हजार ।
बीते जग विजयी सुवन, पै है वचन हमार ॥

छन्द चौबोला ।

अस कहि करते दिति कर परशत कश्यप स्वस्ति उचारे।
गर्भाधान कियो दितिमें मुनि तप हित विपिन सिधारे ॥
गे पति विपिन तबै दिति हर्षित कुशप्लवन अस्थाना ।

करन लगी दारुण तप सुत हित कश्यप कथित विधाना॥
जानि शक्रहंता सुत भावी छल करि बासव जाई।
अतिसनेह दर्शाय मातुकी करन लग्यो सेवकाई।
अग्नि काठ कुश सलिल फूल फल ल्यावत सुनत रजाई।
औरहु वस्तु जो मातु चहै सो आनत विलँब विहाई॥
कर पद मर्दन विजन डोलाउब सेज बिछाउब आदी।
सेवन करत शक्र दितिको नित उर छल मुख मृदुवादी॥
यहि विधि बीते सहस वर्ष जब रहे वर्ष दश बाकी।
तब दिति हर्षित कह्यो शक्रसा जानि शुद्ध मति ताकी॥
सुनहु पुत्र सुरनायक तिहरो पितादियो वरदाना।
सहस वर्ष बीते सुत पैहौ जगविजयी बलवाना॥
सहस वर्ष मोहिं बिते करत तप अब बाकी दशवर्षा॥
सो बीते लखिहौं भ्राता को पैहौ अतिशय हर्षा॥
यॉंच्यो तुव हित पुत्र कंतसों त्रिभुवन जयके हेतू।
विजयमान ह्वै निज भ्राता युत बसिहौ नाक निकेतू॥
अस कहि वासवसों दिति हर्षित मध्य दिवस अलसानी।
शिरहन ओर चरण करि सोवन लगी अविधि नहिं जानी

दोहा--अविधि अशुचि गुणि शक्र तेहि, चरण ओर शिर देखि।
हँस्यो मनहिमन मुद मगन, सोइ अवसर अवरेखि॥
दिति शरीरके बिवर ह्वै, कीन्ह्यो उदर प्रवेश।
सप्त खण्ड दिति गर्भको, किय लै कुलिश सुरेश॥
करत खंड तहँ वज्रसों, रोयो गर्भ पुकारि।
मारुद मारुद शक्र कह, दिति जागिचकी निहारि॥

छन्द चौबोला।

नहिं रोवै अस कहत जात हरि गर्भहि काटत जातो।
रोवतहूं नहिं दया करत कछु सुमिरत वैर अघातो॥

तब दिति कह्यो न गर्भनाश करु दया करहु सुरराई ।
लिहे कुलिशकरजोरि पाणि दोउ कह्यो वचन शिरनाई ॥
मातु अशुचि ह्वै शयन कियो तैं करि शिरहनयुगपादा ।
यह अन्तर हौं पाय प्रविशि उर नहिं गुणि तोर विषादा ॥
लेकर कुलिश शक्रहंता तुव गर्भखंड किय साता ।
यक यक खंडन सात खंड किय क्षमु अपराधहि माता ॥
जानि तहाँ दिति गर्भखण्ड बहु महाशोक दुखपाई ।
दुराधर्ष वासव सों बोली अति सनेह दरशाई ॥
सप्तखण्ड यह गर्भ भयो जो सो अपराध हमारो ।
तिहारो प्रिय करनो हम चाहति नहिं अपराध तिहारो ॥
भयो विपर्यय जौन गर्भ मम तेहि अस करौ सुरेशा ।
मारुद मारुद कह्यो ताहत मारुत नाम हमेशा ॥
यक यक खंडहि सातखंड किय ते सब भे वंचासा ।
भयो सात गण सात सात वपु करैं सुनाक निवासा ॥
वातसकंध थान पावैं सब विचरैं स्वर्ग सदाहीं ।
मारुत नाम विख्यात त्रिलोकहि लहैं दिव्य वपु काहीं ॥
बहै एक गण ब्रह्मलोक महँ इन्द्रलोक महँ दूजो ॥
दिव्य वायु विख्यात भुवन महँ बहैं मरुतगण तीजो ।

दोहा–रहे चारि जे मरुत गण, शासन पाय तुम्हार ।
बहत रहैं दशहू दिशन, वासव मोर कुमार ॥
देव रूप सुत होहिं सब, अतिबलीन दुतिमान ।
सात सात को एक गण, मारुत देव प्रधान ॥
सुनि विमातु के वचन वर, वासव पाय विनोद ।
जोरि पाणि पंङ्कज कह्यो, मोहिं जातु निज गोद ॥

छन्द चौबोला ।

जसो वचन उचार्यो माता यहि विधि सिगरो होई।
याम कछु सशय नहिं मानो मोर बंधु सब कोई॥
जेहि जेहि लोकन कह्यो मातु तैं तेहि तेहि लोकन माहीं।
कह्यो जौन विधि तेहि विधि बहि हैं तेरे पुत्र सदाहीं॥
यहि विधि निश्चय करि माता सुत गये स्वर्ग कहँ दोउ।
त्यागि तपोवन बसे नाक महँ अस भाषत सब कोउ॥
हे रघुनंदन यही देश सो कीन्ह्यो दिति तप भारी।
कियो विघ्न वासव मारुत गण प्रगटे जग संचारी॥
कुशालवन यह देश नाम है दूसर नाम विशाल।
नृप इक्ष्वाकु पुत्र यक सुन्दर अलंबुषी को लाल॥
नाम विशाल विशाला नगरी यह थल भूप बसायो।
हेमचन्द्र भो पुनि विशाल सुत महाबली जग जायो॥
हेमचन्द्र के पुनि सुचन्द्र भो सुत सुचन्द्र धूम्रासू।
भयो पुत्र धूम्रासु भूप के संजै नामक तासू॥
संजैनंदन भो सहदेव कृशाश्व तासु सुत भयउ।
पुनि कृशाश्वके सोमदत्त भो सुयश जासु जग छयउ॥
सोमदत्त के भो ककुत्स्थ सुत जासु पराक्रम भारी।
विद्यमान ताको सुत है अब सुमति नाम सुखकारी॥
दुर्जय परम शत्रुदल गंजन तुव बांधव रघुनाथा।
देवसमान स्वरूप धर्मधर कारक प्रजन सनाथा॥

दोहा--नृप इक्ष्वाकु प्रसाद ते, भये जे वंश विशाल।
धर्म धुरन्धर धरणिपति, ते जीवत बहु काल॥
होत महात्मा सकल ते, धर्मात्मा महिपाल।
भानुवंश भूपति सकल समर शूर रघुलाल॥

बसैं विशाल पुरी निशा, आजु सबै सुख पाय ।
कालि लखब मिथिलेशको, मिथिलापुर महँ जाय ॥
गाधिसुवनके सुनि वचन, राम लषण सुख पाय ।
निशा विशालामें वसन, संमत दियो सुनाय ।
वसे सरित तट तरुन तर, लै कौशिक मुनि भीर ।
सन्ध्योपासन हेतु किय, गवन लषण रघुवीर ॥
विश्वामित्र मुनीशको, आगम सुनि हरषाय ।
सुमति भूप आवत भयो, अगवानी हित धाय ॥
सहित पुरोहित सचिव सब, सुमति सबांधव आय ।
विश्वामित्र मुनीशके, परचो चरण शिर नाय ॥
जोरि पाणि पंकज कह्यो, कुशल रहे मुनिराय ।
मोहिं धन्य धरणी कियो, दर्शन दीन्ह्यो आय ॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराजश्रीमहाराजावहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीरामस्वयंवर ग्रन्थेक्षीरधिमंथनमरुतजन्मवर्णनं नाम चतुर्दशः प्रवन्धः ॥ १४ ॥

दोहा–सुनत सुमति वाणी विमल, विश्वामित्र सचैन ।
वसुधाधिपहि सराहि बहु, वदे विमल वर बैन ॥
ईश कृपा हम तुम कुशल, रहहिं सदा सब ठाम ।
सुमति सुशील सुभाव तव, लखि पाये सुखधाम ॥
यहि विधिभाषत मुनि नृपति, वचन विदित व्यवहार ।
संध्या करि आये उभय, दशरथ राजकुमार ॥

कवित्त

मानो एक सङ्ग आवैं भानु सितभानु दोऊ, मानो द्वै शरीरकै
कृशानु छबि छावैं हैं । फैलत प्रभाके पुंज गंजन मदनमद, इह

सुखमाके भरे चखन चोरावैं हैं ॥ भनै रघुराज विश्व मोहनी
पाश, फासें मन विहँग न जान अन्त पावैं हैं । देखत
अवधेशजूके लालनके, पलक प्रदातै मंद करणी बनावैं हैं ॥

सोरठा--लषण राम अवलोकि, उठी तुरंत समाज सब ।
सुमति नैन जल रोकि, कौशिकसों पूछत भये ॥

छन्द झूलना ।

आफताबसो एक महाताबसो दूसरा चश्मके चोर खूबसूरती
रुआब यों ख्वाबमें देखनेमें नहीं शान औ शौकमें सच्चाई सूब
कहैं रघुराज मुनिराज हमसे कहौ कौनके फबे फरजंद दिलखू
बिहिश्तकेनूर मशहूर दिलहूर हरजान्में जहांके जान महबूब
इनकी भौंह टेढी कसी जेब देती दुनौं चश्मते हद्द कत्लाम
नये चांदसे वदनविदुरानि खासी त्यों जवाहिरजडे कडे दिलको
क्या सजीली जवानीकी है रोशनी जबर्दस्ती हमारे हियेको
रघुराज मैं आजतक देखा नहीं ऐसी अजबसूरतके जंगलमें फि

दोहा--सुमति भूपके कहत अस, दोउ कुमार सुकुमार ।
आये मुनिवरके निकट, सब समाज मनुहार ॥
मुनि उठि अंक लगाइके, लिय आगे बैठाय ।
भे चकोर चख सबनके, निरखि वदन निशिराय ॥
सुमति सकोच सनेह वश, सुठि सुख तहँ सरसाय ।
कौशिकसों पूछो बहुरि, विनय प्रीति दरशाय ॥

छन्द सुन्दर ।

गाधेसुत सुनहु कल्यानहैं रावरे । कौनके पुत्र ये गोर अरु साँ
देवसे रूपवर विश्वमें विक्रमी । मंदगति सिंह अरु सिन्धुर
क्रमी ॥ ओज शार्दूलसे मत्त वृषभाकृती । मदनमद कदन
विपिन चारण व्रती ॥ विशद नवजलजदल विमल युग नयन
भौंह जनु मदन धनु देत उर चयन हैं ॥

लसै कटि कसी युत ढालकर बाल हैं।पीठि तूणीर युग शरनके जाल-
हैं ॥धनुर्धर धर्मधर धीरधर धरानिमें । होयगो कोउ न इन गुणन सम
करानिमें ॥ मनहु जोरी विबुध वैदकी सोहती । जो बनाई अरुणता
हियो मोहती ॥ कहौ मुनि किधौं युग देव इत आयगे । पुरी पुर-
जन अमित मोद सरसायगे ॥ लसत कोदण्ड शरचण्ड भुजदण्डमें ।
करन अरि खण्ड यह खण्ड नव खण्डमें ॥ कुसुम कोमल चरण
कठिन धरनी चलैं । परशि कंकरनिकर नाथ मोमन मलैं ॥ कहौ
मुनि कौन आगमनको हेतु है । कौन इनको पिता सुकृतिको
सेतु है ॥ कहाँ इनको सदन वसत केहि नगरमें । कौन हित फिरत
दोउ डांगकी डगरमें ॥ कौन कारण रहत रावरे निकटमें । डरत
मुनि क्यों न तुम ल्याय वन विकटमें ॥ युगल जोरी भली अस न
देखी कहूँ॥फिर्यो मुनिनाथ मैं दिशाविदिशा चहूँ ॥ चित्त चोरत
चितै चखन चहुँओर हैं । विप्रकुलतिलक की भूपशिरमोर हैं ॥
किधौं विधि धामके काम अवतार हैं । किधौं जग सुछबिके सुछबि
आगारहैं ॥ हियो बरबस हरे वेश बानिक बने । चुकत नहिं रूप
सौंदर्य्य यक मुख भने ॥ विरचि विधि इन्हें धौं धोइ कर बैठिगो ।
पेखि मन मोर मुद महोदधि पैठिगो ॥ वदन विधु देखि सुर सुन्दरी
रीझतीं। पलक परि कलप गुनि पलक परि खीझतीं॥कृपा करि कहौ
मुनि राज अब आजई। प्रथम इन कुँवरको आगमन काजई ॥

सोरठा--सुनत सुमतिके बैन, विश्वामित्र हुलास भरि ।
दे रघुपति छबि नैन, चैन ऐन कह बैन वर ॥

छन्द ।

आफताब औलाद मरजादवारे, सङ्ग चलते पील असवार प्यादे ।
रहनेवाले ये ऐश अरामके हैं, मघवानते शान ओ शानजादे ॥

रघुराज दोउ आले मरातिबाके, इसीवक्तमें पूर करिदिये वा
समर बाँकुरे ठाकुरे अवधके हैं, दशरत्थ बादशाहके शाहजा

सवैया ।

नीच मरीच सुबाहु महाखल, लै रजनीचरकी समुदा
आश्रम आय हमारे बलाबल, घोर घमंडभरे दुखदा
मो मख मंडप मंडल वेदिका, शोणित मांसहुकी झरि ल्या
श्रीरघुराज सुनो सुमती नृप, जारचो ममाश्रम आगि लगा
ठाढे रहे रणबाँकुरे दोउ, महा रजनीचर धाये प्रचा
सायक लै बिनहीं फरको, रघुनायक ताकि सुभायक मा
नीच मरीचको आशु उडाय, गिराय दियो शतयोजन चा
श्रीरघुराज कुमार महा, सुकुमार कियो मखकी रखवा
आयो सुबाहु उमाहु भरो रण, जो सुरनाहुको दाहु दैवै
आशुही आस्य बगारि उचारि यों, ठाढो रहै नृपलाल लडैया
पावक सायक ताके दियो उर, नेसुक कोपित ह्वै रघुरै
भाषतहौ रघुराज किहे शिव, साख सो खाख भयो दुखदैया
धाये तुरन्त तमीचर औरहु, ताकि तिन्हैं लषणो ललकार
झारचो शराशनते शर वृन्दन, बारहिं बार प्रवीर प्रचार
श्रीरघुराज बडो रण बाँकुरो, भाँति भली रिपुसैन सँहार
फागुसो खेलिलियो क्षणमें हँसि, होलिकासो खलको दल जार
कीन्यो भली विधि रक्षन यज्ञको, लक्षन मारि निशाचर तक्ष
होत विलक्षन यज्ञ विदेहकी, जात निरक्षन आपने अक्ष
श्रीरघुराज विशाल पुरीपति, है इनते परदूसरो दक्ष
पक्ष अपक्षनके शुभ लक्षण, जेठ हैं राम कनिष्ठ हैं लक्ष

सोरठा—सुनि मुनिवरके बैन, अति आनँद भूपति लह्यो ।
छके देखि छबि नैन, मैन माधुरी वारि दिय ॥

छन्द चौबोला ।

अतिथि अपूरब जानि अवनिपति दशरथराज कुमारा॥
भूषण वसन विचित्र मँगाय कियो अनुपम सतकारा ॥
पाय सुमति सत्कार गाधिसुत राम लषण सुखसाने ।
कीन्ह्यो निशा निवास हुलासित आसित भोर पयाने ॥
सुमति सराहि सुशील सनेह गेह गवन्यो शिरनाई ।
भूप विशाल सराहि काल कछु शयन किये दोउ भाई ॥
उठि प्रभात सब प्रातक्रिया करि कोमलपद जलज ।
अति अवदात विख्यातविश्वमुनि संग चले दोउ भ्राता॥
गह्यो मंजु मारग मिथिलाको मुनिन समाज समेतू ।
मंद मंद गमनत गयंद गति ऋषि सँग रघुकुल केतू ॥
गये दूर पथ युग योजन जब जनक नगर रहि गयऊ ।
मिथिलापुरके तुङ्ग पताके मुनिगण देखत भयऊ ॥
अति उतंग मंदिर सुन्दर सब चमचमात चहुँघाहीं ।
फहरै नाके नाक पताके सुखमाके पुर माहीं ॥
मानहुँ पूरव उदय दिवाकर विलसत करन पसारे ।
नहिं ठहरात दीठि जगमग द्युति चौघा चखन निहारे ॥
कनक कलश विलसत तारा इव छुवन चहत नभमानौ।
जगमगातजनुकनककलशमिसमिथिलापतियशजानौ॥
दोहा–लगे सराहन सकल मुनि, जनक नगर छबि भूरि ।
राम लषण दर्शावहीं, कहहिं अबै पुर दूरि ॥

कवित्त ।

प्राचीदिशि प्रगट दिवाकर दुतीय कैधौं, शरद निशाधौं चन्द्र तारायुत भावती ॥ मायाको विलाश कैधौं ब्रह्मको निवास कैधौं, विष्णुको अवास कैधौं छाय छबि छावती ॥ रघुराज देखो यह

जनकनगर शोभा, देखत बनत नहिं मुख कहि आवती ।
अलकावती है कैधौं अमरावती है, पद्माकी बनाई कैधौं पुरी
मावती ॥

दोहा–सकल भुवन शोभा भरी, दूरिहिते दरशाइ ।
निकटगये कस लखि परी, यह मुख कही न जाइ ॥

छन्द चौबोला ।

और कछू नेरे जब गवने मुनियुत राजकुमारे।
मिथिलापुरी निकट अमराई शीतल सघन, निहारे॥
तहँ यक मंजु मनोहर मुदकर आश्रम सून दिखाना।
जोरि पाणि पंकज रघुनन्दन मुनि सों वचन बखाना॥
सुनत रामके वचन गाधिसुत बोले मृदु मुसकाई।
हौं सब कथा कहत जैसो इत भो वृत्तांत महाई॥
जासु शापते भयो सून यह आश्रम प्रथम सुजाना।
गौतम मुनि इक रहैं महातप यहि आश्रम मतिमाना॥
तिनकी रही अहल्या नारी अति सुंदर सुकुमारी।
दोउ मिलि कीन्ह्यो इहाँ महातप वर्ष अनेक सुखारी॥
गौतम नारि निहारि महाछबि सुरनायक मन मोह्यो।
घात लगायो मिलन हेत तेहि नहिं अवसर कछु जोयो॥
तब गौतमको रूप धारि हरि आयो आश्रम माहीं।
मज्जन हेतु गये मुनिवर जब प्रविश्यो तुरत तहांहीं॥
कह्यो अहल्यै वचन विहँसि कछु सरस सनेह दिखाई।
जानि सुमुखि ऋतुकाल तिहारो हौं आयो इत धाई॥
मोहि लियो मन रूपमाधुरी तुहिं सम विश्व न नारी।
हौं रतिदान मांगने आयो जरत अनंग दवारी॥

गौतम वेष जानि वासवको मोहि वचन रचनाई ।
कियो विहार विचार अहल्या महाकुमति उर आई ॥
दोहा--कियो विहार सुरेश सँग, गौतम मुनिकी नारि ।
पुनि मुनिको डरि शक्रसों, कही गिरा भयभारि ॥

छन्द चौबोला ।

अपनेको अरु हमरेहुको अब रक्षण कियो उपाई ।
जो जानि हैं मुनीश कर्म यह देहैं तुरत जराई ॥
कह्यो पुरंदर अति प्रसन्न ह्वै राख्यो जीवन प्यारी ।
नहिं जानिहै प्रसङ्ग महामुनि हौं अब जात सिधारी ॥
यहि विधि मुनीतियसों रमिवासवचल्यो कुटी सों आशू।
कढत कुटी ते मिलिगे गौतम उर उपजी अतित्रासू ॥
ज्वलित तेज तप दुराधर्ष अति आश्रम करत प्रवेशा ।
अपनो रूप धरे छल बल वश देख्यो त्रसित सुरेशा ॥
समिध सहित कुश लिये पाणि मुनि यककर कुंभसमीरा।
वासव छल बल जानि तपोबल कियो कोप मतिधीरा॥
बोले वचन अरे सुरनायक कियो महा अपकारा ।
दुराचार मम दार नष्ट किय पैहै फल यहि बारा ॥
मेरो वपु धरि अरे सुराधम नहिं कछु धर्म विचारी ।
रम्यो विप्रनारीसों सुरपति मेरी त्रास विसारी ॥
ताते वृषण हीन होवै हठि पावै अति संतापा ।
यहि विधि कहि वासव को गौतम दियो अहल्यै शापा॥
री पापिनि तैं धर्म छोडि सब सुरपतिसों रति ठानी ।
अन्तर्हित ह्वै बस यहि आश्रम बिना अन्न अरु पानी ॥
आठो पहर तपत रहि है तनु जब बीती बहुकाला ।
तब ऐहै दशरथके नन्दन रघुपति कौशलपाला ॥
दोहा--तिनके परशत चरण युग, लहि आपन आकार ।
ऐहैं मेरे निकट पुनि, करि ,रामहिं सत्कार ॥

अस गौतम के कहत भो, वृषण हीन सुरराज।
भई अहल्या रूप बिन, आश्रम रही अकाज॥
सोरठा--यहि विधि दै मुनि शाप, निज तियको अरु शक्रको।
तजि आश्रम लहि ताप, गये हिमाचल करन तप॥
किन्नर चारण सिद्ध, सेवित हिमगिरि सर्वदा।
आश्रम एक प्रसिद्ध, तहां लगे तप करन मुनि॥

छन्द चौबोला।

इतै विकल वासव विन वृषणन गमन्यो स्वर्ग दुखारी।
भस्म सैन अन्तर्हित वपु ह्वै रही तहां मुनि नारी॥
अतिशय पीडित भयो पुरंदर देवन मुनिन बुलायो।
सुरगुरुसोंअरु पावक सों तहँ व्यथितवदन अस गाय
गौतम तपको विघ्न करन हित मैं कीन्ह्यो अपचारा।
दियो शाप मोहिं घोर महामुनि साधत काज तुम्हारा॥
अण्डकोश बिन भये शापवश अब का करिय उपाई।
दै कै शाप अहल्यहुको मुनि दीन्ह्यो भस्म छिपाई॥
हे सुरमुनि सुर कारज साधत भै यह दशा हमारी।
ताते करौ सहाइ सबै मिलि मैं नहिं होहुँ दुखारी॥
अग्नि देव गुरु औरौ सुर ऋषि सुनि वासवके वैना।
पितरन देवन और मरुतगण बोलि कहे भरि चैना॥
भयो पुरंदर गौतम शापित वृषणहीन यहि काले।
सकल देव मुनि मेख वृषण लै देहु वृषण सुरपालै॥
सवृषण वासव होय यही विधि मिटै दुसह दुखभारी।
वृषण हीन ह्वै मेख देवतन दे है तोष अपारी॥
मेखवृषण लै जो सुरपतिके देहो देव लगाई।
इन्द्र दुसह दुख मिटी यही क्षण मेख लही शुचिताई॥

मेखवृषण अस नाम शक्रको ह्वैहै सब संसारा ।
अवृषण मेख देव पितरनको देहै तोष अपारा ॥
दोहा--जो कोउ अवृषण मेखको, सुर पितरनके काज ।
कारि उदेश जग देइगो, तेहि फल दिहेहु दराज ॥

छंद चौबोला ।

अग्नि वचन सुनि देव पितर सब मेखन वृषण उखारी ।
दियो लगाइ देवनायक के मिटी पीर तनु भारी ॥
धरचो पुरन्दर को सुर मुनि सब मेखवृषण अस नामा।
अति पवित्र भो मेख मांस तबहीं ते सुर नर कामा ॥
यह पूरव की कथा कही सब गौतमकी अतिप्यारी ।
अब धनुधारी पगुधारी मुनिनारी आशु उधारी ॥
विश्वामित्र वचन सुनि रघुपति कारि आगे मुनिराई ।
गौतम आश्रम गये लषण युत पीछे मुनि समुदाई ॥
परत पाँय पंकज रज तेहि थल गौतम शाप नशानी ।
प्रगट भई तहँ आशु अहल्या गुणमन्दिर छबिखानी ॥
रामलषण मुनि लखे अहल्या बड भागिनि तेहि जानी ।
जबते गौतम शाप दियो तेहि तब ते अबै लखानी ॥
तिय भूषण विरंचि कर विरची रूपवती मनु माया ।
मनहुँ महोदधि माधि प्रगटायो प्रभा रेख दिनराया ॥
मनहुँ तुषार अपार विराजित द्वितिय चन्दकी रेषा ।
अतिशय क्राशित वपुष मुनि नारी लखि सुन्दर प्रभुवेषा॥
बार बार दृग वारि बहावत पुलकावलि तन माहीं ।
नहिंनिकसतकछुप्रेमविवशमुखअनिमिषलखाततिहाँहीं॥
सावधान ह्वै पुनि करजोरी प्रभुके आगे ठाढी ।
अस्तुति करति अहल्या मुद भरि प्रेमभक्ति उर बाढी॥

सोरठा--जै जै कौशलनाथ, परब्रह्म व्यापक जगत।
प्रभु मोहिं कियो सनाथ, करुणा वरुणालय विदित॥

(स्तुति छन्द)

परसत पद पावन पाप नशावन पावन पतित होतक्षण
देखत रघुनायक जग सुखदायक लायक होत देवगण
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा धरि उर धीरा वचन क
अति निर्मल वानी अस्तुति ठानी मन हुलसानी चरण ग
जै ज्ञान गम्य विमुखन अगम्य आनम्य शम्भु अज चरण
मैं नारि अपावनि अति अघ छावनि अधम चारहू वर
राजीव विलोचन भव भय मोचन दीन सकोचन आ
मैं शरण तिहारे राजकुमारे जग उजियारे भ
मुनिशाप जो दीन्हा अति भल कीन्हा चीन्हा मोहिं अघभा
देख्यों भरि आँखी प्रभु जंग साखी भाखी विनय अपा
विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी खोरी मम विसर
निज पद रति दीजै दासी कीजै छीजै तनु सेवका
तुव पद सुरसरिता जग अघ हरिता धरिता शिव निज शि
अघदाहक नाऊँ कहँ लगि गाऊँ पाऊँ भक्ति अशि
करि कृपा सनेहू जो कछु देहू सो लेहू फल फू
मैं रही अनाथा भई सनाथा माथा मम पद मूल

दोहा--यहि विधि करि अस्तुति विमल, प्रेमपुलकि मुनिना
रही अचञ्चल मूँदि चष, लखि मूरति मनहा

छन्द चौबोला ।

गौतम घरणी राम लषण गुणि पद गहि कियो प्रणामा।
निज पतिवचन सुरति करि मुनि तिय भै पूरण मनकामा॥
कंद मूल फल फूल विविध विधि दीन्ह्यो प्रभु कहँ ल्याई।

पूजन कियो सविधि युग बंधुन प्रीति रीति दरशाई।
जानि अहल्या प्रीति प्रेम प्रभु लिय सादरसत्कारा।
जै जै कहि प्रभु अधम उधारन दीन्हे देव नगारा॥
चढे विमानन लेख अलेखन वर्षहिं मुदित प्रसूना।
तहँ गन्धर्व अप्सरहु किन्नर पाये आनँद दूना॥
आये सकल अहल्या आश्रम प्रभु दर्शन हित लागी।
महासमागम भयो कुटीमें कहहिं सकल बडभागी॥
धन्य धन्य मुनिनारि अहल्या तोहिं हित हरि पगुधारे।
धनि गौतम जिनकी अस गेहिनि शाप व्याज तेहि तारे॥
अस कहि करहिं अहल्या पूजन सुर मुनि किन्नर नाना।
महातपोबल ते गौतम मुनि यह चरित्र सब जाना॥
योग प्रभाव आइगे गौतम प्रभुपद पंकज वंदे।
राम लषण मुनि पद प्रणाम किय बारहिं बार अनंदे॥
राम लषण कौशिक मुनिगण को गौतम किय सत्कारा।
सुखी अहल्या सहित भये मुनि गे तप हित लै दारा॥
गौतम और अहल्या करते राम लषण दोउ भाई।
बार बार सत्कार पाय बासि बार चले अतुराई॥

दोहा—यहि विधि गौतम नारिको, नाम अहल्या जासु।
तारयो पदरज झारि निज, भजै न को पद तासु॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमाहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजासिंहजू देवजी. सी. एस. आई कृते श्रीरामस्वयंवरग्रंन्थे अहल्याउद्धारणं नाम पञ्चदशः प्रबन्धः॥ १५॥

दोहा—जा दिन प्रभु गौतम घराणि, तारयो पदरज झारि।
ताही दिन ताकी कुटी, कियो निवास मुरारि॥

छन्द चौबोला ।

लखि प्रभात पूषनकी आवनि यामिनि जानि सिरानी ।
हुलसत कोक अशोक होन हित तारावलि विलगानी ॥
मुनिनायक युत रघुनायक उठि प्रातकर्म सब कीन्हे ।
मुनि मंडली सहित रघुनंदन जनकनगर पथ लीन्हे ॥
चले महर्षि महा उत्साहित जनक दरश अभिलाषी ।
विश्वामित्र महामुनि मोदित चलत राम रुख राषी ॥
उत्तर पूरवकोण पंथ मृदु पग पग शीतल छाया ।
चले जात मुनि मंडल मंडित लषण सहित रघुराया ॥
आगे आगे चलत गाधिसुत पाछे राजकुमारा ।
पहुँचे जनकनगर उपवन हेमंत वसंत बहारा ॥
यज्ञथला भुवि भली जनकपुर राम लषण अस भाखे ।
सुनहु महामुनि नाथ जनक नृप अतिसुन्दर करि राखे ॥
बहु वासव सी बर विभूति यह ऋद्धि सिद्धि समुदाई ।
तापर पुनि मुनि होत स्वयंवर अद्भुत परै लखाई ॥
जनकनगर महँ होत स्वयंवर धनुषयज्ञ संभारा ॥
देखनको देशन देशनते आये भूप हजारा ।
महाभीर भूपतिके पुरमें लाखन विप्र जुहाने ॥
चारिहुँ वर्ण अनेकन आये यज्ञ लखन ललचाने ।
चारिहुँ ओर जनक पुरके मुनि रहीं जहां अमराई ॥
उपवन वर वाटिका बजारन भरीं जनन समुदाई ।

दोहा--वैदिक विप्रन के विविध, शकटनकी समुदाय ।
अमराइन डेरा परे, विलग कहूँ न देखाय ॥

छन्द चौबोला ।

ताते करहु निवास महामुनि जहां स्वच्छ थल होई ।

जहां जलाशय होय विमल अति सहसा जाय न कोई ॥
सुख उपजावनि मनभावनि अति जनकपुरी छबि छाई ।
लखी आजुलों अस कतहूं नहिं यथा विदेह बनाई ॥
आजु भयो अतिकाल महामुनि ताते चलहु तुराई ।
नीर निवास सुपास सकल विधि जहँ शीतल अमराई ॥
मुनि सुनि वचन पाय आनँद अति चले पंथ ताजि दूरी ।
देखे यक थल सकल हर्ष भल विमल जलाशय पूरी ॥
शीतल अमराई छबिछाई मंजु विहङ्गन शोरा ।
अतिइकांत जहँ होतशांत चित विगत मलिन सब ठोरा॥
बहत नदी अति निकट सुगमतट शाखा सलिल बिलोरै ।
मधुकर गुंजनि कुञ्जनि कुंजनि मंजु पुंज तरु झोरै ॥
सकल सुपास निवास योगथल लखि मुनि लषण खरारी ।
कीन्हे वास हुलास भरे सब भयो नाश श्रम भारी ।
देखत जनकनगरकी शोभा लोभा मन अविकारी ॥
भनत परस्पर वचन सकल ऋषि नृप विदेह बडवारी ।
कञ्चन कोट कँगूरे कलशा गोपुर गुर्ज दुआरा ।
अति सुन्दर मंदिर उतंग वर कनक सुवनक केवाँरा ॥
शशिशाला अंतहपुर शाला शाला सभासदन के ॥
गजशाला तुरंगशाला वर निर्मित मनहुँ मदन के ॥
दोहा–हाट बाट घर घाटके, सुछबि पाट नव ठाट ।
हाटकके फाटक लसत, मनहुँ तेज हवि वाट ॥

सवैया ।

चाँदनी सी चमकै चहुँ ओर, तनी चुनी चाँदनी चारु महाई ।
चित्रित चित्र विचित्र बने, चितये जेहि चित्त गहै चकिताई ॥

कौन कहै मिथिलेश कि संपाति, शक्रहु देखि लहै लघुताई
श्रीरघुराज जहां जगदंब, अलंब भई तहँ कौन बडाई

छन्द हरिगीतिका ।

कहुँ धराणिपाति सेना परी फहरत अनेक निशान हैं।
हय गय अनेकन विविध स्यंदन शिबिर विशद वितानहैं॥
नौबत झरत बहु नृपति डेरन दुन्दुभी धुनि ह्वै रही।
कहुँ नचत नट कहुँ बजत बाजन बार तिय गाति लै रही॥
कहुँ लसत उपवन मुनिन मण्डल करत वेद उचार हैं।
कोउ करत संध्या करत कोउ अभ्यास शास्त्र अपार हैं॥
कौपीन दण्ड कमण्डलहु मृगचर्म छत्र विराजते।
आये लषण धनुयज्ञ कौतुक सहित मुनिन समाजते॥

दोहा--अभिलाषन लाखन मनुज, अवलोकानि धनु यज्ञ।
आये मिथिला नगरमहँ, अज्ञहु तज्ञ कृतज्ञ॥
यथायोग्य भूपन जनक, कीन्ह्यो अति सतकार।
निमि कुल कमल पतङ्गको, छायो सुयश अपार॥
यहि विधि भाषत मुनिनके, कोउ पुरवासी जाय।
जाहिर कियो विदेहको, गाधिसुवन गे आय॥
विश्वामित्र मुनीशको, सुनि आगम मिथिलेश।
शतानन्दको बोलि द्रुत, चले मिलन शुभवेष॥

छंद चौबोला ।

सदानंद आगे करि लीन्ह्यो द्विज मण्डली सोहाई।
पढत वेद वैदिक धरणीसुर जयधुनि चहुँकित छाई॥
चलत पयादे मुनि दर्शन हित सबै सराहत लोगू।
मिलन जात मनुब्रह्म सतोगुण करि विराग भव भोगू॥
आवत देखि विदेह भूपको मुनिजन देखन धाये।

आय आय कौशिक मुनिके ढिग सुखित समाज लगाये ॥
आवत जानि भूपको कौशिक द्वै मुनि तुरत पठाये ।
ते निमिकुल भूपतिको कर गहि मुनिनायक ढिग ल्याये ॥
विश्वामित्रहि भूप विलोकत कीन्ह्यो दंड प्रणामा ।
कौशिक धाय उठाय लाय उर आशिष दियो ललामा ॥
दै आसन बैठाइ भूपको अति सत्कारि मुनीशा ।
सादर कुशल प्रश्न पूछ्यो पुनि मोदित अहहु महीशा ॥
तब करजोरि कह्यो मिथिलापति कुशल कृपा तुव नाथा ।
कीन्ही पावन पुरी हमारी अब मैं भयो सनाथा ॥
सैन सहोदर सचिव सहित प्रभु सब विधि कुशल हमारी ।
सफल भयो मम धनुषयज्ञ अब करी कृपा मुनि भारी ॥
बोले बिहँसि गाधिनंदन तब रचना भली बनाई ।
लखन स्वयंवर कसि कसि कम्मर आये नृप समुदाई ॥
महा भागवत हैं मिंथिलापति ज्ञान विज्ञान निधानू ।
लखन स्वयंवर धनुषयज्ञ युत हमहूं कियो पयानू ॥
दोहा--गये हुते संध्या करन, पुरुषसिंह दोउ भाय ।
आये सहज समाज मधि, जिमि उडुगण दिनराय ॥

पद खेमटा ।

मिथिलापुर आये मुनिराई ।
सुनि मिथिलापति सकुल जाइ तहँ बारबार वंदे शिरनाई ॥
ताही समय लखन फुलवाई गये हते सलषण रघुराई ।
आइ गये तनु गौर श्याम तहँ कौशिकमुनि समीप सुखदाई ॥
लोचनसुखद विश्वचित चोरन वय किशोर अति सुंदरताई ।
उठी समाज राजसुत देखत मुनि निजनिकट लियो बैठाई ॥
सुखीसकलजलबहतविलोचनपुलकितगात न कछु कहिजाई ।

मूरति मधुर मनोहर जोरी जोहि विदेह विदेह सोहाई
प्रेम मगन नृप कौशिकसों कह गद्गद गिरा गरूर गवाँई
ई दोउ बालक नृपकुलपालक धौं मुनिवंश वतंस बना
किधौं उभय वपु धरचो ब्रह्म इत वेगि बताइय नाहिं दुराई
सहजविरागबलित मन मेरो इनहिं निरखि अब गयो थका
छोडि ब्रह्मसुख रँग्यो रूप रस जैसे चंद्र चकोर मिता
जनकवचन सुनि कह्यो गाधिसुत सत्यसत्य तुम मृषान गा
तप बल मदन शृंगार रूप धरि आये करन आप सेवका
महाराज रघुराज राजवर राजकुँवर जानहु दोउ भा

छन्द झूलना ।

तामरसनयन तनु श्याम घनश्याम इव कित्ति जिन आमदि
न करणाभरन । तरनि सम परम प्रताप मुनितापहर शाप
पापहर दुखिन दारिद दरन ॥ नृपतिशिरमौर चख चित्तके च
चट मदनमदमोर युग चरन भव भय हरन । भनै रघुराज राजा
राज दशरत्थ महराजके कुँवर आनँदभरन ॥

दोहा--राजकुमारन देखि तहँ, सिगरी उठी समाज ।
भये अचंचल सबनके, नयन लखनके काज ॥
सहित समाज विदेह तहँ, राम लषणको देखि ।
पलकनते कीन्हे बिदा, निमि नृपको दुख लेखि ॥
देव रूप सिगरे भये, चहे देवपति होन ।
भये विदेह समान सब, निरखि राम छबि भौन ॥
सुरति सम्हारि नरेश तब, कौशिकको करजोरि ।
पूछे गद्गद गर गिरा, प्रेम पयोनिधि बोरि ॥

सवैया ।

सुंदर श्यामल गौर शरीर, विलोकत धीर रहै कस का
लोचन विश्वके चित्तके चोर, किशोर कुमार छये सुखमा

आपने आनन इंदु छटानते, हारक भे सबके मनशाके ।
श्रीरघुराज कह्यो मुनिराज, अनोखे ललानके नाम पिताके ॥
हैं धौं उभै मुनिके कुलपालक, कीधौं महीपति बालक दोई ।
देखत रूप अनूप सुनो मुनि, मेरी दशा हठिकै अस होई ॥
भूलो विराग विज्ञानस्वरूप,इन्हैं लखि और देखात न कोई ।
ब्रह्मको आनँद बाद भयो, उपज्यो उर आनँद जो इन जोई ॥
वारिये गौनमें सिंधुर सिंहन, शारद नीरज नैनन वारिये ।
वारिये मत्त महावृष ओजहिं, चन्द्रछटा मुसक्यानि उतारिये ॥
वारिये श्रीरघुराज भुजानपै, भोगिन भोगनतुल्य विचारिये ।
वंचकसी विधिकी करनी,इनकी रुचि रंचकमें न उचारिये ॥

दोहा--यहि विधि भाषत नृपतिके, आये राम समीप ।
मुनि सादर लक्ष्मण सहित, बैठाये कुलदीप ॥

कवित्त ।

कटिमें करालै करवालै कसीं ढालै बीच,लालै उरमालै उरमालै-लालै रंगकी । माथनमें मुकुट रसालै मणि हीरालालै, फैलति विशालै प्रभा वदन पतंग की ॥ भनै रघुराज मिथिलापुर समाजराज, देखि ततकालै हालै हालै भूलै अङ्गकी । दुवनको काल कालै मीतनको मोद मालै, देखि रघुलालै चालै को छबि अनंगकी ॥

दोहा--कहत परस्पर पुर प्रजा, पेखत राजकुमार ।
इनहिं देखि आँखिन तरे, को आवत सुकुमार ॥
विरति अछेह सुब्रह्म रति, जनक ज्ञानको तेह ।
सो सरसाइ सनेह सुठि, भये विदेह विदेह ॥

कवित्त ।

काके उदै पूरबकी पुण्य परिपूरण है, कौनपै विधाता आजु दाहिनो दयाल है । काके अँगनामें आजु खेलतीहैं सिद्धि निधि, कौन लूटि ब्रह्मानंद ह्वैगयो निहाल है ॥ आजुलों न देखे ऐसे

कुँवर कलानिधिसे, विरति बलित मन ह्वैगयो विहाल है।
रघुराज मुनिराज क्यों बताओ नहिं, साँवरो सलोनो कहो क
यह लाल है ॥ मदन कहानी सुनी हती सुंदराईकेरी, कोउ
देखी नैन दूरहू निरायकै। कहत अनेक मुनि अश्विनीकुम
कथा, वृथा सो जनाति इन जोटा छबि छायकै ॥ ह्वैगई न ह
न हेरेहूं मिलैगी अब, देखी यह जोरी जैसी आजु इत आइ
रघुराज कैधौं परब्रह्म हैं प्रसन्न तोहिं, दरशायो रूप युग मूरति ब
यके ॥ कहाँ पाये कौनके पठाये संग आये नाथ, कैसेकै छो
भौन भले पितु माता हैं। कोमल कमलहूते चरण बगायो
कंकर कठिन काहे आप अवदाता हैं ॥ आतप सहत सुकुमा
कुमार काहे, आपनेही हाथनते विरचे विधाता हैं । भनै र
मुनिराज मोहिं जानोपरै, सुभग सहोदर कुमार दोउ भ्राता
भूषण भुवनके न देखे परैं दूषनके, पूषन प्रकाशके पियूष न
उके। जीतै एक एक छबि सिंधुकी तरंगनसों, सितासित सु
उमंगन उराउके ॥ विश्व मनहारे अरुणारे नैन प्यारे अति,
जैतवारे धनु धारे चित्त चाउके। भाउके प्रभाउ के बना
भले हैं मुनि, बेगिही बताउ सुत कौन राजा राउके ॥

दोहा—सुनि विदेहके वर वचन, बोले मुनि मुसकाय।
जौन कही तुम सत्य सब, मृषा न नेक जनाय ॥

कवित्त।

विश्ववर विदित वसुंधराधिराज धीर, वीरमणि अवध अ
नरपाल हैं। विबुध सहाई शक्र जाको रुख राखे चलै, बंदत
धराधीशनके माल हैं ॥ धरमधुरंधर धरामें धाक धावै
ध्रुवसों समुद्धत प्रताप सबकाल हैं। भनै रघुराज राज राजम
महाराज, दाहिने दुनीके दशरत्थजूके लाल हैं ॥ शारद शशी
दीसी मुखदीसी भली, भीजी मुख मसी मीसी रदन सोहाई

देवनकी खीसी सुंदराई विसे वीसी भूरि, कनक तपीसी तनु दुति अधिकाई है॥ क्षमा अवनीसी रीसी अरिनपै काल पीसी, बोलनि मधुर सुधा सीसी ढरकाई है। भनै रघुराज महाराज मिथिलेश सुनौ, राम घन श्यामको लषण लघु भाई है॥

दोहा-जेहि कारण आये इतै, दशरथ राजकुमार।
सुनो कथा सिगरीखरी, मिथिला भू भरतार॥

सवैया।

लंक वसै रजनीचरनाह, महाभट रावन रावरो जानो।
ताके पठाये मरीच सुबाहु, उपद्रव यज्ञमें कीन्ह्यो महानो॥
हौं तप भंग भै शाप दियो नहिं, कौशलनाथपै कीन्ह्योपयानो।
माँग्यो नृपै सुत द्वै रघुराज, दियो दशरत्थ दयाल ह्वै दानो॥
ये युग नन्दन कौशलनाथ के, लै सँग आश्रम बाट सिधारे।
मारगमें मिली ताड़ुका आय, भयावनि धावतिदन्त निकारे॥
खेलसों खेलतही रघुनन्दन, बाणन वृन्दन ताहि सँहारे।
श्रीरघुराज विशोक भये तहँ, के मुनि मानव पापिनि मारे॥
आयकै आपने आश्रम में, कियो यज्ञअरंभ प्रमोद प्रफुल्ला।
आये निशाचर साहनी साजि, मरीच सुबाहु सुने मखगुल्ला॥
श्रीरघुराज सुनो मिंथिलेश, दोऊ दशस्यन्दनके रण दुल्ला।
मारिके बाण दिशानन भेजे, बिलाय गये जिमि वारिके बुल्ला॥
रावरी राजसुताको स्वयंवर, त्यों धनुयज्ञ सुने सब कोई।
आवन लागे इतै हमहूँ तब, राजकुमार कहे मुद मोई॥
श्रीरघुराज हमू चलिहैं सुख, पैहैं विदेहकी जागहे जोई।
तातें लेवाय चले सँगमें, गुणिकै क्षण छोडे महादुख होई॥
श्रीरघुराज समेत जबै मुनि, वृन्द विशालपुरी महँ आयो।
भूप सुबुद्धि कियो अति आदर, द्वै दिन लौं कहुँ जान न पायो॥

ज्यों त्यों क आवन दीन्ह्यो नरेश,वसे पुनि गौतम आश्रमभा
भूप सुनो जो चरित्र भयो तहँ,आजुलों ऐसो न आँखिन आय
साँवरो राजकुमार गयो कुटी, एक पषाण परो रह्यो भा
तामें धर्‌यो सहजै पद पंकज, ताते कढी यक सुन्दरनारी
अस्तुतिकै गवनी पतिधामको,आपनो नाम अहल्यापुका
शाप प्रताप शिलासोरही, रघुराज लला तेहि दीन्ह्यो उधारी

दोहा–अब आये मिथिलानगर, संयुत राजकुमार।
भयो प्रसन्न हमार मन, लहि तुम्हार सत्कार॥
कियो स्वयंवर को महा, मिथिलाधिप सम्भार।
धनुषयज्ञ लखि कुँवर दोउ, जैहैं अवध अगार॥
सुनि कौशिकके वचन वर, गौतम जेठ कुमार।
सतानंद बोल्यो वचन, धनि धनि अवध भुआर॥

छन्द चौबोला ।

जाहि विधाता दियो कुँवर अस अनुपम त्रिभुवन माहीं।
तासु भागि वर्णन समरथ अब अहै विश्व महँ नाहीं॥
अस कहि बारबार रघुनन्दन लषण वदन छबि देखी।
रोमांचित तनु सतानन्द तब मोदित भयो विशेखी॥
सतानन्द कौशिक सों बोल्यो सुनिये गाधिकुमारा।
परश कराय राम पद जननी कीन्ह्यो तासु उधारा॥
कहहु फूल फल लै जननी मम कियो प्रभुहि सत्कारा।
पूरव कथा सुनाय दियो तुम वासव कर आचारा॥
कहहु कहहु पितु आये की नहिं राम दरशके हेतू।
राम लषण वन्दे मम पितु कहँ लै आशिष सुखसेतू॥
सतानन्दके सुनत वचन तहँ कौशिक मुनि मुसकाने।
बारहिं बार सराहि गौतमहि कहे वचन सुखसाने॥

जो कर्तव्य रह्यो हमरो कछु सो सब पूरण भयऊ ।
मिली रावरे पितु कहँ पत्नी शाप ताप मिटि गयऊ ॥
अस सुनि ह्वै प्रमुदित गौतमसुत विश्वामित्र सराहीं ।
कह्यो रामसों बैन चैन भरि तुम सम कोउ जन नाहीं ॥
आय दरश दीन्ह्यो मिथिलापुर विश्वामित्र समेतू ।
है ब्रह्मर्षि महामुनि कौशिक सिद्धि सकल तपसेतू ॥
मैं वरणों अब सुनहु राम तुम विश्वामित्र प्रभाऊ ।
भये जौन विधि महा ब्रह्मऋषि जगत विदित सब काऊ॥

दोहा--रह्यो चक्रवर्ती नृपति, पूरब गाधिकुमार ।
पाल्यो पुहुमी धर्मयुत, दियो प्रजन सुखसार ॥

छंद चौबोला ।

एक समय पुहुमी विचरतमें सैन्य सहित महिपाला ।
गयो वसिष्ठ आश्रमहि राजा लखि रमणीय विशाला ॥
तहँ देवर्षि महर्षि ब्रह्मऋषि करैं महातप नाना ।
होम करत कहुँ वालखिल्य मुनि जप तप तेज निधाना॥
निरखि वसिष्ठ गाधिनंदन तहँ कीन्ह्यो मुदित प्रणामा ।
आशिष दै विधि सुत बैठायो आसन दियो ललामा ॥
मूल फूल फलदै सत्कारयो कुशल प्रश्न कर नाना ।
नाथ कृपा सब कुशल हमारी कौशिक वचन बखाना॥
बिदा होन जब लगे गाधिसुत तब वसिष्ठ अस भाषा ।
करन हेत आतिथ्य रावरी सैन सहित अभिलाषा ॥
नृप कह मूल फूल फल राउर याते अधिक न कोई ।
चहौं भवनको गवन नाथ अब लह्यो दरश मुदमोई ॥
पुनि पुनि कियो वसिष्ठ निमंत्रण कियो भूप स्वीकारा ।
जाय वसिष्ठ धेनु सबलासों वंदत वचन उचारा ॥
विश्वामित्र भूप इत आये वर्षहु वस्तु अपारा ।

सैन्यसहित मै गाधिसुवनको करन चहौं सत्कारा॥
सुनि मुनि विनय सुरभिसबला तहँ प्रगटी वस्तु अनेका।
खान पान अस्थान थान पट बहुविधि सहित विवेका॥
सहित समाजहि कौशिक राजहि राजभवन सब भूला।
वासववास वास सुख पायो भले सकल सुर तूला॥

दोहा--विश्वामित्र विलोकिके, सबला परम प्रभाउ।
जाय वसिष्ठ समीपमें, कह्यो सुनहु मुनिराउ॥

छंद चौबोला।

लाख गऊ लीजै हमसे मुनि सुरभी सबला दीजै।
चौदह सहस कनक भूषित गज अबहीं ग्रहण करीजै॥
नहिं मानौ तौ कोटि गऊ मुनिनायक हमसे लेहू।
होइँ जो संपति सकल हमारे सो लै सुरभी देहू॥
कह्यो वसिष्ठ अनंत कोटि जो गऊ भूप मोहिं दीजै।
तदपि न देहैं सबला तुमको अस न मनोरथ कीजै॥
वसुधाकी संपति लै सिगरी जो तुम हमको देहौ।
हय गय गो पट रजत कनक बहु तदपि न सबला पैहौ॥
सकल काज साधनो धेनु यह है सर्वस्व हमारी।
कारण अहैं अनेक ताहिते देब मनै न विचारी॥
जब नहिं दियो वसिष्ठ धेनु कहँ तब कौशिककुल राजा।
वरबस लियो छोराय भटनसों चल्यो भवनकृतकाजा॥
तोडि सकल बंधन सबला तहँ राज भटन झिझकारी।
गई वसिष्ठ समीपहि रोवति आरति गिरा उचारी॥
केहि अपराधहि तज्यो ब्रह्मसुत लिहे जात मोहिं भूपा।
सुनि वासिष्ठ दृग सलिल बहावत बोले वचन अनूपा॥
कौन जोर हमरो सबला अब राजा बडो बलीना।
क्रोध करैं तो होइ भंग तप ताते शाप न दीना॥

चतुरंगिनी सैन हमरे कहँ हम ब्राह्मण तपधारी ।
सुनि वसिष्ठके वचन दीन अति सबला गिरा उचारी ॥
दोहा--ब्राह्मण बल आगे कहा, क्षत्रियको बल होइ ।
बली भूप यद्यपि अहै, तव बल सरिस न कोइ ॥

छंद चौबोला ।

शासन देहु मोहिं मुनिनायक देखहु समर तमाशा ।
यकक्षण में नृप गाधिसुवनको करिहौं दर्प विनाशा ॥
कह्यो वसिष्ठ करहु जस भावै तजौं न मैं तुम काहीं ।
इतना कहत धेनु कोपित ह्वै सिरज्यो यवन तहांहीं ॥
हथियारन युत यवन हजारन कढे तासु हुंकारा ।
विश्वामित्र विलोकत सिगरी कियो सैन संहारा ॥
गाधितनय तब करि अमर्ष अति कियो धनुष टंकोरा ।
छाय दिशानन बाणन मारि मलेच्छनको मुँह मोरा ॥
सुरभी जोहि यवनगण भागत निज प्रति रोमनि तेरे ।
सिरज्यो कोटिन महा मलेच्छन भरिगे भूमि घनेरे ॥
आयुधवंत यवन धाये सब मारन गाधि कुमारै ।
भूपति मारि मारि बाणन बहु कियो यवन संहारै ॥
कह्यो वसिष्ठ धेनु सिरजहु फिरि इतना सुनि सुरभी सो ।
कोटिन यवनसकलसिरज्योतनुकारि अद्भुत करनी सो॥
हय गय स्यंदन सहित पदातिन कीन्हे सैन निपाता ।
विश्वामित्र पुत्र शत धाये करन वसिष्ठहि घाता ॥
तिनको कियो भस्म ताही क्षण करि वसिष्ठ हुंकारा ।
रह्यो अकेल गाधिनंदन तहँ लह्यो विषाद अपारा ॥
बिना तेजको यथा दिवाकर आकर विना रतनकी ।
विना पक्ष पक्षी अहि विष बिन संपाति विना यतनकी॥

दोहा--यहि विधि ह्वै कौशिक नृपति, छोडि विजय उत्साह।
छोटे सुतको राज्य दै, गयो हिमालय माह॥

छन्द चौबोला।

शंभु प्रसन्न हेतु कीन्ह्यो तप सहि आतप जलधारा।
महाकठिन तप लखि गिरिजापति ह्वै प्रसन्न इक बारा॥
आये विश्वामित्र आश्रमहि कह्यो माँगु वरदाना।
महादेवके वचन सुनत नृप मंजुल वैन बखाना॥
जो प्रसन्न मोपर गिरिजावर तौ करि जनपर नेहू।
अस्त्र शस्त्र सब विश्व भरेके मंत्र सहित मोहिं देहू॥
एवमस्तु कहि शंकर गवने पाइ अस्त्र महिपाला।
मृतक समान वसिष्ठ मानि तहँ बाढ्यो दर्प विशाला॥
आयो कुपित ब्रह्मसुतपहँ सो पावक अस्त्र पँवारा।
अति रमणीय वसिष्ठ आश्रमहि ज्वालन मालन जारा॥
भगेभभरि सब शिष्य पुकारत अति आरत दिशि चारी।
जीव विहीन कुटी भै मुनिकी रह्यो एक तपधारी॥
ब्रह्मदंड लै खडो ब्रह्मसुत करत ब्रह्म कर ध्याना।
अति निर्भय रवि कोटि तेज तनु कोपित वचन बखान
रे रे दुराचार मूरख वर आश्रम मोर जरायो।
ताते जानै निज आयुष हत का करिहै सजि आयो॥
अस कहि खडो वसिष्ठ अकेलो ब्रह्मदंड कर धारे।
विगत धूम इव पावक ज्वाला तीक्षण तेज पसारे॥
अग्नि अस्त्र छोड्यो कौशिक नृप सो मुनि दंड समाना।
सिगरे अस्त्र चलाय दियो तहँ ब्रह्मदंड किय पाना।

दोहा--लियो ब्रह्मशर गाधिसुत, मुनि पै दियो चलाय।
ब्रह्म तेजमहँ मिलत भो, मानहुँ गयो बुताय॥
ग्रसि लीन्ह्यो ब्रह्मास्त्र जब, प्रगट्यो तेज कराल।

जरन लग्यो त्रिभुवन तहां, भे सुर सिद्ध विहाल ॥

छंद चौबोला ।

आय सकल तहँ मुनि वसिष्ठ की अस्तुति करि कह बानी ।
भयो पराजित मूढ महीपति तेज समेटहु ज्ञानी ॥
विश्वामित्र विलोकि दशा निज मानि हारि अस भाख्यो ।
धिक क्षत्रिय बल धन्य विप्र बल अबलों भ्रम उर राख्यो ॥
अतिशय तापित हृदय उसाँस लै पुनि पुनि मनहि विचारी ।
हारि गयो मैं मुनि वसिष्ठसों करिये काह मुरारी ॥
अब करिहौं मैं घोर महातप विपिन बीच कहुँ जाई ।
की तजि हौं तनुकी ह्वै हौं हठि अब ब्रह्मर्षि बजाई ॥
अस गुणि गयो दिशा दक्षिण मुनि गाधिसुवन युत रानी ।
कियो घोर तप सहस वर्ष लों फल मूलाशन ज्ञानी ॥
करत महातप भये पुत्र शत मधु छन्दादिक नामा ।
वर्ष सहस बीते चतुरानन आयो पूरणकामा ॥
विश्वामित्रहि कह्यो चारिमुख भये राजऋषि राजा ।
अस कहि गमन्यो लोक आपने लै निज सकल समाजा ॥
किय ब्रह्मर्षि होन हित अतितप नाम राजऋषि पायो ।
विश्वामित्र दुखी ह्वै तहँ पुनि करन महातप ठायो ॥
इतै त्रिशंकु भूप कौशलपुर भयो जगत विख्याता ।
यज्ञ करन हित गुरु वसिष्ठसों बोलि कही अस बाता ॥
गुरु अस यज्ञ करावहु हमको सहित देह दिवि जाहीं ।
कह्यो वासिष्ठ अशक्य भूप यह हम करवैं हैं नाहीं ॥
दोहा--तब त्रिशंकु गुरुसुतन पहँ, दाक्षिण दिशा सिधारि ।
सोई यज्ञ करावने, कह्यो चरण शिरधारि ॥
गुरुसुत बोले सुनु नृपति, पितु न करायो जौन ।
कैसे हम करवावहीं, कहब उचित नहिं तौन ॥

सुनि सरोष गुरुसुत वचन, कह्यो त्रिशंकु बहोरि।
आन गुरू करिहौं कहूं, दियो खोरि नहिं मोरि॥
तहां वसिष्ठकुमार सुनि, भूपति वचन कठोर।
दीन्हे शाप त्रिशंकु को, करि अमरष अतिघोर॥
रे त्रिशंकु गुरुद्रोह किय, लेहु तासु फल हाल।
अति संतपित शरीर च्युत, होहु जाय चंडाल॥

छंद चौबोला।

भूपतिभवन दुखी फिरि आयो शोचत निशा वितायो।
होत भोर भो घोर वपुष नृप श्याम वसन तनु जायो॥
कनकआभरण भये लोहके अति विकराल शरीरा।
ताहि देखि मन्त्री पुरजन सब भागे भयभरि भीरा॥
तपतत्रिशंकुदिवानिशि डगरयो लह्योनकहुँ सुखप्रीती।
विश्वामित्र चरण चलि पकरयो करि शरणागत रीती॥
त्राहि त्राहि रक्षहु मोहिं मुनिवर जरौं विप्रकी शाप।
असकहि विश्वामित्रहि भाष्यो निज वृत्तांत सतापा॥
विश्वामित्र वासिष्ठ वैर गुणि कह्यो त्रिशंकुहि बानी।
सहित शरीर स्वर्ग पहुँचैहौं नहिं करु भूप गलानी॥
अस कहियज्ञअरंभ कियो मुनि मुनिगणसकल बोलायो।
आये सकल सिद्ध योगी ऋषि नहिं वसिष्ठ सुत आये॥
क्षत्रिय याजक जहँ चंडाल अहै यजमान अयाना।
कैसे देव भाग लैहैं सब हम नहिं करब पयाना॥
यह सुनि विश्वामित्र कोप करि दीन्हों शाप प्रचंडा।
होहिं वासिष्ठ कुमार भस्म सब यह दूषण कर दंडा॥
सात जन्म लगि नीच योनि लहि होहिं स्वमांस अहारी।
जेठ पुत्र जो है वसिष्ठको नाम महोदै धारी॥

सो निषाद ह्वै है बहु जन्मनि सोइ गुँह नाम उचारी ।
अस कहि लाग्योकरन यज्ञमुनि नृप त्रिशंकुसुखकारी ॥
दोहा–भाग देन देवन सबन, आन्यो गाधिकुमार ।
नहिं आये लखि देवतन, कीन्ह्यो कोप अपार ॥
कौशिक तप बल तुरतहीं, कियो त्रिशंकु पयान ।
पहुँच्यो स्वर्ग समीप जब, तब रोक्यो मघवान ॥
रे गुरु विमुख त्रिशंकु नृप, गिरो भूमि पुनि जाय ।
नीचे शिर ऊरध चरण, गिर्‍यो भूप दुख पाय ॥

छंद चौबोला ।

विश्वामित्रहि दुखित पुकार्‍यो त्राहि त्राहि मुनिराई ।
तिष्ठ तिष्ठ कहि गाधितनय तहँ रोक्यो तेहि बरिआई ॥
महातपोबल रचनलग्यो तहँ दूसर स्वर्ग महाना ।
विविध देव नर पशु फल फूलहु अन्न रचे तहँ नाना ॥
देखि द्वितीय स्वर्ग निर्माणत लै सुर सुरपति आयो ।
कौशिक मुनिसों कह्यो वचन वर वृथा मुनीश रिसायो ॥
जैसो कहो करैं हम तैसहि वचन प्रमाण तुम्हारे ।
मम निर्मित सुर विटप अन्न पशु रहैं सदा नभ तारे ॥
नृप त्रिशंकु सुरसरिस लहत सुख रहै अकाश सदाई ।
अधशिर ऊरध चरण चारु वपु तेज चमक चहुँघाई ॥
एवमस्तु देवन सब भाषे गये भवन छबिराशी ।
विश्वामित्र प्रभाव आजलौं रहत त्रिशंकु प्रकाशी ॥
अति निशंक सुन्दर मयंक इव यदपि कलंकहि रासी ।
विश्वामित्र विघ्न तपमें लखि मनसे मानि उदासी ॥
गयो तुरत पुष्कर कीन्ह्यो तप महाघोर तेहि काला ।
ताही समय अवधपुर भयऊ अंबरीष महिपाला ॥

लाग्यो करन यज्ञ विप्रन युत मख पशु हरयो सुरेशा।
कह्यो विप्र सब पशु हेरहु नृप नहिं पाइहो कलेशा॥
हेरत हेरत अंबरीष नृप भृगुतुंगहि चलि गयऊ।
तीनपुत्र युत तहँ ऋचीक मुनि दार सहित तप ठयऊ॥

दोहा--याच्यो यक मुनि सुत नृपति, करिकै धर्म चपेट।
लहुरो दियो न मातुतहँ, पिता दियो नहिं जेठ॥
नाम जासु शुनशेपसो, मँझिलो रह्यो कुमार।
सो अपने ते कहत भो, मोकहँ लेहु भुआर॥
लाख सुरभि दै नृपति तेहि, शुनशेपहि लै लीन।
अंबरीष डगरयो अवध, पुष्कर डेरा कीन॥
मातुलहैं शुनशेप के, विश्वामित्र उदार।
सो विचारि मुनिको तनय, कीन्ह्यो जाय पुकार॥

छंद चौबोला।

हैं मातुल हम शरण तुम्हारे राउर चरण अधारा।
यहि अवसर नहिं मातु पिता मम तुमहीं हौ रखवारा॥
अस कहि खबरि कही सिगरी जस अंबरीष ले आये।
लाखगऊ लै मख पशु कीन्ह्यो जनानि जनक यश गाये॥
सुनिमुनिउर उपजी अति करुणा बही नयन जल धारा।
लियो अंक बैठाय भगिनि सुत समुझायो बहु बारा॥
शतौ आपने सुतन बोलि तहँ कौशिक वचन उचारे।
याके बदले मोहिं एक सुत होहु यज्ञ पशु प्यारे॥
परम धर्म है पर उपकार सार यक वेद बखाने।
ताते अंबरीष भूपति सँग जाहु पुत्र सुख माने॥
सुनि पितुके अस वचन पुत्र शत कहे वचन रास साने।

दै निज सुत वधहित कारियत ज्यों निजतनु मांसअहारा।
इतना सुनत सुतनकी वाणी मुनिभे कुपित अपारा ॥
तुरत शाप दै घोर महामुनि निज पुत्रनको जारा ।
दियो मंत्र द्वै पुनि शुनशेपहि यहि विधि वचन उचारा ॥
यज्ञ यूप महँ जब तोहिं बांधहिं भूपति भगिनि कुमारा ।
तेहि अवसर द्वै मंत्र पढ्यो तुम मिटी भूरि भय भारा ॥
अस कहि बिदा कियो शुनशेपहि अंबरीष संग माहीं ।
यज्ञ यूप बांध्यो तेहि जबहीं पढ्यो सुमंत्रन काहीं ॥
दोहा--भे प्रसन्न हरि वासवहु, अभय कियो सुरराउ ।
अछत गयो शुनशेप घर, विश्वामित्र प्रभाउ ॥

छन्द चौबोला ।

भई समापति यज्ञ भूपकी वासव बहु फल दीन्ह्यो ।
महा विघ्न गुणि तहाँ महामुनि जाय अंत तप कीन्ह्यो ॥
पूरण सहस वर्ष बीते जब करत महातप ताके ।
आय देवपति देव सहित कह तुम ऋषि हो वसुधाके ॥
विश्वामित्र बहुरि विमनस ह्वै करन लग्यो तप घोरा ।
वासव मोहिं नहिं कह्यो ब्रह्मऋषि नहिं जान्यो श्रममोरा ॥
एक समय सुंदरी अप्सरा तहां मेनका आई ।
मज्जन करत ताहि लखि कौशिक मोह्यो तप विसराई ॥
ह्वै कंदर्प दर्प के वशमहँ ल्यायो कुटी लेवाई ।
सेवक सरिस कियो सत्कारहि राख्यो सदन टिकाई ॥
करत विहार मेनका के सँग बीतिगये दश वर्षा ।
जान्यो जात काल कौशिक नहिं भयो विघ्न उतकर्षा ॥
एकादश वर्षंहि मुनि के पुनि गुनि देवन कृतकर्मा ।
करि गलानि मनमानि विघ्नतप कह्यो गयो सबधर्मा ॥

शापदेत गुणि डरपत सन्मुख खडी मेनका प्यारी।
बिदा कियो मेनका महामुनि मंजुल वचन उचारी॥
कौशिक जाय कौशिकीके तट महाघोर तप ठाना।
बीते वर्ष सहस्र करत तप सहत शोक दुख नाना॥
डरे देव सब आय कहे तुम भये महर्षि मुनीशा।
पुनि विरंचि तेहि कह महर्षि मुख कृपा योग जगदीशा॥

दोहा--मुनि बोले नहिं ब्रह्मऋषि, भये कौन अपराध।
विधि कह इन्द्रियजीत नहिं, यही कियो तोहिं बाध॥

छन्द चौबोला।

अस कहि गये विरंचि ब्रह्मपुर मुनि ठान्यो तप घोरा।
निरालंब ऊरध भुज ठाढो भक्षत पवन झकोरा॥
ग्रीषमऋतु तापत पञ्चागिनि वर्षा रहत उघारे।
शिशिर सलिल महँ रहत याम वसु बीते वर्ष हजारे॥
करत महातप गाधिसुवन कहँ भयो देव संतापा।
रंभा को बोलाय वासव अस बोल्यो वचन अमापा॥
विश्वामित्र महातप को तप करहु विघ्न तुम जाई।
जोरि पाणि पंकज रंभा तहँ बोली वचन डेराई॥
मोहिं शाप दै भस्म करी हठि कृपा करहु सुरराई।
शक्र कह्यो जब काम संग है का करिहै मुनिराई॥
जाहु वसंत काम रंभा सँग मुनि तप देहु नशाई।
चली चारु रंभा नाशन तप काम वसंत लेवाई॥
भयो वसंत विपिन मंजुल महि फूलन सेज बिछाई।
कोकिल कलरव नचन लगीं तहँ सुर सुंदरी सुहाई॥
हन्यो पंचशर मुनिहि महाशर कौशिक नयन उघारा।
जानि शक्र कृत कर्म कोपि अति रंभा शाप उचारा॥

रंभा तू पषाण ह्वै है हाठि दश हजार भारि वर्षा।
तुहिं उधार करिहै वासिष्ठ मुनि तब पैहै पुनि हर्षा ॥
रंभै शाप देत मनसिज लखि भग्यो वसंत समेतू
कही जाय सिगरी निज करणी रंभा शाप अचेतू।

दोहा--इते महामुनि मन गुण्यो, कोप कियो तप घात।
ताते कोप शरीर ते, दूरि करौं भलि बात ॥
नहिं बोलौं टरिहौं नहीं, शोषौं श्वास शरीर।
नहिं ह्वै हौं ब्रह्लाष मैं, तबलौं सहिहौं पीर ॥
करि अस कौशिक नेम मन, सहस वर्ष को धीर।
दुराधर्ष तप करत भो, चलि गङ्गा के तीर ॥
त्यागि हिमाचल गाधिसुत, पूरब दिशा सिधारि।
सहस वर्ष लों मौन व्रत, कीन्ह्यो मनहि विचारि

छन्द चौबोला।

रह्यो काठ इव अचल महामुनि देव विघ्न बहु कीन्हे।
तदपि क्रोध उपज्यो नहिं उरमें महामौन व्रत लीन्हे ॥
बीते वर्ष सहस्र वित्यो व्रत अन्न खान कछु लाग्यो।
आयो वासव विप्ररूप धरि याचनको अनुराग्यो ॥
दीन देखि दीन्ह्यो व्यञ्जन सब कौशिक कियो न कोपा।
कह्यो न कछु पुनि मौन धारि व्रत तपपथ महँ पदरोपा ॥
आसन अचल मौन व्रत धारे रह्यो रोकि पुनि श्वासू।
तपत महातप श्वास रोकि मुनि ध्यावत रमानिवासू ॥
बीते वर्ष हजार कौशिकहि कढ्यो धूम शिर तेरे।
जरन लग्यो ताते त्रिभुवन सब लोकन परे अँधेरे ॥
देव असुर ऋषि अहि गंधर्वहु सब भे व्याकुल भूरी।
मोहित विश्वामित्र महातप दीन्हे त्यागि गरूरी ॥

अति कसमसत जरत तनु धाये गे विधि लोक दुखारी।
जोरि पाणि पंकज सब भाषे सुनहु विनय मुखचारी॥
लोभ करायो क्रोध करायो बहुविधि गाधिकुमारै।
बढत गयो दिन दून तासु तप नेकहु नहिं हिय हारै॥
जो नहिं तासु मनोरथ पूरण करिहो तुम चतुरानन।
नाशन चहत भुवन तप तेजहिंज्वाला उठति दिशानन॥
क्षुभित सिन्धु धरणी नित कंपति मारुत बहत कठोरा।
फूटन चहत धराणि धर धसकत बढ्यो तेज तपघोरा॥
दोहा—जबलौं निज तप तेज ते, दहै न भुवन मुनीश।
तबलौं तासु मनोरथहि, पूरण कीजै ईश॥
देवराज की राज जो, माँगै गाधिकुमार।
तौ हमरो संमत अहै, दीजै विनय विचार॥
सुनि अलेख लेखन वचन, गुणि अशेष तप शेष।
करन रेख ब्रह्मर्षि की, विधि आयो विन द्वेष।

छन्द चौबोला।

विश्वामित्रहि कह्यो वचन वर अब ब्रह्मर्षि भये हौ।
अति तोषित तुम्हरे तप ते हम धनि धनि धराणि जयेहौ॥
है कल्पांत तिहारी आयुष तदपि स्वच्छन्दहि मरना।
जात अहैं हम लोक आपने सुखी रह्यो सुख भरना॥
सुनि विरंचिके वचन महामुनि कीन्ह्यो दंड प्रणामा।
कह्यो विरंचिहि वचन जोरि कर सिद्धि कियो मनकामा॥
जो प्रसन्न तुम होउ दयानिधि जानहु मोहिं प्रशांता।
तौ परब्रह्म वपुष प्रतिपादक दीजे वेद वेदांता॥
क्षत्रधर्मविद वेदब्रह्मविद मुनि वासिष्ठ तुव सूना।
कहहिं मोहिं ब्रह्मर्षि हर्षि हिय करहिं नेह दिन दूना॥

सुनि मुनि वचन देवगण धाये तुरत वसिष्ठहि ल्याये ।
विश्वामित्र वसिष्ठ दुहुँनकी अतिशय प्रीति कराये ॥
कह्यो वसिष्ठहु विश्वामित्रहि तुम ब्रह्मर्षि भये हौ ।
जगत् चराचर अपने तप बल साति२जीति लये हौ ॥
सुनि वसिष्ठ के वचन विनोदित विश्वामित्र सुखारी ।
पूजन कियो वसिष्ठहि गुरु गुणि सुनहु राम धनुधारी ॥
याहि विधि भये ब्रह्मऋषि कौशिक कथा सकल मैं गाई ।
येई रघुपति मुनिन शिरोमणि तपमूरति मनभाई ॥
धर्म धुरंधर तेज तरणि इव विश्वामित्र मुनीशा ।
धन्य धन्य तुम धन्य बंधु दोउ नित नावहु तेहिं शीशा ॥
दोहा--अस कहि गौतम को सुवन, मौन भयो मतिमान ।
राम लषण मिथिलेश युत, सुनि गाथा हरषान ॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीरामस्वयंवर ग्रन्थेविश्वामित्र चरित्र वर्णनं नाम षोडशः प्रबन्धः ॥ १६ ॥

दोहा--जोरि पाणि पंकज हरषि, कह्यो बहुरि मिथिलेश ।
धन्य धन्य प्रभु गाधिसुत, सत्य धर्म तप वेश ॥

छंद चौबोला ।

मोहिं धन्य कीन्ह्यो धरणी महँ धर्म धुरंधर नाथा ।
धनुषयज्ञ देखन मिसि आये सहित लषण रघुनाथा ॥
किये देश घर कुल मम पावन कृपा कही नहिं जाई ।
शतानंद मुख सुनी रावरी महिमा मुदित महाई ॥
सहित समाज राम लक्ष्मण युत तुव गुणगण गरुआई।
तौलि न जात चित्त तजि यामह कहँ लौं कहौं बडाई ॥
हैं अनंत बल हैं अनंत तप हैं अनंत गुण रूरे ।

सुनत रावरो चरित तोष नहिं होत श्रवणसुख पूरे ॥
बीतिगये युग याम दिवस के क्षण सम परचो न जानी
ढरे भानु पश्चिम आशा कहँ सुनहु विनय विज्ञानी ॥
पाय रजायसु जाउँ भवन कहँ ऐहौं बहुरि प्रभाता ॥
पैहौं हर्ष देखि पद पंकज सहित नवल दोउ भ्राता ॥
अति प्रसन्न ह्वै कह्यो गाधिसुत भली कही मिथिलेशू
गवनहु राज राजमंदिर कहँ मैं रहिहौं यहि देशू ॥
सुनिमुनिवचनमुदितमिथिलापतिमुनिपदकियोप्रणामा ॥
आशिष लै दीन्ह्यो परदक्षिण गयो हर्षि निज धामा ॥
वस्तु अनेक विशेष विमल वर बहु विदेह व्यवहारा ॥
पठयो विश्वामित्र मुनीशहि तैसहि राजकुमारा ॥
शतानंद पुनि आय मुनीशहि रघुपति लषण समेतू ॥
सादर सपदि लेवाय जाय दिय डेरा विमल निकेतू ॥
दोहा—अति रमणीय विशाल वर, गृहाराम अभिराम ॥
बसे महातप धाम मुनि, सहित लषण श्रीराम ॥

चौपाई ।

कथा मनोहर अति अब आई । ताते रचन चहौं चौपाई
चौपाई सम छंद न आना । सुभग मधुर पद लै विधि ना
लखिमिथिलापति अति सतकारा । भे प्रसन्न मुनि नृपति कुमा
करि सेवा मुनि की दोउ भाई । भोजन कीन स्वाद समुदाई
सुभग सेज करि कछु विश्रामा । उठे राम दिन रह यक याम
भूषण वसन पहिरि तेहि काला । बाण शरासन लसत विशाल
कौशिक निकट गये दोउ भाई । लहि आदर बैठे शिरनाई
मुनि निहारि नख शिखसुठि शोभा । नहिंअघात निरखतमन लोभ
मुनि मंडली तहां जुरि आई । लगे कहत मुनि कथा सोहाई

पूरव जनक वंश प्रभुताई । जनक नगर की सुन्दरताई ॥
दोहा--जनकनगर शोभा सुनत, स्वर्ग न जासु समान ।
लखन लालसा लषणकी, लाखन विधि अधिकान ॥

कवित्त ।

मिथिला नगर शोभा देखनको लोभा चित्त, मुनिके सकोच वश कढति न बात है । तैसे जेठ बन्धु रघुनायक सकोच पाय, लाज लरिकाईकी अधिक अधिकातहै ॥ रघुराज मुनिन समाज अभिलाष तैसी, जानिकै मनोरथ मनहिं सरसात है । उरते उठत कण्ठ आइकै फिरत नट, बटको तमाशो लखि राम मुसकात है ॥

दोहा--जानि लखन पुर लषण रुख, प्रभु नेसुक मुसकाय ।
जोरि जलज कर कहत भे, मुनिसों पद शिर नाय ॥

सवैया ।

नाथ कछू विनती सुनिये, रघुराज चहै लघु बन्धु हमारो ।
पाय रजाय तिहारि प्रसन्नसों, देखहुँ मैं मिथिलापुर सारो ॥
मोहिं लजाय डरै तुमको प्रभु, ताते कछू नहिं वैन उचारो ।
जाऊं लेवायलै आऊं देखाय, पुरी यदि शासन होय तिहारो ॥
युक्तिके बोरे पछोरे पियूषके, बैन निहोरे कह्यो रघुराई ।
सो सुनि गाधिकुमार विचारि, कह्यो सुख अंबुधि चित्त डुबाई ॥
जाहु लला लषणे सँग लै, पुर देखहु पै न कियो लरिकाई ।
राखो नहीं तुम जो मर्याद, कहौ मुनि दीन वसैं कहँ जाई ॥
दोहा--सुनि मुनि वचन मुदितमन, पुरुष सिंह रघुवीर ।
धर्म धुरन्धर वंदि गुरु, चले रुचिर रणधीर ॥

सवैया ।

शिर चौंतनी चारु विचित्रबनी, माणि मोतिन की लर त्यों लहरै ।
छबि सिंह मनोहर मूरति सो, क्षणही क्षण क्षोणि छटा छहरै ॥

युग कन्धन तूण कसे नृप सून, उछाहित दून गहे उ
रघुराज गरीब नेवाज दोऊ, अवलोकन काज चले शु
पट पीत विराजि रहे कटि में, तनु कोटिन कामके दर्प
उर मोतिनमाल विशाल लसै, करवाल कराल जे शत्रु ज
झनकारी मची पग नूपुर की, जिनको सुर सिद्धमुनीश
अवधेशके डावरे साँवरे गौर करैं मन बावरे पन्थ गहे ॥

दोहा–तिलक रेख राजति रुचिर, सुन्दर भालविशाल।
मनहुँ अष्टमी नखत पाति, पहिर्यो चंपक माल ॥
घुँघुवारी अलकें लटकि, हलकैं छलक कपोल।
मनु अरविंद मरंदहित, अलि अवली:अति लोल ॥
कारी कारी आहिन सी, भ्रुकुटि लहै श्रुति संग।
उपजत विनशत फलत जग, लहि नेसुक जिनभंग॥
छहरति हँसनि मरीचिका, महि मण्डित चहुँ ओर।
मुख मयंक लखि आजु पुर, ह्वैहै सकल चकोर ॥
कटि निषंग धनु वाम कर, दाहिन फेरत बान।
मोल लेन जनु जात हैं, जनक नगर जन जान ॥

चौपाई ।

पुरुष सिंह सुन्दर दोउ भाई। पहुँचे पुर फाटक जब जाइ
ऋषिन भीर रणधीरन संगा। नगर विलोकन भरी उमंगा
रहे कोट पुर बाहर जेते। देखि युगल जोरी तब तें
ठाढे भये आय पथ आई। निज निज सब कारज बिस
देखि मनोहर मूरति जोरी। त्यागे पलक भई मति भो
कहते कौन भूप के ढोटा। आये इतै अपूरव जोटा
कोउ कह दोउ अश्विनीकुमारा। चहत स्वयंवर नयन निहार
कोउ पूछहिं मुनि जनन बोलाई। कुँवर कौन के देउ बताइ
केहि कारण मग पग चालि आये। गज तुरंग रथ क्यों नहिं ल्या

कौने भाग्यवंतके जाये । मानहु विधि निज हाथ बनाये ।
जो कोउ तिनहि बतावन लागै । ते धनि कहत अवधपति भागै॥

दोहा--इक एकनतें कहत महँ, फैली खबर अपार ।
आवत देखन नगर दोउ, सुन्दर राजकुमार ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

कहैं एक एकनते तेऊ एक एकनते, खबर खुइयाली भै महल्लन महल्ला हैं । नवलकिशोर दोऊ चारु चित्त चोर अब, आवैं यहि ओर ठौर ठौर जोर हल्लाहैं ॥ रघुराज देखन उमंग भरे नारी नर, त्यागे संग छाके रंग अंगन उतल्ला हैं । गलिनमें गल्ला वृन्द अलिन विहल्ला पूछैं, कौनके महल्ला मध्य दशरथ लल्लाहैं ॥

दोहा--जो जोहत सो जकि रहत, नैननि पलक निवारि ।
चित्र पूतरीसे भये, जनकनगर नर नारि ॥
देख्यो गोपुर जनकपुर, वनक विकुंठ समान ।
तनकहीन नहिं विधिरचानि,कनककलशअसमान॥
नृपबालक प्रविशत नगर, धाये बालक वृन्द ।
पुरपालक आगू लिये, नहिं मालक मतिमंद ॥

सवैया ।

छोटे बडे पुरवासी सबै, लखैं रूप अनूप सु भूप किशोरन।
मेचक कुञ्चित केश मनोहर, चंचल नैनन चित्तके चोरन ॥
श्रीरघुराज चलैं मग मंद, अनंद उदोत करै सब ठोरन।
खूबखुशीके खजाने खुले पुर, धावन धावन खोरन खोरन ॥
विज्जु छटा ज्यों घटा घनमें,तिमि ऊँची अटान चढीं पुरनारी ।
धामको काम विसारि वधूयुग, बन्धु विलोकहिं होहिं सुखारी ॥
श्रीरघुराजके आनन अंबुज, भे अलि अंबक आशु निहारी ।
पावैं यथासुर पादपको यक, बारही भागते भूखे भिखारी ॥
झांकें झुकी युवतीते झरोखन, झुण्डनिते झरफैं करटारी ।

देखि मनोहर सुन्दररूप, अचञ्चल कीन्हें दृगञ्चल प्यारी
श्रीरघुराज सखीन समाजमें, लाजको काज परै न निहारी
आपुसमें वर बैन भनै सखि, आजु लही फल आँखि हमारी
भाखतीं चाखतीं शोभ सुधारस, कोई नहीं अस है तनुधारी
जोहरी होत न चारि भुजा तौ, समान कही इनके अनुहारी
बूढो महामुनि शांत उपासी, चलाइये क्यों चरचा मुखचा
श्रीरघुराज सुनो सखि सत्य, अहैं तिमि आनन पंच पुरारी
देवनके पलकै न परै दृग, तैसहि दैत्य भयङ्कर भा
देखे हजारन राजकुमारन, आये स्वयंवर कारण का
श्रीरघुराज हमारे विचार, सुधाधरसे मुख मंजु निहा
कैसे अनङ्ग लहै समता जेहि, अङ्गन जारि दियो त्रिपुरा
दानव मानव देव अदेवहु, देखे न काहि विदेह पुरी मैं
पूरब गाथ पुराणनमें सुनि, ताते कहौं सखि बात फुरी मैं
श्रीरघुराज स्वयंवरके दिन, ऐहैं नरेश समाज जुरी मैं
तादिन देखि परी सबकी छबि, कौन मिली इनकी मधुरी मैं
सो सुनि बोली द्वितीय सखी, टक लाये कुमारनके मुख मा
ते कवि क्रूर कुबुद्धि सही जिन, आनन इंदु समान बताहीं
पक्ष घटै पुनि पक्ष बढै त्यों, कलङ्क मढै रहे रोगी सदाहीं
मो मन आवत श्रीरघुराज, इन्हैं लखि लाज बसै नभ माहीं
कौनो सखी पुनि बोलि विनोदित, सत्य सखीहै विचार हमा
शंभु विलोकी इन्हैं कबहूँ, समता करतो कछु देखिके मा
सोई विचारि बडो अपराध, प्रकोपिके तीसर नयन उघा
श्रीरघुराज मनोजकी मौज, उतारि भले दईमारेको जा
और कह्यो सजनी सुनिकै पुनि, कौनके लाल महा छबि छा
कौन है नाम त्यों ग्राम है कौन, कहौ केहि कारण कौन पठा

कैसे रहे जननी जनकौ नहिं, नेसुक नयन दया रस लाये ।
श्रीरघुराज सुकोमल पायँन, जात चले चख चित्त चोराये ॥
दूसरी बोली सुनो रघुराज, अहैं अवधेश नरेशके ढोटे ।
कौशिक ल्याये मखैहित रक्षण, खेत खपाय दिये खल खोटे ॥
गौतम नारिको तारि तुरंतहि, आये विदेह पुरी भल जोटे ।
श्यामको नाम कहैं सब राम, कहैं लषणै असबंधु जो छोटे ॥
धन्य है कौशिला राम प्रसू लषणै, जननी सो सुमित्रा कहावै ।
आली इन्है अवलोकिके आंखिन, और कहौ किमिनयनसमावै ॥
श्रीरघुराज सखीन समाजमें, आज मो लाजको काज परावै ।
जाति चली अवरोकि गलीमिलौं, छैलछलीकोभलीयहभावै ॥

दोहा--विप्रकाज करि बन्धु दोउ, आये नगर विदेह ।
यक विदेह यहि पुर रह्यो, इन किय अमित विदेह ॥

सवैया ।

पुनि कोई तहां लखि राजकिशोरन, बोलि उठी मधुरी बतियां ॥
सखि येहि सुबाहु मरीच हते, नहिं लागत सत्य किहू भँतियां ॥
रघुराज महा सुकुमार कुमार, हमार हरै हियकी गतियां ।
निशिचारिन सङ्कलडावतमें, कस कौशिककी न फटी छतियां ॥
अपरा आलिसो सुनिवैनकह्यो, सखिजौन भयो सो भलो ह्वै गयो ।
विधि बैठ विदेहके कंठ इन्हैं, सिय व्याहैं विशेष तो मोद मयो ॥
यह श्यामल राजकुमार सखी, वरजानकी योगहि जन्मलयो ।
रघुराज तथा मिथिलापुर राज, अकाज यही जो न काजभयो ॥
कोई कह्यो रघुराज सुनो दुख, होत अरी क्षणहीं क्षणहीं मन ॥
भूप विदेह प्रतिज्ञा करी तुम, जानती हौ सिगरी सजनी जन ।
सो तजि हैं किमि चित्त कठोर, चितैचित चोर किशोर न केतन ।
जो न कियो परैं पन पेलि, पषाण परै पुहुमीपति के पन ॥

दोहा–जन्म अनेकनकी सुकृति, जो कछु होय हमार।
तो ब्याहै वर जानकी, सुन्दर श्याम कुमार॥

सवैया।

सो सुनि कोपि कही कोउ कामिनी, नेक नहीं सखि भेद
कौशिक पै मिथिलेश पधारि, लेवाय टिकाय दियो
श्रीरघुराज विचारिके ताते, कहौं हियसे नहिं मोहिं
कौशल राजकुमारको छोडि, कहौ मिथिलेश सिया केहि
दोहा–रूप मनोहर बन्धु दोउ, जो नहिं भूप लोभान।
तौ झूठहि कहवावतो, विश्व विदेह सुजान॥
ऊचो अञ्चल ओढि कोउ, कहति विरंचि मनाय।
श्याम कुँवर ब्याहै सिया, यह सुख देहु देखाय॥

सवैया।

कोऊ कहै रघुराज सखी यह, सूरजसों रुचि श्याम
चन्द्रसों गौर लसे लघु बंधु, मनोजहुको मद मोचन
दोखि इन्हैं गुणि त्यों प्रण भूपको, लागति री हियमैं
लै पुरवासिनकी विधि पुण्य, करै सबको हमरो उपकार
कोऊ कहैं कर जोरिकै ऊरध, शम्भु स्वयंभु विनय सुनि
हे भुजचारि मुरारि रमा, पुरवासिनके अत्र प्रेम
शारदा गौरि मनोरथ पूरहु, दीनता दोखि यही वर
श्रीरघुराज सु श्याम कुमारको, जानकी ब्याह विशेषि
नैन लजाते हिये पछिताते, बताते सुबैन कही साखि
ये कब आते हमें मिलि जाते, देखाते स्वरूप महामुद
जो महिजाते विवाह भयो तो, दोऊ रघुराज सुभ्राते
ये मिथिला ते न जैहैं कहूँ, ससुरारके नाते लखी सब

दोहा--कोइ सखि बोली तहां, किलकि कामना पूरि ।
जो अभिलाषा तुम करी, देव करी नहिं दूरि ॥
अपर अली बोली बहुरि, कही सखी अति नीक ।
होइ श्यामासिय व्याहु जो, सकल सुकृत फल ठीक ॥

सवैया ।

कोई कही मटकाइकै नैन, चढाइकै भौंह सुशीश डोलाई ।
तू ना सुनी री प्रभाव कुमारको, भाषतिहौं जोपै हौं सुनि आई ॥
येई अबै गये गौतमकी कुटी, सो इनके पगुकी रज पाई ।
श्रीरघुराज भयो बड काज, अहल्या सु पाहनते प्रगटाई ॥
सो सुनिकै कछु खेद भरी, सुकुमारता लालनकी लखि गाई ।
श्रीरघुराज कहौ सिधि काज, लखैं हम आजुही कौन उपाई ॥
शंभु कोदंड कठोर महा नव, राजकिशोर सुकोमल माई ।
क्यों प्रण छोरिहैं तोरिहैं चाप, बहोरिहैं सेंदुर सीयके आई ॥
कोई कह्यो धरो धीरज धाममें, राम हमैं सुख बोरिहैं बोरिहैं ।
सो मिथिलाधिपको प्रण बन्धन, वीर विशेषिकै छोरिहैं छोरिहैं ॥
श्रीरघुराज समाजके मध्य, महीपनको मद मोरिहैं मोरिहैं ।
श्याम महा अभिराम विना श्रम, शंभु शरासन तोरिहैं तोरिहैं ॥
विश्वकी सुंदरताई समेटिकै, चंद्र सुशीलता तासु मिलाई ।
कोमलता लियो कल्पलताकी, क्षमा क्षितिछीनदियो तेहि छाई ॥
जौन विरंचि रची सियमूरति, श्रीरघुराज भरी निपुणाई ।
सो विधि साँवरी सूरति सोहनी, मोहनी मंजुल दीन्ह्यो बनाई ॥
दोहा--नहिं संशय कछु कीजिये, हठि कारि हैं विधि व्याह ।
मिथिलापुर वासिन हमैं, होई अवाशि उछाह ॥
सुनि सिगरी ताके वचन, बोलीं एकहि बार ।
होइ ऐसही ऐसही, यही करै करतार ॥

पुरवासिन नारिन कहत, ऐसे बहु विधि बैन।
राजकुँवर निरखत नगर, मंद मंद भरि चैन॥

छंद हरिगीतिका ।

जहँ जात राजकुमार पथ पुर बार संग अपार हैं।
तहँ बार बार अनेक बार अनंदि ढारत धार हैं॥
करि अमित सत्कारन हजारन युवतिवृन्द निहारहीं।
ऊँचे अगारन लागि केवारन नैन पलक निवारहीं॥
वर्षहिं प्रसूनन वृन्द उमँगि अनंद श्रीरघुनंदपै।
कहुँ मंद सुरभित सलिल नालिका झरहिं गवन गयंदपै॥
आगे बतावत पंथ बालक लाल यहि मग आइये।
यहिओर कौतुकविविध विधि निजअनुजको दरशाइये
चितवत चहूंकित चारु नगर प्रयात अमित सोहातहैं
मनु छबि पुरीमहँ मार अरु शृंगार वपु दरशात हैं॥
कंचन कलश विलसत विमल मानहु गगन तारावली
फहरत पताके तुंग चमकत चारु जनु तडितावली॥
फाबित फटिककी फरस फाटक हाटकी हिय हारने।
फैलत फुहारन सलिल सुरभित द्वार द्वार हजारने॥
मनु कामकर निरमान विविध दुकान धनद धनीनकी
पन्ना पदिक तिमि पदुम रागन राशि लाग मनीनकी॥
कंचन कपाटन ठटे ठाटन बाट बाटन द्वार हैं।
सरसीन घाटन हेरि हाटन मुदित राजकुमार हैं॥
कहुँ चलत चारु तुरंग मत्त मतंग एकहि संग हैं।
कहुँ नगर अंगन नृपनकी चतुरंग उदित उमंग हैं॥
ऊंची अटा शारद घटा सो कलित कंचन तोरने।
गोले गवाक्षहु छजत छज्जा देव गृह मद मोरने॥

पिक मोर सुकहुँ कपोत जिनके लसत सत्य समान हैं।
बहु विहँग बैठहिं निकट परशत जानि उडत डेरान हैं॥
जहँ लखहु तहँ चौहट्ट मंदिर ठट्ट विशद बजार हैं।
राजत कनक सब वस्तु पूरित विविध अन्नागार हैं॥
जहि बाट गमनत राजसुत तहँ तहँ लगत जन ठाट हैं।
हर हाट में वर बाटमें घर घाट में नहिं आट हैं॥
अमरावती अलकावती पदमावती नहिं सरि लहैं।
गंधर्व चारण सिद्ध विद्याधर पुरीको सम कहैं॥
निरखत नगर हरषत कुँवर बरषत सुमन सुरवृन्द हैं॥
वैदिक महासुर पढत मंगल जैति रघुकुल चंद हैं।

दोहा--पुनि पूरवदिशि गवन किय, उभै बंधु रणधीर।
पंथ बतावत संग में, चली बालकन भीर॥

छन्द गीतिका।

कोउ कहत बालक इतै आवहु युगल राजकुमार।
तुमको देखावहिं जहँ स्वयंवर होनहार अवार॥
प्रभु चले बालक संग पीछे भरे लषण उमंग।
देखे धनुष मख भूमि चालि जेहि लखत लजत अनंग॥
अति विशद थल सम मध्य गच बिल्लौरकी मनु नीर।
विलसत वितान महान झालर झुकी मुकुतन भीर॥
चहुँ ओर परम उतंग मंच विरंचि विरचित भूरि।
नहिं कतहुँ रंचक जन विसंचक संच कर नहिं दूरि॥
तिनके तहां पाछे कछुक मंचावली यक ओर।
जेहि माँह बैठहिं जानपद संकेत होइ न ठौर॥
पाछे तिनहुँके धवल धाम विदेह दिय बनवाय।
पुर नारि बैठि निहारि कौतुक लहैं मोद निकाय॥

सोहत रजत के मंच छड बैठक कनकके भूरि।
कलसी कलित रतनावली तेहि भरे चंदन चूरि॥
वासव निवास विलास सम कीन्हें निवास प्रकास।
हठि हेरि होत निराश विश्वकर्मा निपुणता भास॥
प्रभु पाणि पंकज पकारि बालक देत सकल दिखाय।
पूछेहु बिना पूछेहु वनक थल देहिं विविध बताय॥
बालक बतावन व्याज प्रभु कर करत परश तुराय।
मुसकाय कबहुँ लजाय कबहुँ बताय आगू जाय॥
रचना स्वयंवर भूमिकी लखि करत कौतुक नाथ।
जकिसे रहत ठगेसे रहत हरि हेरि मींजत हाथ॥
लषणहिं बतावत विविध विधि कोदंड मख संभार।
मानत मनहिं महि आय निजकर कियो कुलि करतार॥
कोउ कहत बालक प्रभुहिं निकट बोलाय पाणि उठाय।
तुम कतहुँ देखे अस नहीं अस मोहिं परत जनाय॥
अवधेश राजकुमार सुनियत साहिबी शिरमोर।
मिथिलेश राज विभूति देखो छुआति छाहन छोर॥
प्रभु कहहिं कमला आतिहि चंचल भै अचंचल आय।
हमरे दृगंचल टरत नाहिं हिमंचलौ लाजि जाय॥
इन भवन सम नहिं भुवनमहँ कहुँ गवन मन नहिं देखि।
लक्ष्मीरमण गिरिजारमण मोहत विलोकि विशेखि॥
दोहा--जाके भ्रुकुटि विलासते, उपजत बनत जहान।
भक्ति विवश सो जनकपुर, चकित लखत भगवान॥
यह प्रत्यक्ष देखहु सबै, रघुपति भक्ति प्रभाउ।
रीझत राम सनेहसों, कौन रंक को राउ॥
पुनि आई मनमहँ सुरति, बाडि विलंब हम कीन।

बीति गये युग याम इत, निरखत पुर लवलीन ॥
मुनि अनखैहैं अवशि अब, जैहैं जो न तुराय ।
लषण लाल चलिये भवन, अस्त होत दिनराय ॥
लषण सुनत प्रभुके वचन, चले नाथके संग ।
करी विदा बालकनकी, राखत प्रेम प्रसंग ॥
यह अचरज देखहु सबै, जाको डरहु डेराय ।
सो कौशिक डर मानि मन, जात चलो अतुराय ॥
सभै सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउ भाय ।
गुरुपद पंकज शीश धरि, बैठे आयसु पाय ॥
संध्या समय विचारि मुनि, आयसु दीन उदार ।
नित्यनेम संध्या करहु, श्रीअवधेश कुमार ॥
मुनि शासन सुनि कुँवरदोउ, संयुत मुनिन समाज ।
संध्यावंदन सविधि तहँ, किये युगल रघुराज ॥
करि संध्यावंदन विमल, मुनि समीप पुनि आय ।
राम लषण बैठे मुदित, गुरुपद शीश नवाय ॥

कवित्त ।

शीश सूंघि पाणि पोंछि पीठहि अशीश दैकै, पूछचो मुनि कौशिक नगर हेरि आये हाल । कहां कहां बागे कहां कहां अनुरागे अति, यहि भूमि आगे कैसी सुखमा लखी विशाल ॥ रघुराज मिथिलाधिराजके महल देखे, लेखे कौन लोकसे सिहात जाको लोकपाल ॥ बीथिन बजारन अगारन हजारनमें, पुर नर नारिनको आये लाल कै निहाल ॥ जोरि पाणि बोले रघुवीर रणधीर दोऊ, करत प्रवेश पुर भई अति जनभीर । देखेहैं हजारन अगारन बजारनमें, भूति बेशुमारन धरीहै पन्थ तीरतीर ॥ रघुराज रंगभूमि देखेहैं स्वयम्वरकी, गये नहिं राजभौन जहां मिथिलेश वीर ।

शिष्य रावरेके अवधेशजूके डावरे, बोलाये बिन बावरेसे जायँ मतिधीर ॥

दोहा--सुनि रघुनन्दनके वचन, मन्द मन्द मुसकाय।
मुनिन वृन्द माधि गाधिसुत, कह अनन्द उरछाय॥
जो नहिं राखहु राम तुम, सकल जगत मर्याद।
तौ संहिता पुराण श्रुति, वृथा किये बहु वाद॥

चौपाई ।

कौशिक मुनिकी मति हुलसानी। कहन लगे पुनि कथा पुरानी
मूल पुरुष निमि नृप ह्वै गयऊ। ताते जनक वंश यह भयऊ
सुनहु राम निमि कुलकी गाथा। पैहौ मोद मुनिनके साथा
एक समय निमि भूप उदारा। यज्ञ करनको किये विचारा
कह्यो वसिष्ठहि वेगि बोलाई। यज्ञ करावहु गुरु सुखदाई
कह वसिष्ठ सुन निमि नरनाहा। मखहित मुहिं बोल्यो सुरनाह
मैं वासव कहँ यज्ञ कराई। तुमहिं करैहौं ऋतु इत आई
अस कहि गे वसिष्ठ सुरलोका। निमि नरेशके उपज्यो शोका
सुरपतिसों बहु सम्पति पावन। गे गुरु वासव यज्ञ करावन
तज्यो मोहिं गुरु लोभ बढाई। यह कैसे हमसे सहिजाई
अस गुणि कीन्ह्यो यज्ञ अरंभा। समुझि महीप गुरू कर दम्भा
आधी यज्ञ भई जेहि काला। आयो गुरु दिवि ते रघुलाला

दोहा–यज्ञ करत निमिको निरखि, गुरु वसिष्ठ किय कोप।
दई शाप निमि भूपको, होइ तोर तनु लोप॥

चौपाई।

निमि राजर्षि विनहि अपराधा। पाय शाप करि कोप अगाधा
दीन्ही शाप गुरू कहँ घोरा। लोभी तनु अब रहै न तोरा
गुरु चेला किय शाप प्रकाशा। मुनिनृप तनुकर भयो विनाशा

कछुक कालमहँ पुनि रघुराई । मित्रावरुण वीर्य घट पाई ॥
मुनि वसिष्ठ लीन्ह्यो अवतारा । निमिको देवन वचन उचारा ॥
निमि नरेश तुम धरौ शरीरा । प्रविशहु तेहि मिटिहै सब पीरा ॥
निमि कह नहिं हैहौं तनु धारी । मै रहिहौं सब भाँति सुखारी ॥
जेहि तनु तजन हेत मुनि राई । हरि सुमिरत बहु करत उपाई ॥
सो गुरुकृपा विवश तनु छूटो । को मोसम शठ जो फिरि जूटो ॥
देव प्रसन्न भये निमि पाहीं । वास दियो तेहि पलकन माहिं ॥
पलक निमेषन अरु उरमेषन । निमि वश रहत राम यह श्रुति भन॥
रह्यो धर्‍यो निमि नृपति शरीरा।मथन कियो तेहि मुनि मति धीरा॥

दोहा--जेहि शरीर ते पुरुष यक, प्रगट भयो तेहि काल
तेजवन्त छबिवन्त अति, मनहुँ सत्य दिगपाल ॥
तीन नाम ताके धरे, मुनिजन योग विचार ॥
सुनिये राजकुमार सो, मैं सब करौं उचार ॥
भयो जन्म ते जनकसो, बिन तनु भयो विदेह ।
भयो मिथिल सोइ मथन ते, मिथिला रच्यो सनेह ॥
ताते जे यहि वंशमें, होत नरेश प्रवीन ।
मैथिल जनक विदेह तिन, कहत नाम जगतीन ॥

सोरठा--कही कथा यहि भांति, मुनि समाज माधि गाधिसुत ।
बिती याम युग राति, अलसाने कौशल कुँवर ॥
मुनिवर आलस जानि, कह्यो राम अभिरामसों ।
शयन करहु सुखखानि, हमहुँ शयन करि हैं लला ।
अस कहि उठे मुनीश, पौढि गये कुश सेज पर ।
सुमिरि चरण जगदीश, सुखित शयन कीन्हे तहाँ ॥
युगल बंधु तहँ जाय, लगे चरण चापन करन ।
अति अचरज उर लाय, कहत देव देखत दृगन ॥

कवित्त ।

जाकी पदरेणु चित्त चाहिकै स्वयंभु शम्भु, शिर में धरन
नेति नेति ठानै हैं । योगी जन जनम अनेकन बितावैं नाहिं,
करि योग याग युक्ति बहु आनै हैं ॥ भनै रघुराज आजहूँ लौं
पाये नाहिं, नेति नेति वेद औ पुराणहु बखानै हैं । ओई प्रभु
चारु चापत चरण निज, कोमल करन धन्य धन्य भगवाने हैं

सवैया ।

हैं नहिं दीरघ चारिहूं ओर, कढी कितनी तरवान बेवाँ
कोर कठोरनि कंटकसी रज, पंक भरी उधरी सब ठाँ
रेखन रेख बसी है पिपीलिका, ते पद आपने अङ्ग उठा
कोमल कौलहू ते कर सों, रघुराज मलैं डर सों दोउ भा

दोहा--जेहि पद रज पावनहितै, तरसत मुनिवर देव ॥
सो प्रभु भक्त अधीन है, करत विप्र पद सेव ।
चापतचरण निहारि मुख, मुनिवर कह अकुलाय ॥
जाहु लाल करिये शयन, निशा सिरानी जाय ।
बार बार जब मुनि कह्यो, चरण वंदि रघुबीर ॥
कियो शयन तृणसेज में, धर्म धुरंधर धीर ।
लषण चरण चापन लगे, शरद कञ्ज युग हाथ ॥
बैठत उडत मराल युग, तरु तमाल जनु साथ ।

सवैया ।

अतिकोमल हाथनसों रघुराज, मलैं प्रभुपंकज पायँनको
डरपै कर मोर कठोरमहा, कछु पीर न होय सुखायनको
पंछितातमनै रहि जात कहूं, हुलसात मलै भरि चायनको
हरषात क्षणै विलखातक्षणै, धनि रामके बन्धु सुभायनको

पदकी रजलै कहुँ शीश भरैं, कबहूँ पदपंकज शीश धरैं ।
मनमाहिं विचारकरैं क्षणहीं क्षण, को जग मोसम मोद भरैं ॥
परिचारक लाखन औध अहै, तिनको सुखलूटि हमें अफरैं ।
भरतौ रिपुसूदन श्रीरघुराज, न आजु बराबरी मेरिकरैं ॥

दोहा--लखि सेवा लघु बंधुकी, ह्वै प्रसन्न कह वैन ।
लाल पौढिये सेज पर, जाति व्यतीती रैन ॥
रघुनायक आयसु सुनत, चरण वंदि लघु बंधु ।
कियो शयन प्रभुसों विलग, होय न अँग संबंध ॥

चौपाई ।

यहि विधि शयन किये दोउ भाई । रैन चैन भरि शयन सोहाई ॥
शशि कर विमल विभासित तारा । बहत मंद मारुत सुखधारा ॥
पादप पुहुपनकी झारि लाई । रही सुगंध भूमिमहँ छाई ॥
कहुँ कहुँ बोलत, मंजु पपीहा । सोवत और विहंग निरीहा ॥
छिटकी चन्द्र चन्द्रिका चारू । चमकत नव पल्लव हरहारू ॥
चरहिं अभीत जंतु वनचारी । जिमि सुराज लहि प्रजा सुखारी ॥
कुमुद प्रफुल्लित, मुकुलित कंजू । जिमि नय अनय मनुज मनरंजू ॥
बलित वियोग विथित चकवाका । चोर उलूकहु भये उडाका ॥
प्रविशत तम शशि कर हटि जाई । कलिप्रभाव जिमि हरिगुणगाई ॥
परी सनंक विश्वमहँ कैसी । योग विवश इन्द्रिन गति जैसी ॥
विरही दुखित सुखित संयोगी । जिमि विषयी अरु हरिरसभोगी ॥
नखत उअत कोउ अथवत जाहीं । पुण्य पाप फल जिमि जगमाहीं ॥

दोहा--सोवत रघुकुल तिलक निशि, मध्य मुनीन समाज ।
मनु रवि शशि तारावली, भली सुछबि रघुराज ॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमाहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपा-
त्राऽधिकारी श्रीरघुराजासिंहजू देवजी. सी. एस. आई कृते श्रीराम-
स्वयंवरग्रंन्थे नगरदर्शनो नाम सप्तदश प्रबन्धः ॥ १७ ॥

सोरठा--सुख सोवत रघुनाथ, लषण सहित तृण सेजमहँ।
सकल मुनिनके साथ, रही याम बाकी निशा॥
दोहा--गुणि प्रभात आगमहरषि, लालशिखाधुनिकीन।
मनु नकीब दिननाथके, बोलत परम प्रवीन॥

चौपाई।

जहँ तहँ उठिसुमिरहिंहरि योगी।विगत जानि निशि बिलखहिं भो
गावहिं कोउ कहुँ भैरव रागा। रवि बंदीजन युत अनुरागा
कीन्हे कलरव सकल विहङ्गा। चटकीं कली सुमन बहु र
प्राचीदिशि प्रगटी अरुणाई। रवि आगम अनुराग जनाई
कोकी कोक मिलन बहु लागे। मूक उलूक चूक गुनि भा
शीतल मंद सुगंध समीरा। बहत सुरत श्रम हरत शरी
मुकुलित कंज प्रफुल्लित होहीं। सकुचत कुमुद दिवाकर द्रोही
शरण चरण उडि चले मराला। गगन पंथ मंडित इव मा
भये तेजहत झलमल तारा। चन्द मन्द दुति भो भिनुसा
चले पंथ पंथी निज काजा। मज्जन लगी मुनीन समाजा
झरि झरि फूल बिछे महि माहीं। उडाति पराग सुरभि चहुँघाहीं
चुवत चारु चहुँकित मकरंदा। पियत पुहुपरस मत्त मलिं
दोहा--चले धेनुगण वन चरन, वेणु बजावत गोप।
द्वार द्वार मिथिला नगर,नौबत बजाति सचोप॥

छन्द चौबोला।

निशा सिरानी जग सुखदानी याहि विधि भयो प्रभात
चहर पहर चहुंकित सुनि चायन जग्यो राम लघु भ्राता
कछु अँगिराय उठ्यो सथरी पर सुमिरि राम काहि रा
रामचरण पंकज शिर नायो लषण धर्म धृत धामा
लषण कमल कर पराशि पाय पद कछु कौशिक ते आ

जगे जगतपति सुमिरि गुरूपद गुरुहि जगावन लागे ॥
उठहु नाथ रवि लसत उदयगिरि भयो भोर भव माहीं।
मुनिजन जात सकलमज्जन हित शयन काल अब नाहीं॥
जगे मुनीश मनहिं मन सुमिरत रामचरण जलजाता।
नयननि खोलि लखेरघुपति मुख यहमुद मनन समाता॥
चूमि वदन शिर सूँघि पीठ कर फेरत कह मुनिराई।
जाहु नहाहु खाहु कछु खाजन यश भाजन दोउ भाई॥
सुनि मुनि वचन अनंदन रघुनंदन बंदन कीन्हे।
सज्जन सहित सुमज्जन करि मन संध्यावंदन दीन्हे॥
प्रातकर्म करि धर्म धुरंधर वसुंधराधिप बारे।
आये पुनि अपने निवास महँ केसरि तिलक सँवारे॥
ऐंछि पोंछि कच कुंचित मेचक भूषण वसन सुधारे।
कियो जाइ गुरुवंदन कर रघुनंदन शर धनु धारे॥
कोटिन दई अशीष गाधिसुत मंगल प्राणपियारे।
पूजाकरन लगे कौशिक मुनि राम रूप उर धारे॥
रहे फूल नहिं तेहि औसर महँ चेलन चूक विचारी।
जानि अनेक हेत कुलकेतुहिं रामहिं कह्यो हँकारी॥
तात जाय तुम जनकवाटिका सुमन सुगंधित लावो।
तहँकी सकल कथा कहि हमसों महामोद मनछावो॥
सुनि गुरु आयसु रघुनायक तहँ सहित लषणधनु पानी।
चले कुसुम तोरन चितचोरन थोरन आनँद आनी॥
वाम पाणि दोउ दोन विराजत दहिने कर शर फेरैं।
तीर भरे तूणीर कन्ध युग मन्द मन्द दृग हेरैं॥
बाहुमूल यक लसत शरासन वदन मदन मदहारी।
पीतवसन तनु विमल विराजत पग नूपुर झनकारी॥

मन्द मन्द गमनत गयंद गति दशरथ नंदन बाँके।
बंकभ्रुकुटिअतिशयानिशंकमनरघुकुलकलशप्रभाके॥
चलत पन्थ सत पन्थ प्रचारक क्षीराधि मन्थनकारी।
मनहुँ लेत मन मोल सुछबि दै मिथिलापुर नर नारी।
अतिअभिरामअरामराम लखि लहिसुखधाम ललामा।
कह्यो लषणसों ललित वचन अस यहवन मनविश्रामा॥
यह विदेह वाटिका सोहावनि सुख छावनि सबहीकी।
आनँद उपजावनि मनभावनि हठि हुलसावनि हीकी॥
यहि विधि करत बन्धु सन बातन गये वाटिका द्वारे।
द्वारपाल चित चकित निहारे सुंदर राजकुमारे॥
जोहि कुँवर दोउ मोहि गये मन सोहि रहे दोउ भाई।
रामहिं लखत सकल नर नारी राम लखत फुलवाई॥
जो विकुंठ को वन निःश्रेयस नित प्रति विहरनवारे।
सोई चकित चहूँकित चितवत जनकवाटिका द्वारे॥
बोले मंजुल वचन राम तहँ द्वारपाल कछु सुनिये।
आये फूल लेन फुलवाई जानदेहु भल गुनिये॥
द्वारपाल बोल्यो कर जोरे हरि लीनो मन मोरा।
यह विदेहकी फूल वाटिका जाहु चले चितचोरा॥
सोरठा--दशरथ राजकुमार, प्रविशे फुलवारी हरषि।
क्षणक्षण विपुल बहार, सदा विहार वसंत जहँ॥

कवित्त।

गुच्छ कलशासे त्यों वितानन कशासे खासे, पुहुप अबा
रंगके प्रकासे हैं। कलपलतासे लता वृन्दन विलासे झुके, अ
कितासे भूमि लोरनके आसे हैं॥ शिशिर तरासे ऋतुपातिकी ह
हरे, किशलै निकासे फूले हरिन हरासे हैं। भनै रघुराज कल
उपमासे फले, अति अनयासे तरु करत तमासे हैं॥

दोहा--मधु ग्रीषम वर्षा शरद, सुखद शिशिर हेमन्त।
निज गुण निजथल प्रगट ऋतु, सब थल वसत वसंत॥
षट्ऋतुके मंदिर बने, षटऋतु प्रगट प्रभाउ।
तामें अधिक प्रभाउ कारि, सोहि रह्यो ऋतुराउ॥

कवित्त

पल्लव लसत पिकवल्लभके पन्ना सम, शाखाभूमि लोरे फल फूलनके भारा हैं।मंजु कुंज महा मनोरंजन मुनीशनकी, भौंरनके कुंजनके गुंजन अपाराहैं॥ बिछे वसुधामें झरे फूलनकी सेजहीसी, पवन प्रसंग परिमलको पसारा हैं। चैत्ररथकाम वननंदनकी नाकी छबि, कहैं रघुराज राम कामके समारा हैं॥ तालन तमालनके तैसेहिन तालनके, रुचिर रसालनके जाल मन भाये हैं। हेम आलबालनके रजत देवालनके, आलै लोकपालनके लोकन लजाये हैं॥ दिल देवबालनके देखते विहाल होत, षटऋतु कालनके फूल फल छाये हैं। और महिपालनके बालनकी बातैं कौन, रघुराज कौशलेश लालन लोभाये हैं॥ २॥

दोहा--राजत राजत रुचिर तरु, मनहु चन्द्रकी ज्योति।
कनकलता लहरैं ललित, मनु रविद्योति उदोति॥

कवित्त।

कंचन कियारिनमें फटिक फरश फाबैं, तामें झरैं मालती सुमन मनु तारा हैं।वदन कुरंगनके विविध विहंगनके, मुखन मतंगन तुरंगन फुहारा हैं॥ केते कुंजभौन लताभौन लोने लोने लसैं, वल्लिन वितान त्यों निशानहूं अपारा हैं। भनै रघुराज नवपल्लवित मल्लिकाके, अमल अगारा हैं मुनारा हैं दुआरा हैं॥ कीरनकी भीर

कामिनी न ते सहित सोहैं, कूजि रहे कुञ्ज कुञ्ज मुनि मन हारे
कोकिला कलापैं चित्त चोरत अलापैं परैं, मनकी कलापैं थापैं
ता अपारने ॥ भनै रघुराज केकी कूकैं सुनि चूकैं चित्त,
चकोर चारि ओरहू विहारने।पिककी पुकार त्यों पपीहाकी
हिय, हारैं हर हारैं बेशुमारैं देवदारने ॥

छंद गीतिका

वर बाग मध्य तडाग चारिहु भाग कनक सुपान हैं।
माणि सारिस निर्मल नीर परम गँभीर गगनसमान हैं॥
फूले कमल कल अमल भल मकरंद मधुप लोभान हैं।
कह्लार इन्दीवर सुउत्पल पुंडरीक अमान हैं॥
विकासित विमल अरविन्द झरत मरन्द मुदित मिलिंद हैं।
गुजन मही मन रंजनी श्रम गंजनी जनवृन्द हैं॥
जिन पक्ष स्वच्छ विशाल मंजु मराल बस सब काल हैं॥
बोलत रसाल उताल उडत निहाल कर सुरपाल हैं॥
बक चक्रवाक कराकुलादिक विविध रंग विहंग हैं।
बोलत मधुर नहिं खग विधुर सुमधूरि धूसर अंग हैं॥
बहु पीन मीन अदीन तहँ सुख भीन जल संचरत हैं।
कुलिकमठ पीठि कठोर चारिहु ओर चरि सुख भरतहैं॥
बहु रंग कुसुम पराग उडत प्रसंग पवनहिं पाइकै।
मिलि सलिल बहु विधि रंग तरल तरंग रचत सुहाइकै॥
छितराइ पुच्छन गुच्छ नचत मयूर मोरिन संगमें।
मनु देव करत विहार नंदन विपिन आनँद दंगमें॥
शीतल सुमन्द समीर सुरभित बहत सकल सरोवरैं।

तेहि वश उडत झूने सु सीकर परम शीतल तृण परैं ॥
ते विंदु तृण लगि लसत आति मनु फरशपर मुक्ताफरैं ।
रविकर विवश लगि दलनि रंध्रनि पुष्पराज छटा छरैं ॥
सर निकट गिरिजाभवन राजत कनक मंडित सुन्दरै ।
मरकतकलश विलसत विमलदिनकर बसत मनु मंदरै ॥
बहु रत्न खचित प्रदेश मंदिर बने वेश सुहावने ।
चहुँ ओर विलसत कनकखंभ सुरंभ थंभ लजावने ॥
बहु द्वार छज्जा छजित फावित फटिक फरश अपार हैं ।
आवरन देवनरूप वेद विधान विविध अगार हैं ॥
तहँ घाट हाटकके अनूपम नारि मज्जनके बने ।
मुनि मनोरंजन ताप भञ्जन नहिं प्रभंजन आमने ॥
नहिं पुरुष तहँ कोउ जात माली रहत इक विश्वासको ।
सब नारि रक्षण करहिं उपवन तरु तडाग अवासको ॥
जिहि देव ताकि तरसत रहत निन्दत सुरेश अरामको ।
अभिराम ताको कहि सकत आराम देत जु रामको ॥
सोरठा—लखि मिथिलेश अराम, लषण राम आराम लहि ।
कहे वचन अभिराम, बागमानके धाम चलि ॥

सवैया ।

एहो महीपति माली सुनो, गुरु पूजनके हित फूल उतारन ।
आये इतै हम बन्धु समेत, उतारैं प्रसून जो होइ न बारन ॥
कैसे कहे बिन फूल चुनैं, मिथिलेशकी वाटिकाके मनहारन ।
वस्तु बिरानीको पूछे विना, रघुराज जू लेब न वेद उचारन ॥
रामके वैन अरामको पालक, कान परे गृह बाहर आयो ।
देखि अनूपम भूपकुमार, रह्यो तकिकै पलकैं न लगायो ॥
पायँनमें पारि पाणिको जोरि, पग्यो प्रभु प्रेम सु वैन सुनायो ।
श्रीरघुराज जू रावरो बाग न, बावरो मोहिं विरंचि बनायो ॥

दोहा--लेहु फूल फल दल विमल, सुंदर राजकिशोर ।
जो बरजै सोइ बावरो, विश्वविलोचन चोर ॥

सवैया ।

बाटिकामें युग राजकुमार, निहारत फूलन टोरत वा
दोनालिये अति लोना उभै, कर छोना मृगेशसे जोवन जा
कौशलभूपके बाँकुरे वीर, कहै रघुराज लता अनुरा
फूलैं फलैं तरु ताही क्षणै, हरि कोमल कौल करैं जहँ ला
बीनत वंजुल मंजु प्रसूनन, कुञ्जन कुञ्जन गुंजनि भ
मल्लिका मालती माधवी मालन, फूल प्रवालन जालन ता
बागकी पालिनी मालिनी जेती, बिहालिनी होतीं चितै चित
चाखतीं रूप सुधा भल भाषतीं, श्रीरघुराज सुराजकिशो
तुम श्यामल गौर सुनो द्वउ लालन, आये कहांसे उरायन
मिथिलेशकी बाटिकामें विहरो, हियरो हरो हेरि सुभायन
इत कौन पठायो दया नहिं लायो, सुफूलन तोरो उपायन
रघुराज कहूँ गडिजैहैं लला, पुहुपानकी पाँखुरी पायँन
कामकलाजित कोशलनाथ, वचो मम संशृणु हे भवभाव
तानि हरे कुसुमानि दलानि, चिनोषिन पश्यासि मामिह पावन
श्रीरघुराज तवेन्दुमुखे मम, चित्तचकोर मवेहि विभा
त्वत्पदसेवन मद्याविना नहिं, मे शरणं क्वचिदस्ति जनाव

दोहा--सुनत मालिनीगण वचन, दशरथ राजकुमार ।
मंदमंद मुसक्याइ किय, नेकु नयन सत्कार ॥

सवैया ।

कहुँ लेत प्रसून प्रमोद भरे, ललिते लतिकानके झोरनमें
कहुँ कुंजनमें विस्राम करैं, अवनीरुह छाहँ के छोरनमें
वर वाटिका ठौरन ठौरनमें, रघुराज लखैं चहुँ ओरनमें
चितचोरन राजकिशोरनको, मन लागि रह्यो सुम तोरनमें

सुर सिद्ध महर्षि सुरर्षि सबै, जिनके पद पूजत सेव करैं।
सुरपादप फूलनको जिनपै, अज शंकर हू बरषैं बगरैं॥
रघुराज सोई निज भक्त अधीन, विदेहकी वाटिकामें विहरैं।
मुनि कौशिक शासन मानि सुखी, कर फूलन तोरिकै दोन भरैं॥

दोहा--चित चोरत तोरत कुसुम, इत अवधेशकिशोर।
उत विदेह रनिवासमें, कियो पुरोहित शोर॥

चौपाई।

जनकपट्टमहिषी छबि खानी। नाम सुनैना परम सयानी॥
शतानंद तिहि वचन उचारा। कालिह स्वयंवर होवनहारा॥
ताते आजु जानकी जाई। करैं गौरि पूजन चित चाई॥
सुनत पुरोहित की वर बानी। मैथिल महाराज महरानी॥
सखिन बोलि सब साजु सजाई। गिरिजा पूजन सियहि पठाई॥
कनकथार भरि सुमनसुहावन। हरद दूब दधि तंदुल पावन॥
धरि धरि शीशन सखी सुहाई। लिहे चारु चंदन चित्त चाई॥
कनककुंभजल भरि धरिशीशा। आगे चलीं सुमिरि जगदीशा॥
सखी सहस्रन सजे शृंगारा। लीन्हे चमर छत्र छबि सारा॥
पान दान लीन्हें कोउ नारी। पीकदान कोउ पाणि पियारी॥
अतरदान कोउ गहे दुलारी। लिये गुलाबदान कोउ झारी॥
लिहे बाल उरमाल रसाला। कोउ बीजन कोउ दर्पण माला॥

दोहा-छरी हजारन संग में, रत्नजडित सखि पाणि।
जय विदेहनृपनंदिनी, बोलिरहीं वर वाणि॥

चौपाई।

महा विमलयक नवल पालकी। बनी हाल की रत्नजालकी॥
कीन्ही सीता सुखित सवारी। लिय उठाइ बाहकी सुनारी॥
पहिरे अंबर अंग सुरंगा। भूषण भूषित सुंदर अंगा॥
मची तहां नूपुर झनकारी। सोहि रही सिय सजी सवारी॥

चली गौरि पूजन मनभाई। सियछबियकमुखकिमिकहिजा
गावहिं मङ्गल गीत सयानी। सहित ताल सुर सातहुँ सानी
कोउ सखि तहां प्रेमरस बोरा। करहिं मनोहर सोहर शो
कोउ विदेहकुल विरद उचारै। कोऊ राई लोन उता
कोउ सिय भाल डिठोना देही। कहि युगयुग जीवहि वैदे
जरी रत्न कर छरी अमोलै। आगे फरक फरक सखि बो
पहिरे पीत निचोल अमोला। घेरदार घांघरो सुगो
यहि विधि गिरिजा पूजन हेतू। चली जनक कुलकीरति के

दोहा–राजमहल सों बाग लों, अंतहपुर विस्तार।
मोट कोटकञ्चन बन्यो, नहिं तहँ पुरुष प्रचार॥
सीय चलत बाजन बजे, महा मनोहर शोर।
बाल बजावहिं विविध विधि, माचि रह्यो चहुँ ओर॥

कवित्त।

दासी संग खासी छबि राशी चपलासी चारु, आनँद वि
रनिवासकी निवासिनी। चन्द्र चन्द्रिकासी लसै कमला क
कल, कनक लतासी सबै सीयकी सुपासिनी॥ भनै र
सिय प्रेमकी पियासी रहैं, सर्वदा हुलासी जे प्रकासी मंदहासि
रतिसी सुरम्भासी तिलोत्तमासी मैनकासी, मायासी मयासी
मिथिला मवासिनी॥

दोहा–सखी सकल गावहिं मधुर, सुंदर चरण बनाय।
वीण वेणु मिरदंग डफ, ऊँचे सुरन मिलाय॥

पद।

जय जय मिथिला राजकुमारी।
जय विदेहनंदिनी अनंदिनि चंद मंद दुतिकारी॥
निमिकुलकमल दिवाकर की दुति रमारमन मनहारी॥
श्रीरघुराज दिगंतनलौं निज कीरति लता पसारी॥

जय जय धरणिसुता सुकुमारी ।
शीलसरित करुणा की आकार मंजुल मूरति धारी ।
जाके पद वंदत विरंचि शिव मुनि मानस संचारी ॥
श्रीरघुराज सखीसमाज मुख स्वामिनि सिया हमारी ॥
सिय छबि को कहिसकै उचारी ।
जिहि मुख सम सर करत कलानिधि, घटत बढत हिय हारी ।
हँसनि छटनि शशि छटनि लजावति, द्विगुनी दुति उजियारी ॥
पिक कोकिल जिहि मधुर वैन सुनि, लज्जित भे वनचारी ॥
खंजन कंजन मीन कुरंगन, दृग छबि छीन निकारी ॥
केतन वास दियो जल भीतर, केतन बिपिन मँझारी ।
किमि कहि जाइ कनक लतिका जड, सिय भुज सरिस बिचारी ॥
तारन सहित पूर्णिमा रजनी, लखि लजाति तन सारी ।
चरण चारु नख अवलि विमंडित, बिन जावक अरुणारी ॥
बसी विश्वकी कोमलता तहँ, करि कंजनसों रारी ।
श्रीरघुराज कहौ पटतर किहि, उपमा कविन जुठारी ।
महा मनोहर मूरति मुद कर, बार बार बलिहारी ॥
जय जय जनकलली सुखरासी ।
मिथिला नगर क्षीरनिधि संभव, कांतिमती कमलासी ।
स्वेच्छाचार विहारिनि तारिनि, उमा गिरा जिहि दासी ॥
वर्णत वेद विश्व ठकुराइनि, पूरण ब्रह्म कृपासी ॥
सरल स्वभाव प्रभाव विदित जग, जिहि कीरति कलिकासी॥
श्रीरघुराज आजु को यहि सम, विरद विशाल विकासी ॥
दोहा--यहि विधि गावहिं सहचरी, सानुराग बहु राग ।
मानहुँ कूकत कोकिला, विरचहिं विश्व विराग ॥

छन्द हरिगीतिका ।

कोइ वेणु बीण मृदंग डफ मुरचंग पटह उपंगहै ।
कोइ ललित सलिल तरंग सहित उमंग लिय सारंगहै ॥

कोउ कर किये करतार सरस सितार सुरशृङ्गार है।
कोउ मंजु मुरज अमोल ढोलन तबल अमल अपारहैं॥
यहि विधि अनेकनबाजबजत न लहत कवि काहे पारहैं।
सखि चलहिं रचहिं अनेक गति करि नूपुरन झनकारहैं॥
सखि गावतीं अहलादिनी अहलादिनी वर रागिनी।
गुणकली रामकली भली सुरकली सरस सुहागिनी॥
यक याम आयो दिवस तहँ सुर सुखद समय विचारिकै।
चढि चढि विमानन विविधआननसीयगवननिहारिकै॥
हिय हर्षि वर्षहिं कुसुम सुरभित कहहिं जय जगदंबिका।
जेहि भजत शंकर अंबिका सो जाति पूजन अंबिका॥
घन गगन छाया करत ताके ओट देखत देव हैं।
सिय राम मिलन विचारि फूलन वराषि ठानत सेवहैं॥
सिय सहचरी छवि की भरी सुरसुंदरी तिन देखिकै।
पछिताहि मनहि सिहाहि भागसोहाग धनि धनि लेखिकै॥
सिय बामभुज दृगभ्रुकुटिफरकहिं सुभग शकुन जनावहीं।
तैसहि सखिनको शकुन मंगल मोद अवधि न पावहीं॥
मणिनालकी महँ जानकी चहुँओर आलिन वृन्द है।
मनु विमल तारागण विराजत मध्य पूरण चंद है॥
यहि विधि बजावत बाज गावत गीत सखिन समाज है।
सुर मधुर छावत क्षिति चहूँकित हर्ष भरि रघुराजहै॥
गिरिजा भवन आराम आई नवलि निमिकुलचंदिनी।
अनयास होत हुलास पुरि है आश हिमगिरि नंदिनी॥
मिथिलेशजूकी लाडिली आगमन गुणि तहँ मालिनी॥
हरबर चलीं भरभर सकल साजि वसनरूप रसालिनी॥
बहु विरचि भूषणकुसुम के भरि फूल फल दल थारने।
अति चारु उपवन द्वार चलि आगे धरयो करि बारने॥

सिय साहित सखिनसमाज यहि विधि गौरि गेह सिधारिकै ।
मज्जन कियो सजनीनयुत सरसित दुकूलन धारिकै ॥
पुनि पहिरि पट भूषण अदूषण शीश पूषण नाइकै ।
गवनी सुगौरी गेह पूजन पूजिकीन बुलाइकै ॥
सोरठा--तहँ बहु बाजन शोर, झनकारी नूपुरनकी ।
रही माचि चहुँओर, दियो मदन मन दुन्दुभी ॥
श्यामल राजकिशोर, कह्यो लषणसों बैन वर ।
लखहु लाल यहि ओर, आवत इत मिथिलेश धौं ॥

सवैया ।

बाजि रहे बहु बाजन वेश, सुआवतसी बाडि भीर जनाइ ।
देखन नेसुक नयनानि नेरे, चली वहि ओर कछू नियराई ॥
फूलन तोरि चुके भरि दोनन, कौतुक देखि गुरू पहँ जाई ।
श्रीरघुराज सबै कहि देव, महामुनिसों करिकै सेवकाई ॥
यों कहिकै प्रिय बन्धुसों राम, चले गिरिजामणि मंदिर ओरे ।
दूरहित दोउ देखि सखीगण, ठाढे भये मनमें भये भोरे ॥
श्रीरघुराज कह्यो मुरिकै लखि, सुंदरी वृन्द अनन्द हिलोरे ।
आगे न जात बनै अब तात, सखीनको व्रात दिखात करोरे ॥
कैधौं शची सुरदारन लै, मिथिलेशको बाग निहारन धाई ।
कैधौं उतारि तरैयनको जू, जोन्हैया लसै प्रगटाइ जुन्हाई ॥
श्रीरघुराज किधौं कमला परिचारिका संग रही छबि छाई ।
शक्तिन लै किधौं वाग विलोकन, गौरिही मान्दिरते कढि आई॥
मेरे विचारमें आवै यही, मिथिलेशकीहै रनिवासकी बासिनी ।
सारी सबै जरतारी सजी, उजियारी करै मनमोद हुलासिनी ॥
श्रीरघुराजलला सुनिये सखि, प्यारी सबैनिजस्वामि सुपासिनी ।
है मिथिलेशकुमारी यही, पगुधारी सुगौरिकै पूजन आसिनी॥
जैबो न लायक लाल उतै, परदारनके बिच धर्म विचारी ।

आये इतै मुनि शासन लै, नहिं जानी रही मर्याद हमा
रीति है धर्मधुरीननकी, रघुवंशिनकी जग जाहिर भा
पीठि परै नहिं संगरमें, नहिं दीठि परै स्वपन्यो परना
संकटहूं परिकै जिनके मन, धर्मते टारे टरे नहिं भा
जो मुख भाषत वज्रकी लीक, तनौ तजे सो बहुरै न व
जाके दुवारमें याचक जाय न, पावैं नकार ज्ञु होइ का
ऐसे महामति श्रीरघुराज, महीमहँ मानव होत हैं थो
साँची कहौं नहिं काची कछू, जगमें सब जानतहै न दुरा
सूरजते अरु आज़ुलौं यों, रघुवंशिनको परत्यक्ष प्रभा
श्रीरघुराज परै कबहूँ नहिं, साँकरहूमें कुपन्थमें पा
वंश प्रशंस करौं नहिं तात, विचारिये जू सहजैको सुभा
हासी न मानहु लक्षण लाल, विलक्षण लक्षण हैं सब
धोखहूमें पुनि रोषहूमें है, प्रतीति महामनकी हिय
श्रीरघुराज विकार जनै नहिं, प्रेमवती परनारिनि
नीतिकी रीति सु जीती चहै करि,ठीक फिरैस्वपन्यो नहिं
जिहि हेत अनेकन भूप अनूप स्वरूप बनाइकै बागें
जिहि हेत कियो मिथिलेश प्रणै ज्ञु,महेशके चापको टौरै
लहै तौन स्वयंवरमें दुहिता, विजयी तिहि कीरति विश्व
सुकुमारि महा मनहारि गुणो, यह सोइ विशेषि विदेहल
साज्ञु सजाइ सबै जननी, हित पूजनके गिरिराजकुमा
संग सखीनके दीन्ही पठाइ,सु आई सजा शिविकाकी सवा
श्रीरघुराज सयानी अली, सिगरी सजी सोहैं सुरंगित सा
गौरिको वंदित मंदिरमें यह, बाग प्रभानके पुंज पसा
आवतही लखि नेसुक ताकि, लखी नहिं आंखिनमें अस
शारद शेश महेश गणेश,न भाषि सकैं उर राखिकै

श्रीरघुराज सुनो सहजै मन, मेरो पुनीत सोऊ लखि लोभा ।
छोडि कहौं छलछंदनको अस, आजुलौं क्षोणिमें चित्तनक्षोभा ॥
लक्ष्मण लाल सुनो रघुराज, बढै उर लाज कढै मुख बाता ।
आकसमात अमात न आनँद, मानद होइगो कौन विख्याता ॥
या क्षण दक्षिण बाहु विलोचन, क्यों फरकैं कछु जानि न जाता ।
कीन्ह्यो विचार मनै बहुबारन, सो सब कारन जानै विधाता ॥

दोहा--अस कहि रघुपति लषण सों, कियो कुंज विश्राम ।
तरुछाया सीरी घनी, कुसुमगुच्छ अभिराम ॥
उत मंदिर अन्दर गई, पूजन राजकुमारि ।
खडी रहीं बाहर सखी, चमर छत्र कर धारि ॥

चौपाई ।

वृद्ध वृद्ध द्विजबधू सिधाई । पूजन साजु सबै लै आई ॥
तहाँ जानकी वेद विधाना । षोडश विधि लै वस्तुनि नाना ॥
पूजा करी सहित अनुरागा । विप्रवधू जस कह्यो विभागा ॥
तहँई एक सखि चली अकेली । तोरन लगी कुसुम कर वेली ॥
सहजहि तहँ मालिनि इक आई । देखी रही लषण रघुराई ॥
सखी पाणि पंकज गहि बोली । अपने उरकी आशय खोली ॥
कहि न सकौं डरवश तुहिं पाहीं । बिनाकहे मन मानत नाहीं ॥
कोउ सुंदर युग राजकिशोरे । आय बागमहँ फूलन तोरे ॥
इतनी वयस सिरानि हमारी । अस शोभा नहिं नयन निहारी ॥
देखत बनत कहे न सिराई । नयननि सों न कढैं दोउ भाई ॥
कहि न सकौं देखनके लायक । नाम लषण लघु बड रघुनायक ॥
मालिनि वचन सुनत सखिकाना । देखन हित तिहि मन ललचाना ॥

दोहा--तू दिखाय देहै सखी, मोहिं महीप किशोर ।
यह उपकार अपार मैं, अवशि मानिहौं तोर ॥

चौपाई।

मालिनि तासु पकारि करकञ्जन। चली लखावनमुनिमनरञ्जन
लतनि ओट कहुँ कुञ्जन ओटू। चली चलावत चखकी चो
किये मन्द नूपुर झनकारी। जाति कुसुम तोरन मिसप्या
रुकति कहूँ पुनि चलति सयानी। राजकुँवर दर्शन ललचानी
मालिनिसों पुनि पुनि फिरि भाषति। तूतो नहिं कछुछलउरराख
कौन कुंजमहँ राजकुमारा। मालिनि वेगि बताउ अवा
परत पुहुमि पग परम हुलासी। कबै विलोकहुँ बागविला
मनोभिरंजन कुंज निवासै। विलसत इह बाटिका विल
कुसुमाहरन शील शुभ रूपौ। नयन महासुखदायक भू
कब लखिहौं युग राजकिशोरा। कहुमालिनिसुन्दरकिहि
यहि विधि दर्शन उदधि उमंगा। उठति वचन मुखतरलतरं
दूरिहि ते मालिनि मन भाई। दिय बताय अंगुली उठा

दोहा--देखु सखी यह कुंजमें, सुंदर युगल किशोर।
हरचो मोर चित चोर चित, हरि लेहैं हठि तोर॥

सवैया।

सीय सखी मृगशावक नैनी, सुनैन उठाय लखी तिहि औ
मंजुल वंजुल कुञ्जनमें चित, चोर उभय अवधेश किशो
श्रीरघुराज रुकी सो जकी, पलकैं ठमकी ठगिकै दृग
चञ्चलासी परी चौंध चखैं मन, भूलिगयो तहँ मोर औ तो
कौन कहै कछु कौन सुनै पुनि, जोहनहीते मनो जियजी
अंग जहांके तहां हीं रहे सब, दीठीकी सूजी मनो छबि सी
श्रीरघुराज विलोकतही अभिलाषन इन्दु उज्यारीसी उ
ठाढी महासुख बाढी अली, वह छैल छली मुख पानिप पी
आयो इतै सुरनायक धौं, सुरनायकके तौ अनेकन आँ

आयो इतै रतिनायक धौं, रतिनायक अंग बिनै श्रुति साखी ।
आयो इतै रमानायक धौं, रमानायक चारिभुजा मुनि भाखी ॥
श्रीरघुराज विचारि किये इत, प्रेमको रूप दियो विधि राखी ॥
सुखको सुख साँचोसुहावन काम,यही छबिते छबिहू छबि पायो ।
शील सुधा सुखमा सुकुमारता,पायो शशी इनकोकछुध्यायो ॥
देख्यो नहीं न सुन्यो अस रूप,सु भूपकुमारकोजो दृग आयो ।
जानकी जौन रच्यो रघुराज, सोई रघुराजको रूप बनायो ॥
श्रीकी यथा श्री अहै सिय मरा, तथा यह साँचो शृंगार शृँगारो ।
कीरतिकीजिमि कीरति जानकी,त्यों यशकोयशयाहि निहारो ॥
वा छबिकिछबि या सुखकोसुख, जोरी भली विरची करतारो ।
या उनके सम वा इनके सम, श्रीरघुराज न और विचारो ॥
आइ अकेली निहारी मही, यह आनँदसिंधु नरेश दुलारो ।
जाइ जबै उत भाषिहौं हाल, सबै मनिहैं हमरो अपकारो ॥
मीठो पदारथ बाँटिकै खाइये, धर्म सुवेद पुराण उचारो ।
ल्याऊं लिवाइ सियै इतहीं रघुराज मनोरथ पूजै हमारो ॥

दोहा–कहा कहौं मालिनि सुनै, किहि विधि सियपहँ जाउँ ।
परी प्रेम बेरी पगन, किमि त्यागौं यह ठाउँ ॥

सवैया ।

नैन चहैं पलकैं बिसराइ, निरंतर या मुख देखनहीको ।
पाणि चहैं परशैं पद पंकज, त्योंहियरो मिलिबो चहै हीको ॥
श्रीरघुराज कियो मनको वश, नेहके बंधन बांध्योहै जीको ।
काह करौंअबकैसेचलौं न, तिलौंभर त्यागत पाउँ महीको ॥

बरवै।

नयना बाणन मारयउ राजकुमार।
कैसे जाउँ सिया जहँ गौरि अगार॥
लै चलु लै चलु मालिनि मुहिं पहुँचाउ।
अब नहिं बल मेरे तनु लाग्यो घाउ॥
अस कहि घायलसी सखि गिरिगै भूमि।
उठी आहि करि प्यारी डगरी घूमि॥
पुनि पुनि चित चाहन को चितवाति जाति।
पुनि आवाति पुनि जावति पथ न सिराति॥
कहुँ लतिकनमहँ अरुझाति अरुझी नेह।
भइ बिहाल बैकल सी सुधि नहिं देह॥
उतरि परे कहुँ कंकन टूटी माल।
तनक न तनहि सँभाराति भई बिहाल॥
लरखराति कुंजन महँ गहि तरुडारि।
पुनि चितवाति चितचोरन चखन उघारि॥
सियहि दिखावन की रुचि राजकुमार।
जस तस कै गमनाति सो तनु न सँभार॥
कहुँ तमाल तरु भेटति भुजानि पसारि।
कहुँ इंदीवर अंबुज रहाति निहारि॥
जल थल नभ तरु खग मृग देखति जौन।
श्यामरंग सब जानति तीनहुँ भौन॥
मालिनि तिहिकर कर करि चली लिवाइ।
कहुँ बिहँसाति कहुँ हुलसाति कहुँ बिलखाइ॥
वदाति विलोकाति बहुराति बारहि बार।

वादि गिरी जादू किय राजकुमार ॥
रूपमाधुरी फाँसी लियो फँसाय ।
हाय दई का करिये कछु न बसाय ॥
यहि विधि भ्रमत भ्रमत सो मन पछितााति ।
आई जहां सहेली अति अकुलाति ॥

दोहा–तासु रूप निरखी सखी, अति विवरण तनु स्वेद ।
पकरि पाणि पूछन लगी, भयो काह तुहिं खेद ॥

कवित्त ।

ठाढी तू जकीसी त्यों धकीसी मुख मीसी मंद, खीसी त्यों अनंद कीसी वैकलसी दीसी है। पीसी है मनोजकीसी छुटिगै छतीसी छटी, सुरति उडीसी भरी भागकी नदीसी है ॥ घाउकी लगीसी विसे बीसी त्यों घसीटी प्रीति, त्यागे कुलकानिहीसी औचक उचीसी है। रघुराज नेह नीति रुचिर रचीसी पची, तची विरहानलसों ऊधम मचीसी है ॥

सवैया ।

एरी अली तुहिं कैसो भयो, नहिं पूछेहुपै कछु उत्तर देती ॥
आनँद भीजी सनेहमें सीझी, चितै कछु पाछे उसासन लेती ।
श्रीरघुराज कहै कहँ रीझी, भई तनु लीझी अजौ दशा एती ॥
काह लखी अरु काह चखी, सखी वेगि बताउ दुराउ न हेती ।

दोहा–सखी सखिनके वचन सुनि, लखी पाछिले ओर ।
मन पियूष फल सो चखी, कही गिरा रस बोर ॥

कवित्त ।

पूछती कहा है उतै कौतुक महा है नहिं, जात सो कहा है अब

जौन लखिपाई री । विधिके सँवारे राजकुँवर पधारे प्यारे,
नहारे धारे विश्व सुंदराई री ॥ साँवरो सलोनो दूजो दुति को
गवारो,हगते टरै न टारो मति अकुलाईरी ॥ कहे ना सिराई
देखे बनि आई,आजुलौं न देखी जौन आजु देखिआई री॥
मंजुताई नीरदकी श्यामताई,अतसी कुसुम कोमलाई हाठि
केसर सुंगधताई बिज्जु दीपताई सोन,जुही नहिं पाई पट पीत
राई है ॥ भौंहन कमान कासि प्रीति खरसान चोखे, नैन बाण
फूटि गाँसी अटकाई है। रघुराज कैसो राजकुँवर अनोखो
तौ इतै घायल ह्वै घूमि घूमि आई है।।श्रद्धा अनुराग भरि प्रेम
नेम कारि, नैननके नवल सुटाबनमें जाइले । अति प्रतिकूल
सुखके दुकूल त्यागि,सारी अभिलाषहीकी तनुको ओढाइले
राज तीर्थराज महाराजके कुमार,भारतीकी थार हार माणिक
इले । कल्मष कलंक कटिजैहैं कोटि जन्मनके,सितासित
त्रिवेणीमें नहाइले ॥

पद ।

सखी री जो जैहै वहि ओर ।
कहौं बनाइ बनाइ कछू नहिं राजकुँवर चितचोर ॥
जो न मानिहै सीख सयानी पुनि न चली कछु जोर ।
श्रीरघुराज हाल होइ सोई जौन भयो अब मोर ॥
कौनके राजकुँवर दोउ आये ।
रूप माधुरी मोहे साधु री तियगण कौन गनाये ॥
औचकही यकबार निहारयो तोरत सुमन सुहाये ।

मग्न भई रघुराज विलोकत नहिं बिसरत बिसराये ॥
लखे हौं जबते राजकुमार ।
तबते इन आँखिन अस दीसत श्याम भयो संसार ॥
कहौ तबहिंलौं हमहिं बावरी मानहु मोहिं गँवार ।
श्रीरघुराज लखी जबलों नहिं वा मूरति मनहार ॥
दोहा--ऐसे सुनि सजनी वचन, देखि दशा पुनि तासु ।
उदित इंदु अभिलाष हिय, कियो हुलास प्रकासु ॥

चौपाई ।

सिय समीप इक सखी सिधारी । बीजमंत्र सम दियो उचारी ॥
इक सखि कछु कौतुक लखिआई । जनकलली तुहिं चहत सुनाई॥
सुनन योग सजनीकी वानी । चलु चलु सुन जो कहत सयानी॥
सिय सुनि सखी वचन सुख पाई । मन्द मन्द मनमहँ मुसक्याई ॥
पूजि गौरि मिथिलेश दुलारी । मान्दिरते बाहर पगुधारी ॥
मधुरअली तिहि सखिकरनामा । मधुर वचन ताको रसधामा ॥
कहत भई मिथिलेशकुमारी । कहु कौतुक तू कौन निहारी ॥
कैसी भई दशा सखि तेरी । तुहि विभ्रम है आसि मति भेरी ॥
सो सखि सिय छबि नखशिख हेरी।सुधि करि राजकुँवर छबिढेरी॥
नयन मूँदि गुणि सुन्दर जोरी । ईश आश पुजवै अब मोरी ॥
बहुरि बाल बोली वरवानी। बुधिवर वदति विशेष बयानी ॥
हौं वाटिका विलोकन काजू । गई विहाय सखीन समाजू ॥
दोहा--घनो कुञ्ज लोनी लता, फूले फूल अपार ।
लखे कुसुम तोरत तहाँ, सुन्दर युगल कुमार ॥

सवैया ।

साँवरो सुन्दर एक मनोहर, दूसरो गौर किशोर सुखारी ।
का कहिये मिथिलेशलली वह, मूरतिपै मन है बलिहारी ॥
श्रीरघुराज बनै नहिं भाषत, राखत हीमें बनै छबि प्यारी ।

नैन विना रसना रसना बिन, नैन कहौ किमि जाय उचारी

दोहा--मधुर अलीके वचन सुनि, विमला अली तुराइ।
जनकललीसों विहँसि कह, भली बानि हुलसाइ ॥

सवैया ।

हौं सुना आजु महीपतिमन्दिर, कौशिक सङ्ग महासुकुमा
राजकुमार उभै कोउ आये, निजै छबि मारहुको मदमा
कालिह निहारि गये नगरी नर, नारि लखे निज तेई उजा
श्रीरघुराज स्वरूपकी माधुरी, आजुलों ऐसी न नैन निहा
जे उनको चितये भरि नैनन, धोखहु वे जिहि नैन निहा
ते सिगरे बिगरे निज वानि, द्रुतै तिनपै तनहूं मन वा
श्रीरघुराज सबै नर नारिन, कीन्है वशै निज राजकुमा
या मिथिलापुरमें विचरे निज, रूपकी मोहनी कापै न डा

दोहा--हैहैं तेइ अवश्य ये, और न दूसर होइ।
राम लषण अस नाम जिन, कहत सखी सब कोइ ॥

सवैया ।

सुनिकै विमला बतियां सिगरी,हरषीं सुसखी निरखौ सिय
उतकण्ठित वेश विलोकनको कब,आनँद औघ भरीं जिय
रघुराज सखीन समाज निहारति, को कहै सीय गुणो हिय
अवलोकनकी अभिलाष उठी,पिय छोडि उतै हठि होइय

दोहा--पुनि नारदके वचनकी, सुधि आई तिहि काल।
दुसह विरह दारुण व्यथा, जान्यो मिटि हैं हाल ॥

चौपाई ।

जब मुहिं कह्यो जगतपति बोली। लीला करन हेत सब खोले
देव दुसह दुख देखि दयाला। रावण विवस त्रिलोक विहाल
हरन हेत अवनी कर भारा। लेहौं कौशलपुर अवता
तुम अब वसहु जनकपुर जाई। वेदवती कहँ लियो मिल

है उत्पति धरणीते प्यारी । अवशि करहु मिथिलेश सुखारी ॥
तदपि दुसह दुख होत वियोगू । यदपि धरचों शिर नाथ नियोगू ॥
जगतीते लै जन्म तुरंता । इत वसि चह्यों मिलैं कब कंता ॥
विरह विवश दुख सह्यो न जाई । प्रभु पठयो नारद मुनिराई ॥
कही देवऋषिसों मैं वाणी । कब मिलिहैं मुहिं शारँगपाणी ॥
मुनि कह जनकवाटिका माहीं । जगतजननि लखिहै प्रभुकाहीं ॥
यह सुधि सकल सीयकहँ आई । दरश लागि लालच अधिकाई ॥
अबै प्रगट नहिं भाउ जनाई । कौनहुँ मिसि देखौं पिय जाई ॥
दोहा—नयन मूंदि यहि भाँति तहँ, सीता करति विचार ।
लखि विलंब सखि शशिकला, कीन्ह्यो वचन उचार ॥

पद ।

चलो सिय देखन फुलवारी ।
गौर श्याम दोउ कुँवर सलोने आये मनहारी ॥
लसत कर पल्लवकर दोना ।
चाप चारु शर सुभग विराजत कटि निषंग सोना ॥
मुकुट मण्डित मणिमय माथे ।
सिंह ठवनि चितवनि अति बाँकी दोउ बंधु साथे ॥
हँसनि हठि हेलिनि हिय हारी ।
रूप स्वरूप लख्यो न सुन्यो अस मारहु मद गारी ॥
चुनत फूलन तरु तरु माहीं ।
वीर धीर रघुवरि नाम अस उन सम कोउ नाहीं ॥
कहत रघुराज राजढोटा ।
पुनि देखनको नहिं मिलिहैं अस जस सुन्दर जोटा ॥
दोहा—सुमिरत प्रीति पुरातनी, करत जानकी ध्यान ।
लखी सखी तब माधवी, बोली वचन प्रमान ॥

पद।

जनकतनया ताजि गौरी ध्यान।
लखि लीजै लुकि राजलाडिलो अस सुन्दर नहिं आन॥
खंजन कंजन मृगन मीनगण लोचन लखत परान।
मंजु मयंक मरीचि मंद परि ताकि माधुरि मुसक्यान॥
कोटि मदन मद कदन वदन छबि होनो जासु समान।
घटत बढत दिन प्रति तारापति सोच यही पियरान॥
सकल सुकृत फल कोटि जन्मको देहि जो गौरि इशान।
तौ रघुराज राजढोटा दोउ करहिं नयन थल थान॥

दोहा–जनकलली सजनीनकी, जानि उदित अभिलाख।
पाय मोद मुसक्यानि मन, गहि तमालकी शाख॥
पल्लव डार विलोकि कछु, कुञ्ज विलोकन व्याज।
चली चारि पद और तिहिं, चितवत सखिन समाज॥
कहुँ किसलय कहुँ कुसुम कहुँ,कहुँ कलिका कहुँ कुंज।
कहुँ कमल कहुँ केतकी, कहूँ कुरंग करंज॥
कहुँ विहंग कहुँ तुङ्ग तरु, कहुँ कहि लतन प्रसंग।
कहुँ मलिन्द मकरंद कहुँ, कहुँ पराग बहुरंग॥

चौपाई।

देखत कराति सखिनसों बातें। लषण लाल लालसा अघातें
लाजाविवश प्रगटाति नहिं भाऊ। खग मृग निरखाति कराति दुरा
मंद मंद गमनाति सुकुमारी। चतुर सखी सब संग सिधारी
माचि रही नूपुर झनकारी। वर्षत रस वाटिका मँझारी
घनेकुञ्जप्रविशहिं कढि भामिनि। मनहुसघनघन दमकातिदामिनि
रहीं ललित लतिका लहराई। ललना लुकहिं लपेटि लजाई
तहँ सियकी सखि सोहहिं कैसी। शशी जोन्ह घन जलधर ऐसी
गावहिं मधुर सुरन सुकुमारी। मनु मराल।पिक ।शिखी सुखारी

परत पुहुमि पद संयुत ताला। मनहु लतन सिखवैं गति बाला॥
परी पुहुमि बहु रंग परागा। जानि मनहु अपनी बड भागा॥
रचि तरुतंभ चूनरी धारी। देन जाति महि प्रभुहि कुमारी॥
प्रभुहि लखन उमँग्यो अनुरागा उदय इंदु मनु पूर विभागा॥
दोहा--यदपि लाजवश सिय चलति, मन्द मन्द मुसख्यात।
तदपि प्रीति वश चरण गति, अधिक अधिक अधिकात॥

चौपाई।

फैलि रहीं सखि कुंजन माहीं। मनहु चँदैनी चारु सुहाहीं॥
मधुरअलीकर कर गहि सीता। प्रभु दरशैं विलंब हित भीता॥
चितवत चहुँकित कुंजन माहीं। चली चतुर चिन्तति प्रभुकाहीं॥
वसन सुरंग सखी सब संगा। मनहु उदधि अनुराग तरंगा॥
शोचति मन मिथिलेश कुमारी। कौन हेत नहिं परैं निहारी॥
जे पल तहँ दर्शन बिन जाहीं। ते पल अल्प कल्पते नाहीं॥
को कहि सकै दरश उत्साहू। होहिं यदपि शारद अहिनाहू॥
लतानि लतानि तरु तरु आरामैं। हेरति सिय रामैं अभिरामैं॥
फूलन फूलन निज प्रभु नेही। नैन दीठि आलि किय वैदेही॥
लखी न जब प्रभु राजकिशोरी। भई चंद्रबिन यथा चकोरी॥
मधुर अलीपहँ सैन चलाई। पूछी लाज विवश नहिं गाई॥
मधुर अली अंगुली उठाई। लताभवन सो दियो बताई॥
दोहा--चली चटक चित चाह चुभि, चतुरि चितै चहुँओर।
मनहुँ दृगंचल चंचलनि, रचन चहति चितचोर॥

चौपाई।

उतै सुन्यो नूपुर धुनि जबहीं। लख्यो लषण लाखन सखि तबहीं॥
कही रामसों मंजुल बानी। इतै लखिय लाखन छबिखानी॥
वन विहरन आवैं सखि वृन्दा। मानहु उये अनेकन चन्दा॥
लषण वचन सुनि सहज सुभायक। लताभवनते कढिरघुनायक॥

सिय मनकी गति गुणि रघुनाथा । खडे लषण कंधहि धरि हाथ
सिय देखन उमँग्यो अनुरागा । सकलवियोगजनितदुखभाग
जो विकुण्ठमहँ दियो निदेशू । हृदय सकल सुधि कियो रमे
वाम पाणि टेके धनु धरणी । चितवत दृग जहँ सियवर वर
मनहु मदन मातंग पराजी । खडो शृगाल सिंह रुचि रा
आवनि जानि जानकी केरी । निज दर्शन लालसा घने
जो सुख भयो राम मनमाहीं । यकमुख वरणिजाय सो नाह
हेरत हती उतै सिय रामै । इत रघुपति सिय लोक ल

दोहा–दोहुनके अभिलाष वश, नयन चतुर इक बार ।
मिले धाय प्यासे सुछबि, रहे वियोगित चार ॥

सवैया ।

दोहुनकी रही प्रीति सनातन, दोहू तहां पलकैं दृगत्यां
हैगो वियोग कछू दिन दोहुन, देवन कारजमें अनुरा
वे प्रगटे अवधेशके मंदिर, वो मिथिलेश किये बडभा
दोहुनके दृग दोहुनमें परि, दोहुनकी छबि पीवन ल

दोहा–दोहुनके चखमें परी, चपलासी सो चौंध ।
उन्हैं बिसरिगो जनकपुर, उन्हैं बिसरिगो औध ॥
चारु चार नयनन मिलत, मंजु अली तहँ जोइ ।
कला रचत कर कमल गहि, कह्यो वचन मुद मोइ ॥

पद ।

अवलोकिय सखि राजकुमारौ ।
ललित लतानिलये विलसंतौ कृतसुंदर शृङ्गारौ ॥
घ्राण कलित कलकंजकरौ कुसुमानि चतु मभिसारौ ।
मंजुल वंजुल मंडित मालौ चित्त नयनगति हारौ ॥
नवनी रदनवकनक शरीरौ जगति यशो विस्तारौ ।
विश्व विदित वृन्दारक वृन्द सुवंदित मधुराकारौ ॥

ललनानन्द विमल विधुवदनौ कोटि मार सुकुमारौ ।
अभिरामा रामे रमणीयौ जन रघुराजा धारौ ॥

कवित्त ।

दोहुँनके बाँके नैन दोहुँनको देखि थाके, दोहुँनके हान उपमाके शोभ शाके हैं । कंज मीन नाके भरे प्रेमके सुधाके मंद, करन मृगाके न गिराके न उमाके हैं ॥ भनै रघुराज अनुरागके मजाके मढे, काके सम ताके एक एक छबि छाके हैं ॥ मेरे मनसाके गुणे कहौं न मृषाके वैन, शील करुणाके कछु अधिक सियाकेहैं ।

सवैया ।

कौन कहै सिय नेहकी नीति, प्रतीति त्यों प्रीतिकी पूरणताई ।
श्रीरघुनायक आनन इंदुमें, नैन लगाइ चकोर लजाई ॥
श्रीरघुराज सुकोटिन बार, निछावरि चातक मेह मिताई ।
मानो लजाइ पराइगये निमि, त्यागि दृगंचल चंचलताई ॥
देखतही सियकी सुखमा, उपमा हरि हेरि कहूँ नहिं पाई ।
केती करी कविताई कवीनन, कौन अनूठ कहौं समताई ॥
श्रीरघुराज विचारि रहे मन, आजुलौं ऐसी न आँखिनआई ।
ज्यों छबि भौनमें होन प्रकाश, सुदीपशिखा विधिबारी बराई॥
जो कहौं विश्वकी सुन्दरताई, समेटिकै सीयकी मूरति राची ।
जो निज मोहनी रूप कहौं सम, तौ मतिमें रहै लाजही माची॥
श्रीरघुराज गुणै मनमें न, कविन्दनसो उपमा कछु बाची ।
है छबिकी छबि शील भरी महा, माधुरिकी महामाधुरी साँची॥

दोहा—कहत बनत नहिं सिय सुछबि, पटतर परै न हेरि ।
रहे मौन अनिमिष दृगनि, फिरे न फेरे फेरि ॥

सोरठा—पुनि कछु उरहि लजाय, लता ओट निजरूप करि ।
चितवत चित्त तुराय, अनिमिष नयनन नरहरी ॥
सिय मुख कंज लुभाय, चंचरीक रचि चारु चख ।

नहिं क्षण क्षणहि अघाय, पियत मधुर मकरंद छवि ॥

दोहा--परी लतापट दीठि जब, सीय उठी अकुलाय ।
मनहुँ महानिधि नयनकी, दीन्हीं तुरत गँवाय ॥

सवैया ।

जानि लतान वितानको अंतर, मंजु अली करकंज उठा
बोली विदेहललीसों भली विधि, नैन नचाय कछू मुसका
श्रीरघुराज विलोकिये वीर, सुवल्लिन बीच महाछबि छा
साँवरो राजकिशोर खरो चित, चोर चितै तजिदे अकुला
होतही ओट लगी चित चोट, भये लला पल्लव कोट करा
मंजु अलीकी सुनी बतियाँ तब, ह्वैकै निहाल विलोकत हा
ज्यों निधि जाइ हिराइ कहूं पुनि, पाइ समाइ न मोद विशा
त्यों रघुराज ललीन समाजमें, लाज लुकाइ लखी लली ला
जै पलको परौ ता क्षण अन्तर, तै पल भे विधिवासर पू
पाय बहोरि महानिधि लोचन, ह्वै गये चन्द्रचकोरसे ल
देखि सखीगण सीय दशा, अनुराग भयो वपु तासु वि
जोरी भली रघुराज बनी, तरुणी गण लै तकिकै तृण तू
नैन हजारन एकहि बारन, राजकुमारनके तनु ला
मानो अपार मलिंद मरंद, सुपीवन अंबुजपै अनुरागैं
कौन कहै पलकै परिबो, थिरता अति भै तनहू मन जा
श्रीरघुराज विलोकैं सदा, सजनीनके वृन्द विरंचिसों माँगै
पूरब पूरण इन्दु उदै लहि, ज्यों विकसै बिलसैं कुमुदा
ज्यों पुनि पूषन प्रात प्रकाशहि, पाइ प्रफुल्लित है कमला
श्रीरघुराजको आनन त्यों, ललनानिके आननमें करिला
देखैं जकी लसी रूपकी माधुरी, चित्रकी पूतरीसी सब आली
सियकी दशा कौन कहै तहँकी, अभिलाषकी मूरति ह्वै गई है
वर राजकिशोरकी साँवली सूरति, आँखिनमें मनों धैलई है

रघुराज कहै प्रभु प्रेम भरी, यहै सत्य विचारहि एकई है ।
अब जान न पैहै कहूँ इतते, पलकानि कपाटनको दई है ॥
दोहा--सीय समेत सखीनकी, देखि दशा रघुराज ।
कुञ्जभवनमहँ गवन किय, विप्रलंब सुख काज ॥

सवैया ।

शारद इन्दु उदै जिमि जोहि, लखै चहुँ ओरते चाइ चकोरी ।
पौन प्रवेग वशात शशी घनी, मेघ घटानि दुराइ बहोरी ॥
श्रीरघुराज सखीन समाज त्यों, चौंकि परीं चितई चहुँ ओरी ।
हाय दई यह कैसी भई, सिगरी कहैं चोर कियो कोउ चोरी ॥
दोहा--प्रेम विवश तहँ जानकी, मूँदे नैन विशाल ।
यथा बचावत योगरत, करि समाधि निज काल ॥

सवैया ।

पूछहिं एकते एकन आली, कहां वनमाली भये दृग खाली ।
हाइ दई यह कैसी भई, इन नैननमें उपजी दुख जाली ॥
श्रीरघुराज नरेशके लाडिले, देहु दिखाइ कृपालु कपाली ।
श्यामघटा छबिके बरसे बिना, आलिनकी अब सूखत शाली ॥
दोहा--प्रेम विवश सीतहि निरखि, सकैं न कहि सकुचाय ।
रहत बनत नहिं बिन कहे, रहीं सबै अकुलाय ॥

कवित्त ।

कोई कहै जीरी बानि वदनमें पीरीपरी, कहां गये जिनपै लगी री नैन पूतरी ॥ शीरी प्रेम बेलि बई नेहकी हरीरी होति, बाढत जरी री विरहानलकी लूतरी ॥ रघुराज आज सुख बीरीको खवाय वह, अवध छली री छल्यो रीति भै अनूत री ॥ प्रीतिकी अमीरी सखी कहहिं अरीरी मरी, घायलसी लोटैं जैसे लोटन कबूतरी ॥
सोरठा--निरख्यो सखिन विहाल, बूडत वारिधि विरहके ।
दोउ दशरथ लाल, लता भवनते प्रगट भे ॥

सवैया।

अरविंदके काननते कढिकै जिमि, हंसके शावक ह्वै
पुनि ज्योंहीं तुषार अपाराहिते युत, वासरनाथ प्रभा
प्रगटे घनश्याम घटानिते ज्यों, रजनीपतिह्वै हियके
तिमि कोशललाल दोऊ रघुराज, लतागृहते कढिकै
जैसे चकोरहि चन्द्र मिलै, पपिहाको पयोद मिलै जिमि
ज्यों जल बाहर आइ परै, पुनि जाइपरै दह मीनकी
सूखत शाली यथाबरसैघन, धार सुधाकी मुये
त्योंही सखीन समाजकी आज, लखें रघुराजभै

दोहा–जनकललीसों तिहि क्षणै, मधुर अली कह
लखहु रूप जो ध्यान धरि, खोलि लखहु सो नैन।

सवैया।

कानमें वाणि परी सखिकी, जबसों स्वपनोसो भयो
खोलिविलोल विलोचन कंज,विमोचन शोच विलोक्यो
श्रीरघुराज हियो हुलसाय, लजाय रुषाय रही
वो सुख क्यों मुखसों कहिजाय जो,जानती जानकी दूसर

दोहा–आपुसमें भाषण लगीं, भूपकुमारि अनूप।
पगीं प्रेम सिगरी सखी, रँगी रामके रूप॥

छन्द भुजंगप्रयात।

महाशोभसीमा उभै बंधु वीरा। हरैं हेरि हीकी सहेलीन
न इंदीवरौ देहकी दाँज पावै। गोराई लखे पीतकंजौ

छन्द गीतिका।

राजति रतन चौतनी शीशन सुभग तनु सित
मनु सितासित घनघटन शिर दिनकर युगल

शिर सजत सुंदर श्याम चीकन काकपक्ष नवीन।
बिचबिच सुमनके गुच्छ स्वच्छ सुतार छबि किय छीन॥
जनु सजल नीरदमें लसति सुंदर बलाकन माल।
मनु उभय दिशि घेर्यो विधुंतुद पर्व लहि उडुपाल॥
अध इंदु उपमा हरत सोहत भूरि भाल विशाल।
तिहि मध्य केसर रेख युगल विशेष लसाति रसाल॥
मनु श्वेत श्याम घटानिमें युग दिपति दामिनि रेख।
जिमि कमल कोशहि ओस कवन श्रमबिन्दु वदन अशेख॥
युग श्रवण मकराकार कुंडल सकल शोभासार।
मनु मदनवापी मीन युग खेलत करत संचार॥
अलकैं हलाकि लटकैं कपोलन मोल जिय जनु लेहिं।
मनु चंद्र मण्डल भुजग पियत पियूष मुख अवलेहिं॥
भ्रुकुटी विकट लगि श्रवण सोहत कामधनु छबि छीन।
जनु हद सुखमा रेख विश्व विरंचि निजकर कीन॥
पुनि कहति कोउ अबलों न ऐसे लखे नैन विशाल।
जिन सैन शर लगि कौन अस जो होत नाहिं विहाल॥
कोउ होत हाल विहाल लखि कोउ होत हाल निहाल।
कोउ तजत जग जंजाल आतिहि उताल ह्वै कंगाल॥
नहिं सोनिमा सुखमा सरोजनि बसी इन दृग आय।
इनके कटाक्षन लगे को नहिं घूमि घायल जाय॥
कोउ कहति इनके अधर वसत अमोल अमल पियूख।
जिहि एकबारहु पान कीन्हे रहति नहिं पुनि भूख॥
सखि गोल लसत कपोल मण्डल मुकुर सुछबि पराजि।
अस विमल वस्तु लखी न कबहूँ पटतरी किमि छाजि॥
आलि चारु चिबुक सुनासिकामधि लसति विमल बुलाक।

शुक मुकुत गहि मुख चहत मनु लघुआम फल छुतछाक।
मृदु माधुरी मुसक्यानि मुखकी मढति मही मरीचि
अवलोकि उर आनंदकी उठतीं अनेकन बीचि।
सखि श्याम गौर सुवदन शोभा सदन वरणि न जाय
निज गर्व कदन विचारि मदनहु रहत रदन दिखाय।
कलु कंबु कण्ठहि मुकुत कण्ठी युग लसनि माधे हीर
मन बंधु विधु गुणि कम्बु भुजनि पसारि मिलत अपीर।
यह श्याम सुन्दर तनु लसत चौलर सुहीरन हार
दिनकर सुता माधि करत मंडल मनहुँ सुरसरि धार।
भुजदंड सुन्दर कलित अंगद लसहिं सुठि सितश्याम
लखि फणी मणिधर सिखे कुण्डल करण मनु छबिछाम।
मणि चटक कटक सुपाणि निकटहि देखि अटकत चेत
जनु कियो रक्षण बंधु रवि निज किरणि हिमि भय हेत।
इन पाणि पंकज परस प्यारी भाग्यवश जेहि होइ
तनु ताप दाप न व्याप तिहि सम जगतमें नहिं कोइ।
पट पीत कटि तट कन्ध लौं छहरत सुछोनी छोर
मनु दमकि दामिनि श्याम सित घन करति पुहुमि हिलोर।
मृगराज भरि उर लाज किय वनवास लंक निहारि
पद लहन सम सरि तपत पंकज सहत आतप वारि।
कोमल चरण कमलन विनिंदक कठिन पुहुमि पयान
तापर उपानह हीन लखि किमि रहै सखिन अपान।
दोहा—पुनि कोऊ बोली सखी, बाढ्यो प्रेम दराज।
मोर काज अब कछु नहीं, लखब छोडि रघुराज।

पद—दादरा।

आली लखौ वनमाली सलोना।
जालिम जुलफाविपुल व्यालीसम मोहिं डसी किमि जाऊरी

हरिलीन्ह्यों हिय राजकुँवर यह मंजुल हँसानि कुसुम कर दोना ।
ठाढो लताभवनके द्वारे जिमि कन्दर कढि केहरि छोना ॥
नैन सैन हनि हरचो चैन सब मैन है न सम कोउ अरुझोना ।
लागी लगन साँवली सूरति शपथ मोरि अब कोउ बरजो ना ॥
श्रीरघुराज राज ढोटापर तन मन वारि भई अब मौना ।
लोकलाज कुललाज बिसरिगो आजुहि होनी होइ सो होना ॥

दोहा–जनकलली अनिमिष चितै, श्यामल राजकुमार ।
धरचो ध्यान मीलित दृगनि, ठाढी गहि तरुडार ॥
प्रेम विवश भइ जानकी, मधुर अली जिय जानि ।
पकरि पाणिपंकज विहँसि, बोली मंजुल वानि ॥

सवैया ।

देर भई गहि शाख तमालकी, ठाढी अहे पग पीर न जोवै ।
ध्यान धरे गिरिजा वपुको, मिथिलेशलली तू वृथा क्षण खोवै ॥
पूजन कीजै बहोरि उतै चलि, माँगियो जो मनमें कछु होवै ।
देखिले साँवरो राजकुमार, खरो रघुराज महा मुद मोवै ॥

दोहा–सखी वचन सुनि सकुचि सिय, दीन्ह्यो दृगन उघारि ।
सन्मुख ठाढे कुँवर लखि, करी मनहि बलिहारि ॥

सवैया ।

नखते शिखलौं लखि राज किशोर, सिया चखमें न परै पलकैं ।
मिलिहैं मोहिं नाथ विशेष द्रुतै हठि, होत विश्वास हिये भलकैं ॥
रघुराज न लाज तजे बनतो, नहिं जात बनै शरणौ कलकैं ।
छबिकी छलकैं अलकैं झलकैं, लखिकै हियमें हलकैं ललकैं ॥
पितुके प्रणकी सुधि कै पुनि सो, पछितााति मनैं नहिं धीर धरै ।
हरको धनु है अतिही कठिनै, महिपालनको नहिं टारो टरै ॥
रघुराज महा सुकुमार कुमार, कहो किमि टारिहैं मंजु करै ।

विधि कैसी करौं इनहींके गरे, मम हाथनसों जयमाल
चाप महेशको होय हरू, अवधेशको लाडिलो पाणिसों
वा दिन देव दिखाउ हमैं, जयमाल धरौं इनके गल
श्रीरघुराज सदा निरखौं, हरषौं यहि औसर जो चित
साँवरो होई हमारो पिया, अरु देवर होइ लला लघु

सोरठा–मनमहँ करति विचार, परी प्रेम परवश सिया।
चलति नयन जलधार, चन्द्रकला बोली वचन॥
वचन सयुक्ति बनाय, सीतहि सरस सुनाइकै।
मधुर अली इत आय,सुनै कछुक चाहति कहन॥

सवैया।

ह्वैगो विलंब खडी इतही अब, अंब गये बिन कोप करैंगी
पूजन बाकी अहै जगदंबको, लम्ब भये रवि बेला टरैंगी
श्रीरघुराज निहारिलई मनकी, उपजी नहिं फेरे फिरैंगी
आउब काल्हि यही बेरियाँ,इत गौरिकृपा सब पूरी परैंगी

दोहा--अस कहि सखि मुसक्याय मृदु, नयन नचाय नवाय
सियहि चितै चितई सखिन, राजकुँवर दरशाय।
चन्द्रकलाके वचन सुनि, मातु भीति उर आनि।
चली पलटि पग जानकी, गूढ गिरा जिय जानि।

सवैया।

देखै बहोरि बहोरि कुरंगन, त्योंही विहंगन भृङ्गन
तामिसि राजकुमार विलोकति, होत अघाउ न चित्त
लालच लागी विलोकनकी इत, त्यों उत है जननीते
खेलत चंगसे चित्त चली ज्यों, बँधी रघुराजके प्रेमके
दूर सिधारत जानिके जानकी, पाटी तहाँ अपनो मन
प्रेम तरंगन रंग अनेकन, त्यों मतिकी लिखनी करि

नेहकी स्याही जलै अनुरागको, श्रीरघुराज पिया निजचीन्ही ।
श्रीरघुवरिकी यों तसवीर, बनाइ सिया हियमें धारि लीन्ही ॥

दोहा--दूर दरश तिमि जानिकै, रचि रचि रुचि रघुवीर ।
चित मिथिलेश कुंवारिकी, रची रुचिर तसवीर ॥

चौपाई ।

बहुरि बहुरि सिगरी सखि देखैं । बिछुरनि जानि महादुख लेखैं ॥
करहिं परस्पर वचन बखाना अस सुन्दर नहिं आन जहाना ॥
देखि भूपसुत साँवल गौरा ।अब न चहत चित चित वनऔरा॥
करहिं विरंचि सिद्ध यह योगू । साँवल कुँवर जानकिहि योगू ॥
प्रण मिथिलेश विचारि बिसूरैं । किहिविधि राम शंभु धनु तूरैं ॥
को सखि जाय नृपहि समुझावै । प्रण परिहारि सिय व्याहकरावै ॥
अपर कह्यो भल भाषहु सजनी । लखहु होत का बीते रजनी ॥
मोरे मनहिं गौरि विश्वासा । करिहैं पूरि हमारी आसा ॥
कोउ कह सबै सखी जुरि आईं । भूपद्वार बैठहिं वरि आईं ॥
की नृप श्याम कुँवर सिय ब्याहै । लेइँ कि तिय वध अघ नरनाहै॥
कोउ कह चलहु सुनै नहिं कहहीं । ऐसहि होइ यथा चित चहहीं ॥
श्याम कुँवर छबि सुनत सुनैना । सोऊ प्रण करिहै कछु भै ना ॥

दोहा-जननि जनक संमतहि ते, होत सुताको व्याह ।
जो जननी वारण करी, प्रण तजिहैं नरनाह ॥

चौपाई ।

गौरि गेह गवनी जब सीता । प्रभु कह लषणहिं वचन पुनीता॥
लखी लला मिथिलेश कुमारी । हम तौ अस नहिं सुछबि निहारी॥
काल्हि स्वयंवर होवनहारा । धौं केहि देइ सुयश करतारा ॥
जागी कौन भूपकी भागा । कापै ईश कियो अनुरागा ॥
सुनत लषण बोले मृदु वानी । रीति हमारि नाथ असि जानी ॥

जहां रहत कोऊ रघुवंसी । तहँ न होत दूसरो प्रशंसी
लषणवचन सुनि मृदुमुसकाई । राम कह्यो बेला बाडि आई
तोरि प्रसून चुके भरि दोना । चलहु कालिह होई जो होना
अस कहि चले गुरूपहँ रामा । हिय वर्णत सिय छबि अभिरामा
मिलन देखि सिय रघुपतिकेरो । देव पाय उत्साह घनेरो
पूरण जानि काम तिहि बारा । लगे बजावन विबुध नगारा
चढे विमान कुसुम झरिलाये । राम लषण मुनिवरपहँ आये
दोहा--गुरु समीप सुम दोन दोउ, धरि पद कियो प्रणाम ।
कौशिक कह्यो विलंब करि, किमि आये इत राम ॥

कवित्त ।

धरि धनुबाण जोरि पाणि वाणि बोले राम, सरल स्वभाव
छन्द ना छुआन है । गये मिथिलेश फूल वाटिकामें फूलहेत,
नके लेत लख्यो कौतुक महान है ॥ भनै रघुराज आई जनकदु
तहां, पूजनके काज गौरी सहित इशानहै । सखिन समाज
विभव दराज आज, ऐसो ना उमाको ना रमाको सुन्यो कान
दोहा--सकल जानि मुनि योगबल, रामहि दियो अशीश ।
होइ मनोरथ पूर तव, कृपा करहिं जगदीश ॥

चौपाई ।

करि पूजन मुनि सविधि सुखारी । भये मूल फल कन्द अहारी
बहु विधि व्यञ्जन सुखद बनाये । युगल बन्धुकहँ बोलि जिमाये
जो अघाइ नहिं यागन भागा । सो अचान लहि मुनि अनुरागा
करि भोजन कर चरण पखारी । मुनि समीप बैठे धनुधारी
कहन लगे मुनि कथा पुरानी । यद्यपि रही रामकी जानी
सुनियत मनुज कहत सब कोई । होत प्रभात स्वयंवर होई
कीन्ह्यो नृप विदेह प्रण भारी । भंजै धनु सो लहै कुमारी

अहै शंभुको दंड कठोरा । तासु कथा सुनु राजकिशोरा ॥
दक्ष यज्ञ वध पूरब काला । शंकर कीन्ह्यों कोप कराला ॥
यही धनुष गहि देवन भाख्यो । सुर नहिं यज्ञ भाग मम राख्यो ॥
तातें यही धनुष शर मारी । करिहौं नाश सकल असुरारी ॥
सुनत शंभुके वचन कराला । डरे देव संयुत दिगपाला ॥
दोहा-कियो प्रसन्न पुरारिकौं, दियो यज्ञ को भाग ।
शांत कोप शंकर भये, तब कीन्ह्यों धनु त्याग ॥

चौपाई ।

निमि नरेश के छठये वंशा । देवरात भो नृप अवतंसा ॥
देवरात कहँ शंभु बुलाई । दियो धनुष तिहि भवन धराई ॥
थाती सम शिवधनुष धरो है । सोइ धनुकर नृप प्रणहि करोहै ॥
मिथिला देश माहँ यक काला । परचो अवर्ष कराल अकाला ॥
मुनिजन कह्यो जनकपहँ जाई । निज कर करहु कृषी नृपराई ॥
मिटै अकाल प्रजा सुख पावैं । नृप चाल्यो तब हल वसुधामैं ॥
हल चालत महि कढी कुमारी । सीतानाम महा छबिवारी ॥
राख्यो भवन सुता सो राजा । एक समय पूजनके काजा ॥
भूमि पखारन कह्यो नरेशा । शिव धनु रह्यो धरो तिहि देशा ॥
सोइ अयोनिज सीय कुमारी । धनु उठाइ कर भूमि पखारी ॥
भूपति लखि अचरज मन माना । तब ते यह कठोर प्रण ठाना ॥
जो कोउ शंभु शरासन तोरी । तिहि व्याहिहौंअयोनिज छोरी ॥
दोहा-यह प्रण सुनि मिथिलेश को, आये भूप अपार ।
तौन स्वयंवर भोरहीं, ह्वैहै राजकुमार ॥

चौपाई ।

यह सब कथा कही मुनिराई । संध्या समय जानि दोउ भाई ॥
गुरु कौशिक शासन शिर धरिकै । संध्या कियो वेदविधि करिकै ॥

पुनि साधारण अंबरधारी। बैठे तरु छाया सुखकारी।
तब पूरब दिशि भयो प्रकाशा। ह्वै गे मनहुँ फटिककी आशा।
किरणें हजारन छईं दिशाना। मंद परी नखतावलि नाना।
उयो मयंक मयूख पसारी। दिशि सुन्दरी विंदु मनहारी।
अरुण राग राजत चहुँ ओरा। मनु माधि रजतथार चित चो
विरहिन को दुखदायक पूरो। संयोगिन सुखदायक रू
दियो दिवाकर ताप मिटाई। जोन्ह भूमि मंडल पसरा
चितै चकोर कुमुद हरषाने। मुकुलित कमल मनहुँ सकुचा
उदित निशाकर लखि रघुराई। सीता वदन सुछबि सुधि आ
कह्यो लषण सों प्रभु मुसक्याई। लखहु मयंक महासुखदा
सोरठा—शशि मण्डल अवलोकि, कछु सिय मुख मंडल सरि
कह्यो बुद्धि थिर रोकि, पावै किमि सम सरिस सो॥

कवित्त।

जलते जनम तापै घटत बढत रोज, बन्धु विष वारुणीको सा
कलंकहै। वासर मलीन रोग यक्षमाते दीन पुनि, पाइ पूर्णमा
पर्व राहुते सशंकहै॥ मध्य श्यामताई विरहीजनको दुखदाई
परि वेश नहिं ठहरै निशंकहै। रघुराज सियमुख सम किमि भा
मुख, भाषत मयंक सम सोई मतिरंक है॥

दोहा--सिय सुधि आवत प्रभु हिये, कीन्ह्यो प्रेम पसार।
कह्यो चंद्रहीसों वचन, विरहीजन अनुहार॥

सवैया।

रे विधु कोकन शोक प्रदायक, तू जग जाहिर पंकज द्रोही
कामको मीतकरै अति शीत, कियो गुरुको अपकार है को
भाषत श्रीरघुराज सुनै सिय, के मुख की सारि तोहिं न सो
नीक न लागत मोहि मयंक, बडो विरही जनको निरमोही

दोहा--सीय प्रेमवश प्रभुहि लखि, लषण कह्यो वर वैन ।
चलिय नाथ गुरु निकट अब, बहुत व्यतीताति रैन ॥
सुनत वचन अस अनुजके, चले राम मुनि पास ।
बैठि निकट शिरनाइ कै, सुनन लगे इतिहास ॥
विश्वामित्र विलोकि; तहँ, अलसाने कछु नैन ।
कह्यो लाल कीजै शयन, बैठन अवसर है न ॥
सुनि मुनि शासन बंधु दोउ, किये शयन सुखपाय ।
स्वपन्योहूं में सिय सुरति, बिसरै नहिं बिसराय ॥
उतै सीय गे गौरि गृह, राजकुँवर धरि ध्यान ।
जोरि पाणि पंकज करी; नति ताति वेद विधान ॥

छन्द मनोहरा ।

जय प्रिया पुरारी शैलकुमारी नहिं विकरारी मनहारी यशविस्तारी ।
पटमुख महतारी वर तप धारी दैत्यविदारी दुखहारी जग संचारी ॥
कृत भव रखवारी धर्म प्रचारी सुजन निहारी उर भारी दायाकारी ।
देतीफल चारी अधम उधारी स्वामि हमारी गति सारीशक्तिनधारी ॥

छन्द हरिगीतिका ।

जय जय हिमाचल दिव्य कन्या विश्व धन्या सुखमई ।
जय शंभु चन्द्रानन चकोरी काहि तैं नहिं गति दई ॥
जय जय गजानन जननि शुंभ निशुंभ रण संहारिनी ।
दुखहारिनी सुखकारिनी उपकारिनी जनतारिनी ॥
जय शंभु भामिनि वसनदामिनि काल्यामिनि कोपमें ।
कैलासवासिनि जगप्रकाशिनि करति जन हित चोपमें ॥
भव भव विभव संभव पराभव अभव भव सब कारिनी ।
दुर्लभ सुलभ तुहिं सहज सब ब्रह्मांड स्ववश बिहारिनी ॥

दोहा–पातिव्रता पतिदेवता, जहँ लगि हैं जग नारि।
तिनमें तुमहिं शिरोमणि, भाषत वेदहु चारि॥

छन्द चौपैया।

सेवत तुहिं प्रीते बहु दिन बीते नहिं मांगी कछु माता।
अब कारज आयो मो मन भायो तैं चारौं फल दाता॥
का कहौं बखानी तव सब जानी जो मन की गति मेरी।
कहुँ दीपक बारे भानु निहारे होत ज्योतिकी ढेरी॥
सुर नर मुनि जेते तुहिं भजि तेते लहे सबै मनकामा।
है मोहिं विश्वासा पुरि है आशा तैं करुणा की धामा॥
मैं शीशनवाई विनय सुनाई खडी जोरि युग पानी।
तुहिं कौन दुराऊ प्रगट प्रभाऊ अभिलाषा तुव जानी॥
अस लागत मोही सब जग द्रोही नहिं हितकर कोउ मोरा।
अब तुव अवलंबा हे जगदंबा कहाँ जाउँ किहि ओरा॥
करिहै नहिं दाया तो यह काया जानि परत नहिं रहिहै।
मैं बडी गरीबिनि तुवपद सेविनि तुम बिन को मुहिं चहिहै॥
पितु प्रण अति घोरा नहिं हित मोरा कोउ न कहे समुझाई।
हरु तैं गरुआई धनु कठिनाई का कठिनाई माई॥
अथवा प्रण फेरै करै न देरै हरै मोर संदेहू।
शंकर महरानी देहु निशानी जाऊं जौन लै गेहू॥
दोहा–तुहिं अविदित नहिं चरित कछु, कहँलौ कहौं बुझाय।
नहिं सुहाय पितु माय मुहिं, दे जिय जरानि बुझाय॥

सवैया।

तैं संबंध सबै विधि जानसि, जौन युगै युगको चलि आयो
कौनहूं कालमें तू ननदी मम, होतिहौ जन्म जबै व्रत पायो
तेहूं परिक्षा लई कबहूं पिय, ते छलकै मम रूप बनायो
पै रघुराज हमैं यहि काल, सबै सुधि प्रेमको नेम भुलायो

दोहा--सुनत जानकी के वचन, प्रगट भई तब गौरि।
करि प्रणाम मन हँसि कह्यो, देविनकी शिरमौरि॥

चौपाई।

यदपि प्रेमवश तुमहि भुलाऊ। तदपि न मोहिं प्रभाव दुराऊ॥
प्रगटी प्रीति प्रतीति पुरानी। तासु होइ कबहूँ नहिं हानी॥
नारद सकल चरित्र सुनायो। कैसे होइ मृषा गुणि गायो॥
बहुत कहे का फल अब होई। भली भाँति महिमा निजगोई॥
जिहि कारण लिये इत अवतारा। सो जान्यों सब भाँति हमारा॥
पै अब कहों काल अनुसारा। सधैं सकल नरनाट्य तुम्हारा॥
आवति हँसी मोहिं मनमाँहीं। याचति स्वामिनि सेवकपाहीं॥
पै जस राउर शासन होई। तैसहि कहब न जानी कोई॥
सकल कामना पूरण होई। जो मन माहँ मिलिहि वर सोई॥
अस कहि दीनी माल भवानी। जनु पूजी ठकुराइनि जानी॥
गौरि कह्यो पुनि कुँवर साँवरो। शील नेह भल जानि रावरो॥
सो करुणानिधान जग जाना। तिहि समान को आन सुजाना॥

दोहा--पार्वती के वचन सुनि, सिय नेसुक मुसक्याइ।
चली प्रणाति करि सदनको, आनँद उर न समाइ॥

चौपाई।

सुख प्रसन्न सियको सखि देखी। कारज सिद्धि सत्य मन लेखी॥
चढी नालकी सीय सुहाई। मंद मंद गवनी सुख छाई॥
बाजन बाजि उठे यक बारा। बोलहिं सखी नकीब अपारा॥
चलीं हजारन सँग सुकुमारी। कहैं जयति मिथिलेश दुलारी॥
यहि विधि गौरि पूजिकरिनेहू। गईं जानकी जननी गेहू॥
सीतहिं देखि जनक महराणी। बोली सबै सखिन सों वाणी॥
बाडि विलंब कर कारण कहहू। सिय सँग सब सयान सखि अहहू॥
मधुरअली तहँ गिरा सुनाई। जननि चरणपंकज शिरनाई॥

देखत रही सिया फुलवाई। फेरि सरोवर माँह नहाई।
पूजी गौंरि वेद विधि करिकै। आवत जननि वेर भइ घरिकै।
रानी कह्यो जाउ सँगमाहीं। करवाओ भोजन सिय काहीं।
गई सङ्ग लै सखि वैदेही। करवायो भोजन पुनि तेही।

दोहा--पौढायो पर्यंक पर, अली अशन करवाय।
लगी चरण चापन हुलसि, मन्त्रन दीठि झराय॥
फुलवाई वरण्यो कछुक, तुलसी कृत अनुसार।
अर्थ भाव धुनि युक्ति वश, भयो विमल विस्तार॥
जे बांचैं समझैं सुनैं यह फुलवारिविहार।
तिन रसिकन सज्जनन को, मम प्रणाम बहु बार॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजासिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीरामस्वयंवरग्रंथे पुष्पबाटिकावर्णनं नाम अष्टादशः प्रवन्धः॥ १८॥

दोहा--राम लषण कौशिक सहित, कियो रैन सुख शयन।
मनहि भय न उर चयन भरि, मीलित मंजुल नयन॥
चारि दंड जब रहि गई, रजनी अति अभिराम।
ब्रह्म मुहूरत आइगो, जगे लषण युत राम॥
कह्यो लषणसों राम तब, आजु तुरंत नहाय॥
प्रातकृत्य निर्धारि सब, बैठैं गुरु ढिग आय।

चौपाई।

आज राजमंदिर महँ प्यारे। सुता स्वयंवर होत सकारे
नृप मिथिलेश नरेश बुलैहैं। गुरुहि बुलावन सचिव पठै
लषण स्वयंवर कौशिक जैहैं। हमहुँ तुमहुँ गुरु संग सिधैं
निरखि स्वयंवर सकल तमासा। हमहुँ तुमहुँ बहु लहब हुलासा
अस कहि सज्जनके सुखदायक। मज्जन करन चले रघुनाय
लषण लगे मज्जन बहु योगी। विकसित कमल कोकसंयोगी

अरुण किराणि कढिपूरवआशा। कीन्ह्यो रजनि जनित तम नाशा॥
गगन भये दुति झलमल तारे। मनहु समर करि रविसों हारे॥
विकसित कमल कुमुद सकुचाने।शशि मलीन लखि मनहु लुकाने॥
बोलि उठे विहंग बिन खेदा। रवि लखि पढहिं विप्र जनु वेदा॥
पूरण प्रभा प्रभात परेखी। पुरुष सिंह परिमल पथ पेखी॥
पुहुमि पटल पुहुमी परिपूरी। पग पग परी पराग प्रचूरी॥
दोहा--मज्जन कीन्ह्यो बंधु दोउ, दीन्ह्यो अर्घ्य प्रदान॥
निर्धारी संध्या सकल, करिके तिलक विधान॥

चौपाई।

पहिरि वसन आये निजवासा। धारयो विमल विभूषण वासा॥
दियो किरीट दिवामणि भासी। गहि कोदंड चंड रिपुनासी॥
कंधन धरे निषंग विशाला। कसि कम्मर बांधे करवाला॥
पीतांबर तनु सोहत कैसे। मेदुर घन रवि आतप जैसे॥
कह्यो लषणसों प्रभु मुसकाई। आजु स्वयंवर लखब सिधाई॥
बोले लषण कंजकर जोरी। सुनहु नाथ विनती कछु मोरी॥
होत स्वयंवर जनकसुताको। देखत बल वीरज यश जाको॥
पै अचरज लागत मनमाहीं। हरि सन्मुख शृगाल नहिं जाहीं॥
उये शशी सोहत नहिं तारा। तहां गवन तस नाथ तुम्हारा॥
रघुनायक बोले मुसक्याई। वहां न लषण किहहु लरिकाई॥
सानुकूल जापर विधि होई। रंगभूमि पैहै यश सोई॥
अस कहि गवने गुरू समीपा। पुरुष सिंह सुंदर कुलदीपा॥
दोहा--करि मज्जन पूजन सविधि, जहां रहे मुनिराय।
जाय नाय शिर पांय प्रभु, बैठे आशिष पाय॥

चौपाई।

उतै उठे मिथिलेश प्रभाता। कियो विचार बुद्धि अवदाता॥
आजु सुखद शुभ योग सुहावन। शतानंदकहँ चहिय बुलावन॥

अस विचारि मिथिला महराजा। मज्जन पूजनादि करि काजा।
शतानंदकहँ पठयो धावन। ल्यायो तुरत पुरोहित पावन।
करि प्रणाम बोले मिथिलेशू। बोलि पठावहु सकल नरेशू।
रंगभूमि महँ सकल प्रकारा। करहु स्वयंवर कर संभारा।
सीय स्वयंवर सुनि चित चाये। देश देश के भूपति आये।
यथायोग्य मंचन बैठावहु। यथायोग्य सत्कार करावहु।
पौर जानपद सभ्य सुजाना। विविध देशवासी जन जाना।
आवहिं देखन सकल स्वयंवर। सुर विमान चढि देखहिं अंबर।
नगर देहु डौंडी पिटवाई। नारि वृद्ध शिशु देखहिं आंइ।
कौशलेश दशरत्थ कुमारे। कौशिक मुनिके सङ्ग सिधारे।

दोहा--विश्वामित्र समीप चलि, मुनि समेत दोउ भाय।
मेरी विनय सुनाय तिन, ल्यावहु आशु लिवाय॥

चौपाई।

सुनि मिथिलेश निदेश मुनीशा। एवमस्तु कहि दियो अशीशा।
उठि तहँते सचिवन बुलवायो। जनकराज कर हुकुम सुनायो।
सचिव सपदि सब कियो विधाना। शतानंद शासन परमाना।
सकल नृपन शासन पठवाये। रंगभूमि सुन्दर सजवाये।
देश देश के सकल महीपा। सजे समाज सहित कुलदीपा।
भूषण वसन विविध विधि धारे। भूप अनूप रूप शृङ्गारे।
निज निज सब साहिबी समेतू। चले स्वयंवर देखन हेतू।
वंदी विरदावली बखानैं। भरे गर्व मन शक्र समानैं।
मोछनपर सब फेरहिं हाथा। चहुँकित चितै कँपावहिं माथा।
कहहिं परस्पर वचन विशाला। परिहै कौन कंठ जयमाला।
कोउ कह आजु शंभु को दंडा। दोर्दंड बल करब त्रिखंडा।
कोउ कह हमहिं विलोकि कुमारी। किमि जयमाल और गल डारी

दोहा--कोउ निज भुजन निहारि नृप, भरे घमंड अखंड ।
अति निर्भर वरवर वदत, को हम सम बरिबंड ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

चढे मत्तमातंगपै भूप केते । मनो आजुही स्वर्गको जीतिलेते ॥
महा सानवारे बडी सेनवारे । चले आवते झूमते बीजवारे ॥
कोऊ पंथ भूमै तुरंगैं नचावैं । सुनारीनके वृन्द शोभा दिखावैं ॥
कोऊ स्यंदनैमें बनाये सुवेशा । दिहे क्रीटमुक्ता गुथे केशकेशा ॥
कोऊ पालकी पै महीपै सवारे । धनेशै लजावैं सुअंगैं सुधारे ॥
कोऊ बैलके यानपै बैठि आमैं । चढे तख्तनामें कोऊ तामजामैं ॥
प्रतीहार बोलैं छरी पाणि धारे । छजैं छत्र चौरैं चलैं ओरचारे ॥
तुरंगैं मतंगैं शताँगैं अनेका । मच्यो शोर भारी यकैएकठेका ॥
उडी धूरि पूरी नभै पंथ जाई । रही भानुके भासको भूरिछाई ॥
अनंते किताके लसैं ते पताके । अरूझैं मनो भानुके यानचाके ॥
भई भीर भारी पुरी चारि ओरा । बजैं बेश बाजे मच्योमंजुशोरा ॥
सबै देशवासी पुरीके निवासी । गये रंगभूमै लखैके हुलासी ॥
युवा वृद्ध बालौ नरौ नारि जाई । परैजानि ऐसो न होती समाई ॥
जहां रंगभूको बनो तुंग द्वारा । तहां होत धूरै पषाणो पवारा ॥
बने वेश बांके बडे ऐंडवारे । जुरे रंगभूके सबै भूप द्वारे ॥
प्रतीहार धाये विदेहै जनाये । महाराज भूके सबै भूपआये ॥

दोहा—जनक बुलाये सचिव सब, दियो निदेश सुनाय ।
यथायोग्य सब नृपनकहँ, बैठावहु तुम जाय ॥

चौपाई ।

मंत्री सचिव मुसाहिब धाये । लगे सबन बैठावन चाये ॥
रहीं मंच अवली जो आगे । बैठाये राजन बड भागे ॥
तिनमहँ बडपनके अनुसारा । भे आसीन भूमिभरतारा ॥

तिन पाछे मंचावलि माहीं। बैठाये सब सज्जनकाहीं
तृतिय मंच अवली जो भाई। पौर जानपद दिय बैठाई
अति उतंग मंदिर चहुँ ओरैं। बैठि नारि नर बालक रौरें
रंग भूमि महँ अति उत्कर्षा। भयो महा मानव संघर्षा
कसमस परत कढत जनकाहीं। अंग अंग दीसैं जनु जाहीं
सिय प्रताप महिमा प्रगटानी। नहिं संकेत परचो कोहु जानी
पूरब पश्चिम दक्षिण ओरा। बैठ भूपति मनुज अथोरा
राज प्रकृति उत्तर दिशि पाहीं। जनकासन ढिग बैठत जाहीं
फटिक तुंग मंदिर तिहि पाछे। तहँ रनिवास विराजत आछे

दोहा—रंगभूमिके मध्यमें, रह्या विमल मैदान।
कनक खंभ झालर मुकुत, तान्यो विशद वितान॥

चौपाई।

रंगभूमि यहि विधि जब भरिगै। राम दरश लालस हियआरिगै
पुर चारण महँ जे पुरवासी। राम रूप देखे छबि खासी
ते आपुसमहँ अस बतराहीं। युगुल कुँवर आये कस नाहीं
जिनहिं लखे वहि दिन पुरबागत। को अस जो न उन्हें अनुरागत
कोउ कह जनक बुलाये नाहीं। यह समाज किमि रच्योवृथाहीं
कोउ कह हमतो अति ललचाये। उनहींको इत देखन आये
कोउ कह उत विदेह लखि आये। दीठि लगन भय नाहिं बुलाये
कोउ कह तुम जानहु नहिं हेतू। मनमहँ जनक कियो अस ने
नृपन बोलि उत्तर देदेहीं। पुनि रामहिं ब्याहैं वैदेहीं
कोउ कह धनुषभंग विन कैसे। प्रण तजिहैं भूपति नहिं ऐसे
वा दिन जे न लखे रघुराई। ते पूछहिं कैसे दोउ भाई
तिनहिं देहिं उत्तर जे देखे। उन विन सकल वृथा मम लेखे

दोहा—यहिविधि सिगरे नारिनर, कहैं परस्पर बैन।
कौशलनाथ कुमारके, लखन लालची नैन॥

चौपाई ।

यहि विधि राजसमाज विराजी । सचिवप्रधान सुमति कृतकाजी ॥
देखि स्वयंवर सब संभारा । जाय जनकसों वचन उचारा ॥
नाथ सभामहँ धारिय पांऊ । आये सकल भूप भरि चाऊ ॥
रंगभूमिमहँ जुरी समाजा । तुव आगमन चहत सब काजा ॥
सुनि विदेह भूषण पट धारे । रंगभूमिकहँ सपदि सिधारे ॥
शासन भेजिदियो रनिवासा । बैठि झरोखन लखैं तमासा ॥
नृप विदेह महिषी छबिखानी । नाम सुनैना शची समानी ॥
सो निज संगहि सखि लिवाई । बैठी झीन झरोखन जाई ॥
मंत्रिन युत मिथिला महराजा । गयो रंगमहि सहित समाजा ॥
उठी समाज विदेह विलोकी । कोउ उर हर्षित कोउ उर शोकी ॥
नृप विदेहको जेठ कुमारा । लक्ष्मीनिधि जिहि नाम उचारा ॥
रंगभूमिमहँ पितुसँग आयो । मनहुँ वीर रस रूप सुहायो ॥

दोहा--सुहृद प्रकृति सरदार भट, परिचर सहित समाज ।
सिंहासन आसीन भो, निमिकुलको शिरताज ॥

चौपाई ।

शतानंद उत चालि मतिधामा । विश्वामित्रहि कियो प्रणामा ॥
कौशिक आशिष दियो अनंदे । युगुल कुँवर गौतमसुत वंदे ॥
गाधिसुवन बोले मति सेतू । कहहु आगमनकर मुनि हेतू ॥
शतानंद तब वचन सुनायो । तुमहिं विदेह नरेश बुलायो ॥
कोशलनाथ कुमार समेता । रंगभूमि कहँ चलहु सचेता ॥
मुनि समाज संयुत मुनिराई । चलो स्वयंवर लखन तुराई ॥
देशदेशके भूपति आये । रंगभूमिमहँ नृप बैठाये ॥
अब बाकी आगमन तुम्हारा । जब जैहौ तुम सहित कुमारा ॥
तब शिवधनुष भूप मँगवैहैं । निज प्रण कहि भूपन दरशैहैं ॥
शतानन्दकी सुनि असि वानी । कौशिक मंजुल गिरा बखानी ॥

आप चलहु हम आवत पाछे । लै दोउ राजकुमारन आछे
शतानंद मुनि उठे तुरंता । गये जहां मिथिलापुर कंता

दोहा–कौशिक आवत कुँवर युत, कीन चहिय सतकार ।
सबते ऊपर अवनिमहँ, अवध भूमि भरतार ॥

चौपाई ।

इतै स्वयंवर देखन हेतू । विश्वामित्र कियो अस नेतू
राम लषणसों कह मुसक्याई । बैठहु इतै अबै दोउ भाई
जबलगि नहिं मिथिलेश कुमारा । तुमहिं बुलावन कहँ पगुधा
उचित न तबलगि जाब तुम्हारा । तुम समान नहिं राजकुमारा
प्रथम जात हम जहां विदेहू । जब बुलवैहैं तब चलिहू
अस कहि मुनिसमाज तहँ राखी ।चल्यो विदेह दरश अभिला
पहुँच्यो रंगभूमि के द्वारा । प्रतिहार तब जाय पुकार
महाराज कौशिक मुनि आये । राजकुमारन नहिं लै आ
सुनि विदेह विस्मय उर आनी । चल्यो लेन मुनिकी अगुवा
कियो जाय नृप दंडप्रणामा । दिय मुनीश आशिषतपधाम
रंगभूमि ले गयो लिवाई । हर्षै लखि समाज मुनिराई
सब मंचन ते मंच उतंगा । राजमंच जिहि शोभ अभंगा

दोहा–कौशिकको बैठाय तिहि, कियो विविध सत्कार ।
पूछ्यो कारण कौन नहिं, आये राजकुमार ॥

चौपाई ।

मुनि मुसक्याय कही तब बानी । अहो विदेह बडे विज्ञानी
शतानंद मुनि गये बुलावन । आये तुव हम सदन सुहाव
वे तो अवध अधीश दुलारे । आवहिं किमि विन गये कुमा
नहिं समान भूपति के बेटा । राजराज दशरथ दुलहे
लक्ष्मीनिधि तिन जायँ बुलावन । आवहिं राजकुँवर मनभाव
सुनि विदेह बोले हरषाई । भलो सिखापन दिय ऋषिरा

तुम नहिं कहहु कौन अस कहई । तुम सम नहिं ज्ञाता जग अहई ॥
पुनि बोल्यो लक्ष्मीनिधिकाहीं । आयो कुँवर तुरंत तहांहीं ॥
कह्यो विदेह जाहु तुम ताता । आनहु अवध कुँवर अवदाता ॥
लक्ष्मीनिधि पितु शासन पाई । चढ्यो तुरंग चल्यो अतुराई ॥
कौशिक एक शिष्य पठवायो । राजकुमारन कहि बुलवायो ॥
जहँ अवधेश कुमार उदारा । आयो लक्ष्मीनिधि सुकुमारा ॥
दोहा–ताजि तुरंग अति दूरते, पगन चल्यो महिमाहिं ।
चलि आगू लेतेभये; राम लषण तिहिकाहिं ॥

चौपाई ।

मिले परस्पर राजकुमारा । मनहु चंद्र रवि अग्नि उदारा ॥
पूँछि परस्पर तिन कुशलाई । लक्ष्मीनिधि बोल्यो शिरनाई ॥
रंगभूमि आये सब राजा । भगिनि स्वयंवर होत दराजा ॥
आप पधारहु पिता बुलायो । हय गय रथ वाहन पठवायो ॥
प्रभु कह जबते गुरुसँग लागे । हय गय रथ वाहन सब त्यागे ॥
चलिहैं पगन पुहुमि पर प्यारे । रंगभूमि जहँ पिता तिहारे ॥
कौशिकशिष्य कह्यो पुनि आई । राजकुँवर बोल्यो मुनिराई ॥
गुरुशासन सुनि दोउ रघुराजा । चले सहित सब मुनिन समाजा ॥
विश्वामित्रहि उतै विदेहू । कह्यो नाय शिर सहित सनेहू ॥
कहौं काह जानौ मुनिराई । जिहि विधि शिवदिय धनुषधराई ॥
जौन भाँति कोपे ईशाना । भाग न पायो यज्ञ विधाना ॥
यह कोदंड विरञ्चि करतारा । दीन्ह्यो हरकहँ योग विचारा ॥
दोहा–सोई धनु लै कोप करि, देवन कह्यो महेश ।
खंड खंड करि अंग सब, देहौं महाकलेश ॥
तब अस्तुति करि देवता, कियो प्रसन्न पुरारि ।
यज्ञ भाग हरको दियो, आपनि विपति विचारि ॥

पूर्व पुरुष यक मम भये, देवरात महराज।
धरवायो हर तिन भवन, सोइ धनुष गुणि काज॥
कर्षत माहि हल कनकमय, प्रगटी सुता अनूप।
तासु स्वयंवर होत पुनि, जुरे बहुरि सब भूप॥

चौपाई।

जब प्रगटी सीता सुकुमारी। मैं राख्यों निज भवन कुमारी
धरयो धनुष जहँ तहँ इक कालैं। मैं बुलाय भाष्यो सिय बालैं
पूजन हेत पखार कुमारी। मैं नहाइ आवतो सिधारी
अस कहि मज्जन करि जब आयो। कौतुक देखि महाभ्रम छायो
धनु उठाइ बायें कर सीता। धरयो और थल परमपुनीता
मम पूजन हित भूमि पखारी। यह लखि हृदय शंक भइभारी
रैन समय जब शयनहि कीन्हा। शंकर मोहिं स्वप्न अस दीन्
जो कोइ लैवै धनुष उठाई। साजै गुन खींचै बरिआई
जो तोडै कोदंड हमारा। सुता दिह्यो तिहि विनहिं विचा
स्वप्न देखि जाग्यो मुनिराई। मम महिषी तब कह्यो बुझाई
सुता विवाहन योग्य भई है। करहु रीति सोइ प्रीतिमई
मैं स्वप्नो भाष्यों तिहिपाहीं। कौतुक लख्यो जु नैननमाहीं

दोहा—महिषींको संमत समुझि, रच्यो स्वयंवर नाथ।
देश देशके भूप सब, जुरे एकही साथ॥

चौपाई।

तब मैं वंदीजनन बुलायो। तिन मुख असप्रणनृपन सुनायो
जो शंकरकोदंड कठोरा। राजसमाज आज इत तोर
तिहि गल परी आज जयमाला। व्याही सो अनूप मम बाल
यथा लागि मुनि आजु समाजू। रही ऐसही तबहुँ दराजू
तहँ रावण मंत्री इक आयो। नाम प्रहस्त जासु जग गायो

बाणासुर बलिराज कुमारा। महाबली जिहि बाहु हजारा॥
पूर्वकाल वर बाज बजायो। सहसबाहु कृतिवास रिझायो॥
औरहु रहे सकल भूपाला। सुनत मोर प्रण ओज विशाला॥
लगे सवाँरन क्रीट अनेका। तमकि उठे एकन ते एका॥
कोउ नरनाह मंद मुसक्याहीं। कोउ सम्हारत खड्गनकाहीं॥
उठि उठि पुनि पुनि बैठहिं भूपा। छाया निरखि बनावहिं रूपा॥
तिहि अवसर सीता तहँ आई। पूजन धनुष जननि पठवाई॥

दोहा--सविधि शरासन पूजि सिय, सखी सहस्र समेत।
जननि भवन को गवन किय, भूपति भये अचेत॥

चौपाई।

राज समाज सुनत प्रण मोरा। निरखि शम्भुको दण्ड कठोरा॥
कसि कसि कम्मर अंबर वेगी। उठे उठावन भूपति रेंगी॥
कोउ नृप गये धनुष नियराई। देख्यो धनुष भुजग भयदाई॥
आयो भागि कहन अस लाग्यो। धनुष न होइ व्याल विष जाग्यो॥
और गयो कोउ तासु समीपा। भयो अंध सो तुरत महीपा॥
धरयो धनुष कहँ पूछनलागा। सकल समाज हास रस जागा॥
अपर गयो कोउ तहाँ भुआला। लख्यो चाप वपु बाघ विशाला॥
बैठ्यो बहुरि मंच निज आई। कह्यो जनक दिय बाघ बँधाई॥
कोउ पुनि गयो अघी नरनाहा। छूतहि चाप भयो तनु दाहा॥
धरयो धनुष कोउ मधिमहँ जाई। सको न तिलभरि चाप डुलाई॥
पुनि भूपाल गयो कोउ नेरा। शंभु स्वरूप शरासन हेरा॥
करि प्रणाम बैठ्यो पुनि आई। कहि न सक्यो काहू भय पाई॥

दोहा--करि सम्मत शत भूमिपाति, जाय एकही बार।
लगे उठावन शंभु धनु, उठ्यो न एकहु बार॥

चौपाई।

बाणासुर तब उठ्यो प्रकोपी। धनुष उठावनको चित चोपी॥

देखि परयो शिव गौरि स्वरूपा । कियो प्रणाम दैत्यकुल भूपा
चल्यो सभाते सदन तुराई । मम प्रभुको धनु सबनि सुना
तब प्रहस्त कह वचन कराला । लंकनाथको दीजै बाल
ना तौ बरबस हरि लै जैहै । जग भरि जुरी काह करिलै
तब हम बोले अमरष बयना । रे प्रहस्त बोलत तुहिं भय ना
जो बरबस हठि हरी कुमारी । सीता ताहि मारि हठि डारी
रावण सचिव सुनत असि बाता । गयो भवन मुहिं धिरै अघात
पुनि यक नाम सुधन्वा राजा । मोहिं कह्यो करि कोप दरा
धनुष सहित कन्या मुहिं दीजै । ना तो अवशि आज फल ली
सुनि मम भट अति अनुचित वाणी । धाये तापर काढि कृपाणी
भूप भाग लै सैन्य घनेरी । बहुरि लियो मिथिलापुर घे

दोहा--भयो वर्ष भरि युद्ध तहँ, भई क्षीण मम सैन ।
ध्यायो देव महेश हम, तब पायो पुनि चैन ॥

चौपाई ।

द्वै रथ भो संग्राम हमारा । समर सुधन्वै मैं हति आ
भागी फौज चले हम पाछे । मारे गये वीर बहु आ
पुरी सुधन्वाकी संकाशी । दई कुशध्वजको सुखराशी
यहि विधि पूरब भयो हवाला । भयो स्वयंवर नहिं तिहिकाल
होत स्वयंवर सो अब नाथा । आय आप मुहिं कियौ सना
इतना कहत जनक नृपकेरे । प्रतीहार दूरहिते टें
महाराज भूपति शिरताजा । आवत अवध कुँवर रघुरा
सुनि विदेह अति आनँद पाई । रामहि लेन चल्यो अगुवा
द्वार देशते चलि कछु दूरी । देख्यौ राम लषण छबि पूर
निरखि राम मिथिलेश महीपै । कियो प्रणाम सिधारि समी
मुनि मंडली महीपति वंदे । राम लषण लखि भये अनं

लक्ष्मीनिधि अरु लषण उदारा । किये विदेह प्रणाति सुकुमारा ॥
दोहा--राम लषण कर कमल गहि, चल्यो विदेह लिवाय ।
जनु शृङ्गार वसंतको, वात्सल्य रस आय ॥

छंद हरिगीतिका ।

सोहत महीप विदेह संग कुमार दशरथ राजके ।
करतार संग मनो दिवाकर निशाकर छबि छाजके ॥
मिथिलाधिराज कुमार लक्ष्मीनिधि विराजत संगमें ।
मनु अमरगण सैनाधिपति करतार संग उमंगमें ॥
पाछे लसति मुनि मण्डली तहँ तेज तरणि अखण्डली।
देखत सबै नर नारि अनिमिष सरस सुठि शोभाभली॥
हल्ला पर्यो मिथिला नगर युग राजकुँवर सभा गये ।
जे रहे रक्षक भवनके ते श्रवण सुनि धावत भये ॥
जे संच बैठे मंच नृप अरु नारि नर सब देशके ।
उचि उचि विलोकत छकत छबि मुखकहतसुतअवधेशके॥
तहँ राजमंडल माधि विमंडित कुँवर कोशलपालके ।
वार्यो मदन महताब युग मनु विविध बीचमशालके॥
कोउ कहत कोशलनाथके नन्दन महारण बाँकुरे ॥
जग साखि मुनिमखराखि लिय सुकुमार कोशल ठाकुरे।
मनु मुदित मन्दहि मन्द गमनत मत्त मातंगज नती ॥
चहुँ ओर हेरत नैन फेरत हरत जनु राजन रती ।
प्रभु आगमन गीर्वाण गुणि गावत गोविंद गुणानको॥
गहगहे गन डहडहे मन गवने गगन लै यानको ।
गन्धर्व किन्नर सिद्ध चारण सुरहजारन अप्सरा ॥
आये स्वयंवर लखन अंबर साजि विमान परंपरा ॥
दोउ बंधु सुखमा सिंधु लसत निषंग कंधनमें कसे ।

वनमाल उर मणि माल कटि करवाल ढालनमें गसे ॥
आजानुबाहु उदग्र विक्रम दुराधर्ष सहर्ष हैं।
उत्कर्ष कीरति वर्ष वर्ष सुनैन जन सुख वर्ष हैं॥
दुर्जन दुरासद वर सभासद विश्व रच्यासद शाह हैं।
जिनके नवल नागर कुँवर धनि अवध शाहनशाह हैं॥
श्रम विंदु मुख अरविंद मनु मकरंद बिंदु सुहावने।
उडु वृन्द नृप युग उदित इन्दु सुइंदिरा मन भावने॥
रघुराज राजकुमार लखि अवनीप कुल शिरताजको।
भे भूमिपति वश लाज जिमि गजराज लखिमृगराजको॥
निज काज गर्व दराज मनहुँ पराज ह्वैगो आज है।
जस गाज हत तृणराज तरु तस भ्राज भूप समाज है॥

दोहा—जाकी जैसी भावना, रही मनहिं तिहि काल।
ताको तैसे लखि परे, दोउ दशरथके लाल॥

सवैया।

जे नृप आये शरासन तोरन, गर्व भरे रणधीर महा
ऐसे बिचार किये मनमें जितिहै कहु को हमरे समुहा
आँखिनमें तिनके रघुराज, सुवीर शिरोमणि वेष दिखा
वीर रसैकी बनी मनो मूरति, रोष बिसारि लखैं ललचा
क्षितिनाथ छली कुटिलै कितवै, दगाबाज समाज जे आये
कपटी कालि मूरति क्रूर महा, करि माया कुमारिको ब्याह
रघुराज लखे रघुनायकते, महा भीम भयावन दण्ड
शिर काटन चाहत ज्यों अबहीं, करवाल कराल लिहे उ
सीय स्वयंवरमें जिन दानव, मानवके वर वेष बना
आये उठावन शंभुको दण्ड, अखण्ड बली भुजदण्ड उठा
ते रघुराज लखे प्रभुको महाकालको रूप ज्यों लेत हैं सा

नयन कराल विशाल भुजा, बचिहैं नहिं आज दिगंत पराये ।
जे मिथिला पुरवासी महासुखराशी रहे छबि पीवन आसी ॥
रूप उपाशी सबै दुखनासी, विलोकन और के ओर निरासी ।
ते रघुराजकी मूरतिखासी, विलोकि सुधासी चखे हैं मिठासी॥
नेहकी फाँसी परै निरखैं निज, नयननिनीके निमेष निकासी ।
नारि विलोकहिं साँवरी सूरति, मूरति माधुरीकी मनु भाई ॥
प्रीतिमई रसरीति छई, अनुरागकी आभ अनूप निकाई ।
श्रीरघुराज मनो जुलफैंकी, जँजीरनकी कुलफैं खुलवाई ॥
जानि दृगञ्चल चञ्चल चोर, अचञ्चल कै दियो वेरि भराई ।
दोहा--कोटि मदन मद कदन वपु, शोभ सदन सुकुमार ।
कहैं सखी किहि पटतरिय, निउछावरि शृङ्गार ॥

सवैया ।

पंडित ब्रह्म विज्ञानीबडे ते, विराटस्वरूपसो लागे निहारन ।
शीश विलोचन कानहु आनन, पाद औ पाणि परेखे हजारन॥
रोमनि रोमनि अण्डअनेकन, थूलहुसूक्षम विश्वको कारन ।
श्रीरघुराजस्वयम्भु औ शम्भु, सुरेश गणेश औशेष अपारन॥
बैठे रहे निमिवंशी सबै, तहँते निरखे नवनीरद श्यामै ।
लागे सगे संबन्ध जगे, अनुराग रँगे अतिशय अभिरामै ॥
श्रीरघुराज विचारैं मनैं प्रण, टारैं हमै मिथिलेश बुझामै ।
जातिके जाय सबै जुरिकैअब, व्याहैं विशेषिकै जानकीरामै ॥
देखतही नृप रानी सुनैनै, पयोधर में भयो क्षीर स्रवाऊ ।
तैसहि पांचहि वर्षके देखत, रामहि श्रीमिथिलाधिप राऊ ॥
श्रीरघुराजको चूमत सो सुख, दंपतिको प्रगट्यो शिशुभाऊ ।
कोशलपालकेकौसलाकेनहिं, लाल हमारे हैं बालहुभाऊ ॥
योगिन जोहे जबै रघुनाथ, परम्पददायक पूर्ण प्रकाशी ।

आनेअखण्डअनीह अनन्त, अनामयआदिअजोअविनाशी
शुद्ध सतोगुणशांत स्वरूप, सदा अहैं सच्चिदानन्दहि रा
धारणा ध्यानमें धारणयोग, सनातन श्रीरघुराज सुपासी
जे हरिभक्त अनन्य रहे ते, लखे करुणा वरुणालय ना
दीन सहायक सेवन लायक, दायक दासके शीश पै हाथ
श्रीरघुराज विकुण्ठके नायक, भायक भावके आनँदगा
शुद्ध सतोगुण हैं पर तत्त्व, विचारिकै नावत भे सब माथ
जो हरि:हेरतही सियके हिय, होत भयो हठि हौस हुला
सो कवि कौन कहैं सिगरो नहिं, कै सकैं शेष अशेष प्रका
मैं मतिमन्द कहौं केहिभाँतिसों, जूगुनक्यों करै भानुहिभा
जानहिं रामसिया हियकी सिय, जानति रामकी अन्तरआ
दोहा--राजत राजसमाज मधि, कौशलराज किशोर।
सुंदर श्यामल गौर तनु, विश्व विलोचन चोर॥

छन्द हरिगीतिका।

यहि विधि कहत सब नारि नर लखि लषण संयुत राम।
ल्याये लिवाइ विदेह सहित सनेह अति अभिराम॥
चहुँ ओर नैनन फेरि पुनि, हँसि हेरि बोले राम।
मिथिलाधिराज गुरू हमारे बैठे कौने ठाम॥
बोले विहँसि मिथिलेश जो अति मञ्च तुङ्ग विशाल।
कमनीय निर्मित नागरद तापर गुरू तव लाल॥
अस कहि लषण रघुनायकहि लै जाय अतिसुख छाय।
मुनिपदकमल शिरनाय दिय बैठाय दोनों भाय॥
पुनि कह्यो कौशिकसों जनक सब रंगभूमि दिखाय।
पृथिवीपतिनकी पृथक पृथक परम्परा दरशाय॥
निर्माण निज अनुमान ते सो किय बखान बताय।

कीन्ही भली रचना रुचिर अस कहत भे मुनिराय ॥
मिथिलेश मुनिपद नायाशिर अस कह्यो वचन बहोरि ।
अब देहु शासन शंभु धनु आवै विनय अस मोरि ॥
बोले महा मुनि मुदित मन मँगवाइये हर चाप ।
पूजन करावहु सीय कर आसन विराजहु आप ॥
करिकै प्रणाम मुनीशको नृप बैठे आसन जाय ।
शासन दियो सब सचिवगण भट प्रबल विपुल बुलाय ॥
ल्यावहु शरासन शंभुको तर धरहु विशद वितान ।
सीता करै पूजन साविधि नहिं होइ आन बिधान ॥
सुनि नृपति शासन साचिवगण धाये भटन लै संग ।
जनवाय दिय रनिवास महँ मिथिलेश कथित प्रसंग ॥
जबते अवधपति कुँवर आये बीच सकल समाज ।
तबते सबनको भयो बदन विलोकनो यक काज ॥
कोउ कहत सुनियत काम सुंदर अंग सुनियत हीन ।
सोइ कुकवि बुद्धि विहीन समता जौन इनकी दीन ॥
कोउ कहत पुनि अस बुधि विशारद सुखद शारद चंद ।
इनको वदन लखि भयो भारद यथा पारद कंद ॥
कोउ कहत रतनारे नयन हिय हेरि हारे कंज ।
ये भरे शील सनेह नित वै भरे जडता गंज ॥
कोउ कहति चितवहु चतुरि तुम चितचोरि चखनि चितौनि ।
जिहि होत हृदय दुशाल नहिं अस कामिनी कहु कौनि ॥
दोहा—अमल कपोलनमें लसै, कुंडल मंडल लोल ।
विमल आरसीमें मनहु, कल कृत हंस कलोल ॥

छन्द गीतिका ।

सुंदर अधर मन हरत जिन प्रतिबिंब बिंब विचारिये ।
देखत दशन दाडिम कली कल कुंदकी छबि वारिये ॥

अति चारु चिबुक विचारु सखि मनमोर उपमा अस कै
मानहुँ छलकि शशिते सुधा इक बिंदु अध चूवन चै
कोउ नारि कहति विचारि देखहु कुँवर सुंदर साँव
दै बोल मोलहि हरत मन पुनि करत जनगण बावरा
कोउ कहहि निशिकर वदन ते निकसाति हँसनि छाजितछ
बैठी अटापर छन छटा सी कराति कुलि कामिनि कटा
कोउ लिये शुककरताहि लखि सखि कहाति वचन विचारिके
निज नासिका ते तुव सुछबि लिय राजकुँवर प्रचारिके
कोउ कहाति भामिनि भ्रुकुटि विकट विलोकिश्रवणसमीपके
ये साफ सैफ करैं कतल नहिं क्षमै तिय सजनीपके
कोउ कहाति भाल विशालमें रघुलालके चंदन ल
मनु विश्व छबि धारि इन्दिरा नवहीर मंदिरमें ब
मेचक रुचिर कचकंठ चहुँकित ऐंचि पोंछे चीक
मनु सजल सावन श्यामघन निशिनाथको घेरे घ
पुनि कह्यो कोउ नर निरखि कौशलपाल लालनको त
अब लेहु लोचन फल सकल भल भई पुण्य उदय म
चौकोरकी मणिगण जडित चौतनी क्रीट प्रकार
सो लसत माथे मनहुँ हाथे रच्यो निज करतार
जो नीलमणि गिरि फटिक गिरि पै उदै युगपत भानु
अस होहिं कौनौं काल तो नेसुक सकैं उपमा न
जिन कंठकी नहिं पाय सरि लजि कंबु सागरमें ब
तिन कंठरेखा रुचिर त्रय छबि रेख जनु विधि कृत ल
गज मुक्तमाल विशाल उर त्यों लाल माल रसाल
तिमि तुलसिका दलमाल मालति कुसुमके बिच जाल
मनु शंभु गिरि गिरिनील पै यकबार पावस काल
लहि भानु आतप उदै वासव धनुष बूंदन जालमें

कोउ कहत ये दोउ अवधपतिके कुँवर हैं रण बाँकुरे।
आजानुबाहु विलोकि इन अब को लखे बिय ठाकुरे॥
दोउ पुरुषसिंह विराजमान मुनीशके दुहुँ ओर हैं।
कटि छाम वृषभ समान कन्ध अनूप भूप किशोर हैं॥

दोहा--नव यौवन मुख अरुणिमा, अति निशंक रणधीर।
इनके सन्मुख नृप भये, जिमि विन फरके तीर॥

कवित्त।

कन्धन निषंग राजैं हाथन धनुष भ्राजैं, बाम बाम करन दराजै
छबि छाजैहैं॥ आये मुनि काजैं करि बैठेहैं समाजैं मध्य, जैसे गज
राजनमें उभै मृगराजैहैं॥ धन्य रघुराजै किये राखीहै अहल्या
लाजै, दीनन निवाजै रंगभूमि आये आज हैं॥ देखि रघुवंश शिरताजै
चह भाजैं भूप, तजिकै तबाज जिमि लवा लखि बाजै हैं॥

दोहा--पीतवसन अभिराम तनु, सोहत दोनों भाय।
जलद पटल सितश्याम तनु, आतप रह्यो सुहाय॥
पीत यज्ञउपवीत वर, कन्ध नाभि पर्यन्त।
मनहुँ कनक मरकत शिला, कनकरेख विलसंत॥

सवैया।

यद्यपि बैठे हजारन भूप हजारन भाँति शृंगार सँवारे।
तद्यपि जेते रहे नर नारि, विलोचनमें पलकानि निवारे॥
श्रीरघुराज सुखारे सबै, अवधेश कुमारन दीठि पँवारे।
ज्यों मकरंदके पीवनको, अरविंदपै जात मालिंद कतारे॥

दोहा--कहहिं परस्पर नारि नर, देखे किते कुमार।
पै नहिं देखे अस कतहुँ, नख शिख ते मनहार॥

कवित्त।

कोऊ निजबन्धु कोऊ देखे दीनबन्धु कोऊ, शत्रुसे निहारे कोऊ
मित्रसे निहारे हैं। कोई लखे भाल कसे कोई लखे बालकसे, कोई

पेखे पालकसे विश्व रखवारे हैं ॥ भनै रघुराज जाके जैसे
भावहीमें, ताको तैसे जोहि परे अवधदुलारे हैं । मरम न जा
कोई कीन्ह्यो जो चरित्र राम, वरषि प्रसून देव देत भे नगारे हैं

दोहा–उतै गये सब सचिव भट, धनुष लेन के काज।
दै बलि पूजन विविध विधि, वन्दे सहित समाज ॥

चौपाई ।

मंजूषा आयसी कठोरा । बाडि शृंखला लगीं चहुँ ओरा
जब सीता टारचो धनु काहीं । पितुनिदेश धारिदिय तिहि माहीं
पूरब भयो स्वयंवर जबहीं । ल्याये मंजूषा भट तबहीं
यहू कालमहँ तिही प्रकारा । लागे करन सचिव उपचारा
वैदिक ब्राह्मण बहुत बुलाये । विविध भाँति स्वस्त्ययन पढाये
गौरि गणेश सविधि पुजवाये । मंगल हेत महेश मनाये
मंजूषा महँ आयस केरे । अष्ट चक्र वर लगे करे
बली मल्ल जे पांच हजारे । शत शत सिंधुरके बलधारे
गहे चक्र कर खींचन लागे । आनन अरुणजोर अति जागे
औरहु मनुज हजारन आई । लगे चक्र चालन बरिआई
मंजूषा सो टरै न टारी । सकल वीर अतिशय हियहारी
मंत्री सभ्य विप्रवर ज्ञानी । कीन्ही विनय जोरि युग पानी

दोहा–शिव शासन लै जनक नृप, सभा मँगायो तोहि।
रंगभूमि गमनहुँ धनुष, ओर आपनी जोहि ॥

चौपाई ।

अस कहि दियो महेश दुहाई । लगे चलावन चक्र चलाई
जय महेश बोले जन जबहीं । चली धनुष मंजूषा तबहीं
महामल्ल जे पंच हजारा । लै गवने जन ओर अपारा
भयो कोलाहल नगर मँझारी । देखन हित धाये नर नारी

आयसशैल सरिस मंजूषा । तेज तासु प्रगट्यो जनु पूषा ॥
यहि विधि जस तसकै भट भारे । ल्याये रंगभूमि के द्वारे ॥
दिये विदेहहिं खबरि जनाई । द्वार धनुषमंजूषा आई ॥
धरैं तहां जहँ होय रजाई । कह्यो विदेह वचन विदुराई ॥
तन्यो वितान जौन थल पाहीं । बनी जहां बेदी महि माहीं ॥
नाना वर्ण चौक रचि लेहू । अर्चित मंजूषा धरि देहू ॥
तैसहि किये सचिव सब जाई । धरी धनुष मंजूषा ल्याई ॥
बली मल्ल जे पांच हजारे । धरि मंजूषा अनत सिधारे ॥
दोहा--अभिमानी भूपति सकल, लगे बजावन गाल ।
कायर कुमती क्रूर तब, देखत भये विहाल ॥

चौपाई ।

गाधिसुवन कहँ जनक लिवाई । गयो जहां धनु दियो धराई ॥
विश्वामित्र संग दोउ भाई । चले मत्त गज गवन लजाई ॥
मुनि कहँ मंजूषा दरशाई । जिहि बिधि सुन्दर चौकपुराई ॥
रचना विविध विशेष बनाई । गाधिसुवन कहँ सकल दिखाई ॥
हरकोदंड जानि तप धामा । कियो महामुनि धनुषप्रणामा ॥
मुनि कह अब बिलंब नहिं कीजै । सिय आगम अनुशासन दीजै ॥
कह्यो विदेह नाथ नहिं देरी । लेहु सकल रचना मुनि हेरी ॥
मुनि कह भल रचनानूप कीना । लेखा लै लजाय तुम दीना ॥
भूप विदेह मुदित मन भयऊ । मुनि आसन लिवाय पुनि गयऊ ॥
विरचित गजरद कनक उतंगा । जहँ तहँ लगे रत्न बहुरंगा ॥
बैठे लै मुनि अवध कुमारे । निज आसन विदेह पगु धारे ॥
निरखे सब नृप अवध कुमारा । भे मलीन जिमिशशिलखितारा ॥
दोहा--जे हरिभक्त नरेश तहँ, प्रभु लखि कियो प्रणाम ।
जानि जगतपति राम कहँ, सिय लक्ष्मी छबिधाम ॥

छन्द पद्धरी ।

अस कियो नृपनते तिन उचार । अबचलहुसबैनिजनिज अगार
तोरि हैं राम हठि शम्भु चाप । बहु बलकि वृथा मुख लेहु पाप
नहिं गुणहु भूपसुत राम काहिं । वैकुंठनाथ हारिविष्णु आहिं
भूभार हरण अवतार लीन । पदकमल भजहुरे मन मलीन
यह जनक लली इंदिरा माय । प्रगटी विदेहके भवन आय
जो नहिंहु तोरि हैं धनु विशाल । सिय राम गले मेलिहै माल
सम्बन्ध नित्त इनको विचारि । घर चलहु रोष रंजहु विसारि
हम भये धन्य प्रभु दरश पाय । नाहिं लाभअधिक याते जनाय
अस भाषि भूप जे भक्तिवान । प्रभु चरण वंदि कीन्हे पयान
सुनि अपर भूप जे गर्वगेह । तिन वैन कहे मुख भरे तेह
शिव चाप भंग बिन कौन भूप । यह व्याहिसकै दुहिता अनूप
कोउ यंत्र मंत्रवश यदपि आय । हरचाप लेइ छल बल उठाय
इत तदपि न पैहै होन व्याह । हम समर सजे साजे सनाह
ले जान न पैहै कुँवरि व्याहि । मम दोरदण्डका ओजनाहिं
यकबार लडब किनकाल होय । लैजाब कुँवरि रिपु खूदिखोय
का करी जनक करिघोर रोष । नहिं रही सुधन्वा समर घोष

दोहा—यहिविधि बलगत बहुत नृप, अभिमानी मति अंध।
नहिं जानत अज्ञान वश, राम सिया सम्बंध॥

छन्द पद्धरी ।

सुनि वचन कुमातिभूपन अपार । किय मुनित्रिकाल ज्ञाता उचार
जनि वृथा बजावहु गाल भूप । नहिं जान परै कछु रामरूप
जानहु सु जानकी जगत अंब । रामहि विचारु सज्जनालंब
जग पिता पितामह सत्य राम । त्रैलोक्य नाथ आनंदधाम
इनको महेश ध्यावत हमेश । माहिमा अशेश कहि सक न शेश

कारि दरश नाथके विवश बाग । देखहु चरित्र जो होन लाग ॥
नहिं मृग मरीचिकी हराति प्यास । कत कूप खनहु सुरसरित पास ॥
भरि नयन लखहु रघुकुलकुमार । तजि देहु और जगकी झवार ॥
नहिं तुमहिं बराजि कारज हमार । हम गये आज फल पाय चार ॥
अस कहि मुनीश सब भये मौन । हग लखन लगे प्रभु शोभ भौन ॥
तहँ देव सीय आगम विचारि । वर्षहिं प्रसून हर्षहिं निहारि ॥
पुनि करत भये दुंदुभि धुकार । अप्सरा नचन लागीं अपार ॥
कल करहिं गगन गंधर्व गान । गुणि रंगभूमि सियको पयान ॥
अवसर विचार भूपति विदेह । निज सचिव बोलि बोल्यो सनेह ॥
रनिवास जाय दीजै जनाय । सिय मातु देहिं सीतहि पठाय ॥
सिय धनुष पूजि जब फिरी फोरि । तब हम सुनाइ हैं प्रणहि टेरि ॥

दोहा–शिवधनु पूजन हेत सिय, आवै इत अतुराय ।
सुमति सचिव शासन सुनत, दिय रनिवास जनाय ॥
पति अनुशासन सुनि तहां, हुलसि सुनैना रानि ।
चतुर सखीन बुलाइ कै, बोली मंजुल बानि ॥
धूरजटीके धनुषको, पूजन साज लिवाय ।
जाहु जानकी लै अबहिं, शुभ शृंगार बनाय ॥

चौपाई ।

सुनत सुनैना की सखि बानी । सियहि शृंगारसदन महँ आनी ॥
प्रथम सखी मज्जन करवाई । सुरभित अँग अँगराग लगाई ॥
सारी सुरँग सखी पहिराई । सुभग अंग आभरण सजाई ॥
अरुण कंजपद सुंदर नीके । फीक महाउर लागत सीके ॥
मनहुँ कमल महँ छयो परागा । दल अरुणिमा अरुण रँग लागा ॥
जिन पदपंकज मुनिमन भृंगा । रहत निरंतर तजत न संगा ॥
जे पदकमल भाग्यवश ध्यावत । उर आवत त्रयताप मिटावत ॥

नख मणि लसत आँगुरिन माहीं । अंगुलीय संयुत दरशाहीं॥
कुमुदबंधु जनु रवि जन जानी । बैठ्यो पकारि रूप बहु ठानी॥
कमलबंधु कमलन हित भाये । करि बहु रूप छुडावन आये॥
कनक कडे झालरि बड हीरा । जनु घेरे रवि तारन भीरा॥
अति कोमल सुंदर अरुणारे । सीय चरण जग रक्षणहारे॥

दोहा–सीय चरण वर्णन करत, कवि नहिं पावत पार।
विदित वेद महँ जिन विरद, मोसम अघिन अधार॥

छन्द ।

यहि भाँति सिय शृङ्गार करि लै चलीं अली लिवाय।
पहिरे सुरंगित अंग अंबर अंगराग लगाय॥
भूषण विभूषित रत्न गण कीन्हे सकल शृङ्गार।
जिनको निहारहिं हारि हिय गिरिजा गिरा बहु बार॥
कंदर्प दारा दर्प दरनी सेव करनी सीय।
बरनी श्रुतिनकी वेशबरनी नैन हरनी तीय॥
थिर चञ्चलासी चन्द्रिकासी चपल चखनि चलाय।
चालैं दुहूं दिशि चारु चामर चतुर चंचल चाय॥
कोई छबीली क्षपाकर सम लिहे छत्र विशाल।
कोउ पीकदानहु पानदानहुँ अतरदानहु बाल॥
कोउ लिये झारी कनक थारी व्यजनवारी कोय।
कोउ लिये माल विशाल कर उरमाल कोउ मुदमोय॥
चामीकरनकी छडी मणिगण जडी लीन्हें पानि।
बोलत चलीं आगे अली शोधत गली छबि खानि॥
गहगहे गावत गीत मङ्गल किये मंडल मंजु।
कोउ बाल विरद बखानती गति ठान गजगति गंजु॥
यहि भाँति प्रविशी रंगभूमि विदेह कन्या आय।

मनु नखतमण्डल में अखण्डल पूर्णचन्द्र सुहाय ॥
उठि उठि सबै देखनलगे भाषत परस्पर बैन ।
मिथिलाधिराज लली भली आवत चली चित चैन ॥
अभिमान अक्षनि अन्ध अवनिप सीयको अवलोकि ।
मूछैं मुरेरत नैन फेरत बाहुदण्डन ठोंकि ॥
नर नारि सिय लखि कहहिं यहि हित यह स्वयंवर होत।
अनुरूप सोई भूप जाकर पूर्व पुण्य उदोत ॥
सज्जन सुशील सुजान हरिजन जानि सिय जगदम्ब ।
कीन्हे प्रणाम अकाम मन कहि जयति जगदवलम्ब ॥
कुमति कुपापि अति कुटिल कामी कहहिं आपुस माहिं ।
टोरे न टोरे धनुष कन्या लेब बरबस व्याहि ॥
कोउ कहहिं हम एरण्ड दण्ड समान दलि कोदण्ड ।
नव खण्ड सुयश अखण्ड करि व्याहब,बलानि भुजदण्ड॥
कोउ कहहिं अबहीं हरहु दुहिता करहु कस बकवाधि ।
बैठे रहें मिथिलेश मन्दिर ठानि अचल समाधि ॥
जे रासिकसाधु सुजान भूपति सुनत वचन कठोर ।
ते देत उत्तर उमँगि अमरष घोर करि तहँ शोर ॥
तुम्हरे हियहुकी आँखि फूटी लेहु बदन निहारि ।
नहिं मिलति खरको धेनु टोरहु तार पाणि पसारि ॥
हम सब लरब सिय हेत हठि घर रहैं बैठि विदेह ।
सिय ओर ताकत मारि बाणन करब छाती बेह ॥
तब भयो कोलाहल महा तिहि रंगभूमि मँझार ॥
मुनिजन सभासद जाय कीन्हे मौन भूभरतार ।
दोहा--सिय कोलाहल सुनि डरी, खडी समाज मझार ॥
चितवाति चहुँकित चकित चित, कहँ हैं राजकुमार ॥

कवित्त।

उभै पाणि अलक उठाय मिथिलेश लली, हेरो चारिओर
साँवरो कुमारहै। जहां तहां भयो दृष्टिपात मैथिलीको मंजु,
तहां बैठो जो जो भूमि भरतारहै॥ सो सो सब जोहि जोहि मोहि
मञ्चनपै, गिरिगो न नेकु रह्यो तनुको सँभारहै। रघुराज रामपद
लागे नैन जाय, कीन्हे मनोराजन समाज खिलवारहै॥ कोई
पाल रहे दन्तनसे दाबि ढाल, कोई कर बालनको छोडे तिहि
हैं। कोई मोह वारिधिमें बूडि उतरान लागे, कोई गिरे मञ्चनते
विहालहैं॥ दुर्मद भुवालनके हालको कहांलों कहों, छूटी ढाल
माल बन्द भये गालहैं। मानो मोहनीको रूप धारचो है विदेह
रघुराज मन मुसक्यात रघुलाल हैं॥ दास देखे स्वामिनी सी
कालयामिनी सी, सखी वर भामिनीसी देव जगदम्बा सी॥
दुहिता सी दासी कलपलतासी दैत्य, भूप कालिका सी
आनँदकदम्बा सी॥ सज्जन कृपा सी योगीजन अजपा सी,
नारि कमला सी शठ मूरति त्यों सम्बासी॥ रहे जस आसी
तौन विधि भासी लखे, माता सी लषण रघुराज अवलम्बा सी

घनाक्षरी।

शिरते चरण लगि प्यारीकी समारी भली, सोहती नवल
जनक कुमारीतन। परम प्रकाशी आभ आनँदकी राशी
कलपलतासी मध्य फुल्लित कुसुंभवन॥ भनै रघुराज मनो
संध्याकाल, चारु चपलासी लसैं अरुण सघनघन। रजोगुण
लके भीत रविराजै मनों, सतोगुण मण्डल अखण्डल रसिक

दोहा-गजगामिनी सुभामिनी, मधुरअली जिहि नाम।
सो लिवाइ गवनी सियहि, शम्भुशरासन ठाम॥

छंद चौबोला।

चाप समीप गई वैदेही सखिन समाज समेतू।
राजन लषण व्याज निरख्यो तहँ उभय भानुकुलकेतू॥
लागा पूजा करन धनुष की मन रघुपतिपद लागा।
धूप दीप नैवेद्य आदि सब दीन्ह्यो सहित विभागा॥
जिहिदिशि बैठभानुकुलनायक तिहि दिशि ह्वै सियठाढी।
करसों पूजति शंभुशरासन हिये रामरति बाढी॥
करसों फेरति धनुष आरती मनसों प्रभुहिं उतारै।
मानहुं सबकी लगी दीठि गुणि आरति मंत्रनि झारै॥
देत प्रदक्षिण धनु को सीता जब प्रभु सन्मुख आवै।
करन बात आलिन के व्याजे तहां कछुक रुकि जावै॥
यहि विधि चारि प्रदक्षिण देके कियो प्रणाम पुनीता।
मनहीमन विनवति महेश को समुझि पिता प्रण सीता॥
जय महेश करुणागुणसागर यह कोदंड तुम्हारा।
सुनत कौनकी विनय दीन गुणि कियो न आशु उधारा॥
आशुतोष गौरीपति शंकर जन हित औघड दानी।
रामहिं परशत करहु तूल सम धनुष धूरजटि ज्ञानी॥
बार बार विनऊँ महि शिर धरि शंकर दीनदयाला।
हरहु धनुष गुरुता तुरता करि लग्यो काम यहि काला॥
अंतरहित ह्वै कह्यो आय शिव सीता कानन बानी।
मोहिं अभिलाष असत्य रावरी लेहु सत्य यह जानी॥
कछु आनँद उर मानि जानकी पूजि धनुष तिहि काला।
चली बहुरि जननी समीप कहँ लै सखिवृन्द विशाला॥

मधुरअली सहजा को कर गहि बात करन के व्याजै।
पुनि पुनि चितवति चारु चखन सों लषण राम रघुराजै॥
राम लखत सीताकी छबि को सीय राम अभिरामै।
उभय दृगंचल भये अचंचल प्रीति पुनीति सुदामै॥
जनकनगर नर नारि निहारहिं सिय मूरति मनहारी।
कहहिं परस्पर वचन सरस अति किहि पटतारिय कुमारी॥
गौरि संभु अरधंग अंग बिन पतिरति देखि दुखारी॥
शची पुलोमा दानव कन्या छाया है रवि नारी॥
किमि पटतरी उरग दुहितन को जन्म विषिनते जिनको।
प्राकृत नारि रोग रिपुव्याकुल सुरतिय पलक न तिनको॥
ताते सत्य सत्य हमरे मन ऐसहि होत विचारा।
त्रिभुवन की ईश्वरी इंदिरा लियो आय अवतारा॥
पै जब भई प्रगट कमला वह क्षीरधि मंथन काला।
विष वारुणी संग प्रगटे तहँ पिता पयोधि कराला॥
जनक पिता लक्ष्मीनिधि भ्राता क्षमा जननि सिय केरी।
यह समता अनुरूप रूप नहिं और कहौं कहँ हेरी॥
कोउ कह जो अस होइ बहुरि अब सुधा समुद्र महाना।
विप्रलंब संयोग असुर सुर होयँ रूप धरि नाना॥
छबि रजु कच्छप मदन बसैं अध मन्दर ह्वै शृङ्गारा।
प्रेम रूप धरि त्रिभुवननायक मथैं सहित श्रम भारा॥
प्रीतिमयी मूरति कमलाकी जो निकसै सुखदानी।
तौ समता कछु यहि मूरति की पराति मोहिं जिय जानी॥
कोउ कह बिना रमा के अस किहि कहियत सुंदरताई।
धन्य भाग्य हमरे भूपति की घर बैठी श्री आई॥
कोई कह्यो सत्य सखि भाषसि होत हुलास हरासू।
समुझि विदेह कठिन प्रण मन में नहिं संदेह विनासू॥

दोहा--देव असुर अतिशय बली, दानव मानव भूरि ।
तूरि चाप लै जायँगे, हमरी सियको दूरि ॥
काहि देखि पुनि बसब इत, परी भाग्यमहँ धूरि ॥
जनकनरेश प्रजानिकी, सीता जीवन मूरि ।
सुनि अपरा बोली वचन, तोहिं कहत नहिं लाज ॥
को अस समरथ तूरिहै, शंभु शरासन आज ॥
पै मनकी मन में रहै, कहत बनै नहिं बीर ।
को समुझावै नृपतिको, व्याहैं सिय रघुवीर ॥
सुनि द्वितीय बोली हुलसि, ऐसहि उठत उछाह ।
धनुषभंग लखि लखब पुनि, सिय रघुवीर विवाह ॥
गहगहाय सिगरी तहां, बोलीं एकहि बार ।
तेरो वचन विचार बिन, सत्य करै करतार ॥
यहिविधि पुरनारिन वचन, सुनत सकुचि सुखमानि ।
गई जनानि ढिग जानकी, सुमिरत शंभु भवानि ॥

छन्द चौबोला ।

नर नारी पुनि पुनि छबि देखहिं राजकुमारन केरी ॥
परिहरि नयननिमेष नेहवश उपजी प्रीति घनेरी ॥
समुझि मनहि मिथिलेश भूपप्रण नहिं उर शोच समाई।
बार बार बिनवैं विरंचि पहँ फेरु जनक जडताई ॥
हे विरंचि तैं विश्व विधायक जो कछु सुकृति हमारी ।
दशरथको डावरो सांवरो व्याहै जनककुमारी ॥
जो विदेह प्रण त्यागि आजु विधि राम जानकी व्याहैं ।
तौ हम सब धन भवन द्विजनकहँ देब सहित उत्साहैं॥
यज्ञ करब अरु कूप खनाउब बाग लगाउब घाता ।
वेदविहित बहु धर्म चलाउब राखु हमारी बाता ॥

बैठि विदेह कंठ प्रण फेरै देहु गिरै समुझाई ।
यह जोरी तोरी विरची भलि हमरे मनमहँ भाई ॥
जो प्रण फेरनको नहिं समरथ तौ करु यही उपाई ।
शंभुशरासनकी गरुता हरि रामपाणि तुरवाई ॥
विरचु विरंचि विवाह राम सिय पूरण करु अभिलाखा ।
ना तो तुहिं देहैं निजवध अघ यह विचार करि राखा ॥
निमिकुल नोहरि महा मनोहरि आन योग नहिं सीता ।
वर सांवरो जानकी योगै करु यह व्याह पुनीता ॥
कोउ कह बडे बडे विज्ञानी बसें जनकपुर माहीं ।
कस नहिं समुझावत विदेह कहँ हठवश परे वृथाहीं ॥
अबै तेहवश भूप करहिं हठ पुनि पाछे पाछितैहैं ।
अवधकिशोर समान और वर जन्म प्रयंत न पैहैं ॥
जो बसिहै वैकुंठहु महँ नृप मिटी न दारुण दाहू ।
हठ तजि क्यों नहिंलेतजन्मफलकारि सियराम विवाहू ॥
चलौ सबै अस कहहिं भूपसों बंद स्वयंवर कीजै ।
प्रण परिहरि नरनाह जानकी अवधकुँवर कहँ दीजै ॥
कोउ कह सुनहु सयानि कहौं सतिनेकु शंकनहिं करहू ।
नहिं तोरिहैं राम शिवको धनु यह विभीति परिहरहू ॥
जे समाजमहँ बैठ राज सब तिनके वदन मलाने ।
छू सकिहैं नहिं शंभु शरासन बातन बलकि बताने ॥
देखु वदन सांवरे कुँवरको उदय दिनेश समाना ।
को इन बिन हरचाप तोरि हैं मुहिं विश्वास महाना ॥
कोउ कह आतकोमल सुंदरतनु श्यामलगोरकिशोरा ।
नहिं भरोस आवत सजनी उर हरकोदण्डकठोरा ॥
अब विधि हाथ लगी सिगरी गति मिथिलापुर वासिनकी

पूरव पुण्य सहाय होय हठि राम व्याह आसिनकी ॥
हरि हर विधि वासव सूरज शशि गौरि गणेश गोसांई ।
हरकोदंड प्रचंड करौ मृदु कमलनालकी नाईं ॥
कोउ कहअबनहिं और भाँति सखि बनत विधानबनाये।
चलहु घेरि बैठहिं विदेह कहँ आतमघात लगाये ॥
की व्याहैं अभिराम राम कहँ सीता कुँवरि हमारी ।
की पुरवासिन प्राणघातफल लेहिं कठिन प्रणधारी ॥
यहि विधि कहैं सकल पुर नारी रामै नयन निहारी ।
महाकठिनसुधिकरि विदेहप्रण पुनि पुनि होहिं दुखारी॥
लगे ठट्ट विमान गगनमें देखत देव तमासा ।
बाज बजावत सुम बरसावत भरे लंकपति त्रासा ॥
पापी पुहुमीपातिन छोडिकै को अस तौनि समाजा ।
जो नहिं चहत जानकी व्याहैं तोरि धनुष रघुराजा ॥
दोहा—अवसर जानि विदेह तहँ, बंदीजनन बुलाय ।
शतानंद अभिमत सहित, शासन दियो सुनाय ॥
निमिकुलकी बिरुदावली, बंदीवर तुम जान ।
ऐसो मैं कीन्हो प्रणै, सो नहिं तुमहिं छिपान ॥
ताते जाय समाज मधि, ऊंचे स्वर गुहराय ।
प्रगट अर्थ करि मोर प्रण, दीजै नृपन सुनाय ॥
सुनि वसुधाधिपके वचन, बंदी वंदि विदेह ।
चले सुनावन प्रण नृपन, करि उरमें संदेह ॥
राज समाजहि मध्यमें, द्वै बंदीवर जाय ।
बोलत भये पुकारिकै, दोऊ भुजा उठाय ॥

मौन होउ नरनाह सब, करि कोलाहल बंद।
महाराज मिथिलेशको, यह प्रण सुनहु स्वच्छंद ॥

कवित्त रूप घनाक्षरी ।

विदित पुरारीको पिनाक नवखंडन में, परम प्रचण्ड
अखंड ओज पारावार । बडे बडे वीर बरिबंड भुजदण्डनसों,
महिमंड यश जान चौहें पैरि पार ॥ आजलों न देखे तीर
बली बूडे वीर, गुरुता गँभीर नीर पीर पाय माने हार ।
विरंचि जहाज रघुराज आज, पावै पार सोई शिरताज
भरतार ॥ उदित उदंड जो हजार भुजदण्डनसों, दिग्गजन
शैल फोरचो बलिको कुमार । राजत अचल अर्धंग शिव
तोल्यौ, करमें कमलसो निशाचरको सरदार ॥ दोऊ महा
वीर शंभुके शरासनको, नाय शिर आसनको गवने गमै
कोटिन कुलिश सों पुरारिको पिनाक आज, तोरि रघुराज
व्याहैं विनहीं विचार ॥ पूरब स्वयंवर जो होन लाग्यो एक
जुरे सबै इतै द्वीप द्वीपनके महिपाल । राजनको बाहुबल
सो राकापति, ग्रस्यो तिहि शम्भु धनु विधुंतुद विकराल
रघुराज बहुरि विदेह सोई सीता हेतु, विरच्यो स्वयंवरमें
कसे भुवाल ॥ तोडै जो पुरारिको पिनाक नाक नाके
मेलिहै विदेह कन्या ताके कंठ जयमाल ॥

सोरठा—यहि विधि बाहु उठाय, सुमति विमति वंदी उभय।
प्रण मिथिलेश सुनाय, सब राजनको जातभे॥

छन्द तोटक ।

सुनिकै मिथिलेश महाप्रनको । नृप मोद भरे धनु तोरनको ॥
भुजदंड उमेठि उठे तुरितै । धनु कीन गुणै गुरुता गिरितै॥
कोउ मोछनपै नृप ताउ दये । कोउ भूप शरासनसौंह गये ॥
कोउ बाहु सकेलत धाय परे । कोउ मंदहि मंद मिजाजभरे ॥
कोउ आपुसमें झगरो करते । इक एक उठावहु क्यों डरते ॥
मिलिकै सब चाप उठावहुना । यक बार समीपहि आवहुना ॥
तिनमें कोउ मल्ल महीप रह्यो । द्रुत जाय मँजूषहि पाणि गह्यो ॥
करिजोर महाअति शोर कियो। मनुखोलि शरासन ऐंचिलियो ॥
गिरिगो मुँहके भर भूमि तहाँ । चलि बैठ पराय लजाय महाँ ॥
कोउ देखिमहीपमंजूष डर्‍यो।नहिंजायसक्यो लहिलाजफिर्‍यो॥
कोउसर्पस्वरूप लख्यो धनुको।अतिकंपित अंग कियो तनुको॥
अस बोलिउठ्यो नृपचापनहीं । मिथिलाधिपको यह साँपसही॥
कोउके दृग सिंहस्वरूप लग्यो। धनु देखतही निजभौन भग्यो॥
शिव भक्त रहे महिनायक जे । भव रूप लखे भवभायक जे ॥
नहिं चापसमीप महीप गयो । शिरनाय समाजहि त्यागि दयो॥
हरिके जन जे नृप ज्ञान भरे । महिमें शिर दै परणाम करे ॥

दोहा—मंजूषा हरचापकी, सके खोल नृप नाहिं ।
बिन खोले ही यह दशा, का पुनि खोले माँहिं ॥

छन्द तोमर ।

भे कोपवान महीप । जुरि खडे धनुष समीप ॥
सब करत मनहिं विचार । अब करिय का उपचार ॥
दशसहस भूप बलीन । धनु भंग महँ लवलीन ॥

नहिं सकत धनुष निकारि। मंजूषकर पट टारि॥
कोउ करहिंअतिशय जोर।पुनि गिरहि महि तिहि ठोर॥
कोउ रह्यो नृप अति पाप। जीवन दियो संताप॥
हरिहर लियो बहु द्रोह। सो भरो अतिशय कोह॥
मंजूष निकट सिधारि। धनु चह्यो छुवन उघारि॥
सो भयो भस्म तुरंत। जिमि अनल चूर्ण उरंत॥
अचरज गुणे सब लोग। मुनि कहे अघकर भोग॥
तहँ भूप दशहु हजार। ग सिमिटि सब इक बार॥
मंजूष खोलन लाग। तनु जोर अतिशय जाग॥
यह देखि सभ्य सुजान। सब कहे अस न प्रमान॥
एकै उठावै जोय। जयमाल लायक सोय॥
पै भूप माने नाहिं। अमरष भरे मनमाहिं॥
नहिं हिलत सो मंजूष। जिमि मटनि झूरो रूष॥

दोहा-तूरनकी बातैं कहा, सब भूपन बल जागि।
मंजूषाते धनुषके, ऐंचनकी अब लागि॥
मंजूषा खोलन लगे, करि बल एकहि बार।
उठी पटल नहिं उपरकी, हारे दशौ हजार॥
जैसे कामकि वचन, कोमल सरस अघात।
बसैं सती मनमें नहीं, उपर उपर उडि जात॥

सवैया।

ज्यों ज्यों करैं नरनायक जोर, हटैं पुनि आसन बैठहिं आ
स्वेद भरे मुख हारे हिये बल, पौरुष कीरति देह गमाई,
त्यों त्यों सबै मिथिलापुरके जन, राजनको हँसैं हेरि ठ
श्रीरघुराज मनावैं विरंचि, दल शिवके धनुको रघुराई
दोहा-कीरति बल विक्रम विगत, नृपन देखि करि हास।
कहहिं लोग भे भूप जिमि, विन विराग संन्यास॥

छप्पय।

बुधि बल विक्रम बिजय बडापन सकल विहाई।
हारि गये हिय भूप बैठि शीशन औंधाई॥
हँसहिं सबै पुरलोग बलकि यश आपन खोये।
पंजा प्रथम डबोरि नीच शिर करि अब रोये॥
जे तजि विचार पहिले मनुज करत काज अतुरायकै॥
ते इन मतिमन्द महीपसम सरबस जात गँवायकै॥
दोहा–धनु तोरन जोरन सुगुन, रह्यो एकही ओर॥
मंजूषाते खैंचिबो, कठिनपरो यहि ठोर॥
सोरठा–निरखि दशा तिहि काल, राजनकी सुसमाजमधि।
भये विदेह बिहाल, भट विहीन अवनी गुणी॥
शतानंदको बोलि, मन्द मन्द बोले वचन।
लियो भूप बल तोलि, कह्यो देव का करिय अब॥
दोउ बन्दी तिहि काल, बोले वचन पुकारिकै।
सुनहु विदेह भुवाल, राजसमाजहि लाज भय॥

छप्पय।

प्रण राउर सब नृपन सुनाये भुजा पसारी।
तमकि तमकि बहु भूप आय कीन्हे बल भारी॥
सके न कोई मंजूषाकी पटल उघारी॥
खैंचब ऐंचब साजि प्रत्यंचा काह विचारी॥
अब जस अनुशासन रावरो होइ यहि क्षण तस करैं।
धौं धरो रहै दुर्धर्ष धनु धौं लै तिहि धामहि धरैं॥
दोहा–भूरि भूप निज भवन गे, भूरि रहे शिर नाय।
भूरि न चितवत सामुहे, काको कहिय बुझाय

छप्पय।

सुमति विमतिके वचन सुनत मिथिलेश रिसाईं।
सिंहासन पर खडो भयो नयनन अरुणाईं॥
बोल्यो वचन कठोर शोर करि भूरि भयावन।
छत्रवंश क्षिति छाम जानि मन बहुरि बढावन॥
धरवायदेहु धनु धाममें धाम धाम धुनि आम करि।
अब उर्वीतल उर्वीश कोउ गर्वी होइ न गर्व भरि॥

कवित्त।

देव दैत्य दानवहू मानव स्वरूप धरि, खासे खण्ड खण्डके
ण्ड बलवारे हैं। केते चक्रवर्ती गुणगर्ववशवर्ती नर, विदित रण
रके कर्ता शत्रु भारे हैं॥ आये सुनि मेरो प्रण कीरति कुवँरि
दोरदण्ड ओज निज नयनन निहारे हैं। भनै रघुराज आज रा
काज लेखे, उर्वी निरवीर भई जानमें हमारे हैं॥ दिग
काननलों कीरति करनहार, राजन समाजमें न कोई वीर सा
जाहु जाहु सबै भूप भौनको भलेही चले, मोदित मजेमें
कीजै पौढि माचा है॥ रघुराज आज वसुधामें कोई वीर
पूरतो हमारो प्रण धर्मको न काचा है। तातै अस लगै
धनुषतोरैया वीर, कुवँरिबरैया न विरंचि विश्व राचा है॥
जानतो जो ऐसो पूर्व ठानतो न कैस्यो प्रण, नयो निरमाण
मिको न करतो। आनतो न येतो उपहास नृपमण्डलमें,
जो मंत्रिनको मंत्र अनुसरतो॥ रघुराज आज पाहिचानतो
जोपै, खानतो न गर्वकूप भूप नहिं गिरतो। प्राणको पयानतो
मानतो दुसह दुख प्रणको पयान जानि जीव जस जरतो॥

दोहा–तजहु आश अब व्याहकी, जाहु भवन नरनाह।
लिख्यो न प्रण पूरे विना, वैदेहीको व्याह॥

कवित्त।

शेष भार खाइकै उतारैं फनहूते भूमि, कमठ वराह छोडि
भागैं क्षितिजेहको। भानु सितभानु तारामण्डल प्रतीची उवैं,
शाखै सिंधुवाडव तराणि तजै तेहको॥ रघुराज आज कहै मिथिलाधिराज
सब, राजन समाज मध्य वचन अछेहको। कुँवर कुँवारि
रहै कीरति कलंक दहै, छूटै बरु देह प्रण छूटै न विदेहको॥

सवैया।

पूरव जो जनत्यों जगतीमें नहीं है कहूं वर वीर प्रतापी।
क्षत्रियनकी करि क्षय भृगुनाथ, नहीं पुनि क्षत्रिनको क्षिति थापी॥
श्रीरघुराज सुनो सब राज, प्रणै करतो नहिं सत्य अलापी।
क्यों धरतो उपहास शिरै करि, पूरण पुण्य कहौं त्यों न पापी॥
दोहा–ते बिदेह के वचन शर, भूपति रहे लजाय।
गये न सहि यक लषणसों, भभकि उठ्यो फणिराय॥
अरुण नयन फरकत अधर, लषण लखत भुजदंड।
श्वास लेत भुजगेश सम, अमरष उठ्यो उदंड॥

सवैया।

बैठ्यो दुजानु मनौं मृगनायक, श्रीरघुनायकके दृग देखै।
कंपत गात न आवत बात, अघात अमर्ष उठ्यो उर शेखै॥
श्रीरघुराज कमानसी भौंह, लखैं तिरछोह विदेह विशेखै।
रामकी भीतिसों भाषि सकैं नहिं, राखि सकैं नहिं रोष अलेखै॥
दोहा–तहँ विदेहके वचन शर, भये लषण हिय पार।
जोरि पाणि पंकज प्रभुहि, कीन्ह्यो विनय उदार॥
सुनहु दिवाकर कुलकमल, हौं तिहरो लघु भाय।
जन्म पाय रघुवंश महँ, अस कसकै सहिजाय॥
ठाढे मध्य समाज में, जस जस वदत विदेह।
तस तस राउर दासकी, दहत रुषानल देह॥

छन्द झूलना ।

कहत नहिं उचित मिथिलेश यहि देशमहँ आपको अक्षपरतक्ष
वदत मुख वीर ते विगत भय वसुमती रतिभर सजत नहिं भूप
सुनौं रघुराज हौं रावरो दास नहिं बावरो वेष करि कहौं
आशु आयसु करहु मिटै उर दुसहदुख लखैं कौतुकनृपतिनारि

छन्द नाराच ।

इक्ष्वाकु वंश को जहाँ जु होइ एक पूतरो । अयोग्य बातक
विशेष देत ऊतरो । सु अंशुमान वंश को निशान भ्राजमान
अजान सो विदेहके जबान को बखान है ॥ कहौं प्रसंश ना
कुलावतंस हंसकी । स्वभाव के प्रभाव की सुरीति शत्रुध्वंस
करौ निदेश नाथ नेकु नैन ते निहारिकै । उठाय भूमि
पताल ते उखारि कै ॥ उठाय अंड तौलिहौं सु कंदुके समान
निदेश होइ फोरि देहुँ कुंभ के प्रमानहीं । सुमेरु को बसेरु मैं
उजारि आशुहीं ॥ दुखंड मूल सों करौं गिरीन्द्र बे प्रयासुहीं ।
या पुरारि को पिनाक ना कठोर है । उठाय लै चढाय धाय
क्षोनि छोर है ॥ सुनौ दिनेश वंश वीर यों करौ विचार
उठाय चाप तूरि जाहु आपने अगार को ॥ मनोभिलाष
अशेष आप जानते । करो हमेश पूरि दास को न हेत
विदेह ना कहैं अयोग और भूपके भ्रमै । शृगाल हैं भुआल
इन्हैं न लाजते श्रमै ॥ कहों कहा निदेश नेकु नाथको जु
महेश चाप खंडि खंड खंड मैं फिरावतो ॥ कहौं मुखै करों न
धरौं न चाप हाथमें । असत्य नाहिं बैन सत्य अहौं नाथ साथमें
प्रचंड दोरदंड ये उदंड ओज के भरे । कृपा अखंड पाय के
शत्रु के हरे ॥ कितेक बात वापुरो पिनाक रामदास को ।
बो चढाइबो न नेकु काम त्रास को ॥ अबै न वीर ते

विहीन ह्वै गई। कही वृथा विदेह बात शोचि ना भले लई॥ मुनीश राम शासनै जु नेकु आज पावतो। समाज ते समेत मैं विदेह को दिखावतो॥ जबै प्रवीर लक्ष्मणै सकोप भो समाज में। सकान भीति मानि भूप बूडि सिंधु लाजमें॥ प्रकोपवंत देखिकै अनन्त को तुरन्तही। भगे विमान गीरवान लै विचारि अन्तही भई प्रकंपवान बार बारही वसुन्धरा। ससिंधु राजसिन्धुरा सबंध शैलकुंधरा॥ कहैं गँधर्व सर्व देव सिद्ध भूत चारने। तजै चहैं फणीश ज्वालमाल लोक जारने॥ परे विरिंचि थान देवतानके परामने। प्रलय प्रवर्तमान होति विश्वको नसामने॥ महर्षि सिद्धहू लगे कल्याण को मनावने। क्षमा करन्त जय अनन्त लोक के बचावने॥ विचारि विश्वको विहाल दीनको दयाल जो। कराल कोपको न काल हाल विश्वकाल जो॥ चलाय नैन सैन बन्धुको निवारिलेत भो। प्रजानि देवतानिको मिटाय भीति देत भो॥

सोरठा–मन्द मन्द मुसक्याय, रघुनंदन रणधीरमणि।
नयनन सैन चलाय, कीन्ह्यो वारण बन्धुको॥
दोहा–प्रभु नयनन की सैन लखि, लषण वंदि पदकञ्ज।
भये मौन छबि भौन तहँ, कारि महीप मद गञ्ज॥

कवित्त।

अरुण नयन जब लषण बखाने बैन, सिय हिय प्राची सुख सूर प्रगटाने हैं॥ लोकपाल मानेमोद सुकबि बखाने यश, मिथिला नगर वासी वीरवर जानेहैं॥ रघुराज मंदमंद मृदु मुसक्याने मन, विश्वामित्र पाणि पीठि फेरे सुखसाने हैं॥ मिथिलाधिराज सकुचाने त्यों डराने भूप, बहरी ससाने जल खगसे सकाने हैं॥

दोहा–लषण वचन की धाक सों, परयो समाज सनांक।
जिमि सिंधुरगण बाक में, परै सिंह की दांक॥

चौपाई।

विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी। बोलत भे अवसरजिय जा
सुनहु विदेह भूप मतिमाना। जोअबतुमकछुवचनबखा
सो अनुचित रघुकुलमणि आगे। इनको वयन बाण सम ल
लषण कही सोऊ लरिकाई। वदन वदत कहुँ वीर बढ़ा
जो अनुशासन होइ तुम्हारें। धनु समीप अब राम सि
करहिं जत्न तूरन की येऊ। और न जाहिं भूप तहँ क
अथवा पुनि जिहि होइ घमंडा। तेई करैं जोर बरिबं
कोशलपाल कुँवर सुकुमारे। सबके पाछे चहत सिधा
अबै लेहिं करि भूप अघाऊ। रहै न पुनि पाछे पछिता
मख कौतुक देखन चित चाये। मेरे संग कुँवर दोउ आ
धनु दरशन परशन अभिलाखा। येऊ अपने चित करि रा
जो राउर अब होय रजाई। धनुष समीप जायँ रघुरा

दोहा–सुनिके विश्वामित्र के, वचन विदेह विचारि।
बोल्यो पदवंदन करत, नयन बहावत वारि॥

चौपाई।

का कहिये मुनि नहिं कहि जाई।कोमल कुँवर धनुष कठिना
प्रण परिहरे न होत प्रबोधा। हारि रहे जगती के यो
जो मम भाग्य विवश रघुराजू। तोरहिं शंभु शरासन आ
तौ पुनि इनहिं छोडि मम बाला। काके गल मेलीं जयमा
तुम जानहु हमरी गति सिगरी। जानहु सोउ बात जो बिग
नाथ तुम्हारि अनुग्रहताई। करिहि अवशि रघुराजसहा
तातें कहहु कृपा करि नाथा। चाप समीप जायँ रघुना

राम धनुष भंजैं मुनिनाहा । तौ देखी सिय राम विवाहा ॥
मिटै मोर परिताप कराला । जिमि रवि उदय नाश तममाला ॥
अस कहि मुनिसों पुनि मिथिलेशू । दीन्ह्यो वंदिन विदित निदेशू ॥
द्वीप द्वीप के सकल महीपा । अब नहिं गवनहिं धनुष समीपा॥
अब अवधेश कुँवर तहँ जैहैं । निज भुज बल सबको दरशैहैं॥

दोहा–प्रभु शासन सुनि तैसहीं, वंदी किये विधान ।
परी सनंक समाज कोउ, कहत न कानौ कान ॥

सवैया ।

भूपति वैन विचारि मुनीश, मनैमन श्रीजगदीश सम्हारी ।
मंजुल मंदहि मंदहि वैन, कह्यो रघुनंदहि नैन निहारी ॥
श्रीरघुराज सुराज समाजमें, लाज भई सब गे हिय हारी॥
लाल उठौ यहि काल तुम्हीं, मिथिलेश कलेशको देहु निवारी॥

सोरठा–सुनि कौशिक के वयन, प्रेम लपेटे निपट सुख।
उठे सहज छबि अयन,गुरु पद पद्म प्रणाम करि ॥

कवित्त ।

ठाढे मंच सहज सुभाय आँगिराय नेक, रघुकुल कमल दिवाकर
उदैभये । अभिमानीभूपति उलूकहीसे मूक मुख, वीरवर तारागण
झलमल ह्वैगये॥ह्वैगई व्यतीत त्यों विदेह दुचिताई निशा, कोक
कोकनद पुरवासी सुखसों छये।रघुराज परम प्रताप तापपाय देव, दीह
दुख तोम तम तुरत विदाभये ॥ उतारि चलो है मंदमंद उच्च मंचहीते,
मंदरते मानो काढि आयो मृगराजहै।मानौ महामत्त मंद चलत मतंग
मग,मूर्तिमान मंड्यो मानो वीररस राजहै ॥भूमि भरतारनको तारनसो
तेज हरी,आवत उदै गिरिते मानौ दिनराज है।काज करिबेको
मन लाज भरी नयननमें, राजन समाज मध्य राजैं रघुराज है ॥

सोरठा--प्रजा निमेष निवारि, रघुनन्दन आनंदकर ।
देखि सबै नर नारि, लगे मनावन इष्ट निज ॥

सवैया ।

जो कछु पूरब पुण्य उदै मम, संचित औ क्रियवानहु होंइ
जो जप यागहु योग विराव, भागहुमें हमरे शुभ जोंइ
तौ यह साँवरो कौशलपाल, कुमार महा सुकुमार सदोंइ
जानकीको वरहोइ हरी हरको धनुतोरि महा मुद मोंइ
हे करुणाकर देव गजानन, तू बिघनै निधनै करि दोंइ
आप त्यों आपके बाप प्रताप सो, आपही आपहरू धनु
श्रीरघुराज सुराजकिशोरके, पंकज पाणिमें जोर धरोंइ
कंज मृणाल सो टूटै तडाकहिं, नाथ झडाकहि या यश लोंइ

दोहा--छटो छबीलो साँवरो, कौशल राज किशोर।
मत्तमतंगज गवन करि, चलो जात धनु ओर॥
झांकि झरोखन ते तहां, जनक राज पटरानि।
सखी सयानि बुलायढिग, बोली विस्मितबानि ॥

सवैया ।

येहो सखी अवधेश कुमार, बडो सुकुमार लगै शुचि लोंन
कौसिला वारो तथैव हमारो, विलोकिकै कोई करै नहिं टोंना
तू चलिकै रघुलालके भाल, विशालमें दैदे सुनील डिठोंन
काज कियो मुनिको रघुराजपै, मोहिं तो लागै मरालसो छोंना
ऐसी सुनी सखी कानन मैं कहुँ, काननमें निशिचारिनि मा
कौशिकको मख राख्यो सही, महाभीम निशाचर युद्ध सँहा
झूठ लगै सजनी सिगरो मुहि, देखि प्रसूनहुँते सुकुमा
श्रीरघुराज क्यों काज कियो सके,हंसको शावक शैल उखा
कोलहुते अति कोमल पाणि, चुवै मुख दूधसो बाल सुभा

कौशिक संगहि काननके हित, कैसे विदा करो कौशलराऊ॥
कौसला क्यों हिय कीन्ह्यो पषाण, महीसुर कारज यों जरिजाऊ॥
श्रीरघुराज हा आज लखी महि, शंकर रक्षहि कंकर पाऊ ॥
कौन समाजमें श्रीरघुराजहि, ल्यायो शरासन भंग करावन ॥
चूमन लायक है यहि आनन, मो मन होत कलेऊ करावन ॥
काहे दया मुनिके उपजै, मिथिलेशै कोऊ नहिं जात बुझावन॥
सो धनु तोरन जात लला जु,छुयो नहिं बाण बली अरु रावन॥
कोई कहै नहिं कंत बुझाय, भलो हठ रावरो है यह नाहीं ॥
जानकी योग मिल्यो वर भाग्यन, छोड प्रणै वहि देहिं विवाही॥
जे न करैं लहि औसर कारज, ते जन पाछे परे पछिताहीं ॥
श्रीरघुराज कहौ तुमहीं साति, बाल मरालकि मेरु उठाहीं ॥
तीरथ जाय सुपात्रको पाय न, दानको देइ भरो अभिमानै ॥
संगर शत्रु को पाय न मारत, आरत पाय करै नहिं त्रानै ॥
श्रीरघुराज सुता वर योग जे, पाय न व्याहत वेद विधानै ॥
तू समुझाय कहै पियको जन, चारि कहावत औनि अजानै॥

दोहा-तैंही जाय बुझाय कहु, कंतहि वचन हमार ।
ना तो मैंही लाज तजि, कैहौं चलि दरबार ॥
सुनि जानकि जननिवचन, बोली सखी सुजानि ।
देवि मोरि विनती सुनो, मनकी तजहु गलानि ॥

चौपाई ।

युवावयस मृदुगात अनोखो । कोशलपाल बाल चित चोखो॥
महाभीम भूपति बलवारे । राजकुँवर सम कौन निहारे ॥
बैठे शीश नवाय नरेशा । सके उठाय न धनुष महेशा ॥
लखु छोटो छोहरा छबीलो । चलो जात जिमि गज गरवीलो॥
लखि लघु करहु न भ्रम महरानी । तुरिहै धनुष परे अस जानी ॥

सूक्षम रूप जीव श्रुति गावै । निज तेजहि तनु पालत जो
दीपशिखा अतिशय लघु होई । करै प्रकाश भवन भरि सोई
वसत विष्णु वैकुण्ठहि माहीं । तासु तेज पालत जगकाहीं
साधारण बालक नहिं रानी । जानि परत पूरण गुणखानी
चितवत बनत न तेज अपारा । मानहु सत्य विष्णु अवतारा
है अयोनिजा तोरि कुमारी । तासु योग वर यही निहारी
यह जानहु विधिकी करतूती । बैठे भूप गँवाय सपूती

दोहा--रावण बाणादिक सुभट, छुये न परम प्रताप।
अवध कुँवर तजि कौन अब, तोरहिं शंकर चाप॥

कवित्त ।

मानौ सत्य वानी महारानी बाडि ज्ञानी तुम,काम लै कुसुम
विश्व वश कीन्ह्योहै । लगै लघु मंडल दिवाकर उदोतकाल,
प्रकाश जगतम हरिलीन्ह्यो है ॥ मंत्र लघु होत वश होत सु
ताके, अंबुनिधि कुंभज अचैके पुनि दीन्ह्यो है । जह्नु कारि गंग
प्रगट कानन किय, रघुराज रामै बलहीन कस चीन्ह्यो है ॥

सोरठा—सुनत सखिनकी वानि, रानी उर धीरज धर्यो।
मनहिं महेश भवानि, लगी मनावन विविधविधि॥
चाप समीपहि जात, जनकनंदिनी प्रभुहि लखि।
अतिशय जिय अकुलात, प्रेमविवश भूली सुरति॥

सवैया ।

हे करुणाकर शम्भु सुजान, करी तुम्हरी अबलौं सेवकाई
आय पर्यो अब काम सुई परे, पूरण कीजिये मोरि सहाई
श्रीरघुराजके पंकज पाणि, तिहारे शरासनकी गुरुताई
भूलहु ते पुनि फूलहु ते तिमि, तूलहु ते न लहै अधिकाई

योगप्रदायिनि भोगप्रदायीनि, रोगहु शोग नशायिनि जानी ।
तू करुणा कृपा छोहकी मूरति, मोहिं दई जयमाल निशानी ॥
ताकी करौ सुधि आयो समय, अब श्रीरघुराज मनोरथदानी ।
साँवरेकी परै भाँवरी है अवलंब तुहीं जगदंब भवानी ॥
जय शिवनंदन दोषनिकंदन, वंदनयोग हमेश उदारे ।
जय गणनायक जय वरदायक, शुद्ध सतोगुणके अवतारे ॥
आपके बापको चंडकोदंड करी, लघु दंड सों मोहिं निहारे ।
श्रीरघुराजको राजसमाजमें, देखै पिता धनु खंडकै डारे ॥

दोहा-मनहिं मनावति जानकी, गौरि गणेश पुरारि ।
देखि राम शोभा सुखद, यकटक रही निहारि ॥
भरे विलोचन प्रेमजल, पुलकावली शरीर ।
निरखि अवनि पुनि पितु जननि, पुनि निरखति रघुवीर ॥
श्याम राम अभिराम छबि, लोयन लागत लोभ ।
परमकठिन पितुप्रण समुझि, पुनि उपजत चित क्षोभ ॥

कवित्त ।

विधि कत दीन्ह्यो जन्म दीन्ह्यों जन्म भलो कीन्ह्यो, काहे पुनि बिरची विदेहकी कुमारी है। बिरची विदेहकी कुमारी सोऊ भली भई, पितुप्रण कस करवायौ मुखचारी है॥ पितुप्रण भलो करवायो क्यों बुलायो राम, रामै जो बुलायो मान विनती उचारी है। रघुराज शंकर शरासन तोरावै परै, साँवरे कुँवरहीसों भाँवरी हमारी है ॥ महाराज मिथिलाधिराज आज मेरो पिता, सहित समाज देवराजके समानको। रघुराज ज्ञानी मुनि सभ्य शूर सभासद, कोई न बुझाय कहै उचित प्रमान को ॥ लाभते विहनि प्रण हानिते विहीन परिणामते विहीन फल कौन अवसानको । टूटै नहिं बरु धनु छूटै वरु यह तनु, रहौंगी

कुवाँरी की बरौंगी रघुभानको ॥ सुहृद सचिव गुरु गणक पुरो
हूं, वेद बुध वदै जो सभीत स्वामिकाजमें । धर्मको अधर्म
न्यायको अन्याय होय, उठत उपद्रव विशेष तिहि राजमें ॥कुटि
कठोर कयलासपातिको कोदंड, डोल्यो ना डोलाये भूपमंडली
जमें । रघुराज रामै देत सोई धनु तोरिबेको,गाजपरै ऐसी निर
समाजमें॥कहां किशलैते अति कोमल कमल कर, कहां कोटि
लिश कोदंड या कठोरहै । गडन चहाति पायँ पाँखुरी पुहुपहूँ
ऐसे सुकुमारको न योग ऐसो जोर है॥रघुराज पंकजकी जीर
बेधै हीर, धरौं किमि धीर पावै पीर मन मोर है ॥ अवध कि
पग सेवनके पाइबेमें, शंभुधनु सत्य अब तोरँइ निहोर है ॥स
सभाकी भई भोरी माति मोरी बार, शंभु धनु लागी अब आश
तोरी है । जडता जननपै पँवारे न निहारै मुख, हरू होइ हौं
कारि तिन थोरी है ॥ देखत सकल सुर मुनि रघुराज आज, ज
निवारै नहिं करि बर जोरी है । पाऊं दुखद्वन्द्वकी अनंद छल
छोडि, हौंतो भई भानुकुलचन्दकी चकोरी है ॥

सोरठा–यहि विधि करत विचार, धरत धीर नहिं जानकी।
लखि अवधेशकुमार, कोटि कल्प बीतत पलक॥

कवित्त ।

लखि रघुवरिको निहाराति धरणि ओर, मानौ कहै मातु
तेहीं अब व्याहिदे । सूचानि कराति रामै डाढते उठाइ धरा,
कौन बात पितुप्रण निरबाहि दे ॥ भूमिभारा हारहेत लीन्हो
तार नाथ, मानैंगी भरोस मेरो शोकभार ढाहि दे । रघुराज
सुत कीजे ना क्षमासी क्षमा,भूपनकी पापको प्रतापही ते दाहि

सवैया ।

लोचन लोल ललौंहैं ललीके, मनोज मना मनमें मुद छाकी ।
डोल बनाय मयंकको मंडल, ढीली उभै सफरी छबि साकी ॥
श्रीरघुराज सु श्याम कुमारे, विदेहसुता मनकी गति थाकी ।
झोकिकेप्रीतिसोंझीनेझरोखानि, झारिकैझाकीझकाझकझाँकी॥

कवित्त ।

गुरुजन लाज रजनीको पाय कंजमुख, मुकुलित रुकिगै मलिंदी सिय बानीहै । श्रौण नैनको न हीलो आँसुको निवास होत, जैसे सोन भौनकोन राखत अदानीहै । अति अकुलानी उर पूरण प्रतीति आनी, पूरुबकी प्रीति जानी पुनि सकुचानी है । रघुराज ठानी प्रण सुमिरि भवानी मन, जानिकीसी जानकीशैं ज्ञानिकी हौं जानी है ॥

दोहा–जापर जाकर होतहै, साँचो सरस सनेह ।
सो ताको हठि मिलतहै, यामें नहिं सन्देह ॥
जो तन मनते रामपद, ह्वैहैं मोर अधार ।
तौ तेई पद दासिका, करिहैं राजकुमार ॥
तहँ तिहि क्षण सियके हिये, जो दुख होत महान ।
तौन भानुकुल भानु सब, जानत राम सुजान ॥

सवैया ।

गुरुलोगकी लाज गडे गडे गौनत, जात अडे अडे जैननसों ।
मनमोद मढे मढे वीर रसै नहिं, बोलैं बढे बढे वैननसों ॥
रघुराज खुशीसों यथाखगराज, विलोकत व्यालहि सेननसों ।
चितयो तिमि चाप चढे चढे लाल, बडे बडे वारिज नैननसों॥

दोहा–भंग होत अधंग धनु, जानि लषण तिहि काल ।
कह्यो लोकपालन मनहिं, सजुग होहु यहि काल ॥

छन्द ।

दिशा दिग्गज सबै होहु जुगपत सजग करहु धारण धरणि
धरि जोरसों । कोल कूरम धरे कमठ अहिपति गहैं शेष
बहैं भोर नहिं वोरसों ॥ आपने आपने लोक दिगपाल
काल थिर होयँ जग रक्षि चहुँ ओरसों । त्रिपुर हरचण्ड
खण्डन करन चहत चित आज रघुराज यहि ठोरसों ॥
अस लषण संकलपको सुरन सब बैठि तहँ आपहू सावधानै।
णते चापि ब्रह्माण्ड मंडल सबल प्रबल अहिपति कमंडल
गगन मग थम्हिरहे सूर ताराशशी सिद्ध भागे भभारि चपल
परचोखरभरभुवन भगे भरभर अमरचरित रघुराजको कोउ न

दोहा—सकल महीपनके लखत, चाप समीपहि जाय ।
अचल नीलमणि शृंगसम, ठाढे सहज सुभाय ॥

चौपाई ।

चापसमीप महीप अपारे । रामहि ठाढे सहज निहारे
भरे हर्ष विस्मय सब कोई । निश्चय परति न कोउ कहँ जाई
कौशिक अरु सीता अरु देवा । जानत धनुषभंगकर भेवा
जनक रानि अरु भूप विदेहू । क्षण आनँद पुनि क्षणसंदेहू
पुरजन सकल नारि नर जेते । लागे देव मनावन तेते
तूरहिं शम्भु चाप रघुराई । सविधि करब हम सकल पुजाई
अस कहि लखत मौनजन कैसे । स्वातिबूँद घन चातकजैसे
सिय हिय शोच,भूप विकलाई । अंध महीप गर्व गरुआई
रानि सुनैना कर पछिताऊ । हरचो होरि धनु कह रघुराऊ
प्रबल मल्ल जे पांच हजारे । ठाढे धनु समीप बलवारे
ते सब रामहिं वचन उचारे । खोलहु मंजूषा सुकुमारे
पाणि ठेंगि मंजूषा काहीं । रघुनायक चितयो गुरु पाहीं

दोहा-सहज सुभाव दुराव नहिं, तेज कोटि दिन राउ।
कह्यो वचन रघुराउ मृदु, सुनहु विनय मुनिराउ॥

चौपाई।

हे गुरु अस मानस कछु मेरो। करौं यत्न धनु ऐंचन केरो॥
धनुष उठाय चढावन काहीं। चढति चोप नेसुक चितमाहीं॥
पूछिलेहु मिथिलेश नरेशै। यत्न करन कहँ देहु निदेशै॥
सुनि मिथिलेशै कह मुसक्याई। तुव निदेश चाहत रघुराई॥
नृप कह भली कही रघुनाथा। खैंचन चाप लगावहिं हाथा॥
अस कहि ठाढभयो मिथिलेशा। सुमिरण लाग्यो रमा रमेशा॥
बोले विश्वामित्र पुकारी। गहहु राम धनु पटल उघारी॥
इतना सुनत सबै पुरवासी। ठाढे भये लखनके आसी॥
भूप कूरमति कहहिं घमंडी। यह बालक का हरधनु खंडी॥
द्विज सज्जन अरु भूपविज्ञानी। किये प्रणाम जोरि युग पानी॥
ठाठि भई तहँ सकल समाजा। काह करन चाहत रघुराजा॥
नवकिशोरवय तनु घनश्यामा। अँभिरामहुते अतिअभिरामा॥

दोहा-संमत सहित विदेहको, सुनि गुरु आयसु राम।
गुरु समेत मुनि जननको, किय करकमल प्रणाम॥

कवित्त।

सहज सुभाय कर कमल लगाय मनजूषाको उघारि दीन्ह्यो
झमकि झडाकदै। ताते ऐंचि शंभुको शरासन प्रयास नहिं, साजत
प्रत्यञ्चा कोन कडके कडाकदै॥ रघुराज कौतुकसो ऐंच्यो चाप
कानन लौं, चंचलासी चौंध परी चखन चडाकदै। अवधकिशोर
बाहुजोरको न थोरो सह्यो, टूटिगो त्रिनेत्रधनु तडाकि तडाकदै॥

दोहा-टूटत हरकोदंडके, भयो भयावन शोर।
मनहुँ सहस पाविपातयक, बार भयो तिहि ठोर।

कवित्त सिंहावलोकन ।

कारामेहरंग व्योम भानुके तुरंग भाजे, भाजे भयभीत
अरूझे जाय तारामें । तारा टूटि टूटिपरे अवनि अपारा
बिंदुसे विराजैं राजैं परिगे खभारामें ॥ भारा भरे लाजहीके
सबै मानिहारा,हारा गये हीरनके काचके अकारामें । कारागारा
रेके किवारा खुले जाने देव, देवपति माने रघुराजे रक्षकारामें
चौंकि उठचो चारिमुख चितवत चारो ओर, चन्द्रचूड चेत्यो
चखन उचायकै । गगनते गिरे गीरवाण जे विमाननमें, क्षोणि
छुवत अस उचै अकुलायकै ॥ रंगभूमि भूपतिसमाज नरनारि
एकै बार गिरिगे प्रचंड शोर पायकै । रघुराज लषण विदेह
ठाढे रहे, राम जब तूरचो शंभुचापको चढायकै ॥ हाल
कैलास हाल्यो महामेरु मंदरहू, हाल्यो विंध्यपर्वत हिमा
चाल्यो है । हाल्यो इन्द्रलोक तैसे हाल्यो है विरंचिलोक, हाल्यो
ब्रह्माण्ड शब्द शेष शीश हाल्यो है ॥ रघुराज कौशल
शंभुचाप तोरचो, दहलि दहलि उठे महल पताल्यो है । हा
भुवलोक त्योंही हाल्यो ध्रुवलोक त्योंहीं, हाल्यो विश्व एक हारि
नहिं हाल्यो है ॥ कैधौं उनचासौ पौन फारिकै कढेहैं मेरु, फा
सुवर्णशैल ताहिको तडाकाहै । वामनबहुरि कैधौं फोरचो
ब्रह्म अंड, मारि पग दंड सोई खको भडाका है ॥ ग्रहनको
शशि तारागण भारापाय, टूटचो शिशुमार कैधौं गगन प
है । कैधौं रघुराज रणधीर अवधेश ढोटो, भंज्यो धुरजटिधनु
को धडाका है ॥ चिक्करत दिग्गज पराने पुहुमीको छोडि,
पतंगसे विहंग आसमानके । टूटि टूटि गिरिगे उतंग शृङ्ग
नके, गैलन बटोही भाग वासी भे मकानके ॥ बन्द कारि
तरंग तुंग तोयनिधि, हैगये तडागसे न वेग मारुतानके । रघु
जबाहुबलवारिधिमें बूडे वीर, शंकर जहाज चाप चढे जे अज्ञान

छंद बरवै।

ऐंचत गहत उठाय चढावत चाप। लख्यो न कोउ रघुलालहि कलाकलाप ॥ प्रभुकी रह्यो मूठिमहँ एकैखण्ड ॥ परो खण्ड यक महिमहँ महो उदण्ड ॥सोऊ खण्डहि फेंक्यो माहि रघुनाथ । सहज सिंहसम ठाढे झारत हाथ ॥

छन्द हरिगीतिका

धनु भङ्ग कीन्ह्यो रंगभूमि समाज मधि रघुवीर।
रव भयो घोर अघात बहु निर्घात सम प्रद पीर ॥
जे रहे जहँ ते गिरे तहँ जनु फूटिगे युग कान।
गन्धर्व किन्नर सिद्ध चारण चढे बहुरि विमान ॥
द्वैदण्ड भारि ब्रह्माण्ड खलभल मचिरह्यो तिहि काल।
अस विश्वमें नहिं रह्यो कोउ सुनि होइ जो न विहाल ॥
पुनि सम्हारि सबकारि स्वस्थाचित्त विचारकिय असुरारि॥
शंकर शरासन राम तूरचो भुवन सो झनकारि ॥
चढि चढि विमान सुखित आनन गगन आय अपार।
यकबार दीन्हें दुंदुभी कहि जयति अवधकुमार ॥
जय रमा रमण रसाल कीन निहाल मिथिलापाल।
हरिलीन सुर दुख जाल हाल दयाल दशरथ लाल ॥
धनुभंग शोरहि व्याज भरिगो सुयश भुवन अपार।
यम वरुण धनद सुरेश मगन अनन्द पारावार ॥
निर्गुण रह्यो असगुण धनुष तिहि सगुणकरत रमेश।
फूटगयो असगुणघटचटकभे मनहिं मुदित महेश ॥
बाजे अनेकन दुन्दुभी माचि रह्यो दिशानि धुकार।
गन्धर्व गावन लगे सर्व अनन्द पाय अपार ॥
नाचन लगीं अप्सरा चन्द्रानन विमानन बीच।
हियमें हरषि वर्षहिं सुमन सुर आय आय नगीच ॥

शीतल सुगन्ध समीर लाग्यो बहन दशहु दिशान ।
सुरभित सलिल सूक्षम सुबूँदन वर्षिरह मघवान ॥
आतप निवारत सघन घन सुर मधुर गर्जत मन्द ।
बाजन बजावत अति सुहावन देव दून अनन्द ॥
प्रभुपर वराषि पुनिपुनि पुहुप नहिं अमर उराहि अघाउ ।
देखत सुछबि निज नाथकी कहि जयति रघुकुलराउ ॥
प्रस्तुति करत रघुनन्दकी वृन्दारकनके वृन्द ।
आनन्दकन्द गोविन्द जयति मुकुन्द रघुकुलचन्द ॥
समरथ सुशील सुजान साहेब सकल भुवनाधार ।
सुर मुनि कलेश न शेष राखन लेत हौ अवतार ॥
इत धनुष शोर कठोर सुनि जे गिरे पुर नर नारि ।
ते उठि निहारे नयन देखे धनुष भंग पुरारि ॥
ह्वैगयौ स्वप्नो सो सबै जो रही मनमहँ आस ।
भइ सिद्ध सकल समाज मध्य प्रसिद्ध विनहि प्रयास ॥
देखे परे पुहुमी पिनाक द्विखण्ड तेज अपार ।
तिनके निकट ठाढे सहज अवधेश राजकुमार ॥
पानी पर्यो जिमि धान सूखत मृतक वदन पियूष ।
सञ्जीवनी विद्या लहे उलहत विटप जिमि सूष ॥
तिमि सकल पुरजन भये ठाढे किये जय जयकार ।
मिथिलेश सुकृत सराहि पुनि जय कहहिं अवधकुमार ॥
गहगहे बाजे दुंदुभी डफ डिंडिमी करनाल ।
करताल वेणु उपंग पटह मृदंग ढोल रसाल ॥
गावन लगीं पुरनारि मंगल गीत चारिहु ओर ।
तिहि समय बढ्यो उछाह अतिजनुभुवनलागतथोर ॥
तहँ शंख धुनि चहुँओर पूरी झांझकी झनकार ।
पुलकावली प्रति अंग नयनन बहाति आनँदधार ॥

मिथिलानिवासिन वदनते अस कढ्यो एकहिबार ।
तूर्यो चटक गहि चन्द्रचूड सुचाप राजकुमार ॥
दोहा--कही सुनैना जौन सखि, राम तूरिहैं चाप ॥
सो उठि पुलकि प्रणाम किय, मिली रानि उठि आप॥

छन्द गीतिका ।

पहिरे रही जो वसन भूषण जडित रत्न अपार ।
सो दियो ताहि उतारि रानी तनक तनु न सम्हार ॥
गुरुजननको वंदति सुनैना कहति बारहिं बार ।
पूरण मनोरथ भयो मेरो पूर पुण्य तुम्हार ॥
तहँ सूत मागध सुकवि बंदी विरद करहिं बखान ।
तूर्यो महेशकोदंड दशरथ कुँवर सींक समान ॥
नर नारि आपुसमहँ मिलैं नहिं कथा कहत सिराय ।
हर्षहिं पुलकि वर्षहिं सुमन विहँसहिं न मोद समाय ॥
मिथिलानिवासी नारि नर सज्जन महाजन जाय ।
प्रभुकी निछावरि करहिं मणिगण बचे देहिं लुटाय ॥
कोउ प्रेम वश परिहरि सुलाजहिं बाहु मींजहिं पानि ।
अतिपीर होती होइगी ऐंच्यो धनुष कर तानि ॥
कोउ चरण शिर धरि करहिं वंदन जानि देवकुमार ।
कोमल कमल कर धनुष तूर्यो कौन विधिसुकुमार ॥
देती डिठोना भाल कोउ नहिं लगै लालैं डीठि ।
कोउ वृद्ध तिय कहि कौशिलाके ठोकती प्रभु पीठि ॥
तिहि समय जो सुख जानकीके भयो राम निहारि ।
सो कौन कवि जग बापुरो जो कहै सकल उचारि ॥
यकटक लगी चितवन चखन जिमि चितव चंद्रचकोर ।
जिमि लहत चातक स्वाति बुंद विहाय बिंदु करोर ॥

तोर्यो शरासन शंभुको जब अवधराज किशोर।
भूपति चमूपति लगत इमि चुप बैठ मानहुँ चोर॥
उडिगै वदनकी लालिमा फिफरी परी अधरानि।
इक एक देखत कहत नहिं मनु भई सरवस हानि॥
मुदके महोदधि मगन भे मिथिलेश गदगद कंठ।
को कहै तिनको हिय हरष मानहुँ लहे वैकुंठ॥
नहिं वचन मुखसों कढत नयनन बढ्यो नीर प्रवाह।
मम धर्म प्रणकी कटी बेरी रही जो पग माह॥
पुनि सुमति विमति बुलाय वंदी कह्यो वयन विदेह।
कहि देउ सकल महीप कहँ अब जाहिं निज निज गेह॥
देखन लषण लोयन ललकि रघुलालको तिहि काल।
मनु आपही तोर्यो धनुष अस भयो हर्ष विशाल॥
मिथिलापुरी तिहि कालमें है गई आनँदरूप।
प्रभु चरण वंदे बारबारहिं रहे भक्त जु भूप॥
मिथिलेश तब चलि गाधिसुतके चरण कीन प्रणाम।
अस कह्यो तुम इत ल्याइ रामहिं कियो पूरण काम॥
तोर्यो शरासन शंभुको प्रण पूर कीन्ह्यो मोर।
छायो सुयश क्षिति छोर लों धनि अवधभूप किशोर॥
यह सकल नाथ प्रताप तुव नहिं और काहु निहार।
जो तूरिहै धनु ताहि व्याहौं रह्यो अस प्रण मोर॥
सो शंभुधनु भंज्यो सहज यह साँवरो रघुलाल।
अब होय नाथ निदेश तो मेलै सुता जय माल॥
तब महामुनि मुसक्याय बोले पुण्य राउर भूरि।
शिवचाप तृण फल फूल सम क्यों सकै राम न तूरि॥
अब देहु आयसु जानकी जयमाल मेलै जाय।

पुनि अवधपुर ते आशुही लीजै बरात बुलाय ॥
सुनि वचन कौशिकके विमल नृप शतानंदहि आनि ।
जयमाल हित शासन दियो अवसर सुखद जियजानि ॥
दोहा-शतानंद आनंद भरि, गये तुरत रनिवासु ।
कह्यो जानकी जननिसों अब कीजे अस आशु ॥
सजि शृंगार गावत मधुर, संग सहस्रन बाल ।
सियहि पठावहु राम के, मेलै गल जयमाल ॥

सवैया ।

सुनिकै मुनिके मुख ते निकसी, सर्वस्व मनो सिय लाभ लह्यो ।
उतसाह औ लाज समान भरी सुखसो मुखसों नहिं जात कह्यो ॥
रघुराज सो लाज उठैं नहिं देति, विलोकन को जियरो उमह्यो ।
कारि लीन्ही जो मूंदरि कंकनसी, कर कंकन सो अंगुरीन रह्यो ॥
दोहा-उठी सीय आनंद भरि, पहिरि पीत पोशाक ।
डगरीं सँग सगरीं सखी, नूपुर बजे झनाक ॥

चौपाई ।

चली जानकी लै जयमाला । पहिरावन को दशरथ लाला ॥
सोहहिं सुंदरि संग हजारन । सुरदारन सम किये शृंगारन ॥
महा भीर सब राज समाजा । खैर भैर मचि रह्यो दराजा ॥
कुमाति कुपाति संमातिकारिलीन्हें । सिय हिनत्यागबाबिनयुधकीन्हें ॥
अस सुधि पाय सुनैना रानी । सायुध पठई सखिन सयानी ॥
वल्लभ कुंत कटार कृपानी । कसे नारि कम्मर मरदानी ॥
मुख्य मुख्यसजनीमाधि माहीं । तिनके माधि सिय लसाति तहांहीं ॥
सायुध सखि मंडल चहुँ ओरा । गावहिं मंगल मंजुल शोरा ॥
मनहुँ समर संभव गुण देवी । आय भई सिय स्वामिनि सेवी ॥
डरपे कुमाति कुपति अविवेकी । टारिगे टारि टेंक जो टेकी ॥

बाहिर जाय यूथ सब बांधे । रण हित आयुध कांधन कौं
यह सुधि सकल लषण जब पाई । चल्यो सिंह सम जहँ रघुराई
ठाढे भयो निकट प्रभु केरे । पंचानन सम भूपन हीं

दोहा–विश्वामित्र विचारि चित, गयो विदेह समीप ।
कह्यो अभागी भूप सब, चाहत होन प्रतीप ॥
बोले जनक सरोष तब, कौशिक करहु न शंक ।
तारागण का करि सकत, पूरण उदित मयंक ॥

चौपाई ।

गारी देहिं नृपन नर नारी । मंगल माहिं अमंगल कारी
प्रथम उठ्यो नहिं धनुष उठाये । बैठे शीश नवाय लजाये
अब किहि हेत करैं शठ रारी । बरवस चाहत हरण कुमारी
कोउ कह करहु शंक नहिं कोई । देखब सबै जौन अब होई
आवति सिय मेलन जयमाला । यह उछाह लखि होब निहाला
सुनत जनक भूपन उत्कर्षा । कियो हर्ष मह परम अमर्षा
चतुरंगिनी सैन्य सजवाई । दियो द्वार मह ठाढ कराई
शासन दियो सरोष विदेहू । मारहु नृपन बचैं नहिं केहू
करन चहत असमंजस पापी । इनकी मीच लषण कर थापी
राजसमाज लाज नहिं लागी । दरशावत मुख बहुरि अभागी
भूपन कहै न कोउ समुझाई । बसहु जीव लै निज घर जाई
सुमति विमति बंदी दोउ धाये । कुमती भूपन वचन सुनाये

दोहा–काज तुम्हारो कौन इत, बैठे वृथा समाज ।
होन मीच भाजन चहौ, परत लषणशर गाज ॥

चौपाई ।

इतै सखीन समाज पुनीता । आइ रंगभूमि महँ सीता
मानहु संग शक्ति समुदाई । काढि कमला क्षीरधिते आई

आवाति सिय लखिउठी समाजा । किये प्रणाम भक्त सब राजा ॥
पुर नर नारि जानकिहि देखे । धन्य धन्य निज भाग्यहि लेखे ।
जब प्रथमहिं पूजन हित आई । रज रंजित ग्रीषम शशि भाई ॥
पहिरावन जयमाल सिधाई । तब शारद मयंक छबि छाई ॥
सीय नयन दोउ बंधु दिखाने ।जिनलगि मदन शृँगार लजाने ॥
मनहुँ नीलमणि रजत पहारा । श्याम गौर क्षिति छटा पसारा ॥
उठतीं सुछबि अभंग तरंगा । क्षण क्षण नव नव होति प्रसंगा ॥
परे खंड द्वै धनु महि माहीं । राम लषण मधि खडे तहांहीं ॥
झुके सकल देखन नर नारी । किहिविधिसिय जयमाला डारी॥
मंद मंद सिय आवाति कैसे । मिलन प्रीति मनु प्रेमहि जैसे ॥
दोहा–राम रूप नख शिख निरखि, अनिमिष नयन लगाय ।
रही ठमकि मन अचल करि, देह दशा बिसराय ॥

सवैया ।

सोहि रही नख ते शिख लों, मृदु केसरि रंगकी सुंदरि सारी ।
भाल विशालमें लाल सों बिंदु, करैं पगमें घुँघुरू झनकारी ॥
रामै विलोकि रही रघुराज, विदेह लली तनहूं मन वारी ।
कै कुज अंक मयंक मनो लसै, सोनजुहीके निकुंज मँझारी ॥
शोच सकोच विमोच भयो सुख, दोहुँनके सरसान समाने ।
दोहुँनकी जुरी दीठि निशंक, मयंक दिनेश मनो दरशाने ॥
श्रीरघुराज भरे दृग लाज, हिये दोउ प्रेम पयोधि नहाने ।
दोऊ विचित्र छके छबिमें लिखे; चित्रसे जानकी राम सुहाने॥
दोऊ निमेषन नेवर जानिकै, नयननते करि दीन्ही विदाई ।
प्रीतिके पाशमें दोऊ फँसे, पदकंज दोऊके गहे थिरताई ॥
लाजको काज अकाज भयो, रघुराज उछाहकी भै अधिकाई ।
रामको भूलि गयो धनु भंग, सिया पहिरावन माल भुलाई ॥

अंगुलीसो गहि अंगुली कोमल, मंजु अली मुखसों मुसक्याई
मंजुल वाणी कही सुखसानी, सुनेसुक नयनन सैन चलाई
आई इतै पहिरावनको, जयमाल विशाल रसाल तुराई
सो पहिराय चलो रघुराज, सदा निरख्यो यह सुंदरताई
मंजुल युक्ति भरे सखी बैन, सुने सिय नेसुक नैन नवाई
नेसुकही सखि ओर लखी, मुसक्याइकै मंदहि मंद लजाई
मंदहिं मंद उभै करसों रघुराज, चितै जयमाल उठाई
वासवचापके बीच मनो, चपला चमकै घनश्याम निराई
चारिहु ओर लसै सखिमण्डल, मध्य विदेहलली छबि छाई
सामुहे श्रीरघुराज खडे दोउ, राजकुमार समीप सुहाई
मानहु श्वेत औ श्याम घटा ढिग, बीजुरीकी प्रगटी बहुताई
मध्यमें पूरण चन्द्र उदै भयो, चंद्रिका मंडल मंडि महाई
औसर जानि कही सहजा तहँ, येहो विदेहसुता सुनो मे
या छबि देखन तेरेई भाग्य, विरंचि बई विरची सुखदाई
श्रीरघुराजको आजु अहै बलि, तेरे समान न मैं जग हूँ
मेलो गरे जयमाल लली, रघुलालके हाल करौ कस दैं
आली गिरा सुनिकै रसशाली, चहै पहिरावनको जयमाले
सीय विचारै मनै मनहीमें परी, परिपूरण प्रेमके जाले
कोमल श्रीरघुराजके अंग,कठोर महा कुसुमानिकी माले
हाय कहूँ गडिजाय गरे, पछिताय रहौं हिय पाय कशाले
सोरठा–तहँ विलम्ब जिय जानि, मन्द मन्द बोले लष
अम्ब अनुग्रह खानि,बितत मुहूरत अति सुखद॥
सिय सुनि देवर बैन, सकुचि रची रति रामके।
लखि लषणै भरि नैन,द्रुत जयमाल उठाय कर॥
दई प्रभुहि पहिराय; विविध रंग जयमाल गल।
सो छबि कही न जाय,मर्कत गिरि मनु धनु ज्यो॥

सवैया।

जा क्षणमें मिथिलेश लली, जयमाल दई प्रभुको पहिराई।
देखन लागी मनोहर मूरति, नयन निमेष विशेष विहाई॥
श्रीरघुराज समाज सबै है, निहाल लखैं दुहुँको टकलाई।
श्यामघटा क्षण ज्योति छटा ज्यों,चटापटदीन्हींरुमालओढाई॥

दोहा-राम गले जयमाल लखि, भे सब लोग निहाल।
माच्यो जयजयकार तहँ, बार बार तिहि काल॥

छन्द हरिगीतिका।

सुर चढि विमानन विविध आनन जयति राम पुकारहीं।
अभिराम लखि सिय राम छबि सुरद्रुमप्रसून पवारहीं॥
भेरी बजावत सुयश गावत शीश नावत रामहीं।
सुरदार नाचहिं गतिन राचहिं हिय हुलास बढावहीं॥
छायो भुवन मण्डल विनोद विशोक देवसमाज है।
को कहि सकत यक सुख लह्यो जस सुख जनक महराजहै॥
मिथिलानगर नर नारि आनँद मगन अभिमत पायकै।
फूले फिरहिं चहुँ ओर चायन जगत दुख विसरायकै॥
तहँ यूथ यूथहिं नारि मिलि मिलि गीत मङ्गल गावहीं।
यक यकन धनु तोरन कथा पुनि पुनि बुलाय सुनावहीं॥
सब बात दीन बनाय विधि अस कहत शीश नवावहीं।
पुलकित शरीर अधीर तनु निरखहिं खरे सिय रामहीं॥
तहँ जनकपुर नर नारि प्रमुदित सुमिरि गणपति भारती।
चहुँ ओर ते सिय रामकी लागे उतारन आरती॥
कपूर कञ्चन थार धरि दधि दूब तन्दुल डारिकै।
सिय रामकी आरति उतारहिं दीठि दोष निवारिकै॥
कोटिन मदन मद कदन देखहिं राम वदन सुहावनो।

सुख सदन मानस फँदन दाड़िम रदन इन्दु लजावनो॥
दुख दुसह दारुण दरन सब सुख भरन सिय मुख हेरहीं।
रति रंभ गौरि गिरा गुमानहिं वारि दिय अस टेरहीं॥
चहुँ ओर चमकहिं आरती सिय राम बीच विराजहीं।
रवि शशि निकट लखि तारगण मनु भ्रमत जोरि समाजहीं॥
ह्वै रह्यो तहँ अति खैर भैर अनन्द सकल समाजमें।
यक छोडि हरि विमुखी नृपति जे विघ्नकारक काजमें॥
महिदेव वेद पढैं मढैं सुख स्वर उचार विधानते।
नभते झरति कुसुमावली विरदावली कवि गानते॥
मागध विदूषक वृन्द बन्दी ह्वै अनन्दी आयकै।
रघुकुल बिरद निमिकुल बिरद गावत समाज सुनायकै॥
अम्बर अवनि आसन दशौ विलस्यो सुयश जग छायकै।
दिग्गजन हरि गज गिरिन हर गिरि भर्यो भुवन बनायकै॥
युग युग युगल पञ्चक भुवन यक बार परम उछाह भो।
शंकरकोदण्ड दुखण्ड किय रघुनाथ सीय विवाह भो॥
मानी महिपति तुरत तमके तेग चमके पानिमें।
नहिं जके आपुस महँ बके सिय तके दीठि लुभानिमें॥
का भयो हर कोदण्ड खण्डे का परे जयमालके।
का भयो जनकसुता बरे नहिं मिटे आखर भालके॥
हमरे सुअक्ष प्रत्यक्ष देखत कौन कुँवारि विवाहिहैं।
लक्षण विपक्ष विपक्ष कारि रणसिंधुको अवगाहिहैं॥
अस कहि उछाहन साजि सनाहन बोलि वाहन पांसुही।
इक एक नरनाहन कहे मतिमंद आहन आशुही॥
अब का करहु आयुध गहहु जो चहहु कुँवारि छुडावनो।
वर वीर अहहु न बैठ रहहु न कहहु समर बचावनो॥

अस कहि उठे खल सकल भल गलबलकरत खलभल परो।
अनभल न आपन गुनत छलबल करन चहतिहि अवसरो॥
हल्ला सुनत नर नारि शंकित सकल बैन उचारहीं।
अब काह चाहत होन बात बनाय ब्रह्म बिगारहीं॥
ये दईमारे प्रथम हारे कहत बहुरि न लाजते।
इनको प्रयोजन कौन इत अब टरहिं मंगल काजते॥

दोहा--सुमति विमति बंदी युगल, बोले जनक बुलाय।
कुत्सित राजनको चरित, कहौ कौशिकहि जाय॥

चौपाई।

सुमति विमति बंदी दोउ आये। विश्वामित्रहि सकल सुनाये॥
मुनि सकोप बोले तब बानी। नृपन नगीच मीच मडरानी॥
कहौ अभागिन भूपन काहीं। हैहैं हव्य हुताशन माहीं॥
सुमति विमति दोउ तुरत सिधारे। सब भूपन कहँ वचन उचारे॥
सुनहु नरेश मुनीश निदेशा। गमनहु अपने अपने देशा॥
सुयश वीरता गर्व बडाई। धनुष उठावत दियो गवाँई॥
राजकुमार शंभु धनु तोडा। माधि समाज भूपन मदमोडा॥
सजहु समर हित अब किहि हेतू। वृथा करहु यमसदन निकेतू॥
नृपन वचन सुनि लषण रिसाने। फरकि उठे भुज नयन ललाने॥
दंतन दरत अधर लै श्वासू। बोलि सकत नहिं रघुपति त्रासू॥
अरुणौंहैं दृग ताकि तिरछौंहैं। दहत नृपन जनु बांकित भौंहैं॥
चहत मनाहि प्रभु शासन देहीं। क्षणमहँ देखि मोर बल लेहीं॥

दोहा--भस्म करौं क्षणमहँ नृपन्न, बढि बढि बहुत बतात।
अबै न देखे वीर मुख, चहकारे ऐंडात॥
चहकारे नट भाट के, जे आवत संग्राम।
ते भागत रण छोडि के, बांधि जात परिणाम॥

चौपाई ।

खर भर होत सखी डरपानी । राम लषण लखि सियमुसक्या
मधुकैटभ मुर भौम प्रचंडा । हिरण्यकशिपु कनकाक्ष उदं
सहे न जोर जासु भुजदंडा । तिन सन्मुख नृप करत घमं
सायुध सखी खडीं बढि आगे । कहहिं भूप का करत अभा
प्रथम हनब हमहीं हथियारन । समर कौन करि सकै निवार
डरैं नर्म सखि सिय मुसक्याती । कुपितलषणलखिलजिपाछि
प्रगटत लक्ष्मण कोप कराला । राम कह्यो हँसि वचन विशाल
अजा महिष खर लखि पंचानन । सुन्यो न कोप करत कहुँका
लखौ लषण कौतुक धारि धीरा । काह करत बढि नौबढ वी
राम वचन सुनि लषण लजाने ।लखण लगे महि मृदु मुसक्या
गगन गिरा भइ राजन काहीं । निज निज भवन भूप सब ज
जो कुचालि करिहैं यहि ठोरा । हनिहैं तिन्हैं यक्ष वरजो

दोहा—सुनि अकाशवाणी तहां, डरे भूप मतिमंद।
लैलैं निज निज साहनी, चले चुपहि तजि फन्द॥

चौपाई ।

भक्त भूप भल भाषण लागे । भले अभद्र भवनकहँ भा
लखि वीरता होति है हांसी । गे घर बल बुधि विक्रम ना
आये वदन दिखाय ललाई । गे गृह मुख लगाय कारि
धर्म छोडि जो बिनहिं विचारा । करत काज मतिमंद गँवा
यही दशा तिनकी हठि होती । जस इन भूपन भई उदोती
कोउ कह रण विचार कछु करते । लषण रोष पावकमहँ जर
चहे समर नृप बृथा अभागा । पन्नगारि सम होत न का
शशक न करत सिंह समताई । गज न होत खर देह बढा
शंभु विमुख नहिं संपति पावै । भजे विना हरि नहिं भ्रम जा

कोउ कह लोभिन लाज न होई । धर्म छोडि लह कीरति कोई ॥
यहि विधि साधु परस्पर भाखत । हरिपदपंकजमहँ चितराखत ॥
मिट्यो कोलाहल गे जब भूपा । माच्यो मंगल शोर अनूपा ॥

दोहा-इतै मयंक कला सखी, सियहि कह्यो मुसक्याय ।
परशि कंज पद राम के, चलहु भवन सुख छाय ॥

चौपाई ।

सुनि सखि वचन विदेह कुमारी नहिं परशाति पद पाणि पसारी ॥
ये पद गौतम तिय कहँ तारे । परशब उचित न जान हमारे ॥
पूरब भाउ होत पद परसे । यहि औसर मैं चहौं न उरसे ॥
मिथिला अवध महासुख होई । पूरब भाउ भये कहँ सोई ॥
यदपि नित्य सम्बन्ध हमारा । पै जिहि हेतु लीन अवतारा ॥
सो लीला किमि पूरण होई । सकी न भूमि भार हरि कोई ॥
अस विचारि परशाति पद नाहीं । रामजानि अस मन मुसक्याहीं ॥
पूर्व भावकी उपजी भीती । ताते करी अलौकिक प्रीती ॥
नैनन सैनन सों रघुराई । दई जानकिहि जान रजाई ॥
मनहीमन पद वंदन करिकै । साँवलि मूरति हिय मह धरिकै ॥
चली सीय जननी ढिग काहीं । गावत मंगल सखी सुहाहीं ॥

दोहा-जयमाला पहिराइकै, गई सयि रनिवास ।
राम लषण आवत भये, विश्वामित्रहि पास ॥

चौपाई ।

परे चरण महँ दोनो भाई । मुनि लीन्ह्यो निज अंक लगाई ॥
पीठि पोंछि शिर सूँघि सुखारी । बोले वचन महातपधारी ॥
जीवहु युग युग सुंदर जोरी । यहि विधि पुजवहु आसा मोरी ॥
कियो बंधु दोउ मोहिं सनाथा । देहुँ काह कछु है नहिं हाथा ॥

प्रभु शिरनाय कह्यो कर जोरी । नाथ कृपा कीरति भइ मोरी
यह सब भयो प्रसाद तुम्हारे । कृपा छोडि बल नाहिं हमा
तिहि अवसर विदेह तहँ आये । विश्वामित्र चरण शिरनाय
दीन अशीश मुनीश महीसै । रहहु मोदमहँ कोटि बरीसै
जोरि कमलकर कह्यो विदेहू । तुव प्रसाद मिटिगो संदेह
टूट्यो शंभु धनुष मुनिराया । राम लह्यो यश राउरि दाया
रही नाथ निमिकुल मर्यादा । सब सुख हेतु तुम्हार प्रसाद
अब आगे जस शासन देहू । करौं तौन विधि बिन संदे
दोहा—निमिकुल रघुकुलमहँ तुम्हीं, अहौ सयान प्रधान॥
तुम्हैं विदित गति भुवनकी, हमसब मनुज अयान॥

चौपाई।

जिहि विधि नाथ शिखापन होई । तिहि विधि हम करिहैं सब क
सुनत विदेह वचन सुखदाई । बोले विहँसि वचन मुनिरा
धर्म धुरंधर निमिकुल राऊ । त्रिभुवन विदित प्रताप प्रभा
तुम्हरी पुण्य सिद्धि सब काजा । उदित सुयश मानहुँ उडरा
जानहु सकल रीति मिथिलेशू । का हमसों अब लेहु निदे
तदपि उचित जस मोहि दिखाई । पूछे ते अब देत सुनाई
यह चरित्र शुभ मंगल काजा । नहिं जानत कोशल महराजा
लिखिदलविमलसकलसुतकरनी । सहितअशीशमोरिसुखभरनी
पठवहु चारि चारके हाथा । सुनत होइँ रघुवंश सनाथा
इतै करहु सब व्याह तयारी । तुम समान दोउ भूपतिभा
लै बरात आवैं नरनाहा । करैं उछाहित राम विवाह
रह्यो पिनाक अधीन विवाहू । मिटयो सकल दुख दारुणदा
दोहा—करहु जाय मिथिलेश अब, यथा वंश व्यवहार।
यथा वेदाविधि लोकाविधि, होइ सुखी संसार॥

चौपाई ।

लहै लोक अब लोचन लाहू । भरै भूरि भल भुवन उछाहू ॥
मुनिपतिवचन सुनत मिथिलेशू । मोदमग्न नहिं लेशकलेशू ॥
शीशनाय बोल्यो करजोरी । अब अभिलाष यही मुनिमोरी ॥
आयसु देउ तु पत्र लिखाऊँ । आशुहि अवधनगर पठवाऊँ ॥
व्याह समाज साज सजवाऊँ । भूसुर साधु सभ्य बुलवाऊँ ॥
सचिवन शासन सकल सुनाऊँ । विश्वकर्म कहँ बोलि पठाऊँ ॥
इतते अवध नगर पर्यंता । मारग शोधन करहु तुरंता ॥
सुनि विदेहके वचन सुहाये । विश्वामित्र कहे सुख पाये ॥
ऐसहि करहु महीप उदारा । कीन्ह्यो निज अनुरूप विचारा ॥
परमसुजान अहौ मिथिलेशू । का हम करहिं तुमहिं उपदेशू ॥
सुनि मुनि वचन भूप शिरनाई । बैठे राजमहलमहँ जाई ॥
शतानन्द कहँ लियो बुलाई । आनहु औरहु सचिव तुराई ॥

दोहा–राम लषण संयुत इतै, ऋषि सुखसिंधु नहाय ।
कीन्ह्यो वास निवास चलि, भये अस्त दिनराय ॥
कार्तिक शुदि एकादशी, भयो भंग भव चाप ।
रघुकुल कमल पतंग तहँ, प्रगट्यो प्रबल प्रताप ॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीरामस्वयंवरग्रंथे धनुर्भंग एकोनविंशः प्रबन्धः ॥ १९ ॥

दोहा–विश्वामित्र निदेश लहि, जनक जाय दर्बार ।
बोलि महाजन मंत्रि मुनि, सभ्य सुहृद सर्दार ॥

चौपाई ।

राजमहल महँ भई समाजा । सिंहासन बैठो महराजा ॥
शतानंद तिहि अवसर आये । उठि भूपति आसन बैठाये ॥

सचिव सुहृद सरदार सुहाये। राजकाज अधिकारिहु आये॥
प्रकृति महाजन पुरजन प्यारे। राज रजाय पाय पगु धारे॥
करि विदेह कहँ वंदन बैठे। मानहु सुधासिंधुमहँ पैठे॥
भूपति करि सबको सत्कारा। शतानंदसों वचन उचारा॥
ईश प्रताप ताप भइ दूरी। आप कृपा पति रहिगै पूरी॥
दशरथ कुँवर कियो धनु भंगा। जासु निछावरि अहै अनंगा॥
इहँ लगि सुधरिगयो सबकाजू। अब दीन्ह्यौं निदेश मुनिराजू॥
कोशलपुर पठवहु अब चारा। लिखिपत्रिका चरित यह सारा॥
लै बरात कौशल महराजा। आवहिं करन पुत्रकर काजा॥
कीरति विभव प्रताप बडाई। दशरथकी नहिं लोक लुकाई॥

दोहा—ऐहैं सहित समाज इत, लै बरात अवधेश।
हँसी हमारी होइ नहिं, सोई मोर निदेश॥

चौपाई।

भुवन विदित निमिकुल मर्यादा। प्रगट सबन मम रोष प्रसादा॥
मुनि आयसु मन्त्रिन कहँ देहू। करहिं काज सब विन सन्देहू॥
उत वसिष्ठ इतआप सुजाना। सकल भाँतिहौ उभय समाना॥
नेंत करन की है गति तोरी। जामें जाय बात नहिं मोरी॥
सो सब करहु उचित मुनिराई। लेहु विश्वकर्महि बुलवाई॥
विरचहु मंडप लोक उजागर। बोलि शिल्पिवर रचना नागर॥
करु पुर अमरावती समाना। यथायोग्य सब वस्तु विधाना॥
बाँधहु थल थल तुङ्ग निसाना। द्वार द्वार तोरण विधिनाना॥
राजमार्ग कीजे विस्तारा। सब थल रहै सुगंध प्रचारा॥
हेम कलश कल कोट कँगूरे। करु मंदिर चंदिर सम रूरे॥
कमला तीर होइ जनवासा। रचहु तहां बहु विमल अवासा॥
संचित कीजै वस्तु अतूलैं। जामें अवध अवधपति भूलैं॥

दोहा—और कहाँ लगि मैं कहौं, तुम्हें मुनीश बुझाय।
लोक वेद जानत सकल, सब को देहु रजाय॥

चौपाई।

शतानंद बोले तब वानी। धर्म धुरंधर भूप विज्ञानी॥
तुव प्रताप सपरी सब काजा। यश दिगंत फैली महराजा॥
अस कहि शतानंद सुख छायो। राजकाज मंदिरमहँ आयो॥
विश्वकर्म आवाहन कियऊ। मुनितप बल प्रगटत सो भयऊ॥
तिहि मिथिलेश निदेश सुनायो। शासनमानि सोउ शिर नायो॥
पृथक पृथक पुनि वस्तुविधाना। कह्यो विश्वकर्माहि मतिमाना॥
राम सिया व्याहनके योगू। मंडप रचहु दिव्य सब भोगू॥
द्वार बजार कोट गृह नाना। अमरावति सम करु निरमाना॥
घाट बाट के ठाट ठटावो। बीथिन बीथिन बाग बनावो॥
पुनि सब मन्त्रिन तुरत बुलाई। विश्वकर्म आधीन कराई॥
निपुण शिल्पि वर जे महि केरे। आये सुनि सुनि व्याह घनेरे॥
ते विश्वकर्मा के अनुसारा। दीन्ह्यो विरति सबन अधिकारा॥
दोहा—अपने अपने काम में, लागे सकल तुराय।
विश्वकर्म विरचन लग्यो, मंडप चित्त लगाय॥

चौपाई।

शतानन्द एकान्तहि जाई। बैठ्यो सुमिरि सीय प्रभुताई॥
जानत सीय प्रभाव मुनीशा। वन्दन कियो नाय पद शीशा॥
स्वामिनि उपर कृपा करु मोरे। निमिकुल लाज हाथ अब तोरे॥
अनुभवमहँ सिय कह्यो मुनीशै। सिद्धि सुयश संपाति विसवीशै॥
आठौ सिद्धि नवो निधि काहीं। दियो निदेश बोलि मन माहीं॥
पूरण करहु धान्य धन जाई। कौनिउ वस्तु न न्यून दिखाई॥
सिधि निधि ऋधि सिय शासन पाई। परिपूरण प्रगटीं प्रभुताई॥

राज रजाय शिलिपवर धाये। अवध प्रयंत सुपंथ बनाये
योजन योजनमहँ हित वासा। विरचे विविध विलास निवासा
नदी पुलिन बिच पुलन बँधाये। मारग सम बिस्तार करायें
खोदि अवनि वन सघन कटाई। वसन बरात वास बनवाई
चारि निवास मुख्य बनवाये। तहँ बजार. विस्तार करायें

दोहा—रही न कौनिउ वस्तुकी, चाहत की कछु हानि।
सकल संपदा पूर तहँ, अवध सरिस सुखदानि

चौपाई।

वापी कूप तडाग अनेका। निर्जल महि विरचे सविवेका
दोउ दिशि पंथ लगाये वृक्षा। तुक्ष रुक्ष नहिं गुक्षन स्वक्षा
कहहिं शिलिपवर आपुसमाहीं। अस मिथिलेश निदेश कराहीं
जबते तजहिं अवध अवधेशा। तबते जिहि जिहि बसहिं प्रदेशा
तहँ तहँ अवध सरिस सुख होई। रचै न न्यूनाशिलिप बर कोई
चारु चारि थल मुख्य निवासा। और पंथमहँ सकल सुपासा
पृथक पृथक सबके गृह सोहे। यथायोग जिनके जस जोहे
अन्नागार वाजि गजशाला। राजमहल ढिग बने विशाला
यहि विधि सकलपंथ सजवायो। पुनि जनवास निवास बनायो
राज निवास विलास अनूपा। रहैं सुखी जहँ कोशल भूपा
सभा शयनके अयन अनेका। पूजन मज्जन गृह सविवेका
पृथक पृथक सब कर्म अगारा। बसैं सुभट मंत्री सरदारा

दोहा—बन्यो मध्य मंदिर महा, राजसभा विस्तार।
कमला सरिके तीर में, मनुपुर द्वितिय अपार॥

चौपाई।

गजशाला बहु वाजिनशाला। रथ ऊँटन के भवन विशाला
धनागार बहु अन्न अगारा। विविध भाँति विरचे सुखसारा

बाग तडाग सुहावन लागे । जलकी नहर सकल महिभागे ॥
विविध रंगके फूल लगाये । हौद फटिकके अति छबि छाये ॥
थल थल कंचन लगे फुहारा । कोट चहूंकित तुंग दुआरा ॥
कलित हेम अतिसुभटकपाटा। हाटक कलश कँगूरन ठाटा ॥
विविध भाँतिके तने विताना ।झालरि झूलि झलक विधिनाना ॥
कनकदंड लगि तुङ्ग महाना । फहरहिं चंपक वरण निशाना ॥
कमला तीर सघन अमराई । जहँ वसंतऋतु रहत सदाई ॥
कीन तहां जनवास विचारा । विरचे थल थल विविध अगारा ॥
रचन लगे रचना यहि भाँती । सकल शिलिपवर सुघर सुजाती ॥
विश्वकर्म सब शोधन करतो । जहँ जस उचित सुछाबितस धरतो॥

दोहा--मिथिला ते अरु अवध लगि, दियो पंथ बनवाय ।
तिमिजनवास विलास वर, सकल सुपास रचाय ॥

चौपाई ।

जब दै शतानंदको शासन । बैठे विमल विदेह सिंहासन ॥
सुभगाक्षर लेखक विद्वाना । राज प्रशस्ति जाहि सब ज्ञाना ॥
तबहिं महीप समीप बुलायो । कनक विचित्र पत्र बनवायो ॥
दे सब कारज करन निदेशा । लग्यो लिखावन पत्र नरेशा ॥
कह्यो विनोदित वचन विदेहू । पंडित मोर वचन सुनि लेहू ॥
सावधान है थिर माति करिकै । लिखहु पत्र ललिताक्षर भरिकै ॥
पठवन चहौं पत्र अवधेशै । बुध समाज बहु कोशल देशै ॥
अक्षरलिपि प्रशस्ति अरु अर्था । होइ हँसी नहिं देखत व्यर्था ॥
याहि विधि लिखहु विप्र विज्ञानी । दशरथ भूप विज्ञ गुणखानी ॥
निमिकुल कमल दिवाकरबैना । सुनि पंडित पायो अति चैना ॥
कह्यो जोरि कर यथा निदेशू । लिखिहौं तिहि विधि ताजि अंदेशू॥
कोशलपाल यदपि बड राजा । पै इत नहिं कछु न्यून समाजा ॥

दोहा--अस कहि लाग्यो लिखन सो, दशरथ भूपति पत्र।
कनक कलित कागज ललित, करि मानस एकत्र॥

अथ पत्रिका ।

श्रीश्रीश्रीश्रीश्री सकलभूमंडलाखंडलविधिकमंडलनिसा
सरितवत् दिग्गज,गंडमंडल-कुंडलाकार सुयशधारक, धर्मधु
धरा–धर्मप्रचारक, रणधीर, वीरशिरोमणि, हंसवंशावतंश, रघुकु
कमल विमल-दिवामणि, प्रताप-ताप-तापित दिगंन्तदुरितदु
सब काल दिग्पाल जालमुकुटमणि-नीराजित-चरण, चा
नखचंद्र चक्रवर्ती चक्रचूडामणि महिपाल माल मंडित, अखं
अवनि उद्दंड, महाराजाधिराज, राजराज-राजित अवध-अ
दशरथजू चरनसमीप महीपमंडल मौलिमणि मंडितचरन, स
सुखढरन, भक्तजन-कंठाभरन, उत्तमाचरन, चारि-वर्ण-धर्म
करन, ज्ञान विज्ञानानंद-संदोहभरन, वेदवेदांतोच्चरन वैराग्य
प्रचंड-चंडकर-किरन क्षरण निमिकुल कुमुद कलानिधि महारा
धिराज नरेन्द्रशिरोमणि सीरध्वज करकमल कलित सानंदन अ
बंदन विलसै, रावरो कृपा पारावार धार बार बार पाय अ
संसारजनित दुख संहार भये, हे महोदार, अवध-भूभरतार, अ
मुनि कुशिक-कुमार संग परम सुकुमार, मारहू के मदमार,
धराधार, बलागार, श्यामल गौराकार, मनोहार, रघु
सरदार, रावरे कुमार नर नारि दुख विपिन उजा
ताडुका संहारि, कौशिक मख करि रखवारि, गौ
गेहनि उधारि, जनकपुर पगु धारि, रुचिर रचना निहा
मम पन विचारि, रंगभूमि सिधारि, सकल महीपनको मदगा
दिगन्त यश वितान विस्तारि, हिय न हारि, मोहिं शोक सिन्धु
उबारि, तमारिकुल कीरति बगारि, पंकज पाणि पसारि, पुरा

पिनाक तिनुकाहि सो तोरि दये । मो हिय सुख न समात, क्षण क्षण उछाह उदधि उमगात. पुरजन परिजन भ्रात अभिलाष यों जनात, रघुकुलजलजात रवि दरश ह्वै जात, सहित चतुरंगिनी सुभट विख्यात जनकपुर प्रविसात, लग्न नगिचात, ताते मानस त्वरात, पत्र यह जात कृपाबसात, तात लै बरात वेगहिं पगु धारिये हरिप्रबोधिन्यां निशानने ॥

सोरठा–यहि विधि पत्र लिखाय, चतुर चारि चारण दियो ।
तरल तुरंग चढाय, पठयो अवध विदेह नृप ॥

छन्द चौबोला ।

चारौ चार चतुर चित चायल लै चीठी चटकीले ।
चले चटक चितवन के चोपी दशरथ भूप रँगीले ॥
बहुरि पुकारि कह्यो मिथिलापति कह्यो प्रणाम हमारो ।
कौशलनाथहि कह्यो बुझाय तुराय नाथ पगु धारो ॥
करि प्रणाम धावन सुख छावन कटि फेटो खत कीन्हे ।
चंचल चले चटक वाजी चढि अवध पंथ गहि लीन्हे ॥
लग्यो काम जहँ तहँ मग शोधन तहँ तहँ किये पुकारा ।
करहु शीघ्रता सकल शिलिपवर शासन जनक भुवारा ॥
लै अधिकारी कहैं शिल्प सब सिद्धि सकल यह काजा ।
जब चाहैं तब पगु धारैं इत लै बरात महराजा ॥
यहि विधि देखत कहत चार ते जात तुरङ्ग धवाये ॥
दिवस द्वैक महँ चले दिवस निशि कौशलपुर नियराये ।
मिथिला ते अरु कौशलपुर लगि भोथल नगर समाना।
चंदिर सम अति सुंदर मंदिर थलथल भे निरमाना ॥
युग योजन ते लखे अवधपुर महल अनेक उतंगा ।
श्वेत शरद जलधर समान वर मनहुँ हिमाचल शृङ्गा॥

करि प्रणाम धावन घोरनको अतिशय चपल धवाईं।
सरयू सलिल पियायो वाजिन पहुँचि अवध अमराईं॥
लाग बाग चहुँ ओर नगर के द्वादश योजन माहीं।
लिखनाचित्र लायकविचित्र अति चितऊबन कहुँ नाहीं॥
कनक कोट अति मोट शैल सम गुरज सुरज सम सोहैं।
परिखा पूरण सलिल विशद अति देवहु दुर्गम जोहैं॥
त्रय त्रय योजन पर दरवाजे राजे तुंग अपारा।
कनक कँगूरे भ्राजन रूरे पूरे रतन कतारा॥
चढीं तोप रिपु सैन्य लोप कर वोप आरसी कीनी।
सावधान ठाढे रक्षक सब तक्षक तेजहि छीनी॥
मंदिर विविध बने देवन के पुर बाहर प्रति बागे।
सडकस्वच्छ दोउ दिशन वृक्षयुत गच्छत घामन लागे॥
फबैं फूल फल सकल ऋतुन के शाखा भूपर लोरैं।
वन विचित्र नंदनहुँ चित्ररथ निज महिमा मद मोरैं॥
केकी कीर कपोत कोकिलन कलरव चहुँकित छायो।
सीर समीर धीरअति सुरभित बहत सदा मन भायो॥
पहुँचि अवध उपवन विदेह के धावन सरयु नहाने।
दै चंदन करिकै रविवंदन पहिरे वसन सुहाने॥
करिकै कछु भोजन मन मोजन करि वाजिन श्रम दूरी।
साजु साजि पुनि चढे तुरंगन चले मोद भरि भूरी॥
कनकदंड बहु रत्न खचित कर लघु लघु लगे पताके।
नाम लिख्यो तिन महँ विदेह कर सूचक धावन ताके॥
राजमहलकी डगर बताओ पूछत पथिकन काहीं।
निमिकुल नाथ निशान निहारत पथिक खडेहै जाहीं॥
कुशल पूछते बहु विदेहकी कहैं सहित उत्साहू।

सूधी राजभवन कहँ लागी चले पंथ यह जाहू ॥
यहिविधि पूछत जनक चार तहँ गये नगर दरवाजे ।
जनक नरेश निशान निहारत द्वारपाल छबि छाजे ॥
किये न चारिहु चारण वारण कुशल उचारण करिकै ।
जानि जनकके जान दिये तिन बडे जान मुद भरिकै ॥
अवधनगर कीन्हे प्रवेशते मिथिलापतिके धावन ।
जात त्वरात चले यद्यपि ते निरखत नगर सुहावन ॥

दोहा—जा दिन दूत विदेहके, कीन्हें नगर प्रवेश ।
दशरथ कौसल्यालखे, ता दिन शकुन अशेश ॥

छन्द चौबोला ।

आकस्मात प्रसन्न भयो मन उर उपज्यो उत्साहू ।
जानि परत अस कहन चहत कोउ होत राम करव्याहू॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी ।
वाम अंग फर्कत निरखैं निज मिटिगै मनहिं गलानी ॥
दक्षिण भ्रुकुटि नयन भुज फर्कत दशरथके तिहिकाला।
तैसहि भरत शत्रुसूदनके सूचत सुख अब हाला ॥
नीलकंठ पक्षी गृह आयो लगीं विमल दश आशा ॥
वासर परम सुहावन लागत कोमल भानु प्रकाशा ।
लग्यो बहन मंद मारुत तहँ स्रवै सुरभि पयधारा ।
नभते भई कुसुमकी वर्षा बाजन लगे नगारा ॥
खसैं फूल देवन प्रतिमा ते क्षेमकरी थहरानी ।
बोलि उठे विहंग बहु रंगन ताति कुरंग दरशानी ॥
लखिशुभसूचन शकुनकहहिंसबजुरिजुरिजनन समाजू।
कौन अनूपम आनँद आवत अवधनगरमहँ आजू ॥
राम विरह व्याकुल कौसल्या बोलि सुमित्रहि कहेऊ।

जबते मुनि लैगे लालनको तबते सुधि नहिं लहेऊ॥
लषण मातु बोली प्रबोधि तिहि आजु खबरि कछु ऐहै।
शकुन होत सिगरे सुखदायक यह निर्फल नहिं जैहै॥
बाकी रह्यो यामभरि वासर तब अजनन्दन भूपा।
बैठ्यो आय सभा सिंहासन भूषण वसन अनूपा॥
पुरजन परिजन सज्जन सिगरे बैठ राज दरबारे।
सुहृद सखा सरदार सचिव सब जगतीपतिहि जुहारे॥
तहँ सुयज्ञ जावालि कश्यपहु मार्कंडेय पुराने।
वामदेव अरु मुनि वसिष्ठ तहँ आये सभा सुजाने॥
उठि भूपति प्रणाम तिन कीन्हे बर आसन बैठाये।
जोरि पाणि पंकज विनीत ह्वै सादर वचन सुनाये॥
आज शकुन बहु लखे नाथ हम जानिपरै फल नाहीं।
चढे स्वपनमहँ श्वेत शैलपर देखे इन्दु तहांहीं।
कछुक काललगिमुनिविचारि तहँ भाष्योअवधभुवाले॥
लै चीठी अतिशय मन मीठी खबरि कही कोउ हाले।
यहि विधि करत वसिष्ठ भूपके सभा सुखित संबादा॥
आये चारि चारु मिथिलाते राजद्वार मर्यादा॥
दशरथ द्वारपाल देखे तिन छरी विदेह निशानी।
सादर कुशल पूछि मिथिलाकी बैठाये सन्मानी॥
तुरत जाय अवधेश सभामहँ ऐसे वचन सुनाये।
धावन चारि पत्र लै आये श्रीमिथिलेश पठाये॥
सुनि मिथिलेश पत्रकी आविनि लहि नृप मोद महाई।
कह्यो द्वारपालहि विदेहके ल्यावहु दूत लिवाई॥
द्वारपाल धाये तुरंत तहँ कहे जाय तिनपाहीं।
भूप शिरोमणि तुमहिं बुलायो चलिय सभा सुख माहीं॥

ते विदेहके धावन पावन पाये परम अनन्दा ।
निरखि अवधपुर राजभवन सब करत विचार सुछन्दा ॥
धौं अलकावति धौं अमरावति ब्रह्मसदन धौं आये ।
करिकै कृपा विकुण्ठ धनी यह सरिस विकुंठ दिखाये ॥
धन्य अवधपुर धनि सरयू सरि धनि दशरथ महराजा ।
धन्य धन्य रघुकुल जगपावन जहँ प्रगटे रघुराजा ॥

दोहा--अस विचारि ते चार वर, चार चतुर चित लाय ।
चढे चन्द्रशाला चटक, चहुँकित चितवत चाय ॥

छंद चौबोला ।

सभा द्वार पहुँचे जब धावन दशरथ सभा निहारे ।
सिंहासनासीन कोशलपति सुनासीर मदगारे ॥
लोकपाल सम भूमिपाल सब बैठे उभय कतारे ॥
ढालन सों ढालन करि चालन करवालन कर धारे ॥
बैठे रघुवंशी रिपुध्वंशी जगत प्रशंसी प्यारे ।
कलँगी सो कलँगी विलँगी नहिं सान शूरतावारे ॥
अचल अचल इव मौन बैठ भट प्रभुमुख रुखहिनिहारैं ।
इष्टदेव सम रघुकुलनायक अपने मनहिं विचारैं ॥
छाजत छत्र क्षपाकर शिरपर प्रगटत परम प्रकाशा ।
चारि चमर चालत परिचारक खडे चारिहूँ आशा ॥
आतपत्र दुहुँ ओर लसत युग रवि शशि वदन बनाये ।
राम पिता पद सेवन हित मनु दिनकर निशिकर आये॥
बंदी वदत खडे बिरुदावलि नचत अप्सरा भावैं ।
गान करहिं गंधर्व गर्व भरि बाजन सर्व बजावैं ॥
कनक छरी बहु रत्न भरी कर धरे खरे प्रतिहारा ।
निरखत नयन नरेश वदन वर कारज करत इशारा॥

बैठ वसिष्ठ कनकसिंहासन भूप दाहिने ओरा।
मार्कंडेय आदि मुनिनायक राजत तेज अथोरा॥
सन्मुखखडो सुमन्त सचिववर नृपशासन अभिलाखी।
भ्रुकुटिविलास बिचारि काजसब करत राजरुखराखी॥
यहि विधि मिथिलाधिपके धावन पावन भूप निहारे।
धर्मधुरंधर अवध अधीशै धरामरेन्द्र विचारे॥
कनक मुद्र कछु रत्न लिये कर यथा राज मर्यादा।
चारों चतुर चार चालि सन्मुख भरे भूरि अह्लादा॥
पुलकित तनु करिकै प्रणाम सब दंड. सरिस महिमाहीं।
दीन्हे नजरि निछावरि कीन्हें कोशलनायक काहीं॥
जोरि पाणि पंकज पुनि बोले अतिशय मंजुल वानी।
महाराज मिथिलाधिराज इत पठये हमहिं विज्ञानी॥
कह्यो रावरेको डराव भरि मिथिला राव जुहारा।
बहुरि अनंदन वंदन भाष्यो भानु वंश भरतारा॥
कह्यो कुशल पूँछनको बहुविधि अपनी कुशलसुनावन
दीन्ह्यो बहुरि विचित्र पत्र यह रघुकुल मोद बढावन॥
अस कहि चतुर दारलै खत कर धर्‍यो. चरणके आगे।
ठाढे रहे मौन चारौ चर अवलोकन अनुरागे॥
धावन जानि विदेह भूपके राज राज रघुराजा।
मोद महोदधि मग्न महीपति भये समेत समाजा॥
लै विदेहको छिप्र पत्र कर दशरथ शीश लगाये।
मानहुँ मिले विदेह आय इत अस आनँद उर छाये
कह्यो राजमणि पुनि दूतन सों संयुत सकल समाजा।
अहै कुशल कुलसहितसहानुज श्रीमिथिला महराजा॥
लही खबरि बीते बहु वासर नहिं पत्रिका पठाई।

प्राणहुँते प्रिय मित्र हमारे कौनि चूक चित लाई ॥
सत्य कहहु धावन विदेहके सबविधि कुशल विदेहू ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य योग विद राखत सरस सनेहू ॥
दूत गहे पुनि पद वसिष्ठके बोले वचन सुखारे ।
कियो दंड सम प्रणत आपको स्वामी जनक हमारे ॥
दियो अशीश मुनीश मोद भरि पूँछी जनक भलाई।
दूत कह्यो मुनि कृपा रावरी सब विधिते कुशलाई ॥
दोहा–अजनंदन पूँछो बहुरि, ये हो दूत सुजान ।
तुम जानौ कछु खबरि मुनि, कौशिक किहि सुस्थान ॥

चौपाई ।

दूत जोरि कर कियो बखाना । यह कस पूछहु भूप प्रधाना ॥
यह वृत्तांत विदित संसारा । देखिय रवि कहँ दीप उज्यारा ॥
जो ताड़का विश्व उत्पातिनि । मानहु महाकालकी नातिनि ॥
पुनि सुबाहु मारीच प्रचण्डा । दशकंधरके भट बरिबंडा ॥
विध्वंसक कौशिक मख केरे । तिनको जौन हाल सब हेरे ॥
कहत मोहिं लागत अति लाजा । हाँसी कर पूछ्यो महराजा ॥
तुमहिं विदित कस नाथन होई । नहिं जानत अस जग नहिं कोई॥
जबते राउर युगुल कुमारा । लैगे मांगि मुनीश उदारा ॥
तबते जे चरित्र तिन कीन्हे । ते जाहिर जग का कहि दीन्हे ॥
दूतन वचन सुनत अवधेशा । कह्यो आनि आनन्द अँदेशा ॥
जबते मुनि लैगये कुमारे । मख राखन हित प्राणपियारे ॥
तबते दूत खबरि नहिं पाई । किहिविधि विपिन बसे दोउ भाई ॥
दोहा–सुनत दूत भूपति वचन, कहे वचन मुसक्याय ।
खत बाँचे मिथिलेश का, सिगरो परी जनाय ॥

चौपाई ।

दूत वचन सुनि अवध भुआला । लग्यो पत्र बाँचन तिहि काल
जब बाँच्यो मिथिलेश जुहारा । उभय पाणि पंकज शिर धा
सकल पत्रिका जब नृप बांची । जानी राम लषण सुधि साँची
हर्षे विवश कछु बोलि न आयो । तनुपुलकावलिदृगजलछायो
षट मीठी चीठीमहँ देखी । मान्यो ईश्वर कृपा विशेषी
प्रथम भयो ताड़का संहारा । मुनि मख राखि निशाचर मा
तीजे गौतम नारि उधारा । चौथे जनकनगर पगु धा
पंचयो शंभु चाप कर भंगा । सीता व्याह छठौ रसरंगा
ये खतमहँ षट लिखी मिठाई । बांचि भूप रहिगे सुख छा
करत विचार बाल वय थोरी । किहि विधि किय ऐसी वर जो
किहि विधि लाल ताड़का मारे । डरे न ताके वदन बगा
द्वादश वर्ष बाल पै सींचा । किमि मारे सुबाहु मारी

दोहा—जानि परै नहिं कौन विधि, तारी शिशु मुनिनारि ।
विश्वामित्र प्रभाव यह, और न परै विचारि ॥

सवैया ।

छोहरा द्वादश वर्षको मेरो, सुकोमल कौलहुते कर
तापर कोई रह्यो घरको नहिं, एक रह्यो लषणै शिशु सा
शंभुकोदंड प्रचण्ड बडो, न उठाय सक्यौ रँगभूमिमें को
श्रीरघुराज कियो किमिभंग, जे दूतहू आये कहैं साति वो

दोहा—बालकको न बडापनो, विश्वामित्र प्रभाव ।
मेरे सुतके करन सों, कियो सकल मुनिराव ॥
रामविवाह विदेह कुल, भयो बडो उत्साह ।
ताते कहौं वसिष्ठसों, चलहु आशु मुनिनाह ॥

चौपाई ।

अस गुणि लै खत उठ्यो महीशा । धर्यो वसिष्ठ चरणमहँ शीशा ॥
विधि सुत पाणि पत्रिका दीन्हीं । जोरि कञ्ज कर विनती कीन्हीं ॥
यह सब नाथ तुम्हारी दाया । रंगभूमि रघुपति यश पाया ॥
बांचिय खत विदेहकर आयो । तुव प्रताप मम शिशु यश पायो ॥
लै खत पुलकि मुनीशहु बाँचे । लहि सुखसिन्धु राम रति राँचे ॥
प्रेममग्न कछु बोलि न आया । जस तसकै बोले मुनिराया ॥
धन्य धरा तुम दशरथ राऊ । जासु राम सुत प्रगट प्रभाऊ ॥
भये न हैं नहिं होवन हारे । तुम सम भूप भानुकुलवारे ॥
अब दूसर नहिं करहु विचारा । तिरहुत चलहु बजाय नगारा ॥
राजसमाज समाज दराजा । लै बरात गमनहु महराजा ॥
काल्हि सुदिन सुन्दर शुभ योगा । सजन बरातहि देहु नियोगा ॥
दशरथ कह्यो न मैं कछु जानों । आप रजाय सिद्ध सब मानों ॥

दोहा--सिगरे सचिवन बोलि अब, दीजै नाथ निदेश ।
उचित सकल उपदेश करि, पूजहु गौरिगणेश ॥

चौपाई ।

अस कहि गुरु पदपंकज वंदी । बैठ्यो सिंहासनहिं अनन्दी ॥
महामोद मण्डित महराजा । निरखि भई सब सुखित समाजा ॥
पत्र विदेह सुनन अभिलाषे । सचिव सुमन्त जोरि कर भाषे ॥
दोउ मूरति मंगल महराजा । उत मिथिला इत अवध दराजा ॥
मंगलमूल मोदकी खानी । परै विदेह पत्र पहिंचानी ॥
सुनन योग जो होइ हमारे । समाचार सुनि होइँ सुखारे ॥
सुनत सचिव विनती नरनाथा । दियो विदेह पत्र तिहि हाथा ॥
कह्यो सचिवदल बाँचि सुनावहु । सकल समाज महासुख छावहु ॥

तब सुमन्तदल बाँचन लाग्यो। सकल समाज सुनन अनुरा
राम लषणकी सुनि प्रभुताई। बुधि विक्रम वीरता बढ़ा
सकल सभासद भये सुखारे। नयनन आनँद आँसु पना
भे रोमाञ्चित सबन शरीरा। कहहिं जयतिलक्ष्मण रघुबी

दोहा–फैलत फैलत बात सो, फैली पुरपर्यंत।
इक एकन पूँछन लगे, नर नारी विहसंत॥

चौपाई।

राम विवाह सुने तुम काना। पठयो पत्र विदेह सुजा
सो कह हमहुँ सुनी यहि भाँती। ईश करै द्रुत होहिं बरा
यहि विधि इक एकन लगिकाना। पूँछहिं प्रजा न मोद समा
पूँछत पूँछत बगरी बाता। राम विवाह उछाह अघा
खेलत रह सरयूके तीरा। युगल बंधु लै बालक भी
भरत शत्रुहन सखन पठावैं। प्रथमहिं आवैं ते जित जा
एक सखा तब पत्र जनायो। खबरि सहित पुर ते लै आ
सुनत खबरि धाये दोउ भाई। राजसमाज पिता ढिग आ
करि वन्दन अतिशय अतुराने। लटपट अक्षर वचन बखा
पिता विदेह पत्र किमि आयो। सुनन हेतु हमरो चितचा
अबहीं देहु मँगाय सुनाई। कौन देश हमरे दोउ भा
कहाँ विदेह दूत जे आये। तिनसे मिलब हमहुँ सुख

दोहा–सुनत कुमारनके वचन, दीन्ह्यो पत्र मँगाय।
कह्यो जाय रनिवासमें, दीजै लाल सुनाय॥

चौपाई।

पावत पत्र त्वरा उठि आई। बाँचन लगे खोलि दोउ भाई
बाँचि सकल मिथिलापति पाती। पुलके युगल बंधु सुखमाती

पिता पाणि गहि बोले बाता । तात चलबहाठि हमहुँ बराता ॥
जनक जनकपुर कब पगधरिहौ।राम लषण लखि कबसुख भरिहौ॥
नृप हँसिकह चलिहौतुम लाला । तीन बंधु तुमहीं साहिबाला ॥
कह वसिष्ठ उत गये जनैहैं । साहिबाला धौ दूलह ह्वैहैं ॥
मुनिहि नौमि नृप दूत बुलाई । बोले वयन नयन जल छाई ॥
भैया साति साति देहु बताई । निज नयनन देखे दोउ भाई ॥
सपदि लिखी मिथिलापति पाती । सो लखि मोरि जुडानी छाती ॥
कियो जनक भूपति व्यवहारा । निज कुमार सम गुन्यो कुमारा ॥
पै नहिं आवत मन विश्वासू । जस जग बालक सुयश प्रकासू ॥
होब विवाह सनातन धर्मा । अचरज लागत सुनि शिशु कर्मा॥

दोहा–ताते मिथिलानाथके, धावन परम सुजान ।
सत्य सत्य वृत्तांत सब, मोसों करहु बखान ॥

कवित्त ।

डरत हुतो जो भौन प्रेत परछाहीं जानि, ताडुका भयंकरी सो कौनविधि मारचो है । जात जो सहमि सुनि राक्षस किहानी कान, मुनि मख राखि सो निशाचर सँहारचो है ॥ फाटिक फरश खेले कबहूँ न नारि कढी, गौत्तमकी गेहनी सो शिलाते निकारचो है । भनै रघुराज साँची भाषौ तिरहूँत दूत, भूतपति धनु मेरो पूत तोरिडारचो है ॥ पूरब कहोजु कैसे जोहि जान्यो मिथिलेश, काबि धौं जनायो है कावित्त पढि दोहरा । कैसे रंगभूमि जाय नेक ना डराय मन, महीके महीपनको मोरचो कैसे मोहरा । भनै रघुराज दूत लागत अचर्ज मोहिं, तोरिबो पिनाकीको पिनाक सुने शोहरा । जनक उछाह्यो व्याह छोटी छमाछोहरीको, कौशिक गये जो लै हमारो छोटो छोहरा ।

दोहा–अवध भूपके वचनसुनि, अति विस्मय उर आनि ।
जोरि कंजकर दूत दोउ, बोले मंजुल बानि ॥

कवित्त ।

महाराज सुनहु महीपमणि रावरेके, डावरेमें जौन एक साँवरो कुम
है । तोरचो शंभुधनुष सरोष रंगभूमि मध्य, मोरचो महिपा
नको मद बेशुमार है ॥ रघुराज सकल समाजके निहारतही, मि
लाधिराजै लियो प्रणते उबार है । पूरण प्रताप तीनो भुवन प्रक
कीन्ह्यो, कैसे करें एक मुख सुयश उचार है ॥ मारे ताड़क
जाको देवहू डराते हुते, गयो पंथहीमें परि तासु भर भेटा
राखि ऋतु कौशिककी साखि जग मारे दुष्ट, लावनको कै
बाज झरपेटा है ॥ रघुराज राजमणि तारचो नारि गौतम
रंगभूमि भूपन खलन खरखेटा है । दीपक लै पाणिमें पतं
परेखें कौन, विश्वमें विदित आपहीको बरबेटा है ॥

दोहा–तुमहिं लग्यो अचरज सुनत, सो साति अवधभुवार ।
दीप करत उजियार घर, नीचे रहत अँध्यार ॥
धन्य धन्य तुम अवधपति, को नृप आप समान ।
जिनके पूत सुपूत दोउ, राम लषण बलवान ॥

चौपाई ।

चलहु नाथ अब सहित बराता । देखहु पूत सुपूत विख्याता ।
मंत्री बंधु सुभट सरदारा । चलै संग सब सैन्य अपारा ।
सुनि दूतनके वचन नरेशा । कह्यो वचन करि प्रेम विशेशा ।
तुम नीके निज नयन निहारे । तनुते कुशल कुमार हमारे ।
जबते गये लषण रघुराई । तबते आज साँचि सुधि पाई ।
नृप कह दोउ मुनि मुहिं अनुकूला । सोइ मोकहँ मुद मंगलमूला ।

दूतन कह्यो कुशल दोउ भाई। उन्हैं देखि अब कोउ न दिखाई॥
मोहिं विदेह नरेश बुलायो। सो सुनि अति आँनद उर आयो॥
हैं विदेहके सकल कुमारा। उनहींको सब विभव हमारा॥
नहिं कौशल मिथिला कर भेदू। जस विदेह वर्णत विधि वेदू॥
आज करौ इत रैन निवासा। मैं चलिहौं रवि होत प्रकासा॥
पुनि अवधेश सुमंत बुलाये। हरे कानमहँ बैन सुनाये॥

दोहा—लाख लाख के आभरण, वसन तुरंग मँगाय।
चारिहु दूतन देहु द्रुत, पठवहु नाग चढाय॥

चौपाई।

सुनि सुमंत शासन नृप केरा। ल्याय विभूषण वसन घनेरा॥
धरचो चारिहू चारन आगे। कहे भूपमणि अति अनुरागे॥
दूत देत सकुचत मन मोरा। जो कछु देहुँ लगै सब थोरा॥
तुम पुत्रनकी खबरि जनाई। हम जनु गये फेरि सुत पाई॥
आज भयो अस मोद अपारा। बहुरि जन्म जनु लहे कुमारा॥
उऋण जन्म भरि हैं हम नाहीं। और कहा कहिये तुम पाहीं॥
पान फूल सम यह कछु जोई। लीजै दूत सनेह समोई॥
देखि दूत पट भूषण भूरी। वाणी कही धर्मरस पूरी॥
महाराज अब माफ करीजै। यही इनाम हमहिं अब दीजै॥
धर्मधुरंधर ध्रुव अवधेशा। हमरे शिरपर आप निदेशा॥
रंगभूमिमहँ जबते नाथा। तोरचो शंभु धनुष रघुनाथा॥
तबते गई विवाहि कुमारी। यह लीन्हों हम सत्य विचारी॥

दोहा—जस हमार मिथिलेश प्रभु, तैसहि प्रभु अवधेश।
पै कन्या धन लेत महँ, हमको परत भदेश॥

चौपाई।

अस कहि दूत मूँदि निज काना। दिय बहोरि पट भूषण नाना॥

फेरि सुमंतहि वचन सुनाये। का बाकी जो हम नहिं पाये।
समधी राउ राम जामाता। लहे लाभ अस को न अघाता।
जबते लखे लषण अरु रामा। तबते लगत न कोउ अभिरामा।
पुनि देखे कोशलपति आई। सचिव गये सब भांति अघाई।
अब पूरहु इतनी अभिलाषन।सम समधी निरखहिं इक आसन।
मिथिला नगर उछाह अघाता। कब देखहिं अवधेश बराता।
सुनि भुवालमणि दूतन बानी। आँनद विवश भरे दृग पानी।
कह्यो सुमंतहिं दशरथ भूपा। दूतन डेरा देहु अनूपा।
सकल भांति कीजै सत्कारा। लैहैं सकल सुखसों भिनुसारा।
प्रभु निदेश अस सुनत सुमन्ता। दूतन चल्यो लिवाय तुरंता।
अति अनुपम अवास दिय वासा। जहाँ भयो सब भांति सुपासा।

दोहा–करि भूपति दूतन बिदा, कियो सभा बरखास।
भरत शत्रुहन संग लै, गये आपु रनिवास ॥

चौपाई।

कौशल्याके सदन सिधारे। तहँ सब रानिन भूप हँकारे।
है आसन आसीन भुवाला। राम मातु कहँ बोलि उताला।
बोले वचन अमीरस बोरे। नाहिं समात आनँद उर मोरे।
धावन चारि विदेह पठाये। राम खबरिको खत लै आये।
आई यह आनँदकी पाती। सुनिकै सकल जुडावहु छाती।
अस कहि भरतहि कह्यो सुनावहु। महामोद मातन मनछावहु।
भरत बांचि पत्रिका सुनाई। सो सुख इकमुखकिमि कहिजाई।
राम विजय युत राम विवाहू। सुनि रनिवास उछाह अथाहू।
सुनि तिय लगीं मंगल गावन। एक एकसों कछु न बतावन।
भरयो भवन सुखजबनसमाना। उमडिचल्योजनुमिसिकलगाना।
राम मातु उत तुरत सिधाई। रंगनाथके मंदिर आई।
करि पूजन बहुबिधि सन्मानी। पुरवहु सब सुख शारंगपानी।

दोहा-उतै सुमित्रा कैकयी, प्रेममग्न मन माहिं ।
ब्याहसाज साजन लगीं, बोल्यो कुलगुरु काहिं ॥

चौपाई ।

द्रुत वसिष्ठ रनिवास सिधाये । राजा रानिन लखि सुख पाये ॥
नृप रानिन युत कियो प्रणामा । आशिष दीन मुनीश ललामा ॥
रंगनाथको पूजन करिकै । कौसल्या आई मुद भरिकै ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा । गुरुसों बोलीं वचन विचित्रा ॥
हमहिं भयो सुख कृपा तुम्हारे । हिय न होत परतीति हमारे ॥
द्वादश वर्ष बैस मम बारे । कौन भाँति ताड़का सँहारे ॥
किहि विधि भे मुनिमख रखवारे । डरे न रजनीचरन निहारे ॥
कमलहुते कोमल कर जाको । हर धनुभंग सजत किमि ताको ॥
लाल करी मुनि बडी ढिठाई । भय बिन राजसमाज मँझाई ॥
तब बोले मन विहँसि मुनीशा । कृपा सकल जानहु जगदीशा ॥
रघुकुलके बाँकुरे कुमारे । कालहुके रण जीतनहारे ॥
रानी कछु न करहु संदेहू । अब विवाह कारज मन देहू ॥

दोहा--कही कौसला कैकयी, गुरु जस देहु बताय ।
ब्याहचार तस वेद विधि, करैं विशेष बनाय ॥

चौपाई ।

तब गुरु कह्यो सुनहु महरानी । कुलदेवन पूजहु सुखदानी ॥
इतै गीत मङ्गल कर चारा । होइ सहित विधान अपारा ॥
ब्याहचार औरो सब जेते । मिथिला महँ ह्वैहैं अब तेते ॥
तब दशरथ गुरु निकट सिधारे । वंदि चरण अस वचन उचारे ॥
नाथ सभामहँ सचिव बुलाई । देहु त्वराय रजाय सुनाई ॥
कालिह पयान जनकपुर होई । सजै बरात चलै सब कोई ॥
सुनि नृप शासन ब्रह्म कुमारा । गयो राज कारज आगारा ॥
बोल्यो सचिव सुमन्त प्रधाना । आये मंत्रीगण मतिमाना ॥

दियो सुनाय नरेश निदेशा । कालिह कूच है तिरहुत देशा
राम विवाह बरात सुहावन । साजहु सकल साज छबि छावन
मंत्री सुभट बंधु सरदारा । रघुकुलके सब राजकुमारा
साज साज मातंग तुरंगा । शकट पालकी तखत सतंगा

दोहा–साजि साज आवें सबै, साजि विख्यात बरात ।
गोधूली वेला विमल, चलि हैं नृप अवदात ॥
जे जे जिहि अधिकारमें, सावधान सब होइ ।
करी जु आलस काजमें, दंडनीय है सोइ ॥
अस निदेश नरनाथको, सचिवन सकल सुनाय ।
भरि हुलास निज वासको, गवन कियो मुनिराय ॥
छाय गयो सिगरे नगर, राम विवाह उछाह ।
घर घर मंगल गान तिय, लगीं करन भरि चाह ॥

छन्द चौबोला ।

कौसल्या कैकयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी ।
पूजन लागीं रंगनाथको ईश गणेश भवानी ॥
इष्टदेव कुलदेव देव वन ग्रामदेव कहँ पूजैं ।
कुशल लखहिं दुलहिन दूलह कहँ मन अभिलाषा पूजैं ॥
कारज करहिं नारि सब निज निज गावहिं मंगल गीता ।
राम जानकी व्याह गान सुर दश दिशि करहिं पुनीता ॥
व्यंजन विविध प्रकारनके रचि जाको जैसो योगू ।
ते देवन कहँ देहिं तौन विधि पढि पढि मंत्रन भोगू ॥
फूली फिरत रामकी माता नहिं सुख उरहिं समाता ।
द्वार द्वार देवनको विनवति कहि कहि मंजुल बाता ॥
गुरुजनको अभिवंदन करती सहज स्वभाउ सयानी ।
दृग भरि देखब दुलहिन दूलह तुम्हरी पुण्य महानी ॥

महल महलमचिरह्यो अवधपुर चहलपहल तिहि रजनी ।
कोउ गावै कोउ आवै जावै धामै धामै सजनी ॥
धूम धाम पुर धाम धाम महँ काल्हि बरात पयाना ।
आपु सजहिं औरन कहँ साजहिं पट भूषण विधि नाना ॥
दीपावली देव आलय महँ भवन बजारन माहीं ।
करत बरात तयारी भारी नींद नयनमहँ नाहीं ॥
करहिं विनय पुरजन देवनसों सपदि होइ भिनुसारा ।
चलै बरात राम व्याहन हित आशु बजाय नगारा ॥
परी खरभरी ताहि शर्वरी करैं हर्बरी लोगू ।
कहैं हर्बरी मेटि कर्बरी कब प्रभु करी सँयोगू ॥
राम विवाह प्रमोद पौरजन देहिं द्विजातिन दाना ।
करहिं जनकपुर जान तयारी नारि करहिं कलगाना ॥
बाजि रहे घर घर बहु बाजन धरे कलश प्रतिद्वारा ।
नौबत झरत राजमंदिरमहँ नादहि निकर नगारा ॥
गायक गण गावहिं गुण गर्वित मंजुल राग सहाना ।
अति उत्कर्ष हर्ष वश लेते तीन ग्रामकी ताना ॥
करहिं नर्तकी नर्तक नर्तन सर्तन करि विधि नाना ।
बिरुदावली वदत बंदीजन करि रघुवंश बखाना ॥
कहुँ रथ चक्र होत घर घर रव नदहिं मत्त मातंगा ।
कहुँ हय हेखन शोर मच्यो अति कोउ नहिं हीन उमंगा ॥
आये जे विदेहके धावन पृथक पृथक तिन काहीं ॥
सत्मानी रानी मुद मानी लिये कछुक तिन नाहीं ।
पृथक पृथक पुनि अवध प्रजा सब दूतनको सत्कारैं ॥
लेत काहुकी कछुक वस्तु नाहिं अपनो धर्म विचारैं ।
बढी उमंग अयोध्यावासिन क्षण क्षण शम्भु मनामै ।

सो दिन वेगि दिखाउ कृपा करि लखैं लषण अरु रामै ॥
भरत शत्रुसूदन अति हर्षित नयन नींद बिसराई ।
मुदित करहिं मातनसे बातन कब देखत दोउ भाई ॥
यहि विधि देवी देवन पूजत करत बरात तयारी ।
निर्माणत भूषण पट बहु विधि सन्मानत त्रिपुरारी ॥
राम विवाह उछाहहि आनत ठानत गवन उमंगा ।
वचन परस्पर विविध बखानत सानत चित रति रंगा ॥
अपने कहँ जानत जिय धनि धनि भानत दुख संसारा ।
दान देत विप्रन प्रिय मानत छानत सार असारा ॥
विविध बरातिनको पहिचानत सन्मानत परिवारा ।
नहिं आनत नींदहि निज नयननि होत भयो भिनुसारा ॥

दोहा—ब्रह्म मुहूरत जानि कै, उठ्यो सु कोशलपाल ।
प्रातकृत्य निरवाहि कै, करि मज्जन तत्काल ॥
अर्घ्य प्रदानादिक कियो, रंगनाथ पद वंदि ।
पहिरि विभूषण वसन वर, बैठ्यो सभा अनंदि ॥

छन्द चौबोला ।

मंत्रिन प्रजा महाजन सुभटन सरदारन कुलवारे ।
पौर जानपद सभ्य सुजानन कोशलपाल हँकारे ॥
आये सकल सभा मंदिर महँ दशरथ राज जुहारे ।
सहित समाजन यथा योग्य तिन प्रतीहार बैठारे ॥
तब सुमन्तको पठै तुरन्तहि गुरु वसिष्ठ बुलवायो ।
राम काजको काजजानि तहँ मुनिवर हरबर आयो ॥
पद अरविंदन वंदन करिकै कनकासन बैठायो ।
आज जनकपुर चलन चाय चित चारु निदेश सुनायो ॥
कनक रजतके रत्न खचित युत हौदन त्यों अंबारी ।
झूलैं जरतारिनकी झूलैं दश हजार गज भारी ॥

युगल दंतके चारि दन्तके भूषण कनक समारे ।
चलैं दुरद बिहद कदके मिथिलैं संग हमारे ॥
पंचलक्ष आति स्वच्छ साजके गच्छे दक्ष सवारा ।
मन्मथ कृत मनु तीनलक्ष रथ पथ पर रहहिं तयारा ॥
अहलादे दश लक्ष पयादे जादे नख शिख सोहे ।
चलहिं विख्यात बरात संग महँ जिन लजात सुर जोहे॥
वृषभ शकट अरु ऊँटजूट बहु खच्चर खेचर खासे ।
रत्न जालकी विविध पालकी तिमि नालकी कलासे ॥
पुहुप विमान समान विमानहु महा यान मनहारी ॥
तामजाम अरु तख्त रमानहुँ चलै समान तमारी ।
चलहिं धनिकसब अवधनगरके अर्ब खर्ब धन लीने ॥
खाली रत्न विभूषण संयुत बड लघु नवल नगीने ।
साजि साजि सब साजु समाजन चलहिं अवधपुरवासी॥
औरहु जाति ज्ञाति सम्बन्धी लेहु बालि छबि रासी ॥
रघुकुलके सब राजकुमारन सुकुमारन बुलवाई ।
लेहु बरात संग करि सादर निउतो भवन पठाई ॥
देवलोक ते गन्धर्वनको अरु अप्सरन बुलाई ।
मही मंगला मुखिन सुखिनको दीजै प्रथम चलाई ॥
जे प्रिय गायक लायक सबविधि नाटक कर्म सुजाना।
नर्तक अरु नृत्यकी अनेकन करनाटकी महाना ॥
औरहु जगके विविध गुणीजन संगहि करहिं पयाना ।
पण्डितशास्त्रअखण्डित मंडित संसदि सपदि चलाना ॥
कवि कोविद बन्दीजन सज्जन सुहृद सखा अतिप्यारे ।
परिजन पुरजन गुरुजन लघुजन चलैं स्वरूप सँवारे ॥
देहु सुमन्त वसन भूषण वर यथा योग्य सबकाहीं ।

कौनहु वस्तु हीन नहिं कोई रहै बरात सदाहीं ॥
शिबिका अश्व नाग रथ वाहन वाहन हीन न दीजै।
चलहि बजार अनेक संगमहँ कौनिहु बस्तु न छीजै॥
शिबिर अनेकन भाँति रंग बहु कनक रजत जरतारी।
तिमिनैपथ्यवितान विशदबहु रविशशिसमद्युति भारी॥
राजासन अरु विविध सुखासनगुलगुलागिलिमगलीचे।
फटिकफरशइववृहद फरश बहु सुरभित सलिलनसींचे॥
सभासाज सब सुखद .सजावहु करन हेत व्यवहारा।
भोजन भाजन चलैं विविध सब होन हेत ज्यवनारा॥
चारिहु कुँवरनके विवाहकी सामग्री लै चलिये।
कौनसमयकिहिभाँतिईशगाति जानि न जाय अतुलिये॥
जबते चलै बरात अवधते आवत अवध प्रयन्ता।
तबते विमुख जाय नहिं कोऊ सन्त असन्त अनन्ता॥

दोहा–एक यान गुरु हेत वर, एक हमारे हेत।
अति उत्तम सब साज युत, आनहु द्वार निकेत॥
मार्कंडेय मुनीश वर, कल्पांतायुष सोय।
देहु तिन्हैं स्यन्दन विशद, मारग श्रम नहिं होय॥
कात्यायन जाबालि मुनि, वामदेव मतिमान।
रथ दीजै सब कहँ बृहद, आगे करहिं पयान॥
औरहु ऋषिमुनि द्विजन गण, आगे करहिं पयान।
चलहिं महाजन मध्यमें, पुनि मम गुरुको यान॥
बीच बीच सैना सकल, निज निजवृन्द बनाय।
चलहिं सकल सत पंथ गुनि, पंथ पयान सुहाय॥

छन्द चौबोला।

सबके आगे सुतर सवार अपार शृङ्गार बनाये।

धेरे जमूरक तिन पीठिनपर सहित निसान सुहाये ॥
फेरि चलैं वाजी मंडल करि सजे सवार प्रवीरा।
शत्रुशाल तिनके मधि सोहैं चढि वाजी रणधीरा ॥
गज मंडल पुनि चलै अखंडल बँधे हौद अंबारी।
शत्रुंजय गजमें सवार ह्वै भरत चलैं शुभकारी ॥
पुनि पैदरकी भीर चलै सब वृन्दन वृन्द बनाई।
वर्ण वर्णके यूथ यूथ सब सायुध सजे सुहाई।
जौन वर्णको यूथ वर्ण सोइ तहँ तहँ रहैं निशाना ॥
गजमंडल पीछे रथमण्डल तहँ तुम होहु प्रधाना।
तिनके पीछे पुरवासी सब सहित महाजन नाना ॥
सभ्य सभासद औरहु जन सबचलहिं बजार महाना।
गुरु वसिष्ठ अरु हम तिनकेअनु लै परिचरप्रतिहारा ॥
नहिंगतिमन्द न गतिद्रुतचलिहैयहिविधिचलनविचारा॥
चलहिं निषाद राजसेनाके पीछे लै निज सैन्ना।
शोधन करतसकलमनुजनको कोउ थकि कहौं रहैना॥
ऊंट जूट वडवा वृषभादिक शकटादिक भरि भारा।
चलहिं निषाद राजके सँगमें बालक वृद्धहु दारा ॥
यहि विधिचलै बरात जनकपुर बीचहि चारिमुकामा।
यत्नकरहु यहिविधि सुमन्तसब चतुरसचिव तुवकामा ॥
अहै मुहूरत शुभ गोधूली चलन बरात हुलासा।
ताते आज तीर सरयूके होय सुपास निवासा ॥
यहि विधिशासनदै सुमन्तको उठन लगे महराजा ॥
आये चारि विदेह दूत तहँ त्वरा करावन काजा ॥
कोशलपाल कमलपद वंदे कहे कमल कर जोरी।
गवन विलम्ब अब नृप राउर आलस जनी न थोरी॥

तब पुनि कह्यो विहँसि गुरुसों अस अबविलंबनाहिंकाजा।
जसजसमोहिंत्वरावत धावन तसतस लागति लाजा ॥
दूतनसों पुनि कह्यो अवधपति गोधूली शुभवेला।
चली बरात जाय सरयू तट रहि हैं अब नहिं झेला ॥
जाहु दूत दीजै विदेहको आशुहि खबरि जनाई।
चौथे दिवस दरश करिहैं हम मिथिलापुरमहँ आई ॥
सुनिकै दूत अकूत मोद लहि चले तुरत तिरहूता।
गये दान मंदिर दशरथ इत बोल्यो विप्रन पूता ॥
हय गय भूमि कनकपट भूषण धेनु धाम धनवेसा।
किये दरिद्र हीन जग याचक राम लषण उद्देसा ॥
फेरि गीत मंगल करवायो संयुत वेद विधाना।
कौसल्या कैकयी सुमित्रा नृप रानी तहँ नाना ॥
रंगनाथको पूजन करिकै गौरिगणेशहु पूजी।
करिकै सकल शृँगार सहचरी रति रंभा जनु दूजी ॥
बृन्द वृन्द युवती तहँ गावत मङ्गल गीत सुरीली।
चलीं मृत्तिका लेन सरयु तट आनँदरली रँगीली ॥
बन्यो कनकको महामनोहर मण्डप रत्न जडीलो।
मनौं मदनको सदन अनूपम सुरमुनि चित्त गडीलो ॥
लै विधि युत सरयू तट ते मृदु गावत मंगल गीता।
लै आईं मण्डपहि मृत्तिका परिचारिका पुनीता ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा कियो व्याहको चारा।
इष्टदेव कुलदेव पूजि सब आनँद भयो अपारा ॥

दोहा–खैर भैर माच्यो अवध, सुन्दर सजी बरात।
गोधूली बेला सुभग, आई अति अवदात ॥

छन्द चौबोला ।

लै गुरु सकल पुरोहित जनको भूपति सदन सिधारे ।
सुमिरिगौरि गिरिपति गणपति हरिसुन्दर वचन उचारे ॥
महाराज सुदिवस आयो अब करहु विजय मिथिलाको ।
दधि दुर्वा तंदुल घृत थारन दरश परश करि याको ॥
सुनि वसिष्ठके वचन भूपमणि गुरुपद वंदन कीन्ह्यो ।
सकल पुरोहित औरन विप्रन हेमदान बहु दीन्ह्यो ॥
दधि दुर्वा तंदुल कर परश्यो रङ्गनाथ कहँ ध्यायो ।
लखिहौंराम चारि दिन बीते अस गुणि सुख न समायो॥
उठ्यो चक्रवर्ती आसनते मन्द मन्द पगु धार्‍यो ।
पठत स्वस्त्ययन विप्रमण्डली स्वर युत वेदन चार्‍यो॥
कनककलश धारि शीश सहस्रन आगे सधवा नारी ।
करहिं मङ्गलामुखी गान बहु मंगल सुरन सवांरी ॥
रति रंभा मेनका उर्वशी सरिस चलीं नृप आगे ।
जय जय शोर चारिहू ओरन करहिं पौर अनुरागे ॥
नारी वर्षि वर्षि लाजा सुम गावहिं मंगल गीता ।
बिज्जु छटासी चढीं अटामें कनकलता छबि जीता ॥
गुरु वसिष्ठ आगू पगु धारे पाछे कौशल भूपा ।
सोहत मनहुँ देवगुरु संयुत देव अधीश अनूपा ॥
यहि विधि चारु चक्रवर्ती नृप चारु चौक पगु धारा ।
भरत शत्रुहन सजे खडे तहँ सुन्दर युगल कुमारा ॥
प्रथम वसिष्ठ चढाये स्यन्दन दशस्यन्दन नृप राऊ ।
लगी तोप तडपन तिहि अवसर पर्‍यो निशाननघाऊ॥
भयो सवार भूप निज रथमें मणिगण अमित लुटाई ।
आठ आठ घोडे रथ जोडे हीरन साज सजाई ॥

छाजत छत्र क्षपाकरकी छबि चमर चलै चहुँ ओरा।
शारदवारिदचलहिं चारि दिशि मनुमधि अत्रिकिशोरा॥
भरत शत्रुसूदन सुमन्तको कह्यो बुलाय नरेशा।
सैन चलावहु जौन भाँति हम प्रथमहि दियो निदेशा॥
करि अभिवन्दन दिगस्यन्दन पद तीनहुं गये तुरंता।
रिपुहन हयगण भरत नागगण रथगण रह्यो सुमंता॥
चली बरात अवधपुरते तब करि दुन्दुभी धुकारे।
नौबत झरत चली नागनमहँ रव करनाल अपारे॥
सकलअवधपुर नारि मनोहर गावहिं मंगल गीता।
दूलह दशरथ लाल राम दुलहिन वैदेही सीता॥
छैल छबीले राजकुँवर सब शत्रुशालके संगा।
क्षण क्षण क्षितिमहँ नचत चलावहिं चंचल चारुतुरंगा॥
मुकुट कनककुंडल हिय हारन पीत पोशाक सँवारे।
पटुका पाग छोर छहरे क्षिति झरै मुकुत जनु तारे॥
कहूँ धवावैं कहूँ कुदावैं वाजिन राज कुमारा।
झमकावैं आसि कला दिखावैं रिपुहन पाय इशारा॥
चमकावैं नेजा आति तेजा मेजा कहूँ मिलामै।
रेजा रेजा किये करेजा जिन शत्रुन संग्रामै॥
बजैं निशान वृन्द वृन्दनमहँ फहरैं वृन्द निशाना।
राजकुमार देव सम सोहत रिपुहन जनु मघवाना॥
यहि विधि चल्यो तुरङ्गममंडल सुतर सवारन पाछे।
राखे अभिलाषे अपने मन राम लखब कब आछे॥
नवयौवनकी लसीतअरुणिमा तिमि बीरी मुख लाली।
गोरे वदन सदन शोभाजन उदित अमित उडुमाली॥
दोहा—छरे छबीछे छयल सब, क्षणक्षण सुछबि अछाम।
क्षितिनायकके छोहरनि, छूटति छूट ललाम॥

छन्द चौबोला।

वाजीमंडलके पीछे पुनि मंडल चल्यो गयंदा।
मनहुँ पवन पुरवाई पावन उदय श्याम घन वृन्दा॥
वारन वदन सदन्त विराजहि हाटक बँधे मुहाले।
मनहु द्वैज शशि श्याममेघ माधि उभय नोकछबि माले॥
तुंग वितुंड शुंड फटकारत सांकर लिहे पुरटकी।
मनहुँ श्याम घन मंडलमें छबि क्षण क्षणमें क्षणछटकी।
जडित जवाहिर हौद हेमके लसैं अमित अंबारी।
मनहुँ विंध्य मंदर शृङ्गनमें सुर मंदिर; छबिकारी॥
झेलनकी झनकार मची तहँ घन घंटा घहनाने।
नंदत नाग माते मग जाते दिगदन्ती सकुचाने॥
रघुवंशी सोहत अरिध्वंसी सिंधुर सजे सवारा।
औरहु भूरि भूमिके भूपति केते राजकुमारा॥
ढालैं करवालैं कर लीन्हें कसी कमरमहँ ढालै।
झूमत झुकत मुच्छ कर फेरत उरमालै उरमालै॥
मन्द मन्द सब चलत पंथ महँ हँसत बतात बराती।
एक एक सब लोकपाल सम राजत राज सजाती॥
टूटत पन्थ तरुनकी शाखा लागत हौद दरेरे।
मत्त मतंग गंड मंडल मंडल मिलिंद करि घेरे॥
शत्रुंजय गजेन्द्र गजमंडल माधिमें भ्राजत भारी।
राजकुमार सवार भरत तिहि राजत जन मनहारी॥
प्रमुदित मनहु मयंक उदित उदयाचल कर पसराई।
सकल शैल शृङ्गन पर सोहत तारागण समुदाई॥
गजमंडलके पाछे सोहत रथमंडल नहिं दूरे।
वर्ण वर्ण वाजिनकी राजी राजि रही मग रूरे॥

सुभट शूर सरदार सभ्यजन सज्जन सुकवि सुजाना।
चढे सकल स्यंदन गमनत पथ भूषण भूषित नाना॥
पुनि रणधीर भीर प्यादनकी सायुध चली अपारा।
चमकहिं तेग अनी कुन्तनकी सिंधु तरंग अकारा॥
रथमंडल पीछे पुनि सोहत परिकर भूपति केरो।
कनक दंड कर जडित हजारन रत्नन होत उजेरो॥
हाटकके छोटे सोंटे कर पंचानन. आननके।
धरे कन्ध सोहत अति सुंदर अवध जनन ज्वाननके॥
सोहत बल्लम विविध प्रकारन छरी हजारन हाथा।
पीत वर्ण पहिरे पट भूषण चले जात प्रभु साथा॥
जे सेवक कौशल नरेशके गमने राम बराता॥
कडे करन कठुला कंठनमें कुंडल कान सुहाता॥
युग स्यंदन सवार सोहत तहँ दिगस्यंदन मुनिराई।
मनहु देवनायक सँग सोहत वाचस्पति सुखछाई॥
चारि चमर चहुँ ओर विराजैं छत्र क्षपाकर छाजे।
अंशुमान इव आतपत्र युग विशद विजन बहु भ्राजे॥
विविध किताके परमप्रभाके फहैं विपुल पताके।
जिन ताके छाके सुरमानस अरुझाते रवि चाके॥
कोशलपति पीछे पुनि गमनत राजत राज निषादा।
लीन्हें भीर निषाद भटनकी हय चढि विगत विषादा॥
ऊँट जूट ठट्टन शकटनकी भरे साजके भारे।
खच्चर वृषभ अनेक जातिके लै सब साज सिधारे॥
यहि विधि चली बरात जनकपुर अवध नगरते भारी।
कुशल कहहिं लखि राम लषणको पूजी आश हमारी॥
सोरठा--उडी धूरि तहँ झूरि, पूरि रही अति दूर लौं।
भरी गगनलों भूरि, भूलि गये पथ गगन चर॥

छन्द गीतिका।

बाजन अनेकन बाजहीं दश दिशन छाय अवाज।
तंबूर ढोलहु ढक्क डिंडिम पणव पटह दराज॥
मंजीर मुरज उपंग वेणु मृदंग सलिल तरंग।
बाजत विशाल कहाल त्यों करनाल वालन संग॥
झल्लरी झर झर झांझ सांझ सुहावनी झनकार।
रहि पूरि ध्वनि शंखन असंख्यन सैन्य वारापार॥
बहुविधि विपंची सुर प्रपंची रची धुनि मनहारि।
बहु बिगुल सुगुल बजावहीं जनु चुगुल सुरन उचारि॥
ध्वनि धरणि धौसनिकी छई नौबत झरत मग जाति।
झिंझिन झनक श्रुति प्रियअनकबाजतरबाबहु जाति॥
जांगरे करत अलाप विरद कलाप भूत प्रताप।
अतिशय मिजाजी चढे वाजी करत अरि उर ताप॥
बंदी विदूषक वदत बहु विधि सुयश युक्ति समेत।
यह भानुकुल कीरति उदय जो स्वाति पंथ सपेत॥
हिम शैल सित हर शैल सितासित क्षीरनिधि सितचन्द।
भुवि भरत भरत सुगगन समिट्यो सुयश रघुकुलचंद॥
निकसी बरात अघात दल कारि सकै कौन बखान।
कंपति धराणे शिर ते गिरानि की शेष उरानि सकान॥
लै लै विमानन विविध आनन विबुधवृन्द हँकारि।
नभ विबुधपति आयो विलोकन जक्योविभवनिहारि॥
मनमहँ कहत शतवाजि मख करि लहत जनपद मोर।
अब देखि दशरथ साहिबी मुहिं लगत स्वर्गहु थोर॥
त्रलोक शासन करन समरथ अहै दशरथ आज।
कहु कौन अचरज ताहि जिहि जगदीश सुत रघुराज॥

अब चलहु संगहि संग वर्षत सुमन मन हरषांत।
मुहिं आज आये काम नयन हजार लखत बरात॥
यहि विधि सुभाषत देवपति ले देवगण नभ आय।
सुरभित सलिल कन झारि मृदु वर्षत कुसुम समुदाय॥
जब कढी कोशल नगरते मैदान माहिं बरात॥
तब भयो देवन भोर मानहुँ सिंधु द्वितिय दिखात॥
उठतीं अनेकन तरल तुंग तरंग तरल तुरंग।
मातंगगण शिशुमार कच्छप नाव रथ बहु रंग॥
राजत रतन भूषण रतन जल राम दरश उमंग।
लघु बृहद मीन अनन्त पैदर शंख शंख सुढंग॥
बाडव अनल दशरथ प्रताप जलेश कौशलराय।
उडती मरालनकी अवलि सुनिशानगण फहराय॥
बहु ऊँट जूट सुबृषभ खच्चर विविध जलथर जीव।
चहुँ ओर वाजिन शोर सत्य हिलोर शोर अतीव॥
अतिशय अपार बरात सिंधु विख्यात विश्व सुहाय।
लखि राम पूरणविधुवदन कितनो अधिक अधिकाय॥
सोरठा–यहि विधि चली बरात, रघुपति ब्याहन जनकपुर।
सरयू तट नियरात, भूपति कह्यो सुमंतसों॥

छन्द कामरूप ।

अब आज अधिक न जात बनत मुकाम सरयू तीर।
यह पहिल बास सुपास सब कहँ जाइ जुरसब भीर॥
सुनु सचिव मन अभिलाष पूरण कियो मोर मुकुन्द।
साधन सकल गुरुकी कृपा ह्वैहैं अनेक अनन्द॥
तुम जाहु सैनानिवास करवावहु सुपास समेत।
हम चलब पाछे गुरु सहित जहँ शिबिर सरिस निकेत॥

अस कहि बिदाकरि सचिव कहँ पुनि कह्यो गुरुपहँ भूप
यह साहिबी मन ल्याइबी निज कृपा फल अनुरूप ॥
शिशु लह्यो सुयश अथाह होत विवाह परमउछाह ।
सो कृपा राउरि मूल और न मोहिं क्षितिमहँ छाह ॥
देखहु शकुन सब होत सुंदर शुभ जनावत जात ।
दिशि वाम चारा नीलकंठ विहंग लेत दिखात ॥
यह शकुन सूचत सकल शुभ मुद अधिक आगे होब ।
शुभ खेत दक्षिण ओर वायस लखे जन मुद मोब ॥
पाये नकुलको दरश सब चल दल विटपकी छाँह ।
शीतल सुमंद सुगंध लगत सुपीठ पवन प्रवाह ॥
धरि कुंभशिर भरि सलिल बालक अंक लीन्हें नारि ।
देखी परी बहु पंथ महँ यह शकुन लेहु विचारि ॥
लोवा दरश बहु बार दीन्ह्यो आय चारिहु ओर ।
सुरभी पियावति वत्स सन्मुख लखे सुंदर ठोर ॥
फिरि फिरि सुआये दहिन दिशि मृगमाल यात्राकाल ।
मनुदियो सकल बताय शुभ तुव कृपा फलहि कृपाल ॥
थहरान क्षेमकरी सुमस्तक ऊपर सूचक क्षेम ।
श्यामा सुवामा बैठि तरुपर लखे जन भरि प्रेम ॥
गुरु गवन करते भवनते देखे सबै दधि मीन ।
कर लिहे पुस्तक विप्र युग अध्वानि सुधर्म धुरीन ॥
आति बिंदु सूक्षम सलिल बरषे किये मृदुलगराजं ।
छाया किये घन गगन शुभ दरशाउ जनु सुरराज ॥
अंबर उडत हंसावली भइ विमलतारा जोति ।
आति मन प्रसन्न प्रजानिके निशि तम न भूरि उदोति ॥
यह सकल राउरकी कृपा फल सुनहु ब्रह्मकुमार ।

व्रतबंध व्याह बखान कहँ दुर्लभ रहे सुत चार॥
फरकहिं भ्रुकुटि भुज नयन दाक्षिण दिसत अधिक अनं
अचरज न कछु जहँ आप मंगल रूप करुणाकंद॥
अवधेशके सुनि वयन लहि आति चैन मृदु मुसक्याय।
पुलकित सजल दृग कंठ गद्गद कहत भे मुनिराय॥
धनि धरामें अवधेश तुम जिहि राम लषण कुमार।
भल करहिं अपने ते अमर मंगल प्रमोद अपार॥
अवधेश धर्म धुरंधरनको कछु न दुर्लभ होय।
मिलते अमित सुख संपदा बिन चाह अवाधिहि गोय॥
जस आप तस मिथिलेश जसमिथिलेशतसपुनिआप।
नहिं तृतिय आज समान कोउ यह सत्य मम संलाप॥
मुनि भूपके अस करत संभाषण खडे मग माह।
आये बहोरि विशेषि सरयू तीर साहित उमाह॥
डेरा सुमंत दिवाय सबको साहित सुथल सुपास।
भोजन सकल पहुँचाय सबकहँ जाय जाय निवास॥
उज्वालि लाखन दीपका निज नयन सबकहँ देखि।
आयो महीपतिमणि निकट विनती करी सुख लेखि॥
दोहा–महाराज सबको भयो; सरयू तीर सुपास।
नाथ पधारो शिबिर कहँ कीजै रैन निवास॥

छन्द गीतिका।

सुनि सचिव वचन अनंददायक साहित गुरु माहिपाल।
करि भरथ भरतानुजहि आगे गयो शिविर विशाल॥
सब सैन्य डेरा परे सरयू तीर तीरहि भीर।
युगयोजनहि लौं संधि नहिं काढि जाय मारी तीर॥
सबके उछाह प्रवाह उर कब लखब राम विवाह।

जगमाँह सुख अब काह बाकी लहब लोचन लाह ॥
प्रति जननकी नृप शोधि कीन्ह्यो जानि सकल सुपास।
गुरुको शिबिर पहुँचाय आये आपने आवास ॥
करि भरत रिपुहनको बिदा नृप सरयुमज्जन कीन।
संध्या सविधि करि हवन पुनि श्रीरंग ध्यानहिं लीन ॥
पुनि वसन भूषण धारि बैठ्यो सभा आय भुआल।
मंत्री सुमन्तादिकनको बोल्यो हरषि तिहि काल ॥
करि लेहु सिगरी खबरि आई इतै आजु बरात।
गंडकीतट काल्हि डेरा परी नहिं श्रम जात ॥
अस कहि नृपति कीन्ह्यों शयन करि बिदा मंत्रिन वृन्द।
अभिलाष मन कब लखहिं कोशलचंदको मुखचन्द ॥
सादी सहस युग लगे पहरे देन दल चहुँ ओर।
निश्शंक सोवत सब बराती कतहुँ नहिं ठग चोर ॥
गावत कोऊ बाजन बजावत नचहिं कहुँ वर नारि।
कहुँ रचहिं शतरंजादि क्रीडा बैठ लोग सुखारि ॥
याहि भाँति सुखमा निशि सिरानी रही बाकी याम।
बाजे नृपतिके दुन्दुभी द्रुत कूच सूचक आम ॥
लागे वदन बंदी विविध बिरुदावली नृपद्वार।
मन जानि आगम भानको उठि बैठ भू भरतार ॥
सब प्रातकृत्य निबाहि मज्जन कियो सज्जन संग।
लहि काल संध्योपासनादिक ठानि सुमिरत रंग ॥
दै दान याचक गणन वित्त विशेषि सहित उमाह।
उठि पहिरि भूषण वसन मनमें चलन की भै चाह ॥
तिहि काल सचिव विदेहके कीन्हे सुवंदन जाय।
करि वचन रचन विशेषि विनती दियो नृपहि सुनाय ॥

अवधेश हमहिं निदेश अस मिथिलेश दीन बुलाय।
जबते चलहिं कोशल नगरते कोशलेश त्वराय॥
तबते सुभोजन पान सामग्री दियो तुम जाय।
जो लगै खर्च बरातको सो लिह्यो सकल उठाय॥
लघु मनुजहूँको संच कियहु विसंच रंच न होय।
अब होय हमरे शीश शासन नाथ तुमसम दोय॥
सुनि सचिव वचन विचारि भूप विदेहको व्यवहार।
मिथिलेश केर निदेश जस तस हमहुँ को स्वीकार॥
अस कहि वसिष्ठ चढाय स्यन्दन चढ्यो स्यन्दन आप
बाजत भये तिहि समय बाजन विविध सुरन कलाप॥
पूरब कियो जिहि भाँति वर्णन तौनि रीति बरात।
गमनी सुमिथिला पंथ गहि करि धूरि धुंध अघात॥
मानहु महीप निजकुँवारि व्याह विचारि अतिसुखमाति।
मिसि रेणुके विधि लोकको विधिकी निमंत्रण जाति॥
सर नदी नारे परत जे मग रहे जल भरि पूरि।
आगे चलत ते लहत जल पाछे चलत ते धूरि॥
पाषाण परहिं जे पंथमहँ ते होत रेणु समान।
युग कोशको विस्तार भराति बरात करत पयान॥
दोहा–जहँते चली बरात मग, जहँ पुनि रह्यो निवास।
तहँलों हय गय रथ मनुज, भरे चलत सहुलास॥

छन्द गीतिका।

रघुवंश कुलकी जब बरात गई सुगंडक तीरमें।
करि पान सुधा समान मेटे प्यास निर्मल नीरमें॥
आये वसिष्ठसमेत रघुकुलकेतु जब तिहि वासमें।
तब विनय कीन विदेह सेवक राजमणि मुनि पासमें॥

मिथिलाधिपति रचवाय राख्यो आप उतरन मंदिरै।
उतरो तहाँ चलि अवधपति जनु रच्यो निज कर इंदिरै॥
सुनि भूप मुदित पधारि कीन निवास विमल अवासमें।
सैनिक सकल सरदार राजकुमार बसैं सुपासमें॥
सब पृथक पृथक बसे सुभौन भयो न केहू साकरो।
परिजनस्वजन पुरजनमहाजन सहित निजनिज चाकरो॥
गज वाजि ऊँटन अनडुहनके भिन्न भिन्नहि थान हैं।
मिथिलेश परिचर करत भे व्यवहार भोजन पान हैं॥
जिहि वस्तुकी रहि चाह जाको मुखनते न बखानहीं।
दीन्हें बरातिन पूरि निकटहु दूरि सबन समानहीं॥
सब करहिं जनक बखान पंथ महान लखि सनमानको।
सबको भयो अस भान कीन पयान निजहि मकानको॥
सध्या उपासन कियो साँझहि गंडकी तट जायकै।
बैठो बहुरि अवधेश आलै सभा सुखद लगायकै॥
आये अनेकनराज राजकुमार नृप दरबारमें।
सब कहत कोउ न विदेहसम नृप भयो यहि संसारमें॥
वर ज्ञान मान विराग मान सुजानवृन्द प्रधान है।
पायो नरेन्द्रसमान समधी सत्य यह अनुमान है॥
पुनि कह्यो सचिव सुमंत कालिह कहां अराम मुकाम है।
नृप कह्यो जहँ जहँ जनक सेवक कहहिं तहँ विश्राम है॥
अतिशय त्वरा लागी लखनकी लषणका प्रियरामकी।
परसोंपहुँचिमिथिलापुराहिनिरखब सुछबि अभिरामका॥
सुनिकैसभासद अभिलषितनिजनिज अयन गमनतभये।
भूपति सभा बरखास्त करि किय शयन अतिआनँदमये॥
असवार युगल हजार लागे भ्रमण चहुँदिशि शयनके।

लगि रामदरशन आश नींद न निकट आई नयनके
पथश्रम सुधाकर सुधाकरनि पसारि सकल निवारिकै
कीन्ह्यो विलास अकाश कुमुदविकास माहिविस्तारिकै
लीन्हे अखंडल तार मंडल करत गगन पयानहैं
मनुजात संग बरातके शशि राम दरश लुभान है
शीतल सुगंध समीर बहत सुधीर जनु बनि धावनो
अवधेशको मिथिलेशपै द्रुत जात खबरि जनावनो
बीति त्रियामा याम त्रय बाकी रह्यो जब याम है
बाजे नगारे कूचके जन जलद जागन काम है
सुनि दुदुंभीन धुकार खरभर परी हरबर सैनमें
नरवर उठे हरि हर सुमिरि मज्जन किये अति चैनमें
आगे सवार कराय गुरु गमन्यो नरेश प्रभातहीं
चतुरंगिनी सुखरंगिनी गमनी बरात सुहातहीं
आगे सुतर पुनि वाजिमंडल नागमण्डल पुनि
मंडल अखंडल पैदरनको देव वृन्दनको हैं
पुनि खास सेवकवृंद सोहत तासु मध्य महीप है
जिमि विष्णुके ढिग ब्रह्म राजत तस वसिष्ठ समीप है
तादिन रथन मंडल लिहे नृप अनुविभात सुमन्त है
शिबिका सुखासन आदि वाहन तासु अनुग अनन्त है
दोहा-ऊँट जूट अनडुह शकट, भरे साजु ते भूरि
चल्यो निषाद अधीश लै, निज दल सहित न दूरि

छंद चौबोला।

उतै दूत जे गये अवधपुर लै विदेहकी पाती।
जोरि पाणि कीन्हें पदवंदन आय तीसरी राती॥
दूत विलोकि विदेह विनोदित कहे कुशल सब आये।

कहहु कुशल कोशल भुआलकी कब ऐहैं सुख छाये ॥
दूतन कही खबरि तहँकी सब नृप रनिवास उराऊ ।
प्रीति रीति पुनि लै बरातको बरण्यो चलनि त्वराऊ ॥
पुहुमीपति यहि पुरहि पहुँचि हैं परसों सहित बराता ।
कही प्रणाम आपको बहुविधि दशरथ बिश्वविख्याता॥
दशरथ दुनी दूसरो दिनकर विभव सरिस सरराजा ।
का कहिये तापर ताके सुत भये लषण रघुराजा ॥
राउरि कुशल पूछि कोशलपति हमहिं बहुत सत्कारो ।
तिहिदिन दुपहर हमहिं विदाकरि साँझ आप पगुधारो॥
प्रथम वास सरयू तट ह्वै है दूसर गंडकि तीरा ।
तृतिय वास इतते युग योजन परौं मिलन मतिधीरा ॥
नाथ कृपा हमपर कीन्हें अति दीन्हें अवध पठाई ।
अति अभिराम रामपुर देखे सुखमा वरणि न जाई ॥
आवन सुनत अयोध्याधिपकी प्रेम मगन मिथिलेशू ।
अगुवानी साजनके कारण सचिवन दियो निदेशू ॥
इतै बरात चली रघुकुलकी रामदरश अभिलाषी ।
लषण रामको लखब कालिह हम चले परस्पर भाषी॥
आनँद विवश होत मग विभ्रम सम्भ्रम भीषण माहीं ।
को वरणै दशरथ अनंद अब रामहिं व्याहन जाहीं ॥
आठ पहर भे आठ युगन सम कब पहुँचैं मिथिलाको।
विश्वामित्र विदेह सहित कब देखहिं राम ललाको ॥
अति उत्साहित उठत आशुपद ठुमकाति छनक न छाया।
हय गय रथ पैदर सम जाते तदपि न पन्थ सिराया ॥
जे याचत याचक जगतीके जगतीपति पथ माहीं ।
ते याचक पुनि होत अयाचक याचत पुनि जग नाहीं॥

धाय धाय देशनके वासी देखत आय बराता।
पूछत प्रथमहि राम लषणको पिता कौन विख्याता॥
जाके पूत सपूत बाँकुरे तासु दरश अघहारी।
तृणसों जिन त्रिपुरारि धनुषदालिव्याहत जनकदुलारी॥
मारि ताडुका मुनिमख राख्यो गौतमकी तिय तारी।
सुनि नृप कहत यदपि सतपै सुहिं लगति हँसी असमारी॥
मिथिलादेश प्रवेश कियो नृप सँग बरात लै भारी।
तबते हँसि हँसि हुलसि हुलसि जन देतमाधुरी गारी॥
मंगल गान करत युवती जुरि होहिं पंथमहँ ठाढी।
सदल दीपधरि कलशशीश पर वर देखन रति बाढी॥
ते लखि भरत शत्रुशालहुको सुन्दर दूलह कहहीं।
कोउ कह दोउ दूलह सहिबाले वर मिथिलापुर अहहीं॥
अतिहि त्वरात प्रयात बरात गई जब कमला तीरा।
तहँते जनक नगर युग योजन जनक सचिव तहँधीरा॥
जोरि पाणि बोल्यो सुमन्तसों इत सब भांति सुपासा।
अब मिथिलापुर है युग योजन करै बरात निवासा॥
जाय सुमन्त कह्यो भूपतिसों नृप कीन्ह्यो स्वीकारा।
कमला तीर परे सब डेरा वन रसाल मनहारा॥
तुङ्ग मेरुमन्दर सम सुंदर भूपति शिविर सुहाये।
विमलविख्यात सुहातकनातन उडवितानछवि छाये।
दोहा—राखे तहँ बनवाय बहु, विविध निवास विदेह।
निज डेरन तजि तहँ वसे, जानि जनक नृप नेह॥

छन्द चौबोला।

गजशाला हयशाला अगणित शाला विविध विशाला।
भोजनशाला मज्जनशाला शाला सैन्य रसाला॥

सकल बरात निवास कियो तहँ सबकी भई समाई ॥
अशन वसन पानादिककी तहँ प्रगटी पूरणताई।
मिथिलाधिपके परिचर सिगरे अस कीन्ह्यो व्यवहारा ॥
मोदितमहा अयोध्यावासी अवध विलास बिसारा ॥
करि भोजन सुख शयन अवधनृप उठ्यो रहे दिन यामा।
सभा मध्य मंडित धरणीपति भयो सुपूरण कामा ॥
चुर पठै परिचारक दलमहँ खबरि बरातिन लीन्हीं।
आवनकी पुनि अशन शयनकी सबन खातिरी कीन्हीं ॥
सबै बराती सुखी सकल विधि रंच बिसंच न पाये।
धामन आय धरणिपतिको अस विस्तर वचन सुनाये ॥
कोशलपाल तुरन्त सुमन्तहि बोलि कही अस वानी।
सजवावहु बरात आजुहिंते कालिह होन अगुवानी ॥
सचिव कालिह मिथिलाधिराजको मिलि मुनि राजसमेतू।
सानुज कौसल्यानदंन लखि मिटी विरह दुख जेतू ॥
वन वन बागत बहुत दिननते कृश तनु ह्वैहैं प्यारे।
करत रह्यो ह्वैहै को सोपाति दूध वदन दोउ वारे ॥
छोडत रहे न क्षण भरि जिनको खेलत साँझ सकारे।
एक मास बीत्यो विन देखे राम लषण सुकुमारे ॥
कह्यो सुमन्त जोरिकर कंजन धन्य धरणि अवधेशा।
राम लषण जिनके कुमार जग उदित दिनेश निशेशा ॥
राम विवाह विलोकि विलोचन ह्वैहैं सफल हमारे।
को अस जिहि नहिं राम प्राणप्रिय एकौ बार निहारे ॥
कारकै बिदा सभासद वृन्दन उठ्यो भूप संध्यासी।
दिनकर निरखि अस्तागिरिं गमनत दीन्ह्यो अर्घ्य हुलासी ॥
हवनादिक करि नित्यनेम सब आतिथि पूजि श्रद्धालू।

रंगनाथको ध्यान धरयो कहि पुजवहु आश दयालु
सकल शोध लै भूप बरातिन कियो शयन महराजा
देखे स्वप्न आय कौशिक मुनि दिये लषण रघुराजा
पुनि जनु कौशिक अरु वसिष्ठ मुनि बोले वचन उछाहीं
जैहौ अवध अवधपति मोदित चारिउ कुँवरन व्याही
सीता राम विवाह विदित जग औरहु सुनहु भुवाल
द्वितिय औरसी नाम उर्मिला जनक भूप लघु बाल
तासु विवाह लषणको होई कुशध्वज लघु नृप भ्राता
तिहि तनया मांडवि श्रुतिकीरति कीरति छबि विख्याता
करिहैं भरत विवाह मांडवी श्रुतिकीरति रिपुशाल
यहिविधि चारिहु कुँवर व्याहि जब चलिहौ अवधभुआल
तब मारगमहँ प्रबल विप्रसों ह्वैहै भांति महानी
द्विज निजतेज गवाँय हारि हिय जैहै मानि गलानी
कुशल सहित कौशलपुर जैहो कोशल नाथ उदार
ऐसो स्वप्न देखि रजनीमहँ नृप जागि कियो विचार
जबते स्वप्न लख्यो जगतीपति तबते नींद न आई
जाय याम बाकी निशि गुरुपहँ दीन्ह्यो स्वप्न सुनाई
कह वसिष्ठ कछु शंक करहु जनि देहु दिवाय नगारा
चलहु बरात साजि मिथिलापुर स्वप्न भयो सुखसारा
सजन सैन्य हित दिय निदेश नृप गमन दुंदुभी बाजे
सैनिक सकल वाजि गज स्यन्दन अतिहि अनंदन साजे

दोहा—मिथिलापुर हल्लापरयो, ऐहै आजु बरात।
अगवानी हित जनक नृप, साजि सैन विख्यात॥

छन्द त्रिभंगी।

गज मत्त गरट्टन वाजिन ठट्टन सकल सुभट्टन साजि

भट झट्टन पट्टन लै कर पट्टन हट्टन है चलि गाजि रहे ॥
बहु सजी अमारी हौदा भारी वर जरतारीकी झूलैं ।
नदत बहु नागे जिनके आगे गिरिश बिभागे नहिं तूलैं ॥
मिथिलेश मतंगा साजि सब अङ्गा परम उतंगा चलत भये ।
निमिकुल सरदारा करि शृङ्गारा भये सवारा मोद मये ॥
अति चंचल वाजी बनि बनि राजी तुरकी ताजी सोहिरहे ।
राजस अतिसादी उर अहलादी धृति मर्यादी बाग गहे ॥
पैदरन कतारा सुभग शृङ्गारा देव अकारा छबि छाये ।
तनु वसन सुरंगा भरे उमंगा जुरि इकसंगा तहँ आये ॥
चामीकर स्यन्दन वृन्दन वृन्दन चढे अनन्दन भटभारे ।
धरि ढल विशालाकर करवाला उन्नत भाला अनियारे ॥
निमि वंशिनवारे राजकुमारे सजे शृङ्गारे पशु धारे ।
नृप जनक हँकारे लहि सतकारे अमित हजारे सुकुमारे ॥
मिथिलापुरवासी आनँदरासी साजि साजि खासी शिरपागे ।
कंचुक तनु कांधे कम्मर बाँधे उर सुख धांधे अनुरागे ॥
इक एकन भाषैं उर अभिलाषैं अब इन आँखै सफल करै ।
लखि राम विवाहा परम उछाहा को महि माहासुखनभरै ॥
कोशल महराजू सहित समाजू आवत आजू सुखसानी ।
इतते सजि साजू निमिकुल राजू गमनत काजू अगवानी ॥
अस कहि २ पोरा लै सँग छोरा पश्चिम ओरा गमन किये ।
भइ भरिहि भारी सहित तयारी पुर नर नारी हर्षि हिये ॥
बहु चली पालकी रत्न जालकी नवल नालकी कनकमई ।
मुनिवृन्द सँवारे वेद अकारे ऋचा उचारे पुण्य चई ॥
फहरात निशाना नदत निशाना गायकगाना करत चले ।
सज्जन मतिमाना हिय हुलसाना किये पयाना भाउभले ॥

रथरत्न सँवारो अति विस्तारो वाजिन चारो चारु महा।
राकाशशि छत्रा परम विचित्रा आतप पत्रा राचि रहा॥
तांपर मिथिलेशा चढ्यो सुवेशा मनहुँ सुरेशा सोहिरह्यो।
लक्ष्मीनिधि प्यारो राजकुमारो तुरँग सँवारो गैल गह्यो॥
वरशतानन्द मुनिचढिस्यंदनपुनिचल्योसंग गुनिगाढसुखै।
मुनि याज्ञवल्क्य वर धर्मधुरंधर औरहु तपधर मुदित मुखै॥
पुरते छबि भारी कढी सवारी भै घहरारी चाकनकी।
बहु बजेसुहावनबाजन पावन जिन धुनि छावननाकनकी॥
दोउ नृपन मिलापा मोद कलापा देव अलाप करत सबै।
देखनके आसी नाकनिवासी गुणि सुखराशी ठानि जबै॥
सुरचढे विमानन बहुविधि आनन दशहुदिशाननभआये।
बरषैं बहु फूला गत सब शूला मङ्गल मूला यश गाये॥
उतते अवधेशा इत मिथिलेशा नहिं कम वेशा महराजा।
दुहुँ पुण्यहु जागीजगबडभागी सम अनुरागी छबि छाजा॥
दश सुतर सवारे जनक हकारे वचन उचारे तुम आवो।
मम अरज सुनावो नृपद्रुत आवो बिमल विहावो सुख छावो॥
द्रुत धावन धाये नृपदल आये वचन सुनाये दशरथको।
कहजनक प्रणामादरशनकामा चलियहि यामा गहिपथको।
ठाढे सुखमानी हित अगवानी आँखि लुभानी दरशनको।
लै विशद बराता आवहु ताता अब क्षण आता हरषनको॥
सुनि मैथिल वैना भरिउरचैना सजल सुनैना अवधधनी।
कह वचनतुरंता सुनहु सुमंता नहिं बिलवंता चलै अनी॥
दोहा--करहु सैन्यको शीघ्रही, द्वुतिया चन्द्र अकार।
हम अरु गुरु माधिमें रहब, अरु युग राजकुमार॥
आगे पैदर सुतर युत, पुनि वाजी रथ फेर।

पुनि मतंगमंडल चलै, करहु व्यूह बिन देर ॥
शासन पाय सुमंत तहँ, तैसहि सैन्य बनाय ।
मिथिला ओरहि शीघ्र गति, दियो बरात चलाय ॥

छंद चौबोला ।

योजन अर्ध गई जब सैना द्वितिया चंद्र अकारा ।
देखा देखी उभय सैन्यकी होत भई तिहि बारा ॥
जैसो व्यूह बनाय अवधपति चले मिलनके काजा ।
तैसै व्यूह बनाय चल्यो उतते मिथिला महराजा ॥
इतते महा महोदधि जावत उत रत्नाकर आयो ।
मानहु मिलत उमडि सिंधु युग कोलाहल क्षिति छायो॥
फहरानि नवल निशाननकी छबि तुंग तरंग समाना ।
राजी गज वाजिनकी राजी महा जंतु विधि नाना ॥
मिलत युगल चतुरंग उमंगन विलसैं मनहुँ अकाशा ।
घन मंडल भल युगल अखंडल मिलतआय दुहुँ आशा ॥
मानहु लै भारी तारादल तारापति हुलसायो ।
लेन हेत अगवानी आशुहि अंशुमान की आयो ॥
इत दिनकर सम दशरथ सोहत ग्रह सम सब रघुवंशी ।
उत महीप मैथिल मयंकसम उडुगण सम निमिवंशी ॥
जबते भई सैन्यकी देखा देखी दूरहि तेरे ।
तबते भये मंदगति दोऊ दल इक एकनको हेरे ॥
द्वितिया चंद्र सरिस दोऊ दल ताते प्रथम सिधारी ।
मिले कोनसों कोन चारिहूँ तब मंडल भो भारी ॥
भूमंडल सम सजी सैन्य मिलि निमिकुल रघुकुलवारी ।
इत कौशलपति मिथिलापति को को बड छोट उचारी॥
छैल छबीले राजकुँवर कोउ तरल तुरंग धवाई ॥

जनकाहि कराहिं प्रणाम हर्ष वश वाजी वेश नचाई ॥
तैसहि कोउ निमि वंश रँगीले हरवर अर्ब उडाई ।
आभिवंदन कारि अजनंदनको मिलहिं सैन्य निज जाई ॥
पीलवान गज मुखन उठावत हय झमकावत सादी ।
मन्द मन्द दुहुँ दिशि ते आवत दोउ दलके अहलादी ॥
वेला छोडि मनहुँ सागर युग बोरन चह संसारा ।
तिमि दोऊ चतुरंग विराजत सूझि न परत किनारा ॥
मिले तुरंगनसों तुरंग वर मिले मतङ्ग मतंगा ।
मिले पैदरनसों पैदर तहँ मिले सतांग सतंगा ॥
किये परस्पर आभिवंदन सब यथा योग्य व्यवहारा ।
मुदित बराती यथा घराती पूँछि कुशल बहु बारा ॥
पगे प्रेम महँ वीर परस्पर हाथन हाथ मिलावैं ।
हुलसि हुलसि हँसि हँसि रसके वश हाँसी वचन सुनावैं ॥
प्रतीहार कहि फरक फरक तहँ किये कछुक मैदाना ।
इतते कोशलपाल गयो तहँ उत मिथिलेश महाना ॥
गुरु वसिष्ठ अरु शतानंद मुनि भरत शत्रुहन दोऊ ।
चढ्यो तुरंत कुँवर लक्ष्मीनिधि आय गयो तहँ सोऊ ॥
दशरथ जनक नयन जुरिगे जब दोउ अभिवंदन कीन्हें ।
दोऊ पङ्कज पाणि पसारि मिलाय लूटि सुख लीन्हें ॥
कियो प्रणाम विदेह वसिष्ठहि पूछ्यो कुशल सुखारी ।
शतानन्दको वन्दे दशरथ छ्वै पग पाणि पसारी ॥
भरत कुँवर रिपुसूदन संयुत जनकाहि किये प्रणामा ।
लक्ष्मीनिधि कोशलपति वंदे लै अपनो मुख नामा ॥
पुनि वसिष्ठके चरण गह्यो चलि गौतमसुवन सुजाना ।
रघुकुल गुरु दीन्ह्यो अशीष तिहि पायो मोद महाना ॥

शतानन्दके चरण गहे पुनि भरत शत्रुहन दोऊ ।
आशिष दीन्ह्यो गौतमको सुत भये मग्न मुदओऊ ॥

दोहा–पुनि लक्ष्मीनिधि मुदितमन, कियो वसिष्ठ प्रणाम ।
आशिष दीन्ह्यो ब्रह्मसुत, होय पूर मन काम ॥

चौपाई ।

पूछि परस्पर सब कुशलाई । उभय भूप मुद लहे महाई ॥
कह्यो विदेह बहुरि कर जोरे । तुम्हरी कुशलकुशल अब मोरे ॥
तुम तो कुशल रूप महराजा । धर्मधुरंधर पुण्य दराजा ॥
तुम सम भूप न होवनहारे । राम लषण अस जासु कुमारे ॥
सबविधि मोहिं धन्यकरि दीन्ह्यों । मिथिला नगर आगमन कीन्ह्यों ॥
टूटी फूटी मोरि मडैया । तिरहुतके सब लोग लुगैया ॥
तिन्हैं जानबी अवध बसैया । सत्य कहौं करि धर्म दुहैया ॥
सुनि मिथिलापति वचन सुखारे । कह दशरथ दृग बहत पनारे ॥
जनकराज तुम हौ सब लायक । कस नकहौ अस वचन सुहायक ॥
ज्ञानवान विज्ञान स्वरूपा । विश्व विरागी भक्ति अनूपा ॥
दानि शिरोमणि निमिकुलभानू । कहँलगि करिय आप गुणगानू ॥
मोपर कृपा कीन मिथिलेशू । सकल भांति हरिलीन कलेशू ॥

दोहा–आये कौशिक संगमें, मेरे युगल कुमार ।
लहे सुयश जग जो कछुक, तौन प्रताप तुम्हार ॥

चौपाई ।

कहँ मिथिलेश बसे दोउ भाई । कौन हेत ल्याये न लिवाई ॥
सुनत विदेह कह्यो कर जोरी । देउ मर्यादा राखी मोरी ॥
जगपालक बालक नृप तेरे । रिपुघालक मालक हैं मेरे ॥
पूत सुपूतनकी बडवारी । सकैं न शेष गणेश उचारी ॥
राउर सुवन सहज निजजानै । त्रिभुवनमहँ तिन होत बखानैं ॥

राजराजमणि वेगि पधारो । निज नंदन निज नयन निहारो
अस कहि दोउ नृप स्यन्दन फेरे । वैरख फिरे दोउ दल केरे
चली चारु जनवास बराता ।सो सुख इकमुख नहिं कहि जाता
दशरथ लक्ष्मीनिधिहि बुलाई । लियो आपने यान चढ़ाई
जनक बुलाय भरत रिपुशाले । निज रथ लियो चढाय उताले
उभय महीपनके युग याना । मिले बरोबर कीन पयाना
गुरुवसिष्ठ अरु गौतमनंदन । उभय ओर चढि राजत स्यन्दन

दोहा-निमिवंशी रघुवंशी, अरिध्वंशी रणधीर ।
पूरण जगत प्रशंसी, मिले वीरसों वीर ॥
चली सेन दोउ संग इक, मिलि जनवासे ओर ।
मानहुँ पसरे सिंधु युग, करि वेलाको बोर ॥

चौपाई ।

मिथिला विश्व प्रदै सुख पीरा । साधन अगणित शयन शरीरा
काम क्रोध मद लोभहु चारी । मत्सर मोह शत्रु पट भारी
अहंकार आदिकन समाजा । तेइ सब जे आये खल राजा
जीव जानकी तिनहि विहाई । दृढता राम भक्ति मन लाई
नौधा भक्ति करी फुलवारी । गुरु कौशिक प्रभु लै पगु धारी
धनु भंगादिक प्रभु प्रभुताई । सिय जिय दृढता भक्ति कराई
जनक विवेक जियहि हरि पासा । पहुँचावनचह आति अनयासा
दशरथ प्रेम वसिष्ठ विज्ञाना ।जनकविवेकआशु तिहि आना
परब्रह्म रघुपति सुखसीवा । जनक विवेक देत सिय जीवा
कौसल्या प्रापति सुखदाई । अवध परमपद श्रुति सब गाई
सिय जिय चाहत करन पयाना । तिहि उत योग विवाह बखाना
मुक्ति सखीगण संग सिधै हैं । जगत जनकपुर पुनि नहिं ऐहैं

दोहा-अवध भवन कैंकर्यमें, रही मगन आनन्द ।
जहँ प्रभु जैहें तहँ जइं, पार्षद रूप स्वच्छंद ॥

चौपाई।

नगर निकट ह्वै चली बराता। लखन हेतु पुरवासिन व्राता॥
यूथ यूथ मारग महँ ठाढे। नर नारी आनँदरस बाढे॥
जनक नगर महँ फैली बाता। जनवासे कहँ जात बराता॥
गये निवासहि लषण नहाई। प्रभुको दीन्हीं खबरि जनाई॥
पिता अवधपुरते चलि आये। आपुसमहँ पुरजन बतराये॥
कह्यो राम अतिशय सुखमानी। लषण परत हमहूँ कहँ जानी॥
इत सुनात शत्रुंजय नादा। मम पतंग मन्दरमर्यादा॥
बजत विजय कर मोर नगारा। इत सुनि परत महा घहरारा॥
तोपैं चलहिं जनकपुर माहीं। देत सलामी मम पितु काहीं॥
चलहु कहहिं गुरुपहँ अतुराई। पिता दरशहित चलहिं लिवाई॥
अस कहिगे मुनिपहँ दोउ भाई। कहे वचन मृदु विनय सुनाई॥
सुनियत नाथ पिता पगु धारे। दर्शन लोभी नयन हमारे॥
दोहा–दर्शन करि आवहिं तुरत, जो आयसु गुरु होहु।
उचित होइ तौ आपहू, सहित कृपा चलि देहु॥
कहे वचन कौशिक विहँसि, चलिहैं हमहुँ विशेषि।
आजु न कोउ तुव पितुसारिस, लिह्यो लोकत्रय लेषि॥

चौपाई।

मन्द मन्द उत भूपति दोऊ। दोऊ सैन्य वीर सब कोऊ॥
निरखत नगर जातजनवासा। करत विविध विधि हासविलासा॥
भरत शत्रुसूदन दोउ भाई। कह लरिकाई वश अतुराई॥
देहु जनक नृप हमहिं बताई। केहि थल बसत लषण रघुराई॥
राज कुँवरके वचन सुहाने। सुनत विदेह हर्षि मुसक्याने॥
ह्लमि वदन बोले सुनु ताता। यहि पुर वसत युगल तव भ्राता॥
लखि हौ आजु अवशि निज भाई। कौशिक सहित लषण रघुराई॥

सुनि पुलके दोउ बंधु अपारा। कह्यो जनकसों अवध भुवारा॥
सुन्दर भयो पुरी निरमाना। अलका अमरावती समाना॥
आपु सरिस हरिदास प्रधाना। बसैं सहित जहँ ज्ञान विज्ञाना॥
है वैकुण्ठ सरिस पुर सोई। आवहिं सदा सन्त सब कोई॥
यहि विधि करत परस्पर बाता। जात चली जनवास बराता॥

दोहा–धाय धाय देखैं सबै, मिथिलापुर नर नारि।
बारहिंबार बखानहीं, दशरथ भाग्य उचारि॥

चौपाई।

धन्य धन्य कौसल्या रानी। धन्य धन्य दशरथ गुणखानी॥
जाके राम सरिस सुत भयऊ। अब का भव वैभव रहि गयऊ॥
अस सब कहहिंविविध विधिबानी। दशरथ भाग्य न जायबखानी॥
पुनि कोउ कहहि परम विज्ञानी। परचो हमहिं सबको असजानी॥
जनक सुकृत मूरति वैदेही। जासु प्रभाउ विदित नहिं केही॥
हम सब धन्य जनकपुरवासी। लखे भूप दोउ पुण्य प्रकासी॥
कोउ तिय कहै सुनो सखि बानी। सुन्दर जोरी जस मुनि आनी॥
तैसहि युगल कुँवर अति लोने। दशरथ सँग आये मिठलोने॥
और हजारन राजकुमारे। तिनके सरिस न परै निहारे॥
यहि विधि करहिं परस्पर बाता। सुख न समात विलोकि बराता॥
वर्षहिं सुमनस सुमन अपारा। चढे विमानन देहिं नगारा॥

दोहा–जय मिथिलापति अवध पति, मच्यो गगन माहिशोर॥
उपरअमर अधजन नगर, रह्यो न बाकी ठोर॥

चौपाई।

करत बराती हास विलासा। आये सकल सुखद जनवासा॥
निरखे सब अनूप जनवासा। सत्य सत्य जनु स्वर्ग विलासा॥
अवध जनकपुर ते अधिकाना। निरखि देवगण चित्त लुभाना॥

बन्यो राजमंदिर अति भारी। शक्र सदन सम जासु तयारी ॥
महामेरु मंदर सम तुंगा। चमकहिं मनहुँ हिमालय शृँगा ॥
सभासदन अति बन्यो विशाला। सैन्य सदन सुन्दर शशि शाला॥
मज्जन भोजन भवन विभागा। चहुँकित चारु तडाग सुबागा ॥
कल कंचनकी कलित कियारी। झरहिं फुहारन सुरभित बारी ॥
पराशि भूमि लतिका लहराहीं। फूलि फूलि परिमल पसराहीं ॥
लता भवन वर लता विताना। फूल सकल ऋतुके फल नाना ॥
कुंजन कुंजन गुञ्जहिं भँवरा। कलरव करहिं विहँग चहुँओरा ॥
तन्यो चौकमहँ वसन विताना। कनक रत्न रंजित विधि नाना ॥

दोहा–चारिहु भाइनके भवन, राजभवन विस्तार।
भिन्न राज कारज भवन, विस्तर कोशागार ॥

चौपाई।

गजशाला बहु वाजिनशाला। सचिवसदन भटसदन विशाला॥
चौहट हाट बनी हाटककी। मर्यादा आमन फाटककी ॥
कनक कपाटन कलित दुवारा। परिजन भवन परम विस्तारा ॥
कमला तीर मनोहर वासा। योजन युगल बन्यो जनवासा ॥
शीरी सघन सुखद अमराई। शाखा क्षिति छ्वै छ्वै छबि छाई ॥
अति उतंग चहुँओर दिवाला। पुर इव गोपुर बन्यो विशाला ॥
सचिव सभासद भट सरदारा। सबके पृथकहि पृथक अगारा ॥
गमनी जब बरात जनवासा। लखे यथा सुरलोक विलासा ॥
कहे जनक कोशलपति पाहीं। यदपि रावरे लायक नाहीं ॥
तदपि निवास करहु नृपराई। गुनि निज सदन सहित सँकराई॥
जो कछु बन्यो सु दिय बनवाई। नाथ दिखावत लाजहि आई ॥
कह्यो अवधपति हँसि सुख मोई। याते अधिक विकुंठहि होई ॥

दोहा–भल रचना कीन्हीं नृपति, दिय सुरलोक बनाय।
बसब इतै हम सब सुखी, आप बसो गृह जाय ॥

चौपाई।

जनक वेगि अब गणक बुलाई। तनक चित्त दै लग्न शुधाई॥
गुरु वासिष्ठ गौतम मुनि काहीं। ज्योतिषके. आचारज आई॥
शतानन्द आदिक मुनिराई। रचहु समाज आज उत जाई॥
करि सिद्धांत लग्न महिपाला। फेरि करहु व्यवहार विशाला॥
याचक बहु याचन विधि कीना। दान होत दाता आधीना॥
तुम दाता विदेह महिपाला। हम राउर याचक यहि काला॥
आये अमित नरेश कुमारा। अब सबको नृप आप अधारा॥
दानि शिरोमणि भूप विदेहू। मिटिहै अवशि सकल सन्देहू॥
सुनत सयुक्ति अवधपति बानी। भूप विदेह महासुद मानी॥
बोल्यो मंद मंद मुसक्याई। का क्षति जहँ वसिष्ठ मुनिराई॥
अस कहि माँगि बिदा मिथिलेशा। वंदन करि पुनि चल्यो निवेशा॥
जाय निवास विदेह उदारा। पठयो विविध भाँति सत्कारा॥

दोहा–सुमति सचिव गौतम सुवन, ल्याये सब सत्कार।
दियो बरातिन वास वर, यथा योग्य आगार॥

चौपाई।

सुखी बरात बसी जनवासा। लहे सकल जनु स्वर्ग विलासा॥
कनक कलश कोपर बड थारी। कूंड कुंभ मंजूषा झारी॥
भरि भरि भोजन पान प्रकारा। सुधा सरिस पकवान अपारा॥
पुहुप विभूषण रत्न समेतू। विविधभाँति फल सुधा निकेतू॥
विविध भाँतिकी बनी मिठाई। वस्तु अमित घृत पक्क सुहाई॥
विविध भाँतिके रुचिर अचारा। लेह्य चोष्य वर पेय प्रकारा॥
भोजन योग्य बस्तु बहु ओरा। जे नरलोकमाहँ शिरमोरा॥
जौन वस्तु प्रिय देवन काहीं। दुर्लभ जे महि लोकहि माहीं॥
सकल बरातिन वसन अपारा। रह्यो जौन जस लघु बडवारा॥

कनक रजत रंजित जरतारी । तनधारक पट मुकुट किनारी ॥
जे लखि भूपति देव सिहाहीं । खान पान धारण मनमाहीं ॥
यथायोग्य जस जौन बराती । अति उत्तम नृप कहँ सब जाती ॥

दोहा-मंडप कुसुमनके विविध, पुहुप फरस विस्तार ।
और पदारथ मोदप्रद, कहँलग करी उचार ॥

चौपाई ।

भरि भरि काँवरि सुघर कहारा । तिमि भरि शकटन ऊंट अपारा ॥
शतानंद अरु सचिव लिवाई । कोशलपालहि नजर कराई ॥
दीन्हें पूरि बरातिन काहीं । रही कछुक अभिलाषा नाहीं ॥
भूपति हेत पदारथ जेते । सादर लै बाँटे नृप तेते ॥
विश्व उदार शिरोमणि राऊ । लघु बड जान्यो एकहि भाऊ ॥
शतानंद अरु मंत्रि सुदावन । आये अवधनाथ ढिग पावन ॥
तिन आगे चिउरा दधि राखे । बोले वचन जनक जस भाखे ॥
जोरि पाणि युग नावत शीशा । जनक कह्यो सुनु अवधअधीशा ॥
दधि चिउरा उपहार हमारा । लेहु कृपा करि अवध भुवारा ॥
अवध विभव वासव नहिं तूलै । किमि सत्कार करौं सुख मूलै ॥
जो कछु विभव नरेश हमारा । सो सब अहै विशेषि तुम्हारा ॥
सुनत विदेह वचन नृपराई । दधि चिउरा लै शीश चढाई ॥

दोहा-सादर बोल्यो अवधपति, कहि प्रणाम मुनि मोर ।
पुनि विदेहसों अस कह्यो, सकल अनुग्रह तोर ॥
अहहु महात्मा ज्ञानिवर, निमिकुल पंकज भानु ।
यह प्रसाद सब रावरो, भव भागवत प्रधानु ॥
शतानंद अरु सचिवको, कहि सादर यहि भाँति ।
बिदा कियो दशरथनृपति, करि प्रणाम मुद माति ॥
भोजन काल विचारिकै, उठन चह्यो महिपाल ।
इच्छा परयो बरातमें, यकबारहि तिहि काल ॥
रामलषण लै संगमें, दशरथ दर्शन हेत ।

आवत विश्वामित्र अब, तुरत गाधि कुलकेत ॥
उतै मध्यदिन शुभ समय, जानि गाधिकुल चंद ।
चल्यो अवधपति मिलनहित, सहितलषण रघुनन्द॥

कवित्त ।

भोजन करत रह्यो भोजन बिसारि धायो, पानको करत
पान बिसरायो है । सोवतरह्यो जो वैसही सो उठिधायो
मज्जन करत धायो नीके न नहायो है ॥ करत हतो जो
जौन जौन जोई जन, परत अवाज कान तौनही भुलायो
सकल बरातमाहीं चारों ओर शोर छायो, रघुराज आयो
रघुराज आयो है ॥ रामसखा जेते रहैं तेते सब धाय
नगर कढत रामलषणको लीन्हे हैं । नाम लैलै आपने बताय
कामधाम, बापको बताय कहैं आप हमें चीन्हे हैं ॥ मुनि
राखिबेको जबते कढेहौ मीत, हमको न काहे एक पाती
दीन्हे हैं । रघुराज व्याह होत है गई बेलंद आँखें,
निवासिन मिताई नई कीन्हे हैं ॥ खायो एक साथ
खेले एक साथहीमें, साथसाथ शैन कीन्हे सैर त्यों शिकार
मातु पितु मानि एक भेद नहिं राखे नेक, टारे नहिं टेक न
बारबारको ॥ अब दिन दशते निकारि अवधूतसंग,
मिजाज नहिं कौशिक कुमारको । तूरिकै पुरानी
आज रघुराज, भूलिगे हमारी सारी यारी प्यारे यारको ॥

दोहा–प्रेम लपेटे अटपटे, सुनि सखानके बैन ।
मुनि सकोचवश नहिं भनत, विहँसत राजिव नैन॥
कीन्ह्यो शयन प्रवेश जब, राम लषण मुनिसङ्ग ।
जुरे अवध वासी सकल, मच्यो महा सुख रंग ॥

चौपाई ।

परहिं चरण कोउ अवधनिवासी । देहिं प्रदक्षिण कोउ सुखरा
चूमहिं वदन मदन छबिवारी । शालि सुखात लही जनु

गद्गद गर रोमांचित देहा। वचन कढत नहिं अधिकसनेहा॥
निरखहिं राम लषण मुख चंदा। बिते कल्प मनु मिल्यो अनंदा॥
कह्यो नृपहिं कोउ भर्यो उमंगा। आवत राम लषण मुनि संगा॥
जात रहे भूपति ज्यौनारे। राम लषण कहँ लखन पधारे॥
भई भीर दशरथके द्वारे। निकसत जन कारि जोर निकारे॥
भरत शत्रुहन अति अतुराई। आय गये सुनि राम अवाई॥
आये तहँ निषादपति आशू। बाढ्यो रघुपति दरश हुलासू॥
आये रघुकुल राजकुमारा। राम दरश लालसा अपारा॥
राम लषणकी सुनत अवाई। गुरु वसिष्ठ आये हरषाई॥
गुरुवसिष्ठ अरु कौशलपाला। सहित निषाद भरत रिपुशाला॥

दोहा—चले लेन आगे कछुक, कौशिककी अगुवानि।
मनो महासुख सिंधु में, हिलेजन्म धनि जानि॥

चौपाई।

उतते आये गाधि कुमारे। सहित, युगल दशरत्थ दुलारे॥
इतते कारि वसिष्ठमुनि आगे। राज समाज गई अनुरागे॥
विश्वामित्र वसिष्ठहि देखी। कियो प्रणाम महामुद लेखी॥
पूछि परस्पर मुनिकुशलाई। बारहिं बार मिले सुख पाई॥
तिहि अवसर आये दोउ भ्राता। गहे दौरि गुरुपद जलजाता॥
आशिष दै वसिष्ठ मुनिराई। लिये दुहुँन कहँ अंक उठाई॥
चूमि वदन सूँघ्यो मुनि शीशा। चिरजविहु अस दीन अशीशा॥
निरखि गाधिसुत कोशलराऊ। गिरि गहि रह्यो गाढयुग पाऊ॥
दै अशीष मुनि चहत उठाई। उठत न भूप प्रेम अधिकाई॥
जसतसके मुनि नृपहि उठायो। पुनिपुनि मिलत नयन जलछायो॥
गद्गद कंठ कढत नहिं बाता। खडो जोरि नृप कर जलजाता॥
पूछत कुशल पुलकि मुनिनाहा। बहत भूप दृग अम्बु प्रवाहा॥

दोहा–धनुष यज्ञ पुत्रेष्टि करि, कौशिक यज्ञ कुमार ॥
आय आजुही जनु दियो, युगल कुमार उदार ॥

चौपाई ।

जस तसकै नृप सुरति सम्हारी । बोल्यो वचन बहत हगवारी
नाथ कृपा फल मुहिं दरशायो । राम लषण मैं आजुहि पायो
जो कछु कीरति सुगति बडाई । सुनियत राम लषण इत पाई
सो तुव पद पंकज प्रभुताई । द्वितियभाँति नहिं सजाति बडाई
तुम समानको दीनदयाला । दीन्ह्यो मुहिं दिखाय दोउ लाला
तापर सुयश प्रताप बडाई । जनक वंश महँ व्याह कराई
तुम सम सज्जन जे जग माहीं । तिन कहँ यह अचरज कछु नाहीं
अस कहि पुनिपुनि वन्दत चरणा । दशरथ हर्ष जाय नहिं वरणा
राम लषण पुनि दोउ सुख साने । पिताचरण पंकज लपटाने
लिय उर लल्कि लगाय भुवाला । तुलै न ब्रह्म मोद तिहि काला
अज महेश ध्यावत जिहिं काहीं । शेष वर्णियश पार न जाहीं
नेति नेति जिहि वेद बखाना । वेद विबुध मुनि कारक जाना

दोहा–ताहि गोद लै अवधपति, नयनन नीरबहाय ।
कहत गाधिसुतकी कृपा, गयो पूत मैं पाय ॥

चौपाई ।

गद्गद गर कछु बोलि न आवत । पुनिपुनि तनफलपनस बनावत
मनहुँ विरंचि खिलावन हेतू । लियो अंक रवि शशि सुखसेतू
मनु वत्सल रस परम निशंका । कीन्ह्यो दास्य शृंगारहि अंका
मनु कश्यप अश्विनीकुमारा । लीन्हें अंक अनंद अपारा
चूमत मुख सूँघत पुनि शीशा । गद्गद गर नहिं गदत महीशा
सुमनस सुमन वर्षि झरि लाये । दून दुंदुभी दिशन बजाये
भरत शत्रुहन पुनि दोउ भाई । परे चरण रघुपतिके जाई

राम दुहुँन उर लियो लगाई । बार बार दृग वारि बहाई ॥
भरत चरणकिय लषण प्रणामा । सो दिय आशिष पूजै कामा ॥
रिपुहन लषण चरण शिर नाये । परम प्रमोद बन्धु दोउ पाये ॥
रिपुहन भरत दौरि पुनि जाई । कौशिक चरण गहे हरषाई ॥
गाधिसुवन दिय आशिर्वादा । सुखी रहौ ध्रुव भुव मर्यादा ॥

दोहा–सखा सखा कहि दौरि पुनि, मिले निषादहि राम ।
मिलन देखि रविरथ रुक्यो, भयो दून सो याम ॥

कवित्त ।

गुरुजन जेते रहे परिजन जेते रहे,पुरजन जेते रहे मन्त्री सरदार हैं। जेते सम्बन्धी जेते खेलन प्रबन्धी जेते, और अनुबन्धी रहे भूपन कुमार हैं ॥ रघुराज ताही क्षण चरित कियो कृपाल, मिले सबहीको जाने हमहीं पियार हैं।काका कहि बाबा कहि भाई कहि बंधु कहि, मीत कहि सखा कहि हितू कहि यार हैं ॥

दोहा–यहि विधि सबसों मिलि तहां, पितु मुनि बन्धु समेत ।
जाय वितान तरे मुदित, बैठे कृपानिकेत ॥

चौपाई ।

कनक सिंहासन युगल मँगाये । गुरु वसिष्ठ कौशिक बैठाये ॥
चापत चरण महीपति बैठ्यो । मानहुँ मोद महोदधि पैठ्यो ॥
निकट बैठ तहँ चारिहु भाई । राजकुमार समाज सुहाई ॥
देखत सुछबि लहत अहलादा । सायुध ठाढो राज निषादा ॥
जबते राम लषण दोउ भाई । कियो प्रवेश बरातहि आई ॥
तबते विरह ताप दुखदाई । मिटी मेघ जिमि मारुत पाई ॥
सबके हिय नहिं हर्ष समाई । दशरथ दशा जाय किमि गाई ॥
जस तसके धरि धीरज राजा । बोल्यो कौशिकसों तजि लाजा ॥
गृहते मोहिं बुलाय पठायो । प्रभुशासन शिरधरि इत आयो ॥
चारिहु कुँवर रावरे केरे । मैं नहिं जानहूँ हे मुनि मेरे ॥

उचित होय सो शासन दीजै । मुहिं अपनो सेवक गुणि लीजै ॥
पालै पोषै जो जिहि काहीं । सो ताको पितु संशय नाहीं ॥

दोहा–राजराजमुनि के वचन, सुनि कौशिक मुसक्याय ।
सुखसानी बानी कही, मनमानी मुनिराय ॥
मखरक्षण हित माँगि मैं, ल्यायों युगल कुमार ।
तुमहिं समर्पण करत ते, लीजै अवधभुवार ॥

चौपाई ।

अस कहि राम लषण गहि हाथा । सौंप्यो नृपहि मुदित मुनिनाथा ॥
दशरथ कह्यो न मैं अब लैहौं । दीनवस्तु नहिं घर लै जैहौं ॥
राउर सुत रह राउर पासा । आप कृपावश मोहिं न त्रासा ॥
मुनि मुसक्याय कही तब बानी । राउर सुत सबके सुखदानी ॥
सबके निकट भिन्न सबहीते । कबहुँ न टरत हमारे हीते ॥
को अस जगमहँ भूप सुजाना । इनहिं छोडि लागै प्रिय आना ॥
जगत महाप्रिय जग हितकारी । जे इन लखत तासु हद चारी ॥
धन्य धन्य तुम अवध अधीशा । पायो सुत दाया जगदीशा ॥
अब यह शासन मम सुनि लीजै । चारिहु कुँवर संगमहँ कीजै ॥
भोजन भवन तुरंत सिधारी । अशन करहु लै पुत्रन चारी ॥
हम वसिष्ठ पुनि आउब काली । करब विवाह उछाह उताली ॥
अस कहि कौशिकमुनि सुखसेतू । गये वसिष्ठ समेत निकेतू ॥

दोहा–उठ्यो भूप भोजन करन, संयुत चारि कुमार ।
चले राजवंशी सकल, संग करन ज्यवनार ।

छन्द चौबोला ।

भोजन करन लग्यो भुवालमणि भोजन शाला माहीं ।
आगे पुरट पटन बैठायो चारिहु भाइन काहीं ॥
सिगरे राजकुमार और तहँ बैठे आसन जोरे ।

बैठ चक्रवर्ती चामीकर चौकीमहँ माधे ठोरे ॥
कनकथार कंचन भाजन भल भरि भरि व्यंजन नाना।
प्याले पुरट विशाले जल भरि ल्याये सूद सुजाना ॥
कंठन कठुले कडे करनमें हीरन जडे अपारे ।
सूपकार शुचि पहिरि लसत युग पीतांबरन पखारे ॥
यथायोग्य पुनि यथायोग्य रुचि परुसे भोजन मीठे ।
सुधा लगत आगे जिन सीठे कबहुँ न खात उबीठे॥
दै बालि वैश्वदेव अचमन करि भोजन विधि निरधारी ।
भाषि संबै लक्ष्मीनारायण खान लगे सुखधारी ॥
भोजन करत जात भूपतिमणि लखत लषण अरु रामै।
पूछत कौन भाँति मख राखे करि निशिचर संग्रामै॥
कौन भाँति ताडुका सँहारी लगी न डर लखि घोरा।
सुनियत गौतम नारि प्रगट भइ परशि पाउँ पुनि तोरा॥
कौन उपाय पुरारि पिनाकहि भंज्यो मध्य समाजा ।
कहँ पायो इतनो बल लालन जहाँ बली सब राजा ॥
प्रभु मुसक्याय कह्यो पितु मैं नहिं जानहुँ कारण कोई ।
आप प्रताप कृपा कौशिक की मोर जोर यतनोई ॥
कौन कलेऊ देत रह्यो तुहिं किमि सोये तृण सेजू ।
चले चरण कोमल कठोर महि मुनि कसक्यो, न करेजू॥
वनवन आतप वात सहत बहु व्यथा न भइ तनुमाहीं।
को सोपाति सब भाँति कियो तव घरके कोउ सँग नाहीं॥
प्रथम लषण लरिकाईके वश कहे वैन अतुराई ।
पिता अवध ते कढत महामुनि विद्या युगल पढाई ॥
का कहिये विद्या प्रभाव पितु भूख प्यास नहिं लागी ।
थाक नींद आलस्य अबलता हमरे तनु ते भागी ॥

राम कह्यो सोपाति सब जैसी कौशिक करी हमारी।
तस नहिं कीन्ही अवधमहलमें त्रिशत साठि महतारी॥
जानिपरो नहिं हमहिं विपिनदुख घरते सुख अधिका
जिमि राखतीं पलकनयननातिमि राख्योमुनि भगवाना॥
सुनि भूपति करनी कौशिककी महामोद मन मान्यो।
बारहिंबार सराहि पुलकि तनु समाधान उर आन्यो॥
यहिविधि भोजन करत सुतनयुत वदतवचन सुखसा
करि आचमन उठे अवनीपति आनँद माहिं अघाने॥
धोय चरण कर पहिरि वसन कछु शयनसदननृप गय
इतै राम ल बंधु सखा सब बैठ प्रमोदित भयऊ॥
पूछन लागे कथा सखा सब भरत लाल करि आगे।
कहन लगे प्रभु चरित कियो जस सहज लाज रस पागे
हँसि बोल्यो कोउ राम विवाहहु काहे जनक कुमारी।
जहँ चाहहु तहँ तुम पषाण ते लेहु प्रगट करि नारी॥
सुनत हास रस हँसे सखा सब प्रभु नेसुक मुसक्याने
लषण कही तुम प्रगटत पेखे सब थल नारि पषाने॥
कोउ कह मारि नारि निश्चरकी रसिक नाम किय हानी
हरि हँसि कह्यो हते पापिनिके हानि भई सुखखानी॥
यहिविधि हास विलास करत प्रभु सखनसंग युत भाई।
धावन चलि तब खबरि जनायो मिथिलाराज अवाई॥
दोहा—घटिका द्वै बाकी दिवस, जानि उठ्यो अवधेश।
सभासदन बैठ्यो हुलसि, गुनि आवनि मिथिलेश॥

छन्द चौबोला।

परिचर बोलि कह्यो कोशलपति रामहिं ल्याउ लिवाई।
आवत सभा हेतु मिथिलापति आवें चारिउ भाई॥

मंत्री सचिव सुभट सरदारन राजकुमारन काहीं।
कुलके सकल वृद्ध रघुवंशी ल्याउ लिवाय इहाँही॥
डेरन डेरन दौरि दूत सो शासन दियो सुनाई।
सजि सजि साज सबै रघुवंशी आये सभा सुहाई॥
युगल सिंहासन मणिन जटित तहँ सभा मध्य धरवाये।
तैसहि युगल सिंहासन सन्मुख धरवाये छबि छाये॥
तिनते लघु पुनि पंच सिंहासन सन्मुख सुभग सुहाये।
निमिवंशिन रघुवंशिन आसन यथा योग्य लगवाये॥
राजकुमार सबै रघुकुलके जस जस आवत जाहीं।
यथायोग्य अपने अपने थल बैठत जात सुहाहीं॥
सादर लै सुमंत बैठावत यथा राज मरयादा।
सचिव मुसाहिब नृप सरदारन वदत भूप धनिवादा॥
जुरे सभाजित सब रघुकुलके दशरथके दरबारा।
राज विभूति विराजि रही वर राज समाज अपारा॥
तिहि अवसर आये रघुनंदन सँग सुन्दर त्रय भाई।
माथे मुकुट मणिनके गाथे भाथे कन्ध सुहाई॥
जगमगात जामा जरकसको कसि कम्मर रतनाली।
डारे ढालनमें करवालन ढालन पीठि विशाली॥
चरण वसन मणि जडित उपानहु वाम पाणि धृत चापा।
दक्षिण कर सुन्दर शर सोहत प्रगटत परम प्रतापा॥
कानन कुंडल मंडल मंडित आनन शशि मदगारी।
केसरि रेख विशाल भालमें श्याम अलक मनहारी॥
पंच मणिनकी अतिविशाल उर लसत मालछबिजाला।
भुज अङ्गद कर कटकविराजतकटि कटि बंध विशाला॥
मणि मंजीर हीरके मंडित पदपङ्कजन सुहाहीं।

मनु शृंगार रस धारि चारि वपु आवत वत्सल पाहीं ॥
चारि चारि चारहुके चामर चलत चाहि चहुँओरा ॥
उदयमान मनु युग रवि युगशशि भ्राजतभूप किशोरा ॥
आये सभामध्य रघुनायक ठाढी भई समाजा ॥
किये प्रणाम पिताके पद गहि आशिष दीन्यो राजा ॥
बैठे कनकासनमहँ सन्मुख सभा प्रभामहँ पूरी ॥
धावन धाय आय तिहि अवसर कह्यो जनक नहिं दूरी ॥
पठयो वेगि सुमंतहि दशरथ ल्यावहु आशु लिवाई ॥
जाय सुमंत विदेह भूपसों कह्यो वचन शिरनाई ॥
महाराज मिथिलेश कुँवर युत आशुहि धारिय पांउ ॥
तुम्हरे दरश आश करि बैठ्यो सभा सु कौशलराउ ॥
सुनत विदेह वचन मंत्रीके सपदि सैन्य चलवायो ॥
मैं आवत हौं आशु उतै अब अस कहि सचिव पठायो ॥
गै अरगन वाजिनकी राजी रथ यूथन ताजि द्वारे ॥
चलोसुखासनचढमिथिलापतिचहुँकित निमिकुलवारे ॥
सुनि नकीबको शोर जोर तहँ अवधनाथ सुखमानी ॥
करि चारिउ कुँवरनको आगे चल्यो लेन अगवानी ॥
उत लक्ष्मीनिधिको आगे करि निमिकुल सहित समाज
मिलनहेत दशरथके आयो वर विदेह महराजा ॥
सभाद्वार लौं जाय अवधपति निमिकुल कुमुदमयंकै ।
करिप्रणाम सुखधाम प्रेमवश लियो भुजन भरि अंकै ।

सोरठा–कियो विदेह प्रणाम, महाराज अवधेशको ।
पूछि कुशल तिहि ठाम, मोद मग्न दोऊ भये ॥

छंद चौबोला ।

दीनबन्धु पुनि बन्धु चारिहूँ कियो विदेह प्रणामा ।

अजनन्दनको पुनि किय वंदन नंदनजनक ललामा।
पंच कुमार चले आगे कछु पाछे भूपति दोऊ॥
सो छबि देखि मग्न आनँदमहँ दोउ कुलके सब कोऊ।
मनहुँ ज्ञान अरु प्रेम रूप धारि संग पंच रस लीन्हें॥
मिलत परस्पर अतिप्रमोद भरि निज अधिकारहि चीन्हें।
उभय उच्च सिंहासनमें दोउ बैठे भूप समाना॥
लघु सिंहासन पंच विराजे पांचौ कुँवर सुजाना।
अपने दाहिने दिशि बैठाये दशरथ निमिकुल राजै॥
आप विदेह वाम दिश बैठे गुनि मर्यादा काजै।
बैठ विदेह ओर निमिकुलके यथायोग्य सरदारा॥
दशरथ ओर बैठ रघुकुलके जिहि यश रह अधिकारा।
अतरदान अरु पानदान बहु रत्न सुमनके हारा॥
ल्याय सुमन्त ठाढे भो आगे धरि पन्नाके थारा।
कौशलपति निज पाणि पान दिय सहित सनेह विदेहैं॥
पुनिनिज हाथन अतर लगायो मिथिलापतिके देहैं।
पितु रुख लखि उठिकै रघुनन्दन जनकहि अतर लगायो॥
निज कर लै विदेहको सादर प्रभु तांबूल खवायो।
पुनि उठि भरत पाणि अपनेसों सुमनमाल पहिरायो॥
लक्ष्मीनिधिके राम आय पुनि रत्नमाल गल नायो।
अतर लगायो भरत अंगमहँ बीरा लषण खवाई॥
शत्रुशाल सिगरे निमिवंशिन किय सत्कार बनाई।
प्रतीहार आयो तिहि अवसर मुख जय जीव सुनाई॥
विश्वामित्र वसिष्ठ मुनिनकी: दियो सुनाय अवाई।
मुनि आगमन सुनत दोउ भूपति चले लेन अगवाई॥

कारि आगे पांचौ कुमार कहँ द्वार देशलौं जाई
विश्वामित्र वासिष्ठ चरणमहँ पंच कुमारन
किये दंडवत्त दोउ नरनायक कहे नाथ पशु घाई
लै दोउ मुनिनायक नरनायक सिंहासन बै
सविधि दुहुँनको पूजि परशिपद कह धनि भाग्य हमा
लहि शासन निजनिज सिंहासन आसन किये भुवा
मनहुँ विवेक धर्म ढिग आये ज्ञान विज्ञान विशा
पांचहुँ कुँवर बैठ कनकासन मुनि नृपके मधि मा
युगल छत्र क्षिति नाथन माथे चमर चलत चहुँ घा
निमिकुल रघुकुलकी समाज लखि दोउ मुनिवैन उ
धनि कौशलपति धनि मिथिलापतिको नृपसरिस तुम्हा
कोटिन वर्ष व्यतीत लहे तनु कबहुँ न अस मुद
यथा दराज समाज आज हम सम समधी दग
कहहु विवाह उछाह लखब कब अब सब भव अभि
दोउ नृप जब कहँ लग्न शोधिये तब ह्वैहै शिव सा
का पूछहु हमसे दोउ मुनिवर यह सब हाथ तुम्हा
निमिकुल रघुकुल तुव अधीन अब नहिं शिरभार हमा
कह्यो वसिष्ठ कालिह कौशलपति जनकनिवास सिधै हैं
तहँ हम कौशिक शतानन्द मिलि लग्न विचारि बतै हैं
यही कियो सिद्धांत उभय नृप सुखी भये सब लो
माँगि विदेह बिदा दशरथसों चल्यो भवन विन शो
द्वार देश पहुँचाय अवधपति संध्या करन सिधा
निज निज भवनगवन कीन्ह्यो पुनि चारिहु बन्धु सुखा

दोहा-संध्या करि सिगरे तहां, किये बिआरी जाय।
रैन शयन कीन्हे सुखी, पितु युत चारिहु भाय॥

छंद चौबोला ।

गये विदेह गेह दशरथके सने सनेह सुखारी ।
कियो शैन भरि चैन रैनमहँ संध्यादिक निरधारी ॥
ब्रह्म मुहूरत उठ्यो महीपति ब्रह्म निरूपण कीन्ह्यो ।
प्रातकृत्य करि कीन्ह्यो मज्जन सज्जन सँग मन दीन्ह्यो ॥
करिकै ज्ञान विज्ञानहु साधन संध्या हरि विधि पूजा ।
मंडित भयो सभा मंदिरमहँ कौन तासु सम दूजा ॥
शतानंद अरु सचिव सुदावन धावन पठै बुलायो ।
पुनि वसिष्ठ अरु विश्वामित्र बुलावन दूत पठायो ॥
गौतम याज्ञवल्क्य आन्यो तहँ भई मुनीन समाजा ।
आये जनक गनक सिद्धांती ज्ञान त्रिकालहु काजा ॥
शतानंदसों कह्यो जनक तब आशुहि दूत पठाओ ।
सांकाशी नगरीको वासी कुशध्वजको बुलवाओ ॥
मम लघु भ्राता अतिशय ज्ञाता लै रनिवास सिधारे ।
सांकाशी शोभा लखि मनमें पुहुप विमानहुँ हारे ॥
इच्छुमती सरिता चहुँ दिशिते घेरे दुर्गम दुर्गा ।
बस्यो कुशध्वज तिहिपुर जबते रक्षति दिन दिन दुर्गा ॥
शतानंद देखन तिहि चाहौं यहि सुख शामिल होवै ।
करे राम दशरथ बंधुन युत सिय विवाह दृग जोवै ॥
सुनि विदेहके वचन पुरोहित चारण चारि बुलायो ।
वेगवंत दै चारि तुरंगम शासन सपदि सुनायो ॥
यथा वासवानुज बुलवावत वासव दूत पठाई ।
तथा चारि चारण पठवाय विदेह बुलायो भाई ॥
तरल तुरंग दूत चढि धाये गये पुरी संकासी ।
करि वंदन कुशकेतु चरण गहि कहे वचन सुखरासी ॥

नृप मिथिलेश जेठ भ्राता तुव दै निदेश हम काहीं
आप बुलावन हेत पठायो त्वरा विवश रवत नाहीं
सुनि मिथिलेश निदेश शीशधारि लै सिगरो रनिवासा
सैन साजि चतुरंग चल्यो चढि स्यंदन परमप्रकासा
आयो जनक नगर अतिपावन जनकहि खबरि जनायो
सुनत अनुज आगमन अनंदित अवनीपति बुलवायो
शीरध्वज महराज सभामहँ वार कुशध्वज आयो
शतानन्द पदवंदन कीन्ह्यो जनक चरण शिरनायो
उठि अनुजहि मिलि दै आशिषबहु निज आसन गहिपानी
शीरध्वज महराज कुशध्वज बैठायो मुद मानी
कुशल प्रश्न पुनि पूछि नेह भरि पाछिल कथ बखानी
आई अवध बरात जौन विधि लियो यथा अगवानी
रनिवासहि रनिवास पठायो मुदित भये दोउ भाई
तिहि अवसर इक प्रतीहार कह कौशिककेरि अवाई
मिथिलाधिप दोउ बंधु चले द्रुत शतानन्दकारे आये
कौशिक पद पंकज गहि प्रणमें कर पंकज अनुरागे
शतानन्द पुनि गाधिनन्द कहँ वंदे वृद्ध विचारी
तिहि औसर, वसिष्ठ मुनि आये जनक निवाससुखारी।
सब मिलि वंदि वसिष्ठ ब्रह्मसुत ल्याये सभा मँझारी
कनकासन आसीन कियो नृप युगल महातपधारी।
तैसे शतानन्द बैठाये हेमासन महराजा
कीन्ह्यो अतिसत्कार बंधु दोउ भये मुदित मुनि राजा
चरण पखारि सींचि सिगरे घर युग वसु विधि करि पूजा
युगल बंधु तहँ युगल मुनिनसों कह्यो न हमसम दूजा।
दोहा–तुम सर्वज्ञ कृपालु दोउ, वर ब्रह्मर्षि उदार।

शासन युग भ्रातन करहु, करैं लगै नहिं बार ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ कह, देवहु आशिर्वाद ।
धर्म धुरंधर बंधु दोउ, कस न करहु मर्याद ॥
बोलि पठावहु अवधपति, लग्न शुधावहु आज ।
ब्याह करावहु सीयको, छावहु सुयश दराज ॥

छन्द चौबोला ।

विश्वामित्र वसिष्ठ वचन सुनि अतिशय आनँदपाई ।
जनक गणकगण बोलि तुरन्तहि शासन दियो सुनाई ॥
शोध शुद्ध शुभ लग्न ब्याहकी विश्वामित्र वसिष्ठै ।
करिकै संमत शतानन्दको लिखहु होइ जो इष्टै ॥
जनक गणक गण शतानंद लै लग्यो विचार करावन ।
इतै विदेह सनेह सहित पुनि बोल्यो बैन सुहावन ॥
किहहु विनय कहिकै प्रणाम मम हम तुव दर्शन आसी ।
सुनिमिथिलेश निदेश सुदावन रथ चढिचल्यो हुलासी॥
इतै चक्रवर्ती प्रभात उठि करि नारायण ध्याना ।
प्रातकृत्य करि मज्जन कीन्ह्यों दै सज्जन द्विज दाना ॥
सन्ध्या तर्पण होम अतिथि पूजन हरि अर्चन करिकै।
दै चंदन करि सुर द्विज वंदन बैठ्यो वसन पहिरिकै ॥
आयो सचिव सुदावन द्वारे द्वारप खबरि जनायो ।
जानि विदेह मुख्य मंत्री नृप आशुहि पास बुलायो ॥
अभिवादन करिकै अमात्य वर कह्यो वचन कर जोरी ।
नाथ विदेह विनय कीन्ह्यो अस दरशनकी रुचि मोरी ॥
कौशलनाथ हुलसि हँसि बोल्यो देखन निमिकुल राजै ।
हमरेहु अति बाढी अभिलाषा काज अवशि उत आजै॥
कह्यो सुमन्तहि देहु दुंदुभी हम विदेहपहँ जैहैं ।

चारिहु कुँवर रहहिं जनवासे नहिं मम संग सिधैहैं॥
सुनत नरेश निदेश सुमंतहु दियो दिवाय नगारा।
साजि आई चतुरंग चमू तहँ सुभट शूर सरदारा॥
चढि स्यंदन गमन्यो दशस्यंदन अजनंदन महराजा।
बाजे बाजन विविध सुहावन लस्यो निशान दराजा॥
जाय सुदावन कह्यो जनकसों आवत रघुकुल नाहा।
देखनको धाये पुरवासी भरि उमाह मन माहा।
देखि देखि दशरथको दृग भरि वदन करत सराहैं॥
जासु सुपूत पूत रघुपतिसों तिहि सम को जगमाहैं।
लोकपाल ललकत भुवाल लखि त्यों सुरपाल सिहाते॥
कौन हाल हेरहु महिपालन अस जन माल बताते।
दीनन संपति अमित लुटावत आवत मंदहि मंदा॥
गयो विदेह महलक द्वारे करि पुरजन सानंदा॥
सुनत विदेह अवधपति आगम उठ्यो समाज समेतू।
विश्वामित्र वसिष्ठ आदि लै गमन्यो निमिकुल केतू॥
द्वारदेशते लियो भूप कहँ कियो प्रणाम विदेहू।
कर गहि चल्यो लिवाय सभागृह सादर सन्यो सनेहू॥
दै आसन दहिने सिंहासन पूछि सकुल कुशलाई।
बैठ्यो लहि निदेश निज आसन मिथिलापति मुदपाई॥
अतर पान मँगवाय सचिवकर बीरी खोलि खवायो।
लै सुगंध सब अंग लगायो किय सत्कार सुहायो॥
ताहिअवसर लक्ष्मीनिधि आयो शिरनायो नृपकाहीं॥
लियो भूप बैठाय प्रीति भरि अपने अंकहि माहीं।
सानंदन कुशध्वज किय वंदन मिले अवधपति ताहीं॥
जनक अनुज सत्कार कियो पुनि सब रघुवंशिन काहीं॥

विश्वामित्र वसिष्ठहि कीन्ह्यो कौशलनाथ प्रणामा ।
दियो हुलसि ब्रह्मर्षि भूपको आशिष पूजै कामा ॥
बैठि सहानुज सिंहासन महँ कह विदेह वर बानी ।
निमिकुल कियो पवित्र राजमणि करिकै कृपा महानी॥
दोहा--अस कहि मणिमाला विमल, गल मेल्यो मिथिलेश ।
कह्यो जोरिकर सो करैं, जो अब होय निदेश ॥
उठ्यो फेरि कुशकेतु तहँ, लक्ष्मीनिधि हरषाय ।
रत्नमाल रघुकुल जनन, सबन दियो पहिराय ॥

छन्द चौबोला ।

लगे करन विदेह बडाई रघुकुलके रणधीरा ।
को विदेह सम है वसुधापति वसुधा महँ मतिधीरा ॥
अवधनाथ बोल्यो विदेहसों जानि समय सुखदाई ।
वसुधा महँ है विदित पुरोधा रघुकुलको मुनिराई ॥
नाम वसिष्ठ विरंचि पुत्र यह त्रयकालज्ञ सुजाना ।
परमपूज्य इक्ष्वाकुवंशको इनते गुरु नहिं आना ॥
सकल कृत्तिको जाननवारो ऋषि वसिष्ठ भगवाना ।
विनय मोरि इक्ष्वाकुवंशको करै प्रशंस महाना ॥
यथावसिष्ठ पूज्य रघुकुलमहँ तैसहि विश्वामित्रा ।
वर ब्रह्मर्षि विज्ञान शिरोमणि पामर करन पवित्रा ॥
सकल महर्षिनको सम्मत लै कौशिक अनुमति पाई ।
तौ वसिष्ठ इक्ष्वाकुवंशको देइ यथाक्रम गाई ॥
विश्वामित्र विनोदित भाष्यो शाखोच्चार समैहै ।
कहैं भानुकुलको वसिष्ठ मुनि दूजो कौन बतैहै ॥
विश्वामित्र वचन सुनि सिगरे कह महर्षि यक बारा ।
भानुवंशकी कुलपरंपरा करै वसिष्ठ उचारा ॥

विश्वामित्र सहित ऋषिसम्मत गुणि करतार कुमारा।
कह्यो जनकसों सुनो भूप अब भानुवंश विस्तारा॥
नारायणकी नाभिकमलते मम पितु भो सुखचारी।
पाय कृपा हरिकी सिरजी सो सकल सृष्टि संसारी॥
भयो महामुनि पुनि मरीचिके कश्यप नाम कुमारा।
भयो ब्रह्मते मुनि मरीचि तब अग्रज अहै हमारा॥
भानु भयो कश्यपको नंदन भानु पुत्र मनु भयऊ।
मनु नंदन इक्ष्वाकु भयो पुनि जासु सुयश जगछयऊ॥
यह कुलको है मूल पुरुष सो बस्यो अयोध्या नगरी।
अबलों जो अमरावतिके सम नेकु कहूँ नहिं बिगरी॥
नृप इक्ष्वाकु कुमार भयो पुनि कुक्षि नाम महराजा।
भयो कुक्षिके पुनि विकुक्षि नृप सब भूपन शिरताजा॥
पुनि विकुक्षिके भयो बाण नृप मही महान प्रतापी।
महाराज अनरण्य भयो पुनि बाण पुत्र रिपु तापी॥
जो रावण रण गयो मारि नृप दियो शाप अतिघोरा।
मेरे वंशमाहँ ह्वैहै कोउ सकुल करी वध तोरा॥
भयो फेरि अनरण्य पुत्र पृथु पृथुको पुत्र त्रिशंकू।
विश्वामित्र प्रभाव बसै अबलों दिवि दिपत निशंकू॥
धुंधुमार भो पुनि त्रिशंकु सुत धुन्धुदैत्यको मारो।
धुन्धुमारके भयो फेरि युवनाश्व कुमार उदारो॥
भयो फेरि युवनाश्व भूप के मांधाता महराजा।
दशकंधरसों कियो समर जो प्रगट्यो सुयश दराजा॥
मांधाताको सुत सुसंधि भो तेजवन्त महिपाला।
पुनि सुसंधि के भये युगल सुत सुनहु विदेह भुवाला॥
जेठो भो ध्रुवसंधि दूसरो जिंहि प्रसेनयुत नामा।

महायशी ध्रुव जन्यो फेरि सुत भरत नाम बलधामा ॥
भरत भूपके भयो असित सुत राज्य करन जब लाग्यो।
उठे शत्रु बरजोर चहूँकित राज्य छोडि नृप भाग्यो ॥
हैहै तालजंघ शशबिंदु मलेच्छ भये रण शूरा।
लीन्ह्यों यवन छुडाय अवधपुर असित बस्यो वनदूरा ॥
युगल नारि लै सचिव सहित नृप बस्यो हिमाचल जाई।
गर्भवती नृपकी दोउ रानी सवति होति दुखदाई ॥
दोहा–यक रानीको विष दियो, दूजी सवति विचारि।
गर्भहानि सो जानि जिय, भगी भयाकुल नारि ॥
हिमगिरिमें तहँ कहुँ निकट, रह्यो च्यवन स्थान।
च्यवन चरणकी शरण भै, कीन्हीं दशा बखान ॥
कालिन्दी अस नाम रह, कमलाक्षी सुकुमारि।
मुनि रक्षहु अब गर्भ मम, दाया दीठि पसारि ॥
कह्यो च्यवन मुनि विहँसि तिंहि, राजप्रिया भय त्याग।
तेरे गर्भहि में अहै, महाराज बडभाग ॥
महातेज वर विक्रमी, महा बलीन कुमार।
जनिहै थोरे कालमें, गरल करी न प्रचार ॥
कालिंदी जानि शोच करु, विषयुत जानि सुत तोर।
अवध राज करि है अवाशी, मारि मलेच्छन घोर ॥

छंद चौबोला।

कालिंदी सुनि च्यवन वचन वर निज आश्रममहँ आई।
मरण भयो तहँ असित भूपको लह्यो विषाद महाई ॥
गर युत जन्यो पुत्र अतिपावन ताते सगर कहायो।
मारि मलेच्छन अवधराज किय जगतीमहँ यश छायो ॥
भयो सगरके असमंजस पुनि औरहु साठि बमा ॥

खोजत वाजी कपिल शाप लहि भये सकल जरिछारा॥
असमंजस असमंजस कीन्ह्यो सरयू बालक बोरे।
दियो निकारि पितातिहि दोषहि रहे भवन दिन थोरे॥
अंशुमान इव अंशुमान भो असमंजस सुत ख्याती।
ताके भयो दिलीप महीपति सगर नरेश पनाती॥
ताके भयो भगीरथ भूपति जो गंगा महि ल्यायो।
डारि गंगजल साठि हजारन सपदि स्वर्ग पठवायो॥
भयो भगीरथ महाराजके नाम ककुस्थ कुमारा।
वृषभ भयो वासव तापर चढि जीत्यो दैत्य अपारा॥
रघु महराज भये ककुस्थके को जग तासु समाना।
दान वीर अरु धर्म वीर रण धीर महा बलवाना।
रघुके भये पुत्र पुरुषादक तेजवंत बलवंता।
सोइ कल्माषहुपाद कहायो लहि गुरु शाप तुरंता॥
ताके भयो सूनु पुनि शंखन भयो सुदर्शन ताके।
अग्निवर्ण पुनि भयो तासु सुत शीघ्रगवन सुत जाके॥
शीघ्रगवनके पुत्र भयो मरु तासु प्रसुश्रुक भयऊ।
अंबरीष पुनि भयो तासु सुत नहुष तासु सुत जनेऊ॥
भयो ययाति नहुषको नंदन सुत ययाति नाभागा।
नृप नाभाग कुमार भयो अज महाराज बडभागा॥
अज महराज कुमार विदित जग यह दशरथ महराजा।
जासु समाज आज नहिं दूसर भुवि भूपन शिरताजा॥
आदिवंश अतिशय विशुद्ध यह धर्म धुरंधर धरणी।
कहँ लौं भाग्य कहौं दशरथकीयक मुख जाय न वरणी॥
लै इक्ष्वाकु भूपते अब लौं यहि कुल माहिं विदेहू।
जठो सत्यवादी भूपति सब वीर सुधर्म सनेहू॥

तिनके कुँवर राम लक्ष्मण दोउ आप नगरमहँ आये।
राम शंभुधनु तोरि सभामहँ संकट सकल नशाये॥
ताते एक बात अब भाषहुँ जो मानहु मत मोरा।
पैहौ परम अनंद भूपवर जगै सुयश जग तोरा॥
वीरज शुल्का सीता कन्या राम व्याह सो होई।
व्याहौं लषणैं सुता दूसरी लैहै हर्ष सब कोई॥
समकुल समविभूति सम कीरति समराति धर्मसमाना।
रघुकुल निमिकुल सरिस आदि जगकहौकौनकुलआना
यहि विधि सुनि वसिष्ठकी वाणी सकल सभासद हरषे।
देव दुंदुभी दियो गगनमहँ सुमन विविध बिधिबरषे॥
सुनि मिथिलेश वसिष्ठवचनवरपुलकित हग जल छायो।
जोरि पाणि पंकज वसिष्ठके पद पंकज शिर नायो॥
धन्य मैं सुनि तुव मुखते यह रघुवंश बखाना।
रघुकुल समकुल कौन दूसरो जान अजानहु जाना॥
परंपरा जो अहै वंशकी निमिकुलकी मुनिराई।
शतानन्दको चहिय सुनावन ऐसो अवसर पाई॥
सो लै गणकन लग्न शुधावत कैसे ताहि बुलाऊँ।
ताते राजसमाजमध्य मुनि मैहीं निज मुख गाऊँ॥

दोहा-निमिकुलको वर्णन कछुक, सुनु मुनि महाप्रभाउ।
जाके जो भूपति भयो, कहत अहौं न दुराउ॥
शाखोच्चार विवाहमें, होत उभय कुल केर।
ताते मैं वर्णन करहुँ, परी न मुनि कछु फेर॥

छन्द चौबला।

त्रिभुवन विदित भयो निमि भूपति कृतविक्रम धृत धर्मा।
सकल गय[illegible]न प्रधान महायश क्षितिमहँ अक्षय बर्मा॥

तिन तनुते मिथि भयो महीपति मुख्य जनक कुलराजा।
भयो उदावसु तासु तनय पुनि कियो सुरनके काजा॥
भयो नंदिवर्द्धन तिनके सुत ताको तनय सुकेतू।
भयो सुकेत भूपको नंदन देवरात कुलकेतू॥
देवरात नृप भयो महाबल सोईं हर धनु पायो।
देवरात राजर्षि भयो सुत नाम बृहद्रथ गायो॥
भयो बृहद्रथके नंदन पुनि महावीर अस नामा।
महावीरके तनय भयो धृतिमान धर्म धृति धामा॥
सुधृतिभूपके दृष्टकेतु भे तिहि हर्य्यश्व कुमारा।
भयो पुत्र हर्य्यश्व भूपके मरु अस नाम उचारा॥
मरुके भयो प्रतिंधक नन्दन तासु कीर्तिरथ भयऊ।
पुत्र कीर्तिरथको जग जाहिर देवमीढ जग जयऊ॥
देवमीढके भयो सामिध सुत माहिधृक सामिध कुमारा।
भयो महीधृकके पुनि नन्दन कीर्तिरात बलवारा॥
भयो महारोमा ताको सुत सुवरण रोमा पाको।
भयो ह्रस्वरोमा ताको सुत जानहु नाम पिताको॥
भये ह्रस्वरोमाके हम अरु कुशध्वज अनुज हमारो।
पिता ह्रस्वरोमा हमको मुनि दियो राज्य संभारो॥
मेरो करि अभिषेक पिता मम सौंपि मोहिं कुशकेतू।
गयो विपिन तप करि तनु ताजि तहँ गमन्यो ब्रह्मनिकेतू॥
युगल बंधु हम धर्मरीति राचि राज काज सब कीन्हें।
भ्रात भ्रात दोउ नेह नहे आति विषम रीति नहिं चीन्हे॥
कछुक कालमहँ भूप सुधन्वा संकासीको आयो॥
घेरि सकल मिथिला नगरीको शासन घोर सुनायो।
कमलाक्षी निजहर सीता कन्या कोद [illegible] सनेरा॥

हमको देहु विदेह नेह युत तब होई भल तोरा ॥
हम नहिं दियो ताहि दुहिता धनु भयो युद्ध तब भारी।
आप प्रताप नाथ मम करते गयो सुधन्वा मारी ॥
लूटि तासु दल चलि पाछे तिहि जाय पुरी संकासी।
करि अभिषेक कुशध्वजको तहँ कियो भूप सुखरासी॥
हम अरु अनुज हमार कुशध्वज ठानि प्रीतिकी रीती।
लषण उर्मिला व्याह करैंगे मानहु मुनि परतीती ॥
कौन कुँवर अब लषण सरिस मुहिं मिली महीतल माहीं।
लषण योग्य उर्मिला कुमारी यामें संशय नाहीं ॥
राम सरिस हैं लषण लाल ऋषि परै न भेद विचारी।
तिमि उर्मिला और सीतामहँ किहि विधि भेद उचारी ॥
देहौं देहौं देहौं लषणहिं मैं उर्मिला कुमारी ।
माति संशय मानहु मन मुनिवर दीजै लग्न विचारी ॥
वरण्यो वंश ढिठाई करिकै क्षमियो मम अपराधा।
तुम रघुकुल गुरु तथा हमारे बुद्धि पयोधि अगाधा ॥
सुनि वसिष्ठ तहँ लगे सराहन निमिकुलकी बडि महिमा।
सुनु महीप मिथिलेश तोहिं सम को महीप है माहिमा ॥
तब मिथिलाधिराज बोल्यो अस अवधराजसों बैना।
नाथ सनाथ कियो निमिकुलको अब वांछा कछु है ना ॥
कहौं कौन विधि जान भवनते पै जो उचित विधाना।
तौ करवाइय जाय कुमारन मङ्गल हित गोदाना ॥
दोहा—यतनो कहत महीपके, तिहि अवसर सुखछाय।
शतानंद लै, गणकगण, कह्यो जनकसों आय ॥
सकल ज्योतिषिनते साहित, शोध्यो लग्न विचारि ॥
आयसु होय सुनाइये, सकल विचार उचारि ॥

तब विदेह बोल्यो हरषि, दोउ ब्रह्मर्षि प्रधान।
तिनहिं सुनावहु लग्न मुनि, जो कछु होय प्रमान॥
विश्वामित्र वसिष्ठसों, शतानंद तब जाय।
लग्यो सुनावन लग्न दिन, गुण गहि दोष विहाय॥

छन्द चौबोला।

मघा नखत है आजु महीपाति सो प्रशस्त नहिं ब्याहू
पूर्वफाल्गुनि कालिह सोउ नहिं उत्तम होत उछाहू॥
उत्तरफाल्गुनि परसों हैहै सो प्रशस्त सब भाँती।
शोध्यो लग्न परमसुखदायक जुरिकै गणक जमाती॥
कृष्णपक्ष पंचमी अहै तिथि मार्गशीर्ष शुभ मासा।
कन्यादान होय तिहिं वासर दोउकुल लहैं हुलासा॥
विश्वामित्र वासिष्ठ लग्न सुनि करिकै विमल विचारा।
दोउ उत्तराफाल्गुनि में सिद्धान्त लग्न निरधारा॥
कृष्णपक्ष शुभ मास मार्ग यह माधव रूप बखाना।
अति शुभ कर उत्तराफाल्गुनि होइ विवाह विधाना॥
होय विवाह उत्तराफाल्गुनि यह संमत सब केरो।
सुनत अवधपतिअरु मिथिलापति मान्यो मोद घनेरो॥
निमिकुल रघुकुल सकल सभासद परिजन पुरजन जेते
राम लषण उद्वाह लग्न सुनि भये प्रमोदित तेते॥
कियो विदेह विनय दशरथसों पितर श्राद्ध करिलीजै।
पुनि गोदान कराय कुमारन ब्याह विधान करीजै॥
अति हर्षित इक्ष्वाकुवंशमणि सुनि विदेहकी बानी।
कह्यो जनकसों वचन पुलकि तनु देहु बिदा विज्ञानी॥
पितर श्राद्ध गोदान कुमारन करवावहु जनवासे।
भयो लग्न सिद्धांत सुखावधि देखन ब्याह हुलासे॥

देन लग्यो जब बिदा जनक नृप दशरथको सुखछाई।
अवसर जानि कह्यो कौशिक तब वचन हिये हरषाई॥
निमिकुल रघुकुल दोउ अतिपावन महिमा कही न जाई।
नहिं समान दोउ कुलके दूसर परै प्रत्यक्ष दिखाई॥
यह समान सम्बन्ध धर्मयुत दोउ कुल दोउ अनुरूपा।
राम लषण सिय और उर्मिला व्याह उचित अति भूपा॥
निमिकुलते अब अधिक और कुल अवधनाथ कहँ पैहैं।
तैसहि अब मिथिलेश महीपाति रघुकुल तजि कहँ जैहैं॥
ताते मोर विचार होत अस कुशध्वज युगल कुमारी।
होय विवाह भरत रिपुहनको अनुमति यही हमारी॥
तुव अनुरूप अनूप विश्वमहँ दशरथ भूप कुमारा।
निरखत जिनको लोकपाल सब मानत हियमें हारा॥
सदृश त्रिविक्रम विक्रम जिनको अद्भुत देव अकारा।
रंगभूमिमहँ राम बाहुबल को अस जो न निहारा॥
ताके अनुजन व्याहि देहु नृप दोउ कुशकेतु कुमारी।
करहु चारिहू राजकुमारन सम्बन्धी शुभकारी॥
रामजानकी लषण उर्मिला जिहि दिन होइ उछाहै।
ता दिन दोउ कुशकेतु कुमारी भरत शत्रुहन व्याहै॥
दूलह चारि चारि दुलहिन नृप निरखि जनकपुरवासी।
रघुकुल निमिकुल धन्य होइगो हमहुँ लहब सुखरासी॥
ऐसो अहै विचार हमारो पुनि जस तुव मन माहीं।
तुम सम सुमति कबहुँ नहिं जगमें समय चूकि पछिताहीं॥
सुनि कौशिकके वचन सभासद मुनिजन अतिहरषाने।
साधु साधु सब कहैं गाधिसुत मुनिवर उचित बखाने॥
सुनत जनक पुलकित तनु हर्षित भरि आनँद जलनयना।

नाय चरण शिर जोरि कंज कर कह कौशिक सों व
तुम सम है ना लख्यों न नयना माति अयना सुख
अब मुहिं भय ना चित चय चैना का मम सुकृत

दोहा—धन्य धन्य निमिकुल अहै, जहँ दायक उपदेश।
विश्वामित्र वसिष्ठ हैं, तहँ नहिं लेश कलेश॥
धन्य धन्य मेरी भई, मुनिवर चारि कुमारि।
पायो वर त्रयलोकवर, निज निज वपु अनुहारि।
होय एकही संग मुनि, चारि कुमारन व्याह।
शोधि साधि सुघरी सकल, लखो अथाह उछाह॥

छन्द चौबोला।

मिथिलापतिके कहत वचन अस सभामध्य इक बारा।
परिजन पुरजन गुरुजन सज्जन कीन्हें जयजयकारा।
दीन्हें देव दुंदुभी दिविमहँ फूलनकी झरिलाई।
जयमिथिलेशजयतिकौशलपतियहधुनिदशादिशि छाई।
पुनि विदेहसों कह वसिष्ठ मुनि सोइ लग्न महँ आई।
पाणिग्रहण करैं चारिउ सुत चारिउ वधुन सुहाई।
परसों है उत्तराफाल्गुनि नखत विवाहन योगू।
वुधवर कहत विवाह लग्न शुभ माहि मुद मंगलभोगू॥
भग नामक जिहि देव प्रजापति यहि सम लग्न न आ
यह सुख निराखि कृतारथ ह्वै हैं भूपति सकल जहाना॥
विश्वामित्र वसिष्ठ वचन सुनि दशरथ जनक सुखारी।
प्रेम विवश पुलकित गल गद्गद सके न वयन उचारी॥
तिहि अवसर विरंचि पठवायो नारदमुनि तहँ आये।
उठी समाज देवऋषि देखत युगल भूप सुख पाये॥
दशरथ जनक परे चरननमें नारद आशिष दीन्हें।

षोडश विधिकीन्हें नृप पूजन अतिथि अनूपम चीन्हें ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ मिले दोउ मुनिजन कीन प्रणामा ।
सिंहासन बैठाय देवऋषि दोउ बोले मतिधामा ॥
तुव दर्शनते आजु भये मुनि सफल सुनयन हमारे ।
तब नारद मुनि मोद भरे मन ऐसे वचन उचारे ॥
राम व्याहकी लग्न शोधिकै मुहिं करतार पठायो ।
मार्ग मास उत्तराफाल्गुनि वासर लग्न सुहायो ॥
तीनों बन्धु सहित रघुपतिको ता दिन होइ विवाहा ।
लग्न दिखावन व्याज मही इत आयो दरश उमाहा ॥
विधिनिदेश तुमसों सब कहि अब राम दरश हित जैहौं ।
चारिहु बंधुनका दर्शन करि महामोद नृप पैहौं ।
असकहि हर्षि वर्षि नयनन जल चल्यो देवऋषि आशू॥
जहां सहित बंधुन रघुनन्दन वर बरात जनवासू ॥
परिजन पुरजन सकल सभासद सुनि नारदकी बाता ।
कहन लगे सब जनक गणकगण हैंसाति अपरविधाता ॥
जनकराजसों बिदा होनको अवधराज चित चाये ।
सहित समाज राज दोउ सोहत सुर दुन्दुभी बजाये ॥
फैलि गई यह बात सकल पुर परसों राम विवाहू ।
जहँ तहँ यूथ यूथ जुरि जुरि नर नारिकहैं सब काहू ॥
यह सम्बन्ध महासुखदायक जनक सुकृति वैदेही ।
दशरथ सुकृत रूप रघुनन्दन अपर कौन सम देही ॥
पूरब हमहुँ पुण्य बहु कीन्हीं भये जनकपुर बासी ।
इन नयननसों राम व्याह अब देखत आनँदरासी ॥
जे जानकी राम छबि देखे तिन कहँ कछु नहिं बाकी ।
हमरे भाग्य विवाह भयो यह गूँगन कृपा गिरा की ॥

बारहिंबार विदेह बुलैहैं निज निवास वैदेही।
ऐहैं सीय लिवावन रघुबर ह्वै ससुरारि सनेही॥
बारहिंबार विलोकन रामहिं लेब विलोचन लाहू।
घर घर राम निमन्त्रण होई अनुपम सुख सब काहू॥
कोउ कह राम लषण जोरी जस तैसहि युग नृप ढोटा।
आये दशरथ संग अवध ते सखि सुन्दर भल जोटा॥
तब बोली कोउ तू नहिं जानति राम अनुज हैं दोऊ।
जेठो भरत शत्रुसूदन लघु अस भाषत सब कोऊ॥
दोहा-कोउ कह मैं अबहीं सुन्यो, भूपति मन्दिर माह।
होई चारिहु कुँवरिको, चारिहु कुँवर विवाह॥

छन्द चौबोला।

कोउ कह श्यामराम सम भरतहु रिपुहन लषण समाना।
चीन्हें चीन्हें चीन्हि परत हैं अस सुन्दर नहिं आना।
भरत कैकयी तनय कौशिला रामहिं जन्यो पवित्रा।
लषण शत्रुहन अहैं सहोदर दोहुन जन्यो सुमित्रा॥
चारिहु कुँवर शील विद्या बल विक्रम विनय अगारा।
भूप चक्रवर्ती दशरथके चारिहु चारु कुमारा॥
अञ्चल ओडि मनावहिं विधिसों सबै जनकपुर नारी।
विघ्न निवारि विवाह करावहु जो कछु पुण्य हमारी॥
युग युग जीवहिं चारिहु जोरी मिथिला अवध अधारा।
पुण्य पयोनिधि जनक अवधपति को इन सम संसारा॥
यहि विधि कहहिं परस्पर वाणी गावहिं मंगल गीता।
देवी देव मनावहिं प्रतिदिन पुरजन परम पुनीता॥
आये जे नृप भक्त स्वयंवर ते न गये निज गेहू॥
राम जानकी व्याह लखनको निवसे नगर विदेहू॥

माँगन बिदा चहे दशरथ जब चलनहेत जनवासे ।
तब कौशिक वसिष्ठसों भाष्यो मैथिल वयन सुधासे॥
सानुज मोर धर्म प्रभु दोऊ दीन्ह्यो सविधि निबाही ।
अहौं शिष्य मैं पदरजधारक प्रतिनिधि है कछु नाहीं॥
बैठहु युगल राजसिंहासन युगल मुनीश कृपाला ।
मिथिला अवधराज तुम्हरी दोउ तुमहीं अहौ भुवाला ॥
जैसो दशरथको मिथिलापुर तस कोशलपुर मोरा ।
कछु नहिं भेद जानिये मुनिवर नहिं कछु करौं निहोरा॥
नहिं संदेह प्रभुत्वमाहिं कछु तुव पद शीश हमारे ।
मन भावै सो करहु नाथ दोउ जस अभिलाष तिहारे॥
तुव प्रसाद मम काज सिद्धि सब दोउ प्रभु दोउ कुलनाथा।
अस कहि बैठायो सिंहासन दोउ मुनिवर इक साथा ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ प्रसन्न भये दिये आशिर्वादा ।
उभय भूप तुम जगत शिरोमणि सकल धर्म मर्यादा ॥
जयजयकार किये सिगरे जन नभमहँ बजे नगारा ।
छूटी कुसुमावली गगनते धनि मिथिलेश उदारा ॥
यहि विधि तिहि समाजमहँ आनँद छाय रह्यो मिति नाहीं ।
हुलसि अवधपति जोरि कंजकर कह्यो जनकनृप काहीं॥
गुणसागर नागर यश आगर मिथिलेश्वर दोउ भाई ।
कियो महासत्कार मुनिन अस कौन करी नृपराई ॥
राज समाज सबरे करते लहे परम सत्कारा ।
देहु रजाय जाहि जनवासे वर्णत सुयश तुम्हारा ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ कह्यो तब तुम अस तुमहिं विदेहू।
हम सबको अपने वश कीन्ह्यो पाश पसारि सनेहू ॥
कौशलनाथ संग जनवासे हमहूँ करब पयाना ।

करवैहैं चारिहू कुमारन विविध सविधि गोदाना॥
अभ्युदयिक करवाय श्राद्ध विधि सब विवाहके चारा।
कृत्ति तेल मायन करवै हैं व्याह विधान अपारा॥
मुनिवर वचन वचन दशरथके सुनि मिथिलेश सुजाना॥
भन्यो प्रेमवश कहौं कौन विधि इतते राउर जाना।
जस अभिलषित होय कीजै तस कारज अवशि विचारे।
उठ्यो अवधपति लै समाज सब उभय मुनीशसिधारे॥
करि कौशिक वसिष्ठ कहँ आगे चल्यो राय जनवासे।
सकल राजवंशी मंत्री भट गमने हिये हुलासे॥
दोहा–फहरत चले निशान बहु, बाजत विविध विधान।
देखतपुरजन भनत यश, याहि सम किमि मघवान॥

छन्द चौबोला

जनवासे आये कौशलपति बैठे मंदिरमाहीं।
विश्वामित्र वसिष्ठ बोलि तहँ विनय करी तिन पाहीं॥
अभ्युदयिक प्रभु श्राद्ध करावहु अब न लगावहु देरी
जो कछु कारज होय बतावहु सेवक गुणि गति मेरी॥
गुरु वसिष्ठ अरु गाधितनय तब विधिवत श्राद्ध कराये।
भोजन समय जानि कौशलपति चारिउ कुँवर बुलाये॥
चारिहु कुँवरसहित भोजन करि बैठे नृप पर्यंका।
राम लषण रिपुहन भरतहुको बैठायो निज अंका॥
लगे शिखावन कुँवर सुहावन बेटा यह श्वशुरारी।
कियो न चपलाई पर घर चलि ह्वैहै हँसी तिहारी॥
श्वशुर सासको वंदन करियो मुहिं सम गुण्यो विदेहू।
बिना बुलाये उतै न जइयो नहिं बाग्यो बहु गेहू॥
बहुत हँसी करियो नहिं काहू उत्तर दियो सम्हारी।

मिथिलापुरकी चतुर नारि देहैं जुरि जुगुतिन गारी ॥
सुनत वयन पितु राम बंधु युत लज्जित शीश नवाये।
कर जोरे भोरे इव बैठे मनहींमन मुसक्याये ॥
इतनेहीमें प्रतिहार तहँ आशुहि खबरि जनायो।
मिथिलाधिप व्यवहार पठायो सुमति सचिव लै आयो ॥
उठ्यो हर्षि देखन कौशलपति सहित कुमार सिधारा।
एक एक वस्तुनके लागे पूरण प्रथित पहारा ॥
बहु विधान पकवाननके तहँ दान विधानहुँ नाना।
लघु ते लै पर्य्यन्त वस्तु बाडि वसन विभूषण नाना ॥
निज निज अभिलाषन अनुसारन पाये सकल बराती।
रही न काहू कछुक कामना तोषित भे सब भाँती ॥
ऋद्धि सिद्धि निधि करि आकर्षण जगदीश्वरी सुसीता।
पठै दियो सिगरे जनवासे पूरण करन पुनीता ॥
भोग विलास बरातिनको तहँ लहै कौन कहि पारे।
एक एक रघुवंशिनको थल लोकपाल लखि हारे ॥
घटी घटी सुर नटी नटै तहँ घटै न घट घट हर्षा।
भरि गुण गर्व सर्व गंधर्वै गायन करते सुम वर्षा ॥
महा मनोहर बाजन बाजत संयुत ताल बँधाना।
सबके डेरन बने जरीके विस्तर तने विताना ॥
बाग तडाग नहर सुरभित जल बने विचित्र अगारा।
पूरण सकल अपूरव वस्तुन जो नहिं कबहुँ निहारा ॥
जो जहँ चहत जौन मनमें जनामिलत तौन अनयासा।
इन्द्र कुबेर वरुण देवन सम पावत भोग विलासा ॥
बीतत वासर रैन चैन महँ जागत शयनहु माहीं।
अवध विलास बरातिन भूल्यो कहहिं जाब अब नाहीं॥

ब्याहि कुमार चारि कौशलपति बसैं इतै सब काला।
अस सुख कबहुँ न लहे जन्म भरि जस अब लहे विशाला।
भई साँझ भूपति संध्या करि बैठ्यो कुँवर समेता।
पूर्वचित्ति मेनका उर्वशी रंभा आदि सुचेता।
विश्वावसु तुंबुरु आदिक तहँ करन लगे कलगाना।
साजि समाज विराजि विभूषण नचहिं अप्सरा नाना।
मन अभिलाषित भूपदीन तिन वसन विभूषण नाना।
भाइन सहित विलोकि राम छबि भूल्यो भान अपाना।
शयन काल गुनि भूप कुमारन निज निज भवन पठाई।
महामोद महँ मग्न महीपति शयन किये गृह जाई।

दोहा-नाच गान व्यवधान महँ, खान पान सन्मान।
मगन बराती जगतही, पाये पुलकि बिहान।

सोरठा-बंदी वृन्द अपार, ब्रह्म मुहूरत जानिकै।
अवधभूपके द्वार, वदन लगे बिरुदावली॥

छन्द चामर।

जै जयेक्षवाकु वंश वारिधीको चंदिरै।
धर्मको निशान ज्ञानवान मोद मंदिरै॥
भानुवंशभानुभूप कौशिलाधिराज हौ।
राजके समाजके दराज शीशताज हौ॥
आपने सुवंशमें विचारि राम व्याहको।
अंशुमान आवतो भरे लखै उमाहको॥
तजो सुशैन चैनसों सनींदनयन खोलियो।
प्रदान अर्घ्य कीजिये सुवेदमंत्र बोलियो॥
नेश भीति मानि तारवृन्दहू बिलाइगे।
उलूक चूक हूकमानि मूक ह्वै पराइगे॥

नरेश आप मित्रसे प्रफुल्ल कंज बंद भे।
अरीनसे अनेक कैरवानि वृन्द मन्द भे॥
सखा सुमंत्रि बंधुवर्ग देहु देव दर्शने।
स्वपक्ष रक्ष दक्ष आप चक्र ज्यों सुदर्शने॥
मुकुन्द ध्यान ठानिकै प्रभात कर्म कीजिये।
अनेक विप्रवृन्दको अनेक दान दीजिये॥

दोहा-अजनन्दन आनन्द भरि, अभिवंदन हित द्वार।
वृन्दनके वृन्दन खडे, सचिव सुहृद सरदार॥
सुनि बंदिनके वर वचन, निशा व्यतीत विचारि।
जगतीपति जागत भये, नयनन नींद निकारि॥
पितुके पूरब कछु जगे, चारिहुँ राजकुमार॥
रामदरश तिन आय किय, तीनिहुँ बंधु उदार॥
रघुनन्दन भ्रातनसहित, पितु दर्शन किय जाय।
चरण वंदि आशिष लहे, गमने पाय रजाय॥
प्रातकृत्य निरवाहि सब, सुरभित सलिल नहाय।
अर्घ्य प्रदानादिक कियो, दिय द्विज दान बुलाय॥
रघुनन्दन चन्दन दियो, गायत्री जप कीन।
नित्य नेम निरवाहि सब, बंधुन बोलि प्रवीन॥
वसन विभूषण पहिरिकै, करि सुन्दर शृंगार।
चले चारिहू बंधु तहँ, करन पिता दरबार॥
दशरथ इतै प्रभातको, नित्यनेम निरवाहि।
बैठ्यो सभा सुरेशसम, बोल्यो कुलगुरु काहि॥
मार्कंडेयादिक मुनिन, लियो तुरंत बुलाइ।
विश्वामित्रहि बोलि पुनि, बोल्यो कौशलराइ॥

चौपाई ।

तैल चढावन आदिक चारा । करवाईं जस होइ विचा
पुनि करवाइ मुनी गोदाना । मंगल मंडित वेद विधा
सुनि नृपवचन परम अह्लादी । विश्वामित्र वासिष्ठहु आ
लगे करावन पावन चारा । बोलि चारिहू राजकुमा
पूजन गौरि गणेश कराये । ते निज रूप प्रत्यक्ष दिखा
पूजन लेन व्याज सब देवा । आवहिं करन रामकी से
करि वाचन पुण्याह सुखारी । लियो बोलि द्विज पंच कुमा
निकट पुरट घटचटपट धरिकै । सदल सदीप अमल जल भ
नवल पीतपट भूषण नाना । विप्रकुमारी करि परिधा
लै हरिद्र दूर्वा तिहि बेला । प्रभु कहँ लगीं चढावन ते
बैठ बरोबर तीनहुँ भ्राता । निरखत जन सुख लहत अपा
जस जस व्याह कृत्य तहँ होती । तस तस तिन तनु लाज उ

दोहा—तेल चढावहिं कन्यका, प्रभुको वदन नि
ताकि ताकि छबि छकिछकि रहैं, जाकि जाकि मृदुल विचा

छन्द चौबोला ।

शिर कन्धन जानुनी पगनमहँ फेरहिं पाणि कुमारी ।
मनहुँ पूजि शशि नीलरत्नगिरि उतरहिं कुमुदसुखारी ॥
परिकर सचिवादिक अह्लादित करहिं निछावरि आई ।
मणिगण सुवरण वसन विभूषण पावहिं धाय धवाई ॥
रतनालिका वीरमणि ठाढे राईं लोन उतारैं ।
राम सुछबि लखिलखिदृगछकिछकिमानहुँतनमनवारैं ॥
जासु प्रसाद गणेश आदि सुर हरैं विघ्न करि मङ्गल ।
सो प्रभु शिरनावतमंगलहित गणपति थापिकमण्डल ॥
नभमहिं बाजन बजत विविध विधि गावहिं देवनदारा ।

मच्यो हुलास महा जनवासे द्विज धन लैहैं अपारा ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ रामको दिये तेल चढवाई।
भये अनंदित सकल बराती बहु धन दियो लुटाई॥
चारि कुमारनको भूपति पुनि अपने निकट बुलाये।
गुरु वसिष्ठ गोदान करनको सविधि अरंभ कराये ॥
सुवरण शृंगनसहित बाछरा कनक दोहनी बारी।
परे दुशाले पीठिनमें जिन रजत खुरी छबि भारी ॥
पयस्त्रवनी निरखत मनहरनी बहु बरनी शुभ शीला।
ऐसी चारि लाख सुरभी तहँ मँगवायो इव लीला ॥
लाख लाख सुरभी इक इक सुत करते दान कराये।
लक्ष लक्ष मुद्रा हैमी पुनि तिन दक्षिणा दिवाये ॥
याचक भये अयाचक जगके किये विप्र जयकारा।
धर्मध्वजा फहरान भूपको विदित सकल संसारा ॥
धेनु दान करवाय कुमारन इक सिंहासन माहीं।
बैठ्यो लै पुत्रन कोशलपति वरणि जाय सुख नाहीं॥
जैसे चारिहु लोकपाल युत राजत सभा विधाता।
तैसहि चारि कुमारनते युत दशरथ भूप विभाता ॥
तिहि अवसर धावन द्वै आये कहैं जोरि युग पानी।
केकय महाराजको नंदन नाम युधाजित जानी॥
आवत काशमीर नृपनंदन आगे हमहिं पठाये।
खबरि देन हित रामराजमणि हम आये अतुराये ॥
सुनि आगमन युधाजितको तब कोशलपति हरषाये।
तिहि अगवानी करन भरत रिपुसूदनको पठवाये ॥
कछुक दूरते भरत जाय निज मातुलको लै आये।
जोहि युधाजित अवधनाथको बार बार शिर नाये ॥

उठ्यो भूप सादर ताको मिलि दै आसन अनुरूपा।
कह्यो युधाजितसों कुशली हैं कुलयुत केकयभूपा॥
राम लषण अरु भरत शत्रुहन मातुल किये प्रणामा।
मिले युधाजित दै आशिष बहु सिद्धि होय मन कामा॥
कह्यो युधाजित पुनि दशरथसों हमहिं पिता पठवाये।
बार बार पूँछी कुशलाई भूपति तुमहिं उराये॥
हमहिं कह्यो तुम जाहु अवधपुर भरत सुतासुत मोरा।
लै आवहु तिंहि लषण अनुजयुत लखन हेतु यहि ठोरा॥
काशमीरते चले प्रथम हम अवधनगरको आये।
द्वै दिन भे निकसे बरातको ताते तुमहिं न पाये॥
सुन्यो विवाह भागिनेयनको होत जनकपुर माहीं।
परम प्रमोदित चले बराबर आये हमहुँ यहांहीं॥
यहां प्रमोद पयोनिधि बाढ्यो रही. भाग्य मम भारी।
राम विवाह विलोकि विलोचन ह्वैहैं हमहुँ सुखारी॥

दोहा—सुनत युधाजितके वचन, हरष्यो अवध भुवाल।
बार बार सत्कार करि, कीन्ह्यो श्याल निहाल॥

छन्द चौबोला।

दियो युधाजितको डेरा नृप भरत महलमहँ जाई।
सकल भाँति सोपति भूपति किय करि सत्कार बडाई॥
रह्यो युधाजित चैन पाय अति अयन अनूपम माहीं।
भोजन समय चारि कुँवरनयुत आन्यौं नृप तिहि काहीं॥
हिलि मिलि भोजन करनलगे नृपठानत हास बिलासा।
कह्यो युधाजितसों कौशलपति साहितमंद मुखहासा॥
पुण्यवान मिथिलापति कीन्ह्यों बड हमरो उपकारा।
वधुनसहित करि देत भयो अब चारिहु राजकुमारा॥

करहु युधाजित तुम उछाहयुत दूसर ब्याह हमारा।
वृद्ध जानि कीजै जनि मन भ्रम लेहु सुयश संसारा॥
कह्यो युधाजित आप कुमारन कियो सदारन जोई।
अभिलाषा यह अवशि रावरी पूरण करिहै सोई॥
यहि विधि हास विलास करत नृपकारि भोजनसुखसाने।
उठि अचमन कीन्हें सुगन्ध जल सुभगवसन परिधाने॥
निज निज भवन शयन हित गमने आनँद मगन अपारा।
सांझसमय पुनि सहित कुमारन नृप बैठ्यो दरबारा॥
मन्त्री सचिव सुभट सरदारहु कवि द्विजगण पगु धारा।
देव नटी गंधर्व सर्व युत करन लगीं नट सारा॥
राम लषण अरु भरत शत्रुहन सहित युधाजित आये।
पुत्रनको सन्मुख केकैसुत निज समान बैठाये॥
ताही समै जनक पठवायो शतानन्द मुनि आयो।
उठि आसन दीन्ह्यों अवनीपति चरण कमल शिरनायो॥
विश्वामित्र वसिष्ठ आदि मुनिमण्डल भूप बुलायो।
यथायोग्य आसन दै सबको बार बार शिरनायो॥
गौतमतनय कह्यो भूपतिसों विनती कियो विदेहू।
बीते चारि दण्ड यामिनिके ब्याह लग्न गुनि लेहू॥
गोधूली बेला महँ हैहै कालिह द्वारको चारा।
महाराज लै चारि कुमारन करैं पवित्र अगारा॥
सुनत चक्रवर्ती अवनीपति मन आभिलषित सुवाणी।
गद्गद कण्ठ सुमिरि विकुण्ठपति कह्यो जोरियुगपाणी॥
अभ्युदायिक करि श्राद्ध यथाविधि कुँवरन तेल चढाई।
तिमि गोदान कराय सुतन कर बैठे लहि शुचिताई॥
नहछू कालिह कराय महामुनि सुन्दर साजि बराता।

धेनुधूलि बेलामहँ आउब कहहु जाय मुनि बाता॥
दोउ ब्रह्मर्षि वसिष्ठ गाधिसुत सहित जनक पहँ जाहू।
वेद विधान साज सब साजहु जस भाषैं मुनिनाहू॥
सुनिकै शतानन्द सानन्दित लै रघुकुल गुरु सङ्गा।
विश्वामित्रसमेत चल्यो तहँ रँग्यो प्रीतिके रंगा।
मुनिवर जाय जनक मन्दिर महँ पाय परम सत्कारा।
साजे सकल व्याह सामग्री जस विधि वेद उचारा॥
यथा राम चारिहु भाइनको तेल चढ्यो जनवासे।
चारि लक्ष गोदान करायो दशरथ पुण्य प्रकासे॥
यहि विधि जनक सुनैना रानी सीतहि भगिनिसमेतू।
तेल चढाय पाय आनँद अति पुनि बैठाय निकेतू॥
चारि लक्ष सुरभी सालंकृत चारि कुँवरि करतें।
दीन्ह्यो दान दिवाय द्विजनको शतानन्दके प्रेरे।
पुनि वासिष्ठ कौशिक विदेह ढिग कही मनोहर बानी।
सकल चार है गयउ उभयदिशि रह्यो व्याह सुखखा

दोहा–यथा हुलास प्रकाश है, राउरके रनिवास।
तैसहि हास विलास सुख, दशरथके जनवास॥
सहित कुमारन अवधपति, व्याहकृत्य करवाय।
बैठ्यो तब मिथिलेश मुहिं, देहैं दान बुलाय॥
दाता तुम दशरथ अहैं, आज ग्रहीता दान।
यह सुख मुख कहिजात नहिं, समधीउभयसमान॥
सुनि वसिष्ठके वचन वर, बोल्यो वचन विदेह।
दोऊ दशरथ भूप हैं, का विचार निजगेह॥
मेरो घर कुल राज धन, सब दशरथको आय।
एक अहै मिथिला अवध, दूसर नाहिं दिखाय॥

सुनि विदेहके वयन वर, पाय वसिष्ठ प्रमोद।
जनवासे गमनत भयो, लखि विनोद चहुँकोद॥

छन्द चौबोला।

फैलिगई यह बात चहूँकित रनिवासे जनवासे।
ह्वै है काल्हि विवाह रामको सुनि सब भये हुलासे॥
खैर भैर मचिरह्यो नगर महँ घर घर होति तयारी।
अवध लोग इत सजानि सजावत काल्हि बरातासिधारी॥
यक यक रघुवंशिनके डेरन होन लगे नटसारा।
बैठे राम व्याह सुख भाषत होत भयो भिनुसारा।
हल्ला परयो अमरलोकनमहँ काल्हि रामको व्याहा।
देव बराती होन हेत सब साजे निज निज वाहा॥
रच्यो विरंचि हंस अति सुंदर शंकर साजे नन्दी।
इन्द्र सजायो ऐरावत कहँ षट्मुख मोर अनन्दी॥
महिष अभद्र वेष नहिं साज्यो धर्मराज हरिदासा।
ऐसहि और देव सब वाहन साजे सहित हुलासा॥
जिनके वाहन अशुभ रूपके ते डरि नहिं सजवाये।
राम दरश हित होन बराती चढे विमानन चाये॥
नहिं जनवासे नहिं रनिवासे नहिं पुरके कोउ सोये।
करत तयारी महासुखारी जागतही रवि जोये॥
दशरथ सुतन कराय बियारी शयन अयन पठवाई।
पौढे यदपि भूप पर्यंकहु तदपि नींद नहिं आई॥
बात कहत इव राति सिरानी लाग्यो होन प्रभाता।
द्वारदेशमहँ गावन लागे बंदी बिरुद बिख्याता॥
भूपति उठि उछाहवश आतुर प्रातकृत्य सब करिकै।
देदेदान बुलाय द्विजनको सुतन बोलि सुखभरिकै॥

कारि जलदी ज्यौनार बारयुत साधारण पट पाहिरी।
बैठ्यो आय राजसिंहासन जिहि सुखमा अति गाहिरी॥
बुलवायो वसिष्ठ कौशिकको सचिव सुमन्त तुरंता।
दियो निदेश बरात सजावन सुमिरि चरण श्रीकंता॥
पुनि बोल्यो कौशिक वसिष्ठसों नाथ मुहूरत भाखो।
तौन मुहूरत साधि चल्यो इत लै बरात सुख चाखो॥
विश्वामित्र वसिष्ठ मुहूरत शंकर भणित बनाई।
कह्यो भूपसों वचन विनोदित रहे याम दिनराई॥
नहछू करहु कुमारनको नृप कुलाचार विधि गाई।
अभिजित नाम मुहूरतमें नृप चलै बरात सुहाई॥
धेनुधूलि वेला रेला सुख होय द्वारको चारा।
याम जात यामिनी लग्नशुभ पाणिग्रहण सुखसारा॥
अर्द्धरात्रिलों सकल चार करि आय जाहु जनवासे।
होय विलंब कुमारनको नहिं सोवहिं सुखी सुपासे॥
कौशिक संमत युत वाणी वर सुनि वसिष्ठकी भाषी।
कह्यो तुरंतहि वचन सुमन्तहि महामोद मिति नाषी॥
सुनत सुमन्त तुरन्त हजारन परिचारन बुलवायो।
डेरन डेरन रघुवंशिनके शासन सपदि पठायो॥
आवैं आज पहर दिव बाकी सजि समाज सरदारा।
सजे मत्तमातंग तुरंगहु पैदर सुरथ अपारा॥
धामन धाय पुकारन लागे जस सुमन्तकहि दीने।
आवन लगे बराती साजि २ शक्र सरिस सुखभीने॥
एक ओर बाजिनकी राजी एक ओर गजवृन्दा।
एक ओर रथके गथ पथमह पैदर खडे सनन्दा॥
नौबत झरन लगीं चारों दिशि बाजे विविध नगारे।

हिहिनाते हयवर घहनाते घंटा शंख अपारे ॥

दोहा–औरहु बाजन बजतभे, मच्यो सुहावन शोर।
चढे विमानन देव नभ, वरषैं सुम चहुँओर ॥
जानि समय शुभ भूपवर, राम सबंधु बुलाय।
नहछू करवावन लगे, वंशरीति दरशाय ॥

चौपाई।

समय पाय मिथिलापुर केरी। आईं नाउनि सजी घनेरी ॥
अवध भूप पहँ खबरि जनाई। नहछू करन हेतु हम आई ॥
सुनत जनकपुर नाउनि राजा। लीन बुलाय जानि बड काजा ॥
सजी शृँगारन नापित नारी। मनहुँ मनोजवधू छबिवारी ॥
सज्जन वचन सुनत तिहिकाला। मज्जन कीन चारि रघुलाला ॥
युगल पीतपट अंबर धारे। बैठे कनक पटन छबिवारे ॥
मनहुँ दरश सावन घनमाहीं। चमकि रही चपला चहुँ घाहीं ॥
मिथिलापुरकी नाउनि आई। दूलह देखि दून सुखपाई ॥
युग श्यामल युग गौर कुमारा। हँसीकरन लखि कियो विचारा ॥
तिनमहँ चतुर एक छबि छाई। करि कटाक्ष बोली मुसक्याई ॥
दूलह जेठ कौन सिय केरो। पहिचानन चाहत चित मेरो ॥
युगल गौर युग श्याम कुमारा। एकहि पितुके चारहु बारा ॥
सुनि नृप कह यह इहैं विवेका। एक मातु पितु होत अनेका ॥

दोहा–सुनत सुघारि नापित घरनि, हँसि रसवश अनुरागि ॥
नख करतनि लै कंजकर, नखन छुवावनि लागि ॥

चौपाई।

नखकरतानि नख परश सुहाये। मनुढिग विधुन विधुन्तुद आये ॥
कनक थार भरि नीर उरायनि। लागी देन महाउर नायनि ॥
भरि भाजन यावक बड भागी। चरण कमलकर धोवन लागी ॥

परत कमल पदतल अरुणाई । नाउनि यावक गई भुलाई ।
जिनपदसलिल विश्व अघ खोवै । धनि नाउनि ते पद कर धोवै ।
तरसत जिन पदरज कहँ देवा । नाउनि करति सुतिन पद सेवा ।
वसहिं स्वयंभु शंभु चित जेई । नाउनि करन मलति पद तेई ।
जे पद मुनि मानससर वासी । ते नाउनि कर करत प्रकासी ।
जिनहिं न तुलति मुक्तिप्रदकासी । ते पद भे नाउनि कर वासी ।
भरयोकमंडलुविधिजिनपदजल । सोइ सुरसरि है हरतविश्वमल ।
तेइ पद पङ्कज पाणि पखारति । नाउनि दशपितुपतिकुलतारति ।
पतितन पावन जिन पद पानी । धनि नाउनि धोवति निजपानी ।
दोहा-निज कर कठिन विचारि अति, प्रभु पद कोमल कञ्ज ।
परशति पुनि डरपति हिये, क्षणक रञ्ज क्षण रञ्ज ।

चौपाई ।

देति महाउर चित्र विचित्रा । युग पद पंकज विश्व पवित्रा ।
लसहिं चिह्न प्रभु पदतल जेते । नाउनि लिखति उपर पद तेते ।
जानि राम नाउनि चतुराई । दीन्ह्यो ज्ञान हरयो जडताई ।
जानि जगतपति सो बडभागी । लीन्ह्यो नेग भक्तिरस माँगी ।
दीन्हीं भक्ति ताहि रघुराई । चली भवन सो शीश नवाई ।
जडित जवाहिर भूषण नाना । लगे देन नृप नेग महाना ।
सो कह लह्यो नेग हम जैसो । अति दुर्लभ पावत कोउ ऐसो ।
अस कहि प्रमुदित नापित रमनी । मङ्गल गीत गावती गमनी ।
इत अप्सरगण गावन लागा । राम व्याह मङ्गल शुभ रागा ।
गावहिं मंगल राग सहाना । राम सुयश पावन कर काना ।
गुरु वसिष्ठ नहछू कर चारा । करवायो जस वंश प्रचारा ।
कंकण गुञ्जा गुच्छन केरे । कनक कलित लागे रत्न घनेरे ।
दोहा-पहिराये चारिहु वरण, अपने कर मुनिराय ।
जुटी मीत गुणि जलज जनु, इन्द्रवधूटी जाय ॥

चौपाई ।

पुनि बोल्यो दशरथ नृपराई । व्याह वसन पहिरावहु जाई ॥
लाग्यो आपहु करन पुशाका । भिन्न भवन चालिकै सुख छाका॥
याहि विधि करि नहछू कर चारा । सजन भवन गे राजकुमारा ॥
तहँ परिचर पहिरावन लागे । साचिव सुमंत बतावन लागे ॥
बहुमाणि मंडित मौर प्रकाशी । करत मंद दिनकर रुचि राशी ॥
सो रघुराजहि शीश विराजा । मनहुँ नीलमाणि गिरिदिनराजा ॥
लषण दुवनहन मौर सुहाना । मनहुँ शरदघन शिर युग भाना॥
तुर्रा तडप उभयादिशि कैसी । मेदुर मेघ बकावलि जैसी ॥
काकपक्ष बिच भाल सुहावत । जनुरणराहुजीति शशि आवत॥
भाल विशाल बीच अति लोना । लसत धात्रि कर दीन दिठोना॥
मनहुँ मयंक मीत मन मानी । शृङ्गारहि लीन्ह्यों उर आनी ॥
भ्रुकुटि बंक मनु मदन कमानू । तिलक रेख जनु शर संधानू ॥

दोहा-अमल कपोलनके उपर, युग चख डोरे लाल ।
मनहुँ उछलि सरते लसत, फँसे मीनयुग जाल ॥

सवैया ।

को वरणै रघुनन्दनके दृग, मीत औ खंजन कंजन जीते ।
सैनके सैफन कीन्हें कटा जिन, मानिनि मानके दुर्ग अजीते ॥
हैं रतनारे बडे अनियारे, सदा रघुराजके प्यारे सुजीते ।
नीतिसों प्रीतिसों प्रेम प्रतीतिसों, आजलों ना रसरीतिसों रीते ॥

दोहा-कुंडल काननमें लसैं, मंजुल मकराकार ।
मनहुँ सुछबि युग वापिकन, झलकत झख शृङ्गार ॥

सवैया ।

पीत सुरंग दियो पहिराय, चमाचम चारु मनोहर बागो ।
मंडित मोतिन जाल विशाल, बिचैबिच हीरनको सुम लागो ॥

घेरु बडो मनो फेरुसों फावित, मेरु मयूखनसो द्युति जा
तापर भावै विभाकर ज्यों मणि, मोर कहै रघुराज सपा
कटिमें पटुको छबि छाय रह्यो, क्षिति ह्वै छबि छोरनकी
पँचरंग मणीनकी ढालबँधी, करवाल विशाल विभा म
पद अंबर शंबर शत्रु रच्यो जनु, त्यों पदत्राण प्रभा
नव नूपुर ते पद पंकजमें, रघुराज भजे भव शोक

छन्द गीतिका।

हाटक कटक करमें चटक हीरन छटा छूटैं घनी।
नव रत्न अंगद बाहु मूल अतूल बिच बिच बहु मनी॥
माणिक सुपन्ना पादिक मोतिन जाल सोहत सेहरा।
मन मीन फाँसन हेतु मनु मनसिज रच्यो कल केहरा॥
वैकुण्ठपतिके कंठ तेज अकुंठ कंठाभरन हैं।
मनु अंबुनिधि सुत कंबु बंधुहि मिलत लंब सुकरन हैं॥
मणि इन्द्रनील सुपद्मराग विभाग कृत सेल्ही भली।
मनु मेरु चारिहु ओर तारन कलित मारुतकी गली॥
हियरो हराति हेरतहि हठि हिय हीरकी हारावली।
मनु तरनि तेजहि तोपि शशि बल तडपती तारावली॥
जिहि भाँति वरण्यो वसन भूषण राम व्याह शृङ्गारके।
तिहि भाँति तीनिहुँ बंधुके शृङ्गार भूषण भार के॥
धात्री रुचिर रतनालिका कज्जल दृगन देती भई।
निज पाणि राई लोन बरन उतारि पावकमें दई॥
चुटकीनको चटकाय पुनि बलि जाय बारहिं बारसों।
आनंद अंबु बहाय अंबक सुमिरि त्रिंबक वारसो॥
कर जोरि बोली गुरु वसिष्ठहि यंत्रमंत्रन बाँधिये।
नहिं दीठि लागै ललनके यहि हेत हर अवराधिये॥

गुरु कह्यो इनके दीठि मूठिहु लागती अस को कहै।
दुनिया भरेकी दीठि इनके मूठिमें सब दिन रहै॥
उत भूप पहिर्‌यो पीतपट दीन्ह्यों मुकुट पुखराजको।
पुखराजके उर हार जामा जरकशी सुखसाजको॥
कटि कसो पटुको पीत माला पहिरि पीत प्रसूनको।
मिथिलेशको समधी सज्यो सुख दून देखत सूनको॥
यक कर सहज करवाल तुलसी माल यक कर सोहई।
रघुराज पितु ऋतुराजसों राजन समाजन मोहई॥
देखन हितै चारिहु सुदूलह इन्द्र सम आवत भयो।
दूलह सजे देखत हगन सुख दून नृप पावत भयो॥
तब कह्यो वचन वसिष्ठ यहि क्षण भूप परछन कीजिये।
दूलह चढाय तुरंग महँ पुनि गमन शासन दीजिये॥
तब तुरत तरल तुरङ्ग चारि सवाँरि साज मणीनकी।
अनुपम सुछबि मुहरो लगाम ललाम दुमची जीनकी॥
पगमें पुरट पैंजन परे हैकल सुहीरनके जडे।
चामर सडाके अति प्रभाके गासिया मखमल मडे॥
पायर सुपन्नाके बने कलँगी कलित मणि गुच्छकी।
यदि जमै मंदर माथ सुरतरु ताहुकी छबि तुच्छकी॥
चोटी गुही मोती अमल तिन जानुलों लर लरकतीं।
मनु शरद वारिदकी घटा जलबिंदु अवली ढरकतीं॥
साजे तुरंग निहारि चारि वसिष्ठ दूलह चारिहूँ।
करवाय तिनहिं सवारछबिलखि मुनितनहुमन वारिहूं॥
लै पाणिदधिअक्षतशकुनदीन्ह्यो त्रिकुटिटिकुली भली।
मानहु मयंकनिशंक कीन्ह्यों अंक निजसुत बुधबली॥
पुनि दियो दधि अक्षतन बिंदुविशालभालभुवालहै।

लाग्यो उतारन आरती तिहि काल होत निहाल है॥
वर्षहिं सुमन सुर देत दुंदुभि करत जयजयकारको।
बाजे बजाय बरात महँ जन लहत मोद अपारको॥
जिहि नाम शत्रुंजय महासिंधुर नरेश मँगायकै।
तापर अरोहण कियो आशुहि अंबु अंबक छायकै॥
दोहा-लस्यो नरेश सुनाग पै, मणिगण दियो लुटाय।
मनहु उयो उदयाचलै, दिनकर कर छिटकाय॥
होत सवार भुवारके, पर्यो निशानन घाव।
गुरु कौशिकको युगलगज, लिय चढाय तहँ राव॥

छन्द चौबोला।

बैरख फिर्यो जनकपुरके दिशि तुंग व्योम फहराता।
बाजन बाजत विविध भाँतिके चली सुचाय बराता॥
फहरि रहे गज वर निशान बहु मुख्यनिशान समाना।
सुतर सवार चले चमकत पट चट पट सोहत नाना॥
किहे शृँगार मारमद मारत प्यार सवार अपारे।
जनु मन्मथ निरमें रथके गथ पथ पर सजत उदारे॥
पैदर भूरि भार अति भावति पहिरे वसन सुरंगा।
मानहुँ कुसुम महीतल फूल्यो सब थल एकहि संगा॥
लसत अखंडल परिकर मंडल घन मंडल जनुसाँझैं।
चपलासे चमकत निचोल चय घहरनि दुंदुभिझाँझैं॥
बकमाला मोतिनके माला धुरवा सिंधुर राजी।
इन्द्रचाप सम चाप अनेकन नचत मोर जनु वाजी॥
प्रेम प्रवाह बढ्यो परिपूरण सुख अँसुवा झरि लाई।
पावस रूप बरात बिराजति जनकपुरी महि आई॥
उडी धूरि नभ पूरि रही तहँ देव सबै अकुलाई।

वर्षें सलिल सुरभित कुसुमन सँग दीन्हें रजहि दबाई ॥
झूलैं झूल भूार जरकसकी चमचमाय रविकरसे ।
महामधुर बोलत नकीब बहु कोलाहल खग बरसे ॥
सोहत तारासे सुकुमारा चहुँकित राजकुमारा ।
चारिहु बंधु मध्य पूरण विधु सजे सकल शृंगारा ॥
रत्न अनेकन भूषण भावत मनहुँ कुसुम बहुरंगा ।
लघु बड सघन पल्लवित पादप गज वाजी लघु तुंगा॥
फहरि रहे अतिलंब पताके सूर्यमुखी चहुँ ओरा ॥
मनुसरितासरविमलविराजित साहित विहँग तिहि ठोरा ।
उडति धूरि मनु कुसुम धूरिबहु सुरभि चहूँकित छाई ॥
आयो सैन्य साजि जनु ऋतुपात दशरथ नाम धराई ।
मंगल अवसर जाान सबै सुर निज निज वाहन साजे ॥
लखत बरात बिबुधगण गवने विविध बजावत बाजे ॥
दशरथभूप विलोकत जे सुर तिनहि शक्र लघु लागे ।
लोकपाल युग स्वर्ग साहिबी नाहिं समान छबि जागे ॥
कहहिं देव सब आज जनकपुर लोकपाल पुरजीतो ।
विभव सकल आयो मिथिलापुर भुवनरह्यो छबिरीतो॥
इत बरात उत लखि विदेहपुर विशुकर्मा विधि देखी ।
अति विचित्र ढब अतिपवित्र सब निजकरनीलघु लेखी॥
आवत जानि बरात जनकपुर मंगल साजु सँवारी ।
यूथयूथ घट पुरट शीश धरि खडीं विलोकन नारी ॥
तिनहिं निहारि हारि हिय जातीं दिवि देवनकी दारा ॥
सुरसिहात लखि सकलबरातिन महाविभव विस्तारा ।
कौतुक मानि तहाँ अति मनमें बोल्यो वचन स्वयंभू ॥
यह विभूति आई कहँ ते किमि तब समुझाये शंभू ॥
यह वैकुंठ विभूति जानिये नहिं करतूति तिहारी ।

पेखहुत्रिभुवनपतिविवाहविधिधानिनिज भाग्य विचारी ॥
जासु नाम सुखधाम जपत मुख लहत पदारथ चारी ।
तासु विभूति अधिक नहिं एती जानि भ्रमकरुसुखचारी ॥
अस कहि परम अनंदीनन्दी चढि शंकर चलि आगे ।
लगे विलोकन रामरूप छबि रामचरण अनुरागे ॥
घनन ओटकरि गणन गगन महँ मगन मोद त्रिपुरारी ।
कह गौरीसों गिरा तोरि साति भै वश भाग्य हमारी ॥
दोहा-देखे जात बरात सँग, दशरथ देवन व्रात ।
हिये न हर्ष समात तहँ, उर अचरज अधिकात ॥

छंद चौबोला ।

करहिं वेद धुनि मंगल भूसुर देहिं अनेक अशीशा ।
चारिहु दुलहिनि दूलह संयुत युगयुग जियहु महीशा ॥
कोउ दशरथकी भाग्य बखानत कोउ मिथिलेश बखानैं
कोउ सीताकी करत प्रशंसन कोउ रामहि जे जानैं ॥
चारिहु बंधु तुरंगन सोहत अंग अनंग लजावन ।
यक जोरी मूरति मर्कतसी युगल पदिक छबि छावन ॥
जात नचावत कछुक चलावत पुनि झमकावत वाजा ।
वाहन युत शिवसुवन लजावत भावत सखन समाजा ॥
जस जस नचततुरंग तरलगति तिलतिलमहि मगकाटै ।
तस तस छमछमात पैंजनि ध्वनि स्वरन ठाट बहु ठाटै ॥
सखा उछालत ऊरध वाजिन तिहि थल पुनि लै आवै ।
जन समूह नहिं परश होत कोहु अद्भुतकला दिखावै ॥
राम बंधु युग बीच विराजित चहुँकित सखा सुहाये ।
तिन पाछे शत्रुंजय गज पर अवधनाथ अति भाये ॥
चढे मतंग महीप उभय दिशि गुरु अरु कौशिक राजैं ।

जनु एरावत चढ्यो पुरंदर शुक्र बृहस्पति भ्राजैं ॥
देखि देखि दशरथको सुर मुनि कहहिं कौन असभागी ।
त्रिभुवनपतिको चल्यो विवाहन पूत प्रेमरस पागी ॥
जस जस झमकत नचतरचतगति राम वाजि अभिरामा ।
तस तस दिल डरपत दशरथको छटै न पग कहुँ ठामा ॥
कोउ झमकावत कोउ सिखवावत कोउ दरशावत सोई ।
कोउ मुरकावत कोउ बढिजावत रुकिजावतराचि कोई ॥
राजकुमार कला दरशावत पावत परम प्रशंसा ।
सखा प्रमोदित परा मिलावत जहँ रघुकुल अवतंसा ॥
अहैं बरोबर वयस सखा सब लहि समान सन्माना ।
भूषण वसन समान सुहावन को समान तिन आना ॥
वृद्ध वृद्ध रघुवंशी कुलके पीछे सिखवत जाहीं ।
करहु न चंचलता बहु लालन अवध नगर यह नाहीं ॥
वृद्धन वचन सुनत सकुचत अति दूलह भूप दुलारे ।
मंदहि मंद चलावत वाजिन देते सखा इशारे ॥
तनक बाग ऊँची करि देते नभ उडिजात तुरंगा ।
चमकि बीजुरीसों पुनि बहुरत नहिं कंपत कछु अंगा ॥
चलत हंसगति कहुँ मयूरगति कतहुँ सेनगति लेहीं ।
उच्चैःश्रवा करत मद रद हद मानहुँ गरुड सनेही ॥
राम तुरंग नाम सुग्रीवहि शैव लषणको वाजी ।
भरत अश्वको पुहुप बलाहक रिपुहन मेघ मिजाजी ॥
चारि चारि चारिहु कुँवरनके चलति चमर अतिचारू ॥
छाजत क्षपानाथसे छत्रहु यक यक शिर हिय हारू ॥
झालरि झूलि रही रत्ननकी हलक झलक छबि छलकैं ।
देखे तिनहिं परत नहिं पलकैं बिन देखे जिय ललकैं ॥

खबर राजमंदिर महँ पहुँची आवत चली बराता।
कह्यो विदेह बोलि लक्ष्मीनिधि जाहु लेन तुम ताता।
जनककुमार सुनत चढि वाजी चल्यो लेन अगवानी।
धरे पुरट घट शिर सधवातिय चलीं सहस छबिखानी।
तिहि विधि औरहु बहु पुरनारी धरे कलशयुत दीपा।
गावत मंगल गीत सुहावन दूलह लखन समीपा।
सजनी सजी वृजी मिथिलाकी तिन मिलि रूप छिपाई।
शची गिरा गौरी आदिक सब सुरतिय सुखित सिधाई।

दोहा–धरे शीश कचन कलश, गावत मंगल गीत।
दूलह देखन निकटते, गमनीं परम पुनीत॥
मिथिलापुरकी कोउ सखी, बोली भरी अनंद।
करहिं मन्द सखि चन्द्रको, नृप नंदन मुख चन्द॥

पद।

व्याहन आये दशरथ लाल।
माथे मौर पीत अम्बर तनु राजित हिय वनमाल॥
सुन्दर तरल तुरँग झमकावत भावत अति यहिकाल॥
श्रीरघुराज निछावरि याकी त्रिभुवन छबि तिहुँकाल॥
धनि धनि सीता जनक दुलारी।
जाके हित सुंदर बनरा यह बनि आयो मनहारी॥
हम सीता बालकपनते यक संगहि रही खिलारी।
श्रीरघुराज आज अब यहि सम कोउ नहिं परत निहारी॥
गावहु मङ्गल गीत सखीरी।
अस अवसर कबहूँ नहिं पैहौ पुनि विधि नाहिं लिखी
कौशलपति किशोर चितचोर सुछबि जित नाहिं लखी
तिहि रघुराज कहत जग जीवत सातिविषवेलि भखी

अब कुलकानि सुरति नहिं आवै ।
देखत बनत अवध बनराको और नहीं कछु भावै ॥
बरबस चलि लगिहौं निशंक उर कोउ कितेक समुझावै ।
श्रीरघुराज लगनके मनको को पुनिकै मुरकावै ॥

बानिक वेष अवध बनरेकी ।
चंपक रंग विराजत बागो उर पुखराज सुछबि गजरेकी ।
शीश मौर सेहरा सोहावन कुंडल कान बननि मकरेकी ॥
श्रीघुराजराज अलबेलो मतिगतिहेरि हरत हियरेकी ।

दोहा-कोउ सखि जन संघर्षवश, जस तसकै कढि जाय ।
पुनि आवनि चाहत लखन, बोली सजनि सुनाय ॥

पद ।

देखन री चलु अवध दुलारो ।
आयो बनि बनरा मिथिलापुर हौं ज्यों त्यों यक बार निहारो ।
नयनन परत धस्यो हियरे महँ केहू निकसत नाहिं निंकारो ॥
श्रीरघुराज सॉवरी छबिपै हौं तुरंत ताकि तन मन वारो ।

दोहा-लक्ष्मींनिधिके संग में, सोहत राजकुमार ।
छटे छबीले छबि भरे, गमने पंच हजार ॥
अगवानी आई निकट, रुकिगै सकल बरात ।
लक्ष्मीनिधि वंदन कियो, नृप पूँछी कुशलात ॥
सुत विदेहको नेह वश, अवधनाथ हरषाय ।
पाणि पकरि निज नागमें, लीन्ह्यो चटकचढाय ॥
नारिन शीशन पुरट घट, दीपावली सुहाय ।
मनहुँ भई थिर बीजुरी, लै तारन समुदाय ॥

रानि सुनैना सहचरी, तंदुल दधि भरि थार।
राम भाल टीकुली दई, सुमार महेश कुमार॥
महामणिनके छत्र पुनि, राका इंदु अकार।
पठवाये मिथिलेशके, चारि वरन हित चार॥
कोशल छत्र उतारिकै, मिथिला छत्र लगाय।
मिथिलाके परिकर चले, दूलह संग सुहाय॥
अगवानीको चार करि, गमनी चारु बरात।
राजकुँवर दुहुँ ओरके, वाजि नचावत जात॥

सोरठा--जापै राम सवार, सो बाजी को कहि सकै।
वेग मरुत अवतार, शीलवान मानहुँ शशी॥
मानहुँ मदन सँवारि, नजरि कियो रामहि तुरँग।
सकै को सकल उचारि, अंग अंग सुखमासदन॥

कवित्त।

राजै सबै वाजिनकी राजी बीच राम वाजी, जातिको सु
महा मारुत मिजाजी है।भानहूंके वाजिनको जीतिलीन्ह्यो वेगि
उच्चैःश्रवा पाजी करि वेगता विराजी है॥ रघुराज मानसको
मनमाजी गति, पन्नगारि दांजी करै पतँग पराजी है। नाकत
कपै बचावत विचारि बुद्धि, परिहै त्रिविक्रमके विक्रममें भांजी
वेगके विवश नासा होत फर फर जाको, बोटी बोटी थर थर कौं
है अंगकी। ज्वलन जरत अस परत पुहुमि पाँय, शीलसे
गति मारुतके संगकी॥ बाग राग रचितसो तडिता तडप
तडपि थिरत छबि हरत तरंगकी। रघुराज जौलौं चहै
बखानै तौलौं, आनै आनै होती छबि रामके तुरंगकी॥

सोरठा–वर्णि लहै को पार, सो तुरंगकी अंग छबि।
जापै राम सवार, दशरथको रणबाँकुरो॥

छंद गीतिका।

रघुनाथ रूप निहार तहँ त्रिपुरारि कहत विचारिकै।
दिखिहौं दशै दूलह दृगनि नहिं पांच नयन उघारिकै॥
अति अंग कोमल कठिन दृग कछु जाय जो ढिग गरमहू।
धरिहौं कहां वह अयश मिटिहै जन्म जन्मन शरमहू॥
विधि जानि शिव अनुमान विहँसे आठ अपने नयनसों।
अभिराम राम स्वरूप पेखत नहिं वृथा दृग चैनसों॥
षट्मुख कह्यो तब हर्षि विधिसों आज हम तुमसों बडे।
पितु पूत मिलि डेवढ द्विगुण सुख लहै नयननको खडे॥
तब बिहँसि वचन विरंचि कह हम संग लेब पनातिको।
तुलिहौ न तुम सकुटुम्ब तब जो सहस दृग जग ख्यातिको॥
असकन्दबोल्यो विहँसि तब अहिपतिविभूषणममपिता।
जिहि सहस मुख दृग सहसयुग समताकहाकिमिभाविता॥
यहि विधि विनोदित वचन मंजुल सुर परस्पर भाखहीं।
सबते अधिक सुख शक्र तिहिते दून शेषहि राखहीं॥
रघुराजसहित समाज आज विराज दोउ कुल राजहैं।
भरि लाज उर सुरराज देखत चकित सब महिराज हैं॥
गमनत बरात सुहात यहि विधि निकट शहरपनाहके।
आईं जबै पुरलोग सब देखत भरे सु उमाहके॥
जुरि सकल जन यूथन अनेकन त्यों बरूथन नारिके।
देखत बरात अघात नहिं बतरात वचन विचारिके॥

हमरे सुकृत फल सीय राम विवाह मिथिलापुर भयो।
को आज हमसम धन्य महितल सफल लोचन करिलयो।
कोउ कहैं दूलह देखु सियको मदन निउछावरि कयो।
नहिं रामसम कोउ भुवन सुंदर तोरि तृण धरणी धरो।
यह श्याम वर सियको सखी वर उर्मिला तनु गौर है।
कुशकेतु कन्या मांडवी वर श्याम तनु चित चोर है।
श्रुतिकीर्तिको यह गौर वर्ण विराजतो लदूह भयो।
अवधेशके नंदन अनोखे लखन हित आगू चलो।
अस कहहिं युवती परस्पर झुकि रहीं दूलह देखनें।
भरि प्रीति गावहिं गीत मंगल मोद मग्न अलेखनें।
सूर्य्यास्तसमय बरात प्रविशी जनक नगर सुहावनें।
देखत बराती नगर सौभग इन्द्र नगर लजावनें।
फहरैं पताके तुंग चहुँकित विविध रंग अनङ्गसें।
तोरण कनक तडिता तडप घट पुरट द्वार पतंगसें।
वर रंभ खंभ खडे अनेकन द्वार द्वार विराजहीं।
अतिशय उतंग अवास हिमगिर शृङ्ग शोभ पराजहीं।
सींची गली सुरभित सलिल विस्तार बृहद बजारके।
द्रविनाधिपति सम वणिक बैठे करहिं वस्तु प्रचारके।
शारद घटा ऊंची अटा छन छटासी युवती चढीं
अति हर्षि वर्षि प्रसून लाजा वर लखन चोपहि मढीं।
आई बरात बजारमहँ नर नारि दूलह देखहीं।
दशरथ जनक अरु भाग्य अपना अधिक उरहि उरेखहीं।
घर घर बजत बाजन विविध मिथिलापुरी ध्वनिमय भई।
देते बरातिन नारि नर करि युक्ति गारी रसमई।
यहि भाँति देखत नगरहास विलास बहुविधि करतई

मिथिलेश मंदिर जाय द्वार बरात सब ठाढी भई ॥
तहँ भयो जन संघर्ष अति कसमस परत काढि जातमें ।
मिथिलेश अस नहिं नात सकल बतात बात बरातमें॥
सोरठा–जब मिथिलापति द्वार, आई अवध बरात वर ।
तिहि क्षणको सुखभार, वरणि पार किमि जाय कवि॥
दोहा–मिथिला जन तिमि अवध जन,तिमि सुर सर्व अपार ।
तिमि महिके वासी मनुज, प्रगट्यो पारावार ॥
जनक महलके द्वारको, चौक महा विस्तार ।
भरत भीर जस जस मनो, तस तस बढत अपार ॥

चौपाई ।

कनक खचित वर वसन बनाये । चित्र विचित्र रंग तिन भाये ॥
परिचर तहँ विदेहके ल्याये । डारि पाँवरे अति सुख छाये ॥
गोपुरते अंतहपुर द्वारा । परी पौद विस्तार अपारा ॥
जनक राज महिषी छबि खानी । साजि सुवासिनि अतिहरषानी ॥
रचि आरती कनक मणि थारा । पठई जहँ द्वारको चारा ॥
द्वार चार थल रचो बनाई । मोतिन माणिक चौक पुराई ॥
कनक कुंभ करि वदन स्वरूपा। आवाहन करि मन्त्र अनूपा॥
थापित करत माहँ तिहिकाला । भो प्रत्यक्ष गणनाथ विशाला ॥
गोरि अवाहन किय सन्मानी । मूर्तिमंत भइँ प्रगट भवानी ॥
राम दरश लालस मन माहीं । समय समय सुर प्रगटत जाहीं॥
समय ओर आसन अति पावन । धरे पुरोहित शुचि छबि छावन ॥
गौतम शतानन्द बड ज्ञानी । याज्ञवल्क्य आदिक मतिखानी॥
दोहा–राजत भइ मुनिमण्डली, रामदरश अभिलाष ।
द्वारचार करवावने, बैठे युत श्रुतिसाष ॥

चौपाई ।

प्रज्वालित आरती अपारा । लीन्हे पाणि पुरटके थारा ॥

खडी सुवासिनि किहे कतारा । कनक कुम्भ शिर सजत अपारा ।
भई भूमि थिर मनहु दामिनी । गावहिं मंगल गीत भामिनी ।
सचिव सुदावन जनक पठायो । लक्ष्मीनिधि कहँ वचन सुनायो ।
महाराज अस दियो निदेशा । ल्यावहि सुतन सहित अवधेशा ।
रहै चौकमहँ खडी बराता । आवहिं रघुकुल वृद्ध विज्ञाता ।
राम सखा सब संग सिधारे । देखैं दूलह द्वारन चारे ।
सचिवसकल मिथिलेश निदेशा । राजकुँवरसों कह्यो अशेशा ।
जनककुँवर दशरथ पद वंदी । पितु रजाय सब कह्यो अनंदी ।
सुनिकौशलपति अतिसुखपायो । तुरँगन ते कुँवरन उतरायो ।
चारि सुखासन वरन चढायो । सखा और कुल वृद्ध बुलायो ।
भये पालकी राउ सवारा । शोभा निरखि धनद हियहारा ।

दोहा—सब तुरंग मातंग रथ, औरहु सकल बरात ।
खडी करायो चौक महँ, बाजत बाजन ब्रात ॥

चौपाई ।

परत पावडे पाँयन मंदा । करि आगे दूलह सानंदा ।
राम भरत लक्ष्मण रिपुशाला । तिन पाछे दशरथ महिपाला ।
चल्यो द्वारको चार करावन । जनु विधिलोकपालयुत पावन ।
चढीं अटा अंतहपुर नारी । लखि दूलह छबि तन मन वारी ।
उतै जनक इत दशरथ राऊ । रत्न लुटाय न लहत अघाऊ ।
जे लूटहिं जन तेउ लुटावैं । हर्ष विवश नहिं धन मन ल्यावैं ।
दशरथ तुरत सुमंत बुलाये । सादर सुखद निदेश सुनाये ।
रघुकुल गुरु कौशिक मुनिराई । दोउ आनहु पालकी चढाई ।
कश्यप मार्कंडेय उदारा । कात्यायन जाबालि हँकारा ।
और मुनिन कहँ लेहु बुलाई । द्वारचार करवावहिं आई ।
ल्यायो तुरत सुमंत लिवाई । राम व्याह प्रमुदित मुनिराई ।

चढि पालकी वसिष्ठ सिधारे। तिमि कौशिक तप तेज अपारे ॥

दोहा–मुनि मंडल महिपाल मणि, मंडित भयो अपार ॥
रवि शशि अश्विनितनय मनु, वेदसहित करतार ॥

चौपाई।

याहि विधि अन्तहपुरके द्वारे। लै दूलह नरनाथ पधारे ॥
शतानंद तहँ अवसर जानी। बुलवायो जनकहि मुदमानी ॥
तहँ आरती उतारन काजा। वृजीं सुवासिन सजी समाजा ॥
तिन मधि तिनको रूप बनाये। शची गिरा गिरिजा सुख छाये ॥
तेउ आरती उतारन आईं। औरहु देवदार मन भाईं ॥
लै दूलह जब अवध महीपा। द्वारचारकी चौक समीपा ॥
आयो मुनि मंडल लै भारी। तब वसिष्ठ अस गिरा उचारी ॥
धरहु सुखासन वरन उतारी। अवधनाथ आपहू पधारी ॥
अस कहि पढन लग्यो स्वस्त्ययना। उतारि भूप युत कुँवर सचैना॥
चौक समीप कुँवर करि आगे। ठाढे भये भूप अनुरागे ॥
तहाँ सुवासिनि परमहुलासिनि। सजींसकलमिथिलापुरवासिनि॥
तोरहिं तृण लखि रूप अनूपा। भाग्य सराहत दशरथ भूपा ॥

दोहा–ते उतारतीं आरती, सलिल डारतीं भूमि।
नयनन पलक निवारतीं, लेतीं मनु मुख चूमि ॥
शची गिरा गिरिजा तुरत, राम समीपहि जाय।
लगीं उतारन आरती, अपनो रूप छिपाय ॥
मन्द मन्द रघुनन्द तहँ, किय प्रणाम मुसक्याय।
दै आशिष ते विविध विधि, गवनीं तुरत लजाय ॥

चौपाई।

उत आयो मिथिलाको राजा। इत सुत युत कौशल महराजा ॥
मिले बरोबरी भूपति दोऊ। जयजयकार किये सब कोऊ॥

कहहिं परस्पर मुनिन समाजू । सम समधी देखे हम आजू
भूरि भाग्य अस लखी न भूमै । नहिं नल पृथु ययाति रघुभू
दोउ नृप कीन्हें मुनिन प्रणामा । कहे कृपा तव पूरयो कामा
मुनि आशिष दै वचन उचारे । भये मनोरथ पूर हमारे
मिल्यो बहुरि रामहिं मिथिलेशा । जन्म जन्म कर मिटयो कले
भरत लषण रिपुसूदन काहीं । मिल्यो विदेह विदेह तहाँ
दशरथ चरण परयो कुशकेतू । मिल्यो अंक भरि रघुकुल
मिल्यो बहुरि पुनि चारिउ भाइन। सो सुख यह यकमुख कहिजा
उभै श्वशुर वंदे जामाता । अम्बक प्रेम अंबु उमगाता
तहँ वसिष्ठ दूलह यक ओरे । बैठाये आसन इक ओ

दोहा–शीरध्वज निमिकुल कमल, कुशध्वज ताको भ्रात।
भवन ओर बैठत भये, इक आसन अवदात।

चौपाई ।

गौतम शतानन्द आदिक मुनि । बैठे जनक ओर दोउ विधि
विश्वामित्र वसिष्ठ उदारा । बैठ राम ढिग गुणि अधिका
लगीं गवाक्षनमें सुखसानी । दूलह देखि सुनैना रा
सिद्धि नाम लक्ष्मीनिधि रमनी । जनक पतोह क्षमा छवि
औरहु वृद्ध जनक कुल नारी । लखि दूलह तन मन धन
जो सुख भयो सुनैना काहीं । सकैं भाषि कवि कोविद
मंजुल बाजत बजन अपारा । गायरहीं सुर नर मुनि
लाग्यो होन द्वार कर चारा । कियो वेद विधि मुनिन
पूजन भयो जौन तिहि देशू । लिय प्रत्यक्ष है गौरि
करवाये मुनि वेद विधाना । माने आपन भाग्य
वेनु थम्भ पूज्यो भगवाना । जनुनिमिकुलयशध्वजफह
तिहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो । सारा जोरी चार

दोहा—चाउर चन्दन पाणि लै, उठ्यो सबंधु भुवाल।
दिये कंध ह्वै बंधु युत, दीनबंधु के भाल॥

चौपाई।

चन्दन पीत विराजत भाला। जनु पहिर्‍यो शशिकेसरमाला॥
लक्ष्मीनिधि पुनि पाणि पसारी। मिल्यो मुदित तहँ दूलहचारी॥
पुनि विदेह भरि मोद उमंगा। सहस नाग दश सहस तुरंगा॥
ढाल ढाल करवाल विशाला। विविध भाँति भूषण मणिमाला॥
रत्न गुथिन वर वसन सुरंगा। कटक मुकुट अंगद बहुरंगा॥
वस्तु अनेक मंजु मनहारी। दियो विदेह विभाग उचारी॥
दानि शिरोमणि भूप विदेहू। पुनि सिय बसै जासु नित गेहू॥
तिहि सम्पातिकर कौन बखाना। मैं वरणौं किमि ताकर दाना॥
याहि विधि भयो द्वारकर चारा। भर्‍यो भुवन आनन्द अपारा॥
दशरथ जनक समेत समाजू। को वरणै जस मोदित आजू॥
शतानन्द तब वचन उचारा। सुनु वासिष्ठ गुरु गाधिकुमारा॥
आयो अब ल्यहु कर काला। मण्डपतर वर चलहिं उताला॥

दोहा—लै मुनि मण्डल नृपति दोउ, करि आगे वर चारु।
चलहिं जनक रनिवासमहँ, करहिं पूत परिवारु॥
नाऊ बारी महर सब, धाऊ धाय समेत।
नेग चार पाये अमित, रह्यो जासु जस हेत॥
उपरोहित निमि वंशको, शतानंद मुनिराय।
लियो नेग बाझिरामसों, मम हिय बसो सदाय॥
विज्जु छटासी कोउ सखी, बैठि अटा सुखछाय।
कहत सखीसों बैन बर, औरहु सखिन सुनाय॥

पद।

सखी लखु आये पुर दूलह चार।

अति सुकुमार मारते सुन्दर दशरथ राजकुमार ॥
पीत वसन शिर मौरें विराजत उर हीरनको हार ॥
बिहँसत वदन सदन शोभाको रुचिर रदन हिय हार ॥
राजकुँवर सँग छैल छबीले रघुवंशी सरदार ॥
श्रीरघुराज निछावरि तन मन होत द्वारको चार ॥
दोहा—कोउ सखि पाछे परिगई, तिहि कोउ कहति पुकारि ॥
खरी कहां तू यंहि घरी, अरी आव सुकुमारि ॥

पद ।

चलुरी चलु देखु सिया बनरो यह राजकुमार हरत हियां
शिरको पागो बागो पियरो युग जुलुफ जुलुम करती जियां
जिहि डहरत डहर करत केहरो चित चख चोरत चेटक चेयां
सखि प्राण पियार सदा हमरो रघुराज अनुज सोहहि जमां
आजु अली मिथिला महीपके द्वारे होत द्वारको चा
कौशल कन्त जोरि भू भूपनि ल्यायो कुँवर अपूरब चा
देखहि नयन मौन रसना बिन बिन हग जीह न करै उचा
श्रीरघुराज लखनके लायक रघुनायक महराज कुमा
दोहा—यहि विधि भाषहिं तिय सकल, वचन सरस रसबोर।
सिय बनरे मुखचन्द्रके, कीन्ह्यो नयन चकोर ॥
तहँ वसिष्ठ बोल्यो हरषि, सुनहु राज शिरताज।
दूलह सहित पधारिये, मण्डप तर सुख काज ॥
शतानन्द विनती करत, लग्न गई अब आय।
व्याह चारके हेत अब, चलहिं राम युत भाय ॥

चौपाई ।

विश्वामित्र महासुख पागे । सुखित स्वस्त्ययन भाषण ला
औरहु सकल मुदित मुनिराई । पढन लगे स्वस्त्ययन सुहा

तिहि अवसर बहु बजे नगारे। नौबत झरन लगीं प्राति द्वारे॥
उचीं नारि सब एकहि बारा। मंडपतर गवनीं भरि थारा॥
रघुकुल गुरु तहँ साहित सनेहू। कहे सुनहु महराज विदेहू॥
ह्वैगो सकल इतैको चारो। आपहु मंडप तर पगु धारो॥
साहित कुमारन कौशलराई। कन्यादान चहत अतुराई॥
दाता और ग्रहीता दोऊ। दोहुँन सम दिगंत नहिं कोऊ॥
लोक लाभ लीजै महिपाला। धर्म सुयश तुव भयो विशाला॥
तब विदेह बोल्यो हुलसाना। निज घरमाहिं विचार न आना॥
को दाता अरु कौन ग्रहीता। को आज्ञा पुनि देइ पुनीता॥
अवधभूप शासन शिर मोरे। भयो सकल दाया मुनि तोरे॥

दोहा-शतानन्द कौशिक सहित, प्रभु करवावहु व्याह।
यथा अवध आचार्य्य तुम, तथा जनकपुरमाह॥

चौपाई।

अवध जनकपुर एकहि जानी। महामुनीश भेद मति मानी॥
अब विलंब किहि कारण कीजै। लै दूलह प्रवेश करि दीजै॥
लोक राम अभिराम विवाहा। मिली जन्म बहु अस न उछाहा॥
सुनि दशरथ वसिष्ठकी बानी। सुमिरि गणेश महेश भवानी॥
रंगनाथ पद पंकज ध्याई। उठ्यो अनंदित कौशलराई॥
शतानन्द गुरु गाधिकुमारा। करि आगे मुनि और उदारा॥
पुनि आगे करि दूलह चारी। अन्तहपुर कहँ चल्यो सुखारी॥
परत पाँवडे वसन नवीना। पढहिं वेद मुनि वृन्द प्रवीना॥
राम व्याह गावहिं सब नारी। देहिं सुवासिनि अर्घ्य सुखारी॥
मणि दीपिका दिपैं गृहमाहीं। थल थल करहिं प्रकाश तहाँहीं॥
कक्षा तीनि विभूति अपारा। निरखत हरषत अवध भुवारा॥
गये खास रानिवास दुआरा। जहँते नहिं पुनि पुरुष प्रचारा॥

दोहा—धवल धाम ध्रुव धाम इव, चामीकरके चारु।
हिमागिरि मन्दर मेरु जिन, जोहत मानत हारु॥

चौपाई।

चौक चंद्रशाला छबि माला। रजत कनककी बनी दिवाल
चित्र विचित्र और सब शाला। लखि ललचत अमरावतिपा
राम निरखि श्वशुरारि विभूती। मनमहँ गुणी सीय करतूत
निरखि विदेह विभव अवधेशा। मनमहँ करत अमित अंदेश
धौं सुरपुर इत शक्र बसायो। ब्रह्मसदन धौं इत चलि आय
किधौं विदेह भक्ति जिय जानी। हरिहर पुरी आय निरमानी
निजतपबल यह विभव अपारा। लह्यो विदेह दीन करता
यहि विधि देखत सुख अवगाहत। दशरथ बाराहिंबार सराह
गे ड्योढी अन्तहपुर केरी। सजीं नारि तहँ खडी घने
लिहे सहस्रन सखी मशाला। चलीं दिखावत जनु सुरबा
तहँ रनिवास पौर अधिकारी। जोरि पाणि जयजीव उचा
करत प्रवेश नेग सो माँग्यो। दियँ मणिमाल राव अनुराग्यो

सोरठा—करि आगे मुनि वृन्द, तिन पाछे करि वरनको।
नहिं समान आनन्द, अन्तहपुर प्रविश्यो नृपति॥

दोहा—लीन्हीं परिकर करनते, चमर छत्र बहु नारि।
चलीं चलावत चाय भरि, करि दूलह बलिहारि॥

चौपाई।

आये राम जबै रनिवासा। अन्तहपुरमहँ भयो हुलासा
धाईं दूलह देखन नारी। देखि देखि जातीं बलिहारी
रहहिं जोहि जकि कढै न वानी। चित्रपूतरी सी छबि खानी
बहुरि परस्पर कहहिं सयानी। निजकर विधि मूरति निरमानी
कहँ अनङ्ग बापुरो अनंगा। कहँ सुर विगत पलक रस भङ्ग
लखी आजलों अस छबि नाहीं। अबलों लोचन रहे वृथाहीं

आजुहि आँखिनकर फल पायो । विधि बनाय दै पलक नशायो ॥
युवतियूथ अस भाषहिं बातें । राम दरश नहिं नयन अघातें ॥
राउ मुनिन दूलह युत आये । मणि मंडित मंडप तर आये ॥
फहरि रहे पताक बहुरंगा । छबि सागर जनु तरल तरंगा ॥
कनक इक्षु दंडनते छायो । तापर विशद वितान तनायो ॥
रतन यतन युत जड्यो अमाना । जगमगात द्युति जाति दिशाना॥
दोहा-मोती माणिककी फबति, झालरि झूलि अपार ।
मनहुँ फँसावन मन विहँग, रच्यो जाल कर मार ॥

चौपाई ।

कनक खंभ कलशा बिलसाहीं । मनहुँ भानु सितभानु सुहाहीं ॥
तहँ मणिदीप प्रदीपहिं नाना । फटिक फरश विस्तार महाना ॥
कनक वेदिका विमल विराजै । कनकाचल कंदर लखि लाजै ॥
आंखत पीत पुहुप वर नाना । अलंकार वेदिका विधाना ॥
पुरट पालिका अगणित भारी । लसै जवांकुरकी हरियारी ॥
लसत अमोले कनक करोले । भरे सुरभि जल धरे अतोले ॥
कनक थार कोपर रतनाली । धूप दीप भोजन मणि माली ॥
शंख प्रकाश असंख्य उदोता । धरे छ्वाछुक सुरसरि सोता ॥
अर्घ्यपात्र मंडित मणि मोती । लाजा भाजन सुछबि उदोती ॥
कंचन थारी थार कटोरे । जगमगात चितवत चित चोरे ॥
बिछे पवित्र दर्भ महिमाहीं । तहँ रत्नासन चारि सुहाहीं ॥
मगरोहन छबि नहिं कहि जाई । सहित स्वर्ग छबि मेरु लजाई॥
दोहा-दिपाति दिव्य दीपावली, तारावली प्रमान ।
रत्न विहँग विराजहीं, छबि सुर वृक्ष समान ॥
मण्डप खंभनमें लगे, मणिमय मुकुर विशाल ।
जगमगात प्रतिबिंब बहु, वस्तु व्रात तिहिकाल॥

चौपाई ।

यहि विधि जनक महीपविज्ञानी । चारिहु वरन भूप युत आनी।
तहाँ जनक कौशल महराजै । सिंहासन दिय बैठन काजै।
निज निज आसन बैठ कुमारा । मंडप तर निज निज अनुहारा।
तहँ कुशकेतु जनक दोउ भाई । बैठाये सिगरे मुनिराई।
यथायोग्य आसन तिन दीन्ह्यो । बहु प्रकार सत्कारहु कीन्ह्यो।
विश्वामित्र वसिष्ठ उदारा । याज्ञवल्क्य गौतम तपभारा।
वामदेव कश्यप कात्यायन । मार्कंडेय महामुनि चायन।
नारद सनकादिक सुख छाये । च्यवन बृहस्पति लोमश आये।
शृङ्गीऋषि पितु सहित सिधारे । मुनि मरीचि अंगिरा उदारे।
तहँ ब्रह्मर्षि महर्षि समाजा । राम विवाह विलोकन काजा।
मंडप तर सब आय विराजे । शतानन्द मिथिलेश सभा जे।
लखन राम जानकी विवाहा । विधि शिव वासव भरे उमाहा।

दोहा—सबै देव मुनिरूप धरि, मिले महर्षि समाज।
बैठे स्वामी स्वामिनी, व्याह विलोकन काज॥

चौपाई ।

विद्याधर चारण गंधर्वा । किन्नर सिद्ध महोरग सर्वा।
आसमान महँ चढे विमाना । वर्षा फूल बजाय निशाना।
सुरसुंदरी करहिं कल गाना । नचहिं अप्सरा सहित विधाना।
रही गगनध्वनि चहुँदिशि छाई । तैसहि जनकनगरमहँ भाई।
बाजन बाजत विविध प्रकारा । द्वार द्वार सोहत नटसारा।
राजमहल सुख जाय न गाई । थल थल नाचहिं नटी सुहाई।
भई एकध्वनि मिलि ध्वनि भूरी । रही पुरी पुहुमी महँ पूरी।
शशि सूरज अश्विनीकुमारा । सबै देव बनि विप्र अकारा।
बैठे हते मंडपहि आई । जान्यो पृथक पृथक रघुराई।

कियो प्रणाम सबनि मुसक्याई । दीन्हें तिन अशीश शिरनाई ॥
शतानंद मिथिलेश सभ्राता । सबके धोय चरण जलजाता ॥
सींचि भवन सब कियो पुनीता । दिये अशीश मुनीश सप्रीता ॥
दोहा–पुनि मिथिलापति प्रेम भरि, धोयो दशरथ पांय ।
गद्गद गर पुलकित तनहिं, नयनन वारि बहाय ॥

चौपाई ।

आसन बैठे चारिहु भाई । शांति पठन लागे मुनिराई ॥
शतानंद आनंद बडाई । कह वसिष्ठ कौशिकहि सुनाई ॥
गणपार्चन कराय अब दीजै । वेदी थापित पावक कीजै ॥
मैं अब गवनहुँ जहाँ कुमारी । करिहौं चढन चढाव तयारी ॥
असकहि सीतानिकट सिधार्‍यो । रानि सुनैना वचन उचार्‍यो ॥
चारिहु भगिनिकेर सुखदानी । चढे चढाउ आशु महरानी ॥
रानि सुनैना सुनि सुख पाई । भगिनि सहित सीतहि नहवाई ॥
रत्न ग्रथित अंबर पहिराई । चितै चौंध चख गई समाई ॥
पुरट पीठ सीतहि बैठाई । मणिन जडित भूषण पहिराई ॥
नख करतानि नखमाहिं छुआई । नाउनि तहँ यावक लै आई ॥
जे पद लाल प्रवालहुतेरे । शिव अज उरपुर करत बसेरे ॥
ते पदमहँ नाउनि बडभागिनि । यावक लगी देन अनुरागिनि ॥
दोहा–अमर यत्न करि जन्म बहु, लहे न जिन पद रेनु ।
ते पद नाउनि कर लसत, निज जनके सुरधेनु ॥

चौपाई ।

चितवत चारु चरण अरुणाई । नाउनि यावक देन भुलाई ॥
जगा न जोवति यावक योगू । कियो महाउर नख संयोगू ॥
यावक सहित लसत नख कैसे । उदित अमित अंगारक जैसे ॥
इन्द्रनील मणि नूपुर भाये । मनु सरोज बहु षट्पद आये ॥

लघु अँगुरिन मुंदरी सुहाहीं । कंज कोश मनु रवि परछाहीं ॥
तेइपुनि नखन निकट छबि देहीं । धरयो परिधि मनु शशिनभनेहीं ॥
सिय अँगुरी लखि कोमलताई । नव रसाल दल रहत लजाई ॥
सियपद सम सरि करन सरोजू । साहि आतप तप ठानत रोजू ॥
जब न भयो सिय चरण समाना । तब झारत केसर दल नाना ॥
चह्यो नखतपति नख समताई । ताते विधि कालिमा लगाई ॥
गुलुफ सुलुफछबिकाविजन कहहीं । नहिं गुलाबकलिकासम लहहीं ॥
धरयो चरणजल भरि जिहि थारा । भो जोहत यावक अनुहारा ॥

दोहा–जिन पद लेश कृपा परत, पावत देव विभूति ।
ते धोवति अपने करनि, धनि नाउनि करतूति ॥

चौपाई ।

नहछू चार मातु करवाई । भूषण वसंन विमल पहिराई ॥
पुरट पीठ पुनि भगिनि समेतू । बैठाई सिय सजनि निकेतू ॥
शतानन्दसों पुनि कह रानी । चुक्यो चार इतको मुनिज्ञानी ॥
कहहु जबै मंडप तर ल्यावैं । तब मुनि कह जब हम बुलवावैं ॥
अस कहि मुनि मंडपतर आयो । दूलह देखि द्विगुण सुख पायो ॥
राम करत गणनायक पूजा । लीन्ह्यो प्रगट मनोरथ पूजा ॥
प्रगट गौरि सो पूजन लेहीं । राम बंधुयुत कर धरि देहीं ॥
गुरु वसिष्ठ तहँ वेद विधाना । अनल थप्यो वेदी मतिमाना ॥
प्रगट्यो परम प्रकाश हुताशा । ज्वाला बढी दाहिनी आशा ॥
जनक सबंधु वसिष्ठ बुलायो । तासु पाणि मधुपर्क दिवायो ॥
गणपति पूजन आदिक चारा । करवायो गुरु गाधिकुमारा ॥
शतानन्दसों दोउ मुनि गाये । बनत आशु अब सियहि बुलाये ॥

दोहा–शतानन्द आनंद भरि, कह्यो सुनैनहि जाय ।
तहाँ जानकी जानकी, गई घरी अब आय ॥

चौपाई।

जनक पट्टमाहिषी जगजानी। कही सखिनसों मोदित बानी॥
मण्डपतर अब चलहि कुमारी। संग सखी सब साजु सवाँरी॥
सुनत सखी लै सिय तहँ गमनी। मंगल गीत गाय गजगमनी॥
चलैं चारु चामर चहुँ ओरा। छजत छत्र छबि ह्वै क्षिति छोरा॥
बोलहिं सखी नकीब सुखारी। जय जय जय मिथिलेश कुमारी॥
पानदान आदिक सब साजू। संयुत सोहत सखी समाजू॥
सहित भगिनिसखिमण्डलमाहीं। सोहतसियछबिकहि नहिं जाहीं॥
मनहुँ मशालन मण्डल भासी। दिपहि चारि महताब प्रकासी॥
देव सकल फूलन झरि ल्याये। जै जै ध्वनि करि बाज बजाये॥
जबहिं सीय मण्डपतर आई। उठ्यो अनंदित कौशलराई॥
उठि सुरमुनि मनमहँ तिहिठामा। जगदम्बा कहँ कीन्ह प्रणामा॥
सिययुत तीनिहु बहिनि सुहाई। दिय सन्मुख मुनिवर बैठाई॥

दोहा-वेद पढन लागे सकल, सुर मुनि रूप मुनीश।
जोरी भली विलोकि तहँ, दीन्हीं विविध अशीश॥

चौपाई।

कुवँरिन पीछे बैठ विदेहू। सहित अनुज कुशकेतु सनेहू॥
रानी तहाँ सुनैना आई। तिमिकुशध्वज रमनी छबि छाई॥
निजनिजपतिदाहिनिदिशिबैठीं। मानहुँ मोद महोदधि पैठीं॥
तिहि अवसरकी छबि कवि गाई। सकत न मनहिं रहत पछिताई॥
तहँ विदेह दोउ बंधु विज्ञानी। सहित सुनैना निजद्योरानी॥
मुनि मण्डल तहँ विमल विराजा। सिंहासन पर कौशल राजा॥
दूलह चारि दुलहिना चारी। मण्डपतर सुखमा भइ भारी॥
विश्वामित्र वसिष्ठ उदारा। चार करावहिं सुखित अपारा॥
शतानन्द गौतम सुत तैसे। चार करावैं श्रुति कह जैसे॥

एक ओर भल सखी समाजै। गावत मंगल गीत विराजै।
जय ध्वनि सकल नगरनभभूरी। पुष्पावली पुहुमि गै पूरी।
तिहि अवसर अस को जगमाहीं। राम व्याह जिहि आनँद नाहीं।
दोहा—जड चेतन सुर नर मुनिहु, पशु खग कीट पतंग।
राम जानकी व्याह लखि, मगन मोद रसरंग॥

चौपाई।

तहँ दशरथ नृप प्रेम स्वरूपा। तिमि अनुराग विदेहनि रूपा।
निष्ठा शांतिरूप छबि वारी। लसै सुनैना कुशध्वज नारी।
पार्षद रूप और मुनिराई। भक्तिरूप बहु नारि गनाई।
कौशिक गुरु वसिष्ठ मतिमाना। लसैं रूप दोउ ज्ञान विज्ञाना।
शतानन्द ब्रह्मानँद सोई। मणि मण्डप हरि मंदिर जोई।
रत्न अनेकन चौक पुराई। दिव्य भूमि सम रही सुहाई।
वासुदेव सम श्री रघुराई। संकर्षण लषणै दिय गाई।
भरत रूप प्रद्युम्न समाना। रिपुहन तहँ अनिरुद्ध बखाना।
वैदेही लक्ष्मी मन भाई। संकर्षण तिय सरस्वति गाई।
सो उर्मिला रूप मन भायो। रतिको रूप मांडवी गायो।
श्रुतिकीरति तहँ कांतिस्वरूपा। लसैं शक्तिजनु चारि अनूपा।
विष्वक्सेन गरुल अति पावन। मंत्री युगल सुमन्त्र सुदावन।
दोहा—पांचजन्य सम शंख तहँ, सायक सरिस सुनाभ।
सम सारंग शरासनै, कटि असि नन्दक आभ॥
कौमोदकी गदा सरिस, श्रुवा प्रकाश महान।
राम व्याह मण्डप तहां, भयो विकुण्ठ समान॥

चौपाई।

को कहि सकै विवाह उछाहा। रह्यो भुवन भरि मोद अथाहा।
मंगलगीत महाध्वनि छाई। उमाडि चल्यो जनु सुख न समाई।

यामिनि याम जाति जिय जानी। बोल्यो वचन वसिष्ठ विज्ञानी॥
सुनहु विदेह लग्न अब आई। कन्यादान देहु सुख छाई॥
हवन सकल हम विधिवत कीन्हा। पावक प्रगट रूप हवि लीन्हा॥
जनक तनक अब होइ न देरी। पाणिग्रहण यहि लग्न निबेरी॥
सुनत विदेह नेह भरि भारी। धरी कनक मणि मंडित थारी॥
तिहि महँ भरयो सुगंधितनीरा। लीन्ह्यो निजकर कुश मतिधीरा॥
कुंकुम रंगित तंदुल धरिकै। लै जानकी अंक मुद भरिकै॥
तापर धरि मणि महाविकाशी। चूडामणि जिहि नाम प्रकाशी॥
रानि सुनैना गांठिहि जोरी। सो ढारति जल प्रीति न थोरी॥
सिय करकंज कंज कर राखी। रामहि चितै देन अभिलाषी॥

दोहा–अम्बक अम्ब अनन्द भरि, रोमांचित सब गात।
प्रेम विवश गद्गद गरो, कही रामसों बात॥

कवित्त।

वेदन बखान कीन सृष्टि गर्भाधानकी, सुशोभा शीतभानकी अनेक उपमानकी। इंदिरा समानकी सुगौरी धर्म सानकी, सम्मान कुलमानकी पतिव्रत प्रमानकी॥ रघुराज दिनराज वंश दिनराज आज, लीजै ललनानकी शिरोमणि जहानकी। पालिनी प्रजानकी सुपालिनी अजानकी, है जानकीसी जानकी कुमारी मेरी जानकी॥

दोहा–धर्मचरी तुव सहचरी, सदा संचरी संग।
छायासी माया विगत, दायामय सब अंग॥
मेरे पंकज पाणिमें, पंकज पाणि लगाय।
लेहु लाल अवधेशके, लली मोरि चितचाय॥

पढ्यो मन्त्र यह पुनि नृपति, जानि सनातन नीति।
सो मैं लिखौं प्रत्यक्ष इत, रामायणकी रीति॥

श्लोक ।

इयं सीता मम सुता सहधर्म्मचरी तव ।
प्रतीच्छ चैनाम्भद्रन्ते पाणिं गृह्णीष्व पाणिनां॥
पतिव्रता महाभागा छायेवानुगता सदा ।
इत्युक्त्वा प्राक्षिपद्राजा मन्त्रपूतजलं तदा ॥

दोहा–पढि सुमन्त्र यहि भाँतिते, छोडि दियो जल धार।
सुरपुर नरपुर नागपुर, माच्यो जय जयकार ॥
ध्रुवपुरलों अरु भूमि भरि, भूतलमें इक बार।
बाजन बाजे विविध विधि, भो सुख पारावार ॥
चढे विमानन देव सब, वर्षैं कुसुम अपार।
माने रावण भीतिते, आजहिं भयो उबार ॥
एक बार बोले सकल, जय जय दशरथ लाल।
जय जय जनकलली भली, हम सब भये निहाल ॥
बजे नगारे गगनमें, अनक झनक चहुँओर।
अनकि सनकिखलगण गये,तनक रह्यो नहिं जोर॥

चौपाई ।

लगे बजावन बाज बराती । गाय उठीं तिय जुरी जमाती
मंगल मोद भयो मिथिलापुर ।सुखसागर उमँग्यो नहिं किहि
सुर मुनि सबै भये विन भीती । रवि रथ रुक्यो गगन भरि प्रीती
दश दिशि निर्मल बही बयारी । शीतल मन्द सुरभि सुखकारी
दिशा प्रसन्न सन्न खल वृन्दा । तारनसाहित रुक्यो नभ चन्दा
कराहिं वेद ध्वनि मुनिगण नाना । जनक हर्ष को करै बखाना
तैसहि अवध अधीश अनंदा ।कहैं जु कवि मिति सो मतिमंदा

लोहं हुलासित हव्य हुताशा । गुनी भूमि निज भार विनाशा ॥
राम जानकी जोहहिं जोरी । तोरहिं तिय तृण प्रीति न थोरी॥
करहिं निछावरि मणिगण भूरी । परशहिं पाय प्रेम परिपूरी ॥
कहहिं परस्पर नारि करोरी । युग युग जियैं युगल जग जोरी॥
सुर मुनि पुरुष नारि सब लेखे । अस दुलहिनि दूलह नहिं देखे ॥

दोहा–मुनि मंडप पितु मातु सखि, अवलोकन मिस सीय ।
निरखति हर्षति रामछबि, कोटि काम कमनीय ॥

चौपाई ।

अंगुलीय मणि पिय परछाँहीं । कबहुँक कर फेरत परि जाहीं ॥
एकटक निरखि रहति वैदेही । नहिं कर टारति नाथ सनेही ॥
लाज और अभिलाष समाना । मन मुसक्याहिं जानि भगवाना॥
गुरुजन लाज दरश अभिलाखा । समय विचारि सीयं सम राखा॥
साधु साधु भाषहिं सब देवा । नमो नमो कहि ठानत सेवा ॥
जय जय ध्वनि पुनि मुनिसुरकरहीं । राम सीय सुखमा दृग भरहीं॥
याहि विधि पाणिग्रहण तिहिकाला।करत भयो सियको रघुलाला ॥
राम वाम दिशि सिय बैठाई । सर्वस पायो निमिकुल राई ॥
राम निकट सिय सोहति कैसी । कनक लता तमाल ढिग जैसी॥
मनहुँ श्याम घन दामिनि नेरे । सोहि रही हिय हरि सब केरे ॥
देखि देखि छबि राम जानकी । जनक भीति भय राम जानकी॥
लोकरीति गुनि धरि उर धीरा । बोल्यो वचन परम गंभीरा ॥

दोहा–लषण लाल आपहु इतै, सन्मुख बैठहु आय ।
करहु उर्मिला कन्यका, पाणिग्रहण हर्षाय ॥

चौपाई ।

सुनि विदेहके वचन सुहाये । लषण लाज वश नयन नवाये॥
दीन्ह्यो सैनहिं शासन रामा । बैठ्यो लषण जाय तिहि ठामा॥

तहँ उर्मिला अंक बैठाई । लै कुश अक्षत निमिकुलराई ।
पढिकै मंत्र सुता कर कंजू । धारि लक्ष्मण कर पंकज मंजू ।
सलिल सुनैना कर ढरवाई । दई लषण उर्मिला सुहाई ।
तिहि अवसर बाजे पुनि बाजे । सुमनस सुमन वर्षि जय गावें ।
साधु साधु ध्वनि चहुँदिशि छाई । जय उर्मिलाराम लघु भाई ।
यहि विधि पाणिग्रहण कराई । बैठ लषण उर्मिला सुहाई ।
पुनि बोले निमिकुल राकेशा । मनहुँ प्रत्यक्ष धर्म कर वेशा ।
भरत चंद्र आवहु यहि ठोरा । पूरहु लाल मनोरथ मोरा ।
अस कहि उठ्यो समेत सुनैना । वंदि वशिष्ठचरण भरि चैना ।
विश्वामित्र कंज पद वंदे । वन्दे औरहु मुनिन अनंदे ।
दोहा--बैठायो कुशकेतुको, गाँठि जोरि युत नारि ।
लियो अंकसों मांडवी, तिमि संकल्प उचारि ॥

चौपाई ।

दई भरत मांडवी कुमारी । जनक अनुज कुशकेतु सुखारी ।
पुनि बाजे बाजे नभमाहीं । बरषैं फूल देव हरषाहीं ।
साधु नमो जयध्वनि भयभारी । अति प्रमुदित मिथिलानरनारी ।
पढैं वेद विधि सहित मुनीशा । बार बार तिहि देहिं अशीशा ।
भरत मांडवीकी भलि जोरी । दिये सवाम काम मद मोरी ।
पाणिग्रहण कारि मांडवि केरो । बैठ्यो भरत सकुचि प्रभु नेरो ।
बहुरि वचन मिथिलेश उचारा । अब अवसर रिपुदमन तुम्हारा ।
पाणिग्रहण श्रुतिकीरति केरो । करहु मुहूरत मुनिन निबेरो ।
सकुचि शत्रुहन प्रभु रुख पाई । बैठ्यो कुशध्वज सन्मुख आई ।
पढि सुमन्त्र संकल्प समेतू । दिय श्रुतिकीरति कहँ कुशकेतू ।
श्रुतिकीरति रिपुदमन लजाई । बैठे निज आसन महँ जाई ।
बजे बहुरि बहु भाँति नगारे । मङ्गल गान अगार अगारे ।

दोहा–याहि विधि चारिहु वरनको, चारिहु वधुन सुहाय ।
पाणिग्रहण करवाय करि, प्रमुदित निमिकुलराय ॥
बैठ्यो आनँदरस मगन, सहित रानि लघुभाय ।
मानहुँ पैरत सिंधु महँ, गयो पार सो पाय ॥

कवित्त ।

जैसे दियो गौरीको हिमाचल गिरीशजूको, हरिहि दियो ज्यों सिंधु इंदिरा सुहाई है । वासवको दीन्ह्यों शची हरषि पुलोमा जैसे, च्यवनै सुकन्या शरजाति नृपराई है ॥ दक्ष दुहिताको दान दियो जिमि देवनको, जिनते सुरासुरकी सृष्टि समुदाई है । रघुराज ताही विधि ताहूते अधिक दियो, जानकीको जनक लियो सो रघुराई है ॥

दोहा–दुलहिनि दूलह को तहाँ, गाँठि जोरि बैठाय ।
युत कुटुम्ब सानुज जनक, लगे पखारन पाँय ॥

कवित्त ।

पद्मराग जटित सुजात रूप थार धरि, सलिल सुगन्ध भरि जनक सुनैना है, पद अरविंद रघुनंदके अनन्द भरे, धोवत करन द्वंद्व नीर भरे नैना है ॥ जौन पद जल विधि धार्यो है कमंडलुमें, शंभु जटामंडल अखंडल सचैना है । स्वर्गमें मंदाकिनी पताल भोगवती नाम, रघुराज भागीरथी भूमें ज्ञान ऐना है ॥

दोहा–जासु नाम मुख लेतही, पाप पहार परान ।
सो जल सींचत जनक शिर, तिहि समको जग आन ॥
जे पदरज पावन हितै, तरसत देव अशेश ।
राम जानकी पदकमल, धोवत ते मिथिलेश ॥
जे पदरज परशत तरी, गौतममुनिकी नारि ।
ते पद पोंछत पाणि निज, भाग्य न जाति उचारि ।

चौपाई ।

पुनि वर वधू विभूषण नाना । जटित सूर्य्यशशिमणिनप्रधाना ।
अमित निचोल अमोल ललामा । दियो जनक सुखभरि तिहिठामा ।
पारिजात पुहुपनकी माला । पहिराई मिथिला महिपाला ।
पूजन किय वर वधू समेतू । षोडश विधि नृप निमिकुलकेतू ।
जिहिविधि पूज्यो रामहिं राजा । तिहि विधि तीनिहु बन्धु दराजा ।
साधु साधु मुनि देव बखाने । दानिशिरोमणि जनकहि जाने ।
शतानन्द तब वचन उचारा । अब भाँवरी समय सुखसारा ।
गुरु वसिष्ठ पावक प्रगटायो । कीन्ह्यो हवन महासुख छायो ।
जनक कह्यो जब मम परिवारा । चरण पखारि लेय सुखसारा ।
तब भाँवरी आदि विधि होई । ये दुर्लभ पै है पद कोई ।
जनक वचन सुनि सब हरषाने । चरण पखारनको उमगाने ।
धोयो चरण मुदित कुशकेतू । लह्यो मनौं भवसागर सेतू ।

दोहा–निमिकुलके सब वृद्धजन, आय सहित निज नारि ।
भये परमपद योग्य सब, रघुवर चरण पखारि ॥
जे सुर मुनिको रूपधारि, बैठे रहे समान ।
चरण पखारे ते सबन, निमिवंशिनके व्याज ॥

छन्द गीतिका ।

निजभाग्य धन्य विचारि सुरमुनि रामपायँ पखारिकै ।
शिरनाय प्रस्तुति करत बहुविधि मधुरवचन उचारिकै ।
भाँवरि विलोकन हेत सब उमंगे अमित अभिलाषते ।
सीतारमण सीतासहित निरखत पलक परमापते ।
तब शतानन्दहि कह्यो रघुकुलगुरु गिरासुखछामिनी ।
अबभाँवरी करवाइये पुनि अधिक बीताति यामिनी ।
सुनि शतानन्द सहर्ष करवावन लगे वर भाँवरी

ठाढे भये रघुवंशमणि तिमि जनक भूपति डावरी ॥
वेदी विभावसु जनक भूपहि मध्य करि मग रोहनै ।
लागे फिरन फेरो फवित फटिकै फरश मनमोहनै ॥
छावति छटा क्षिति गौरि सियकी जोन्ह फरश सुफावती ।
रघुनाथ मुख छबि इन्द्रनीलक भूमि बहुरि बनावती ॥
दम्पति परत प्रतिबिंब खंभन चमचमात मणीनके ।
मन मोहि निज छबि प्रगट भे बहु वपुष हरि लक्ष्मीनके ॥
गति मंद मंदहि चलत सुंदर हरत हिय नर नारिके ।
घनश्याम दामिनिसे लसत दोउ इष्टदेव पुरारिके ॥
जगमगत दोहुँन ज्योति मनु यक यक जितत सितश्यामहे ।
सित श्याम मिलि मिलिहोत शोभा हारत अति अभिरामहे॥
मनु बीजुरीको वसन विरचि दिनेश शशि यक संगही ।
देते सुमेरु प्रदक्षिणा दक्षिणावर्त उमंगही ॥
जुरि युवति गावहिं गीत मंजुल राम सिय छबि छकितहैं ।
करि मदन रति निवछावरै ताकि भाँवरै चित चकितहैं ॥
युग सखी सियके संगकी अस कहहिं हँसि हँसिकै तहाँ ।
धीरे चलहु कछु लाल हैं सुकुमारि जनक लली महाँ ॥
सुनि राम नयन नवाय रहत लजाय मृदु मुसक्यायकै ।
अरविंद पूरणचंद पेखत रहत ज्यों सकुचायकै ॥
कोउ वर वधू पर फूल वर्षहिं होलि हास हुलासमें ।
कोउ ओढि अंचल विधिहि विनवहिं रहहिं दोउ यहि वासमें॥
जबलों परी त्रयभाँवरी तबलों सिया आगू चली ।
पुनि चारि भाँवरि देत में भे राम आगू छबि भली ॥
जब रही सिय पुरसर चलत तब अस भली सोहत रही ।
जनु जात आगे भानके सितभानु पूरणिमा लही ॥

जब भये दशरथ कुँवर आगे चलत जनक कुमारिकै
तब लसत मानहुँ चन्द्रमा पीछे प्रयात तमारिकै।
क्षितिपर झरत अनगन कनक कन जलज हीरनकी कनी
मनु वर वधू गुरु जानि पुहुमी पुहुप पूजहिं राति घनी।
बहु रत्न पूरित चारु चौक विराजती वसुधा मनौं
साजि वसन भूषण देन कन्या दान आई तिहि छनौं
यहि भाँति सप्तपदी कराय कुमार गौतमको सुखी
वेदी निकट ठाढो करायो राम सीता शशि मुखी
लाजा परोसन लाल लक्ष्मीनिधि करायो करनौं
कीन्हें निछावर सकल जन वर वधू रतनाभरनौं
तब कह्यो वचन वसिष्ठ सीता राम एकहि आसनौं
बैठहिं करावहु चार औरैन बरनको अब या छनौं
जिहि भाँति रघुपति भाँवरी लाजा परोसनहूँ भ
तिहि भाँति तीनहुँ बन्धु भाँवरि चार विधिवत ह्वै गयो
तब जाय रघुपति निकट लक्ष्मीनिधि कह्यो मुसक्यायकै
दीजै हमारो नेग जो हम कहहिं अब चितचायकै

दोहा–मन्द मन्द रघुचंद कह, जो माँगहु सानन्द।
हय गय मणि माणिक वसन,भूषण आयुध वृन्द॥
सो तुमको सब थोर है, जो कछु मेरे होय।
प्रीति रीति जस तुम करी,तस न कियो जग कोय॥
जनक कुँवर बोल्यो हरषि, यही नेग मुहिं देहु।
पद अरविंद मरंदको, मन मालिंद करि लेहु॥
एवमस्तु कहि राम तहँ, निज गलकी मणिमाल।
द्रुत उतारि पहिराय दिय, सालहि कियो निहाल॥

पद ।

राजत राम विदेहाकिशोरी ।
भाँवारि भरत भट्ट भल भावत जगमगात जग जाहिर जोरी ॥
मंडप मणि मंडित मन भावन मनु तारागण गगन करोरी ॥
चहुँकित छाय परत परछाहीं जनु दम्पाति प्रगटी चहुँ ओरी ॥
गावहिं मंगल गीत सखी सब मुनिवर वेद पढैं सुख बोरी ॥
कोशलेश मिथिलेश विराजत मगन मोद मघवा मद मोरी ॥
क्षीराधि सुधा मदन मंथक यदि रुचिर रमा राति कढै बहोरी ॥
धरि शृँगार वपु हरिहु बरै जो समाविरचत सकुचाति मतिमोरी ॥
कबहुँक श्यामछटा क्षिति छहराति कबहुँक अधिकगोरद्युतिगोरी॥
सुछबि सितासितगंग यमुन माधि मतिमज्जाति रघुराजहिलोरी ॥

सवैया ।

मणिमंडपमें सिय राम लसैं मुनि, मंडल मंडित मंजुल है ।
सेहरा सुठि सोहि रह्यो शिरपै, वनमाल विराजत वंजुल है ॥
सिय लाज भरी पिय छांह चितै, पिय आनंद सिंधु भरे हियमें ।
जियजोहनकी पिय बानि गही, पिय बापुरोको कियधौं धियमें ॥
मिथिलेश युतै अवधेश लसैं निज पूरव पुण्य प्रभाव लखैं ॥
शिव शक्र धनेश गणेश दिनेश, लहे फल जो नहिं तौन चखैं ।
मिथिलापुर नारि सँवारि शृँङ्गार खडी कल मंगल गान करैं ॥
मुनि कौशिक और वसिष्ठ शतानँद, चार करावत मोद भरैं ।
तहँ चारिहु राजकुमार कुमारिन, संग सुभाँवरि देत सजैं ॥
मनु मैन सुचारि स्वरूप बनाइ, सवाम विराजि रह्यो सधजैं ।
सुरसिद्ध विमान खडे असमान, प्रसूननि वर्षि रहे उमहे ॥
निउछावरि भूरि महीश मुनीश, विमोहित रूपन प्राण किहे ।
सुरदार नचैं गति गान रचैं, बहु बाजन बाजि रहे कलहे ॥

गज वाजिन स्यंदन भीर भरी कढि कौन सकै करिकै वरनै
सिय राम विवाह उछाह बढो, बहु अंडकटाह अनंद मढो
रघुराज त्रिलोक तिहिक्षणमें, सबके मुखते जय शोर कढो
दोहा–सबै कह्यो तहँ होत भो, राम जानकी ब्याह।
रह्यो भुवन सुखसिंधु भरि, गान तरंग उमाह॥
नेग लह्यो मिथिलेश सुत, रह्यो मनोरथ जौन।
राम चरण वंदन कियो, कियो गौन निज भौन॥

चौपाई।

अवसर जानि सहितनिज भ्राता। उठचो विदेह विनोद अघाता।
कौशलपतिको पूजन कीन्ह्यो। हय गय वसन विभूषण दीन्ह्यो।
स्यंदन शिबिका साजि अनेका। भाजन विविध भाँति सविवेका।
दै यह अंगन अतर लगायो। मोद मूल तांबूल खवायो।
दियो अंगूठी रत्न प्रधाना। बहुरि विनयवश वचन बखाना।
राख्यो सुरति जानि निज दासा। मोहिं सकल विधि राउरआसा।
मिथिलापुर निमिकुल परिवारा। और जहां लगि अहै हमारा।
सो बिन संशय भूप तिहारा। कबहुँ और नहिं किहहु विचारा।
अस कहि रह्यो मौन कर जोरी। कह अवधेश गिरा रस बोरी।
आप सरिस हो आप विदेहू। वसुधा विदित प्रताप सनेहू।
रघुकुल अवधराज सुत चारी। मोरि विभूति नरेश तुम्हारी।
सात द्वीप नव खंड प्रयंता। जहँ लगि शासन मोर दिगंता।
दोहा–तहँ लगि राउर भूपमणि, सत्य सत्य मम वैन।
नहिं अन्यथा विचारियो, यह मुख वृथा कढैन॥

चौपाई।

बोल्यो पुनि विदेह कर जोरी। परिचारिका दारिका मोरी।
भाग्य विवश तुम्हरे घर जाहीं। ताजि खेलन जानै कछु नाहीं।
समय सम्हारब क्षमि अपराधा। अबलों लही न कौनिहुँ बाधा।

इतते उत सुख विभव महाना। पै शिशु भाव कछू नहिं ज्ञाना॥
राजरीति सब दिहहु सिखाई। करैं न कछु बिन शासन पाई॥
अवलों कोउ नहिं आँखि दिखाई। इनहिं कह्यो कछु माख जनाई॥
रहीं कुमारी प्राणपियारी। भईं सकल सुतवधू तिहारी॥
मोरे मान इनकर कुशलाई। बहुत कहाँलगि कहौं बुझाई॥
प्रेममयी मिथिलाधिप वानी। सुनि बोल्यो दशरथ मतिखानी॥
पुत्रवधू पुनि आप कुमारी। को इनते अब मोहिं पियारी॥
जिमिमिथिलातिमिअवधअगारा। जानहु सब विधि सुख उपचारा॥
नयन पूतरी सरिस कुमारी। बसिहैं सदन सदा सुख भारी॥

दोहा-राजन देहु रजाय अब, जनवासे कहँ जाउँ॥
निशा अशन कुँवरन सहित, करन हेत चलिआउँ।

चौपाई।

कह्यो विदेह आप पशु धारो। बाकी कछु कुहवर कर चारो॥
चार कराय सुतन पठवैहौं। अब नहिं कछू विलंब लगैहौं॥
बालक नींद विवश अलसाने। किमि करिहौं विलंब जिय जाने॥
सुनि मिथिलेश वचन अवधेशा। उठ्यो प्रमोदित सुमिरि गणेशा॥
मिलि मिथिलेसाहि बारहि बारा। करि प्रणाम मुनि जनन उदारा॥
विश्वामित्र वसिष्ठ समेतू। चल्यो भूप जनवास निकेतू॥
विविध भाँति पुनि बजे नगारा। दिग स्यंदन स्यंदन असवारा॥
भयो सुमंतसहित तिहि काला। चली संग चतुरंग विशाला॥
छे छबीले राजकुमारे। रहे राम सँग चलन पियारे॥
तहां हजारन विमल मशाला। चलीं प्रकाश करत तिहिकाला॥
इत भूपति जनवासे आयो। शतानंद उत वचन सुनायो॥
सखी करावहु सब यहि बारा। सेंदुर शिश बहोरन चारा॥

दोहा-सखी सयानी जाय तब, कह्यो वचन रस पूर।

करहु लाल निज पाणिसों, सियहि शीश सिंदूर ॥
सेंदुर गहत न सकुच वश, राम मंजु मुसक्याय ।
सखी वदन ताकि रहि गये, नचि नयन नवाय ॥
कर गहि विमला रामको, सेंदुर भाजन दीन ।
लाल शीश सेंदुरभरहु, भागिनि सुरति कस कीन ॥

सवैया ।

श्रीरघुराज सिया शिरमें भर्‍यो, सेंदुर मंदहि मंद लगाई ।
गावन लागीं सखी सिगरी तहँ, चारिहु बंधुन गारि सुनाई ।
दूलहकी छबिमें छकिकै, ताकिकै जकिकै उपमा कहीं भाई ।
सावन साँझकी भानु छटा, घनश्यामघटा रही रेखसुहाई ।
श्यामल पाणि पसारि सिया, शिर सेंदुर देन लगे रघुराई ।
ता क्षणकी सुखमा लखिकै, सखिसों उपमा सखि एक सुनाई ।
श्रीरघुराज विलोकु नई मृदु, मांगसों देवनदी दुति भाई ।
भारती धार लिहे यमुना मिलि, सांची शृँगारी त्रिबेनी बनाई ॥

सोरठा–यहि विधि करि तहँ राम, सिय शिर सेंदूराभरन ।
तिमि त्रयबंधु ललाम, वधुन शीश सेंदुर भरे ॥
सप्तपदी करवाय, शतानंद आनन्द भरि ।
करवायो सब चाय, जौन चार बाकी रह्यो ॥

दोहा–गौतम सुतवर करनसों, देव विसर्जन कर्म ।
करवायो विधिवत सकल, लोक रीति कुलधर्म ॥
वाम भाग पुनि वरनके, सकल वधुन बैठाय ।
मुनिबर कियो विवेक युत, तहँ अभिषेक बनाय ॥
काचित्सरसम्बर सखी, राममवेक्षतदाह ।
रूप मोहिता सुस्मिता, सुबरो वधू मुबाह ॥

पद।

सखि पश्य कोशलकान्तसुखद कुमारमतिसुकुमारकम्।
मैथिलनिवास विलासविलसित मदनेमनापहारकम्॥
मणिमंडपे सीतायुतं सुखमाभरं सीतावरम्।
सुविवाहकर्म्मविधान मत्किुर्व्वाणमद्भुततताकरम्॥
मणिमुकुटपीतांबरसुमध्य मुखरविन्दमनिन्दितम्।
मेदुरसुघनमस्तकादिवामणिमिव तडिद्गणवन्दितम्॥
किञ्चित्कटाक्षाविकाशवीक्षितजानकीसुखमासुखम्।
गुरुजननिकटलज्जावशङ्गतमधोभावितशशिमुखम्॥
जनकात्मजार्पितहर्षिककङ्कणकलितकरधृतचन्दनम्॥
रघुराज सुखितसमाज शोभित सानुजं रघुनन्दनम्।

दोहा-सांगतार्थ तहँ करत भे, कुँवर चारि गोलक्ष।
पतिग्रह फल निरसन हितै, दीन्हे द्विजन प्रतक्ष॥

चौपाई।

बोली तहाँ सुनैना रानी। बोलि सखी जन सुखी सयानी॥
लै दुलहिन दूलह कहँ जावो। हिलि मिलि कुहबरचार करावो॥
सो सुनि उमँगान्यो अनुरागा। सखिन यूथ जुरिकै बडभागा॥
गावहिं गीत मोद रस सानी। दुलहनसों अस गिरा बखानी॥
चलहु लाल कुहबर सुखदाई। चारिहु बंधु उठे मुसक्याई॥
आगे आगे चलीं सुवासिनि। अर्घ्य देतहिय माहँ हुलासिनि॥
तहँ लक्ष्मीनिधिकी वर नारी। सिद्धि नाम तुरतै पगु धारी॥
राम पाणि गहि चली लिवाई। जोरे गाँठि चारिहू भाई॥
आगे दूलह दुलहिनि पीछे। उभय ओर सब सखी तिरीछे॥
जनकनगरकी सखी सयानी। बोलहिं व्यंग्य भरी बहु वानी॥
चलहु कुँवर कछु धीरे धीरे। सुनियत घरके अहो अमीरे॥

तुमहिं कौन चंचल गतिसिखई ।जननी भगिनि किधौं कछु विषै

दोहा–रघुनंदन बोले विहँसि, जहँ लक्ष्मी कर वास ।
तहँ चंचलता होति हठि, हठि तहँ विषय विलास ॥

चौपाई ।

लक्ष्मीनिधि ठाकुर कहँ पाई । काके भवन विषै अब जाई
जहँ चंचलता तहँ चपलाई । हमतो गहे अचंचलताई
उत्तर सुनत समुझि मुसक्यानी । चारिहुँ कुवँरि कोहबर आनी
कुँवरि सहित वर आसनमाहीं । बैठाई वर दुलहिनकाहीं
लक्ष्मी नारायण कुलदेवा ।जनककरहिंदिनप्राति जिन से
सोइ कुहबर मंदिर अति सुंदर । बन्यो उतंग कनक जनु मंद
मोतिन झालरि तन्यो विताना । तहँ विभूति औरही विधाना
आगे सिद्धि सखी सब पाछे । सुरतिय सम पट भूषण आछे
नारायण पूजन करवाई । विप्र वधुन सब चार कराई
तहां सिद्धि अस गिरा उचारी । नेग देहु हमरो मनहारी
भगिनि वस्तु जो होइ तिहारी । सोइ सवति मम होय सुधारी
तुम संसार सार रघुराई । मुनि उपकार कियो चितलाई

दोहा–सुनि सरहजके युक्ति युत, वैन मंजु मुसक्याय ।
प्रेमसुधा वर्षत श्रवण, कहे वचन रघुराय ॥
जिनके कुलमें कन्यका, बीरज मोल बिकाय ।
पुहुमीते प्रगटै सुता, तहँ को नेग वृथाय ॥

चौपाई ।

पटुका छोर पकरि सुकुमारी । हँसि बोली लक्ष्मीनिधि प्यारी
लेहु लाह लालन लहकौरे । करहु कुँवर कर कुँवरि सकौरे
मिश्रयुत दधि देहु खवाई । कुँवरि खवैहै पुनि वरिआई
सुनियत रघुकुलके बलहीना । गुरुते राखत वंश प्रवीना

सुनत राम बोले चित चाये। जूँठ आजलों हम नहिं खाये ॥
सबको हम निजजूँठ खवावैं। योगी वरवश तुम कहँ पावैं ॥
कहा सिद्धि पुनि गहि पट छोरा। मानहुँ लाल कहा सति मोरा ॥
बढि बढि बातैं जनि बतराहू। कियो मुनिनसँग भगिनिविवाहू॥
आये ब्याहन जनककुमारी। भरे चरणमहँ तुम बहु नारी ॥
तुम्हरे कुलमहँ सुनियत प्यारे। पुरुषहु उदर गर्भको धारे ॥
तव प्रभु हँसि अस वचन उचारा। नहिं मंथनते वंश हमारा ॥
यदपि योगिजनते तुव नेहू। तदपि वसहु भोगिनके गेहू ॥

दोहा-चलहु अवधपुरको अवशि, लै भगिनी नव आठ।
निवासि निहंगनके निकट, काहे करहु उकाठ ॥

चौपाई।

राम वचन सुनि कह सबआली। चतुर जेठ दूलह अति ख्याली ॥
देवनारि धरि सखी स्वरूपा। लषण रामको लखन अनूपा ॥
बैठीं सखिन मिलीं तिहि ठाईं। करहिं चार नाइनकी नाईं ॥
तहँ शारदा राम ढिग जाईं। रामपाणि गहि कछु मुसक्याईं ॥
दधि मिश्री प्रभु कर उठवाईं। लगी खवावन सियहि तहांईं ॥
प्रभु सकुचे नीचे करि नयना। बोले मन्द मन्द मृदु वयना ॥
सुखर करहु जग जगकी आजी। बैठी रूप गोपि कहँ लाजी ॥
गिरा सुनत हरिगिरा सुहाईं। बैठो जाय दूरि सकुचाई ॥
सखिस्वरूप गौरी सिय नेरे। बैठी ताहि राम दृग हेरे ॥
करि प्रणाम बोले मुसक्याई। गिरि गिरीशवृष तजि किमि आई॥
कह्यो शचिहिपुनि प्रभु असबानी। तुम हौ त्रिभुवनकी महरानी ॥
सहसनैन कर संग विहाई। तजि अमरावति कस तुम आई ॥

दोहा-देवनारि सुनि सुनि वचन, सकुचि सकुचि उठि जाय।
सखिन ओट लै लै सबै, बैठीं शीश नवाय ॥

चौपाई ।

तहँ कमला शशिकला विशाखा । बोलीं वचन भरी अभिलाषा
हमरे कुल कर जो कछु चारा । हम करवैहैं सहित विचारा
ये अजान जानहिं कछु नाहीं । कहँते आईं यह घरमाहीं
अस कहि राम सिया ढिग जाईं । चार करावन लगीं सुहाईं
प्रभु कर गहि मिश्री दधिप्यारी । सियमुखपरश कराय सुखारी
पुनि उठाय सिय कर दधि लीन्हें । परश करावन सन्मुख कीन्हें
सिय करयुत सखि कर रघुराई । निजकर करि दिय ऊंच उठाई
पर्‍यो सखिन शिरपर दधि पीछे । हँसन लगीं तियताकि तिरीछे
मधुर अली तब करि चतुराई । दै धोखो दधि दियो छुवाई
कह्यो रामसों पुनि मुसक्याई । चली न इत राउरि चतुराई
जो तुम्हरे कछु मन अभिमानू । हमहीं हैं बड चतुर सुजानू
खेलहु लला जुआ यहि ठाऊं । जीते चतुर धरायो नाऊं
दोहा–अस कहि रत्न अनेक धरि, कनक थार भरि नीर ।
लगीं खिलावन द्यूत सखि, सियको अरु रघुवीर ॥

सवैया ।

मुसक्याय सुनैन नचाय तबै, कह सिद्धि हरे हँसिकै बतियाँ
न जुआमें लला लली जीतन पावैं, लगाये रहे अपनी घतियाँ
सिय आजु न लाजको काज कछू, छल छाजि छटे रघुराउपै
नतो बात जई मिथिलापुरकी, पाछितात जई सिगरी रतियाँ
सजनी कोउ सिद्धिकी बोली तहाँ, अब जानिहैं सत्य सखी सिगरी
यदि हारिंगे लाल ललात इतै, रघुवंशिन बात सबै बिगरी
साति भे नहिं कौशलनाथ सुतै यह, विश्वमें कीरतिहू बगरी
रघुराज ये श्यामल गौरनकी नहिं, न्यायकी नीति अबै निगरी
सुनि प्यारीकी प्यारी गिरा हँसिके, लषणै दिय ऊतर मोदभ

मिथिलापुरकी हौ सुवासिनी तू, पै अनङ्गमवासिनी चित्त चये ॥
जिनके घर मातु पिता न जनै सुत, भूमिको फोरि कढै अनये ।
रघुराज कुलै सरितेऊ करैं, हमतो यह देखि अचर्य भये ॥
दूलह त्यों दुलहीको जुआ सखि, यान लै सिद्धि खिलावन लागी ॥
लै मुकतामणि माणिक हीरन, पाणि उछालन लागीं सुहागी ॥
श्रीरघुराज विदेहललो तहँ, दोहुनकी दुगुनी दुति जागी ।
मानो हजारन तारनको रवि, चन्द्र सुधारन लागे सुरागी ॥
गावतीं गर्व गहे गुणको मृदु, गीतन गोरी सु दैबहु गारिन ।
हारे लला अब हारे लला अस, भाषतीं देतीं तिया बहु तारिन ॥
जीती हमारी लली रघुराज, मँगाओ द्रुतै अनुजा मुनि प्यारिन ।
नातौ विचारिकै नातो विदेह, बुलाइहैं रावरेकी महतारिन ॥
रूप छिपाये रहीं गिरिजा गिरा, गोरिन गोहन में लगीं गावन ॥
जा बलते मधुकैटभ जीत्यो, जिते दितिके द्वै कुमार भयावन ॥
सो बल आज कहां गयो लाल, विदेहललीके समीप सुहावन ।
आजलों हारे न तू रघुराज सो, हारे गहौ सियपावन पावन ॥
आतुरी चातुरी भूलि गईं सब, मोहनी रूपकि रीति परानी ।
रावरेको ठगिबो रह्यो आवत, बापुरे बावरेको पहिचानी ॥
जानकी जानी हती न सुजान, लगे जुआ खेलन जीतहीं जानी ।
चंचलता न चली रघुराज, करी बलिसों जो छटी छल छानी ॥

दोहा–रघुनन्दन बोले विहँसि, होय भवानी जोय ।
तिहि धोखो देनो भलो, आवत वन वपु गोय ॥
हम सूधे क्षत्रिय विमल, नहिं जानैं छलछंद ।
अपनेते बरती वरन, यहि पुर सुता स्वछन्द ॥

चौपाई ।

कहीं नागरी कोउ मिथिलाकी । करहु कला करि कला चलाकी ॥

बाती मिखनको इत चारा । करहु लाल लागै नहिं बारा ।
प्रभु मुसक्यात न टारत बाती । गारी देतीं नारि सुहाती ।
बाती मिखत मिसितहँ प्यारी । परशहिं प्रभु कर मृदु मनहारी ।
विविध युक्तिके वयन सुनावैं । उतर न देत बन्धु लाजे रामैं ।
बहुरि कह्यो बन्धुन रघुराजू । नहिं ससुरारि लाज कर काजू ।
नट नागरी विदेह नगरकी । आसिति हैं सुवासिनी वरकी ।
यह सुनि अपर कह्यो मुसक्याई । भानुवंशकी रीति सदाई ।
तिय तौ तिय पूरुष भे वामा । नारी कवच धरायो नामा ।
देखहु सखि इन चारिहु भाई । नारिहुते अति कोमलताई ।
अवध पुरुष असतौ कस नारी । मुनिमानसकी मोहनवारी ।
विहँसि राम तहँ गिरा उचारी । पूरव कस नहिं लिह्यो विचारी ।

दोहा--चारिहु बंधुनको हमैं, जानि लईं ती नारि ।
चारि कुमारिन ब्याह पुनि, कीन्ह्यो कहा बिचारि ।

चौपाई ।

अपर कही मिथिलापुरवासिनि । मन्द मन्दमुसक्याय हुलासिनि ।
क्षत्रिय भानुवंश कुल ऊँचो । जगमें सुन्यौ न नेसुक नीचो ।
यही विचारि कन्यका ब्याही । कहिहै कोउ अनुचित यह नाहीं ।
पै इक्ष्वाकु वंश प्रभुताई । लालन कौन हेत बिसराई ।
ब्याह्यो शृङ्गीऋषि भगिनीको । शांता नाम कही को नीको ।
तुमहिं न आज लगत रघुराजू । बाती मिखन परिहैं आजू ।
जीते काम वाम नहिं जीते । जानकि जानिन जानहु जीते ।
आये रघुवंशिनके देवा । तुमसों लला करावन सेवा ।
तिनको शिर नावहु सब भाई । इन्हें देवि कौशला पठाई ।
भरत विहँसि तब वचनबखाने । रंगदेव तजि देव न जाने ।
जिनके घर देवन बहुताई । ज्ञान विराग योग अधिकाई ।

ते सेवन देवनको जानैं। देवन रीति भवनमहँ आनैं॥

दोहा-अपर सखी बोली विहँसि, नटनागर नृप लाल।
अहैं बराये चारिहूँ, नन्दन अवध भुवाल॥

चौपाई।

कारि कटाक्ष कोउ कह अस वामा। घर बाहरौ रमै सो रामा॥
प्रभु कह सत्य कही मनभावनि। निमिकुलकी कीरति अतिपावनि॥
सुत पितु आजहु अरु परपाजा। जनक कहावत लगति न लाजा॥
सुनि प्रभुवचन सबै मुसक्यानी। सकल कहैं नृप सुत मतिखानी॥
नट नागर नटखटी अनोखे। चंचल चारु चतुरता चोखे॥
कहे वचन पैहो नहिं पारा। सखी करावहु कुहवरचारा॥
गाय गाय वर मंगल गाना। चार करायो सहित विधाना॥
वेद रीति कुलरीति निबाही। कहैं न बर जनवासे जाही॥
तहँ रनिवास हास रस माचा। सबही कर अतिशय मन राचा॥
जानि तहाँ अति काल सुनैना। आय जनक रानी कह बैना॥
जनवासे अब कुँवर पठैयो। कालिह कलेऊ हेत बुलैयो॥
सासु वचन सुनि सिद्धि सुखारी। कही गिरा रामहिं मनहारी॥

दोहा-अब जइये जनवास को, लाल होत अतिकाल।
कालिह कलेऊके समय, देहौं उतरु रसाल॥

छन्द कामरूप।

सुनि सिद्धिके अस वचन सुंदर रचन पाय हुलास।
चारिहु कुँवर प्रमुदित उठे करि विविध हास विलास॥
दिय छोरि गाँठी सिद्धि सुंदरि वधुनकी सकुचाय।
चारिहु कुँवर दोउ सासुको सहुलास शीश नवाय॥
गवने हरत मन हगन फेरत मनहुँ सखिन हुलास।
छाल छीनि चारहु छैलातिहि क्षण जात हैं जनवास॥

मणि पट विभूषण करहिं निउछावरि अलीगण गोरि।
प्रभु सहित शील सनेह नयनन देत आनँद होरि॥
गावहिं सुमंगल गीत भामान दमकि दामिनि रूप।
बाजन बजावहिं विविधविधि तालन तरल, अनुरूप॥
यहि भाँति चारिहु बंधु द्वारे आयगे सुख छाय।
तिहिं काल मिथिलापालसंयुत लाल आयो धाय॥
माल राम बाराहबार भरतहि लषण अरु रिपुशाल।
कर जोरि सब माँगे बिदा शिरनाय दशरथ लाल।
दिय कोटि आशिष लाय उर पुनि नयन अंबु बहाय॥
नृप कह्यो का करिये कुँवर मुख जाय नहिं कहि जाय।
भेंटचो बहुरि लक्ष्मीनिधिहु प्रभु मिले सहित सनेह॥
चारिहु कुमार सवार भे उत गये गेह विदेह।
आये सखा सब रामके निउछावरैं मणि कीन।
बोले विहँसि ससुरारि प्रिय अतिकाल नहिं चित दीन॥
नहिं दीन उत्तर सकुच वश चढिकै तुरंग उतंग।
गवने कुँवर जनवासको सुंदर सखा सब संग॥
बाजे नगार शोर भारे बाँसुरी करनाल।
वरषे सुमन मुद मगन सुर चढि गगन यान विशाल॥
वाजी उछालत नयन चालत चले राजकुमार।
त सखा राजकुमार गवने संग पंचहजार॥
फहरात विमल निशान आगे तुंग ह्वै असमान।
मनु तासु पवनहि पाय तारावृन्द नभ बिलगान॥
महताब और मशाल भासहि होत दिन इव जात।
बाजत अनेकन दुंदुभी नहिं शोर भुवन समात॥
पुर नारि नर मोदित खडे पथ वृन्द वृन्द बजार।

रीझत मनहिं खीझत पलक लखि चारु चारि कुमार ॥
यहि भाँति चारिहु कुँवर आवत भये वर जनवास ।
देखन बराती सबै ठाढे नाहिं समात हुलास ॥
ताजक तुरंग उमंग भरि यक संग चारि कुमार ।
पितुकी किये निउछावरैं पद वंदि बारहिं बार ॥
अवधेश बोल्यो वचन जानि विलंब बड तिहि काल ।
बैठहु न इत यक क्षणहुँ अब कीजै बियारी लाल ॥
युग याम बीतिगई निशा कहियो किसा नहिं नेक ।
करिकै कछुक भोजन त्वरित कीजै शयन सविवेक ॥
शिर नाय चले कुमार सब पितुकी रजायसु पाय ।
हिलि मिलि किये भोजनरजनिव्यञ्जनविशेषनिकाय ॥
कीन्हें शयन पर्यंक निज निज अरुण आलस नयन।
सुनिकै कुमारन शयन भूपति कियो चैनहिं शयन ॥
कौशल निवासिन सकल आनँद भयो जो तिहि रैन।
सहसहु वदन नहिं कहि सकत यक वदन वदत बनैन ॥
तहँ सकल कौशल नगर वासिन बढी अतिशय प्रीति।
नहिं राम व्याह किसा बिती वर्णत निशा गै बीति ॥

दोहा-सकल बराती जागतै, लहे प्रमोद प्रभात ।
वन्दीजन विरुदावली, गाय उठे अवदात ॥

चौपाई ।

उठ्यो महीपति सुमिरि गोविंदा । करि सुरभी दर्शन सानंदा ॥
देखे वदन घृतमहँ युत हेमा । सरबस पराशि निबाह्यो नेमा ॥
वैष्णव विप्र वेदविद आये । सादर भूप तिन्हैं शिर नाये ॥
लै क्षोनी क्षितिपति पढि मंत्रा । तज्यो सेज जिहि तेज स्वतंत्रा ॥
प्रातकृत्य नृप सकल निबाहीं । बैठे राजसिंहासन माहीं ॥

तैसे उठि उठि चारिहु भाई । करि मज्जन पूजन सुख पाई ॥
पाहिरि विभूषण वसन सुहाये । पिता दर्श हित सभा सिधाये ॥
पितुवंदन रघुनन्दन कीन्ह्यो । तैसहि त्रय बन्धुन करिलीन्ह्यो ।
देखि रामयुत तीनिहुँ भाई । उठि भूपति उर लियो लगाई ॥
शीश सूँघि दिय आशिर्वादा । रक्षहु युग युग धर्म मर्यादा ।
बैठायो वर आसन माहीं । आयो सचिव सुमंत तहाँहीं ।
भूपति सकल सैन्य सुधि लीनी । सचिव कह्यो सेनासुख भीनी ।

दोहा–उतै जनक सब साजु भरि, शतानन्दके संग ।
पठवायो जनवासमहँ, हित व्यवहार अभंग ॥

चौपाई ।

शतानन्द लखि उठ्यो महीपा । दै आसन बैठाय समीपा ।
पूछि कुशल बोल्यो कर जोरी । तुव आगमन भाग्य बडि मोरी ।
शतानन्द बोल्यो मुसक्याई । तुव ब्रह्मण्य धन्य नृपराई ।
यह व्यवहार विदेह पठाये । हम बरात हित इत लै आये ।
तब सुमन्तसों कह्यो भुवाला । यथायोग्य दीजै यहि काला ।
देन लग्यो सुमंत तब साजू । गई छूटि मिति मोद दराजू ।
जाको जितनो जस मन भावा । सो तितनो अधिको बहु पावा ।
उबरा सो मंगन गण पाये । ते जग जगत जनक यश गाये ।
नृपति भये सब भांति बराती । जात न जाने दिन अरु राती ।
उतै सुनैना सखी पठाई । लक्ष्मीनिधि कह निकट बुलाई ।
जनवासे अब लाल सिधारौ । लै आवहु लिवाय वर चारौ ।
इतहिं कलेऊ करहिं कुमारा । भवन विभूषित होय हमारा ।

दोहा–सुनि विदेहनंदन चल्यो, राम लिवावन काज ।
चढि तुरंग मढि मोदरस, संग सखान समाज ॥

चौपाई ।

गयो जहां राजत रघुराजा । सभा सभायुत राज समाजा ।

लक्ष्मीनिधि आवत लखि राजा । उठ्यो अनंदित सहित समाजा ॥
लक्ष्मीनिधि तहँ कियो प्रणामा । आशिष दई भूप मतिधामा ॥
शीश सूँघि अंकहि बैठायो ।चिबुक परशि बोल्यो कहँ आयो॥
लक्ष्मीनिधि कह हे महराजा । भेजहु कुँवर कलेऊ काजा ॥
भूप कह्यो लैजाहु कुमारे । का पूछहु मिथिलेश दुलारे ॥
सुनत सुखितलक्ष्मीनिधिभयऊ । राम,निकट आशुहि चलिगयऊ॥
विहँसि कह्यो चलिये रनिवासा । मातु बुलायो दर्शन आसा ॥
करन कलेवा बंधु समेतू । आशु पधारिय रघुकुल केतू ॥
उठि रघुनन्दन चारिहु भाई । पिता चरण पंकज शिरनाई ॥
चढे कुँवर सब तरल तुरंगा । चले सखा सब सोहत संगा ॥
डगर डगर तिहि नगर मँझारी । फैली सुधि आवत वर चारी ॥

दोहा-पुर नर नारी लखन हित, बैठ अटा अरु द्वार ॥
कहहिं कलेऊ करन हित, आवहिं राजकुमार ।

चौपाई ।

इत तुरंग झमकावत भावत । चारिहु कुँवर महाछबि छावत ॥
जगर मगर मचिरह्यो वगरमहँ । अगर तगर भर डगर डगरपहँ॥
झमकत झझकि वाजिमग डहरैं । छोरन छूटि मुक्त क्षिति छहरैं ॥
तुरँग उडावत पेंच पागकी ।छूटि जाति सुधि रहति बागकी॥
दरशावैं बहु गति तुरंगकी । छबि छावैं क्षिति पट सुरंगकी ॥
सखा चपल कोउ खेलत नेजे । मनहुँ पठाय पवन इन भेजे ॥
आवत जात न ते दिखात हैं । यक यक ते डेवढ बढात हैं ॥
छैल छबीले शक्र सानके । राम सखा सम पंच बानके ॥
चलत बरोबर प्रभु समानके । सन्माने करुणानिधानके ॥
जिहि वाजी रघुपति सवारैंह ।कहि न सकत छबि मुख हजारैंह॥
शील सुधानिधि वेग वायुको ।मनहुँ लह्यो मन अवधि आयुको॥

झनकत पैंजनि परत पांउके। परत चरण चौगुने चाउके॥
दोहा–सजे सजीले बाँकुरे, दशरथ राजकुमार।
हेरतही हठि हिय हरत, हलकत हीरन हार॥

चौपाई।

पहुँचे सब जब माधि बजारमें। नारी चढि ऊँचे अगारमें॥
निरखि निरखि पलकनि निवारहीं। राई लोनहिं कर उतारहीं॥
ओढि ओढि अञ्चल मनावहीं। मिथिलापुर पुनि कुँवर आवहीं॥
द्वार द्वार बहु हेम खम्भ हैं। पुरट कलश युत यूप रम्भ हैं॥
जनक नगरकी अति विचित्रता। भइ प्रभु आगम पर पवित्रता॥
द्वार द्वार जन जन जुहारहीं। यकटक चारिहु वर निहारहीं॥
कहहिं प्रजा सब मोद झोकमें। अस सुन्दर नहिं कहुँ त्रिलोकमें॥
विप्र वेद पढि पढि अशीशहीं। लहैं अनन्द निहोरि ईशहीं॥
नारि उतारहिं मुदित आरती। चिरजीवहु मुख कढति भारती॥
राम जाय मिथिलेश द्वारमें। तजे तुरंगन सुख अपारमें॥
जानि सुनैना राम आमिनी। पठयो कलशन कलितकामिनी॥
मिल्यो आय मिथिलाधिराजहैं। प्रभु प्रणाम किय सहितलाजहैं॥
दोहा–मिलि विदेह आशिष दई, लैगे भवन लिवाय।
यथा योग्य भ्रातन सखन, सहित राम बैठाय॥
करत भये सत्कार बहु, अङ्गन अतर लगाय।
दै बीरी पूछी कुशल, प्रेम अम्बु दृग छाय॥
प्रभु बोले करजोरि कै, आप कृपा कुशलात।
जैसे लक्ष्मीनिधि अहै, तैसे हम सब भ्रात॥
अति अमोल भूषण वसन, तहां विदेह मँगाय।
गज तुरंग रथ पालकी, दीन्हें चारिहु भाय॥
सन्माने सिगरे सखन, पट भूषण बहु दीन।

मनु व्यवहारहि व्याज ते, मोद मोल ल लीन ॥

छन्द।

तहाँ सुनैनाकी यक आई सहचरी।
कुँवर बुलावन हेत महा मुद उर भरी ॥
लक्ष्मीनिधि तहँ आशुहि कुँवर लिवायकै।
गये तुरत रनिवास पिता रुख पायकै ॥
सखा सचिव सरदार रहे दरबारमें।
भयो मोद महँ मगन जनक व्यवहारमें।
रामहिं आवत देखि सुनैना धायकै।
लै बलिहारी चूमि वदन सुख पायकै ॥
मणिमादरमहँ आशुहि राम लिवायकै।
तीनिहुँ अनुज समेत सखी बैठायकै ॥
तोरयो तृण पुनि राई लोन उतारकै।
कियो आरता मंगल मंत्र उचारकै ॥
तहँ लक्ष्मीनिधि नारि सिद्धि आवत भई।
करन कलेऊ हेत विनय गावत भई ॥
उठे राम लै बंधु कलेऊ करनको।
बैठ आसन माहिं महामुद भरनको ॥
व्यंजन विविध प्रकार थार भरि ल्यायकै ॥
सूपकार सुख पाय परोसे आयकै ॥
माणि माणिक अरु हेम कटोरे सोहहीं।
व्यंजन भरे अनेक मदन मन मोहहीं ॥
सन्मुख बैठी सिद्धि सहित सखियानके।
गारी गावन हेत स्वरूप गुमानके ॥
रविकुल कैसे भयो क्षात्रकुल जगत है।

कश्यप द्विजको पुत्र भानुयश जगत है।
छायाको पुनि भयो सुवन मनुका कही।
विना रूपकी भानु संगमहँ क्यों रही॥
मूल अशुद्ध विचार होत यह वंशको।
महिमा हेतहिं कहत वंश यह हंसको॥
मूल पुरुष भइ इला नारि पुनि नर भई।
आवत सोई रीति चली यह नहिं नई॥
भे युवनाश्व महीप गर्भ उदरहि धरचो।
मांधाता तिहि भये भूप नहिं सो मरचो॥
मांधाता महराज बडे दाता भये।
सौभरि मुनिका बोलि सकल दुहिता दये॥
जुरचो न क्षत्रिय जगतमाहँ जिनको कहूं।
ब्राह्मणको दिय सुता सुकीरति दिशि चहूं॥
भे असमक महराज यश संसार है।
गुरु वसिष्ठकृत विदित सकल उपकारहै॥
विप्र नारि दिय शाप सुकल्मषपादको।
मदयंतीको तज्यो जु पाय विषादको॥
रानीमें गुरु कियो सुगर्भाधानको।
अजहुं करत रघुवंश सुवंश गुमानको॥
नदी कहावति सुता जासु कुल भूपकी।
जाको पानी लेत कीर्त्ति अनरूपकी॥
जो रघुकुलमहँ होइ कछू अनरीति है।
तौ रघुवंशी गनत हमारी रीति है॥
बडे यशी रघु भये कहा कहिये सखी।
साठि सहस दिय रानिद्विजै है हयमखी॥

दोहा-पुरुष शक्तिते हीन लखि, द्विज कहँ रघु महराज।
लै कुबेरते युगल फल, दियो पुंसता काज॥

छन्द।

भयो मातुपितुते न जन्म अजताहिते।
पायो नाम नरेश रहे द्विज चाहिते॥
करन लग्यो अज व्याह कोउ नृप बोलिकै।
कन्यादानहिं करत समय चित खोलिकै॥
विश्वावसु गंधर्व धारि द्विज रूपको।
माँगत भयो कुमारि वचन कहि भूपको॥
संकट धर्महि जान योग बल अज तहाँ।
निरमी द्वितिय कुमारि सुंदरी सो महाँ॥
सो दीन्ह्यो तिहि नृप जाहि आनत भये।
विश्वावसुको सत्य विप्र मानत भये॥
भगिनि सहोदर दियो ताहि गुनि धर्मको।
कीरति प्रगट पुरान कियो जो कर्मको॥
कोउ बोली तहँ सखी सुनी यह कानमें।
दशरथ भूप चरित्र लखी सुजहानमें॥
दशरथ नृपकी रानि लजोरी हैं सबै।
समर सुरासुर माहिं कंत त्याग्यो कबै॥
जिन नारिनके लाज न होत शरीरमें।
तिनको कौन प्रमाण रहासि जन भीरमें॥
दक्षिण कौशल भूप स्वयंवर करत भे॥
सुता कौशला हेत भूप सब जुरतभे।
राक्षस रावण नाम कुमारी हरत भो॥
दशरथनृप तहँ जाय बडो बल करत भो।

ताकी हरी कुमारि कौशिला लायकै।
घरमें किय पटरानि बडो सुख छायकै॥
गाय उठी कोउ सखी सुमित्रा यश सुनो।
कीन्ह्यो सुंदर मीत नाम ताते भनो॥
भरत मातु कैकयी कहावत सुनु सखी।
नाम लेत है प्रश्न लाज अतिशय सखी॥
रघुपति भगिनि नाम जौन शांता कही।
श्यामा सुंदर अंग भुवन जिहिसम नहीं॥
विषय विलास विलोकि न राख्यो निज घरै।
अंग भूपके भौन पठै उदय अवसरै॥
तहँ यक मुनिपै मोहि गई मन भामिनी।
मुनिको भयो विवाह भई बडि कामिनी॥
भरत राम हैं श्याम लषण रिपुशालहूं।
गौर वदन नहिं जानि परै कछु हालहूं॥
जो एकहि पितु होत वर्णयुग किमि भये।
वर्ष सहस्रहि साठि बीति नृपके गये॥
तब बोली कोउ सखी न शंका कीजिये।
दशरथ रानी युवा हेत गुनि लीजिये॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा साँवरी।
किय अपनी करतूति नामकी भाँवरी॥
लाल भगिनि निज देहु ब्याहि लक्ष्मीनिधै।
लेहु जगत जश लूटि कोन चाही विधै॥
जस सुंदर तुम लाज भगिनि तस होयगी।
सरहज सिधिकी सवति महासुद मोयगी॥
रघुवंशिनकी होयँ और जे कन्यका।

निमिवंशिनको व्याहि करो तिन धन्यका ॥
दोहा-यहि विधि मिथिलापुर युवति, गारी गावत जाहिं।
मंद मंद भोजन करत, सकल बंधु मुसक्याहिं ॥

चौपाई।

मंजु सुरन भरि राग सहाना। लेतीं तरल तान विधि नाना ॥
माच्यो महा मनोहर शोरा। मोहीं सखि लखि राजकिशोरा ॥
तहँ मेवनके विविध प्रकारा। औरहु अन्न प्रकार अपारा ॥
दधि प्रकार अरु क्षीर प्रकारा। करहिं सराहि कुमार अहारा ॥
मनरंजन विरंज दुखभंजन। अरुचि विभंजन रसना मंजन ॥
कलिया अरु कबाब वर स्वादू। तिमि श्रीखंड करन अहलादू॥
रबरी खुरचनि मिष्ट मलाई। महा मधुर मोहनी मिठाई ॥
तिमि बताशफेनी बासौंधी। विविध वटी बट माडब औंधी॥
विविध फलनके मंजुल सीरा। ओदन झलक मनहुँ बहु हीरा ॥
तिक्त अम्ल कटु लवण कषाये। मिष्ट मिष्ट बहु स्वाद बनाये ॥
भक्ष्य भोज्य अरु लेह्यचोष्यबर। पान पियूष समान स्वाद कर ॥
सुरपुर नरपुर नाग पियारे। जे दुर्लभ महि अहहिं अहारे ॥
दोहा-ते विदेहके सूदबर, विरचे विविध उछाहि।
सकल बंधु भोजन करत, स्वाद सराहि सराहि ॥

चौपाई।

यहि विधि भोजन करिअभिरामा। किय आचमन बंधु युत रामा ॥
उठि चामीकर चौकिन जाई। बैठि धोय कर पद सब भाई ॥
मुकुटन शिरन सुधारत माहीं। आय सुनैना कह्यो तहाहीं ॥
कोशल मुकुट उतारहु लाला। मिथिला मुकुट देहु यहि काला॥
अस कहि मणिमंडित धरि थारन। मुकुट चारिवर प्रभा पसारन ॥
पहिरायो चारिहुँ वर माथे। पद्मराग मर्कत मणि गाथे ॥
अति अमोल लालनकी माला। लालन गल पहिराय विशाला॥

पुनि लिवाय लाई महरानी। बैठायो आसन छबिखानी
वदी विदेह वाम वर बानी। नेग कलेवा कर सुखदानी
माँगहु जौन रहे अभिलाषे। तब प्रभु जोरि कञ्ज कर भा
यही नेग जननी अब दीजै। लक्ष्मीनिधि समसुहिं करि ली
मैं सुत सेवक तू महतारी। देहु देवि रुचि यही हमारी

दोहा–शील विनय रसके भरे, मधुर रामके बैन।
सुनत जनकरानी युगल, भरि आये जल नैन॥

चौपाई।

पुनि पुनि लेती करन बलैया। भरयो कंठ कहि सकत न मै
जस तसकै पुनि वचन उचारा। पूरेहु मोर मनोरथ सा
कर्म विवश पावहुँ कहुँ योनी। विधिगति होइ हानि अनहो
लालन नात हमार तुम्हारा। यही रहै सर्वदा विचा
एवमस्तु बोले रघुनन्दन। सदा प्रणत जनपर अभिनंद
सर्वस पाय सुनैना रानी। गई अनत सिधि आगम जा
सखिनसहित तहँसिद्धि सिधारी। विहँसत मृदु बीरी कर धा
दीन्ह्यो चारिहु बंधुन बीरा। कही रामसों पुनि निज ध
लालन दीजै नेग हमारो। जो सरहजको नात विचा
प्रभु कह है अदेय कछु नाहीं। तुमसम कौन पात्र जगमाहीं
नर्म गिरा तब सिद्धि उचारी। लाल अनोखी प्रीति पसारी
लली लिवाय अवधपुर जाई। देहौ मोरि सुरति बिसराई

दोहा–तुम्हैं कौन विधि देखि हैं, ह्वैहैं बिन जल मीन॥
देहु नेग वर मोहिं यह, जो जिय चहहु प्रवीन।

चौपाई।

ताते ननँदि और ननदोई। इन नयननते बिलग न होई
प्रीति प्रतीति पेखि रघुराई। बोले मंद मंद मुसक्याई

सदा भावनामें हम दोऊ। प्रगट होब जानी नहिं कोऊ ॥
सिद्धि सिद्धि होई अभिलाषा । मृषा वचन मैं कबहुँ न भाषा ॥
जानी सिद्धिसिद्धिनिज करनी । धन्य भाग्य बरनी वर वरनी ॥
पुनि निमिवंशिन सुता सुहाई । दूलह देखन हित जुरि आई ॥
जिन सारी सरहज सम्बन्धू । गारी देन बाँधि परबन्धू ॥
फटिक पूतरी धारि हरि आगे । वचन रचन कारि कह अनुरागे ॥
यह कौशलपुर कारि कुमारी । मिथिलामहँ आई सुकुमारी ॥
तुमहिं देखि वशलाजन बोलति । नहिं आशय उरकी कछुखोलति ॥
भगिनि मनाय लिवाय जाहु घर । करहु समोष चूक साँवर वर ॥
विहँसि बैन बोले रघुराजू । हम जानी मिथिला नहिं लाजू ॥

दोहा-रघुकुलमें नहिं रीति यह, वरहि जु वरनकुमारि ।
देवदारके तुल्य तुम, याहि छबि तुव अनुहारि ॥

चौपाई ।

ंग्य वचन सुनि सब मनभाई । चितै परस्परहिय मुसक्याई ॥
तामें चतुर सखी इक भाषी । कहहुँ लाल जो होहु न माषी ॥
होय जो देवनपति जगमाहीं । सो देवन गति चलै सदाहीं ॥
हम मानव मानव गति जानैं । देवी देव दैवगति ठानैं ॥
लाल एक अति शोच हमारे । सुधरत राउर कृपा सुधारे ॥
कियो मोद मिथिलापुर आई । जो अलभ्य अजरन श्रुति गाई ॥
रहहु सदा नगरी यहि प्यारे । जीवन रहिहै तुमहिं निहारे ॥
तुम बिछोह रहिहैं किमि प्राना । देहु बताय उपाय सुजाना ॥
राखि उर आलै बालआति भारी । प्रेम बीजको बोय सुखारी ॥
ूल अनुराग शाख सुखकेरी । फूल उछाह दरश फल ढेरी ॥
अस तरु मिथिलापुरहि लगाई । उचित न अवध पयान जनाई ॥

नेह पाश मन विहँग फँसाई। दरश अशन बिनदुखनादेखाई॥

दोहा–सुनत सखिनके वचन प्रभु, कह्यो मंजु मुसक्याय।
जो जाको जानत यथा, सो तिहि तस दरशाय॥

चौपाई।

अवधहुते मिथिलापुर प्यारो। सदा विलास निवास हमारो॥
जबहिं सुरति करिहौ मनभाई। तबहिं मिलब तुमको हम आ
मिथिला अवध दूर नहिं प्यारी। जो जिहि जियसो निकटविचा
दूर रहे जस बाढ़त प्रीती। तस नहिं निकट रहे अस री
यहि विधि करत परस्पर बाता। रामवचनसुनि सुख न समा
कही सिद्धिसों पुनि प्रभु बानी। होती बडि विलंब जिय जा
साँझ समय पितु दर्शन हेतू। जैहैं मिथिलाधिप मति से
ताते हमको देहु रजाई। पेखहिं पितु जनवासे जा
सिद्धि कही मुखतेनिकसौकिमि। मीन दीन जलहीन होब ति
प्रभु कह हम आउब पुनिकाली। ह्वैहै सकल भाँति खुशिआ
रामहिं जात जानि तिहि जूना। सुन्यो सुनैना भो दुख दू
जनक पट्टमहिषी तहँ आई। भ्रातनसहित राम शिरना

दोहा–जनवासेके जानकी, माँगी बिदा विनीत।
रामवचन सुनि सासु तहँ, भै अनन्दते रीत॥

चौपाई।

कहि नसकतिकछुवचनाविचारी। रहहु लालकी जाहु सिधा
दुविध जानि जानकि जननीको। प्रभुकहकालिहिमिलनअतिनी
हमरे पितुके देखन काजू। जैहैं साँझ जनक महरा
ताते मातु बिदा अब दीजै। बालक जानि छोह अति की
भरे सुनैना नीर सुनैना। गद्गद कंठ कढत नहिं बै
जसतसकै बोली महरानी। करहु लाल भल जो मनमा
चारिहु बन्धु वन्दि पद ताके। बाहर आये अतिसुख छा

लक्ष्मीनिधि तहँ सहितविदेहू। राम गवत लखि भये विदेहू॥
रघुनन्दन वन्दन कार भूपै। चढि तुरंगमहँ चल अनूपै॥
राम सखा सब आय जुहारे। हास विलासहि करत सिधारे॥
निज निवास आये रघुराई। आनँदहूके आनँददाई॥
पितहि प्रणाम कीन शिरनाई। दै आशिष बोल्यो नृपराई॥

दोहा–सुनहु राम अभिराम अब, करहु जाय आराम।
साँझ समय मिथिला नृपति, ऐहैं हमरे धाम॥
सुनि पितुशासनबंधुयुत,करिपुनि पितहि प्रणाम॥
गये राम आराम हित, जहँ अभिराम अराम।

चौपाई।

शतानन्द उत जनक समीपा। जाय कह्यो सुनिये कुलदीपा॥
शिष्टाचार हेत जनवासे। चलहुअवधपति पहँ साजिखासे॥
भली कही अस कहिमिथिलेशा।बोलि सुदावन दियो निदेशा॥
मंत्री सुहृद सुभट सरदारा। गज रथ पैदर अनुग सवारा॥
सपदि सजुग सजि आवहिं द्वारा। जनवासे को गवन हमारा॥
सुनत सचिव शासन सुखपाई। लीन्ह्यो बोलि सैन्य समुदाई॥
लक्ष्मीनिधि संयुत मिथिलेशा। बंधुवर्ग सब और सुवेशा॥
विप्र वेदविद मुनि सँग लीन्हे। चले राम दर्शन मन दीन्हे॥
धावन तहँ आशुहि धाये। अवधनाथ पहँ खबरि जनाये॥
रश हेत मिथिलपति आवत। सुनिदशरथअतिशयसुखपावत॥
कियो सकलदरबार तयारी। लियो बंधु सरदार हँकारी॥
राम बंधु युत लियो बुलाई। नर भूषण आये सुखदाई॥
दोहा–महाराज नवखंडपति, बैठ्यो सहित समाज।
राजमण्डली नखत सम, चन्द्र सरिस रघुराज॥

छन्द गीतिका।

उत जनक राज समाज संयुत लसत वीरन मण्डली।
आयो मिलन अवधेशको नवखंड कीर्त्ति अखंडली॥
प्रतिहार जय जय करत आगे शोर सरस सुहावनो।
हल्ला परचो दशरत्थके. ज्योंहीं सुवीर हटावनो॥
मिथिलेश आवन जानि कौशलनाथ चारि कुमार लै।
कछु लेन आगे चल्यो सकल उदार वर सरदार लै॥
चलि द्वारदेशहि मिल्यो मुदित महीपसों मंडित महीं।
मिथिलाधिराज प्रणाम कीन्ह्यो भुजनभरिमोदिततहीं॥
सुर मुनि समान विलोकि समधी हर्षि फूलन वर्षहीं।
नभपथ विमानन ठट्ट सोहहिं लखन अति उत्कर्षहीं॥
तहँ राम चारिहु बंधु कीन प्रणाम जनक महीशको।
मिलि मुदितमिथिलानाथहाथपसारिदीनअशीशको॥
अवधेशको अभिवंदि कुशध्वज मिल्यो कुँवरनजायकै।
तिहि राज कुँवर प्रणाम कीन सलाज शीश नवायकै॥
पुनि आय लक्ष्मीनिधि गह्यो पद कौशलेश नरेशको।
अभिमतहि आशिषपायमिल्योदिनेशवंश दिनेशको॥
यहिविधिपरस्परमिलिसकलपुनिपूछिकुशल अनंदसों।
अवधेश चले लिवाइ जनकहि पकरिकर अरविंदसों॥
दोउ राज बैठे एक आसन दहिन दिशि मिथिलेश हैं।
बाँये सुकौशलराज राजत और वीर अशेश हैं॥
आगे बिराजत राम चारिहु बंधु लक्ष्मीनिधि युतै।
दहिने कुशध्वज और निमिकुल वीर इक एकन उतै॥
यहि भाँति युगल समाज सोहति मनहुँ स्वर्गसुरावली।
रघुकुल सुनिमिकुल वीर बैठे वदहिं कवि बिरुदावली॥

बहु भाँति शिष्टाचार वचन उचारि अवध भुवारको ।
करजोरि बोल्यो जनक आपु समान यहि संसारको ॥
निमिवंश पावन कियो दीन्ह्यो सुयश मोहिं दराजहै ।
किमि करौं प्राति उपकार गुणि उपकार आवति लाजहै ॥
अवधेश बोल्यो सुनहु तुम मिथिलेश राजऋषीश हो ।
वर योग ज्ञान विराग भक्ति विवेक धर्म धुरीश हो ॥
तुम्हरे दरश हम भये सकुल पुनीत सकल प्रकारसों ।
महिमा तिहारी भूति महिमा कौन करै उचारसों ॥
हम दियो तुमको सौंपि चारिहु कुँवर ताजि छलछन्दको ।
लालन करन पालन करन तुम पिता देन अनंदको ॥
कौशल नगर मिथिला नगरके आप एक अधीशहो ।
यामें न दूसरि बात कछु तुम विषय कर्म अनीशहो ॥
दशरथ वचन सुनि सब सभासद साधुसाधु उचारहीं ।
दशरथ सनेह विदेह लखि दृग वारि धारहिं ढारहीं ॥
बोल्यो बहुरि निमिवंश भूषण काल्हि महल पधारिये ।
करिकै कृपा निज कुँवर युत ममभवन जूँठन डारिये ॥
कहि एवमस्तु भुवाल आशुहि अतर पान मँगायकै ।
निज पाणि पंकजसों मुदित मिथिलेश अंगलगायकै ॥
बीरी दियो निज हाथसों एला लवंग समेतही ।
तैसहि कियो सत्कार अवध भुवार पुनि कुशकेतही ॥
पुनि राम निजकर कियो लक्ष्मीनिधि परमसत्कारहै ।
माँगी बिदा निज भवन गवन विदेह लहि सुखसारहै ॥
पहुँचाय द्वारहि देश लौं अवधेश चालि मिथिलेशको ।
कारि सविध वन्दन सहित नन्दन पाय मोद अशेशको ॥
दोहा-सिंहासन बैठ्यो बहुरि,संयुत चारि कुमार ।
वर्णत नेह विदेहको, देह न रह्यो सँभार ॥

उत वर्णत दशरथ सुयश, गमनत गेह विदेह ।
राम शील शोभा निरखि, भये विदेह विदेह ॥
पुनि रामहि बंधुन सहित, बोल्यो कौशलराय ।
करि व्यारी कीजै शयन, रैन बहुत नहिं जाय ॥
कौशलपति नन्दन हरषि, अभिवंदन पितु कीन ।
सानंदन उठि अशन करि, नयन नींद रस लीन ॥
सामंतन करिकै बिदा, तज्यो राउ दरबार ।
शयन कियो निज अयनमें, आनि अनन्द अपार ॥

चौपाई ।

रोज रैन दिन सब जनवासा । माच्यो हास विलास हुलासा
नृत्य गीत वादन सब ठोरा । माचि रह्यो मंडित चहुँओ
जात राति दिन जानि न परहीं । महामोद मंगल जन भा
निशा सिरानि भयो भिनुसारा । पूरव दिनकर किरणि प
बन्दाजन गण द्वारहि आई । गावन लगे विरुद सुह
नौबति झरन लगीं सब ठोरा । भये दुंदुभी के कल शो
उठ्यो चक्रवर्ती महराजा । सुमिरि गरुडगामी छवि छा
प्रातकृत्य सब भूप निबाही । दीन्ह्यो दान सभान उछा
रघुकुलतिलक उठे युत भाई । पूजन मज्जन करि सुख छा
सहित बन्धु पितुके दरबारा । आये चारिहु राजकुमा
लक्ष्मीनिधि उतजनक पठाये । देन निमन्त्रणके हित आ
दशरथ निज गोदहि बैठाये । कह्यो लाल किहि काज सिधा

दोहा—जनक कुँवर बोल्यो विहँसि, पितु पठयो मुदमोय ।
भूपति भोजन रावरो, आजु महल महँ होय ॥

चौपाई ।

प्रेम मगन नृप गिरा उचारी । कहियो पितहि प्रणाम हमारी

पुनि कहियो अस सो सुखदाई । जो मोहिं राउर होय रजाई ॥
लक्ष्मीनिधि तहँ वंदन करिकै । गयो महल मंडित मुद भरिकै ॥
कौशलनाथ निदेश सुहावन । दियो सुनाय पिता कहँ पावन ॥
सुघर सूपकारन तिहिं बारा । कीन्ह्यो जनक तुरंत हँकारा ॥
दियो निदेश रचहु ज्यवनारा । त्रिभुवन व्यंजन विविधप्रकारा ॥
सिगरे सूपकार सुनि शासन । लगे रचन ज्यवनार हुलासन ॥
इतै करी अवधेश तयारी । महल पधारन हेतु सुखारी ॥
सजे सकल सुंदर रघुवंशी । जे त्रिभुवन महँ विदित प्रशंशी ॥
चारि कुमारन भूप बुलाये । चारि उतंग मतंग चढाये ॥
नाम जासु शत्रुंजय नागा । जिहि विलोकि दिग्गज मद भागा ॥
तापर भयो भुवाल सवारा । जिमि ऐरावत शक्र उदारा ॥

दोहा–राम लषण दक्षिण दिशा, वाम भरत रिपु शाल ।
चारि चारु चामर चलत, सोहत छत्र विशाल ॥

चौपाई ।

सजी सैन्य सब बजे नगारे । फहरन लगे निशान अपारे ॥
प्रतीहार बोलहिं यक ओरा । मंजुल करहिं जाँगरे शोरा ॥
धूरि पूरि नभ भूरि उडानी । चली सैन्य नहिं जाय बखानी ॥
पुरवासी देखन सब धाये । देखि देखि धनि धनि मुख गाये ॥
मनहुँ आज आवत सुखचारी । साहित चारि लोकप सुखकारी ॥
देव समाज विनिंदक सैना । जोहत जन जकि कढत न बैना ॥
जहँ तहँ कहहिं जनकपुर वासी । धन्य धन्य नृप अवध मवासी ॥
भई खबर महलन महँ जाई । आवत अवधनाथ नृपराई ॥
राज समाज साजि सब साजा । बैठरह्यो विदेह महराजा ॥
समधी आगम मनहिं विचारी । आगू लेन चल्यो पगुधारी ॥
द्वार देश अवधेश निहारी । कर गहि गज ते लियो उतारी ॥

किये प्रणाम परस्पर दोऊ। वंदे यथा योग्य सब कोऊ

दोहा–दीनबंधु वंदे जनक, सहित बंधु युत बंधु।
शीलसिंधु को राम सम, नागर नेह प्रबंधु॥

चौपाई।

सभा सदन दशरथ पगु धारे। सिंहासन यक अमल निहारे
बैठे तापर भूपति सोई। दहिने दिशि दशरथ मुदमाई
कनकासन विस्तर यक आगे। लघु राजासन ते नग लागे
तापर राम बैठि लै भाई। लक्ष्मीनिधिहि लियो बैठाई
दहिने दिशि रघुवंश विराजा। बाँये दिशिनिमिकुल छबि छाजा
लाग्यो होन तहाँ नट सारा। नचन लगीं अप्सरा अपारा
लागे गान करन गंधर्वा। बाज बजाय प्रमोदित सर्वा
मिथिलापुरके नर्तक नाना। नचैं डगैं नहिं ताल बँधाने
यद्यपि किन्नर अरु गंधर्वा। परम प्रवीण अप्सरा सर्वा
लेहिं तीन ग्रामनकी ताना। नाच गानमँह परम सुजाना
तदपि विदेह गुणिजन देखी। लेहिं आपने ते वर लेखी
तिनहिं सराहैं बारहिं बारा। अस नहिं शक्रसदन नटसारा

दोहा–राम दरश हित स्वर्ग तजि, चारण सिध गंधर्व।
विद्याधर अरु अप्सरा, आये मिथिला सर्व॥

चौपाई।

जनक गुणी जन कला निहारी। ताजि गुण गर्व रहे हियहारी
अवध नरेशहु करी प्रंशसा। दियो भूरि धन नृप अवतंसा
पै न विदेह गुणीजन लीन्हें। अनुचित जानि विनय बडिकाई
पुनि मिथिलापति परमसुजाना। आन्यो अतरदान अरु पाना
निज कर कंजन अतर लगायो। पुनि तांबूल सप्रेम खवायो
पुनि उठि राम समीप सिधारी। अतर लगायो वदन निहारी

कियो रामकर जस सत्कारा । तैसहि भ्रातन कियो उदारा ॥
निज कर पंकज पान खवायो । मर्कतमणि माला पहिरायो ॥
पद्मराग मणिमाल विशालै । दियो जनक नृप कोशलपालै ॥
पितु रुख जानि विदेह कुमारा । किय सब रघुवंशिन व्यवहारा ॥
अतर पान भूषण पट नाना । यथायोग्य सबही सन्माना ॥
दशरथ सरिस बरातिन पूजे । सबके सकल मनोरथ पूजे ॥
दोहा–शत शत गज स्यन्दन सहस, दश दश सहस तुरंग ।
दियो चारिहूं कुँवरको, तदपि न पूरि उमंग ॥
अयुत अश्व यक सहस गज, कनक सँवारे साज ।
रत्न जालकी पालकी, दिय दशरथ निमि राज ॥

चौपाई ।

तिहि अवसर आयो कुशकेतू । उठी सभा युग भूप समेतू ॥
करि वंदन भूपति शिरताजै । कह्यो वचन पुनि भोजन काजै ॥
रघुकुल तिलक विनयसुनि लीजै । भोजन हेत गवन अब कीजै ॥
सुनि कुशकेतु वचन अवधेशा । चल्यो कुँवर युत लै मिथिलेशा ॥
चले संग सब रघुकुलवारे । भोजन करन भवन ज्यवनारे ॥
भोजनभवन द्वारमहँ जाई । कनक पीठ बैठ्यो नृपराई ॥
चारि चारु चामीकर चौकी । बैठे कुँवर सुहात समौकी ॥
तहँ सबंधु मिथिलेश सिधारे । निजकर दशरथ चरण पखारे ॥
सो जल सींचि शशि महराजा । मान्यो अपनेको कृतकाजा ॥
प्रभु समीप पुनि गयो विदेहू । सजल नयन रोमांचित देहू ॥
भरि जल भाजन सुरभित नीरा । कनक थार आगे धरि धीरा ॥
प्रभु पदपंकज भूप पखारत । पुलकि गात लोचन जल ढारत ॥
दोहा–जे पदपद्म पखारि विधि, भर्यो कमंडलु नीर ।
सोइ शंकर निज शिर धर्यो, मेट्यो भव भय पीर ॥

चौपाई ।

जो जल परश करतु यक बारा । तरे सगरसुत साठि हजारा ।
कलिकलमष वन विटप दवारी । दुरित दवानल सावन वारी ।
अधम उधारन कारण सोई । जिहि प्रभाव लखि कलि दियराई ।
सो पदकंज सलिल मिथिलेशू । धरयो शीशमहँ मिटयो कलेशू ।
जोरि पाणि बोलयो मिथिलेशा । भयो धन्य मैं कुल पुर देशा ।
जनक भाग्य सब देव सराहैं । इन सम आज कोन महिमा हैं ।
जो पदजल शिर धारण हेतू । योगी करत रहत नितनेतू ।
सो पद सलिल सहजहीं पायो । कौन जनकसम जगमहँ जायो ।
यहि विधि प्रभुपदकंज पखारी । भरत लषण रिपुहनहुँ हँकारी ।
धोयो चरण चारु सबहीके । सींच्यो सलिल सदन सब नीके ।
तहँ लक्ष्मीनिधि अरु कुशकेतू । रघुवंशिन पद धोवन हेतू ।
लै चामीकर भाजन पानी । राम समान बरातिन जानी ।

दोहा–धोये रघुवंशिन चरण, प्रेम प्रभाव पसारि ।
पुनि कौशलपतिसों कह्यो, चलहु नाथ पगु धारि ॥

चौपाई ।

अवधनाथ कहँ सहित कुमारा । रघुवंशिन तिमि और अपारा ।
भोजन मंदिर गये लिवाई । यथायोग्य सब कहँ बैठाई ।
मृदुल पटे पन्ननके प्यारे । बैठायो तिन राजकुमारे ।
जडित चंद्रमणि चौकी चारू । बैठाये कौशल भर्तारू ।
तिहि विधि रत्नासन यक रूरो । बैठ विदेह प्रेम भरिपूरो ।
लक्ष्मीनिधि बैठ्यो ढिग रामा । कुशध्वज बैठजनकके बामा ।
एक ओर सब बैठ बराती । एक ओर सब लसैं घराती ।
सूपकार तहँ अगणित आये । पारुस करन लगे सुख छाये ।
रहे जिते तहँ रघुकुल वारे । दीन्हें भाजन कनक अपारे ।

थार कटोरे कनक कराले । चिमचा प्याले परम अमोले ॥
विविधरत्न भाजन छबिजाले । आगे धरे सु कौशलपाले ॥
तिमि मणि भाजन परम अनूपा । चारिहु वरन दिये अनुरूपा ॥
दोहा–यहिविधि भाजन धरि सकल, सूद सहित अनुराग ।
मनरञ्जन व्यंजन विविध, परुसन लगे सुभाग ॥

चौपाई ।

परुस्या ओदन विविध प्रकारा । मोती भात सुनाम उचारा ॥
केसरि भात नाम शशि भातू । कनकभात पुनि विमलविभातू ॥
रजत भात पुनि ओदन कुंदा । सुघरभातप्रद अमित अनंदा ॥
अरुण पीत अरु हरितहु वरणै । ओदन विविध कौन कवि वरणै ॥
दुदल प्रकार अनेकन आने । वर्ण वर्णके स्वाद महाने ॥
माष मूँग अरु चना सुगंधू । सोंध सरस अतिशय ऋतु रंधू ॥
पुनि कृसरान्न प्रकार अपारे । अदरख लवण निंबु रसडारे ॥
अरुचि विभंजन रुचिर विरंजू । बहु कबाब कलिया मनरंजू ॥
पय दधि मधु चिंचिनि रस बोरे । बट विधान तहँ धरे रसोरे ॥
वटी प्रकार विविध सुखदाई । विविध मसाले सुरभि सुहाई ॥
बने विविध विधि शाक विधाना । विविध रंग नहिं जाय बखाना ॥
विविध भाँतिकी बनी मिठाई । सरस सवाद सुधा समताई ॥
दोहा–फेनी खाझे घेवरो, पापर विविध प्रकार ।
गोरसकी बर सहकुली, सरस समोसे सार ॥

चौपाई ।

मन मोहन मोहनी मिठाई । बासोंधी खुरचन सुखदाई ॥
पयमोदक दधिमोदक केते । मधुमोदक बहु सिता समेते ॥
कुंडलिनीवर स्वाद सुहाई । लवण सिता करि भेद बनाई ॥
पायस चंद्र किरण सम सोहे । चन्द्राकार विविध बट जोहे ॥

दधि वटिका गोविंद बटिकौहैं । मूँग माष बटिका सरसा हैं ।
तिमि कूष्मांडवटी सुखदाई । आरनालबट लवण रसाई ।
मीठी लवण विविध विधि पूरी । तिमि माडव रोटी रस पूरी ।
कर निर्मित सहकुली महानी । बेलन विरचित स्वादहि सानी ।
तिमि नवनीत पूरिका लोनी । पूरी रजत वरण अरु सोनी ।
विविध फलनके विविध अचारे । विविध फलनके रसमँह डारे ।
लेह्य पदारथ स्वाद विभेदा । चोष्य पदारथ हारक खेदा ।
विविध भाँति मेवन पकवाना । कौन करै कवि सकल बखाना ।

दोहा–रुचिर स्वाद बहु रैतुवा, घृतके विविध विधान ।
अगर तगर परिमल कलित, केसरि वर्ण समान ॥

चौपाई ।

पान विविध विधि सरस सुहाये । द्राक्षारस मृगमदहि मिलाये ।
तिमि नारंग रसहि अरुणारे । मधुरस मिश्रित मिश्री डारे ।
श्वेत पीत केतकि जल केते । अरु मल्लिका सुरभि जल तेते ।
बहु अंगूर पूर रस पूरे । तिमि उशीरके नीरहु ढारे ।
बहुप्रकार घनसारहु वारी । चंदन वारि महा सुखकारी ।
रस रसालके विविध प्रकारा । जंबु निंबुके अंबु अपारा ।
पके मिष्ट कदली फल जाती । पिंड खजूरादिक बहु भाँती ।
पकें बडे बदरी फल खासे । तिमि सरदा फल स्वाद सुधासे ।
कुमकुम जल कस्तूरी वारी । फल तरबूज दिये तिन डारी ।
बने अनेक अन्न पकवाना । बरिल इडर हर स्वादु महाना ।
लिमिरसाज कतरे बड कतरे । मूँग मुँगौरे मोटहु पतरे ।
छन्न पन्न दधिबटी समेतू । साफ़ बाफ दधि स्वादु निकेतू ।

दोहा–दधि पय मिश्रित प्योंसरी; सहित रसालन बौर ।
तिमि श्रीखंड अखंड रस, ढंढ स्वाद शिरमौर ॥

चौपाई।

विविध पंच पकवान अपारे। दधि ओदन जे देवन प्यारे ॥
शक्करपुंगल औ पुलिहोरा। चारि पानि चिच्चिनि रसबोरा ॥
हरिवल्लभ अरु रमाविलासे। रसकोरे बोरे रस खासे ॥
मधुर तिक्त कटु अम्ल कषाई। लवणसहित बहु वस्तु बनाई ॥
जे व्यञ्जन सुरपुरमहँ होवैं। नाग नगर जे व्यंजन जोवैं ॥
व्यंजन पाकशास्त्रमहँ जेते। सूपकार ल्याये सब तेते ॥
जगस्वामिनि सियजिहि घर राजै। बैठे जगपति भोजन काजै ॥
तहँ व्यंजनके विविध विधाना। कोअसकवि जो करै बखाना ॥
जिहि विधि परुसे दशरथ काहीं। तिहिते न्यून बरातिन नाहीं ॥
सूपकार मिथिलापति केरे। परुसि पदारथ आशु घनेरे ॥
राम रूप अवलोकन लागे। कोटिन जन्म दुरित तनु भागे ॥
तहँ अवधेश आचमन कीन्हें। पुनि बलि वैश्व मंत्र पढि दीन्हें ॥

दोहा–मनहिं अर्पि लक्ष्मीपतिहि, नारायण मुख भाषि ॥
पंच कौल प्रथमहि लिये, मौन मोदमिति नाषि ॥
जैसी विधि दशरथ करी, तैसी करी विदेह ।
पुनि लागे भोजन करन, दोउ नृप सने सनेह ॥

चौपाई।

राम बंधुयुत अति अनुरागे। भोजन करनलगे सुखपागे ॥
दधि चिउरा विदेह कर लीन्हें। कौशलपति आगे धरि दीन्हें ॥
कह्यो जोरि कर तिरहुत माहीं। याते और पदारथ नाहीं ॥
और सकल रावरी विभूती। हमरे तौ इतनी करतूती ॥
हम नहिं तुमहिं जिवावन लायक। लेहु कृपा करि रविकुलनायक ॥
कह्यो अवधपति सुनिय विदेहू। जो करि कृपा आज तुम देहू ॥
सो सादर हम शिर धरि लेहीं। अस दाता पैहैं पुनि केहीं ॥

इतै रामसंयुत सब भाई। लक्ष्मीनिधिसों करत हँसाई॥
कहि न सकत गुरुजनके आगे। सैनाहि हँसी करत रसपागे॥
लक्ष्मीनिधिसों सैन चलाई। कहहिं देहु मोदक युग ल्याई॥
देत रमानिधि उत्तर हेरे। ये मोदक कौशलपुर के
यहि विधि रचत अनेकन हाँसी। भोजन करत कुँवर सुखरासी॥

दोहा–तहँ गारी गावन लगीं, मिथिलापुरकी नारि।
बाजन विविध बजायकै, सातहु सुरन सुधारि॥

गारी–हंसगिति छन्द।

सुनिये कौशलपति भूपा। तिहरा यश जगत अनूपा
धरणीमहँ रही सुधन्या। इन भूपति की यक कन्या
तिहि भूप स्वयंवर कीन्हा। यक मुनि कहँ सो बरि लीन्हा
मुनिभवन गई चलि प्यारी। जननी पितु लाज बिसारी
कोउ कही गाय पुनि गारी। तुव भाम होत तपधारी
रघुकुल चलि आई रीती। तिय लेहिं पुरुष कहँ जीती
हम सुने कान बहु बारा। तुव महिषिन मीत अपारा
निशिचरकी हरी कुमारी। तुम ब्याह्यो काह विचारी
कैकयी तुम्हारी रानी। तेहि नाम तासु गति जानी
तुम बूढे अवधभुवाला। किमि जनमें चारिहु लाला
हम तुम घरकी गति जाना। नहिं कौनहुँ लोक लुकाना
तिय खीर खाय सुत जनतीं। अपनो करतब सब मनतीं
दुइ लाल श्याम दुइ गोरे। यह होत महा भ्रम मोरे
ऐसिहु हम सुनी कहानी। जब पुरुष शक्ति भै हानी
तब मुनिके राखत बंसा। यह रघुकुल केरि प्रशंसा
अब सुनहु विनय अवधेशा। अति लजत कहत मिथिलेशा
जो होइ भगिनि घरमाहीं। तो देहु विदेह विवाहीं

हम सुनियत दशरथ राऊ । तुम्हरे कुल परम प्रभाऊ ॥
करि पान यज्ञ को नीरा । सुत जनैं पुरुष मतिधीरा ॥
यहि विधि बहु गारी गामैं । मिथिलापुर वाम ललामैं ॥
तहँ कहैं नारि समुदाई । यह दीजै नेग मँगाई ॥
निमिकुलके कुँवर कुँवारे । सब किये भरोस तिहारे ॥
यक यक कन्या नृप दीजै । यह अनुपम यश जग लीजै ॥
अस सुनत मृदुल नृप गारी । मुसक्यात लहत सुख भारी ॥

दोहा-मन्द मन्द भोजन करत, सुनि सुनि गारी राय ।
कुँवर उतर कछु देत नाहिं, दोउ नृपनिकट लजाय ॥

चौपाई ।

यहि विधि करि भोजन अवधेशा । करिआचमन तज्यो तिहि देशा॥
उठे सकल निमि रघुकुलवारे । उठि कुमार कर चरण पखारे ॥
अचवन कियो भूप शिरताजा । तहँ आयो मिथिला महराजा ॥
निजकर बीरी नृपहि खवायो । लक्ष्मीनिधि रामहि पुनि ल्यायो॥
अतर लगाय खवाये बीरा । यथायोग्य पाये सब बीरा ॥
माँगी बिदा जान जनवासे । कह्यो वचन तब जनक हुलासे ॥
किहिविधि कहौं जान अवधेशा । जान कहत जिय होत कलेशा॥
कौशल नायक वंदि विदेहू । गमन्यो वर्णत जनक सनेहू ॥
राम प्रणाम कीन मिथिलेशै । आशिष दियो विदेह अशेशै ॥
माँगि बिदा गवने जनवासे । चढि रघुनंदन स्यंदन खासे ॥
आजु चतुर्थी कर्म विधाना । ताकर सब साजहु सामाना ॥
शतानंद कहँ जनक हुलास । वर आनन पठयो जनवासे ॥
गौतम सुत चलि अवधभुवाले । कह्यो चतुर्थी कर्महि हाले ॥
राउ कह्यो मम गुरु पहँ जाहू । तिन युत कुँवरन कहँ लैजाहू ॥
गौतमसुत वासिष्ठ पहँ गयऊ । विश्वामित्रहि आनत भयऊ ॥

समाचार सब दियो सुनाई । सम्मत कीन्ह्यो दोउ मुनिराई ॥

दोहा—तहँ वासिष्ठ चारिहु कुँवर, लीन्हे आशु बुलाय ।
रत्न जालकी पालकी, दूलह लिये चढाय ॥

चौपाई ।

गाधिसुवन अरु आपहु आशू । चढे एक रथ सहित हुला
पंच सहस सँग राजकुमारा । छटे छबीले तुरँग सवारा
अगणितपरिकर विविध नकीबा । चले संग बोलत जय जी
चारि वारि चामर अति चारू । करैं कुँवर शीशन संचारू
राकाचन्द्र छत्र छबि छाजे । मुछेल विविध विशाल विरा
यहि विधि चारिहु कुँवर सुहाये । जनक भूप रनिवासहिं आ
दूलह आवनि सुनत सुनैना । कलश साजि कामिनी सुबै
पठई मंगल हित अगवानी । गावत चली सुमंगल बा
द्वार देशमहँ दूलह लीनी । देखि महाछबि आनँदभी
मुकुट जडाउ रत्नके खासे । मुकुत झालरैं झलक विला
तनु नारंग रंग बर बागे । कटि फेटे अति सुंदर लाग
छहराति सुछबि छोर द्वै छोनी ।मुकुतामणि माणिक अतिलो

दोहा—परे परतले कंध में, जगति जवाहिर ज्योति ।
हीरनकी हारावली, हिमकर किरण उदोति ॥

चौपाई ।

लसत कंठ पन्ननके कंठे । मनु बुध बहुत रूप धारि बैं
युगल युगल श्रुति जलजसुहाहीं । मनु उड श्वेत श्यामघन माहीं
भुज अंगद कर कडे विराजैं । मणि मंजीर कमलपद भ्राजैं
चारिहु वर्ण अनूपम शोभा । देखि सकल नारिन मन लोभ
लेहिं सकल दूलह बलिहारी । तिनुका तोरहिं पलक निवारी
तहँ वसिष्ठकौशिकमुनि आये । शतानन्दहू संग सिधाये

औरहु विप्रवृन्द जुरि आये । पढन लगे स्वस्त्ययन सुहाये ॥
उतरि पालकीते वर चारी । अन्तःपुर कहँ चले सिधारी ॥
तिहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो। मिलि कुँवरन तिन संगसिधायो ॥
मंगल गानकरत कलकामिनि । अर्घ्य देत गवनी गजगामिनि ॥
कौशिक शतानन्द गुरु तीने । मंगल पढत प्रवेशहिं कीने ॥
मंडप तर दूलह सब आये । मिली सिद्धि सखि मंडल भाये ॥

दोहा—चारि चारु आसन अमल, बैठे दूलह चार ।
शतानन्द कौशिकहु गुरु, लगे करावन चार ॥

चौपाई ।

गौरि गणप पूजन करवाये । पुनि चारिहु वर वधुन बुलाये ॥
वरन वधुन मज्जन करवाये । पट भूषण नवीन पहिराये ॥
पुनि बैठाये आसन माहीं । सविध कराये होम तहाँहीं ॥
सकल चार चौथी कर कीन्हें । अन्तः पुर वासिन सुख दीन्हें ॥
तिहि अवसर आईं महरानी । अपर दया वपु मनु निरमानी ॥
कह्यो मुनिनसों वचन त्वराई । भयो अशन अतिकाल महाई ॥
चौथी कृत्य शीघ्र करवाई । भोजन करैं अवशि इत आई ॥
सखि गये कुँवरन मुख कैसे । शरदातप लहि सरसिज जैसे ॥
मुनि कह कृत्य भई विधि लाई । अशन करावहु कुँवरन जाई ॥
लै रानी सब कुँवरन काहीं । अशन करायो भौनहिं माहीं ॥
करि भोजन रघुकुल कर चंदा । बैठे आय सभा सानंदा ॥
तहां सिद्धि लै सखी सिधारी । दन्ह्यिो अतर पान सत्कारी ॥

दोहा—जोरि कह्यो कर राम सों, सुनहु प्राणपति लाल ।
हमरे कुलकी रीति यह, चलि आई सब काल ॥

चौपाई ।

चौथी छूटि जाति जिहि बारा । तिहि दिन हरदी होति अपारा ॥
दुलहिनि दूलह सरहज सारी । होरी खेलहिं रंगनडारी ॥

ताते सजहु आप हित होरी । यह सुख देखनकी रुचि मोरी
सिद्धि वचन सुनिकै सुखदाई । बोले मंजु वचन रघुराई
जो जो रंग तुम्हैं मन भावैं । सो सो करिय न कछु रहि जाई
हमहिं कहौ तौ बाहर जाई । होरी वसन पहिरि सब भाई
नर्म सखन लै अपने संगा । आवैं करन फागु रस रंगा
कही सिद्धि यह भली विचारी । साजि आवहु करि फागु तयारी
हम देखब बल सकल तिहारे । जैहौ जनवासे हठि द्वा
उठे राम सब बन्धु समेतू । बाहर आये रघुकुल केतू
भवन जाय सब सखन बुलाये । होरी होन हाल सब गाये
नर्म सखा सुनि भरे उमंगा । सजैं श्वेत अंबर सब अंगा

दोहा–जनक पठाये विविध विधि, भूषण वसन समेत।
यथायोग्य बखशत भये, सब कहँ रघुकुलकेत॥

सवैया ।

मंडित हीरन ते वर क्रीट, झलाझल झालरैं मोतिन कैं
त्यों झलकैं हलकैं हिय हीरन, हारहिमाचलकी छबि पगैं
राजतके जरतारी बने, वर बागे चमाचम चारुता सों
श्रीरघुराजकी माधुरी मूरति, काको हियो हरि जात न हूं
फेंटे कसे कटिमें चटकीले, मजीले महीप लला हैं अनो
चौलडे त्यों मुकुताहल माल, सुतारावली छबि छीने अढो
खेलन फागु सजे रघुराज, सुराज कुमार महा चित चो
अंगनि अङ्ग उमंग भरे, निज जोहत होत अनङ्गके धो

दोहा–होरी मन्दिर में उतै, सिद्धि सजाई साज।
लै सीता सँग गवन किय, संयुत सखिन समाज॥

सवैया ।

परिचारिनी चारि कही चलिकै, सब खेलन होरी तयारी भई

पग धारिये फागु निवास लला, दरशाइये तौ निपुणाई नई ॥
सुनतीं नट नागरि रावरे की, नट नागरि ठाढी उछाह छई ।
रघुराज जू ठाढे इतै चकितै, बिन हारही हार क्यों मानि लई ॥
सो सहचारिनीकी सुनि बानि, दियो हरि हेरि हरे मुसक्याई ।
कोई सुजान सखा कह्यो नर्म, कहू रघुवंशिन हारि न पाई ॥
तू कहै कैसे वृथा अरी बैन, इतै पिचकारिनकी झरि लाई ।
है रघुराज सखा विजयी, विजय पायकै जैहैं निसान बजाई ॥

दोहा–सो सुनिकै सिय सहचरी, चलीं चतुर मुसक्याय ।
खबरि जनाई सिद्धिको, आवत राम सभाय ॥

सवैया ।

नर्म सखान समाज समेत, चले रघुनन्दन बंधुन लीने ।
फागुको मंदिर चांदिर चारु; चितै अति चौडो सुचोकी प्रवीने ॥
ठाढे भये यक ओर सखान लैं, श्रीरघुराज महा मुद भीने ।
शारद बारिद मंडलमें मनु, द्वै रवि द्वै शशि भासहि कीने ॥
देखी सखी सब राजकिशोरन, चित्तक चोरनसों अनुरागी ।
बाज बजावन लागा अनेकन, गावन लागीं धमारि सुरागी ॥
आये लला अब आये लला अबजान न पावैं सखान लै भागी।
श्रीरघुराजको धाय धरौ झुकि, झारिकै झोरिन संगहि लागी ॥
तहँ गोरी कही काढिकै न रुकौगी, जबैलगिआपको पाइहौंना।
मुहँ आनि किशोरीकी कै बरजोरी, बनाइहौं छोरी बचाइहौंना॥
तुम चोरी करी चितकी रघुराज, लला जो कहूँ भगि जाइहौना।
झिलिझारिकैझोरीजु मोरौंमुखैतौ, सियासखीफारिकहाइहौंना ॥
श्रीरघुराज सखानि समाजतै, कोई सखा काढि बैन उचारो ।

देख्यो नहीं रघुवंशिनको अबै, होरीके हल्ले न गल्ले पसारे
कौशलनाथकी सौंह किये कहौं, को अस जो हमसे नहिं ह्वै
गाय बजायकै आई बजाय, मचायकै फागु न पाइहौ पारे
यतनो सुनिकै सिगरी सखियां, भरे कंचनकी पिचकारिन
सुगुलालनकी उठी मूठि चहूँकित, गाय धमारिन गारिन
धन धाई धरो धरो भाषत यों रघुराज पै दै करतारिन
हरदीकी करी जरदी ललकारि, लख्यो मिथिलापुर नारिनको

कवित्त घनाक्षरी।

आई साजि सीता श्वेत भूषण वसन श्वेत, संगकी सहेली श्वेत
सुखमाछई। श्वेत पागे श्वेत बागे श्वेत कटि फेटे लागे,
प्यारो आयो फागुके उछाहई॥ होरीहोरी करि ललकारि हल्ला
हेरि, चली पिचकारी त्यों अबीरकी अँध्यारई। लाल लाल
लाल सखालाल सखीलाल, अंग लाल रंगलाल लालमयी है

रूप घनाक्षरी।

माणि अँगनाई मध्य मंडित मढी है फागु, राजतीं रँगीली
लीला रस लूटि लूटि। कुंकुमानि कुंकुम गुलाल बगसार
कंचन कलस नहवावैं रंग जूटि जूटि॥ रघुराज माणिक
हीर मोति मंजु, छहरै क्षमामें छाय छोवनसै छूटि छूटि।
सुकिन्नरीसी उर्वशी परीसी हेम, वल्लरीसी व्योमते परी हैं
टूटि टूटि॥

घनाक्षरा।

मुरजमृदंगढोलबाँसुरीसुरीलीबाजैं, गायरहींगानवारीतानकेतरेरीं

ह्वैगई झिलाझिली मिलामिली सखी सखान, चमक चहूंघा भई बादलेकी ढेरीमें ॥ सहजा सहज सहजोरी करि रघुराज, देख्यो न बनत बनावत चितेरीमें ॥ धोखेधोखे धासिधासि धायकै सुरोरी धुरी, धरचो रघुबीरको अबीरकी अँधेरीमें ॥ वारिकै अनेकन अनंग छबि रघुराज, आनँद उमंगनसो अंगन जमाकिगै ॥ एक कर कंजसों कराखि कटि फेटो चट, दूजे कर कंज कर कारिकै तमाकिगै । कौशलेश कुँवर कहूँ न जान पैहौ भागि, भाग मानि वानि बोलि दर्पसों दमाकिगै ॥ छायकै छटाको श्याम घनकी घटामें मनो, चरचि चरित्र चारु चपला चमाकिगै ॥

दोहा-सहजा सहजोरा करी, होरीमें ललकारि ।
बरजोरी रोरी मलत, राम छुटे झिझकारि ॥
चलत अनत अस मुख भनति, एहो राज किशोर ।
करसों छूटे का भयो, छुटे न चित चितचोर ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

छूटे सहजासे राम देखिकै सिधारी सिद्धि, सियते सहित लैकै सखिन समाज है । इतै धाये चारौ बंधु सखनके वृन्द लीन्हें, छायगो गुलाल नभमंडल दराज है । बादलेकी ह्वै गई वसुंधरा विराजमान, आसमान भरी गान बाजन अवाजहै । सखा गहिलावें सखी सखी गहिलावैं सखा, भ्रातनसमेत झूलो फिरै रघुराज है ॥ राच्यो महाफागु रँग केसरिको कीच माच्यो, अगर तगर धूरि पूरी चहुँ ओरीहै । छहरैं सुक्षोनी सुम मल्लिका धमिल्लनते, चमकैं सुचामीकर बल्लरीसी गोरीहै ॥ चलैं पिचकारी त्यों सुगन्ध भरी वारी वैस, सखन सखीन बरबराबर जोरीहै । फटिक फरश खेलैं फागु अनुराग भरे, कौशल किशोर मिथिलेशकी किशोरीहै ॥ साहित गुलाल रोरी बादलेकी मूठी मारि, लालकै सखन मुख कहूँ झिली आवैहै । काशमीर रंग न चलाय पिचकारी चारु,

राजदुलहेटे कासि फेटे वै हटावै हैं ॥ चातुरी चमाकि चप
करि चातुरीको, आतुरीसो पकरि सखान लय जावै हैं। नारि
बनाय वेष बेंदी दैकै छोरीकेश, रघुराज कौशलेश कुँवरै दिखावै
अवधकिशो रचितचोर चारौ ओर धाय, रांरी झोरी
मोरि सखिन समाजको। घेरिघेरि गोरिनको गेरिगेरि कुंडन
बोरिबोरि रंगन बजाय वेश बाजको ॥ हँसिहँसि हुलसिहुल
होरी होरी कहि, हेलिन हराय हेरि हरषि दराजको। मसि
गुलाल करि लाल सुख माल छीनि, बालनको छोडते दिखा
रघुराजको ॥ सियने समेत सिद्धि हेरि हार हेलिनकी, होरी
कहिकियो हल्ला चहुँ ओरते। मारि पिचकारिन उडायकै गुल
लाल, घेरि लीन्ह्यो चारौ लाल बाल माल जोरते ॥
सहर्ष करि वर्ष कुसुमावलीको, अति उतकर्ष कह्यो कौशल
रते। रघुराज आज लाल बालको बनाय वेष, हाहाको
छोडिहौं जू यहि ठोरते ॥ सिद्धि पाणि पंकज पकरि
रघुराज, लषण ललाको गह्यो सिय बरजोरीसों । मांड
उर्मिलागह्योहैशत्रुशालजूको, खडी श्रुतिकीरतिविचारीनहिंजो
सहजा विशाखा चन्द्रकला चटकीली चट, भरत भुजान
लीन्ह्यों नहिं जोरीसो। चमकि चलीते चारि कुँवर लिवाय
बनक बनाई हैं विशेषि बरगोरीसो ॥ एक एक सखन
द्वैद्वै सखि गह्यो धाय, लैचलीं सुचाय भरी गारी सुख गायगाय
राम चारो भाइनको सखन सहाइनको, करन लुगाइनको
मनमाहँ ल्याय ॥ चामीकर चौकिनमें चारो चितचोरनको,
बैठाय नयन कज्जल दियो लगाय। फबित प्रफुल्लित सु
सरोजनमें, बैठी रघुराज मनो अलि अवली हैं आ
रघुलाल भालमें दियोहै टिकुली विशाल, मानो कियो
मयंकलै अवनि जात। घेरदारघाँघरो नवीन जरतारीसारी,

कंचुकी दिखाय मुख मुसक्यात ॥ दामिनीसी दामिनी सुभामिनी
सँवारि शशि, कहती कुँवर होत कामिनीके क्यों लजात। तबलों
न छूटौगे छबीले छैल रघुराज, जबलों गहौगे नहीं सीयपद
जलजात ॥

सोरठा-प्रभु बोले मुसकाय, जानि परी यह रीति इत।
सुता ब्याहि सुख छाय, बहुरि पुरुषको तिय रचहु ॥

चौपाई।

यहिविधि फागु सरससुख भयऊ। हास विलास हुलासहि छयऊ॥
माँगि विदा प्रभु शिबिर सिधाये। सखन बन्धुयुत राम नहाये॥
बदलि वसन पितु सभा सिधारे। सुखी भये नृपकुँवर निहारे॥
पितुहि वंदि बैठे सब भाई। अस्ताचलहि गये दिनराई॥
कह्यो भूप तहँ अति सुखछाई। संध्या करहु जाय सब भाई॥
परयो परिश्रम खेलत हरदी। मुखमें देखि परतहै जरदी॥
करहु अशन करि शयन सकारे। बहुत नशा बीते नहिं प्यारे॥
पितु शासन सुनि उठे कुमारे। संध्या कर्म सकल निरधारे॥
सखन बंधु लै किये बियारी। किये शयन निज अयन सिधारी॥
जानि समय ताजि सभा नरेशा। कियोशयनशुचि सुमिरिरमेशा॥
किये शयन सब सुखी बराती। वरणिजनक कीरति न सिराती॥
नहिं विसंचकर खोजहु खोजे। मते महा मोदहि जन मोजे॥

दोहा-रघुपति ब्याह उछाहमें, बीते बहु दिन रैन।
जानि परे क्षण एक सम, पाय महाचित चैन॥

चौपाई।

नितप्राति कुँवर जाहिं रनिवासा। होत महासुख हास विलासा॥
नितप्राति मिथिलानगर भुवारा। करहिं नवीन राज सत्कारा॥
भूल्यो अवध बरातिन काहीं। कहहिं जाब मिथिलाते नाहीं॥
यहि विधि बीति गयो बहु काला। नितनितनवनव मोद विशाला॥

को कहि सकै समग्र उच्छाहू । इतै जनक उत कौशलनाहू ।
जहँ त्रिभुवनपति दूलह भयऊ । दुलहिन रमा महासुख चयऊ ।
शेष शारदा सकै न वरणी । तहँ मम कौन बुद्धिकी करणी ।
एक समै वसिष्ठ निज धामा । बैठे रहे सुमिरि हिय रामा ।
विश्वामित्र तहाँ चलि आये । उठि वसिष्ठ आसन बैठाये ।
गाधिसुवन कह मंजुल वानी । सुनहु ब्रह्मनन्दन मति खानी ।
बहुत दिवस मिथिला महँ बीते । उभै राज नहिं सुखसों रीते ।
अब हम गमनब शैल हिमाले । कारज सकल सिद्धि यहि काले ।

दोहा–बीति गयो बहु काल मुनि, मिथिला बसे बरात ।
उचित अवधको गवन अब, सो तुम साधहु तात ॥
उभै महीपति मोदरस, मगन भये यहि काल ।
जानत नहिं वासर बितत, नित नव हर्ष विशाल ॥

चौपाई ।

सुनत गाधिसुतकी वर बानी । बोले ब्रह्मतनय विज्ञानी ।
सत्य कह्यो कौशिक अवदाता । चलब अवध अब उचित बराता ।
कौसल्यादिक जे महरानी । लिखहिं पत्रिका मुहिं हुलसानी ।
आशु बरात अवधपुर आवै । दुलहिन दरश चित्त ललचावै ।
ताते शतानन्द बुलवाई । हम अब जतन करब मुनिराई ।
अस कहि युगल शिष्य पठवाये । शतानन्द कहँ आशु बुलाये ।
उठि वासिष्ठ कहँ मिलि मुनिराई । कौशिक बार बार शिर नाई ।
माँगि बिदा दशरथ पहँ आयो । भूपति चलि आगे शिर नायो ।
दै आसन पूछी कुशलाई । गाधिसुवन बोल्यो सुख पाई ।
बहुत काल बीत्यो महराजा । पाये मोद सिद्धि सब काजा ।
चलन चहौं अब हिमगिरि काहीं । इहां रहे सुधरत तप नाहीं ।
जब करिहो सुमिरन नृप मोरा । तब देखिहौ मोहिं तिहि ठोरा ।

दोहा-नरपति तुम्हरे नेहवश, बनत न हमसों जात।
ह्वै न सकत कछु भजन तप, रहत बनत नहिं तात॥

चौपाई।

मुनि कौशिकके वचन सुहाये। अवध नरेश अतिहि बिलखाये॥
सजल नयन गद्गद कह वानी। नाथ देत दुख तव बिलगानी॥
कहि न सकौं कछु जस मन होई। सो करिये मुहिं अनुचर जोई॥
अस कहि नृप षोडश उपचारा। करि मुनि कर पूजनसत्कारा॥
रामहि बंधुन सहित बुलाई। दीन्हीं मुनिकी बिदा सुनाई॥
गुरुको गवन सुनत रघुराई। चारिहु बंधु चरण लपटाई॥
मुनिकहँ करि प्रणाम बहु बारा। जोरि जलजकर वचन उचारा॥
अबै न जाहु अवध पगु धारो। पुनि गमनब मन जहाँ तुम्हारो॥
मुनि कह अब कीजै सो काजा। जिहि हित प्रगट भये रघुराजा॥
जाहु अवध जब मोहिं बुलैहौ। तहाँ अवशि मम दरशन पैहौ॥
अस कहि बार बार मिलि रामै। आशिष दियो पूरि मनकामैं॥
मिल्यो महीपति कहँ मुनिराई। पुनि चारिहु बंधुन हिय लाई॥

दोहा-कौशिक चल्यो हिमाचलय, लोचन वारि बहाय।
फिरचो कुमारन सहित नृप, कछुक दूरि पहुँचाय॥

चौपाई।

गयो विदेह गेह मुनिराई। सुनि मिथिलेश गह्यो पद आई॥
माँगी बिदा मुनीश महीपै। जब सुमिरब तब रहब समीपै॥
बिमनस जनककहत नहिं बानी। बुद्धि सनेह विवश बिलखानी॥
गद्गद गर भरि नयननि नीरा। कह्यो करहु जो मन मतिधीरा॥
कौशिक गयो बहुरि रनिवासै। जोहि जानकी पाय हुलासै॥
माँगि बिदा मुनि दई अशीशा। पुनि आयो जहँ जनक महीशा॥
लै इकांतमहँ मुनि अस भाख्यो। भूप बरात बहुत दिन राख्यो॥
बिदा करहु अब कौशलनाथै। दूलह दुलहिन करि यक साथै॥

जानहु सकल भूप विज्ञानी । कहँ लगि तुमसों कहौं बखानी ॥
जनक कह्यो जस होति रजाई । सोइ कीन्हें मुनि मोरि भलाई ॥
मुनिजब आशिष वचनउचारचो । जनकनयनजल चरण पखारचो ॥
चल्यो मुनीश नयन भरि नीरा । गयो महीप महल धरि धीरा ॥

दोहा—सुमिरत सीताराम पद, दशरथ जनक सनेह ।
वर्णत व्याह उछाह सुख, हिमागिरि वस्यो अछेह ॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजावहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपा-पात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आइ. कृते श्रीराम-स्वयंवरविवाहप्रकरणे विंशति प्रबन्धः ॥ २० ॥

दोहा—अब वरणों कछु करुणरस, सियको अवध पयान ।
मिले आय भृगुनाथ मग, तासु विवाद बखान ॥
तुलसिदास प्रभु अस लिख्यो, धनुष भंगके अन्त ।
परशुराम अरु राम को, भयो विवाद अनंत ॥
श्रीमद्रामायण विमल, आदि सुकविकृत जोय ।
रामस्वयंवर ग्रन्थ में, तासु रीति सब होय ॥
कहुँ कहुँ गोस्वामी रचित, रामायणकी रीति ।
सैली मुख्य विचारिये, वाल्मीकि कृत नीति ॥
ताते मिथिला नगरते, अवधै चली बरात ।
तब मारगमें मिलत भे, भृगुपति कोप अघात ॥
ताते मैं कहिहौं कछुक, राम राम संवाद ।
रामायणकी रीति सों, दायक अति अहलाद ॥
वर्णत नेकहु करुण रस, मोहि न होत उछाह ।
पै प्रसंग वश कहत कछु, सीय बिदा दुख माह ॥

छन्द चौबोला

विश्वामित्र गये जब हिमागिरि माँगि बिदा दोउ राजै ।
मुनि वसिष्ठ तब लगे विचारन कौन उचित अब काजै ॥

आयो शतानन्द तिहि अवसर मुनि वसिष्ठ ढिग माहीं ॥
अति सत्कार सहितदे आसन कुशल पूछि तिन काहीं ।
गौतम सुतसों कह्यो वचन पुनि शतानन्द तुम ज्ञाता ॥
बीत्यो बहुत काल मिथिलापुर निवसे विशद बराता ।
दशरथनेह विदेह नेह अति दीन्हें गेह भुलाई ॥
जनक विदेहदेहकी सुधि नहिं नित आनँद अधिकाई ।
मिथिलावासी अवध निवासी आनँद मगन अघाता ॥
करै बिदाको होय बिदाको कहै कौन यह बाता ।
कौसल्या कैकयी सुमित्रा जे दशरथ महरानी ॥
बार बार लिखतीं मुहिं पाती दुलहिन लखन लुभानी ।
सकल भूमिमंडलको कारज करै कौन यहि काला ॥
दशरथ बसत नगरमिथिलामहँ होती प्रजा विहाला ।
तातें जाय जनक समुझावहु करैं कुमारि बिदाई ॥
उचित न अब राखब बरात को चलैं अवधनृपराई ।
हम समुझैहहिं कौशल भूपै तुम विदेह समुझाओ ॥
अब चारिहु नववधूविदाकारि सुंदर सुदिन बनाओ ।
सुनि वसिष्ठके वचन यथोचित शतानन्द मुनिभाख्यो ॥
करत सुनत यह वचनदुसहपै उचित विचारहि राख्यो ।
हम अब जाय बुझाय जनकको करिहैं विदा तयारी ॥
तुम समुझावहु अवधनाथको होहिं न जात दुखारी ॥
तब मुनिगौतम सुवनबिदाकारि दशरथनिकट सिधार्यो ।
बैठि इकांत शांतरस संयुत बैन अचैन उचार्यो ॥
अवध तजे बीते अनेकादिन मिथिला बसत तुम्हारे ।
सुवन विवाह भये मंगल युत श्रीपति विघ्ननिवारे ॥
भूमि खंडनवको अखंड कारज नरेश तुव हाथा ।

ताते अब पगु धारि अवधको कीजै प्रजा सनाथा।
पुत्रवधू अरु पुत्रनको लै चलहु अवध नरनाहू।
सहित पट्टरानी परछन करि लेहु अपूरव लाहू।
सुनि वसिष्ठके वचन चक्रवर्त्ती नरेश मुख गाये।
सकलसत्य जो नाथ कहौ तुम हमरहु मन यह आये।
पै विदेहके नेह विवश नहिं मांगत बनत बिदाई।
प्रीतिरीति करि जीत लियो मुहिं विछुरन अतिदुखदाई।
काह करौं किहिभाँति कहौं मुख बिदा होन किमि जाई।
कैसे सरस सनेह विरसकरि अतिअनरस उपजाई।
जो विदेह करिकै मन साहस सुता बिदाकरि देहैं।
तौ हम पुत्रवधू पुत्रन लै अवध नगर चलि देहैं।
इतना कहत भूपके आँखिन आँसुन बहे पनारे।
मुनिवर कह्यो विदेहयोग यहि तुमजिहिभाँतिउचारे।
पै न विदेह सनेह रावरो कबहुँ भंग पथ पैहैं।
तुम ऐहौ मिथिला बहु बारहि सो कोशलपुर जैहैं॥
रीति सनातन ब्याह अंतमें होती सुता विदाई।
मर्यादा ते अधिक रहे इत लहि सत्कार महाई॥
महरानी कौसल्यादिक तुव लिखती बारहि बारा।
दुलहिन दूलहदेखब किहि दिन लागी ललक अपारा॥
ताते चलहु अवधपुर भूपति अब परछन सुखलूटा।
पुत्रवधू अरु पुत्र राखि घर और काज महँ जूटा॥

दोहा—सुनि गुरुकी वाणी विमल, कह्यो भूप करजोरि।
जौन होब रुचिरावरो, सोइ अभिलाषा मोरि॥

छन्द चौबोला।

शतानंद उत जाय जनकपहँ लै इकांत मिथिलेशै।

कह्यो शांत अतिदांत वचनवर सहित ज्ञान उपदेशै ॥
महाराज उतरे प्रणसागर अवधनाथ कहँ आनी ।
चारि कुमारन चारि कुमारी व्याहि दई छबिखानी ॥
मंगलमय सब भयो बिघ्न बिन ब्याह उछाह अपारा ।
करत बरातहि बिंते बहुत दिन नित नित नव सत्कारा ॥
यदपि विदेह सनेह रावरो कौशलपतिसों भारी ।
नित नित देखत नहिं अघात दृग रामरूप मनहारी ॥
अधिक प्रमाणहुँ ते बरात अब राख्यो इत मिथिलेशू ।
चलत चहत अब अवध अवधपति सकुचत कहत कलेशू ॥
ताते सुदिवस पूछि कुँवारिन बिदा करो महराजा ।
अब इतनै अवशिष्ट आपको सकल सजावहु साजा ॥
पुनि दुहितनको आनि लेव इत कुँवर लिवावन ऐहैं ।
पूरण शशि मुख लखि रघुपति को हम सब अतिसुख पैहैं ॥
अब नहिं राखब उचित बहुत दिन मिथिला नगर बराता ।
करहु बिदा शुभ पूँछि मुहूरत तुम त्रिकालके ज्ञाता ॥
शतानन्दके वचन सुनत नृप राम वियोग विचारी ।
रह्यो दंड द्वै कछुक कह्यो मुख नयन बहावत वारी ॥
जस तसके धरि धीरज नृप उर है आनँद सों छूछो ।
कह्यो वचन सुनि करहु यथा मन मोहिं काह अब पूछो ॥
अनुचित कछु न विवाह अन्त में होती सुता बिदाई ।
नहिं नववधू वसति नैहरमें रीति सदा चलि आई ॥
राम रूप दर्शनकी बिछुरन दुसह दुखद मुहि होई ।
मैं विदेह दशरथ सनेह महँ कियो देह सुख जोई ॥
किहि विधि सुख कहि जाय महामुनि राम इतै ते जाहीं ।
सुता बिदा करि देहु भले तुम रघुपति गवनैं नाहीं ॥

प्रेम विवश मिथिलेश जानि मुनि पुनि पुनि बहु समुझावें
देवयानि अरु देवहुती मनु कहि इतिहास सुनावें
कह मिथिलेश करहु जस भावै शतानन्द तुम ज्ञाता
सुनि भूपतिके वचन उठ्यो मुनि बोल्यो सचिव विख्याता
सचिव सुदावन आदि गये तहँ दिय शासन मुनिराई
वधुन बिदा की साज सजावहु कालिह सुदिन सुखदाई
चारि नालकी रत्न जालकी दासी दास अनेका
वसन अमोलविविध विधिभूषण आनहु सहित विवेका
सजे गयंद कनक स्यंदन बहु वाजिनवृन्द मँगावें
शिबिर सुशारद वारिदके सम बाहर खडे करावें
और सकल बहु मोल वस्तुराचि शकटन सपदि भरावें
न्यून कौनहूं वस्तु होय नहिं गणकन वेगि बुलावें
शतानंदको शासन सुनिकै सचिव सकल सुखपाई
जिहि विधि दियो निदेशमहामुनि तिहि विधि साज सजाई
गौतम सुवन कह्यो गणकन सों शोधिय सुदिन बिदाई
रचहु लग्न अनुकूल सकल ग्रह हरे वधूनि व्यथाई
कहे सकल दैवज्ञ शोधि शुभ घरी कालिह सुखदाई
युग युग जियें युगल जोरी मुनि ऐसी लग्न बनाई
अन्तःपुरहि जाय गौतम सुत विदा खबरि खुलाई
हहरि उठ्यो रनिवास सकल सुनि जन सुख दियो गमाई
रानि सुनैना विलखि कह्यो तब अबै न जाय बराता
सुखसमुद्र कुंभज कस होवहु समय सुखद उतपाता

दोहा–फैलत फैलत फैलिगै, खबरि नगर चहुँ ओर।
करत कालिह भूपति बिदा, चलन चहत चितचोर॥

छन्द चौबोला।

पुरजन सकल नारि नर नितप्रति वर जोहन जनवासे

जुरि जुरिजात जोहि जगपतिछबि नहिं अघात छबिप्यासे॥
ते मुख खबारि बरातिनके सुनि अवध चलत अवधेशा।
सूखन चहत प्रमोद पयोनिधि जाने मानि कलेशा॥
सीय स्वभावशील गुण सुधि करि विलखहिं पुर नर नारी।
राम रूप वर्णत अघात नहिं बहत विलोचन वारी॥
नहिं सिय समधन्या कन्या जग वर नहिं राम समाना।
पूरव पुण्य लहे लोचन फल सो सुख सकल पराना॥
हाय बहुरि कब लखब राम छबि कब मिथिलेश कुमारी।
कब कौशलपति सकल साहिबी जो इन नयन निहारी॥
बसी बरात यदपि बहु वासर पाये मुद मन माने।
पै अभिराम राम अवलोकत नयन अबै न अघाने॥
हे विधि बसै बरात बहुत दिन सीय विदा नहिं होई।
भयो सकल स्वप्नो कैसो सुख बसब कौन सुख जोई॥
रे विधि परमानन्द दिखाय चहत बिलगावन काहे।
नहीं दया आवति तेरे उर का पैहे जिय दाहे॥
यहि विधि कहहिं विकलपुरजन सब कोउतिनमहँ समुझावैं।
आनहिं आशु सीय मिथिलापुर रामलिवावन आवैं॥
युग युग जीवैं सुखमासीवैं रामजानकी जोरी।
नहिं हमार अस भाग्य आनकर नित नव प्रीति अथोरी॥
राम सदा मिथिलापुर ऐहैं जनक अवधपुर जैहैं।
दिन दिन दून दून सुख देखब सुर समता नहिं पैहैं॥
अस कहि विविध सभ्य समुझावहिं पै न धरहिं कोउ धीरा।
मिलहिं बरातिनसों चालि पुरजन नयन बहावन नीरा॥
यथा जनकपुरवासिनको दुख अवध निवासिन तैसो।
दोउ दिशिके भे विकल नेहवश को समुझावै कैसो॥
मिल मिल कहत अवधपुरके जन तजेहु न सुरति हमारी।

तैसहि कहत जनकपुरवासी बिछुरन दुसह तिहारी॥
जाहि यथा संपति संपति घर सो पट भूषण नाना।
सीय देन हित जाय राजगृह देत बनाय विधाना।
कोउ अस रह्यो न मिथिलापुरमहँ जो नहिं दायज दीन्हो।
कोउ अस रह्यो न जौन बरातिन जाय भेंट नहिं कीन्हो।
सिगरे नगर सनंक गई परि सोय विदा दुख भारी।
वर्णत सीय स्वभाउ चुकत नहिं जुरिसमाज नर नारी।
सुता व्याह पुनि बिदा होत हठि जानहिं जगकी रीती।
तदपि राम सिय लषण लखब कब अस काहि वर्णहिं प्रीती।
इन आँखिन दरशाय महासुख हरहु विरंचि बहोरी।
देखनको तुम चतुर चारि मुख चूक बडी यह तोरी।
हाट हाट अरु बाट बाट बहु घाट घाट पुरवासी।
कहत एकसों एक बात यह सीय बिदा दुखरासी।
अंचल ओढि विरंचि मनावहिं रंचक दिन नहिं वीतै।
होय ब्रह्मरजनीसी रजनी पठवैं जनक न सीतै।
खान पान सुस्नान भान नहिं ध्यान ठानि अस बैठै।
जनकपुरी पुरजन जनु वरवश शोकसिंधुमहँ पैठै।
और कछुक दिन रहैं अवधपति होय अनन्द बधाऊ।
अथवा छोडि रामकहँ कछुदिन जाहिं अवध कहँ राऊ।
तहँ कोउ सज्जन कहहि जनन कहँ राम प्राणते प्यारे।
अवधप्रजा किमि धरहिं धीरउर बिन रघुराज निहारे।
दोहा- जस तुमको लागत इतै, राम अवध नहिं जाहिं।
तैसहि अवधप्रजा सकल, बिन देखे बिलखाहिं॥

छंद चौबोला।

जबते शतानन्द अन्तःपुर सीय बिदा मुख भाषे।
तबते सब रनिवास हुलास निराश विरंचिहि माषे।

दुखसानी वाना रानी कहि करती बिदा तयारी ।
सियहि विलोकि विलोचनते सब विलखि बहावहिं वारी ॥
पुनिपुनिमिलहिं ललीकहि दृगभरि विलखि विदेहकुमारी ।
विलखत सियहि देखि ढाढस करि नयननिवारहिंवारी ॥
जाक जौन पियारि वस्तु घर देहि जानकिहि ल्याई ।
सरवसु देन चहैं चित चाहित प्रेमविवश अकुलाई ॥
सीयमातु कुशकेतु कामिनी सिद्धि समेत बुलाई ।
बैठि शिखावहिं जोहिं जानकिहि पातिव्रत धर्म बताई ॥
इष्टदेव गुरुदेव कन्त कह मानेहु धर्म विचारी ।
दोउ कुलकी मर्याद कन्यका हाथे बसति कुमारी ॥
रीति सनातन ते चालि आई कन्या पति घर जाही ।
गौरि गिरा इंदिरा शची निज निज पिय पास सुहाही ॥
नहिं बेटी बिलखहु चितमें कछु पठै तिहारो भाई ।
परछनहींके पाछे आछे लैहैं भूप बुलाई ॥
दशरथ सरिस श्वशुर जगमें नहिं जनक जनक समपाई ।
कंत भानुकुलकमलदिवाकर तुहिं सम द्वितिय न जाई ॥
रह्यो सदा पतिको रुख राखत परिहरि सब सुख प्यारी ।
पति शासन अनुसार काज सब कीन्ह्यों धर्म विचारी ॥
वेद कहत अस सुनहु कुमारी नारी धर्म प्रधाना ।
संतनके मुख सुने सकल हम तैसो करहिं बखाना ॥
दासी सरस करै पति सेवा सुखी सखा सम करई ।
पत्नी सरिस पातिव्रत धर्म निबाहै जग यश भरई ॥
सोपत करै भागिनि सम सिगरो वात्सल्य जननीसों ।
सो नारी नरलोक शिखामणि है पातिव्रत करनीसों ॥
सासु श्वशुरको पूजन करियो जनक जननि सनमानी ।

नातो जाको जौन होय कुल सो मानेहु जिय जानी ।
चारिहु भागिनि मिली रहियो नित कबहुँ न होय विरोधू ।
सब सासुनको मान राखियो किह्यो न कबहूँ क्रोधू ।
प्रीति रीति उर राखि देवरन मान्यो बालक भाऊ ।
कुलवंतिनी नारि रघुकुलकी साध्यो शील स्वभाऊ ।
परदुख दुखी सुखी परसुखसों सबसों हँसि मुख भाख्यो ।
यथायोग्य सत्कार सबनको करि सनेह सुठि राख्यो ।
गृहकारज आरजके कारज सब दिन रह्यो सम्हारे ।
रघुकुलकी निमिकुलहूंकी अब है कर लाज तुम्हारे ।
ह्वै हौ लली सुहागिन पियकी आगिल ते हम कहहीं ।
भाग्यवंतिनी तिय श्रीमान्तिन दोउ कुल दुखी न रहहीं ।
पुनि उर्मिला मांडवी अरु श्रुतिकीरति लियो बुलाई ।
जननि शिखापन देइ विविध विधि अंबक अंबु बहाई ।
रहियो सबै सियाके संमत करियो सिय सेवकाई ।
दोउ कुल पतिव्रत धर्म उजागर रहै सुयश जग छाई ।
गुरुजनकी गुरुता साखिजनको नेह देह भरि चाही ।
सरवसु प्रीतम प्रेम नेम करि क्षेम लहै जग माहीं ।
तन धन धाम काम वामनको पिय अराम जिहि होई ।
प्रीति प्रतीति नीति सोई करि गहै रीति हठि सोई ।
मानवती न गुमानवती नहिं सानवती ह्वै तबहूं ।
पिय परिचर्य्या किह्यो कुमारी कुमन होइ पति तबहूं ।

दोहा—आँखिनमें अँसुवा भरे, सुनि जननीकी सीख ।
कहति न सिय कछु संकुच वश, लही नीतिकी भीख ॥

चौपाई ।

इतै राउ सुदिवस जिय जानी । बोलि वसिष्ठहि बोले बानी ।
बिदा करावन कुँवर पठाओ । अवध गवन दुन्दुभी बजाओ ।

तहँ वासिष्ठ मुनि अतिसुख पाये । राम सहित सब बंधु बुलाये ॥
कह्यो विदेह निवास पधारौ । वधू बिदा करि सुदिन न टारौ ॥
तजत जनकपुर उपजत पीरा । मनहींमन बिलखत रघुबीरा ॥
मानि राम गुरु पिता रजाई । चले विदेह महल सब भाई ॥
पंच सहस्र सखा अनियारे । चढे तुरंगन राजकुमारे ॥
उदासीन पुर देखत जाहीं । तिहि अवसर उछाह कहुँ नाहीं ॥
सकल जनकपुर प्रजा दुखारी । सीय बिदा गुनि ढारहिं वारी ॥
देखन कुँवर नेह वश धावैं । राम विलोकत वारि बहावैं ॥
इनके दुर्घट दर्शन होही ।भयो सबन पर विधि अति कोही ॥
पृथक्पृथक् प्रभु प्रजा जुहारै । रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारै ॥
दोहा-पग पग महँ घेरहिं प्रजा, चारिहु राजकिशोर ।
अनमिख निरखहिं मुखनको, जैसे चन्द्र चकोर ॥

चौपाई ।

कहहिं परस्पर दुख भरि वानी । हाय होति अब दर्शन हानी ॥
कब पुनि दरश लहब इन केरे । अवध जात अब कुँवर सबेरे ॥
जसे नीड छबि नयन पखेरू । अब दुर्लभ अस मिलब बसेरू ॥
जबलगि रही जनकपुर सीता । नित नव मंगल मोद पुनीता ॥
यदपि जनक सिय बहुरि बुलैहैं । पुनि पुनि राम लिवावन ऐहैं ॥
पै अस लगत आज मनमाहीं । यासे अधिक हानि कछु नाहीं ॥
दशरथ पाहिं कहौ कोउ जाई । यदपि करी मिथिलेश बिदाई ॥
तदपि सकल मिथिलापुरवासी । राखहिं एक दिवस सुख आसी ॥
कोउ कह जाय कहौ मिथिलेसै । आजु सुदिन नहिं गवन भदेसै ॥
कोउ ज्योतिषिन जाय धन देहीं । वर्जहु विप्र बिदा वैदेहीं ॥
देवी देवन वंदैं पुजाई । रहैं चारि दिन चारिहु भाई ॥
नारी जुरि जुरि देखि उचारैं । बिदा करावन कुँवर पधारैं ॥

दोहा–बोलि पुत्र पति बंधु कहँ, बहु विधि कहैं बुझाय।
जाय कहौ मिथिलेश पहँ, बिदा बन्द ह्वै जाय॥

चौपाई।

पूजि कोउ परजन्य मनावैं। बरसहु आजु राम नहिं जावैं॥
कहै नारि कोउ विगत उछाहू। लेहु आजु लगि लोचन लाहू॥
हत दूषण नर भूषण प्यारे। जात् अवध चित चोरि हमारे॥
कहौ कुमारनको चलि कोऊ। रहिहैं कालिह दया वश आऊ॥
कोउ सखिप्रेमविवश पुनि भाखैं। बरबस पकरि राम कहँ राखैं॥
जाहि अवधपुर राउ भलाई। रहैं मौन मिथिलापुर साई॥
हमहीं राखब दूलह चारी। जब लगि पूजि न आस हमारी॥
कोउ सखिकहहि न करहु खभारा। सुदिवस आज होत भिनुसारा॥
तब लगि जाय बुझाय सुनैनै। राखब कुँवरन भूपति ऐनै॥
कोउ कह अस सुख अब कब होई। लखी रामासियपुनि धनि सोई॥
लखत पलक जिन कल्प समाना। तिन बिछुरे रहिहैं किमि प्राना॥
कोउ कह सखि साँवरो सलोना। तिहि बिन लखे हमहिं काहोना॥

दोहा–अलक पाश पसराय मन, लियो बिहंग फँसाय।
हाय दई यह निर्दयी, का कहिहै घर जाय॥

चौपाई।

यहि विधि सुनत नारिनरवानी। चले जात रघुपति छबिखानी॥
अतिविमनस कछु कहत न वानी। प्रीति रीति नहिं जात बखानी॥
दौरि दूत तिहि अवसर आये। मिथिलापतिकहँ खबरि जनाये॥
आवत राजकुँवर मन भाये। सोहत सखा संग छबि छाये॥
उठे भूप आये चलि आगे। राम दरश कहँ अति अनुरागे॥
आवत देखि विदेह कुमारा। उतारि तुरंगन ते यक बारा॥
किये प्रणाम नाम निजलीन्हें। भूप यथोचित आशिष दीन्हें॥
सभा भवनमहँ गये लिवाई। सिंहासन आसीन कराई॥

यथायोग्य सब सखन महीपा । बैठाये रघुनाथ समीपा ।
तिहि अवसर लक्ष्मीनिधि आये । चारिहु बन्धुनकहँ शिरनाये ॥
उठे राम संयुत सब भाई । चालि मिलि निज समीप बैठाई ।
कुशल प्रश्न पूछ्यो सब भाँती । राम देखि भइ शीतल छाती॥
दोहा--सुरभि एल तांबूल लै, नृप कीन्ह्यों व्यवहार ।
यथा राम तिमि सब सखन, मानि कियो सत्कार ॥

छन्द गीतिका ।

तिहिकाल श्रीरघुलाल वचन रसाल कह कर जोरिकै ।
नयनानि नवाय सुछाय जल मानहुँ सबन चित चोरिकै ॥
तुम अवधपति सम मम पिता हम अहैं बालक रावरे ।
जो भयो कछु अपराध तौ प्रभु क्षमिय गुनि निज डावरे॥
प्रभु छोह मोह सदैव राखियो आपने शिशु जानिकै ।
हम अहैं लक्ष्मीनिधि सारिस अस सुराति राखियो मानिकै।
अब चलन चाहत अवधको अवधेश संयुत साहनी ॥
मोहिं बिदा माँगन हित पठायो बात है दिलदाहनी ।
आवन चहत आपहु इतै माँगन बिदा अब आपसों ॥
हमरो सकल सिधि काज ह्वैहै आप कृपाप्रताप सों ।
जो नाथ देहु निदेश तौ जननी चरन वंदन करौं ॥
अब जाय अंतहपुर सपदि निमिकुलनिरखि आनँदभरौं।
सुनि प्राणप्यारेके वचन बिलख्यो विदेह महीपहै ॥
गद्गद् गरो कछु कहि न आवत वचन परम प्रतीप है ।
अशुवानि ढारत जोरि कर बोल्यो वचन मिथिलेशहै ॥
तुम जाहु अस किमि कढै मुख दृग ओट होत कलेशहै॥
यद्यपि अवधमिथिला सकल निमिकुलसुरघुकुलरावरो ।
तुम आइहो मिथिला अवध हम जाब नित नित साँवरो।
यद्यपि सकल थल रावरेको रूप मोहिं लखात है ॥

तद्यपि लला तुम जाहु अस नहिं वदन सों कहिजातहै।
जस होइ राउर मन प्रसन्न निदेश जस अवधेशको ॥
सो करहु सुरति न छाँडियो निजजानि यह मिथिलेशको।
अब आशु चलि रनिवास महँ कीजै नयनशीतल लला॥
तुम अहौ सबके प्राणधन जानत न कोउ तिहरा कला।
सुनिकै विदेह निदेश सहित सनेह तिन शिरनाइकै॥
संयुत सकल बंधुन चले मिथिलेश कुँवर लिवाइकै।
प्रभु जाय अंतहपुर सबंधुन चरण वंदे सासके॥
मिथिलेश महिषी चूमि मुख बैठाय सहित हुलासके।
रनिवासमें फैली खबरि आये करावन वर बिदा॥
सब नारि धाईं दरश हित जिहि देखि मनसिजशरमिदा॥
कुशकेतुकी महिषी तहां चलि रत्न निउछावरि करी।
पुनि सिद्धि आई सखिन संयुत रति लजावति रतिभरी॥
प्रभु उठि सबंधु प्रणाम कीन्ह्यो दर्भकतु प्रिया पदे।
मिथिलेश महिषी निकट बैठायो दियो आनँद हदे॥
बैठाय सन्मुख सिद्धिको औरहु सुनिमिकुल अंगना।
बोले वचन श्रुति सुधा ढारत होइ रस जिहि भंगना ॥
अब अवध कहँ अवधेश गमनत कहौ मोहिं बुलाइकै।
मिथिलेश अरु रनिवास पहँ तुम बिदा होवहु जाइकै॥
ताते बिदा अब देहु जननी सहित आशिर्वाद है॥
तुम्हरी कृपा दश दिशहु मंगल हमहिं अति अहलाद है।
जनि सुरति मोरि विसारिबी जिय जानि बालक आपने॥
फिरि आइबी हम दरश हित आनन्द अद्भुत थापने।
जननी विलग मानसि जननि मन हम सर्वदा तुव निकटहैं।
जब सुरति करबी आइहैं नहिं कतहुँ संकट विकट है।
इत आय सतगुण अवध ते सुख लह्यो तुव सत्कारसों॥

जननी न आवत सुरति जननीकी सनेह अपारसो ॥
हैं जनक साँचे जनक हमरे जननि सीतै जननि है ।
नाहिं कबहुँ मोर विछोह ह्वैहै जानु साँची भनानि है ॥
दोहा-सुनत सुनैना रामके, वयन नयन जल ढारि ।
बोली आनँद अयनसों, कोटि मयन छबि वारि ॥
अब न जाहु प्यारे कतहुँ, इतहीं करहु निवास ।
दरश ओटकी चोट लगि, करिहैं प्राण प्रवास ॥
दरश देहु नितहीं हमैं, करहु कलेऊ आय ।
चारिहु बंधु विशेषि ते, अंगन खेलहु धाय ॥
इत मृगया खेलहु विपिन, राजकुमार बुलाय ।
तुम हो जीवन प्राण मम, किमि वियोग सहि जाय ॥
धन्य भाग्य मेरी भई, तुम सम पायो पूत ।
सकल सुकृत फल दरश तुव, होत अनन्द अकूत ॥
वसि विदेहपुर कछुक दिन, कीजै अवध पयान ।
अवधनगर मिथिला नगर, लालन तुम्हें समान ॥
कौसल्या केकय सुता, और सुमित्रा मात ।
सोपत नहिं मोसे अधिक, करिहैं साँची बात ॥

कवित्त ।

जतनसो राखे धारि रतन अनेक जाति, रोजरोज भूषण अदूषण
गढ़ैहौं मैं । कारीगर निपुण बुलाय देश देशनते, वसन अनेकरंग
अंग पाहिरैहौं मैं ॥ रघुराज कौनहूं विसंच नहिं होनपैहै, खासे
खासे खुशी खेल खूब खिलवैहौं मैं ॥ केवा जनि कीजे मोरि सेवा
सब भाँति लीजे, मीठ मीठ मेवाले कलेवा करवैहौं मैं ॥
दोहा-लाल तुम्हैं देखे बिना, किमि रैहैं तनु प्रान ।
बार बार विनती करौं, अब जानि करहु पयान ॥

चौपाई ।

प्रभु जननी सनेहवश जानी । भरि आयो नयननिमहँ पानी ॥

धरि धीरज पुनि दोउकर जोरी । कह्यो बचन विनती असि मोरी ।
मातु रजाय शीशमहँ मोरे । नहिं बिसंच मुहिं सन्निधि तोरे ॥
तोर सनेह विलोकि अघाता । नहिं उत्तर आवत कछु माता ॥
जो कछु उचित करौ अब सोई । करिहौं मैं जो आयसु होई ॥
कबहुँ न तोहिं वियोग हमारा । तैं जननी हम तोर कुमारा ॥
भोजन देहु भूख अति लागी । अब जनि और कहौ बडभागी ॥
सुनत लालके वचन सुनैना । उठी आशु उर आनँद ऐना ॥
मन रंजन व्यंजन लै आई । राम सहित बंधुन बैठाई ॥
लगी करावन भोजन हाकी । लै पकवान नाम छबि छाकी ॥
इमि कराय भोजन महतारी । सुरभित जल कर चरण पखारी ॥
बैठायो पुनि आसन माहीं । जुरीं सकल रनिवास तहाँहीं ॥

दोहा–लै अपने कर कमल सों, बीरी विमल बनाय ।
चारौ भाइनको हुलसि, दीन्हीं सिद्धि खवाय ॥

चौपाई ।

उतै अवधपुर करन पयाने । भूप चक्रवर्ती अतुराने ॥
सहित वसिष्ठ सुवृन्द समाजा । गमन्यो बिदा होन हित राजा ॥
अवधनाथकी जानि अवाई । लियो द्वारते निमिकुल राई ॥
ल्याय सभा मंदिर बैठायो । करि सत्कार बहुरि अस गायो ॥
तन धन धाम सकल परिवारा । मोर अवधपति सकल तुम्हारा ॥
जो कछु भयो होइ अपराधा । क्षमहु क्षमाके उदधि अगाधा ॥
जो शासन करु कौशल राऊ । करौं शीश धरि बिन छलछाऊ ॥
तब वसिष्ठ बोले मृदु वानी । सुनहु जनक भूपति विज्ञानी ॥
राउ सकोच सनेह तिहारे । बिदा न माँगि सकत दुख भारे ॥
करन चहत अब अवध पयाना । बिते बहुत दिन जात न जाना ॥
कुँवरि बिदा करि सुदिवस आजू । देहु रजाय सजाय सुसाजू ॥

अस को करी प्रीतिकी रीती। जस तुम नेह निबाही नीती॥

दोहा–सुनि वसिष्ठ मुनिके वचन,जानि अवधपुर जात।
नृप विदेहके नेह वश, दुख नहिं देह समात॥

चौपाई।

सजल नयन गर गद्गद भयऊ। नृपति हुलास बीति सब गयऊ॥
वदन वचन कछु बोलि न आयो। मानहुँ सरवस जनक गँवायो॥
पुनि धरि धीरज भूप विज्ञानी। बोल्यो वचन जोरियुग पानी॥
शीलसिंधु प्रभु कौशलराई। किमितिनकी बिछुरनिसहिजाई॥
दीनजानि मुहिं दीन बडाई। किमि निकसै मुख तासु बिदाई॥
तुम त्रिकाल ज्ञाता मुनिराई। मोरे शिरपर आप रजाई॥
बहुरि विदेह सनेह बडाई। दशरथसों असि विनय सुनाई॥
तुम समरथ कौशलपुर राऊ। शीलसिंधु जग प्रगट प्रभाऊ॥
जानेहु मिथिलापुरी हमारी। मुहिं भल पग पाँवरी तिहारी॥
जासु राम अस पुत्र प्रधाना। सकै कौन करि बिरुद बखाना॥
अनुग जानि अब कृपा करीजै। करौं सकल शासन जो दीजै॥
सौंपहुँ नाथ कुमारी चारी। पालब लघु सेवकी विचारी॥

दोहा–धोखे अनधोखे कछुक, जौन चूक परिजाय।
क्षमा करब निज बालगुनि, मोर मान सुधि ल्याय॥

चौपाई।

परिचारिका दारिका चारी। सौंपौं तुमहिं अबै अतिबारी॥
नहिं जानहिं कछु लोक सुभाऊ। सिखयहु रीति न किहेहु दुराऊ॥
इनपरकोउ कीन्ह्यों नहिं कोपा। रहीं काज तजि खेलन चोपा॥
कटुक वचन इन परे न काना। सकल कुटुंब परमप्रिय माना॥
रहीं मातु पितु प्राण पियारी। बंधु कुटुम्बन दून दुलारी॥
करौं विनय तुवपदशिर धारिकै। राखो मान मोरि सुधि करिकै॥

भरी सनेह विदेह सुवानी । सुनि कह राउ नयन भरि पानी ॥
पुत्रवधू पुनि आप कुमारी । इनसे अधिक न पैं निहारी ॥
करियविदेह न कछुक खभारा । जिमिमिथिलापति अवधअगारा ॥
सब सोपाति करिहैं सब सासू । हौं पैहौं नित निरखि हुलासू ॥
पुत्रवधू पुत्रनते प्यारी । तापर पुनि मिथिलेश दुलारी ॥
धन्य भाग्य हमरे घर जातीं । अधिक न इनते कोउ दरशातीं ॥

दोहा—अपनो जानि सनेह करि, राखेहु सुरति हमारि ।
कौन अधम जो रावरी, देहै सुरति विसारि ॥

चौपाई ।

शतानन्द तिहि अवसर आये । तिहिं वसिष्ठ कहि वचन बुझाये ॥
आयो बिदा मुहूरत जबहीं । परिछन होइ जनावहु सबहीं ॥
वर दुलहिन पालकी चढाई । द्वारदेशमहँ ठाढ कराई ॥
परिछन करै जनक महरानी । दे दधिबिंदु उतारहिं पानी ॥
वर ह्वै बिदा बाहिरे आई । करहिं गवन आगे सब भाई ॥
पाछे चलहिं पालकी चारी । अस अनुमति मुनिअहै हमारी ॥
सुनत वसिष्ठ वचन सहुलासू । गौतम सुवन जाय रनिवासू ॥
बोलि सुनैनहि दियो बुझाई । रानि चारि पालकी मँगाई ॥
दूलह दुलहिनि सपदि चढाई । मंगल गान मनोहर गाई ॥
कनक थार आरती उतारी । पढि शुभ मन्त्र उतारयो वारी ॥
कीन्ह्यों सब विधि परिछनचारा । लियो बहोरि उतारि कुमारा ॥
कनक पीठमहँ वर बैठाई । विविध वसन भूषण पहिराई ॥

दोहा—माणि माणिक मुकता मुकुट, वर हीरनके हार ।
नख शिखके भूषण सकल, दियो अमोल अपार ॥
अतिअनुपमपट विविधविधि, ग्रंथित रत्न अनेक ।
दीन्ह्यों चारिहु कुँवरको, सम गुनि विगत विवेक ॥

चौपाई ।

बोले राम जोरि युग पानी । जननितअधिकजननिसुखदानी ॥
देहु मातु अब मोहिं रजाई । अवध अंब अवलोकहुँ जाई ॥
क्षोह मोह राख्यो सब भाँती । तैं न बिसरिहै मुहिं दिन राती ॥
कौसल्या कैकयी सुमित्रा । यदपि मातु मम प्रीति पवित्रा ॥
संबते अधिक मातु तैं मोरे । जस लक्ष्मीनिधि हौं तस तोरे ॥
जब करिहै सुमिरण मुहिं माता । तबहिं आइहौं मृषा न बाता ॥
यदपि प्रबोध्यो बहु विधि रामा । राम विछोह भई तनु छामा ॥
मुखसों नहिं कहि आवति वानी । निकरत नयन निरंतर पानी ॥
कर जोरे काँपत सब गाता । निरखत राम वदन जलजाता ॥
प्रभु जान्यो मुहिं करत पयाना । तजिहैं अवशि जननि प्रियप्राना ॥
दीन्ह्यों भक्ति ज्ञान अवदाता । पोंछि नयन बोली तब माता ॥
तुम सर्वज्ञ सकलगुणआगर । प्रेम नेम जानहुँ नयनागर ॥

दोहा-रहौं न देखनकी दुखी, दर्शन दीजै आय ।
होहु ओट इन नयनके, अस कस कै कहिजायँ ॥

चौपाई ।

चरण वन्दि पुनि चारहु भाई । सासु समीप गये अतुराई ॥
उठी जनक सुतवधू सयानी । करगहि कही प्रीतिवश बानी ॥
नेह लगाय नरेश किशोरा । अब मति जाहु अवधकी ओरा ॥
दरश विना किमि रही शरीरा । बिछुरत होत दुसह तनु पीरा ॥
लाल प्रीतिकी रीति न जानौ । सहजहि प्रेम पंथ मन मानौ ॥
अब नहिं करहु लाल निठुराई । जाहु दगा दै प्रीति लगाई ॥
प्रभु मुसक्याय कही मृदुवानी । यदपि न गमनत बनत सयानी ॥
पितु शासन शिरपर सबभाँती । काह करौं अब मति अकुलाती ॥
दैहौं दरश बहुरि मैं आई । तुम जानि शोच करहु मनभाई ॥

जन्म जन्म नातो यह होई। तुम सरहज हम हैं ननदोई।
तुमहिं कबहुँ नहिंविछुरानि मोरी। ऐहौं अवशि प्रीति लखि तोरी।
यह सम्बंध सनातन केरा। तुमहु अवधपुर करहु बसेरा।

दोहा—सिद्धि सुनत प्रभुके वचन, पुनि बोली कर जोरि।
पालब सब अपराध क्षमि, ननदि चारहूँ मार॥

चौपाई।

इन कबहूं अपमान न जाना। लही दुलार भवन विधि नाना।
कबहुँ न फूल छडी कोउ मारी। कटुकगिरा नहिं जननि उचारी।
मान सकोच दुलार बडाई। लगी रावरे कर रघुराई।
पालब सकल अनुचरी जानी। इतना कहत ढरयो दृग पानी।
सिद्धि प्रीति नहिं जाय बखानी। बोले राम मनोहर बानी।
अवध जनकपुर भेद न काऊ। उभय अमान समान प्रभाऊ।
सोपति सुख सकोच सब दूना। सिद्धि कबहुँ ह्वैहै नहिं ऊना।
लयो बुलाय जबै मन भावै। औब फेरि हम बिदा करावैं।
दरश परश ह्वैहै यहि ब्याजू। ह्वैहैं सिद्धि सिद्धि तव काजू।
नाथ बुझावहिं बारहिबारा। रुकति न सिद्धि नयन जल धारा।
जस तस कै कछु धीरज दैकै। गवने नाथ बिदा तिहि ह्वैकै।
गे कुशकेतु नारि ढिग नाथा। बोले वचन नाय तिहि माथा।

दोहा—चारिहु बंधुनकी अहो, जननी युगल समान।
कौसल्यादिक मातु महँ, मोहिं न भेद दिखान॥

चौपाई।

राखेहु सुरति मातु सब काला। चारिहु बन्धु तुम्हारे बाला।
सुनि कुशकेतु दार प्रभु बानी। प्रीतिविवशअतिमतिअकुलानी।
बोली कंज करन युग जोरी। राखेहु सुरति लाल क्षमिखोरी।
यदपि सनातन ते चलि आई। है विवाह वर वधू बिदाई।

तदपि न बुद्धि फुरत कछु मोरी । भै गति भुजग छछुंदरि केरी ॥
प्रीति विवश प्रभु वंदन कीन्हें । बाहर चलन हेतु मन दीन्हें ॥
नारि सकल अन्तहपुर वासी । औरहु मिथिला नगर निवासी ॥
यथायोग्य करि सबको वंदन । लै आशिष सबसों रघुनंदन ॥
दै धीरज पुनि आउब आशू । प्रीति विवश दृग ढारत आँसू ॥
चले बाहिरे बंधु समेतू । मनहु चुराय सबन कर चेतू ॥
मणि भूषण सुंदर पट नाना । दियो सिद्धि नहिं चित्त अघाना ॥
सुंदरि मणि सुंदरि इक ल्याई । दियो राम अंगुलि पहिराई ॥
दोहा-सो सुँदरी मणिमें लिखे, अस आखर रस भीन ।
कबहुँ न सिधि सुधि छोडियो, लाल प्रवीन प्रवीन ॥

चौपाई ।

पुनि कुशकेतु भूपकी रानी । रत्न विभूषण पट बहु आनी ॥
चारिहु बंधुन दियो समाना । भेद भाव मनमें नहिं जाना ॥
नगर नारि रनिवास निवासिनि । जे आईं दर्शनकी आसिनि ॥
जिनके जौन वस्तु घर नीकी । दीन्हीं वरन जानि जिय फीकी ॥
कहहिं नारि सब वचन उचारी । काह देन गति अहै हमारी ॥
राखहु मन हमरो सँग अपने । छोडहु कबहुँ न सुंदर सपने ॥
बार बार मिथिलापुर आई । दीजै दरश चूक बिसराई ॥
तब सबको करिकै सन्माना । जानि सुनैना सिद्ध समाना ॥
बैठे सभा जहां दोउ राजा । भ्रातन सहित गये रघुराजा ॥
राम विरह तिय नयननि नीरा । बहि बहि भयो उदधि गंभीरा ॥
कहहिं परस्पर नारि दुखारी । सीय बिदा ते यह दुख भारी ॥
भयो शोकसागर रनिवासा । लागी बहुरि दरशकी आसा ॥
दोहा-आवत लखि रघुराजको, सिगरी उठी समाज ।
श्वशुर पिता पद वंदि प्रभु, बैठे शील दराज ॥

चौपाई।

तहां जनक सब सचिव बुलाये। ल्यावहु दाइज वचन सुनाये॥
सचिव आशु लै आवन लागे। जिन लखि शक्र धनदमद भा
गल हैकल शिर सुवरण श्रृङ्गा। पीठ पाटवी झूल अभंगा॥
दियो सुरभि शत सहस अनेका। कामधेनु ते लघु नहिं एका॥
वरन अनेकन विमल दुशाले। झूलत झब्बे मुकुत विशाले॥
देश देशके निर्मित पागे। माणि शिर पेच कलंगी लागे॥
ग्रंथित रत्न अनेकन वागे। कटि फेटे मणि ज्योतिन जागे॥
चरण वसन बहु वर्ण अमोले। मानहुँ मदन पाणिके तोले॥
कोटि कोटि यकयक वरकाहीं। देत पोशाक न जनक अघाहीं॥
दियो लक्ष दश मत्त मतंगा। कनक साज सज्जित बहुरंगा॥
जिनहिं देखि ऐरावत लाजा। भये गर्वगत दिशि गजराजा॥
कोटि एक पुनि दियो तुरंगा। जिन लखि उच्चश्रवा मद भंगा॥

दोहा—कनक साज साजे सकल, मारुत वेग प्रमान।
देश देशके वर्ण बहु, जल थल चलत समान॥

छन्द चौबोला।

तनक बनक नहिं न्यून कनक के स्यंदन झनक अपारे।
वृन्दन वृन्दन युगल बीस वर लक्ष मनोज सँवारे॥
दीन्ह्यों स्यंदन रघुनन्दनको आनन्दन मिथिलेशा।
नहै तुरंग अनंग सभाजित जीते जंग हमेशा॥
राजत जातरूपके भाजन रत्न अनूप जडे हैं।
निज अनुरूप भूप दीन्ह्यों बहु देखन देव अडेहैं॥
पन्ना पदिक लाल माणिकके पुष्पराज गोमेदू।
नीलक लसुन प्रवाल पिरोजन भूषण सहित विभेदू॥
इंद्रनील माणि पद्मरागके मर्कत मणि आभरणा।

नख शिखके त्रयशत युगत्रिंशत् पृथक्पृथक् जिनवरणा ॥
दीन्ह्यों चारि कुमारनको नृप औरहु मणि बहुताई ।
पंच सहस्र महीप कुमारन रघुपति सखन बुलाई ॥
नृप समान दीन्हें पट भूषण हय गय रथन मँगाई ।
पुनि यक यक गजमुक्तन माला पृथक्पृथक् पहिराई ॥
एक एक चिन्तामणि नामक दीन्ह्यों मणि सुखदाई ।
चिन्तामणि नामक मणिके पुनि यक यक हार मँगाई ॥
जनक पाणिपंकज निज चारिहु कुँवरन दिय पहिराई ।
गजमुक्तनको महाहार यक जिहि बिच बिच छबिलाई ॥
चन्द्रकांति औ सूर्यकांति मणि लगीं तेज समुदाई ।
सो कर हार धार मिथिलापति दशरथको पहिराई ॥
जोरिपाणि पुनि विनय कियो अस सुनहु भानुकुलभानू ।
हम नहिं दीन तुम्हारे लायक कहँ महि कहँ परिमानू ॥
अक्षौहिणी एक मिथिलाकी जाति कुमारिन संगा ।
लखन अभिलाखन गमनत सँग दासी दास सुभंगा ॥
तिनकर पोषण पालन लालन राउर हाथ महीपा ।
हम सेवक रावरे सदाके आप भानु हम दीपा ॥
फेरि सुदावन सचिव बोलि नृप शासन दियो सुनाई ।
रहै न बाचि बराती कोउ अस विन भूषण पट पाई ॥
सकल सुदावन आदि सचिवतहँ पटभूषण बहु ल्याई ।
जनक चौकमहँ विविध चौतरन दीन्हें शैल बनाई ॥
किंबरातिन लघु बड मनुशन जाहि जौन जस भायो ।
कोउ नहिं रह्यो तहां अस जन जो पटभूषण नहिं पायो ॥
जनक नगरके सभ्य महाजन धनी धनदकी जोरी ।
पृथक्पृथक् दाइज ते दीन्हें करि करिति चहुँ ओरी ॥

इन्द्र वरुण यम धनद आदि सुर देखि विदेह विभूती
लज्जित भये वृथा माने मन निज निज कर करतूती
अवधनिवासी सकल सराहत जनक उदार सुभाउ
ज्ञानी कहत अचर्य करो जनि यह सिय कृपा प्रभाउ
दाइज दियो विदेह जौन सो दशरथ भूप उदारा
सो सब भाटन भिक्षुक दीनन दीन्ह्यों विनाहि विचारा
अधिक रसो बढ्यो घट्यो नहिं सियमहिमा अधिकानी
जहां प्रत्यक्ष रमा तहँ किहिविधि संपाति जाय बखानी
भू नरेन्द्र नागेन्द्र सुरेन्द्रहु दानवेन्द्र जग माहीं
जनक विभूति देत दशरथ लखि मनमहँ सकल सिहाहीं
कनक रत्न पट हयगय स्यंदन भाजन वस्तु अनेक
दियो विदेह जाहि जस भायो बिसरयो बुद्धि विवेक
यहि विधि दै दाइज मिथिलापति कौशलपतिसों भाखे ।
हमरे काह देनको प्रभु जो रह्यो सुआगे राखे ।

दोहा–तिहि अवसर गौतम सुवन, बोल्यो वचन बिचारि ।
गमन मुहूरत आइगो, कन्या चलैं सिधारि ॥
गवन करैं वर चारहूं, यही मुहूरत माहिं ।
पुर बाहर परखहिं पितै, नृप अन्तहपुर जाहिं ॥
करि विधि मंडप मोचनी, समाधिनिसों राचि फाग ।
पुत्रवधू लै संगमें, गवन करैं बडभाग ॥
एवमस्तु दशरथ कह्यो, राम चारिहू भाय ।
चले तुरंगनमें चढे, पिता श्वशुर शिरनाय ॥

छन्द चौबोला ।

लक्ष्मीनिधिको पाणि पकरिकै उठे अवधपति आशु ।
विधि मंडप मोचनी करनको चले हर्षि रनिवासु ॥

परिचारिका सुनैनाकी तहँ ड्योढी ते चालि लीन्ह्यों ।
अवध चक्रवर्तीको मंडप के तर आसन दीन्ह्यों ॥
सुरभित तैल अनेक मसाले तांबूलन युत ल्याई ।
वृद्ध वृद्ध कुलनारि पाणि निज दियो लगाय खवाई ॥
फेरि कह्यो कर जोरि भूपसों मंडप बंधन छोरौ ।
नेगनमें निज भगिनि देहु नृप जनि उदार मुख मोरौ ॥
नृप उठि मंडपको बंधन तहँ निज कर छोर्यो एकू ।
कह्यो बहुरि मुसक्याय सुनहु मम वचनविचारि विवेकू ॥
हम लेने कौशलते आये नहिं दीबेके हेतू ।
जो जो देहौ सो लैकै हम जैहैं बहुरि निकेतू ॥
दीन्ह्यों पुत्रवधू अति सुन्दरि सो पुत्रनको भागा ।
हम न अवधपुर जाब छूछ कर कछु हाथे नहिं लागा ॥
जो मिथिलेश भगिनि होवै कहुँ तौ नेगनतर दीजै ।
ना तो चलै सुनैना रानी यही निबाह करीजै ॥
सुनि कुल वधू वृद्ध नृप वाणी कही सुनैनै जाई ।
अवसर जानि चार करिवे हित सो बाहर कढिआई ॥
कनक थार लै पाणि रंग भरि धरि काजर टिकुलीको ॥
करि प्रणाम समधीको सुन्दरि दियो भालमहँ टीको ।
अंगनि अंग सुरंग रंग लै डार्यो सहित उमंगा ।
नयनानि में काजर पुनि दीन्ह्यों करि कछु कूटप्रसंगा ॥
उठि कौशलपति तब समधिनिको करिप्रणामसुखछायो ।
चिंतामणि माणिहार पाणि लै समधिनिको पहिरायो ॥
पद्मराग मणि माल सुनैना समधीके गल दीन्ही ।
जोरि पाणि पंकज भूपतिसों सनै विनय अस कीन्ही ॥
ये चारिहु दारिका हमारी परिचारिका तिहारी ।

लालन पालन अब इनको सब कीन्ह्यों बाल विचारी॥
तुम्हरे कर सौंपहुँ नरनायक ई चारिहू कुमारी।
ये अदान जानती नहीं कछु पालेहु भूल बिसारी॥
अपनी अरु सिगरी सासुनकी सेवा सब करवायो।
केहु सों कबहुँ विरोध होइ नहिं निजकुल रीतिसिखायो॥
सुनत सुनैना वैन अवधपति जोरि पाणि कह वानी।
प्राणहुँ ते प्रिय पुत्रवधू मम स्वप्ने दुख नहिं रानी॥
जस मिथिलापुर तस कौशलपुर भेद कछू न विचारो।
को नहिं करत पतोह छोह जग यह संदेह बिसारो॥
शासन देहु जाहुँ कौशलपुर पुनि ऐहौं बहु बारा।
मिथिलापतिको अहै अवधपुर मिथिला नगर हमारा॥
अस कहि करि प्रणाम समाधिनिको भूपति बाहर आयो।
चलन हेत मिथिलापतिसों पुनि जोरि पाणि अस गायो॥
शासन देहु विलम्ब होति बडि तुम अवलम्ब हमारे।
मोद कदम्ब मिलनि राउरि मुहिं बिसरी नाहिं बिसारे॥
कह्यो विदेह सनेह विवश ह्वै पहुँचैहौं कछु दूरी।
यह कुल रीति नाथ बरजो जनि तुव बिछुरनि दुखमूरी॥
नृप प्रणाम करि चल्यो चढ्यो रथ बाजे विविध नगारे।
मिथिलापतिसों कह वसिष्ठ सब सुदिवससुभगविचारे॥
यही मुहूरत महँ कन्या सब चलैं भवनते राजा।
द्वातय मुहुरत नहिं शुभदायक करहु आशुही काजा॥

दोहा–सुनि वसिष्ठके वयन वर, कुशध्वज सहित विदेह।
लक्ष्मीनिधिको संग लै, गे अन्तहपुर गेह॥

चौपाई।

बोले वचन बुलाय सुनैना। अब विलम्ब कर कारज है ना

वीतत बिदा मुहूरत अबहीं। उचित सनेह करब नहिं सबहीं॥
चढैं पालकी सकल कुमारी। साजहु साज विलम्ब बिसारी॥
इतना सुनत सखी सब धाईं। पट भूषण सियको पहिराईं॥
तीनिहु भगिनिसहितसिय ल्याईं। बार बार दृग वारि बहाईं॥
सीय पिता पद लखि लपटानी। सोदुख अब किमि जाय बखानी॥
वार बार पितुमिलति जानका। छूटि गई मर्याद ज्ञानकी॥
हि कहावत परमविज्ञानी। तौन ज्ञान गति सकल भुलानी॥
वढ्यो विलोचन वारि प्रवाहा। लहत न नृप दुखसागर थाहा॥
कहि न सकत मुखते कछु बानी। तिहि अवसर धीरता परानी॥
भाषत सीय बहोरि बहोरी। छाँडेहु पिता सुरति नहिं मोरी॥
मच्यो कुलाहल सब रनिवासू। तिहिक्षणभयो सकल सुखहासू॥

दोहा—लीन लाय उर जनक सिय, तनक रह्यो न सम्हार।
डूबी धीर जहाज जनु, प्रेमहि पारावार॥

चौपाई।

जस तसकै धरि धीरज राजा। बोल्यो बिलखत मन्द अवाजा॥
निमिकुलकी सिगरी मर्यादा। रक्षण किहहु विहाय विषादा॥
अमल श्वशुरकुलसुता सिधारी। जस इत तस उत पितुमहतारी॥
कीन्ह्यों सासु श्वशुर सेवकाई। पातिव्रत धर्म कबहुँ नहिं जाई॥
राख्यो सबसों शील सनेहू। क्रोध लोभ कीन्ह्यों नहिं गेहू॥
ल्याउब हम इत बारहिंबारा। किहहु न नेसुक मनहिं खभारा॥
कीरि हैं मोसे अधिक दुलारा। ज्ञानिशिरोमणि श्वशुर तिहारा॥
पति रुख राखि किह्यो सबकाजा। सदा प्रसन्न रहैं महराजा॥
इतना कहत गरो भरि आयो। जनक निकरि तब बाहर आयो॥
मिली सीय कुशकेतुहि जाई। तनु ते धीरज गयो पराई॥
लीन्ह्यों लाय सीय उरमाहीं। रह्यो धीरता लेशहु नाहीं॥

हाय सुता मम प्राणपियारी । लहब बहुरि कब मोद निहारी॥
दोहा-जस तस कै धरि धीर कछु, चल्यो विकल कुशकेत।
लक्ष्मीनिधिके चरणमहँ, गिरी सीय विन चेत॥

चौपाई ।

कहि भैया सिय रोवन लागी । को अस जिहि न धीरता भागी॥
सखी सीय कहँ लई उठाई । माच्यो रोदन शोर महाई॥
कढति न मुख लक्ष्मीनिधिबाता । सीय सनेह शिथिल सब गाता॥
जस तस कै धरि धीर सुनैना । अवसर उाचत कहे अस बैना॥
कन्या कहुके घर नहिं होई । सुता सनेह करै जनि कोई॥
सुता होय तो होय न नेहू । नेह होय विधि राखै गेहू॥
यहि विधि करतअनेक प्रलापा । बाल वृद्ध सुनि करहिं विलापा॥
नहिं सिय तजति भ्रातके चरणा । सो दुख जाय कौन विधिवरणा॥
कर गहि कोउ तहँ सखी सयानी । लै गवनी बाहर दुखजानी॥
मातु अंकमहँ सिय लपटानी । मनहु करुणरस सरि उँमगानी॥
लियो सुनैना गोद उठाई । धरि धीरज बहु बात बुझाई॥
दोहा-रोवहिं सब नारी विकल, भरा साय अनुराग।
मानहुँ सिगरे भवनमें, छायो राग विहाग॥

चौपाई ।

तहँ कुशकेतु भूपकी रानी । कहत बुझाय परमप्रिय वानी॥
जनि मानहु दुख मनहिं कुमारी । लेहु सनातन रीति विचारी॥
कन्या अवाशि सासुरे जातीं । पुनि माइके अवाशि सबआतीं॥
हिमगिरि मैना गौरि कुमारी । शम्भु व्याह कैलास सिधारी॥
देवहुती मनु भूप दुलारी । कर्दम भवन वसी तपधारी॥
नृप शर्य्याती सुता सुकन्या । वसीच्यवन मुनि घर भै धन्या॥
देवयानि पुनि शुक्र कुमारी । भूप ययाति भवन पगु धारी॥

शांता दशरथ सुता सुहाई । शृङ्गीऋषि राख्यो घर ल्याई ॥
देव दैत्य सब नर मुनि नाना । दिये सुता करि ब्याह विधाना॥
जैहैं संगै महँ अनवैया । लैहैं आशु आनि तब भैया ॥
याहि विधि कहत प्रबोधहि वानी । बहत जात नयननसों पानी ॥
सीय दुसह दुख देखि बिदाई । भये विकल रुकिगे दिनराई ॥
दोहा-गृह तातन संयुत रुक्यो, महाचक्र शिशुमार ।
देखत विबुध विमान चढि, बहत नयन जलधार ॥

चौपाई ।

होत बिदा सिय धीरज भागा । प्रगटचो प्रजा परमअनुरागा ॥
पुरवासिनी नारि सब आई । सियहि दिये पट भूषण ल्याई॥
औरहु निमिकुलकी सब नारी । दीन्हें पट भूषण मनहारी ॥
अस कोउ तहँ नहिं होत विचारी । सियहि देहिं घर वस्तु न सारी ॥
आयमिलैं सियकहँ पुरनारी । रोदन करत नेहवश भारी ॥
सिय महिमा तिहि क्षण प्रगटाई । मिली सकल पुरनारिन जाई ॥
यह चरित्र जान्यो कोउ नाहीं । जानी सबै मिली हम काहीं ॥
चारिहु भगिनि मिलति यहिभाँती। दुखितचढनिशिबिकाकहँजाती॥
नारि वृन्द सब विकल सिधारे । रहैं न कहुके अंग सम्हारे ॥
मिलति परस्पर याहिविधि सीता । द्वार देश लौं गई पुनीता ॥
धरि धीरज तहँ परम सयानी । आई आशु सुनैना रानी ॥
शिबिका आनि रत्नमयचारी । दिय चढाय चारिहू कुमारी ॥
दोहा-दधि टीको दै भालमें, शकुन सकल धरवाय ।
करि परछनकी रीति सब, दिय पालकी चलाय ॥

चौपाई ।

चलत पालकी नगर मँझारी । कीन्हीं प्रजा कुलाहल भारी ॥
मधु विहँग मिथिलपुर केरे । रोदन करत जानकी हेरे ॥

चढे विमान देवयुत दारा। सिय विलोकि बह आँसुन धारा।
तिहि क्षणको अस त्रिभुवन माहीं। भयो जाहि सियलखि दुखनाहीं।
पाले सीय विहंग कुरंगा। रोवत चले पालकी सङ्गा।
शतानन्द तहँ आशुहि आये। लखन स्यंदन शकट मँगाये।
भरि भरि शकटन साजु अपारा। दियो चलाय सङ्ग यक बारा।
अक्षौहिणी साहिनी साजी। चली संगमहँ हय गय राजी।
चले संग नाना नर याना। चढीं सखी साजि विविध विधाना।
चले सकल पुरजन पहुँचावन। बाल वृद्ध करि मारग धावन।
बार बार सब ईश मनावैं। जल्द जनक जानकी बुलावैं।
यहि विधि सियबरातमहँ आई। बजे मुरज दुन्दुभि सहनाई।

दोहा—दशरथके तहँ मिलन हित, ससुत सबन्धु विदेह।
मुनिन सहित आवत भये, भरे अछेह सनेह॥

चौपाई।

आवत जानि विदेह महीपा। रुके अवधपति नगर समीपा।
तहँ विलोकि कौशलपतिकाहीं। वाहन तजे विदेह तहाँहीं।
अवधनाथ तहँ सहित कुमारा। मिले कछुक चलि प्रेम अपारा।
राम सबंधु आय शिरनाये। जनक ललकि उरमाहँ लगाये।
कह्यो जनकसों प्रभु करजोरी। राखहु बाल मानि सुधि मोरी।
प्रेम विवश नहिं वदत विदेहू। मूर्तिमान जनु राम सनेहू।
जस तसकै धरि धीरज राऊ। बोल्यो बैन न प्रेम अघाऊ।
यदपि मोहिं तुम दीन बडाई। पै मुहिं रुचत चरण सेवकाई।
आपन जानि न देव बिसारी। करब चूक सब माफ हमारी।
प्रभु कह भूप हमार तुम्हारो। होई नहिं वियोग युग चारो।
जानहु सकल भांति मम रीती। काहे करहु वियोग विभीती।
जनक कह्यो हम सर्वस पायो। लोक शिरोमणि मोहिं बनायो।

दोहा–रघुनन्दन वन्दन कियो, जनक लियो उर लाय।
प्रीति रीति तिहि कालकी, वरणि कौनिविधि जाय॥

चौपाई।

पुनि विदेह कौशलपति काहीं। बारहिंबार मिले मुद माहीं॥
समधी समधी नेह समाने। भरे कंठ नहिं वचन बखाने॥
जस तस कै विदेह धरि धीरा। बोल्यो प्रेम गिरा गम्भीरा॥
यह मिथिलापुरकी ठकुराई। आपनि जानब गुनि सेवकाई॥
नहिं कछु मोर रावरो सिगरो। करब माफ जो हमसे बिगरो॥
दशरथ कह्यो सनेह तुम्हारा। यह हमरे शिरमहँ बडभारा॥
कौशलमिथिला उभय तुम्हारा। सेवक सिगरे मोर कुमारा॥
तहां जनक मिलि बारहिं बारा। चले भवन दृग बह जलधारा॥
मिथिलापुर पुरजन सुखरासी। मिले सकल कौशलपुर वासी॥
नहिं बहुरत कोउ भवन बहोरे। सिगरे बँधे प्रेमके डोरे॥
जस तसक सब किये पयाना। करत अवधपति कीरति गाना॥
उत कौशलपुर चली बराता। बजे दुन्दुभी शोर अघाता॥
दोहा–राम बंधु युत अवधपति, सकल बराती लोग।
जनक सुयश वर्णत चले, है गो दुसह वियोग॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस.. आई कृते श्रीरामस्वयवरग्रन्थेजानकीबिदावर्णनं नाम एकविंशतितमः प्रबन्ध॥ २१॥

दो०–जनक शील सत्कार गुनि, सम्माति सहज सुभाउ।
वर्णत पुनि पुनि अवधजन, हिय नहिं होत अघाउ॥

छन्द कामरूप।

बाजे विविध विधि दुन्दुभी मुरचंग मुरज मृदङ्ग।
नौबत बजत गजपर वृजत तूरज उपङ्ग अभङ्ग॥
फहरत पताके बहु किताके आतपत्र अपार।

घर्घर करत रथ चक्र चहुँकित झाँझकी झनकार ॥
आगे अनेकन ऊंट जूट सुजांगरेन अलाप।
पुनि चले सादी अमितलाखन खनत महि परिटाप॥
पैदर अनंतन वृन्द सायुध वसन अङ्ग सुरंग।
पुनि चले परिचर वेत्र झरझर हाथ एकहि संग॥
मणि जडित सोटे विविध वल्लभ मुकुत झालरदार।
औरहु अनेकन खास सेवक हिये हीरन हार॥
तिन मध्यमें सुन्दर युगल स्यंदन विराज अनूप।
यकमें चढे गुरु ब्रह्मसुत यकमाहँ कोशल भूप॥
नरनाह पाछे बनक आछे सजत गजन सवार।
रघुवीर भरतहु लषण रिपुहन सहित सब सरदार॥
मंडित अतिहि मातंग मंडल चले रघुकुल वीर।
पुनि चलीं चारिहु पालकी मिथिला नगरकी भीर॥
पुनि सभ्य सुहृदमहाजनो बहुवणिक बलित बजार।
रथ शकट बँडवा बैल लादे साजु अमित हजार॥
यहि भाँति मिथिला नगरते कौशल नगरकी ओर।
गवनी बरात बतात सुख मिथिलेश यश चहुँओर॥
तहँ धूरि पूरी गगन उडि छपि गयो भास्कर भास।
टूटत सुहौदनके दचक तरु वृन्द मग अनयास॥
सरि सरन प्रथमहि जात जेजन लहत जल भरिपूर।
जे मनुज गवनत सैन्य पछि पावते भरि धूर॥
सुर वृन्द विविध विमान चढि बरसत गगनते फूल।
जय यश करत कोउ आजु नहिं यह भुवन दशरथतूल॥
गंधर्व गावत मोद छावत चढे विविध विमान।
सुर सुन्दरी नाचहिं नवल लै माधुरी मुख तान॥

यहि भाँति दशरथ चक्रवर्ती कियो अवध पयान ।
याचक अयाचक करत थल थल देत बहुविधि दान ॥
करिकै पतोहुन क्षोह क्षण क्षण लेत सुधि क्षितिनाह ।
नहिं तृषित होहिं न क्षुधितहोहिंनश्रमित कोउ मगमाह॥
मिथिलेशके बहु सचिव तहँ सब सैन्य आगे जात ।
जे बासके थल रचे प्रथमहिं तिन बतावत जात ॥
जहँ होय नृपति प्रसन्नता तहँ करैं सैन्य निवास ।
भरि पान भोजन वस्तु अगणित बने विविध अवास ॥
यहि भाँति मिथिला नगरते जब चली अवध बरात ।
मंत्री सुमंतहि कह्यो भूपति उर न मोद समात ॥
अब चारि चार तुरंत दीजे अवधपुर पठवाय ।
वर अवधपुर सब भाँतिते उत देहिं सुभग सजाय ॥
तोरन पताके द्वार द्वारन देहु तुङ्ग बँधाय ।
सब राजमारग गलिन गलिन सुगन्ध सलिल सिंचाय ॥
कोशल नगरके प्रजन घर घर देहु खबरि जनाय ।
आवत बरात विदेहपुर ते वर वधून लिवाय ॥
तिहि भाँति पुनि रनिवास महँ जाहिर करावहु आशु ।
परछन तयारी करहिं भारी सहित विविध हुलासु ॥
तुम पूछि लेहु वसिष्ठसे परिछन सुदिन जिहि द्यासै ।
सोइ पत्र माँहँ लिखाय भेजौ सहित आनँद हौस ॥
सुनि स्वामि शासन सचिव कीन्ह्यों सपदि सकलविधान।
चढिकै तुरंग तुरंत धाये चारि चार प्रधान ॥
कौशल नगर घर घर सुचरवर जाय तिमि रनिवास ।
दीन्हें जनाय बरात आवत पंथ चारि निवास ॥
दोहा–यहि विधि मिथिला नगरते, गवनी जबै बरात ।
इक योजनमें भयो तब, मारगमें उत्पात ॥

छन्द कामरूप।

लखि पर्यो पश्चिम दिशि महा तहँ धूरि धुंधकार।
मूँद्यो दिवाकर भास चहुँकित ह्वै गयो अँधियार॥
लागी चमंकन तडित चहुँकित शोर भो अति घोर।
अतिशय भयानकं श्याम घन मंडल उठ्यो चहुँओर॥
अतिशय प्रचंड अखंड तहँ करि शोर झोरि झकोर।
लाग्यो बहन तहँ पवन झंझा पुहुमि ठोरहि ठोर।
सबके गये दृग मूँदि व्याकुल सैन्य भइ तिहि काल॥
यक संग सकल विहंग विस्वर उठे बोलि विहाल॥
करि सैन्य दक्षिण ओर धावन लगे बहु मृग माल।
बहु काक गृद्ध उलूक बोलत अशुभ अति तिहिकाल॥
सबके हृदय कंपन लगे पशु बहत दृग जलधार।
अति भीति भय डोलन लगी तहँ धरणि बारहिंबार।
यह देखि अति उत्पात कोशलनाथ भय उर आनि।
बोल्यो वसिष्ठहि नाय शिर कर जोरि विह्वल बानि॥
उत्पात अति दरशात नाथ जनात सब कर घात।
खग व्रात बोलत अशुभ पय मृग वृन्द दक्षिण जात॥
सन्मुख चितै नहिं जात आगे चरण नाहिं उठात।
अब काह होत दिखात सकल बनाय बहुरि नशात॥
मन मोर कम्पत बार बार न बुद्धि पावत पार।
अस जानि परत मुनीश सब कर होत अब संहार॥
सुनि अवधपतिके वयन ब्रह्म कुमार कह्यो विचारि।
खग वृन्द सूचत भीति पै मृग वृन्द देत निवारि॥
ताते परत अस जानि ह्वैहै भीति मरन समान।
पाछे अनंद विशेषि ह्वैहै सत्य यह अनुमान॥

बोलत विहंग भयावने फल तासु सूचत भीति ॥
मृगमाल दक्षिन जात ताते होइ पाछे प्रीति।
इतना कहत मुनिके तहाँ पुनि बह्यो पवन प्रचंड ॥
टूटन लगे तरु वृन्द चहुँकित भयो शोर अखंड।
उडि उडिपरत पाषाण मानहु धराणि उलटी जाति ॥
बढि अंधकार अघात भादौं रजनिसी दरशाति।
वर्षति भयंकर भस्म पुनि सूझत न दशहु दिशान॥
अतिगाढ भो अंधियार खोजेहु मिलत नहिं कहुँभान॥
मातंग तरल तुरंग स्यंदन भये गति अवरुद्ध ॥
नयनानि तजत जलधार बारहिंबार ताजि गति शुद्ध।
सैनिक सकल ठाढे बिकल मुख वचन बोलत हाय ॥
अब प्रलय जगमहँ होन चाहत बचब नाहिं दिखाय।
तहँ मुनि वसिष्ठादिक महर्षि सशंक हर्ष विहाय ॥
लागे पढन स्वस्त्ययन मंगल चित्तमहँ अकुलाय।
अतिभयो भूपाति मनहिं शंकित कहत का धौं होत ॥
विधि बात सकल बनाय कस अब करत शोक उदोत।
उत्पात आति अवलोकि रघुकुल कमल चारिहु भाय॥
आये निकट नरनाथके मातंग तुंग बढाय।
दलमें मच्यो तब अहुल खहुल न रह्यो काहू चेत ॥
नहिं लगत कौनहुँ नेत जानि न परै दुखकर हेत।
गर्जत गगन घनघोर जनु चहुँओर शोर सुनात ॥
गिरती हजारन गाज जनु जन कान फूटे जात।
पूँछत परस्पर सकल जन खलभल पर्यो दल माहिं॥
नाहिं लाख परत कोउ शत्रु सन्मुख वीर सब अकुलाहिं।
दोहा–तिहि अवसर तहँ भस्मके, अंधकारके बीच।

देखिपरे भृगुपति विकट, सिगरी सैन्य नगीच ॥

छन्द भुजंगप्रयात।

जटा जूट जाके लसैं शीशमाहीं। त्रिपुंड्रौ सजे भालमें सर्वदाहीं।
अनेकानि रुद्राक्षकी लम्बमाला। बँधीत्योंजटाजूटमेंज्योति जाला।
लसै कुंडलो कर्ण रुद्राक्ष केरे। मुखै तामरे बाल भय होत हेरे।
करालै सुलालै दिपैं नयन दोऊ। सकैं ना चितै विश्वमें वीर कोऊ।
चढी बंक भ्रू सर्पिणीसी करालैं। फरक्कैं उभय नासिकाबेध हालैं।
तजै श्वास कोपाधिकै बार बारै। मनौ ज्वालके जालते विश्वजारै।
चढी सर्व अंगानिमें भस्म भूरी। मनो शृङ्ग कैलासको भासपूरी।
लिहे चण्ड कोदंड दोर्दंड भारी। कसे कंधमें तूण द्वै भीतिकारी।
बृहद्व्याघ्र चर्माम्बरै पृष्ठ माहीं। कसोकालसोंखड्ग त्योंलंकपाहीं।
महाकोपसों कम्पते ओठ दोऊ। डरैं देवता दैत्य देवेश सोऊ।
महाकालसों कंधमें है कुठारा। कियो बार बारै सुक्षात्रेय सँहारा।
महातेजसों अंग देखे परै ना। लखे सैन्यके धीर कोऊ धरै ना।
कहैं वीर केते किधौं भानुआयो। कोऊ भाषतेकोपिधौंशम्भुधायो।
कोऊ वीर बोले अहै धर्मराजै। कोऊ भाषते सत्य है दैत्यराजै।
तहाँ मार्कंडेय आदी ऋषीशा। कहे रेणुकानंद हैं विप्र ईशा।
सुने रामको नाम क्षात्रिय अपारा। चले भाजिधारेमहा भीतिभारा।
कियो क्षात्रि निर्वंश एकीस बारा। कहौ कारणै कौन जो पाँवधारा।
डरे देवताहू चढे जे विमानै। कहा होन चाहै सबै यों बखानैं।
खडे सैन्यको रोकिकै राम आगे। भगे क्षुद्र क्षत्रियमहाभीतिपागे।
मिट्यो भूरिसों धूरिको धुंधकारा। भयोभासआशागयो अन्धकारा।
पर्यो पेखि प्रत्यक्षसोपर्शुरामा। महाकालसों भीतिभयतौनजामा।
सबै देव आये लखै को तमाशा। चहैं राम कल्याण दूजी न आशा।
परी भर्भरी खर्भरी सैन्य माहीं। मची हर्बरी मीचु है शंक नाहीं।

महावीर जे शंक मानैं न नेकौ । महा भीरु ठाढे रहे नाहिं एकौ ॥

दोहा–आयो यहि विधि परशुधर, महाभयंकर रूप ।
कालानलसम तेजतनु, लहे भीति अतिभूप ॥

कवित्त ।

दुराधर्ष समर सहर्ष उतकर्ष ओज, अतिहीं अमर्ष भरो कंधमें कुठार है । विक्रम विदित त्यों त्रिविक्रमको अंश विप्र, क्षत्री कुल छेद्यो क्षिति यकइस बार है ॥ रघुराज राज राज सहित समाज देखै, शंकरको शिष्य हिमाचलके अकार है । कर्ता शत्रु भीर भग्न पोखि भागे भीरु नग्न, अग्निसो उदग्र जमदग्निको कुमार है ॥ हैहैराज बाहुनकी सामिध सरोष कारि, कीन्ह्यो रण यज्ञ स्रुव विरचि कुठार है ॥ जाकी चाप भीति निज रीति छोड्यो क्षत्री कुल, क्षितिमें क्षमाकी छपा भयो भिनुसार है ॥ रघुराज कोशलेश साहनीके आगे खडो, भृगुकुल कमल दिवाकर अकार है । कोपित अपार मानौ नयनन सों करै क्षार, वीर विकरार बोलै बैन बार बार है ॥ हौंतो तप तपत महेन्द्र शैल बैठो हुतो, आपुई ते कै लियो तैं कोपको सहार है । कानमें प्रचंड परी वज्रपातहीसी आय, गुरुके कोदंड खंडिबेकी झनकार है ॥ चौंकि उठ्यो चारों ओर चितै चालि दीन्ह्यों चट, उपज्यो नवीन गुरु द्रोही को हमार है । कीन्ह्यो जो अकाज छाँडि देइ सो समाज आज, कौन रघुराज कोशलेशको कुमार है ॥

दोहा–परशुरामके वचन सुनि, अकुलान्यो अवधेश ।
जान्यो अब सबको भयो, नाश सत्य यहि देश ॥

चौपाई ।

उतरचो रथ ते दशरथ राजा । लियो बुलाय मुनीश समाजा ।
गुरु वसिष्ठ कश्यप जाबाली । मार्कंडेय सुधर्म सुचाली ।
वामदेव कात्यायन आदी । और मुनीश धर्म मर्यादी ।
करि आगे मुनि वृन्द महीपा । भूप गयो भृगुनाथ समीपा ।
लख्यो परशुधर वदन प्रकासा । मानहुँ श्वेत वर्ण कैलासा ।
कालानल सम महा भयावन । हेरतहीं हिय भय उपजावन ।
पसरत ज्वालमाल बहु ओरा । मनु वृषराशि भानु अतिघोरा ।
चितै सकत साम्हूं नहिं कोई । कहत सबै अब काधौं होई ।
धरचो कन्ध महँ तेज अपारा । दमकत दामिनि सरिस कुठा
महा भयंकर शंकर रूपा । डरचो देखि अति जिय महँ भू
मुनिजन निरखि परशुधर काहीं । आपुसमहँ सिगरे बतराहीं ।
किधौंपितावध सुधि मन करिके।आयो पुनि अमरष उर भरिकै ।

दोहा—सहसबाहुके पुत्र जब, पिता वैर सुधि कीन ।
लियो काटि जमदाग्नि शिर, महा पाप रस भीन ॥

चौपाई ।

यही राम धरि कन्ध कुठारा । दशो हजार एकही बा
सहसबाहुसुत कियो विनाशा । पुनि क्षत्रिन पर कोप प्रकाशा
किय निक्षत्र क्षिति यकइसबारा । अब धौं काह करन पगु धाय
अबहुँ निक्षत्र करन मनचाहत । निरखत मनहुँ सैन्य सब दाह
चलौ करैं भृगुपतिकी पूजा । बचब उपाय और नहिं दूजा ।
अस कहि सब मुनि किये प्रणामा । बोले सकल राम हे रामा ।

कृपा कियो भल दर्शन दीन्हा । हम सबकाहिं धन्य अतिकीन्हा ॥
अस कहि अर्घ्यपाद्यआचमना । दीन्हे मुनिजन अमरष शमना॥
पुनि पूजन षोडश उपचारा । रामहि कियो वसिष्ठ उदारा ॥
दशरथ बहुरि चरण शिर नायो । त्राहि त्राहि अस वचन सुनायो॥
मुनिजन मधुर वचन मुखभाषे । क्षमा करावन मन अभिलाषे ॥
दशरथ बहु दीनता दिखाई । बार बार चरणन शिरनाई ॥
दोहा–जस जस सरल वचन सुनत, जस जस पूजन होत ।
तस तस भृगुपतिके उरहि, द्विगुणित कोप उदोत ॥

कवित्त ।

बोल्यो घोर घन सों घमंड भरि वैन राम, मेरो नाम धारि कौन राम कहवावतो । साँचो गुरु द्रोही मोर कोही नहिं जान्यो मोहिं, तोरिकै पिनाक अब वदन छिपावतो ॥ कहां रघुराज आज राज राज जेठो सुत, मोको आजु अर्जुनसों पूरो शत्रु भावतो । होइ भुजदंड बलधारिकै कोदंड शर, तजिकै समाज अब क्यों न काढि आवतो ॥

दोहा–रे दशरथ मम गुरु धनुष, निज सुत पाणि तुराय ।
क्षमा करावत चूक निज, मीठे वचन बताय ॥
मैं क्षत्रिय कुल विदित अरि, नाश्यो यकइस बार ।
स्वप्नेहुँ दया न उर बसी, जरौं कोपके भार ॥
रे दशरथ अति रिस लमति, सुनि तेरो सुत काज ॥
उलटि देहुँ अबहीं अवनि, जहँ लगि तेरो राज ॥
शम्भु शरासन भंग सुनि, निर्भय साजि बरात ।
व्याहन आयो जनकपुर, जानि सहज यह बात ॥
हौं निक्षत्र कीन्हीं क्षमा, पूरव यकइस बार ॥
क्षमा सुरनको दे क्षमा, छाँड्यो क्रोध अपार ॥

बहुरि दिवायो मोहि सुधि, तुव सुत तोरि पिनाक।
शम्भु शपथ करि कहत हौं, बची न भागेहु नाक॥
भयो अबहुँ नहिं भोथरी, मोर उदंड कुठार।
उपज्यो अमरष दून अब, करौं सकुल संहार॥

चौपाई ।

अस सुनि परशुरामकी बानी । जान्यो भूप मीच नजिकानी॥
सैनिक सकल कहन असलागे । भयो मरन अब बचब न भागे॥
तहां तुरंत सुमंत कुमारा । जाय रामसों वचन उचारा॥
कहा करत ठाढे सब भाई । आयो एक विप्र अनखाई॥
धरे कंधमहँ घोर कुठारा । लीन्हे चाप बाण विकरारा॥
आपन नाम परशुधर भाषै । बार बार भूपति पर माषै॥
चाहत करन सैन्य संहारा । जानि परत अब नाहिं उबारा॥
गुरु वसिष्ठ आदिक मुनिराई । बारहिंबार कहैं समुझाई॥
नहिं मानत रोके दल ठाढो । जानो परत वीर वर गाढो॥
सुनत राम नेसुक मुसकाई । उतरे सिंधुर ते अतुराई॥
लषण भरत रिपुहनहि हकारी । चले सहज धनु सायक धारी॥
पूछ्यो लषण जाय प्रभु पाहीं । परयो काह खलभल दलमाहीं॥

दोहा—सुनत लषणके वचन मृदु, प्रभु बोले मुसकाय।
जानि परत धनुभंग सुनि, भृगुपति आयो धाय॥

चौपाई ।

यह सुनि चले चटक सब भाई । आये जहँ भृगुकुल दिनराई॥
निरखे नरपति निकट विहाला । खडो परशुधर रूप कराला॥
पिता समीप ठाढ भे जाई । हर्ष विषाद न कछु उर ल्याई॥
गुरुवासिष्ठ बोल्यो तब वानी । क्षामिय नाथ यह चूक महानी॥
तुव प्रसाद रघुकुल कुशलाई । क्षमा करहु गुनि बालकताई॥
जेठ राजकुँवर यह आयो । भाइन सहित सपदि शिर नायो॥

तिहि क्षण रघुपति कियो प्रणामा । तथा बन्धु लै लै निज नामा ॥
राम रूप छबि राम निहारे । प्रथमहि मोहि अमर्ष बिसारे ॥
पुनि सुधि करि शंकर अपराधा। कियो रामपर कोप अगाधा ॥
युगल विलोचन किहे ललौंहैं । रामहिं तके तनक तिरछौंहैं ॥
कहन चहे कछु अनरथ बानी । पै मतिगति छबि निरखि भुलानी॥
अरते उठति कढति मुख नाहीं । मनहींमन भृगुपति पछिताहीं ॥

दोहा–पुनि सम्हारि भृगुनाथ तहँ, ऐसो कियो विचार ।
कौन पापको फल प्रगट, कियो दया संचार ॥

कवित्त ।

करत विचार बारबार कन्ध धै कुठार, भरो कोपभार जमदग्निको कुमारहै। शत्रुहै हमार यह कीन्ह्यो पूरो अपकार, विनाहि विचार करौं आशुही सँहारहै ॥ नैनमें निहारत अकार हियो हारत है, रघुराज रूप कोटि मार मदमार है । ज्वलत अमर्ष भार परी जनु वारिधार, कैसो सुकुमार कौशलेशको कुमारहै ॥

दोहा–मारन लायक नहिं सुवन, नरभूषण जगमाहिं ।
जो शरणागत होय मम, अभय करौं यहि काहिं ॥
अस विचार भृगुनाथ करि, ले कुठार धनु हाथ ।
बोल्यो बहुरि वसिष्ठ सों, तनय कँपावत माथ ॥

कवित्त ।

गुरु अपराध सुधि करत अगाध कोप, ब्रह्मसुतको अगाधि देत बैन भाख्योहै । ब्रह्मऋषि गाधिसुत दोऊ रहे आप इतै, शम्भुधनु तोरतमें काहे नहिं माख्यो है ॥ कबते विचार्‌यो मोहिं क्षमामान क्षोणी मध्य, भुजबल छोर मेरो क्षत्री कौन नाख्योहै । मोरि सु-

धिकैकै विश्वामित्र तो पराय गयो, आप गुरु द्रोही ल्याय
आगे राख्योहै ॥

सोरठा–सुनि भृगुपातिके वैन, मनही मन मुसक्यात मुनि।
अबै ज्ञान यहि है न, वृथा बकत बरबर वचन॥
कह्यो वचन मुसक्याइ, भयो यदपि अपराध बड।
क्षमा करहु भृगुराइ, क्षमा विप्रको चाहिये॥
गुनिहौ जब चित लाइ, बिसरिजाइ अपराध तब।
अबै कोप रस छाइ, चहहु जौन भाषत रहौ॥

कवित्त।

नीलमणि शृंगसों निहारि रणधीरै राम, कह्यो रघुवीर
तू कहावै है। तैहीं कौशलेशको सुपूत पूत जेठो अहै, तैहीं
माहिं मेरो नामको धरावै है॥ तैहीं तारयो शंभुधनु साँची कहैं
कैकै, नातो यमलोकको तुरंत तहीं जावै है। धरि दे धनुष
छोड़ु छोड़ु क्षत्री धर्म, तेरे अपराध रघुवंश मिटो जावै है॥
त्रिविक्रमसों सुन्यो नहिं मेरो कान, कीन्हों मैं निक्षात्रि क्षिति
बार है। इक्षुदण्डहीसे भुजदण्ड भूप अर्जुनके, काटि
हारयों नहिं समर मँझार है। ऐरेराम रघुराज त्यों
कुमार मारयो दशहूं हजार एक बार है। गेरि गणनाथ जूको
दलि डारयो एक, घोर बरजोर मोर कठिन कुठार है॥ गुरु
सुनि करन क्षमा न होति, तेरो रूप देखि नहिं मोसों मारि जात
ताते लै शरासन हमारो रघुराज आज, खैंचिकै चढावै
तो अघात है॥ धनुष चढायो राम तौ तौ संग्राम लैहौंपूछि,

हौं प्रवीर तोहिं विश्वमें विख्यात है। सत्य हौं बतात अब काहे को डेरात, ले रे निज भ्रातनसों खडो तेरो तात है ॥

दोहा–सुनि भृगुपतिके वैन अस, दशरथ कँप्यो डराइ ।
जोरि पाणि पीरो वदन, अति दीनता दिखाय ॥
धरि धरणीमें शीश निज, आँखिन आँसु बहाय ।
गद्गद गर बोल्यो वचन, सुनहु क्षमा उर लाय ॥

चौपाई ।

कीन्ह्यो क्षिति निक्षत्रि बहु बारा । राउर सुयश विदित संसारा ॥
विप्र वंश भूषण भृगु रामा । करी कौन तुमसों संग्रामा ॥
सुन्यो नाथ मैं कथा पुरानी । वृथा तौन मैं सकौं न मानी ॥
कारि निछत्र क्षिति यक इस बारा। कीन्ह्यों घोर कोप संहारा ॥
करी प्रतिज्ञा वासव पाहीं । अब आयुध धरिहौं कर नाहीं ॥
अस प्रण कारि कश्यपहि बुलाई। दै धरणी सिगरी मनलाई ॥
गये महेन्द्र शैल तप हेतू । बसे आजु लगि बिरचि निकेतू ॥
मम अभाग्यवश गुनि अपराधा । आये करन मोर कुलबाधा ॥
राम राम रघुकुल कर प्राना । तिहि बिन काकर लगी ठिकाना॥
भृगुकुल कमल दिवाकर आपू। शरणागत न देहु संतापू ॥
सुध दूध मुख बालक जानी । क्षमहु नाथ सुत खोरि महानी ॥
कारन हेतु मम कुल संहारा । आये कंधहि धरे कुठारा ॥

दोहा–जो दासनते होत कहुँ, छोटहु बड पराध ।
तौ समरथ करते क्षमा,जे प्रभु क्षमा अगाध ॥

चौपाई ।

देहु अभय मम पुत्रन काहीं । बनति बात औरी विधि नाहीं ॥

बिते वर्ष प्रभु साठि हजारा। लह्यों कृपा वश चारि कुमारा।
दीन जानि अब कृपा करीजै। सेवक सुतन अभय करि दीजै।
जस जस दीन वदत अवधेशा। दरशावत निज काठिन कलेशा।
तस तस अमरष बढत रामके। गुणत अमित अपराध रामके।
भूप दीनता भृगुपति क्रोधू। सह्यो न लषण विचारि विरोधू।
फरकि उठे भुजदण्ड प्रचंडा। कह्यो भरत सों वचन उदंडा।
का कहिये कछु कहो न जाई। राम पिताहि कहँ रहे डराई।
विप्र वदत बहु बढि बढि बाता। सुनि सुनि उपजत क्रोध अघाता।
किहि हित पिता दीन अति होहीं। यह द्विज होइ कबहुँ न छोहीं।
यह पूरो क्षत्रिय कुल द्रोही। शासन देहु अवशि अब मोही।
देहुँ दिखाय बनाय तमाशा। पूरहु सकल युद्धकी आशा।

दोहा–लषणहि कोपित जानिकै, मंद मंद कह राम।
विप्र वचन सहिबो सदा, यही सयानो काम।

कवित्त।

जेठ बंधुभीति मानि बानि नहिं बोलै कछु, कोपानल ज्वालें
जरत शरीर है। पीसत रदन हद कंपत अधरपुट, बारबार पा
सों सम्हारे धनु तीरहै॥ रघुराज रामानुज आतिहि अनोखो चो
रोषो भृगुरामै भई साहसकी पीर है। ताकत तनक तिरछो हैं
ललौहैं नैन, बाँकुरो लषण लाल वीर रणधीर है॥

दोहा–परशुराम ताजि राम को, चितै लषणकी ओर।
बोले बैन सरोष आति; गहे कुठार कठोर॥

कवित्त।

देखिये वसिष्ठ यह राजको कुमार खोटो, मेरी ओर देखत अ
नैन करि करि। कबहुँ सुनी न प्रभुताई मोरि काननमें, शठ

कोई वश रीसै धनु धरिधारि ॥ मोहिं उपजावै कोप लोप निज चाहै होन, वेगही बुझावो रघुराज छोह भरिभारि । ना तौ कहौं आजु मैं समाजमें पुकारि मेरे, कोपकी कृशानु ह्वैहै कीटहीसो जरि जरि ॥

दोहा-सहि न गयो तब लषणसों, लगे बैन जनु बान ।
कह्यो वचन विहँसत वदन, सहजहि निडर महान ॥

कवित्त

जैसो कोप कीजै तैसो दोष नहिं मेरे जान, हानि लाभ का भयो पुरान धनु तोरेते । छुवतही टूट्यो नाहिं जोर परचो रामैं नेकु, अबै ना नशान कछु जुरिजई जोरेते । केते तोरि डारे धनु खेलत शिकारनमें, कबहूँ न कीन ऐसो कोप और छोरेते । रघुराज राजनकी रीति नाहिं जानो विप्र, करौ कहुँ जाय तप जानो कहे थोरेते ॥

दोहा-भाष्यो भृगुपति रिसि भभाकि, रे बालक मति हीन ॥
बोलत वचन सम्हारि नहिं, तोहिं मीचु विधि दीन ॥

कवित्त ।

बालक विचारि तेरे वधको बचायदेहुँ, ऐसो विप्र हौंन जस जानै जड मोहिरे । सुने रघुराज सुत क्षत्रिन निक्षत्रकर, परमकठोर मोर परशु ले जोहि रे ॥ सोचवश करै काहे मातु पितु हूँको आज, जाय यमपुरमें बसेरो करै मोहि रे । ना तो कहे देत हौं कुठार कंठ देत बिना हेत सेतमेत काहे कालकौर होहि रे ॥

दोहा-अति गर्वित भृगुपति वचन, सुनत लषण मुसक्याय ।
कहे वचन जनु अनल महँ, घृत आहुति परिजाय ॥

कवित्त ।

जानी हम जानी विप्र तू तो वीरमानी बडो, फरसी उठायकै दिखावै बारबार है ॥ अबै रघुवंशिनके रणमें न देखे मुख, फूँकिकै उडावन तू चहत पहार है ॥ मारि मारि छोटे क्षत्री बाढ्यो गर्व

गाढो तोहिं, भयो भट भेट नहिं वीर बलवार है। जादिन नि
कीन्ह्यो राम क्षितिमडलमें, तादिन रह्यो न रामचन्द्र अवतार है

दोहा–जो तू इक्कइस बार क्षिति, कियो क्षात्रि बिन विप्र।
तौ बाइसहूँ बार अब, करै न काहे छिप्र॥

कवित्त।

जप तप योग याग यमहू नियम व्रत, ब्रह्मचर्य्य शम दम
धर्म होइ रे। छोडि निजधर्म धर्‍यो क्षत्रिनको धर्म धनु, बाण प
सीको धरि आयो कोप मोइ रे॥ हौं तो रघुराज सुत ब्राह्मण
चारि बचो, नातौ पुनि चीन्ह न परैगो मुख धोइरे। विप्रवध अ
नालगावें मोहिं बारे मुख, ड़ारें रघुवंशी नाहिं कालहूँको जोइ

दोहा–भृगुपतिसों लषणहिं जुरत, अति अनर्थ उर जानि।
सैनानि बरज्यो भूपमणि, क्षत्रिधर्म पहिचानि॥
शत्रुशाल तब लषणसों, कह्यो वचन कर जोरि।
मैं तोषौं रण विप्रको, यही अरज है मोरि॥

कवित्त।

बोल्यो भृगुनाथ कौन तू है शत्रुशाल अहौं, काको पुत्र है
अवधेशको कुमार हौं। तू है राम छोटो बंधु हौं तो रामचन्द्र
का है तेरे मनमें तो युद्धको तयार हौं॥ काहे काल आये
कालको बुलायो कौन, मेरे कर काल मैंही कालके अकार हौं
भाजै रे समाज छोडि कैसे रघुराज भाजैं, डरै नहिं मोहिं
जातिको गँवार हौं॥

दोहा–सरल वाणि बोले भरत, सुनहु विप्र शिरताज।
तुम दोऊ मानहु कहो, होइ न कछुक अकाज॥

कवित्त।

विप्रनको दान दीबो पदरज लीबो शिर, क्षत्रिनको धर्म वेद

इतनाई है । ताते जौन कहौं सेवकाई करैं रावरेकी, आपहू क्षमा केजाहु सुयश बडाई है ॥ चलत अधर्म पथ कबहूँ न रघुराज, दोऊ विधि हानिहीं हमारी परै जोई है । हारे अपकीरति है मारे हठि पाप लागी, जाहु राम युद्धको करैया नहिं कोई है ॥ हाथ जोरि माथ नहिं भाषों भृगुनाथ सुनो, द्विजसों नाथ मोरे कुल होती शूरताई है । देखिकै कुठार धनु बाण पाणि रावरेके, लषण कह्यो सो क्षमौ जानि लरिकाईं है । तिहिको अनुज शत्रुशाल कछु जाने नाहिं, क्षमा कीबो बाल चूक पूरी साधुताई है । रघुराज हमहूं हमारे पिता दास तेरे, विप्र इष्टदेव मोहिं धर्मकी दुहाई है ॥

दोहा-नाथ तुम्हारे वचनहीं, हमको वज्र हजार ।
वृथा बाँधि आये धनुष, सायक खड्ग कुठार ॥

कवित्त ।

भरत भनीको सुनि भृगुपति भाष्यो अस, बरजौ वसिष्ठ राज पुत्रनको काहे ना । भानुवंशके कलंक बोलत निशंक बैन, होत काल अंक फेरि बाँचिहै जू चाहेना ॥ गुनि रघुराज कुल तेरही सकोच कछू, देतो बरकाय कछु दयाके उमाहे ना । याते कहैं मीठे बैन ढीठे दोउ बन्धु याके, बोलत कटुक बलसिंधु मम थाहेना ॥

दोहा-कह वसिष्ठ भृगुनाथ सुनु, कीजे क्षमा अगाधु ।
बाल दोष गुण गहत नहिं, ज्ञानवान जे साधु ॥
कह्यो राम रघुकुल गुरु, कहि प्रताप बल मोर ।
वेगि बुझावहु बालकन, टारहु औरै ठोर ॥
ना तो कहत पुकारि मैं, दिह्यो न मेरो दोष ।
चाहत चलन कुठार अब, निकरिजई सब रोष ॥

कवित्त ।

बहुरि लषण बोल्यो सुयश तिहारो विप्र, तुमसे अधिक
दूसरो कहैयाहै । कहत अघाने जो न होहु पुनि भाषौ खूब,
तिहारी कहौ कौन रोंकवैया है ॥ भाटहीसो भाषौ यश
जनि दीजै हमैं, ना तो नहिं रैहै फेरि कीरति गवैया है।
आज रघुवंशी कहवाय कोऊ, तिलभरि भूमिते न भभरिभैया

दोहा–यह अचरज कबते भयो, तिहरो चाकर काल।
जहँ चाहौ तहँ भेजिकै, बीरन करौ विहाल ॥
लषण वचन सुनि परशुधर, धरचो परशु कर घोर।
कह्यो पुकारि उठाय भुज, दोष नहीं अब मोर ॥
धरत परशुधरके परशु, शत्रुशाल धनु धारि।
बढि आगे बोल्यो वचन, रिसवश सुरति बिसारि॥

सोरठा–अब विलम्ब किहि काम, करहु जो करतब होइ कछु।
परशु उठत यहि ठाम, रही न भुज भुज मूल॥

सवैया ।

दीन्ह्यो बचाइ विचारिकै विप्र, लिहे कुलहरा कर सांस न
मारिकै क्षुद्रन क्षत्रिनको अबै, विप्र भरो तुव दर्प है
गाढो परचो कबहूं नहिं संगर, बाढि अबै द्विजदेव हौ
आय जुरे रघुराजसों धोखे बचौगे नहीं शिवलोक

दोहा–इत पाछे करि रामको, ठाढे तीनहुँ बन्धु।
परशुराम ठाढे उतै, धरे परशु निज कन्धु ॥
जानि युद्ध जिय होत तहँ, भूपहु ब्रह्मकुमार।
खडे भये तब बीच में, कीन्हें वचन उचार ॥
मेरे आगे मोर सुत, हतौ न भृगुकुल भान।
मोहिं मारि पुनि कीजिये, जो कछु तुव अनुमान॥

सवैया ।

बोल्यो वसिष्ठ सुनो भृगुनायक, आप तो दीह दया उर छाइये ।
जो लरिका लरिकाई करे तो, क्षमा करिकै मनते बिसराइ ॥
श्रीरघुराज खडे शरणागत, आशु अभै करिकै अपनाइये ।
आप क्षमासे क्षमा धरिहैं नहिं, बालक बातनमें चित ल्याइये ॥

दोहा–सुनि वसिष्ठ मुनिके वचन, तनक जुडाने राम ।
पुनि लषणहि विहँसत निरखि, भये कोपके धाम ॥

सवैया ।

राम कह्यो रघुराजहि देखिकै, आगे खडो गुरुद्रोही हमारो ।
भाइनके बल दर्प भरो यह, भीतर बाहरहूं अति कारो ॥
कै पितुको बछिया सम आगे, अहै घतमें चह घातहमारो ।
तौलौं नहीं उऋणै गुरुको, जबलौं नहिं देतहौं कंठकुठारो ॥
लक्ष्मण बोल्यो ततक्षणहीं पितुको, उऋणै भये अर्जुन मारी ।
फेरिकै हाथे हमारेई माथे, लियो ऋण कासोंकहो तो उचारी ॥
लेहु अबै हम खोले खजाने, विलंब करो कत जो बलभारी ।
है करजीके नहीं गरजी रघुराज यही अरजी है हमारी ॥

दोहा–लषण वचन सुनि कटुक द्विज, कंधहि धर्‍यो कुठार ।
द्विजगण सुरगण तहँ सकल, कीन्हें हाहाकार ॥
लषण उतर आहुति सरिस, भृगुपति कोप कृशानु ।
सलिल सरिस बोल्यो वचन, बाढिकछुरघुकुल भानु ॥

सवैया ।

रावरेके अपराधी ह्वैं नहिं, बंधु कियो धनुभंग तिहारो ।
दीजे यथोचित दंड उदंडन, होत जो ठंढ है कोप अपारो ॥
है रघुराज न जानतहैं छल, और कछू नहिं कीजे विचारो ।
आप तौ पाणि कुठारलिये, प्रभु आगे धरो यह शीश हमारो ॥

मैं तुव सेवक हौं मुनिनायक, कोपकोकामकछूनहिंजाने।
क्रोध हरै मति क्रोध हरै तप, क्रोधही पापको मूल बखाने।
ये सिगरे शिशु जानै नहीं कछु, रावरी देव बराबरी माने।
बैठो इतै करसों चहौं मींजन, ठाढे रहे बहु पाउँ पिराने।
दोहा–जो बुलाय कोऊ गुणी, जुरवाऊँ धनु आज।
तौ तौ कछु अपराध नहिं, क्षमा करहु भृगुराज॥

चौपाई।

निग्रह और अनुग्रह दोऊ। सेवकपर करते सब कोउ।
नहिं मम बंधुनकर अपराधा। देहु दंड मुहिं जो कछु साधा।
भरत लषण रिपुहन ये तीना। मोर बंधु अपराध न कीना।
करहु बंधुवध मोपर स्वामी। मैं तुम्हार सेवक अनुगामी।
कहहु करहुँ मैं जिहि रिस जाई। तुम समरथ सब विधि भृगुराई।
सुनत रामके वचन सुहाये। भृगुपाति नेसुक मनहिं जुडाये।
साधु साधु द्विज मुनिजनभाषे। उत्तर देत राम जय राखे।
पुनि बोले तहँ दशरथ राऊ। राम राम यह सरल स्वभाऊ।
दया न आवति सुनि असबानी। क्षमहु नाथ जो होइ नशानी।
रघुकुल कर रघुनाथ अधारा। तुम्हरे कीन्हे होत उबारा।
सप्तद्वीप नवखण्ड अखण्डा। साँचेहु शासन मोर प्रचंडा।
सो सब द्विज सेवन प्रभुताई। नहिं भुजबल वश हम कहुँ पाई।
दोहा–सुनि दशरथके वचन मृदु, दे अनाकनी राम॥
बोले रघुपतिसों वचन, सुनहु राम अभिराम॥

चौपाई।

विश्वकर्म युग धनुष बनाये। अतिउत्तम देवन दरशाये।
पूजित भये भुवन दोउ चापा। अतिदृढ रिपु दायक संतापा।
सके चढाय चाप नहिं दोऊ। हारे बल करिकै सब कोउ।
तिहि अवसर त्रिपुरासुर घोरा। भयो दैत्य अतिशय बरजोरा।

दीन्हों देवन महाकलेशा। गये देव सब जहँ महेशा ॥
हरकहँ आरत वचन सुनाये । बचैं तुम्हारे देव बचाये ॥
कह शितिकंठ कोदंड न मोरे। हनौं कौनविधि रिपु बरजोरे ॥
तब वह धनुष देव सब दीन्हें। जौन राम तुम खंडन कीन्हें ॥
दीन्हें द्वितिय विष्णुकर चापा। नाम तासु शारंगहि थापा ॥
दियो जु शिवकहँ नाम पिनाका। उभय समान विदित सब नाका॥
लै पिनाक हर त्रिपुर सँहारे। हरिहु अनेकन दानव मारे ॥
जिहि विधि मिल्यो शारँगौ मोहीं। सो बुझाइहौं पाछे तोहीं ॥
दोहा-मैं बाँधे सोई धनुष, जासु नाम शारंग।
जिहि विधि गयो पिनाक उत, सो सुनु कथाप्रसंग॥

चौपाई।

हरि हर युगल देव बलवाना। विक्रम ओज प्रभाव समाना ॥
आपुसमहँ सब सुर बतराहीं। कौन बली दोउ देवनमाहीं ॥
कोऊ करै महेश बडाई। कोऊ कहै विष्णु अधिकाई ॥
लैं देव निश्चय नहिं होई। गये पितामह पहँ सब कोई ॥
कहे पितामहसों अस बानी। हरि हरमहँ किहि अधिकबखानी॥
अभिप्राय देवनकी जानी। नहिं निश्चय कछु मन अनुमानी॥
जाय शंभुसों कह करतारा। दानव त्रिपुर कहौ किहि मारा ॥
विष्णु कहैं हम शर ह्वै लागे। मरे तबहिं खल त्रिपुर अभागे ॥
शंभु कह्यो शरबिना चलाये। काके लग्यो जाय करि घाये ॥
विधि पुनि बहुरि विष्णु पहँ आयो। कहे त्रिपुरसों को जय पायो ॥
विष्णु कह्यो हम त्रिपुर विदारे। मृषा शंभु निज विजय उचारे ॥
यहि विधि विधिउपजाय विरोधू। चह्यो लडावन कियो न बोधू ॥
दोहा-विष्णु कहत त्रिपुरासुरहि, हममारे द्वै बान।
मरयो त्रिपुर हमरे बलहि, अस भाषत ईशान ॥

चौपाई।

भयो विरोध क्रोध वश दोऊ। हरि हर लरैं लखैं सब कोऊ॥
मच्यो विष्णु शंकर संग्रामा। महाभयंकर दिन वसु यामा॥
निजनिजविजयआस दोउकीन्हें। मानहुँ जगत जारि दोउ दीन्हें॥
माच्यो त्रिभुवन हाहाकारा। मनु संसार होत संहारा॥
तबहिं विष्णु कीन्ह्यो हुंकारा। शंभु धनुष जड भयो अपारा॥
भये अचल शंकर रणमाहीं। चलो चलायो चापहु नाहीं॥
देवन सहित तहाँ करतारा। ठाढ भयो दोउ देव मँझारा॥
विधि सुर संयुत प्रस्तुति कीन्हें। दोउकर कोप शांत करि दीन्हें॥
हर थंभित भे हरिहुंकारा। भयो शम्भु धनु जडहु अपारा॥
तब विधि सुर ऋषि कहेहुलासी। शिवते बली विकुंठविलासी॥
शम्भु विष्णु गे निजनिजलोका। भये देव सब परम अशोका॥
रणमहँ जडता तासु निहारी। भे उदास धनुमहँ त्रिपुरारी॥

दोहा–देवरात मिथिला नृपति, रह्यो राजऋषि सोइ।
ताहि बुलाय महेश दिय, महा धनुष जड जोइ॥

चौपाई।

देवरात सों कह्यो पुरारी। थाती धरहु नरेश हमारी॥
जब यांचव दीन्ह्यों तुम तबहीं। येकर कारज अहै न अवहीं॥
विष्णु सुन्यो शिव धनु दै डारा। भृगुकुल कमल ऋचीक हँकारा॥
सोई धनुष दियो धरि थाती। मुनि ऋचीक को गुणिरिपुघाती॥
कह्यो जबै माँगैं तब देहू। नहिं करियो कछु मुनि संदेहू॥
अहै ऋचीक पितामह मोरा। भो जमदग्नि तासु पुनि छोरा॥
जनक मोर जानहु तिहि रामा। भयो भुवनमहँ अतिबल धामा॥
दियो ऋचीक ताहि धनु सोई। त्रिभुवन विजय करन बल जोई॥
शस्त्र छोडि लै पितु संन्यासा। बैठ्यो आश्रम तजि सब आसा॥
बरवस हरयो सहसभुज गाई। मैंहूं आय खबरि जब पाई॥

काट्यो अर्जुनके भुज शीशा। तासु सहस दश पुत्र बलीशा ॥
मेरे वैर पिता कहँ मारे। तब हम दशो हजार सँहारे ॥
गयो न सहि पितुवधकर कोपा। यकइस बार कियो नृप लोपा ॥
दोहा-मैं कश्यपको बोलि पुनि, कीन्ह्यों यज्ञ महान।
क्षितिमंडल दीन्ह्यों सकल, कश्यपको करि दान ॥
पुनि महेन्द्रगिरिको गयो, तहँ तप कियो अभंग।
आयो आशुहि कुपित अब, सुनि पिनाक कर भङ्ग ॥

कवित्त।

तातै कहौं सत्य राम मेरो नहिं दूजो काम, पिता पितामहते
कोदंड यह मेरो है। लीजिये धनुष शर साजिये चढाय गुन, होइ
जो घमंड भुजदंडबल ढेरो है ॥ विक्रम विलोकि रावरेको रघुराज
हम, शस्त्र लै उछाह सो बिसारि अवसेरो है ॥ छोडि छलछंद
शुद्ध वीरता अनंद पुनि, द्वन्द्व युद्ध होइगो हमारो अरु तेरो है ॥
दोहा-प्राण पियारे रामको, परशुरामके संग।
द्वंद्व युद्ध तहँ होत गुनि, दशरथ भयो विसंग ॥

कवित्त।

भरत दरत रद कोप त्यों करत हद, बोल्यो भृगुनाथसों न
ऐसो होन पावैगो। रामबंधु ठाढे तीन बाँकुरे समर गाढे, युद्धके
उछाह बाढे जासों भल भावैगो ॥तासों युद्ध कीजे निजबल दिख
राय दीजै, लीजै सीख मानि एकै युद्धहेत आवैगो। जियत हमारे
तीनौ भाइनके रघुराज, रामहीकी सौंह कौन रामसौंह जावैगो ॥
दोहा-लषणलाल रिपुशाल दोउ, गहि गहि कर कोदंड।
तमकि तमकि ठाढे भये, महावीर बरिबंड ॥

कवित्त।

जोरि हाथ माथ नाय लषण उचार्‌यो बैन, भली भृगुनाथ
कही सब निरधारौंगो। मोहिको रजाय देहु कौतुक विलोकि लेहु,
करौंनहिं नेहु हौंतो विप्रते न हारौंगो॥जाति रघुवंशीकी कहाइ राम

दासबंधु, रघुराज आज मृषाबाणी ना उचारौंगो । छीनिकै कोदं
तोरि दंडज्यों अरंडहीको, द्वंद्वयुद्ध दैकै द्विज दर्पको उतारौंगो ॥
दोहा—बढत लषण कहँ जानि प्रभु, सैनानि बंधु निवारि ।
भृगुनायकसों कहत भे, मनहुँ अनलमहँ वारि ॥

सवैया ।

सेवक स्वामिको संगर होत न, बालक जान कहा चतुराई ।
वरिको वेष विलोकिकै रावरो, बारहिं बार करै अतुराई ।
जो कछु शासन दीन्ह्यौ हमैं सो, धरचौं शिरमें सब काज विहाई ।
आपहु कीजै क्षमा क्षमादेव, करैं रघुराज सदा सेवकाई ।
बोले प्रकोपित है भृगुनंदन, रे रघुनंदन तैं छलछाई ।
भाइनको बरजै न उतै, अरजै इत मोसे करै मुसक्याई ।
बाम है तेहूँ यथा तुव बंधु, करै किन आँखिन ओटहि भाई ।
नाहिं तौ देत हौं कंठ कुठार, बच्यो अबलौं गुनि बालकताई ।
दोहा—बोले सहजहि लषण तब, नेसुक मुख मुसकाइ ।
मूँदहु आँखी विप्रवर, कतहूँ कोउ नहिं आइ ॥
तब रघुपति कह लषणको, नेसुक नयन तरेरि ।
ठाढ होहु कहुँ अंत चालि, कहहु कटुक रेबीर ॥
लषण ठाढ भे हटि कछुक, खडे भरत जिहिं ठाम ।
राम कह्यो तब रामसों, वचन बाण इव वाम ॥

कवित्त ।

तोरि मेरे गुरुको कोदंड तू घमंड भरि, भाइन भरोसे नहिं
भीति मेरी आनतो । मीठेमीठे बैन बोलि देत मोहिंधोखो धू
आपनेको जगत सपूत जनु मानतो ॥ मोर धनु तोर ना चढ
चढै रघुराज, काहेको करत अस वीरता गुमानतो । तानतो धनु
तौ बखानतो जगत मोहिं, जानतो सो मानतो न मानतो सो जानत

दोहा-द्वंद्व युद्ध दे मोहिं अब, करि प्रसन्न रण माहिं।
जहँ चाहै तहँ जाय पुनि, मोर हेतु कछु नाहिं॥
नहिं तैं नाहिं तेरो पिता, नहिं तेरे कोउ बंधु।
नहिं तेरो गुरु बाचिहै, लखै कुठारहि कंधु॥

कवित्त।

लेत गुरु नाम राम भौंह भई वाम अति, बोल्यो बलधाम अब कहियो सँभारिकै। लषणसों हारो दोष उनको हमारो गुणौ, भनै द्विजमानि हम तूँ भनै प्रचारिकै॥ टेढो जानि शंका मानि चौथ चन्द्रमाको राहुग्रसै नहिं धावै पर्व पूरण निहारिकै। देखियो हमारो विप्र विक्रम विदित विश्व, अबलौ बचायो बूढो ब्राह्मण विचारिकै॥

दोहा-विप्रवंश प्रभुता प्रगट, लोकहु वेदन माहिं।
उभय होत तेई अवशि, जे द्विज देखि डराहिं॥

कवित्त।

विप्र जानि जोपै रावरेकी नहिं भीति मानैं, तौ तो विश्व वीर कौन जाको जोहि डरि है। क्षत्रीकुल जन्म पाय चाप कर ल्याय रघुवंशी कहवाय कालहुसों धाय लरि हैं॥ तुमहिं न सूझै कछु रघुराज बूझै हमैं, समर डरानो ताहि शूर न उचरिहैं। भूधर टरैंगे ध्रुव धामते टरैंगे धरिणीहूँ टरिजाय भले हम नहिं टरि हैं॥ विप्र मानि अबलों मनायो शिर नायो तोहिं, क्षमा नहिं कीन्ह्यों जौन भयो अपकारो है। लषण भरत शत्रुशालको निवारयो हम, ना तो देखिलेते बलदर्प जो तिहारो है। हम रघुराज हैं न देव द्विजराज जानो, सुनो जो न होई सत्य काज सो हमारो है। राजन समाज गर्व गारि त्रिपुरारिजूको, चाप तूरिडारो हम चाप तूरिडारो है॥ करै जौन भावै तोहि अब न बचाय राखै, कैले क्षिति क्षत्री हीन

धारिकै कुठार है । दैले पुनि कश्यपको भूमि यज्ञ दीक्षणामें, पितुको उऋण ह्वैले करिकै विचार है ॥ कैसेके निक्षात्रे क्षिति होत जोपै क्षत्री होत, गोय निज खोरि मेरो कहै अपकार है। काटचो जो गणेश दंत ताको तुम जोरिदेहु, टूटो तो पिनाक हम जोरि हैं अबार है ॥

दोहा—मोहीं गुरु द्रोही कहत, तोहीं कहत न कोय।
काटि दन्त गुरु सुवनको यशी जगतमें होय ॥
आये चढि रण करनको, वीर वापुरे मारि।
परचो न गाढो समर कहुँ, अब तो परी निहारि ॥

कवित्त ।

ऐसों भाषि माषि राम राम हाथहीसों चाप सायक छडा अति चटक चढायो है । चंचलासों चमक्यो चहूँघा चौंध भ चख, भय सब चकित चितै अचर्य आयो है ॥ खैंचतमें ऐंचतें चपल चढावतमें, बाणके लगावत न काहूको दिखायो है । दी रघुराज काज भृगुकुल दिनराज, ठाढोसो थकोसो जको वदन सुखायो है ॥ गहत शारंग हाथ तहां भृगुनाथ जूको, देखि परे रघुना रूप महाकालको । कंप भयो हियमें सशंकि गयो एक बार, दि तजि दर्प देखि दशरथलालको ॥ तेज हीन श्रीहत अतीव दी देखी परचो, छोडि दियो करते कुठार विकरालको । ज्यो हंस हंस दिनहिमकरहीसो, हाल, ह्वैगयो है जमदग्निजूके बालको ॥ ऐंचत धनुष भृगुनाथजूके हाथहीसों, खैंचिकै चढावतमें साजत बाणको । ठाढे सबै सैन्यवारे कोई ना निहारे वीर, धोखे अस है गयो मुनीश कोपमानको ॥ दामिनिसी दमक दिगंतनमें छायगई आयगई हार भृगुकुलके प्रधानको । थकोसो जकोसो दबकोसो भयो भृगुनाथ, देखि रघुनाथ तेज ग्रीषमके भानको ॥

साज्यो है शरासनमें सायक अनल पुञ्ज, बोले रघुनायक प्रकोपि चोपि बानीहै । खड्गलै कुठारलै विचार जो तुम्हार होय, विक्रम दिखाओ जैसी मति हुलसानीहै । वीरते बिहीन तू वसुंधरा विचार्यो विप्र, क्षिप्र क्षत्रि बलको विलोकै वीरमानीहै ॥ भनै रघुराज आप विश्वामित्र नातो मानि, त्याग तोनतीर जो करैयाप्राणहानीहै ।

दोहा-हम क्षत्रिय तुम विप्र हौ, ताते देत बचाय ।
नातो यहि क्षण यमपुरै, देतो तुरत पठाय ॥

कवित्त ।

देखि राम रूप साजे सायक प्रचण्ड धनु, भयो भृगुराम बिना विषको भुजंग है । ह्वैगो तेजहीन अतिदीन त्यों मलीन मुख, छीनि ज्यों क्षितीश क्षितिदर्प भयो भङ्ग है ॥ मान्यो अतिशंक दुति वासर मयंक कैसी, कम्पत शरीर करै कौन अब जंग है। देखि दिनराज रघुराजको बढत तेज, दीपसी बुझानी रणरंगकी उमंग है ॥ छूटि परचो करते कठोर सो कुठार तहां, शीरीभई अनख सुपीरी मुख छायगै, मन्दमन्द हेरै नैन बोलि नहिं आवैं बैन, हिय हहरानो हठि हुब्बहू हिरायगै ॥ रघुराज बाँकुरो समर रघुवीर बल, भानुके उगत सान सूरसी सुखायगै । क्षितिकी निक्षत्रताई कीरति कमाई जौन, राम बीरताई बारिबुल्लासी बिलायगै ॥ द्वन्द्वयुद्ध जानि देव चढिकै विमान दौरि, आये आसमान करि आगे करतारको । मकैत महीधर सो अचल निहारि खडे, साजे धनु तीर वीर कौशल कुमारको ॥ कहा करो चाहै रघुराज रघुराज आज, जके सब जोहैं कछु आवै ना विचारको । सिंहके समीप जैसे सुरभी सकानी त्यों बिलोकै वीरमानी जमदग्निजूके बारको ॥

दोहा–भयो जगत जड इव सकल, नेसुक कोपत राम।
सर्व यज्ञ गन्धर्व सुर, भयभभरे तिहि याम॥

चौपाई।

धनु सायक साजे रघुवीरा। बोल्यो वचन मंजु रणधीरा॥
विप्र विचारि बचायों तोहीं। देखत दया लागि अति मोहीं॥
पै यह वैष्णव धनुको सायक। कबहुँ न मोघ होनके लायक॥
सहसन परपुर जीतनवारो। वृथा न जैहै बाण हमारो॥
उभयलोक गति तप करिपाई। जौन कहौ सो देहुँ नशाई॥
इतना कहत वचन तिहिकाला। राम रूप तहँ भयो कराला॥
परशुराम तहँ रह्यो निहारी। वपुष विराट दिखायो भारी॥
अगणितविधि हरशक्रधनेशा। अगणित यम बहु-रूप जलेशा॥
रोम रोम प्रति अंड कटाहा। देखि परै रघुपति तनुमाहा॥
अगणित अवनि समुद्र अनेका। द्वीप खंडसब सहित विवेका॥
लोक लोकपति देव अपारा। देखि परयो बहु विधि संसारा॥
पशु पक्षी अरु कीट पतंगा। सुर नर मुनि संयुत सब अंगा॥

दोहा–चौदह भुवन अनेक विधि, देखे राम शरीर।
एक परशुधर अरु लख्यो, गुरु वसिष्ठ मतिधीर॥

चौपाई।

तिहि क्षणवैष्णवतेज विशाला। भृगुपति तनुते कढ्यो उताला॥
रामरूपमँह गयो समाई। औरन कहँ नहिं परयो लखाई॥
चारण सिद्धि यक्ष गंधर्वा। देव दैत्य ठाढे जे सर्वा॥
प्रभु कौतुक कछु परयो न जानी। बहुविधि रहे मनहिं अनुमानी॥

परशुराम कहँ उपज्यो ज्ञाना । सत्य सत्य रघुपति भगवाना ॥
मोसन भयो महा अपराधा । प्रभु माया कीन्हीं मुहिं बाधा ॥
अस विचारि भय मानि मुनीशा। गिर्‌यो दंडसम करि पद शीशा ॥
पुनि उठि जोरि पाणि भृगुराई । ठाढो कछु न सकै मुख गाई ॥
देखत रघुपतिरूप विराटा । भाँति अनेकन अद्भुत ठाटा ॥
प्रभु विराट वपु किय संहारा । परशुराम तब वचन उचारा ॥
पाहि पाहि त्रिभुवनके स्वामी । मैं द्विज दीन सदा अनुगामी ॥
पौरुष विक्रम तेज हमारा । नाथ सकल सो अहै तुम्हारा ॥

दोहा-क्षमासिंधु अब क्षमहु सब, भयो जु कछु अपराध ।
मैं सेवक हौं रावरो, कियो उपाधि अगाधि ॥
अस कहि प्रेमाकुलितद्विज, बहत नयनजलधार ।
पुलकित तनु गदगद गरो,करि नहिं सक्यो उचार॥

चौपाई ।

धन्य भाग्य पुनि आपन मानी । मिले मोहिं प्रभु शारँगपानी ॥
सहज रूप लखि बढ्यो उछाहू । नलिन नयन सुन्दर युग बाहू ॥
श्याम शरीर मनोहर अंगा । मर्कत मणि द्युति उठै तरंगा ॥
मन्द मन्द रघुनन्दन काहीं । करि वंदन मुनि कह्यो तहांहीं ॥
मैं निक्षत्र जब क्षिति करि लीन्हीं। बोलि तुरत कश्यप कहँ दीन्हीं ॥
कश्यप कह्यो वचन हम काहीं । बसियो नहिं हमरी महिमाहीं ॥
हमहुँ प्रतिज्ञा तहँ अस कीन्ही । नहिं वसिहौं जहँलगि महिदीन्ही॥
तब मैं गयो महोदधि पाहीं । माँग्यों थल निज निवसन काहीं ॥
बूडो रह्यो जहाँ लगि वारी । दियो महोदधि शैल उघारी ॥
तब महेन्द्रगिरि कुटी बनाई । कियो वास अबलों रघुराई ॥
ताते करिकै कृपा कृपाला । हनहु स्वर्ग गति मोरि विशाला ॥
तप करि त्रिभुवनकी गति पाई । सो तिहरे पद देत चढाई ॥

दोहा—बसिहौं जाय महेन्द्रगिरि, जपिहौं तिहरो नाम ।
सुमिरण करिहौं दिवस निशि, रामरूप अभिराम ॥

चौपाई ।

जय मद मोह नाग पंचानन । जय पदकमल शुद्ध कृतकानन ।
जय मुनि मानस सरासि मराल । जय जय विश्वविनाशक काल ।
जय जय सुंदर त्रिभुवन बाल । ज़य हृदि राजित वर वनमाल ।
जय विरंचि वैरंचिनि अन्तह । तव पदकमल भज्ञतिहि संतह ।
कृपया परिपालय रघुनन्दन । दीनानुग्रह सुरकुल चन्दन ।
जय वेदोद्धर मीनाकार । जय जय कोशल भूपकुमार ।
जय जय कमठाकार मुरारे । क्षीराम्बुधि मंथक दनुजारे ।
धरणी धारक कोलाकार । जय जय कनककशिपु संहार ।
प्रह्लादाभयदायक देव । वटु वामन पावन बलिसेव ।
मनकर कृत राजन्य विनाश । धर्मधुरंधर परम विकाश ।
जय जय रघुकुलकमल दिवाकर। जय वसुदेव कुमार दयाकर ।
जय हलधर हिमकर संकाश । जय जय बुद्ध सुकरुणावास ।

दोहा—करकराळ करमाल धर, म्छेच्छच्छवन मुकुंद ।
पाहि पाहि यामिह हरे, कौसल्योदधि चन्द्र ॥

चौपाई ।

शरणागत मैं नाथ तिहारो । क्षमा करहु निज कोप निवारो ।
तुम ब्रह्मण्य देव रघुराया । दियो भुलाय तुम्हारी माया ।
मैं नहिं कोप सहनके लायक । हरहु स्वर्गगति तजि यह सायक ।
जाउँ महेन्द्रशैल कहँ आशू । भजौं निरन्तर रमानिवासू ।
अच्छै मधुसूदन संहारी । करहु देव द्विजकी रखवारी ।
जान्यो जान्यो अब प्रभुताई । कियो मोहवश मैं शठताई ।
को शारंग चढावन हारो । को पिनाक कर भञ्जनवारो ।

हरन हेतु अवनी कर भारा । कोशल नगर लीन अवतारा ॥
दीन्ह्यो मोहिं प्राण कर दाना । होइ तुम्हार सदा कल्याना ॥
विधि शिव इन्द्र आदि सब देवा । ठाढे लखत न जानत भेवा ॥
अधिक समान रहित रघुवीरा । व्यापक विश्व महा रणधीरा ॥
प्रतिद्वन्द्वी नाहिं कोउ रण माहीं । मैं मतिमंद विचारयो नाहीं ॥

दोहा–त्रिभुवननायक आपसों, नहिं हारे की लाज ।
अति कृपालु समरथ सबल, संत सुहृद रघुराज ॥

चौपाई ।

अब नहिं करहु विलंब दयाला । तजहु अमोघ बाण विकराला ॥
सुमिरत तुव पदकमल तुरन्ता । जाय महेन्द्र गिरीश अनन्ता ॥
सुमिरण करिहौं तुमहिं गोसाईं । मोर शरीर रही जबताईं ॥
जिहि जिहि योनि कर्मवश जाऊँ । तहँ तहँ अमल कमलपदध्याऊँ॥
जनि विसारियो त्रिभुवन साईं । पाल्यो कमठ अंडकी नांईं ॥
दीन हीन गुण महामलीना । मुहिं सनाथ रघुनायक कीना ॥
अस कहि रह्यो चरण लपटाई । जय कृपालु कोमल रघुराई ॥
भृगुपति वचन सुनत रघुनायक । लागी दया तज्यो निजसायक ॥
ही स्वर्ग गति भृगुपति केरी । दीन जानि किय कृपा घनेरी ॥
को दयालु रघुपतिसम आना । विप्रहि दियो प्राण कर दाना ॥
पुनि प्रभु परशुराम पद परसे । बोले वचन सुधा जनु बरसे ॥
मोरे पर करियो द्विज दाया । मेरी कुशल तुम्हारी छाया ॥

दोहा–सुनि रघुपतिके वैन अस, भृगुपति नाचन लाग ।
गावत मुख माधव सुयश, भरो भूरि अनुराग ॥

छन्द दंडक ।

सर्वपर सर्वहत सर्वगत सर्वरत सर्वमत पूज्य आनंदकारी ॥
अखिलनायकअमलअखिलदायकसुयशआखिलभायकवपुष मोह

हारी ॥ जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरवि विप्रकृतकाजधनु
णधारी ॥ भूपदशरथसुवन सकलभुवनाभरन करन अशरण
दुवनदारी ॥

दोहा–अस कहि पदपंकज पराशि, परम प्रमोदित राम।
गयो महेंद्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम॥

इति सिद्धश्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्र
पात्राऽधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव जी. सी. एस. आई. कृते श्रीराम-
स्वयंवरग्रन्थे परशुरामसंवाद द्वाविंशत्तमःप्रबन्धः ॥ २२॥

दोहा–करि प्रणाम श्रीरामको, परशुराम तप काम।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम॥
रही रामकी दिव्य गति, हरि लीन्ह्यों तिहि राम।
महि विचरणकी गति रही, कीन्ह्यों भजन अकाम॥
परशुराम जो रामसों, कीन्ह्यों वृथा विवाद।
द्वापरयुगमें तासु फल, लह्यो महाअपवाद॥
नारी हित कीन्ह्यों समर, भीषमसों हठि जाय।
भई पराजय कुयश जग, मनमह रह्यो लजाय॥

चौपाई।

कथाप्रसंग सुनहु अब संता। जौन चरित कीन्ह्यों भग
प्राणदान प्रभुकरसों पाई। जब भृगुपति गमन्यो शि
अंधकार तब मिट्यो दिशानन। भये प्रसन्न देव मुनि आ
वरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस। जय जय करहिं भरे आनँद
जय जय रघुपति दीनदयाला। धर्मधुरंधर वीर वि
जय जय भरत लषणरिपुशाला। जय रघुकुल भट मंडित
सैनिक सकल कहत अस लागे। रामहि निरखि राम अब
लगे सराहन रघुपति काहीं। राज लाडिलो सम कोउ
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई। जनकसुता ढिग आशुहि

रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिरनाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई॥
भृगुकुलकमल पतंग प्रकोपी । आयो समर करन चित चोपी॥
दोहा-तुव प्रीतमको तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय ।
करत प्रशंसा रामकी, राम गयो शिरनाय ॥

चौपाई ।

सुनि गमने भृगु राम जानकी । मिटिगै शंका सकल जानकी ॥
मिथिलापुरवासी नर नारी । रामगवन सुनि भये सुखारी ॥
बाजन लागे निकर नगारा । जय जय शोर मच्यो यक बारा ॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुलके वीरा । आये राम निकट रणधीरा ॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी । कहहिं करी सेना रखवारी ॥
मानहु काल पाशते छूटे । द्रव्य लुटाये निर्धन लूटे ॥
रामहाथसों दान करावहिं । रामसुयश यक यक यह गावहिं॥
विविधभाँतिके बाजन बाजे । हैबर गैयर गण बहु गाजे ॥
तिहि अवसर निज काज विचारी । लियो वरुणको राम हँकारी ॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा । बोले वचन नाथ सुखसंगा ॥
दिह्यो अगस्त्य हाथ तुम जाई । लेहौं मैं दण्डक वन आई ॥
अस कहि कीन्हीं वरुण बिदाई । गये वसिष्ठ निकट रघुराई ॥
दोहा-पदपंकज परशे पुलकि, पंकजपाणि सप्रेम ।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्रसे क्षेम ॥

चौपाई ।

मार्कण्डेयादिक ऋषिराई । प्रभु परशे पदपंकज जाई ॥
बोले वचन भरे अह्लादा । मिटी भीति तुव आशिर्वादा ॥
मुनिजन दीन्हें प्रभुहि अशीशा । पालहु यहि विधि कोटि बरीशा॥
पुनि अतिविह्वल पितु लखि रामा । आये बंधुसहित तिंहि ठामा ॥
परशि पितापद कियो प्रणामा । बोले वचन, राम अभिरामा ॥

राउर तेज उदै लखि भाना । दीप सरिस द्विज तेज बुझाना
गयो भागि भार्गवकुलकेतू । उठहु गवन कर बाँधहु नेतू
तुव भुजपालित दल चतुरंगा । चलै अवध सुख आनँद रंगा
हम सब कुशल प्रताप तुम्हारे । विकल होहिं अब विकल निहारे
गये राम कुशली सुनि रामै । उठ्यो भूप आशुहि तिहि ठामै
सहित बंधु रघुनाथ निहारी । लियो अंक भरि भुजा पसारी
नहिं समात आनन्द अपारा । नयनन बहति नीरकी धारा

दोहा—गद्गद गर नहिं कहत कछु, निरखत बारहि बार।
मानत नृप आजहि भये, मेरे चारि कुमार॥

चौपाई ।

सूंघ्यो शीश अंक बैठाई । फेरचो पीठ पाणि पसराई
जाय गह्यो गुरुपद पुनि राजा । कह्यो कृपा तुव सिधि सब काजा
मिले चारि बालक पुनि मोहीं । कहौं शपथ करि यश सब तोहीं
मुनि कह धर्मधुरंधर आपू । करत सिद्धि सब काज प्रतापू
कही न तिहि अचरज अस कोई । जाके राम सरिस सुत होई
कालहु करी न तापर कोहू । जासु राम सिय पूत पतोहू
गवनहु गेह बजाय निशाना । देखहु परछन हर्ष निधाना
लखैं राउ रामहि टक लायो । मनहुँ राहुमुख विधु कढि आयो
तिहि अवसर जे दूत पठाये । ते कौशलपुर ते द्रुत आ
कही भूपसे मंजुलवानी । अवध प्रजा दर्शन अकुलानी
इत विलम्ब नहिं होइ महानी । रोजहि कढति अवध अगुवानी
दूतवचन सुनि भूप तुरंता । बोल्यो वचन हँकारि सुमंता

दोहा—चलवावहु सेना सकल, आशु अवधकी ओर।
सुनि सुमन्त शासन दियो, भयो दुन्दुभी शोर॥

चौपाई ।

चली सैन्य कछु वरणि न जाई । मनहु उठी पूरब मेघ

चढि रघुनन्दन स्यन्दन माहीं । चले सबंधु अवधपुर काहीं ॥
चढि गुरु नृप चढि निजरथाना । किये प्रमोदित अवध पयाना ॥
चली जनकपुरते जिमि सैना । तिहिविधि चली भली भरिचैना ॥
कियो पन्थ दिन चारि बसेरा । लहे जनक सत्कार घनेरा ॥
जनकसचिव कीन्हें सेवकाई । कहुँ न विदेश निवास जनाई ॥
यहि विधि तहँ वरात हुलसानी । आय अवधपुर कहँ नजिकानी ॥
योजन भरिमहँ परिगो डेरा । जानि काल्हि दिन परछन केरा ॥
जनक सचिव सब जे सँग आये । माँगी बिदा नृपहि शिर नाये ॥
देनलगे नृप संपति नाना । लिये न मन अनुचित अनुमाना ॥
करि नृपकी सिगरी सेवकाई । गये जनकपहँ माँगि बिदाई ॥
कह्यो तुरंत सुमंतहि भूपा । परछन सुदिवस काल्हि अनूपा ॥

दोहा–धेनु धूरि वेला विमल, होई नगर प्रवेश ।
दूत भेज जनवाइयो, सब रनिवास निवेश ॥

चौपाई ।

तुरत सुमंत दूत पठवायो । खबरि नगर रनिवास जनायो ॥
सजत बरातिन सुखित अपारा । निशा सिरानि भयो भिनुसारा ॥
प्रातकर्म करि भोजन कीन्हें । अवध प्रवेश करन मन दीन्हें ॥
दुपहरभीतर भई तयारी । त्वरा अवधपुर देखन भारी ॥
होत प्रभात कुमारन काहीं । कह्यो भूप बिलमो अब नाहीं ॥
करि मज्जन भोजन अतिआशू । सजे कुँवर सब सहित हुलासू ॥
सुभग रंग नारंग पुशाका । जिहि लखि सुरनरमुनिमन छाका ॥
लसे मणीन मोर शुभ सीसे । रत्न विभूषण अगणित दीसे ॥
कटि कृपाण धनु कंध सुहाई । युग तूणीर महाछबि छाई ॥
कामविनिन्दक सकल कुमारा । वरणि कौन कवि पावत पारा ॥
तिहि दिन नृपहु पीत पट धारे । गमनहेतु गज भये सँवारे ॥

कारि बहु विनयवसिष्ठहु काहीं। भूप चढायो सिंधुरमाहीं॥
दोहा-भये अनङ्ग समान सब, कुँवर तुरंग सवार।
बजे नगारे निकर तहँ, बार बार तिहि बार॥

चौपाई।

सजी सैन्य सुंदर चतुरंगा। चले बराती भूपति संगा॥
आगे सुतर सवार अपारा। सोहिं रहे गन्धर्व अकारा॥
तिनके पाछे पैदर जाती। निज निज यूथ वर्ण बहु भाँती॥
लसहि गजनपर विविध पताका। मनु तिनमहँ अरुझत रविचाक
बहु नागन पर नौबत बाजै। तिनके गुरु गैयर गण गाजै॥
तिमि बाजहिं विशाल करनाला। तूरज भेरी शोर रसाला॥
पछि चले पैदरन केरे। तिन पीछे असवार निंरे॥
चढि तुरंग जागरे अलापैं। मनहु सात सुर सुरपुर थापैं॥
छाय रही ध्वनि बाजन केरी। अंबर अवनि दिशान घनेरी॥
तहँ परिकर अगणितगाति सीछे। चले सवारनके पुनि पीछे॥
कनक छरी बल्लम बहु सोटे। गवने सुन्दर जोटे जोटे॥
परिचर वृन्दहि मध्य सिधारे। पंच सहस वर राजकुमारे॥
दोहा-राजकुमारन मध्यमें, सोहत चारि कुमार।
तिनके पीछे गज चढ्यो, गवन्यौ अवधभुवार॥

चौपाई।

तहँ वसिष्ठ आदिक मुनिराई। चढे वितुंडन आनन्द छाई॥
रघुवंशी सरदार अपारा। सज़े मतंगन भये सवारा॥
तिनके पीछे चली पालकी। चारि वधुनकी रत्न जालकी॥
चली जनकपुर सैन्य अपारा। दासी दास अनेक उदारा॥
बहल शकट पालकी महाफा। परे जरीके जिनमहँ साफा॥
तिनके पीछे चली बजारा। धानिक वणिक बानि बनकअपारा॥

कहहिं परस्पर सकल बराती । देखौ कौशलपुरी दिखाती ॥
हल्ला पर्यो अवधपुर जाई । अब बरात पुर नेरे आई ॥
आतुर सजे अवधपुरवासी । दूलह दुलहिन देखन आसी ॥
चले लेन आशुहि अगवानी । सकल पुण्य फल आपन जानी ॥
खरभर पर्यो नगरमहँ भारी । कोउ गवने कोउ करत तयारी ॥
जानि अर्ध योजन रजधानी । नृप सुमंतसों गिरा बखानी ॥
दोहा--चलैं इहां ते अब सचिव, दुलहिन दूलह संग ।
बाजी पीछे पालकी, बजत बाज बहुरंग ॥

चौपाई ।

पृथक पृथक सिगरी महरानी । पठईं कलश चलीं अगवानी ॥
कलश शीश धरि गावत नारी । भूषण वसन सुरंग सँवारी ॥
हरद दूब दधि तंदुल थारा । शिर धरि चलीं चारु शृँगारा ॥
करहिं भामिनी मंगल गाना । बाजन बजहिं अनेक विधाना ॥
राजतरजत कनककलशावलि । तिनमहँदिपति दिव्यदीपावलि ॥
प्रमुदित पुरजन वृन्दन वृन्दा । आगू लेन चले सानन्दा ॥
कोउ मतंग कोउ चढे तुरंगा । चले धनिक कोउ चढें सतंगा ॥
बहुत वृषभ बहलन महँ नाधे । चढो सुखासन कोउ जन कांधे ॥
कोउ पैदर आये नर नारी । बाल वृद्ध उमहे सुख भारी ॥
अवध प्रजानिरखनअभिलाषन । आये अगवानी कहँ लाखन ॥
इत बरात उत पुरजन रेला । मानहु तजे सिंधु युग बेला ॥
आवत झिले} अवधपुरवासी । दूलह दुलहिन देखन आसी ॥
दोहा--यदपि रह्यो मैदान बहु, कसमस पर्यो अघात ।
चली अवधपुर पन्थ तब, मंदहि मन्द बरात ॥
मिलहिं बरातिन पौरजन, प्रथमहिं यही बताय ।
दुलहिन दूलह दुहुँनको, दीजै द्रुतहि दिखाय ॥

चौपाई।

कहहिं कहाँ सुंदरि सुकुमारी। मिथिलापुरकी राजकुमारी॥
कहँ रघुनायक रूप सलोना। कौन समय परछन अब होना॥
भरत लषण रिपुहन कहँ प्यारे। धौं तुरंग धौं नाग सवारे॥
कहँ नरेश कौशलाधिराजा। जाहि न तुलत आज सुरराजा॥
महा डोल दुलहिनके चारी। देहु बताय होहु उपकारी॥
हर्षि बराती हाथ उठाई। दुलहिन दूलह देत बताई॥
पाछे धाइ मिलैं जे जाई। ते पूछहिं देखे रघुराई॥
नगर नारि नर नागर नीके। अभिलाषी देखन सियपीके॥
झुकहिंझिलहिंझझकहिंझपिझांकहिं।तरलतमकातिरछेतुकिताकहिं॥
लुकहिं लजहिं ललकहिं लरखाहीं। चितवहिं चाकित चुभे चहुँघाहीं॥
जिनहिं प्राणप्रिय जानकिजानी। पौरदशा किमि जाय बखानी॥
भयो अवध आनन्द अगारा। कसमस परत करत संचारा॥

दोहा—नारिवृन्द कलशावली कौशल्याकी आय।
खडी भई तहँ रामके; आगे आतिहि सुहाय॥

चौपाई।

पुनि कैकेयी कोरि पठाई। कलशावली सुहावनि आई॥
भेजी सुभग सुमित्रा केरी। आई कलशावली घनेरी॥
औरहु रानिन कोरि पठाई। कलशावली समीपहि आई॥
कामिनि कनककुम्भ धारि केती। गावत मंगल गीत सचेती॥
पुरवासिनी अनेकन आई। संग मंगलामुखी सुहाई॥
गावहिं व्याह गीत सुरलाई। महा मनोहर ध्वनि रहि छाई॥
बाजन बजहिं अनेकन भाँती। नाचहिं वारवधू सुखमाती॥
नचहिं परिचरी पट फहराई। अधिकअधिक आनँद उमगाई॥
कौशल्यादि तीन महरानी। तिनकी पठई सखी सयानी॥

सुन्दरि दधि अक्षतको टीको। दीन्ह्यों राम भालमहँ नीको ॥
मनु असुरनते आशु रिसाई। बस्यो शुक्र शशिमंडल जाई ॥
लषण भरत रिपुहनके भाला। दधि टीको दीन्ह्यों सब बाला ॥
दोहा--पुनि दुलहिनि पालकि पटन, नेसुक नारि उघारि।
दधि टिकुली देती भई, मंजुल पाणि पसारि ॥

चौपाई।

दे टिकुली गावत गजगामिनि। आगे चलीं भरी सुख भामिनि ॥
आई अगणित पुरजन नारी। करहिं निछावरि मणिगण वारी ॥
दुलहिन दूलहको नजिकाई। लेतीं दोउ कर रोग बलाई ॥
प्रविशे पुरजन दलमहँ जाई। रामचरण परशहिं सुख छाई ॥
इतर जाति सब करहिं प्रणामा। आशिष देहिं विप्र तपधामा ॥
तहँ कौतुक कीन्ह्यों भगवंता। मिल्यो प्रजन करि रूप अनंता॥
जाने सबै मिले हम काहीं। परचो जनाय भेद कहुँ नाहीं ॥
मंद मंद तब चली बराता। पुरजन करत परस्पर बाता ॥
हमहिं मिले रघुनन्दन आई। पूछी विविधभाँति कुशलाई ॥
को जग रामसमान सनेही। कहहु प्राणप्रिय आज न केही ॥
पुनि पुरजन नरनाथ जुहारे। कृपादृष्टि नृप सबन निहारे ॥
शील सनेह सबन कहँ तोषे। गमने मंद मंद चित चोषे ॥
दोहा--नगरनिकट यहि भाँति चलि, आई विमल बरात।
सचिव सुमंत बुलायकै, कही भूप अस बात ॥

चौपाई।

बृहद्विमान आशु बनवायो। दुलहिन दूलह ताहि चढायो ॥
तहाँ तुरंत सुमंत सिधारा। विमल विमान विशद विस्तारा ॥
वाहक दशशत ताहि उठाये। आशु सुमंत संगमहँ लाये ॥
मंडप कनकजटित रतनाली। बनी चहूँकित हीरन जाली ॥

चातक कीर कपोतहु मोरा । निर्मित रत्न करत कल शोरा ॥
रत्नवृक्ष बहुरंग सुहाये । माणिक फल मुक्ता सुभ भाषे ॥
मुक्तन झालरि झूलत झापी । रत्नकलश रविसरिस प्रतापी ॥
भिन्न भिन्न सुंदर सुस्थाना । मनहुँ मदन निज कर निर्माना ॥
तहँ सुमंत रामहिं युत भाई । ल्याय विमानहिं दियो चढाई ॥
पुनि चारिहु पालकी बुलाई । दियो विमानहिं निकट धराई ॥
वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आई । पुरुषनको निज हाथ हटाई ॥
पुनि दुलहिन पालकी उतारी । दियो चढाय विमानहिं भारी ॥
सुंदरि दुलहिन दूलह चारी । सखी सुथल निज निज बैठारी ॥

दोहा--रत्नखचित झालर मुकुत, दीन्हीं परदन डारि ।
बोले विविध नकीब तब, को सुख कहै उचारि ॥

चौपाई ।

तिहि विमानके चारिहुँ ओरा । सखिमंडल सोहत नहिं थोरा ॥
नृप शासन लहि उठ्यो विमाना । बाजन बजे विविध विधिनाना ॥
चल्यो राजमंदिरकी ओरा । फरक फरक माच्यो मग शोरा ॥
तिहि विमान पाछे छबि छाजा । सिंधुर चढो लसत महराजा ॥
मणिगण चारिहु ओर लुटावत । लोकपालयुत विधिसम भावत ॥
मच्यो कुलाहल नगर मँझारी । देखन झुके झुंड नर नारी ॥
झर झर वेत्रपाणि प्रतिहारा । भर भर रोकत मनुज अपारा ॥
आगे करि सिय राम विमाना । परछन लखनभूप हुलसाना ॥
राम सरिस सुत सीय पतोहू । कहै को दशरथ सुख संदोहू ॥
दशरथ सरिस आज नहिं कोई । वामदेव विधि वासव होई ॥
पुरनारी चढि ऊँच अटारी । वर्षहिं सुभ आरती उतारी ॥
गावहिं मंगल मंजुल गीता । राम सीय लै नाम पुनीता ॥

दोहा--आई सुरभीरज समय, कियो वसिष्ठ उचार ।
पहुँच्यो विमल विमान तब, अंतहपुरके द्वार ॥

चौपाई।

द्वार चौक अंतहपुर केरी। अति विस्तार अनूप निबेरी॥
दियो चौकते पुरुष हटाई। नारिवृन्द सोहत तहँ आई॥
मध्य चौकमहँ धरचो विमानू। ज्यो साँझ वेला जनु भानू॥
छरी वेत्र बल्लम कर धारिनि। कौसल्या शासन दिय नारिनि॥
फरक करहु सब नारि उताला। आयो अब परछन कर काला॥
प्रतिहारिनी लगीं हटावन। झुकहिं नारि देखन मनभावन॥
पुनि कौसल्या सखी सयानी। बोलि कही मंजुल अस बानी॥
खबरि जनावहु भूपहि जाई। परछन हित आवहिं अतुराई॥
गई सखी भूपतिमणि पाहीं। जोरि पाणि बोली तिन काहीं॥
कौसल्या विनती अस कीन्हीं। यह सम्पति अनुपम विधि दीन्हीं॥
आवहिं सुख लूटहिं तिहि केरो। कृपा नयन नारायण हेरो॥
सखी वचन सुनि अवध नरेशा। उतरि चल्यो तजि दियोगजेशा॥

दोहा–महिषीमण्डल महिपमणि, सोहत सुभग निशंक।
मनुतारा मण्डल विमल, ज्यो नवीन मयंक॥

चौपाई।

त्रिशत साठि अरु त्रयमहरानी। लाखन सखी सजीं छबिखानी॥
बजैं मनोहर बाज सुहावन। नाचहिं सखी मोद उपजावन॥
सजीं आरती थार हजारन। ओली भरी रत्न सखि बारन॥
सहित पट्टरानिन कुल दीपा। गयो विमान समीप महीपा॥
पढहिं स्वस्त्ययन विप्रन नारी। रानिन विधि दरशावहिं सारी॥
जाय विमान निकट महराजा। संयुतरानिन रुचिर समाजा॥
गुरु वासिष्ठ कहँ लियो बुलाई। आगे ठाढ कियो शिर नाई॥
गुरुपत्नी अरुन्धती आई। मनहुं पातिव्रत मूर्ति सुहाई॥
कौसल्या कैकयी उचारी। गुरुपत्नी पट देहु उघारी॥
तहँ अरुन्धती अतिसुख छाई। निज करसों पट दियो उठाई॥

परे देखि अनुपम छबिधामा। दुलहिन दूलह सीता रामा॥
परयो चौंध सबके चख माहीं। मनु चपला चमकी चहुँघाहीं॥
दोहा-देखि परे तब राम सिय, सुछबि छटा क्षिति छाय।
मनहुँ सूर शशि एक सँग, कढे जलद बिलगाय॥

चौपाई।

गुरुआइनि पद प्रभु शिरनाये। लाजविवश पुनि शीश नवाये॥
पुनि क्रमसों अरुन्धती जाई। तीनहुँके पट दियो उठाई॥
दूलह दुलहिन देखन हेतू। झुकीं नारि कारि बहु विधि नेतू॥
कौसल्यादि तीनि पटरानी। चढीं विमान लखन हुलसानी॥
कोशलेश कहँ लियो बुलाई। परछन करहु कही मुसकाई॥
गुरु आगे कारिगये महीपा। ठाढो पूत पतोहु समीपा॥
गुरु पितु मातहि लखि रघुराई। नाय शीश पुनि रहे लजाई॥
गांठि जोरि तीनिहु पटरानी। खडो भूप गुरु आयसु मानी॥
मणिनजटित वर कंचन थारी। कौसल्या अपने कर धारी॥
बार बार आरती उतारति। पूत पतोहू नयन निहारति॥
खडी भूपयुत तहँ कौशल्या। जनु गौतम युत लसति अहल्या॥
दशरथ कौसल्याकी आजू। वर्णि सकै को भाग दराजू॥
दोहा-सखी सयानी निकट लखि, राम सीय छबि देखि।
बोली कौसल्या हुलसि, विभ्रम भयो विशेषि॥

पद।

देखो तो सखीरी मेरो बारो मिथिलाते आयो।
धौं मोहींको होत महाभ्रम धौं सबको अस रूप जनायो।
जनककुमारी लागत कारी मोर किशोर गौर छबि छायो॥
मिथिलाकी नटखटी नागरी जादू पढि टोना डरवायो॥
हँसि बोली सजनी रानीसों स्वामिनि मोहिं सत्य अस भायो॥

राम सुछबि सिय श्यामा लागत सिय छबि राम गौर दरशायो ॥
करौ भाग्यवन्तिन परछन अब अस सुख त्रिभुवन कोउ नहिं पायो ।
दीन सुछबि सबगुण समेटि कै विधि रघुराज कुँवर जनमायो ॥

दोहा-कह्यो वसिष्ठहिं कौसला, लै अरुंधती संग ।
प्रथम करहु परछन तुमहिं, करि विधान श्रुति संग ॥

गुरु अभिमत सुनि अति हुलसान्यो ।
लै अरुधन्ती गाँठि जोरिकै धनि धनि भाग्य आपनी मान्यो ॥
रत्नखचित लै कनकथार कर दधि अक्षत हरदी द्रुत सान्यो ।
दुलहिन दूलह भाल विशालहि दे टिकुली उर आनँद आन्यो ॥
लगी उतारन आरति दंपति इकटक निरखि जन्म धनि जान्यो ।
श्रीरघुराज काज करि मुनिवर आजु सुकृतफल मन अनुमान्यो ॥

दोहा-कह्यो भूपसों गुरु वचन, गाँठि जोरि अब आय ।
परछन करहु भुवालमणि, वेद विधान बनाय ॥

होन लग्यो परछन तिहि काला ।
करि कर थाल भुवाल रानियुत लग्यो उतारन आरतिहाला ।
छबि छकि पूत पतोहु वदन लखि बार बार नृप भयो निहाला ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा लै लीन्हीं आरती उताला ।
लगीं आरती उमँगि उतारन दुलहिन दूलहको दै माला ॥
पूत पतोहुनको मुख देखत जननी आनँद लह्यो विशाला ।
श्रीरघुराजकी लेत बलैयां जन्मजन्मको मिट्यो कशाला ॥
लियो छुडाय आरती निज कर लग्यो उतारन पुनि महिपाला ।
पुनि रानी आरती उतारी ।
कौसल्या कैकयी सुमित्रा बार बार छबि छकैं निहारी ॥
बहुरि उतारति मुशल मथानी दीप उतारि फोरि पुनि डारी ॥

बार बार पुनि सलिल उतारैं लोक मंत्र बहुभाँति उचारी।
देखहिं पूत पतोहुनको मुख क्षण क्षण मणिगण निजकर वारी।
याहिविधि चारिहु कुँवरनको करि परछन रानी लहि सुखभारी।
चारिहु दुलहिनि दूलहको तब लिय विमानते आशु उतारी।
होन लगी निउछावर तिहि क्षण मणिगण पटभूषण जरतारी।
राई लोन उतारि सखीजन पढि मंगल मनु पावक डारी।
गावहिं मंगल शोर मनोहर श्रीरघुराज जाहि बलिहारी।
दुलहिन दूलह चलीं लिवाई।
सकुचत सिय सासुनको निरखति चलति मंद पद पदुम उठाई।
पगआगे सखि धरहि ठीकरी सिय पग गहि तिंहि देहि छुवाई।
कहहि रामको लाल उठावहु प्रभु जननी लखि रहें लजाई।
पुनि प्रभु को करकमल पकरि अलि लेहि ठीकरी हठि उठवाई।
यहि विधि हास विलास विविध विधि करहिं सखी कौतुक दरशाई।
गावत बाज बजावत बहु विधि नाचहिं भाव बताय बताई।
बैठाई रघुराज वधू वर रंगनाथके मंदिर ल्याई।
करवावतीं वर वधुन कर श्रीरंगपूजन विधि साहित।
सिय रामको सिखावाहिं सखी इनकी कृपा मेंटाति आहित।
करि छोह पूत पतोहु को बहु दान करवावंहिं सुखित।
सब रंगनाथ मनावतीं निज ओढि अंचल चित चाहित।
सिय राम पूत पतोहु मिलहिं अनेक जन्मनि जने जित।
युग युग जिये जोरी सुचारिहु लखैं हम यहि भाँति नित।
यहि विधि मनावैं पुनि खिलावैं द्यूत दोहुन मोद मित।
कोउ कहैं मोरि पतोहु जीती कोउ कहैं मम लाल जित।
रनिवास हास विलास यहि विधि होत सखिगण अति हँसित।
शिर नीच करि दूलह दुलहिनी बैठि गुरुजनको लजित।

यहि भाँति लोकाचार करि सब वर वधुन लैं गईं तित ॥
जहँ सभा मंदिर बन्यो सुंदर विशद मणिगणते जटित ॥
तहँ मातु कौसल्या सुमित्रा कैकयी कछु ह्वै श्रमित ।
बैठाय पूत पतोह आगे सुछबि लखि सब भईं चकित ॥
कुलनारि सब रघुवंशकी देखहिं दुलहिनी आइ इत ।
रघुराज अंगनेमें विराजित देव जय जय आलपित ॥

सखी लखु सिय बनरी घर आई ।

परछन करि सब सासु उतारी पुनि पुनि लेत बलाई ॥
पावरि डारनि मणिगण वारति लै आईं अँगनाई ।
घूँघुट खोलति कोटि शशीसम फैली फरश जुन्हाई ॥
चितवहि चकित देखि दुलहिनको आनन्दसिंधु अन्हाई।
हेरि थकी सिय मुख पटतर छबि त्रिभुवनमें नहिं पाई॥
कौशलपति शत शक्र साहिबी वारचो सासु लजाई ।
वदन विलोकि नेग देबे को कछु नहिं जिय ठहराई ॥
सखि मिसि गिरिजा गिरा इन्दिरा देखनहेत सिधाई ।
श्रीरघुराज गुमान रूपको दीन्ही वदन दिखाई ॥

दोहा- पुत्रवधुन युत पुत्र लै, बैठीं वर दरबार ।
सुर सुंदरी समाज लै, गावहिं नाचि अपार ॥

चौपाई ।

उते वसिष्ठसहित महराजा । गे बाहर जहँ भूपसमाजा ॥
चढि सिंधुर मंदिर तहँ गवने । हिमगिरिसम उतंग जे भवने ॥
पुनि शोभा निरखहिं महिपाला । नहिं अमरावति कौनहु काला ॥
लसहिं कनकध्वज तुंग पताके । मनहुँ भवन त्रिभुवन ताराके ॥
कदली क्रमुकखंभ प्रति द्वारा । कनकपत्र फल फूल अपारा ॥
हेमकुंभ दीपावलि सोही । खडे नारि नर सुखसंदोही ॥
वृन्दन वृन्दन बन्दनवारा । चामीकरके चारु किवाँरा ॥

धौल धाम हिमवान समाना । अटा अनेकन छटा अमाना ।
दीपावलि सिगरे पुर माहीं । खैर भैर थल थल चहुँघाहीं ।
पुरजन अति आनँदरस साने । वित्त लुटावत नाहिं अघाने ॥
आय आय नरनाथ जुहारैं । देहिं नजरि बहु मणिगणवारैं ॥
वरणै कौन अवधपुरशोभा । सुर नर मुनिमानस लखि लोभा ॥

दोहा–यहि विधि निरखत नगर छबि, सहित समाज नरेश ॥
कियो राजमंदिर सुखद, समय विचारि प्रवेश ॥

चौपाई ।

बैठ्यो सभाभवनमहँ जाई । राजसमाजसहित छबि छाई ।
नेउतहरी भूपति सब आये । यथायोग्य सब कहँ बैठाये ।
भूपति कियो सबन सत्कारा । विनय कियो ते जान अगारा ।
देन लगे नृप तिनहिं विदाई । रथ तुरंग मातंग मँगाई ।
रत्न आभरण अम्बर नाना । जो जन जौन लेन ललचाना ॥
सकल कहहिं नृप आशु कुबेरा । देत लगत लघु जाहि सुमेरा ॥
प्रीति रीति वर विनय बडाई । को अस जाहि तुष्टि नहिं आई ॥
वर्णत दशरथ सुयश नृपाला । निज निज देशन चले उताला ।
भूप युधाजित दशरथ स्याला । आयो बिदा होन तिहि काला ।
करि सत्कार अवधपति बोले । बनत न अबै आपके डोले ।
बसे युधाजित भवन बहोरी । कह्यो भूपगुरु विनती मोरी ।
चलहु नाथ मम सँगरनिवासा । देहु दुलहिनिन सुन्दरवासा ।

दोहा–अस कहि भूप वसिष्ठ लै, गयो आशु रनिवास ॥
मच्यो जहाँ वैकुण्ठसम, सुन्दर हास विलास ।

चौपाई ।

गुरु भूपति लखि उठी समाजा । आनि सिंहासन युगल दराजा ।
यक महँ गुरु वासिष्ठ बैठायो । महा विशद जो द्वितिय सुहायो ।
भयो विराजमान अवधेशा । गुरु वसिष्ठ तब दियो निदेशा ।

रानी राजहु पूत पतोहू । बैठि सिंहासन सुखसंदोहू ॥
मम करते अभिषेक करावैं । मंगल मूल सकल विधि पावैं ॥
नृपति मुदित तीनिउँ पटरानी । बैठायो सिंहासन आनी ॥
चारिउ कुँवर चारि कुँवरानी । बैठायो आसन सुखमानी ॥
चलैं चारु चामर चहुँ ओरा । छजत छत्र मणिखचित करोरा ॥
रत्न दीप फैली उजियारी । नाचि रहीं सन्मुख सुरनारी ॥
तिहि अवसर अवास आनंदा । किहि विधि वरणौं मैं मतिमंदा ॥
गुरु उठि अर्घ्यपात्र कर लीन्हा । वेदमंत्र अभिमंत्रित कीन्हा ॥
किय वरवधू सविध अभिषेका । आधिष्ठान कारि यथा विवेका ॥

दोहा-वास्तुकर्म करि भवनको, गवन कियो गुरु गेह ।
भूप कहन लागे कथा, यथा विदेह सनेह ॥

चौपाई ।

कोउ नहिं जनकसरिस सत्कारी । मैं लीन्हों सब भुवन निहारी ॥
गये बरात मनुज बहु लाषा ।को अस जिहि न पूरि अभिलाषा॥
जनकराज गुण शील बडाई । प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥
सुनि सुनि अतिहरषहिं सब रानी। कौसल्या बोली तब वानी ॥
सुनहु भूप मम मति अकुलानी । जिय संदेह न जाय बखानी ॥
डरत रहे गवनत अँधियारे । कुँवर कौन विधि निशिचर मारे॥
थकत उठावत भाजन हाथा । हरधनु किमि तोर्‍यो रघुनाथा ॥
विहँसि भूप बोल्यो तब वानी । औरहु अचरज सुनु महरानी ॥
गौतमको आश्रम रह सूना । कौशिक गे लिवाय दोउ सूना ॥
प्रविशत आश्रम गौतमनारी । नाम अहल्या जासु उचारी ॥
रही शापवश अन्तर्धाना । प्रगट भई पूज्यो विधि नाना ॥
जनकनगरते आवत माहीं । मिले कोपि भृगुपति मुहिं काहीं ॥

दोहा–धनुषभंग अपराध शुनि, कीन्ह्यों कोप अपार।
करन चहत संहार जनु, कंधहि धरे कुठार॥

चौपाई।

हमतौ शुनि रघुकुल कर नाशा। भये विकल तजि जीवन आशा॥
तहाँ जाय यह लाल तुम्हारा। कोमल कठिनहुँ वचन उचारा॥
छीनि शरासन भृगुपति केरो। दीन शांत करि कोप घनेरो॥
यह वासिष्ठ कौशिक प्रभुताई। और हेतु नहिं परै जनाई॥
सुनि रानी मन अचरज मानै। राखे कुँवर मोर भगवानै॥
भूपति कह्यो सुनो सब रानी। पुत्रवधू प्राणहुँ प्रिय मानी॥
नयन पलक सम राखेहु नीके। दिनादिन दून उछाह न जीके॥
रंच विसंच होन नहिं पावै। नेक विषम तिनके नहिं आवै॥
जनकराज अरु रानि सुनैना। चलतसमय मोंसे कह वैना॥
सौंपौं तुमहिं कुमारी चारी। तुमहिं मातु पितु परहु निहारी॥
दून होय सुख नैहर केरे। तब मम वचन सत्य जे टे॥
केकय सुता कही कर जोरी। होइ यहै गिरा सति मोरी॥

दोहा–पुत्रवधू अरु पुत्र मम, सबते प्राण पियार।
औंघाते सुत नींदवश, चलहु करहु ज्यवनार॥

चौपाइ।

अस कहि उठीं सकल तहँ रानी। पट नवीन चेरी बहु आनी॥
आप पहिरि सुत तिय पहिराई। कुँवरन भूपहुपहँ पठआई॥
भोजन वसन पहिरि महराजा। कुँवर समेत महा छवि छाजा॥
शुद्ध सतोगुण सुन्दररूपा। भोजनभवन गयो पुनि भूपा॥
रानी पुत्रवधुन लै आई। निज निज संग सकल बैठाई॥
भूप संग बैठे सब भाई। होन लगी ज्यवनार सुहाई॥

गावहिं रसिआउर सब नारी । बजै मृदङ्ग बीण मनहारी ॥
सियकरसों भूपहि परसावैं । श्वशुर हाथ पुनि नेग दिवावैं ॥
सकुचहिं दुलहिन दूलहदेखी । भोजन करैं न अशन विशेखी ॥
करि आचमन उठे नरनाहू । धोइ चरण कर गुनि सुख लाहू ॥
बैठे पुरट पीठमहँ जाई । तीनिउँ रानिनि लियो बुलाई ॥
कह्यो वदन देखनको चारा । करवाओ लागै नहिं बारा ॥

दोहा-राजकुमारिन चारिहू, रानी आशु लिवाय ।
बैठाईं भूपति निकट, कुलतिय वृद्ध बुलाय ॥

कवित्त ।

नृपति निकट सिय सासुकी लिवाई आई, ता क्षण मृगाक्षिणके हेरे हियो हरिगो।रघुराज उलही दुकूलनते अंग ओप, चंचल चमक चौंध लोचनमें भरिगो ॥ घूँघुट उघारि मुख देखत दशा विसारि, फैलत प्रकाशपुंज चंद मंद परिगो।गिरिजा गिरा गुमान ब्रह्म जाको भूल्यो भान, कामवाम रूपको बखान कूच करिगो॥ रति रंभा मेनका तिलोत्तमाहू पूर्व चित्ति, उर्वशी घृताची आदि अप्सरा अपार हैं । रघुराज अवध अधीश जूके अंगनमें, गावैं नाचि रंगनमें अंग सुकुमार हैं । शक्ररानी ब्रह्मरानी शंभुरानी विष्णुरानी, देवरानी जेती आईं अवध अगार हैं । मिथिलानेरन्द्रकी कुमारीको बदनचंद्र, देखि मंद परीं जैसे इन्दु आगे तार हैं ॥ कौसला हुलसि हँसि छोह सो पतोह मुख, घूँघुटको टारचो प्रभा पुंज दिशि छायगो । परचो सबहीके चख चौंधासो चहूंघा चितै, चकित चितौन लागी भानुतौ भुलायगो ॥ रघुराज पलक निवारिकै निहारि छके, रति रुचिराईको गुमानहूं हिरायगो । फैलत प्रकाशको पसारा अभिमान सारा, तारनसमेत तारापतिको परायगो ॥

दोहा—कह्यो तुरत कैकयसुता, वदन दिखाई नेग।
जनकदुलारीको अबहिं, देहु महीपति वेग॥

कवित्त।

बोल्यो रघुराज राजराज शिरताज सुनो, कैसे करौं पूरो काज
लाज करि हारौंगो। करतो विचार बार बार मैं खभारहीसों। होत है
लचार जिय कैसे निरधारौंगो॥ भूषण वसन गेह गाउँकी चलै
कौन, संपाति सकल ढूँढि ढूँढि मुख वारौंगो। अवधकि साहिबी अम-
रपाति साहिबीहू, तूलिहै न नेक जो अनेक दयडारौंगो॥ लोकनकी
लाज लैकै शीलको बनाय सांचो, चित्रको रचाय चित्रकारके मद-
नको। शैलजाते शारदाते तैसेही पुलोमजाते, शोभा लियो छीनि
रति मदके कदनको॥ भाषौं सत्य रघुराज आजु सुनो प्यारी
कारि, सुन्न सुंदराईते त्रिलोकके सदनको। सुधा लै सुधाकरकी लूटि
वसुधाकी द्युति, हहकै बनायो विधि जानकी वदनको॥

सोरठा—रहिहौं ऋणी सदाहिं, कहा देउं कछु जँचत नहिं।
दीबेको कछु नाहिं, वदन दिखाई नेगको॥

चौपाई।

अस कहि पाय परम अहलादा। दियो महीपति आशिर्वादा।
पूत पतोह जियें युग चारी। अवध प्रजा नित करहिं सुखारी।
पुनि बुलाय तीनिहुँ पटरानी। कह्यो बुझाय महीपति बानी।
सोपाति किह्यो पतोहुँन केरी। रंचक नहिं विसंच जिहि हेरी।
ये नववधू विदेह दुलारी। नयन पलक सम करि रखवारी।
यामयाम मह सुधि सब लैकै। कीन्ह्यों सोपत सब सुख दैकै।
कनक भवन सीता कहँ देहू। मांडविको मणिमंदिर गेहू।
देहु उर्मिलाको सुखवासू। श्रुतिकीरति कहँ प्रीति विलासू।
पृथकपृथक दुलहिन लै जाई। निज निज भवन देहु बैठाई।

सुनि भूपतिके वचन विचित्रा। कौसल्या कैकयी सुमित्रा॥
चारिहु दुलहिनि लियो लिवाई। पृथक्पृथक् दिय भवन बताई॥
महाविभूति भरी जिन माहीं। स्वप्नेहु शक्र लख्यो जो नाहीं॥

दोहा–सब विभूति वैकुंठकी, अवध माहिं दरशाति।
अहिपति शंकर शारदा; वर्णत नाहिं सिराति॥

चौपाई।

ते महलनमहँ राजकुमारी। निवसत भईं लहत सुख भारी॥
पुनि भूपति कढि बाहर आये। सचिव सुमंत तुरंत बुलाये॥
कह्यो जु मिथिलाते जन आये। दुहितनके सँग जनक पठाये॥
सहित सकल सोपत सतकारा। वास करावहु विशद अगारा॥
जाय सुमंत कियो तिहि भाँती। मिथिलापुरवासिन सोइ राती॥
वसे सकल सुख संहित अगारा। वर्णत दशरथ कृत व्यवहारा॥
भूप शयनहित भवन सिधारे। गावत हित गायक पशु धारे॥
रानी निज निज मंदिर आईं। सुत हित गौरि गणेश मनाईं॥
राम सुहृद जेठी कुल नारी। जाय रामसों वचन उचारी॥
कनक भवन कहँ चलहु पियारे। अर्द्ध निशा पाहरू पुकारे॥
करकरि करमह चलीं लिवाई। मंद गवन लज्जित रघुराई॥
पलटी सखी राम पहुंचाई। लै गवनी पुनि तीनिहुं भाई॥

दोहा–तिनके तिनके भवनमहँ, बंधुनको बैठाय।
आप जागरन करन हित, गावन लगीं सुहाय॥

चौपाई।

भई महा सुखछावनि रजनी। गाय बजाय बितायो सजनी॥
वर्णन करब कथा सुख मोईं। मम अधिकार अहै यतनोईं॥
रास विलास कथा नहिं जानौं। दासते अधिक और नहिं मानौं॥
भये अनेकन रसिक शृंगारी। ते रसरास कथा विस्तारी॥

नहिं शृङ्गार कथन अधिकारा । ताते कह्यों न राम विहारा ॥
सुखित शयन कीन्हें रघुराई । आगिल कथा सुनहु मनलाई ॥
सो रजनी सबहुँनगर मँझारी । अवधप्रजनको किये सुखारी ॥
घर घर बाजहिं बाजि बधाऊ । राम आगवन भयो उराऊ ॥
अंतहपुरमहँ सब रनिवासा । करहिं अनेकन नाचि तमासा ॥
तिहि रजनी सोयो नहिं कोऊ । रह्यो जु भीतर बाहर सोऊ ॥
चारिदंडनिशि रहिगै बाकी । लालशिखा धुनिभयसुखछाकी ॥
पुनि प्रगटी पूरव अरुणाई । कोक थोकको शोक मिटाई ॥

दोहा–चटकाली चहुँकित चटक, बोलि उठी शुनि भोर ।
बोलन लगे विहंगवर, चाय भरे चहुँओर ॥

चौपाई ।

तहँ बंदीजन अवसर जानी । मागध सूत महामुद मानी ॥
पृथकपृथक महलन मुदपागे । द्वार द्वार यश गावन लागे ॥
भूपति विरद विरति सविवेका । करणी जो सुरपतिहु न छेका ॥
लै इक्ष्वाकु वंश ते आजू । गायो यश यश दशरथ राजू ॥
उठ्यो भूप सुमिरत भगवाना । रघुपति दरशनको ललचाना ॥
प्रातकृत्य कारि बाहर आई । सावधि कियो मज्जन मन लाई ॥
दीन्ह्यों दान वित्त बहु गाई । लहैं राम मंगलयुत भाई ॥
साजि पट भूषण सचिव बुलाई । बैठ सभामहँ दशरथ आई ॥
उतै कुँवर सब उठे प्रभाता । प्रातकृत्य कीन्हें अवदाता ॥
मज्जन कारि दीन्हें बहु दाना । साजि भूषण अंबर विधि नाना ॥
तिहि अवसर नृप दूत पठाई । लियो चारिहू कुँवर बुलाई ॥
गये पिता ढिग कियो प्रणामा । पितु आशिष दे लहि मुद धामा ॥

दोहा–शीश सूँघि बैठाय ढिग, आनिमिष, निरखि स्वरूप ।
लहि नरेंद्र आनंद अति, बोल्यो वचन अनूप ॥

भयो विवाह सयान अब, भयो चारिहू बन्धु ।
ताको तस तुम मानियो, जाको जस सम्बन्धु ॥
धर्मरीति नृपनीति सब, प्रीति प्रजनसों ठानि ।
बिलसहु नित कोशलनगर, दयादीठि दृग आनि ॥
सुनि पितुशासन कुँवर सब, लीन्हें शीश चढाय ।
भोजनको गवने भवन, पठई मातु बुलाय ॥
यहि विधि नित निवसत अवध, सेवत पितु दिनराति ।
बीतत काल अनंदसों, कथा न कहे सिराति ॥
अष्ट याम यक दिवसको, वरणो मति अनुसार ।
सुनैं रसिकजन हुलसिअति, सुन्दरशतकशिकार ॥

कवित्त ।

ज्ञान वैराग्य भक्ति योगमें अनन्त सुख, रसिक अनेकन शृँगार अधिकारी है ॥ केते राम रास गाये केते अष्टयाम गाये, केतहूं शिकार गाये कवित उचारी है ॥ मेरो अधिकार नहिं और रस केरो कछु, हम दशरत्थलाल सेवा सुखधारी है । ताते रघुराज थोरी वरणै शिकारे गाथा, रसिक सुजाननको लागै प्राणप्यारी है ॥ शांत औ शृङ्गार दास्य वात्सल्य सख्य रस, भक्तजन पांचै भावनाको भाव धारे हैं । मोहिं गुरु दीन्ह्यों दास्यभाव ताते रघुराज, सत्य सत्य सत्य ऐसे वचन पुकारे हैं ॥ प्रभुके समान स्वामी सख्य रस वारे पिता, वातसल्य वारे पितामहसे उचारे हैं । शांत वारे गुरु हैं शृङ्गार वारे मातासम, भ्राता बंधु मित्र दास्यवारे ते हमारेहैं ॥ चारिदंड जानिकै त्रियामा मतिधामा यंत्री, बादन विविध लैकै द्वारदेश आये हैं । जानकीरमणके जगावनके हेतु सबै, भैरों राग भरि अनुराग सुख गाये हैं ॥ रघुराज राजशिरताजके दुलारे वीर, जागिये जगतपति जग सुख छाये हैं । भुवनप्रशंस निज वंश अवतंस जानि,

आवत दिवाकर दरश ललचाये हैं ॥ हौं तौ मुखसमता न पायों सो
लजायो रह्यों, अब तो प्रकाशहूको चहत गवायो है। ऐसो कै
विचार लैके तारन अपार सँग, अत्रिको कुमार पारावारमें
दुरायो है ॥ विलसे कमल जाय जानि जानकीके जानि,
शोर खगवृन्द चन्द्रहास सों सुनायो है। रघुराज शवरे दरश ललचाई
अरुणाईदिशि प्राची अनुरागको जनायोहै ॥ मिलन लगे हैं शोकी
कोकी कोक ह्वै अशोक, कोकनद कली अली गली पाइ भागेंहै।
शीतल सुगंध मन्द पवन पराग भरो,प्रसरन लाग्यो लालशिखा र
रागे हैं॥बिरले गगन तारे हारे दलही से शूर, परत निहारे झल म
ज्योति जागे हैं । रघुराज वंश गुरु ईशकी सहाय कीजै, उदयमान
भानुके दनुज सँग लागेहैं ॥ वंदिन उचारे वैन सुनिकै नरेश प्यारे,
नींदको बिसारे द्वारदेश पगु धारे हैं।नैन अरुणारे मुख बिथुरे सुकेश
कारे,ताजे शिर धारे नाहिं भूषण सँवारेहैं ॥ लटपट परत पग म
आलस वारे,खसत वसन करकमल सुधारे हैं । सेवनकी आशवारे
सेवक अपारे तिमि, रघुराज रामसखा आइकै जुहारे हैं ॥ सम
अनन्द कर मज्जन निकेत जाय, पावन जगत दन्त धावन कर
भे। कंचन कुलिश कृत कुम्भनि सुगंध नीर, न्हाइ रघुवीर प
पीत पहिरत भे ॥ दीन्ह्यों अर्घ्य अंशुमानै उपस्थानै कियो फे
संध्या सविधानै करि आनद भरत भे। रघुराज चन्दनकी रेख
अशेष शोभ, दानै असथानै फेर आयकै अरत भे ॥ दीन्ह्यों तिल
चुंद शधेनु हेमधेनु पुनि, तेरह सहस्र धेनु दीन्हें हेम शृङ्गी हैं।
अवनी अभूषण दै अन्न दीन्हें अम्बर दै,शय्यादान दीन्हें गज वा
बहु रंगी हैं। अगणित आये द्विज वृंदन अनन्दनसों, पूरे मनका
रघुनन्दन उमंगी हैं। रघुराज राम दान धाराके प्रवाहभये, दरिद्र
दरिद्री विप्र आनँदके दंगी हैं। तर्पन हवन आदि प्रातकर्म कै

पुनि, दीन्ह्यों माथे मुकुट अनन्त भानुभासी है। जामा जरकसी वारो फेटो मुक्त छोरवारो, हीरनको हारो धारो अंगद विभासी है॥ करमें कटक अंगुलीन मुन्दरीन रचि, कटि करवाल पीठि तूण शरराशी है। धारे धनु एक हाथ एक हाथ सखा हाथ, आयो रघुराजसभा अवध विलासी है॥ औसरविचारि पौर प्रकृती अमात्यगण, सखा सरदारे ते सिधारे दरबार हैं। पुरकाज भृत्यकाज गृहकाज राजकाज,अरज सहित निज गरज उचारे हैं॥ समुझि निदेश दै दै कीन्हें कृतकाज तिन्हें, रघुराज धर्मयुत हुकुम निकारे हैं। सुखको पसारे दीन दुखन निवारे न्याउ, नीकेनिरवारे प्रजा कीन्हें जयजयकारे हैं॥ वासर विचारि डेढ पहर व्यतीतो राम, बिदा करि मंत्रिनको सखा बयठारे हैं। लषण भरत शत्रुसूदन पठाइ दूत, तुरत बुलायो कै शिकारके विचारे हैं॥ गावे लगे गानवारे नाचैं लगे नृत्यवारे, बाजन बजावैं वाद्यवारे सुर धारे हैं। राज शिरताज महाराजके दुलारे राम, जन रघुराज पीछे चारु चौंर ढारे हैं। बाँकी पाग पेंचैं बाँकी कसी शिर पेंचें बांकी, भ्रुकुटीन ऐंचैं बाँकी कलँगी सँवारे हैं। बाँकी करवाले बाँकी कसी कवि ढालें बाँकी, पीठि ढपी ढालें बाँके नयन अरुणारे हैं॥ रघुराज यौवन ललाइ मुख बाँकी फबै, बाँकी गति बाँके सखा संग अनियारे हैं। आये श्रीलषण प्यारे कैकयी कुमारे तिमि, सभा पगुधारे शत्रुदमन दुलारे हैं॥ रामको प्रणाम करि बैठे बंधु आस पास, हास इतिहासन अनेक परकाशे हैं। भुवन विभूषणते भासे भास भासवान, सज्जन सुशीश शीतभानसे विलासे हैं॥ रघुराज लोने लोकपाल उपमासे खासे, बैठे आमखासे काम धामको निरासे हैं। राम मुख वचन सुधासे सुनिबेके प्यासे, हियके हुलासे मृगयाके गौनआसेहैं॥ जानि रुख बंधुनकी खेलियो

शिकार आजु, विपिन मँझार राम गिरा यों उचारी है। भाई
सखा बोले एक बार सबै मोद भरे, आछी कही आप अभिलाष
हमारी है ॥वेगि प्रतीहारको बुलाइकै निदेश दीन्ह्यों, सैन्यको
सजाइये शिकारकी तयारी है। दूत दौरि द्रुतही दिवाइ दियो दुन्दु-
भीको, रघुराज आई सैन्य सुनत शिकारी है॥ गहे हाथ बंधुनको
गौने रघुनाथ तहाँ, होत भे मतंगजपै तुरत सवारे हैं। भाई स-
दार सखा ह्वै सवार सिंधुरपै, सबै प्रभु संग संग मंद गति धारे हैं॥
भूप चक्रवर्तीको निदेश वेश लीबे हेत, चले पितु द्वारे देश सुखमा
पसारे हैं। रघुराज धाम धाम ठाढ पुरवासी कोटि, काम धामवा
राम बदन निहारे हैं॥ शत्रुंजय सिंधुरपै सज्जित अमारी भारी, मो-
तिन किनारी झपी झूल जरतारी है। नेजे पाणिधारी राजवंशी
बडवारी भरे, आगू चली आवै वीर वाजिन सवारी है॥ लषण
भरत शत्रुसूदन विराजे संग, शोभित मतंगन शिकारकी
तयारीहै। जांगरे कलापैं यश विविध अलापैं अस, आयो रघुराज
दशरत्थ घरियारी है॥ पृथ्वीपाल मणिपाल पेख्यो प्रतीहार राम,
शासन जो होइ तौ शिकार खेलि आइये। सुनत नरिन्द्र इन्द्र
हुलसि हुकुम दीन्ह्यों, खेलिकै अखेटकको साँझलों सिधाइये।
सुनिकै कुमार मानि आनँद अपार चले, खेलन शिकार काहि वाजिन
धवाइये। तीरनसे तरणिसे तडितसे तानहींसे, तडके तुरन्तहीं तुरं
रंग छाइये॥ काढि पुर बाहर निहारचो चारु चमू राम, बंधुन
सखानि त्यौं हजूरी चतुरंगको। पृथक पृथक आवैं धुधुरि गगन
छावैं, ढंग दिखरावैं त्यौं मतंगन तुरंगको॥ रघुराज निकट प्रताप
सखा ठाढो सुखी, भाषै रघुराज भरि अतिशै उमंगको। भाइनकी
भृत्यनकी सखन सुहृदहूकी, सहजशिकारी सैन्य आवै ममसंगको॥
सोहै गोसवारे शीश साँवले सजीले खूब, नेजे रंग नीले चटकीले

त्यों तुरंग हैं । ढांपे पीठिढाल द्युति दीपाति त्यों हालैं कसी, कटिकखालैंउरमालैं त्यों सुरंग हैं ॥ रघुराज राजै राजवंशी शत्रु सैन्य ध्वंसी, जगत प्रशंसी भरे ज्वानीके उमंग हैं । आवत लषण लाल वीरनके मालमध्य, जापै आजु वारिये अनेकन अनंग हैं ॥ मदसे उमंग महीधरसे मतंग राज, मण्डित अखण्ड मंजु मदन सँवारे हैं । जटित अमारी भारी माणिक मणीनहूंकी, मंदगति मानी महा मेघन अतारे हैं ॥ डग मग महिमहँ धरहु धरत पग, सजित शिकार राजकुँवर सवारे हैं । रघुराज भूरि भीर लीन्हें रणधीर वीर, भरत कुमार आवैं सुखित शिकारे हैं ॥ माथनपै टोप झूलैं झिलिम सुझब्बेदार, कलँगी कलित बादलेक्की लोनी लाल हैं ॥ चामीकर कवच जटित दसताने पाणि, कसे ढालैं ढालैं त्यों करालैं करवाल हैं ॥ राजत तुरंगन मतंगन सतांगनमें, सरयूवनांगनमें जागै ज्योतिजाल हैं ॥ रघुराज राजैं राजवंशिन समाज मध्य, आवैं शत्रुशाल साँचो सह शत्रुशाल हैं ॥ एक ओर गर्वित गयंदन कतारे भारे, एक ओर हैवर हजारे वेगवारे हैं । एक ओर पैदर अपारे सबै शंखधारे, एक ओर प्रतीहारे सुयश उचारे हैं ॥ दुन्दुभी धुकारे सुनि दिग्गज चिकारे करैं, छावत दिगन्तनलौं धूरि धुंधुकारे हैं । रघुराज आये लक्ष्मीनिधिहुँ शिकारे प्यारे, सारे हैं हमारे मिथिलेशके दुलारे हैं ॥ एकै ऐंडवारे एकै सोहैं शूर सानवारे, एकै तेगवारे एकै तीछे तेग धारे हैं । एकवोजवारे एकै मनके सुमोजवारे, खासे खासे फौजवारे तुरँग सवारे हैं ॥ बांके बेसवारे रण कबहु न हारे मारे, रिपुन प्रचारे जग यश उजियारे हैं । रघुराज प्राणप्यारे अति अनियारे वीर, आवत शिकारे सखा सकल हमारेहैं ॥ शेरके समानजन लीन्हें सावधान श्वान, झूलन ढपान जिन वेग वेप्रमान हैं । चीते चारु चित्रसे लिखे हैं जे

विचित्र वेष, बांसा बाज बहरी गनावैं को न मान हैं ॥ सुघ
शिकारी जे शिकारकी तयारी किये, विपिन खिलारी शोधकारी
सहसान हैं । रघुराज संगमें हजूरी सैन्य पूरी लैकै, आवत सुमन्त-
सूनु सचिव प्रधान हैं ॥ पागे शीश हरित हरित काटि फेटे कसे,
कंचुक हरित रङ्ग रंचुक न ओर हैं । हरित तुरंगन मतंगनकी साजें
सजी, आयुध हरित पट छादित सुछोर हैं ॥ सावन विपिन सुख-
मासी चहुँ ओर छावैं, उपमा न जासु भट सुखमा करोर हैं । रघु-
राजसहित शिकारिन समाज आज, आवत निषादराज प्यारे सखा
मोर हैं ॥ चाय भरी चारु चतुरंग चमू बन्धुनकी, सखनकी सैन्य
त्यों सजीली सब आइगे । धूरि धुन्धकार बेशुमार आसमान छाये,
भासवान भास त्यों दिगन्तन दुराइगे ॥ रघुराज अवध नरेशके
दुलारे जात, सहज शिकारे भूमि भूरि भार खाइगे । दिशा गज भागे
लगे शेष फनफाटे लगे,कमठकी पीठि काचे घटसी नवाइगे ॥
कनक सँवारे बजे विविध नगारे भारे, आवत अषाढ मनो घन घह-
रारे हैं । जागरे अपारे यश विविध उचारे नव, नौबत धुकारे कर-
नाले शोर प्यारे हैं ॥ वाजी पै सवारे भये बन्धुन हँकारे राम, नेजा
कर धारे सखा सङ्ग पगु धारे हैं । सरयूकिनारे महा विपिन मझारे
दशरत्थके दुलारे खूब खेलत शिकारे हैं ॥ रघुराज आइकै निषा-
दराज विनय कीन्ह्यों, विपिन मझार एक सिंधुर बलंद है । सुनिकै
पुरुषसिंह सिंह लै शिकारी संग, तरल तुरंगको धवायो रघुनन्द है।
छोड्यो सिंह सिंधुरपै लीनी ललकार दैकै, केहरी धर्यो है कू
वेगकै अमन्द है । इतै मृगराज खायो काय गजराज कोरि, उ
गयो गोपुरको गर्वित गयन्द है ॥ आइकै प्रतापी सखा भाष्यो नाहिं
मृषा भाषौं, बाघ एक बैठ्यो देखि आयो यहि याम है । सुनत ही
चारों बंधु धाइ अति चाय भरे, दीन्ह्यों घाय नेजाकै करेजा ब

काम है ॥ ताहि ललकाऱ्यो सोऊ मऱ्यो कारि शोर भाऱ्यो, मानो यों पुकाऱ्यो रघुराजै कृतकाम हैं । जैसे ललकारि मोहिं माऱ्यो बरछीसो राम, तैसे ललकारिहौं तो लेतो तुव धाम हैं ॥ चीते चाय छूटे चारु चपल कुरंगन पै, तरल तुरंगन सखान हूं धवाये हैं । धऱ्योहै धऱ्यो है अस करत पुकार प्यारे, वाजीको धवाय केते नेजाको चलाये हैं ॥ वाह वाह भाषि रघुराजजू उछाह छाये, देत हैं इनाम सखा सुखी शिरनाये हैं । सखनके मारे त्यों मृगादनके मारे मृगनके यमसदनको जनम न पाये हैं ॥ कोई मृग मारै कोई शेरन सँहारै कोई, सिंधुर प्रहारे ल्याइ ल्याइ न्यारे न्यारे हैं । खेलिकै शिकारे सखा बन्धु सरदारे सबै, प्यारे अनियारे सरकारको जुहारे हैं । रघुराज ताही समै बीचसों वराह भाग्यो, सबै ललकारे धाये वेग वेशुमारे हैं॥ रामके प्रचारे वरि लषण दुलारे कढि, हन्यो कोल कुन्तलसों सरयू किनारे हैं ॥ ज्वरी बाज बांसे कुही बहरी लगर लोने, टोने जरकटी त्यों शचान सानवारे हैं ॥ लै लै सखा हाथनमें चारों बन्धु साथनमें, छोड़यो खग गाथनमें कूक दै पुकारे हैं ॥ गगन गगनचर गगनचरण धरे, धाये वीर वेगते गगनचर हारे हैं । रघुराज रामके निहारेते अपारे पक्षी, बसे अभिराम राय धामके अखारे हैं ॥ जानि दुपहर वेला सखा सब हेला करि, कारि सरयूमें रेला वाजि जल प्याये हैं, पुलिन निकुञ्जनमें भौंरभीर गुञ्जनमें, तजिकै तुरंग विशरामहित ठाये हैं ॥ जानिकै श्रमित सैन्य चैन भरि चारों बन्धु, ऐन ऐसे कुंजनमें बैठे मन भाये हैं । जुरिगै समाज रघुराज राजवंशिनकी, हँसत हँसावत शिकार सुख गाये हैं ॥ मातुनके भेजे मेवा करन कलेवा हेतु, ल्याये सूपकार सेवा आपनी दिखाये हैं । व्यंजन अनेक मनोरंजन सुधासे मंजु, भरि भरि चामीकर थारन

धराये हैं। चारों बंधु बाँटत सखान सरदारनको, हीरा हेम भाजनमें भोजन उराये हैं। रघुराज रामको सलाम करैं राजवंशी, अति त्कार सरकारनते पाये हैं॥ हीरा हेम भाजनमें भोजन करन लागे, चारों बन्धु मिलि सुखसिंधुमें नहाये हैं। निज निज हाथनसों मीठे मीठ कहि कहि, देत हैं सखान माधुरीको पुनि गाये हैं॥ कोई कहैं हँसि हाँसि हों तो नहिं पायो कछू; तापै फेंकि पयके कटो नहवाये है। रघुराज भोजनको भाजन लै भाजि सोऊ सरयूमें हिलि पकवाननको खाये हैं॥ कोई सखा कहैं मातु महारानी कौशिलाजू, राम तुमहूसों मेरी क्षोह अति करती। भेजे पकवा स्वाद सुधाके समान जाके, पायो तुम्हैं राम तुम्हैं नाहिं अनुसरती। जाइ राजमंदिरमें राम रावरेको काम, आप करौं अंबासों हमा नेह भरती। रघुराज देखौंगो तिहारो काज रघुराज, जननीसमा जको न तेरी मति डरती॥ लषण दिखावैं करि कर पसरावैं जब सखा लेन लागें तब निज मुख डारै हैं। सिगरी समाज हँसै सोऊ सखा हँसि अति, कहै रघुवीरै राम बंधुको निवारै हैं॥ हाँसी क हठि हमहीसों ये अनोखे लाल, रघुराज रावरेका मुख ना निहारै हैं। चक्रवर्ती जनक महीपके समीप माहँ, ज्यादे चारि वंधु दुलारे तौ हमारे हैं॥ रूसत सखानि जानि जाइकै मनावैं रा खाइ त्यों खवावैं कहि प्यारे तू हमारे हौ। लषण भरत अ सूदनको बोल बैन, सखन समान तुव मोहिं नाहिं प्यारे हौ। मीत मीत कहि कहि चारौं वंधु हिलि मिलि, तिनको कहत आ बहु मृग मारे हौ। श्रमको निवारि करि भोजन सिधारि च फेरि मृगयाको रघुराज अनियारे हौ॥ यहिविधि हँसत हँसा सुछाइ मोद, सखन खवाइ खाइ व्यञ्जन सुधा समान। अंच हेतु उठि जाइकै किनारे सबै, अमीसों करन लाग सरयू सलि

पान ॥ धोइ मुख कर परछालि पग बैठे आइ, सहित समाज चारों बंधु रघुवंश भान । सखन सुहृद मित्र भृत्यनको भाइनको, उठि २ दीन्ह्यों रघुराज निजपाणि पान ॥ सरयू किनारे कहुँ विपिन मँझारे तहाँ, निकट उतंग मुनि आश्रम रह्यो प्रधान । दुंदुभी धुकारे सुनि जानि पगुधारे राम, सहज शिकारे मुनि मोदित भयो महान ॥ बोलि युग शिष्यनको पठयो प्रमोद भरि ल्यावो तूलिवाइ चारों भानुकुल भासमान । चलि मुनि बालक सुविप्र दुखघालक,नरेशकुलपालकसों वचन कहे प्रमान ॥ नाम है उतंग गुरु जानिये हमारे राम, आपको हँकारे पगुधारेते बनत है।गुरु गुरुआनी मति अति हुलसानी तुव, दरश लुभानी पल कलप गनत हैं ॥ भाइनते संग चतुरंग सैन्य लै कै चलौ, महिष महान उतै मानव हनत हैं । रघुराज रावरेको दरश करत जन, धन्य धरणीमें होत वेद यों भनत हैं । सुनि मुनिशासन उछाइ छाये चारों बन्धु, धाये धरणीमें सबै वाहन बिसारिकै । पाछेते मतंगन तुरंग चतुरंग बली, पाउ नहिं पावैं धावैं वेग अति धारिकै ॥ कुँवर अवाई जानि लेन अगवाई मुनि,आये सुखछाई सब शिष्यन हँकारिकै । मुनिको विलोकि राम परे पदपंकजमें, रामको विलोके मुनि पलक निवारिकै ॥ ऋषि उर लाइ चारों बंधुनको मोद छाइ, आश्रम लिवाइ ल्याये सहित समाज है। चूमि मुख शीश सूंघि कंदमूल दैकै कछु, आशिष दियो सो बार बार कृतकाज है ॥ सुखमा निहारै वारै कोटिन अनंग शोभ, लोभि गयो मुनि मन देखि रघुराज है । जप तप नेम व्रत याग योग भूल्यो सबै, चित्रपूतरीसों चकि रह्यो मुनिराज है ॥ बहुरि मुनीशतिय चारिहू कुमारनको; सुखमा निहारनको निकट बुलायो है जाइ रघुनन्द मुनि नारि पद वंदि बैठे मातुनते अधिक दुलार तहँ पायो

है ॥ पोंछि मुख चूमि चूमि पूछैं भूख लागी प्यारे, है गई अने
आति कछू नहिं खायो है रघुराज ल्याई सो मिठाई मुनि म
भाई, विजन डुलाई निजपाणिसों खवायो है ॥ माँगो बिदा चहुँ
मुनीशसों कुमार सबै हर्षिकै महर्षि उतकर्षि अस गायो है।
चाहौं कछु करन आतित्थ रावरेको नाथ, तुम्हैं पूर्णकाम निगमा-
गम बतायो है ॥ रहो युग याम इत आति अभिराम राम, कीजे
अराम या अराम मन भायो है । सरयूके विपिन शिकारी मनह
वीर, रघुराज देख तुम्हैं जन्मफल पायो है॥ मानि मुनिशासन त्रिले
क दुखनाशन, रमे हैं मुनि आसनमें आनँद बढाइकै । ऋषि
उतंग तपोबलसों निशंक ऋद्धि, सिद्धि सुरलोककी विभूतिको बु
इकै ॥ साहित समाजै रघुराजै सत्कार काजै, प्रगटायो दिव्य वि
भूमें भूरि भाइकै । लोकनके लोकपाल अवनी अवनिपाल, देख्यो
सुन्यो है कहूं नैन श्रुति लाइकै ॥ हेमके हिमाचलसी हीरन जटि
मणि, मंदिरकी राजी मेघमंडललौं छैगई । चन्द्रशाला चित्रशाला
शयन विहारशाला, पाकशाला मज्जनकी शाला सब ह्वैगई ॥ भ
इनकी भृत्यनकी सखन सुहृदहूंकी पृथक पृथक शाला कंचन
वैगई । रघुराज हयशाला गजशाला रथशाला, लोकशाला शा
सम सरयूतट ज्वैगई ॥ दूधकी दहीकी घीकी मधुकी सिता
केती, सरित बहन लागीं पायसके पंककी । काल औ अ
ताजि नवल रसाल ताल, तरुनकी औली फली म
उतंककी ॥ मणिसी उदक भरी सरसी लसी है
हाटकके घाट मंजु कुंज हैं निशंककी । रघुराज स
शृङ्गारा देवदारा चारु, करहिं प्रचारा मुख सु
मयंककी॥ वसन अनेक रंग रंगके पुशाक बने, पादप झरन
जाकी जस भामना । रतन अनेकनकी जातिते जटित वर, भू

परन लागे जानि जन कामना ॥ भोजन प्रकार पकवान सुधाके समान ठाम ठाम राशि लागी धाम धाम छामना । सींचिगईं गली शुद्ध सलिल सुगन्धहींते, रघुराज कौन कहै देवराज गामना। खासे आमखासनमेंभासवान बासनमें मणिकेप्रकाशनमें सकल सुपासे हैं। सब दुख नाशनमें रतनके आसनमें सरस विलासनमें राजसुत भासे हैं॥ देवसम दासनमें करैं कुलिशासनते, बीते घटी हाँसनमें सखा आसपासे हैं। रघुराज राजसिंह आसनमें राजें राम, करत हुलासनमें विविध तमासे हैं। अप्सरा अपारा नटसाराको पसारा कियो, रूपकी अगारा केशभारा लचै लंक है। केतीं देवदारा सजीं सकल शृङ्गारा तान, लेती मनोहारा मुख पूरण मयंक है॥ वाजे डफगारा बीन बाँसुरी सितारा चारि, तारा त्यों तितारा मुख लावतीं निशंक हैं । रघुराज रीझैं सरदार दे इनाम धारा, अवधकुमारा कहँ महिमा उतंकहैं॥ जौन मन भावै जाके सोई तहां तौन खावै, जाके मन आवै जौन सोई तौन पावै है। भूषण वसन भावै तौन तहां परिधावै, जौन उपजावै चित सोई हाठि आवै है॥ महिमा महार्षिकी प्रहर्ष वरषावै खूब, रघुराज कोई नाहिं चित्तको चलावै है। भावै नाहिं औध अस सैन्य सब गावैराज, सुतन सुनावै अब ह्यांते नाहिं जावै है ॥ आइकै अखर्व सर्व गँधरब गान करैं, भृत्य भृत्य निकट सुनृत्य होन लागी है। लोकपके मौजसे प्रमोदी सब फौजवारे, भवन बिसारे राजवंशके समागी है॥ हल्ला है रह्यो है सो महल्लन महल्ला मंजु, कोई नाहिं तल्ला लेत कोई सो सुभागी है। रघुराज पाये खान पान सममान खूब, भानुवंशके निशान दूनी द्युति जागी है॥ चौरवारे छत्रवारे पंखाके झलनवारे, पानदानवारे बहु पकिदान वारे हैं। आतपत्रवारे मोर मुछेल करनवारे, अनुपम अतरवारे राजत हजारे हैं॥

माहिमा महर्षिंकी निहारे रघुवंशवारे, न्यारे २ विभव अगारन अगारे
हैं । छरीवारे सोटावारे सेवक अपारे खरे, रघुराज अवध दुलारेके
दुआरे हैं ॥ देवता विमानवारे विभव निहारे नव, हारे हिय लाल-
सा बढाइक अपारे हैं । माहिमा महर्षिंकी उचारे मुख बार बारे,
जैसे सतकारे दशरत्थके दुलारे हैं ॥ रघुराज औधवारे प्यारे सब
सैन्यवारे, वचन पुकारे काज पूजिगे हमारे हैं । हेला करें खेला करें
कुँवर नवेला वीर, रेला मेला माचिरह्यो सरयूकिनारे हैं ॥ मुनिकृ
पाइकै अपार सतकार तहां, राम चारों बंधु ऋषि निकट सिधारे
हैं । नाइ शीश जोरि पाणि सविनय विनय कीन्ह्यो, चाहत चल
चित्त सदन हमारे हैं ॥ रघुराज शासन जो पाऊँ तो अवध जाऊँ,
रावरी कृपाते न अघाऊँ युग चारे हैं । भाई भृत्य सचिव सुहृ
सब सैन्यवारे, दोऊलोक भूले पाइ आप व्यवहारेहैं ॥ अति उत्क
र्षिं वारि वर्षि निज नैननिसों, हर्षिके महर्षि चारों बंधु उर लाइकै ।
शीश सूँघि चूमि मुख हाथ दै सुमंत्र पढि, पुलकि शरीर बोले
बैन बिलखाइकै ॥ रघुराज जैसी होइ हृदय तुम्हारे अब, विनी
विचारे करौ तैसी चित चाइकै । तनु इत रैहै मनरैहै रावरेके सँ
रसना न राखी रस जाइये सुनाइकै ॥ मुनि पद वंदन कै वि
रघुनन्दन है, होतभे अनन्दन सुस्यन्दन सवारे हैं । सबै राजनं
जुहारे कुलचन्दनको, बाजि उठे एक बार वृन्दन नगारे हैं ।
रघुराज चली चतुरङ्ग मग मंद मंद, राम मुनिनन्दनको बु
हँकारे हैं । माहिष बेलंद कहा करै जन कंदनको, दीजिये बता
ताहि दंडन सिधारे हैं ॥ करका उठाइ मुनि बालक बताइ
गये निज सदन सिधाइ अतुराइकै । रथका विहाइ राम महि
युद्ध काम, शत्रुंजय नाम गज चढे आशु आइकै ॥ रघुराज भ
लषण शत्रुसूदनहूँ, सिंधुर सवारी किये चापन चढाइकै । केक

मतङ्ग आवैं और नहिं संग जावैं, कह्यो सरदारनको शासन सुनाइकै ॥ कुँवर छबीले त्यों रँगीले राजवंशी राजैं, गजन मदीले चढि चले चटकीले हैं। हौदन दचीले तरु टूटत डरीले शैल, होत हैं फटीले शेष फन चलकीले हैं ॥ रघुराज लीले करि नाग नीले नीले भ्राजैं, पूरब पवन पाइ मानो मेघ नीले हैं। ढीले नहिं कुँवर शिकारके सजीले सबै, पीलपाल आगे आगे पेलें सबै पीले हैं ॥ गजन गरट्ट गयो जहां वन ठट्ट लाग्यो, महिष झपट्ट कीन्ह्यों तहां झट्ट पट्ट है। कोइ गज पट्ट परे कोइ गज चट्ट भागे, विगत खटक्क वीर मारे बाण पट्ट है ॥ महा उदभट्ट कीन्ह्यों माहिष रपट्ट खूब, धावत लपट्ट सो गयंदन लपट्ट है। परम विकट्ट नट्ट बट्टहीसो धारे वेग, रघुराज आयो राम निकट निपट्ट है ॥ कान लगि तानिकै कमान बाण मारचो वेश, भानुकुल भान रघुकुलको प्रधान है। माहिष महान भेदि सायक समान भूमि, मेघके समान तऊ नेकु न परान है ॥ आवै समुहान करि वेग बेप्रमान सहै, शस्त्रन अमान तब लषण सुजान है। वारन विहाइ काढ्यो शीश दै कृपान सो, विमान चढि कीन्ह्यों वयकुंठको पयानहै ॥ वाह, वाह कीन्हें सबै सुभट उछाह छाये, लषण ललाकी बाँह पूजत उमाहते। अनुजको कीन्ह्यों हिय माँह हंसवंश नाह, बहुत सराह्यो सुखसिंधु अवगाहते ॥ रघुराज पावै कौन वीरताकी थाह तेरी, शूरनकी शूरता है तेरियै सनाहते। भरि उतसाह है हमेश जयसाह रघुकुलतो पनाह पावैं तेरी बाँह छाँहते ॥ चित्र मृग शृमरग वैगन विलोकि बन, ढीले चटकीले ग्राम सिंह चले धाइकै। पीछे राजकुँवर धवाये हैं तुरंगनको, धाये हैं मतंग पीछे वेगन बढाइकै ॥ रघुराज सिंहके समान सहसान गहे, विविध मृगान कोपि कुत्ते अतुराइकै।

रामजूके श्वान इतै खींच वनजीव उतै, गोपुरकी ललना ले
जातीहैं छुडाइकै ॥ काननमें करत कुतूहलको कमनीय, कुँवर
समेत कोशलेशके कुमार हैं। करत कुरङ्गनसों कुन्तलकी केलि
कहूं, कलाके कलापी काम कांतिके अकार हैं ॥ कालसे कराल
केहरीपै कारि कारि कोप, कायके त्रिकूटै कूटै कारिकै चिकार हैं।
कारि कारि कुधरसे कुंभनमें अंकुशको, रघुराज करत शिकार
सुकुमार हैं ॥ खेलि खेलि खेटकको खूब खूब खुश ह्वैकै, विपिन
अखंड खंड करै खुलि खेले हैं। खेचरसे तेज खासे खेचरसे शोल
करै, खेचरके खेचरके गाति वाजी रेले हैं ॥ रघुराज राजै रघुचन्द्र
ढिग खेचरसे, खूबीके खजाने खोले खेत खग्ग खेले हैं। खासे
आमखासवारे सखा खास फौजवारे, खाविंदके प्यारे रघुवंशी
अलबेले हैं ॥ चमू चतुरङ्ग रघुचन्दकी चली है चाय,
चतुर शिकारी एक चटक बखानो है। चंडमुण्डहीसों चंड चंड
अंशुहीसों अंशु, परम प्रचण्ड एक खडगी दिखानो है ॥ शीशमें
सुमेरु कैसो शृङ्ग है उतंग शृङ्ग, गर्व है गयन्द कैसो बडो बलवानो
है। रघुराज चटक चलीजै वध कीजै ताहि, अबलों न ऐसो कहूं
जन्तु दरशानो है ॥ सुनत शिकारी बैन धीर धनुधारी भैन, चले कै
तयारी चारों बंधु वर वीर हैं। पेलत मतंगनको रेलत तुरंगनको
आये जहां ठाढो गैंडा गाढो बिन पीर है ॥ रघुराज देखत भरत
चन्द्र चाप धार्‍यो, झलकै गयन्द हन्यो ताको एक तीर है। खड
गीन खेत आयो कोपित कारिदै धायो, भरत बचायो गुहरायो रघुवीर
है ॥ दन्तनसों दाबैं दन्ती खडगी बचावै खूब, रेला रेली ह्वै रही है
गैंडा औ गयंदकी। चारोंओर घेरिसबै राजन किशोर कारि, और
दीन्हीं मारवान बर्छिनके वृन्दकी ॥ घायलसो घूमि रह्यो खडगी
घमंड भरो, नेजा नोक लागी शीश कैकयकि नंदकी। निफारि धँसी

सो भूमिगैंडागिरयो घूमि घूमि,खासीरघुराजवाणीकढीरघुचन्दकी॥ भरतकी बार बार करत प्रशंसा राम,सकल कुमार लागे करन बखान हैं। बरछी तिहारी लगी तिरछी निफारि गई, खडगी रह्यो सो काल मेघके समान हैं॥ रघुराज भरत निछावर करत वीर, राम पहिरावे इतै बन्धु भूषणान हैं। भूषण वसन पहिराइ उतै देवदारा, गैंडा कहँ लैकैकीन्ह्यो गोपुरपयान हैं॥ सलिलहुलासी भई प्यासी सब सेना तहां, अवध निवासी सरयूके तीर आये हैं। पानके पियूष सम नीर रणधीर सबै, तैसै वाहनान पयपानको कराये हैं। राज शिरताजके कुमारसो निषादराज,रघुराज आइकै शिकार काज गाये हैं। नक्र एक वक्र महा अक्रहीके:सिंधुरसों, सरयू किनारे बंधु मेरे देखि आये हैं॥दुवन प्रतापी सखा बोलिकै प्रतापी तहँ; परम प्रतापी राम वचन उचारे हैं। पापी ग्राह गेरि चढि गैयरमें मारो जाइ, थापि तेरी वीरता प्रवीरन अपारे हैं॥ रघुराज सुनत सखा सो पषा पोंछि पाणि, त्रिसखा त्रिशूल लिये चष अरुणारे हैं। गैयर सवार गयो ग्राहपै दरूरदार, पाछे शत्रुशाल लाल सुखतसिधारे हैं॥ महा विकरार गज पर्वत अकार क्रोध, सायो है करारते त्रिशूल ताहि मारयो है। मकर महीधवसो माखिकै मतंगजको, ग्रस्यो गांसि गाढो गोड गैयर चिकारयो है॥ गिरत गयंदको निहारि शत्रुशाल लाल, मारि चक्रबान नक्र वदन बिदारयो है। रघुराज ग्राहते छुडायो ज्यों गोविंद गज, पकरि वितुंडशुंड तैसही उबारयो है॥ विक्रम त्रिविक्रमसों देखि शत्रुसूदनको, वीर वर वदन बखाने बार बार हैं। अनुज उछाही आई रामको सलाम कीन्ह्यों, लीन्ह्यों अंक अभिराम कौसलाकुमार हैं॥ रघुराज पोंछैं मुख फेरैं पाणि फेरि फेरि, हेरि हेरि हियरे लगावैं दै दुलारे हैं। खासीकरी खासीकरी खासीकरी बांके वीर,वीरता विदित महिमंडल मझार हैं॥ खेलत शिकार चहुँ

ओर वन ठोर ठोर, जानि दिन थोर वाणी सहित निहोरकी। भाषी सखा जाइ राम ठोर कर जोरि जोरि, ऐसी है रजाई पिता भूप शिमोरकी ॥ रघुराज आइयो अजारेहीमें भौन ओर, चलो चितचो कीन्ही क्रीडा सुखओरकी। सुनिकै प्रतापी वैन चमू चतुरंग फेरयो, अवधकी ओर चली अवधकिशोरकी ॥ मंद मंद चलत गयंद मग मतवारे, तरल तुरंग बहु रंगनके झमकै ॥ छाइ रह्यो रथनको घर्घर धरामें शोर, सैन्य भार पाइ कौलकूर्म पीठ धमकै ॥ बोलत नकीब सुखसीव रघुराज आगे, वीरनकी वीरता दिशाननलौं दमकै। साँझ समै चारु चतुरंग रघुनंद जूकी, ओघ अमरा आइ चंचलासी चमकै ॥ बजत निशानन दिशाननलौं छायो शो फहरै निशान अंशुमानको छपावते । नौमत झरत सुर भव सुभूमि भूरी, बोलत नकीबवृन्द परम उरावते ॥ रघुराज रथ घह रानि घनही सों घोर, वाजिनके वारणके शब्द अति भावते। हल्ला परयो अवध महल्लन महल्ला मध्य, खेलिकै शिकार भूप लल्लाचारि आवते ॥ शरदघटासी ऊँची अमल अटामें चढीं, बिज्जूकी छ्वा छटा छावै पुर नारी हैं। चितै चतुरंग चमू भरिकै उमंग उर, सा आरतीको लीन्हें चामीकर थारी है ॥ रुचि रुचि रंग रंग विवि प्रसून लाजा, हर्ष उतकर्ष कीन्हें वर्षन तयारी हैं। रघुराज साहि समाज राजवंशिनते, आवैं कौसलेशजूके कुँवर शिकारी हैं ॥७८॥ दूब दधि रोचन धरे हैं मग चारों ओर, नगर विराजे रम्भ खम्भ द्वारे द्वारे हैं। यूथ यूथ नारी नर ठाढे हैं दरश आशी, ह्वै ह्वै मुखराशी राजकुँवर निहारे हैं॥ जस जस नगर धसाति चतुरंग चारु तस तस पुरजन धावत सुखारे हैं। देखि रघुलालको निहाल होत रघुराज, भाषै भूप लाडिले हमारे प्राणप्यारे हैं ॥ अवध बजार वीथि आई है सवारि जब, देखि पुरनारी तन मन धन वारी है।

चामीकर थारनमें आरती उतारी आशु, वरषैं प्रसून लाजा मोद भार भारी हैं ॥ लेतीं बलिहारी मनहारी मंजु मूरतिकी, राजमाधुरी निहारि पलक निवारी हैं । रघुराज कोटिन अनंग छबि वारों छबि, वारी बैसवारी देखि छैलनशिकारी हैं ॥ मंद मुसक्याइ लेत जियरो लुभाइ नैन, पथ ह्वै हिये में आइ फेरि टारे ना टरैं । कोटिन अनंगनकी सुछबि तरंग अंग, अंग प्रति होत बदरंग सम क्यों धरैं ॥ डहर डहर परी कहर शहर बीच, चहर पहर माचि रह्यो तिहि पाहरैं । रघुराज कौन कामिनी जो करै कुलकानि, कौसलेश कुँवर कटाक्षन कटाकरैं ॥ मंद मंद चलति गयंदकी सवारी भारी, प्यारे रघुनंदनकी भ्रातन समेत हैं । सखा सरदार ऐंडदार सोहैं संग संग, करैं सतकार पुरजन सुखसेतु हैं ॥ मणिगण बार बार वारत कुमारनपै, देखि माधुरीको रहे चित्तमें न चेत हैं । आनँद अपार देत विविध जुहार लेत, आये रघुराज राम पितुके निकेत हैं ॥ द्वारहीते भेज्यो प्रतीहारै दरबारै राम, जाइ सो जुहार्‌यो चक्रवर्ती नरनाथको । भारि अहलाद अहलाद उपजाइ भूपै, विनै मरयादही सो कीन्ह्यो जोरि हाथको ॥ रघुराज रावरेके चारिहू कुमार आये, खेलिकै शिकार चाहैं नायो तुम्हैं माथको । शासन कीजै देव दरशन दीजै अब, भरत लषण शत्रुशाल रघुनाथको ॥ सुनि नृपराय सुखसिंधुमें नहाय बोले, ल्याइये कुमारनको आशु मेरे पासमें । दूत दौरि आयो सो कुमारन सुनायो बैन, चलिये जनक आमखासके अवासमें ॥ सुनिकै नरेश सुत उतरि गयंदनते, मंद मंद चले पितृदरश हुलासमें । देख्यो दरबार बैठे भूपति हजारैं मनो, वासव अगारैको अखारे हैं विलासमें ॥ सकल समृद्धि युत वृद्ध वृद्ध बैठे भूप, ऋद्धि सिद्धि निद्धि ठाढ़ीं जोरे युग हाथको । रघुराज रतन खचित राज आसनपै, राजैं

राज शिरताज तेज देवनाथको ॥ छपापति छत्र छाजै चौर शर-
दभ्र भ्राजै, सहित समाजै सो निहार्यो रघुनाथको। निकट
बुलाय लीन्ह्यों उराहि लगाय मानो, गयो सरवस्व पाइ सूंघ्यो सुत
माथको ॥ भुवनाभिराम राम करिकै सलाम भूपै, बैठे तिहि ठाम
बंधु सहित ललाम हैं। पूरि मनकाम पितु पूछ्यो कहो राम
कहाँ, कीन्ह्यों है अराम कैसे बीते तीनि यामहैं ॥ रघुराज कहहु
शिकारको बखान आम, केते मृग मारे कौन कौन तिन नाम
हैं। कौन कीन्ह्यों कैसो काम कौनको दियो इनाम, वदन मलान
लाल लाग्यो अति घाम है ॥ कहन शिकार कथा लागे रघुवंशी
लाल, मार्यो विकराल ग्राह एक शत्रुशाल है। भरत शिरोमणि
प्रचारि बाढो गैंडा हन्यो, लषण महिष माथ मार्यो करवाल है॥
कोई सखा मार्यो मृग कोई सखा शेरमार्यो, मैंहूं गजराज मृगराज
मार्यो हाल है। रघुराज बहुरि लिवाइगे महर्षि धाम, कीन्ह्यो सत्
कार जो न पायो कौन्योकाल है ॥सुतन शिकारसुनि पाइकै अपार
सुख, नृपति उदार बकशीस देन लाग्यो है। काहूको मतंग
दीन्ह्यों काहूको तुरंग दीन्ह्यों, दीन्ह्यों पुनि जोई जौन जोरिकर माँग्यो
है ॥ जैसे राम तैसे रामबन्धु तैसे राम सखा, भूपतिके भेद नाहिं
नेकु उर जाग्यो है। रघुराज सबते विशेषि दै दुलार कीन्ह्यों, नीके
लक्ष्मीनिधिपै विशेषि अनुराग्यो है ॥ भूपति विलोकि श्रमश्रमित
कुमारनको, स्वेदबिन्दु मानो अरविंद ओसकन है। बार बार करि
कै दुलार भूमि भरतार, बैन सुधाधारसे उचार्यो ताही छन है॥
रघुराज चारों लाल जाहु जननीके भौन, भोजन करीजे शयन
कीजै चयनन है। नैन अलसाने प्यारे कुँवर भुखाने सखा, गमनो
मकाने अब ऐसो मोर मन है ॥ सुनिकै पिताके बैन उठिकै
तुरंत राम, करिकै सलाम मातु धाम पगु धारे हैं। सुहृद सचिव

अनियारे सरदारे सखा, द्वार पहुँचाय रघुचंद्रको जुहारे हैं ॥ जिन अधिकार रनिवासको प्रचार रह्यो, रामके दुलारे सखा संगही सिधारे हैं। रघुराज बन्धु चारे पानिपके पारावारे, कौसिला अगारे गये कौसिलाके बारे हैं ॥ कुँवर अवाई सुनि मोद अधिकाई मातु, नारिन पठाई ते वे कलश लै धाई हैं। दधि दूब तंदुल प्रदीप धरि थारनमें, मंगल करत गान द्वार देश आई हैं। जलको उतारि त्रिकुटीमें दधि टिकुली दै, लै चलीं लिवाइ लेतीं सकल बलाई हैं। रघुराज आननको चूमि भूमि आँगुरीन, फोरि तृण तोरि मणि विविध लुटाई हैं ॥ कुँवर सिधारे गृह कौसिलाके ऐसी सुनि, केकयी सुमित्रा आइ गईं अति आशु हैं। सखिन समेत सीता लागी है झरोखनमें, और रनिवास आयो तौनहीं अवासु हैं ॥ चारों बन्धु प्यारे सखा सहित हुलास भारे, परे सब मातुनके चरणके पासु हैं। रघुराज महाराज राज दुलहेटन को, छाइ रह्यो सदनमें वदन विलासु हैं ॥ राई लोन जननी उतारि नील चीलही जारि, डीठि मूठि टोना झार वारि त्यों उतारिकै। सुखमा सदन चूमि वदन नंदन पाणि, पकरि लिवाइ गईं मणिगणवारिकै ॥ गोद बैठाय समय पूछै सुख पाय लाल, कहाँ लगि जाय खेलि आये मृग मारिकै। वदन मलीन श्रम भयो है महान प्यारे, कहौ रघुराज मृगयाकी कथा झारिकै ॥ कह्यो रघुराज गजराज मृगराज मारे, खड्गी महिष त्योहीं मकर सँहारे हैं। तरल तरङ्ग तखि तुरत तुरङ्गनते, केतन कुरंगनको दौरि दलि डारे हैं। गये एक आश्रममें सबै श्रम नाशे तहाँ, योगके प्रभाव ऋषिराज सतकारे हैं। जननी कियो सो मुनिघरनी दुलार भारी, मानि हमैं बारबार बारे ये हमारे हैं॥ वदन विलोकि निज पाणि मीजै बाहु मातु, बोलैं बात लाला तुम्हें सिंह भीति लागी ना। कहाँ पायो जोर ऐसो जाते

मारचो मृगराज, हहरत रहे होरि हाऊ भय भागी ना ॥ खैंचे
कमान तामि कोमलकमल पाणि, मेरो जिय डरत भुजानि पी
जागी ना। रघुराज निडर भये हौ राजराज प्यारे, बरजत को
उतै वृद्ध बडभागी ना॥ क्षुधित कुँवर जानि व्यंजन विविध आनि,
जननी लगीं है सुत भोजन करावने। कौसिलालषण लालैं शत्रु-
शालै गोदलीन्ह्यों, लीन्ह्यों रघुलालै अंक कैकयी सुहावने ॥ भरतै
सुमित्रा भूरि भोजन करावे लगीं, कहै यहौ मीठो यहौ मीठो
खावने, रघुराज तेरे काज रचैपकवान केते, बाँकी अबै मेरे
ढैक मुख लावने॥ यहि विधि व्यारी करवाइ चारों लालनको,
पग सलिल धुवाइ दियो पान हैं। प्रहर प्रमाण जानि जननी
बखान, कीजै शैन चैन ऐन नन अलसान हैं॥ जागियो न
अब कारज कछूक है न, मेरे प्यारे तुमसों न मोहिं प्यारे प्रा
हैं। रघुराज राज शिर ताजके अनोखे ढोटे,
तुम्हीं सों रघुकुलके निशान हैं ॥ मातुकी रजाइ पाइ चारों
भाइ शीशनाइ, द्वार देश आइ ठाढे भये तिहि ठाम हैं
भाइन सलाम लैकै सखन प्रणाम लैकै, आशिष दै
कीन्ह्यो निज निज धाम हैं ॥ जानि निज काम तिहि याममें
हेली सबै, लै चलीं लिवाइ आमखासको ललाम हैं। रघुराज
काम होत छबिछाम जापै, कीन्हें अभिराम राम धाममें अराम
ह्याँलौं मेरी भावना है आगे नहीं जानौं कछु, ठाढो रहौं छरी
रोज राम द्वारेमें। विविध विलास रास हास रनिवास केरो,
ना हुलास इतिहासके उचारेमें ॥ रघुराज दास्यभाव मेरे
दीन्हें मोहिं, ताते कौन काम रासलीलाके निहारेमें। स्वामिनी
हलली स्वामी कौसलेशलाल,पाऊँ सरवस्व सुख चारु चौंर ढारेमें॥

दोहा-यह शिकारको शतक मैं, रच्यों सुमति अनुसार ।
रामरसिक बाँचैं सुनैं, तिन प्रणाम बहु बार ॥
नहिं जानौं मैं छन्द गति, नहीं भक्ति नहिं भाव ।
जो कछु नीकी होइ सो, सज्जन कृपा प्रभाव ॥
सज्जन दीजे दोष नहिं, बिगरो कछू विचारि ।
रघुपति लीला जानिकै, लीजे सकल सुधारि ॥
संवत्सर चखनिधि शशी, ऊर्ज शुक्ल शनिवार ।
भो संपूरण पूर्णिमा, रघुपति शतक शिकार ॥
आनँद मंगल भाँति यहि, रहत अवध महँ रोज ।
उदितराम अभिराम रवि, विकसित प्रजासरोज ॥

छन्द चौबोला

एक समय दशरथ नरनायक बैठ्यो सभा मँझारी ।
भाइन भृत्यन सचिव महीसुर संयुत सकल सुखारी ॥
गुरु वसिष्ठ तिहि अवसर आये उठी समाज निहारी ।
भूपति चलि लीन्ह्यों कीन्ह्यों नति अपनो नाम उचारी ॥
सिंहासनासीन करि गुरुको विनय कियो अवधेशा ।
तुम्हरी कृपा नाथ पायों सुख मिटिगो सकल कलेशा ॥
कह्यो वसिष्ठ भूप तेरे सम रवितें लागि अरु आजू ।
भाग्यवान इक्ष्वाकुवंशमहँ भयो न कोउ महराजू ॥
जासु राम सम सुवन जगतमहँ करै को तासु बडाई ।
शेष शारदा शंकर गणपति थके आप यश गाई ॥
तिहि अवसर केकयनरेशको कुँवर युधाजित नामा ।
आयो राजराजदरबारै अहै भरतको मामा ॥
करि प्रणाम दशरथको तैसे पुनि वंद्यो गुरु काहीं ।
पूछि कुशल कौशल नरेश तिहि बैठायो ढिग माहीं ॥

कह्यो युधाजित भागनेय मम कहँ चारहु कुमारा।
तिनहिं बुलावहु आशु भूपमणि चहौं विशेष निहारा॥
सुनत स्यालके वचन महीपति पठै सुमंत तुरंता।
भ्रातन सहित राम बुलवायो आयो अति विलसंता॥
उठी समाज राम कहँ देखत सबके हिये जुडाने।
गुरुको पितुको करि प्रणाम प्रभु मातुलको सनमाने॥
बैठायो अपने आगे तिन बन्धु कैकयी केरो।
राम वदन निरखत अनिमिष चख आनँद लह्यो घनेरो॥
हुलसि कह्यो कौशलपतिसों अस करी विनय मम माता॥
लखन चहौं मैं भरत शुतासुत जाय ल्याइयो ताता॥
हम आये काश्मीर नगरते अवध नगर यहि हेतू।
तुम ब्याहन सुत गये जनकपुर लखे न इत कुलकेतू॥
हमहुँ गये पुनि मिथिलापुरको लख्यो विवाह उछाहू।
आये अवध लखे परछानि सुख मिट्यो सकल दुख दाहू॥
बहुत दिवस बीते इत निवसत अब अस कृपा करीजै।
भरतहि पठै आशु हमरे सँग सासु श्वशुर सुख दीजै॥
सुनत भूपमणि विरहविवश तहँ कढी न मुख कछु वानी।
भेजत बनत न रोकत बनत न भै दुचतई महानी॥
गुनि वसिष्ठ सन्देह नृपतिको बोल्यौ वचन उदारा।
भेजहु भरत होउ शंकित जनि संमत अहै हमारा॥
केकयकुँवर युधाजितको नृप सविधि करहु सत्कारा।
सुनि गुरुवचन विहाल काल तिँहि वचन भुवालउचारा॥
गवनहुँ भरत युधाजितके सँग केकयदेश सुहावन।
अपने मातामहको मेरी कहियो नति अतिपावन॥
चंचलता तजि रह्यो रीति महँ मातुल कुलमहँ प्यारे।

बहुत बुझाय कहौं का तुमको सब गुण सुखद तुम्हारे॥
पितुशासन धारि शीश भरत उठि जनक कमलपद वंदे ।
कह्यो वचन मातुलके सँगमें जैहौं आशु अनन्दे ॥
तिहि औसर उठि शत्रुशाल युग जोरि पाणि अस गाया।
मोहूंको दीजै निदेश पितु तनु तजि रहति न छाया॥
कह्यो भूप गवनहुँ तुमहूं उत करन भरत सेवकाई ।
रहियो सावधान सब कालहि किहेहु न कछु चपलाई ॥
पुनि भुवालमणि वसन विभूषण रथ तुरङ्ग मातंगा ॥
दियो सभाजि युधाजितको तहँ वर आयुध बहुरंगा ।
दोहा-उठि दशरथ निजस्यालको, मिल्यो बारहीं बार ।
कीन्हीं बिदा निवेशको, करि बहु विधि सत्कार ॥
भरत शत्रुहन उठि तुरत, पिताचरण शिरनाय ।
पुनि रघुकुलमणिके चरण, वंद्यो शीश छुवाय ॥
जाय भवन निज जननिको, कह्यो प्रसंग बुझाय।
माँगि बिदा पुनि कौसला, भवन आशुही आय ॥
कहि प्रसंग शिरनायकै, लषण मातु कहँ वंदि ।
काश्मीरको चलत भे, सानुज परम अनन्दि ॥
यक अक्षौहीणि सैन्य तब, पठयो भूपति संग ।
करन पन्थ रक्षण सुवन, चली चारु चतुरंग ॥
मातामहके भवन महँ, सानुज भरत सिधारि ।
ककय नृपके वंदि पद, पितु नाति कह्यो उचारि ॥
कैकै अधिप सुता सुवन, लखि सुख लह्यो अपार ।
प्राण सरिस राख्यो दुहुँन, करि नित नव सत्कार ॥

छन्द चौबोला ।

जबते गये भरत मातुल कुल तबते लछिमन रामा ।

करहिं रोज पितुकी सेवकाई पूरहिं जन मनकामा॥
सोहत अवध तख्तपर दशरथ विभव शक्र संकाशा।
फेरत शासन नवौ खण्ड महँ मित्र हर्ष अरिनाशा॥
नित नव आनँद होत अवधपुर सुखराशी पुरवासी।
रघुपति शील सनेह स्वभावकथत नित दरशन आसी॥
चढि मतंग कहुँ चढि तुरंग कहुँ चढि शतांग पुरमाहीं।
विहरत सखनसहित सुखदायक प्रातहु साँझ सदाहीं॥
प्राणहुते प्रिय राम जासहि नहिं अस कोउ त्रिभुवन नाहीं।
का कहिये प्रभु अवधप्रजनको बसहिं जु प्रभुभुज छाहीं॥
एक समय सब सचिव महाजन सुहृदसहित सरदारा।
बैठ्यो दशरथ भूप सभामहँ गुरुको आशु हँकारा॥
गये वसिष्ठ राजमंदिरमहँ नृप नति करि बैठायो।
सुहृद सचिव संमत विचारि मन गुरुको वचन सुनायो॥
जो आचारज शासन दीजै तौ अस कारज होई।
करहिं रामसों विनय प्रजा सब निज निज कारज जोई॥
कह्यो वसिष्ठ राम यहि लायक भूपति भली विचारी।
पुरजन काज करहिं रघुनायक तुव शासन शिरधारी॥
सुहृद सचिव सज्जन सराहि सब निज निज संमत कीने।
हुलसि राजमणि बोलि रामकहँ सौंपि काज सब दीने॥
पुलकित प्रजा प्रमोदित भे सब कीन्हें जयजयकारा।
युग युग जियें जानकी रघुपति हमरे प्राण अधारा॥
प्रभु शासन शिर धारि रघूत्तम करन काज सब लागे।
प्रतिदिन पितुसों पूँछि पूँछि सब यथायोग्य अनुरागे॥
धर्मधुरंधर चतुरशिरोमणि बिना हेतुके हेती।
सबके हित अरुसबको प्रिय जिहि करै विनय सुनि तेती॥

उठि प्रभात करि प्रातकृत्य सब करहिं सो मातन काजू ।
पुनि गुरु विप्र काज निरधारत गुरुगृह चलि रघुराजू ॥
करहिं काज पुनि पुरवासिनको सिगरे प्रजन बुलाई ।
अरज गरज सुनि चरजि चित्तमहँ हरज नरज बरकाई ॥
शासन उचित देहिं सब कहँ प्रभु मंजुल वचन सुनाई ।
काज अकाज छोडि पुरजन सब प्रभु दरशन हित आई ॥
विनय सुनावहिं आनँद पावहिं प्रभु छबि नयन छकाई ।
लषण सहित प्रभु जाय जननि गृह भोजन करहिं सदाई ॥
सकल दिवस भरि काज करहिं जो सो सब पितै सुनाई ।
शासन उचित लेत पितुसों सब अपनो हेतु बुझाई ॥
याम दिवस बाकी रघुनन्दन निकसहिं सहित सवारी ।
अथवा मृगया हेतु जात कहुँ सुंदर रूप शिकारी ॥
साँझ समय पितु निकट आय पुनि अपने महल सिधारैं ।
लषण सखन युत लखत नृत्यनित सुनत गान सुखसारैं ॥
बीतत याम निशा जननी गृह करहिं सबंधु बियारी ।
करहिं शयन पुनि कनकभवन महँ मोदित अवधविहारी ॥
अति प्रसन्न पितु सुत कारज लखि करहिं बखान सदाहीं ।
सज्जन साधु विप्र पुरवासिन काहि प्राणप्रिय नाहीं ॥
पुरजन परिजन सभ्य देशजन सज्जन भूसुर साधू ।
राम सनेह शील गुण बाँधे लहे न सपनेहु बाधू ॥
कियो विमल यश धवल दिगंतन विक्रम विश्व बड़ाई ।
रमारमण सम सकल गुणाकर को पावै समताई ॥
दोहा—ऋतुपति ग्रीषम पावसहु, शरद शिशिर हेमंत ।
जनकसुता युत सुख लहत, अवधनगर निवसंत ॥

कवित्त ।

विकसत कुसुम विलास वर वोलिन को, बगरी सुवास वन वि-
विध विहार है । विधुको विकास विश्व विमल भयो है व्योम,
बोलत्त विहंग वृक्ष बैठे बार बार हैं ॥ वसुधाधिराजको सुबेटा व
रघुराज, बलित विदेह बेटी विराचि विचार है । वदत सुवैन वामलो-
चनी विलोकै वसुधामें, वसुधाधर वसंतकी बहार है॥ विकसे सुवारि
विमल वारिजाकरन, विश्वमें विभाकर विभास विलसंत है। वीरुध त्यों
विदल विलोकि विरहीन व्यथा, विटप विशोक करै नवदलवंत है॥
रघुराज वदत सुवैन हे विदेहवाले, विपुल विलोकिये बहार बरषं
है । बलनमें बागनमें बासनमें बारनमें, वनमें बगारनमें वसं
वसंत है॥ गहनमें गावनमें गिरिमें सुगोधनमें, गृहमें गिरामें गो
ग्रीषम यों छैगयो । गानमें सुगायकमें गुणमें गुणीजनमें, गोपति
गोगनमें गर्म अति ह्वैगयो॥ गोमें पुनि गोमें पुनिगोमेंपुनि गोमें गुरु
गुरुजनहूमें त्यों गलानि गुण बैगयो । रघुराज गदत गरीबको निवा
गाढो, ज्ञानिनके ज्ञानमें अज्ञान अस ज्वैगयो ॥ गुलगुले गिल
गलीचे गादी गेह बिछे, गोरसके फेन ऐसे गरक गुलाब हैं। गोर-
स गिलासनमें हिमगिरि गोहनके, गिरत सुगैलनमें गेहनते आ
हैं ॥ गौरि गंग सरिस सुगेहिनी सुनेरी गिरा, रघुराज मुदत गुमा-
नके गमाब हैं । गिरिते गहनते गवाक्षनते गौन करैं, ग्रीषम गु
बकी ये गरम गिराबहैं॥ पूरब प्रचंड ये पयाधर पसारा कियो, पा
वार पराशिकै पूषा परेशानीते । पुरे पय पुहुमि सुपादपनि पु
कीन्हें, पुरुष पशुन पक्षी प्यासहूं परानीते ॥ पृथिवी परत प
प्रभा पसराय प्यारी, पावत परम पीर प्रोषित जे प्रानीते । रघुरा
प्रवदत प्राणप्रिया पेखु पूरो, पावस प्रतापको प्रकाश पौन पानीते॥
पपीहा पुकार प्यारी परत प्रमोद पोषी, प्रचरै पखेरू पति पत्नी

पियारमें। पौढिगे परेस त्यों पधारे परदेशी देश, पूषन छपाने पयोधरके पगारमें ॥ रघुराज पेखु प्रिया पथनमें पादपमें, पावस प्रचार पूरो पुहुमि पसारमें। प्रेममें प्रयोजनमें पानीमें सुप्राणिनमें, पारावार प्रान्तनमें पत्तन पहारमें ॥ सोह्यो शुद्ध सलिल सुसरिता सरनहूँ में, सूखिगे सुपंथ त्यों सफाई सरहदकी। शिखी शिखिनीके सुखसकल सुखाने सुखी, सिंधुर समाने जल सौखमें समदकी ॥ सुंदर सरोज सरयूमें सरसान लागे, सरसी सरस शशि सुंदराई सदकी। सुंदर सदन बैठी सखिनकी स्वामिनी, सुरेखु रघुराज सुख सुखमा शरदकी ॥ शूरकी सरोषताइ शशि शीतलाई सोखै, शर्वरी सदाई सबहीकी सुखदाई है। स्वाद भे सुभग अन्न सरस सवालि साली, शोभती सुशीशन शिखंडसी सुहाई है ॥ रघुराज शरद सोहाग सजनीको सजनीको सरसीनमें सरोज सभगाई है। साजि साजि सौंह होत सांकरो सरामि शशि, सम्हरै न सीते तव सुख समताई है ॥ हेरिये हवेलिनमें हेलिनके हेला मचे, हरबर होत हुब्ब हासहू शहरमें। हृदमें हुलास हिलि मिलिकै हँसन हेतु, हंस हौसलाते हीन हंससे डहरमें ॥ ह्वै गयो हिमन्त हद हायनमें हनि हनि, हाउको हटाउ नाहिं अहानि पहरमें ।। रैहै क्योंहू बास हिय हियके हटाये हठि, हार हिरवाय देहु हिमिकी हहरमें ॥ हारिये न हिम्मत हिमंतमें हमेश हेली, हूलसी हिलाती हिये हिमकरकिरनैं। हारन हजारनमें हीरनके हारनसे, हिमकन होश हरैं हिमागिरि वरनैं। रघुराज हाजिर हुजूरमें हिमायती हैं, होरिये विहार हार हरनी त्यों हिरनैं। हारि हारि हौंसलाते अति हहराने हव्यसाटको न चहत हिराने हिमि डरनैं ॥ सरमें सरितमें सरोवरमें सागरमें, सघन सहटनमें सदन शिबिर है। शैनमें सुसैननमें सब सजनीनहूमें, सज्जनसमाजमें दिशाननके शिर है ॥ शोषमें सरोषहूमें शीलमें सुभावहूमें,

साँकरे सहजहूमें शीतकी सफर है । रघुराज सीते सुनै सिखिको
सुहाग सांचो, सरस्यो सरस सनसारमें शिशिर है ॥ सौखमें सदनमें
समीरना सुहात श्यामा, शल सरितानकी न सैर सुखदाई है।
सिरिफ सुहात सिखी सलिल सरोज सुम, सदल उशीरहूँ सजाई
शत्रुताई है ॥ रघुराज शशिकी सहाईते शिशिर सान, सरसै सरस
सूर शोभा सरमाई है । सुख सरसावनी नशावनीकी सीत सेखी,
साँची सजनीनहीकी संगति सुहाई है ॥

दोहा–यहि विधि षटऋतु सुख लहत, सीय सहित सानन्द।
ऋतु ऋतुके सुंदर सदन, बसत सहित सखिवृन्द ॥

सवैया ।

रामके प्रेमको रूप मनो सिय, सायेक प्रेमको रूप सु रामहै।
रामहीं हैं सातिके सियके जिय, रामको जीव सिया अभिरामहै॥
श्रीरघुराज सनेह नेह दोउ, बीतत आनँदमें वसु याम है।
द्वै तनुमें मनो एकही आतम, दंपति दीसै त्रिलोक ललाम है॥
राम मनोरथ जानत जानकी, सीय मनोरथ जानत रामहीं।
राम वियोग सहै न क्षणो सिय, सीय वियोग अराम न रामहीं॥
रामके नैनन सीय बसै सियके दृग राम करै विशरामहीं।
रामकी आनँद मूरति जानकी, जानकी आनँद मूरति रामहीं॥
राम छिपावैं न हीकी सियाते, सियानाछिपावतिजीकी सुरामसों।
रामकी प्रीति कहूँ अधिकात, कहूँ सिय प्रीति बढै बिनकामसों॥
रामसों श्रीरघुराज न दूसरो, दूसरोको सियजू अभिरामसों।
रामसों सीयसों काको कहौं, सियसी सियहैं अरु रामहैं रामसों॥
हेमलता जड कैसे कहौं सम, त्यों क्षण ज्योति रहैं क्षण जोती।
चन्द्र घटै बढै तापै कलंकित, जाते नहीं उपमाकी उदोती॥
विश्व विभा जो विरंचि बटोरि, रचै निपुणाई लगायकै सोती।

श्रीरघुराज तऊ जगमें नहिं, सुंदरता सियके सम होती ॥
यद्यपि राम सिया अनुराग, समान सबै विधिते परै जानो ॥
रूप उभै जिय एक मनो नहिं, भेद विवेक परै पहिचानो ॥
प्रेम कृपा पुनि कोमल भाव, कहाँ लगि सीयको जाय बखानो ॥
श्रीरघुराज कहै हियकी, जियमें सियकी सरसै सरसानो ॥
चारिहु राजकुमारी बसैं नित, कोशल पत्तनमें सुखछाई ।
रोजही रोज नवीन नवीन, विलासन हासनकी अधिकाई ॥
राज समाज सजी नितहीं रहै, भूपतिको सुख क्यों कहिजाई ।
श्रीरघुराज सुलक्षण राम, करैं पितुकी सुखसों सेवकाई ॥
सैर शिकार विहार अपार, पहार अगार कहे न सिराई ।
चारिहू बंधुसमेत महीप, बसैं पुर कौसलमें सुखछाई ॥
साहिबी संपति सैन्य समाज, कहे रघुराजको पारहिं पाई ।
वारिये वासवहूकी विभूति, विरंचि विभूति लहै लघुताई ॥
जानकी संयुत जानकी जानि, सदा पुर कौसलमाहँ विराजै ।
काकी कहौं उपमा जगमें, जबहीं कहौं जाकी तबै चित लाजै ॥
जैबे विकुण्ठ बसैं कमला, कमलापति दिव्य विभूतिनि साजै ।
ते प्रगटे धरणीतलमें तिनके सम काको कहै रघुराजै ॥

दोहा–यहि विधि वरण्यों राम सिय, अवध नगर संवास ।
रामस्वयंवर ग्रन्थमें, राज समाज हुलास ॥

चौपाई ।

मातुल सदन सुअवध विहाई । जबते गये भरत दोउ भाई ॥
तबते भरत लषण जननीको । सेवन करहिं राम अति नीको ॥
राम सनेह शील सेवकाई । लखि निज सुत सुधि दई भुलाई ॥
भरतमातु जानत जिय माहीं । मोर पुत्र रामहिं सति आहीं ॥
कौसल्याते दून सनेहू । करत कैकयी विन संदेहू ॥

सब मातुनको राम पियारे। न्यून अधिक नहिं नयन निहारे॥
भरत गये केकयपुर माहीं। कियो मुदित मातामह काहीं॥
नित नित केकयभूप उदारा। करहिं सुतासुत कर सत्कारा॥
मातामह कारि प्रीति महाई। भरतहि दियो अवध बिसराई॥
इतहूं अवधनृपति सुधि करहीं। भरत शत्रुहन गुणन बिसरहीं॥
यद्यपि चारिहु बंधु समाना। रामहिं दशरथ प्रेम महाना॥
बीत्यो बहुत काल यहि भाँती। सुखित सिराति जाति दिन राती॥

दोहा–देवनके शंका भई, कहहिं परस्पर बैन।
कब प्रभु रावण वध करैं, लहैं अमरपति चैन॥

चौपाई।

दशरथ मखमहँ हम सब आई। त्राहि त्राहि कारि विनय सुनाई॥
रावण करत नाथ अति पीरा। अहै शरण तुव अमर अधीरा॥
आरत देवन देखि मुरारी। भये नाथ नरलोक विहारी॥
सत्य सनातन विष्णु उदारा। कोशलनगर लियो अवतारा॥
लहि सुत शक्र अदिति जिमि भाई। तिमि कौसिलासहित रघुराई॥
यहि विधि कहत बैन सुर नाना। रहहिं गगनमहँ चढे विमाना॥
रामचरित नित लखैं सुखारी। कारि हैं प्रभु हमरी रखवारी॥
प्रभु विहरैं कोशलपुरमाहीं। अवध प्रजन सुख भरै सदाहीं॥
कोटिमदन मद मारक रूपा। दुराधर्ष विक्रमी अनूपा॥
करहिं न कहुके गुणमहँ दोषू। अपराधहु महँ होत न रोषू॥
हत दूषण नरलोक विभूषन। मृदुल सुभाउ तेज जनु पूषन॥
मिलैं दीनसों कारि अति प्यारैं। प्रथमहि कोमल वचन उचारैं॥

दोहा–परुषवचन कोउ जब कहै, राम देत मुसकाय।
कबहुँ न उत्तर देत प्रभु, तिहि डारत बिसराय॥

चौपाई ।

यक उपकार कबहुँ कोउ करई । कबहुँ न रामहिं तौन, बिसरई ॥
सोइ सुधि करिकरि बुद्धिअगाधा। बिसरावत अनन्त अपराधा ॥
ज्ञानवृद्ध वयवृद्ध सुजाना । शीलवृद्ध जे सज्जन नाना ॥
तिनके आगे रहहिं लज्जाई । करैं न प्रभु आपनी बडाई ॥
अस्त्र शस्त्रमहँ पाय प्रशंसा । लज्जित हंसवंश अवतंसा ॥
बुद्धिमान कहते सब जानै । कठिन प्रयोजन मधुर बखानै ॥
जाको जौन होय सम्बन्धू । भाषहि प्रथम दीनके बंधू ॥
राम सरिस को कोमल भाषी । सबकोसब दिन सुख अभिलाषी॥
विक्रम सरिस त्रिविक्रम जाको । कबहुँ न गर्व होत मनसाको ॥
कबहुँ असत्य कढै नहिं बानी । जानत वेद पुराण विज्ञानी ॥
करहिं सदा वृद्धन सत्कारा । सहित नाम सुख नाम उचारा ॥
राखहिं प्रजन पाहि अनुरागा । प्रजा करहिं नित प्रेम सभागा ॥

दोहा-परदुखमें अतिशय दुखी, परसुखमें सुख भीन ।
साधु विप्र पूजत सदा, दया करत लखि दीन ॥

चौपाई ।

परमधर्म जानत रघुराई । इन्द्रियजित आचार सदाई ॥
रघुकुल उचित बुद्धि वर शाली । क्षात्र धर्म प्रिय मणिगण माली॥
समर मरण प्रभु सदा सराहैं । समरगमनहित वीर उमाहैं ॥
रणहत स्वर्ग वीर हठि पावैं । सकल पाप तनुते नाशि जावैं ॥
सुनि सुनि वीर रामकी वानी । समरमरणहित मति हुलसानी ॥
अनुचित कर्म निरत नहिं रामा । ग्राम कथा महँ नहिं विश्रामा ॥
वाद विवाद माहिं रघुनन्दन । सुरगुरुसरिस भानकुलचन्दन ॥
स्वप्नेहु रोग समीप न आवत । तरुण अरुण मुख भानु लजावत॥
अहैं अजानबाहु रघुनाथा । जानत देश काल यकसाथा ॥

परम चतुरपुनि रसिकशिरोमणि । रघुकुल कमलकलापदिवामणि ॥
ग्राही सार वस्तु सब काला । सज्जन प्रिय मुख वचन रसाला ॥
संतन प्रिय मूरति मनहारी । रच्यो एकही जन मुख चारी ॥

दोहा–ऐसे सहित अनेक गुण, भे सब गुणी प्रधान ।
राम प्राणप्रिय भे प्रजा, राम प्रजाके प्रान ॥

चौपाई ।

देखि राम गुण कौशलराँई । नित नित आनँद लहत महाई ॥
सब विद्या विधान रघुभानू । जानत सांग सुवेदविधानू ॥
नहिं धनुधर रघुपतिसम आना । दिव्य अस्त्र जानत सविधाना ॥
कोशलनगर जन्म प्रभु लयऊ । सदा अदीन दीन प्रिय भयऊ ॥
सत्यसंध आति मृदुलसुभाऊ । गुरुजन गण आति देत उराऊ ॥
जे जन धर्म अर्थके ज्ञाता । पूछत धर्म हेतु कहि ताता ॥
धर्म काम अरु अर्थ विचारी । करत काज सब सुरति सँभारी ॥
लौकिक परलौकिक सबकाजा । करत सभै अनगुण रघुराजा ॥
समरथ साहब सहज सुभाऊ । स्वप्नेहुँ क्षण छल छुवा न काऊ ॥
आभिप्राय आतिगूढ मिनीता । मित्र सहाई परम पुनीता ॥
स्वप्नेहुँ जापर क्रोधित होई । तिहि शठ कहँ त्यागत सब कोई ॥
हर्षित जापर होत उताला । करत रंक कहँ राउ कृपाला ॥

दोहा–दान देत इकबार जिहि, सो कुबेरसम होत ।
कर्षत धन वर्षत बहुरि, जिमि रवि जल सरसोत ॥

चौपाई ।

गो द्विज साधु भक्ति दृढ राखे । बिसरत नहिं स्वपनेहुँ मुखभाखे ॥
असत वचन मुखकढन न कबहूँ । कारज कठिन पडै यदि तबहूँ ॥
आलस रहित गर्वगुण हीना । निज परदोष विचार प्रवीना ॥

चिन्तक शास्त्र कृतज्ञ उदारा । जानत हियकी दोखि अकारा ॥
उचित अनुग्रह निग्रह करईं । वज्रलीक जो मुख कछु कहईं ॥
सदा सुसज्जन संग्रहकारी । यथा योग सबसों व्यवहारी ॥
काल काल सब सदन विहारी । करत खर्च आमदै विचारी ॥
ठानत आनँद अमित उपाई । करत खर्च कछु शंक न लाई ॥
काकिनि लेत लगत लघु नाहीं । बखसतँ कोटिन कोटिन काहीं ॥
लघु बड ग्रंथ वस्तु सब जानत । धर्मसमेत अर्थ निज आनत ॥
जानत सब देशनकी भाषा । बिन जानी जानन अभिलाषा ॥
अति स्वतंत्र परतंत्र समाना । आलसरहित कर्म सब ठाना ॥

दोहा-तालभेदँ जानत सकल, साठि कोटि श्रुति साख ।
राग भेद सब जानतो, जे चौरासी लाख ॥

चौपाई ।

सखी सखनसँग रासनमाहीं । गाय बजाय दिखावत जाहीं ॥
लै बिलंब द्रुत मध्यमरीती । अनुदात्तहु उदात्त स्वर नीती ॥
वादी सप्त स्वरनकी चाला । हीन मुख्य स्वरसम अरु खाली ॥
रागमेल अरु रागविभागा । मृदु मूर्च्छना तानकी जागा ॥
दनुज मनुज सुर पन्नग गाना । जानत राम यथा ईशाना ॥
शिल्प कर्म जानत रघुराई । शिल्पिनि दरशावत निपुणाई ॥
नाग कंध वाजिनकी पीठी । चढत बनावत गति अति मीठी ॥
सकल गुणन अद्वैत विराजा । सरल सहज साहब रघुराजा ॥
महारथी अतिरथी प्रधाना । को धनुधर रघुनाथ समाना ॥
सेना व्यूह विशारद नीको । दशरथ सुवन भुवनको टीको ॥
दुराधर्ष रण काल समाना । करत शत्रुहान भवन पयाना ॥
लहे सुरासुर नहिं समताई । जिंहिं कोपत कंपत सुरराई ॥

दोहा–चुगलीकी चर्चा न कछु, क्रोधहुमें हँसि जोय।
घरी घरी मुख माधुरी, झरी झरसी होय॥

चौपाई।

नहिं मत्सरी अवधपति प्यारो। काल अधीन न करत विचारो॥
कबहुँ न काहु करत अपमाना। का को कहौं राम उपमाना॥
क्षमा क्षमा अरु क्रोध पुरारी। बुधि विलोकि सुरगुरु गे हारी॥
शक्र लगत विक्रम लखि जाको। कहत रामगुणको नहिं थाको॥
ऐसे गुणनसहित रघुराई। लसत किरणयुत जनु दिनराई॥
विदित गुणाकर जग रघुनाथा। वसुधा चहति होइ मम नाथा॥
निरखि पुत्र सुंदर गुण भाऊ। एक दिवस तहँ रघुकुल राऊ॥
कियो विचार मनैं महराजा। होइँ अवशि रघुपति युवराजा॥
राजकाज सौंपहुँ सब रामैं। मैं अब जाउँ विपिन तप कामैं॥
साठि हजार वर्ष मुहिं बीते। कबहुँ न राजकाजते रीते॥
लूटि लेहुँ सुख अब जगमाहीं। करि अभिषेक रघूत्तम काहीं॥
कौन दिवस अस होइ मुरारी। लेब राम अभिषेक निहारी॥

दोहा–जासु दंड यमदंड सम, विक्रम शक्र समान।
बुद्धि बृहस्पति तुल्य है, धीर धराधर मान॥
सप्त द्वीप नव खण्ड महि, राम भुवन अभिराम।
धर्मसहित शासन करहिं, तब पूरे मनकाम॥

चौपाई।

यहि विधि करि निहचै मनमाहीं। बोलि तुरंत सुमंतहि काहीं॥
अपनो कह्यो मनोरथ राजा। राम होहिं आशुहि युवराजा॥
कह्यो सुमंत पुलकि मनमाहीं। आशुहि करहु विलंबहु नाहीं॥
तब दशरथ सब सचिव बुलाये। प्रथमहि गुरु वसिष्ठ तहँ आये॥
औरहु सब महर्षि पगु धारे। भूपति करि प्रणाम सत्कारे॥
प्रकृत महाजन सभ्य सुजाना। देश देशके भूपति नाना॥

सवे सभासद सभा सिधारे । करि सत्कार भूप बैठारे ॥
कोशलेन्द्र कहँ भूपति वन्दे । यथायोग्य सब बैठि अनन्दे ॥
कनकसिंहासन मध्य विराजा । तापरबैठ अवध महराजा ॥
केकय राज भूप मिथिलेशू । दियो बुलावन नाहिं निदेशू ॥
सुर प्रेरित सरस्वति माति फेरी । होई देवकाज महँ देरी ॥
जान न पैहैं वन रघुवीरा । रावन हनी कौन रणधीरा ॥
दोहा-जनक भरत ऐहैं अवध, नहिं जैहैं वन राम ।
को उतारिहै भार भुव, करि निशिचर संग्राम ॥
देवन प्रेरित शारदा, दियो भूप माति फेरि ।
कह्यो सुमंतहि राजमणि, भरत आनु करि देरि॥

चौपाई ।

जब ह्वै जाहिं राम युवराजू । सुनत भरत मिथिला महराजू ॥
सुनि यह सुख ऐहैं अतुराई । केकय भूपति संग लिवाई ॥
सुनत राम अभिषेक उदारा । ऐहैं जनकराज तिहि वारा ॥
अबै न केकय जनकहि आनौ । मेरी सीख सत्य करि जानौ ॥
नृप शासन सुनि सचिव सुमंता। आन्यो मही महीप तुरंता ॥
भरी सभा दशरथकी भारी । बैठायो भूपति सत्कारी ॥
सोह्यो सभा मध्य महराजा । सुरन सहित मानहु सुरराजा ॥
जन जगतीपति अवसर जानी । भन्यो वारिधर धुनि इव बानी ॥
सुनहु नृपति सबसचिवप्रधाना । होत मोर अब अस अनुमाना ॥
सबको विदित यथा यह राजू । यहि कुल भये बडे महराजू ॥
पाल्यो पुहुमि प्राथित यशभयऊ । मैंहू पूरब पथ गहि लयऊ ॥
सुत सम पाल्यो प्रजन अपारा । भयोआजलगि कछु न बिगारा ॥
दोहा-छत्रहि छायामें वसत, हायन साठि हजार ।
राज्य करत बीततभेय,रचत प्रजा उपकार॥

चौपाई।

लाग्यो आय चौथ पन मोरा। जीवन रह्यो बाचि अब थोरा॥
ताते अस मन होत हमारा। अब चाहहुँ परलोक सुधारा॥
करौं भजन कहुँ कानन जाई। निशिदिन नारायण पद ध्याई॥
रामहि सौंपि राज्य कर भारा। भजौं मुकुंद चरण निशि बारा॥
थके अंग नहिं चलहिं चलाये। बनी न बिन विश्रामहि पाये॥
मोरे सम अधिकहु पुनि मोते। राम भये कारक सुख सोते॥
जाकर विक्रम शक्र समाना। सकलगुणाकर बुद्धि निधाना॥
करहुँ रामको मैं युवराजू। कारि अभिषेक होहुँ कृतकाजू॥
पुहुमी पालन लायक रामा। धर्मधुरंधर धीरज धामा॥
मोकहँ बाकी अब इतनोई। सो जानहु सब विधि सबकोई॥
कहत होहुँ जो उचित विचारी। लेहु सबै गुण दोष निहारी॥
जो तुम्हार संमत अब पाऊं। कालिह राम युवराज बनाऊं॥

दोहा—भूप पौरजन सचिव गण, सज्जन लेहु विचारि।
उचित होइ तौ आशुही, सम्मत करहु सँभारि॥

चौपाई।

जब दशरथ असबचन बखाना। भयो सबन सुनि मोद महाना॥
साधु विप्र गुरु सचिव सुजाना। पौर जानपद लघु बड नाना॥
उठे बोलि सब एकहि बारा। जनु गर्जें घन गगन अपारा॥
साधु साधु यह भलो विचारा। संमत सब विधि अहै हमारा॥
भूप करहु युवराज रामको। नहिं विचार अब और कामको॥
साठि सहस्र वर्ष वय बीती। प्रीति रीति नृपनीति न रीता॥
रामहि कारि युवराज नरेशा। मेटहु सब जियकी अन्देशा॥
कौन दिवस होइहि महराजा। चढि गज महाबाहु रघुराजा॥
चलत चारु चामर रघुराया। छाई वदन छत्रकी छाया॥

काढिहैं राजमार्ग रघुवीरा । हम सब देखि होब हतपीरा ॥
सुनत सबनके वचन विलासा । दशरथ बहुरि बचन परकासा ॥
राम होहिं युवराज प्रवीने । सुनतहि सब सम्मत करि दीने ॥
दोहा–राज काज मेरे करत, देखे कौन अकाज ।
जीते अस चाहहु सबै, राम होहिं युवराज ॥

चौपाई ।

तव वसिष्ठ अरु सचिव सुमन्ता । सबकी रुख गुणि कहे तुरंता ॥
राम मनुष्य न होइँ महीपा । कहुं सो कबहुँ न होत प्रतीपा ॥
जे तुव सुत गुण आनँदकारी । सुनहु भूप हम कहहिं उचारी ॥
सकल दिव्य गुण राउर बेटा । हम सबको कलेश कुल मेटा ॥
विष्णु सरिस विक्रम रघुराई । लायक त्रिभुवनको ठकुराई ॥
भयो न है नहिं होवनहारा । अवधनाथ जस कुँवर तुम्हारा ॥
राम सत्य सतपुरुष शिरोमनि । सत्यवचन पालक धरणी धनि ॥
धीर धुरंधर धर्म अधारा । राकाशशि सम सब कहँ प्यारा ॥
क्षमा सरिसि है क्षमा बडाई । सुरगुरु सरिस बुद्धि अतुलाई ॥
शील सत्य अरु धर्महुँ कामा । कोउ न जान जस जानत रामा ॥
क्षमा करन हाठि परचो सुभाऊ । अति कृतज्ञ सुत राउर राऊ ॥
इन्द्रियजित जन जानतप्रीती । मृदु थिर काठिन निपुण नृपनीती ॥
दोहा–सुनी आज लोकानमें, अनसूयक रघुनाथ ।
सहज सरल वादी मृदुल, समुझावत गहि हाथ ॥

चौपाई ।

वृद्ध बहुत श्रुत विप्र विज्ञानी । तिनकी संगति करत अमानी ॥
भूपति तुव सुत जस यश तेजा । मिलत न कतहुँ मही तस मेजा ॥
सुर नर असुर विश्व महँ जेते । राम सरिस धनुधर नहिं तेते ॥
सब विद्या व्रत योग निधाना । विज्ञ विधाता वेद विधाना ॥

राग ताल सुर जानत जैसो । कोउ नहिं देखि परै जग वैसो ॥
गुण कल्याण भवन अति साधू। मति कुशाग्रवरती निबंधू ॥
द्विजगण महँ रघुराज विनीता । अर्थ धर्म महँ निपुण पुनीता ॥
सुनत शत्रु जब कहुँ पुर ग्रामा । जात लषण युत हित संग्रामा ॥
नहिं लौटत विन वैरिन मारे । शूर शिरोमणि सायक धारे ॥
शत्रुन मारि अवध जब आवैं । लषण सहित सिंधुर महँ भावैं ॥
मन्द मन्द मग चलत बजारा । पावत पुरजन मोद अपारा ॥
कहुँचढि लषणसहित वरस्यन्दन । आवत कौशलपुर रघुनन्दन ॥

दोहा-संग साजि चतुरंगिनी, शूर सखनके वृन्द ।
जनजन प्रति पूँछत पुलकि, राम कुशलआनन्द ॥

चौपाई ।

अग्निहोत्रकी कुशल भलाई । पूछत बैदिक विप्रन पाई ॥
प्रजन पुत्र पत्नी कुशलाई । पूछत परम प्रेम दिखराई ॥
गुरुजन को पूँछत कर जोरी । मानत शासन शिष्य निहोरी ॥
रहत सदा वश शिष्य तिहारे । धर्म कर्म तौ नाहिं विगारे ॥
शिष्य सेनपति पूछहिं रामा । चाकर करत सदा तुव कामा ॥
पिता यथा पुत्रन कहँ मानैं । तथा प्रजन कहँ रघुपति जानैं ॥
प्रजन देखि दुखदुखी विशेखी । सुखी प्रजन सुखलखिनिजलेखी ॥
होत प्रजन घर जबै उछाहू । पिता सरिस उर करत उमाहू ॥
मृषा वचन स्वप्नेहुँ नहिं भाषैं । इन्द्रीजित बिन चूक न माषैं ॥
पुरुषसिंह सबसों मुसक्याई । सबसों पूछहिं कुशल भलाई ॥
मानहुँ मूरति धर्महि केरी । नहिं सुहात अघ कथा घनेरी ॥
उत्तर प्रति उत्तर महँ जीतैं । परमारथ सों कबहुँ न रीतैं ॥
भृकुटीबंक नयन अरुणारे । विष्णुसरिस कौसिला दुलारे ॥

दोहा-दशरथ तीनिहुँ धाममहँ, राम एक अभिराम ।

सहन शीलता शूरता, विक्रमता जग आम ॥

चौपाई ।

त्रिभुवन राज्यकरनके लायक । महि मंडल न फबत रघुनायक ॥
सौंह भौंह भै जाकी ओरा । होत शक्र सम सो तिहि ठोरा ॥
जिहि अनखौंह भौंह भै जबहीं । जर ते उखारि गयो शठ तबहीं ॥
होत वृथा नहिं क्रोध प्रसादा । राखत सदा धर्म मर्यादा ॥
जिहि वध योग न्याय करि जानै । तिहि वधकरत शील नहिं आनै ॥
जो वध योग्य न तापर कोपै । ताकर होत कबहुँ नहिं लोपै ॥
जिहिरीझत बखसततेहि लाखन । तदपि न होततोष अभिलाषन ॥
शांत दांत जन कांत उदारा । सकल गुणाकर तोर कुमारा ॥
यथा किरण युत दिपत दिनेशू । तथा गुणन युत कुँवर नरेशू ॥
गुणी शिरोमणि कुँवर रावरो । महि चाहति पति होय साँवरो ॥
तेरो लाल भाग्य वश भयऊ । जिमि वासव कश्यपके जयऊ ॥
बल आयुष अरोगता बाढै । धर्म धुरंधर तुव सुत गाढै ॥
दोहा-देव असुर नर उरग वर, विद्याधर गन्धर्व ।
आज राम सम कोउ न जग, लोकपालहू सर्व ॥

चौपाई ।

बालहु वृद्ध तरुण नर नारी । साँझ सबेरे पाणि पसारी ॥
माँगहिं सब देवन पहँ जाई । अब युवराज होहिं रघुराई ॥
राजन राउर कृपा सहाई । भई सिद्धि सबकी मन भाई ॥
ताते अब नहिं करहु विलंबा । राउर लाल भुवन अवलंबा ॥
इंदीवर सुन्दर तनु श्यामा । रिपुकरि सिंह रमा अभिरामा ॥
यौवराज्य कीजै अभिषेका । होइ विश्व उपकार अनेका ॥
नारायणके सरिस रावरो । राज शिरोमणि कुँवर साँवरो ॥
जो तुम चहहु जगत उपकारा । करहु राम अभिषेक अबारा ॥

शंका समाधान नहिं कीजै। करि अभिषेक जगत यशलीजै॥
सुर नर कारज सब सिधि होई। यह प्रसंग जानै कोइ कोई॥
सुनि वसिष्ठके वचन सुहाये। एकहिं बार सभासद गाये॥
ठाढे भये सकल कर जोरी। अब विलंब नहिं होय बहोरी॥
दोहा-रामहिं दै युवराज पद, करहु भूप विश्राम।
हम सबको अब कालिहही, होय पूर मनकाम॥

चौपाई।

सुनि गुरु वचन भूपमणि हर्षै। बारंहिंबार नयन जल वर्षै॥
गद्गद गर बोले मृदु वानी। परम भाग्य आपन हम जानी॥
प्रगट्यो पूरव पुण्य प्रभाऊ। जेठ कुँवर पर सबकर भाऊ॥
गुरु मंत्री पुरजन नृप जेते। किये रामपर संमत तेते॥
अस कहि नृप उठि परम अनंदी। बोल्यो गुरु पद पंकज वंदी॥
सहसन भूप मोहिं कर जोरे। राम हेतु बहु भाँति निहोरे॥
प्रजा प्रकृति परिजन सुखभीजे। कहत राम अभिषेक करीजे॥
ताते करहु न नाथ विलंबा। करहु राम अभिषेक अलंबा॥
साजहु सकल साज मुनिराई। देहु राम युवराज बनाई॥
चैत मास यह परम सुहावन। कालिह पुष्य नक्षत्रहु पावन॥
इतनी सुनत भूपकी बानी। जय ध्वनि भै दरबार महानी॥
जय रविवंश हंस रघुराजू। जय रघुकुल कैरव द्विजराजू॥
दोहा-सभा कुलाहल कछुक जब, शांत भयो तिहि काल।
पुनि वसिष्ठसों कहत भे, जोरि पाणि महिपाल॥

चौपाई।

कश्यप मार्कंडेय विज्ञानी। वामदेव आदिक मुनि आनी॥
सचिव सुमंतादिकन बुलाई। शासन करहु जु उचित दिखाई॥
अभिमत गुणि वसिष्ठ सुखपाई। रहे सचिव तहँ सब मुनिराई॥

दिय वसिष्ठ शासन नृप आगे। रहे जोरि कर सब अनुरागे ॥
तुम सुमन्त साजहु सब साजू। सुवरण रत्न औषधी आजू ॥
सकलदेव बलि विविध विधाना। मधु सर्पिषी लाज त्रिधि नाना ॥
विविधभांतिके वसन नवीने। कनक रजतके सूखत चीने ॥
पीत पाट अम्बर अति चारू। तिमि पोशाक अमित मनहारू ॥
महा मनोहर स्यन्दन भारी। रत्न कनक झांझन झनकारी ॥
श्वेत तुरंग सजे सब अंगा। फहरत द्वै पताक पचरंगा ॥
धनु शर खड्ग चर्म गद नेजा। कारक शत्रुन कतल करेजा ॥
आनहु सकल सुमन्त प्रभाता। चतुरंगिनी सैन्य विख्याता ॥

दोहा-रत्न साज सजवायके, शत्रुंजय गजराज।
द्वार देश ठाढो रहै, जिहि लखि गेरुहिं लाज ॥

चौपाई।

युगल विजन चामर युगचारू। श्वेत छत्र निशिपाति आकारू ॥
बने कुम्भ शत कंचन केरे। मन्द पैर पावक जिन हेरे ॥
रत्नखचित रातिहि बनवाई। अग्निहोत्र घर देहु धराई ॥
सनख सदंत व्याघ्रको चर्मा। धरवावहु आशुहि शुभ कर्मा ॥
भूपति अग्निहोत्र गृहमाहीं। सिगरी सामग्री धरि जाहीं ॥
नहु सब अभिषेक विधाना। आनहु साज सकल विधिनाना ॥
होत प्रभात प्रयोजन होई। लघु बड वस्तु कमै नहिं कोई ॥
अन्तहपुर महँ द्वारन द्वारा। अवधनगरमहँ सकल प्रकारा ॥
कदली कनक खम्भ मनहारी। धरवावहु करि दीप उज्यारी ॥
बँधवावहु कुसुमनके माला। छिरकावहु चन्दन यहि काला ॥
धूप धूम विरचहु चहुँ ओरा। सलिल सुगंध सींचि सब ठोरा ॥
मेलि दूध दधि पाक बनाई। विरचहु पायस सहित मिठाई ॥

दोहा–लक्ष विप्र भोजन अवशि, होई होत प्रभात।
देहु निमंत्रण वैदिकन, करि सत्कार अघात ॥
दधि घृत लाजा दूरबा, कुंकुम अगर हरिद्र ।
अक्षत मृगमद दक्षिणा, कोटि कनककी मुद्र ॥

चौपाई ।

यह पुण्याह बांचनहिं हेतू । होत भोर आनहु करि नेतू ॥
विप्र निमंत्रित जे इत आवैं । बैठि कनक आसनमहँ खावैं ॥
बँधैं नगर घर घरन पताके । अति उतंग रोकत रवि चाके ॥
गलिन गुलाब सिंचाउ बजारू । बँधै कनक तोरण विस्तारू ॥
गायक गण गन्धर्व समाना । राग ताल जे जानत नाना ॥
वारबधू करि करि शृङ्गारा । ठाढी रहैं दूसरे द्वारा ॥
नौबत झरै महल चहुँ ओरा । बाजन बजैं होतही भोरा ॥
करौ नगर उत घोष अनेका । होत भोर रघुपति अभिषेका ॥
ग्राम देव सुर मंदिर जेते । सहित दक्षिणा पूजहु तेते ॥
अन्नपान सब पहँ पठवाई । विन पूजन कोउ नहिं रहि जाई ॥
चन्दन कुसुम निवेदन पाना । पामर प्रेतहु पावहिं नाना ॥
सहित सनाह पुशाक सँवारी । कर करवाल ढाल भट धारी ॥

दोहा–दस्ताने कर धारिकै, पहिरि श्वेत सुम माल।
राजित रत्नाभरणते, रघुकुल वीर विशाल ॥
महाराजके महलके, अंगन प्रथमहिं द्वार।
खडेरहे दश लक्ष भट; सायुध शूर तयार ॥

चौपाई ।

लौकिक औरहु बुद्धि विचारी । करहु राम अभिषेक तयारी ॥
अस वसिष्ठ मुनि परम प्रवीने । उचित और शासन सब दीने ॥
कह्यो भूपसों पुनि मुनि वानी । शासन दियो सचिव सब आनी ॥
रहहु सुचित नृप होत प्रभाता । होय राम अभिषेक विख्याता ।

अस कहि गये भवन मुनि दोऊ । भये प्रमोदित जन सब कोऊ ॥
उत मुनि लागे करन विधाना । गणपति पूजनादि विधि नाना ॥
इते सुमंत महीप बुलाई । बोले वचन मंजु मुसक्याई ॥
सचिव राम कहँ ल्याउ लिवाई । पेखन चहहुँ भवन सुखदाई ॥
भले सचिव कहि चल्यो तुरंता । रंगमहलमहँ गयो सुमंता ॥
राम भवन महँ डेउढी साता । रोंकि न गयो सचिव अवदाता ॥
तहँ अशोकवाटिका सुहाई । लषण सहित बैठे रघुराई ॥
सखा सकल तहँ राजकुमारा । बैठे किये सकल शृङ्गारा ॥

दोहा-पिता सचिव आवत निरखि, उठ्यो भानुकुलभान ।
मर्यादा पालक प्रबल, राम सरिस नहिं आन ॥

चौपाई ।

कहि प्रणाम मंत्री कर जोरी । कीन्हीं विनय महा सुख बोरी ॥
चलहु कुँवर महराज बुलायो । आप लिवावन मैं इत आयो ॥
सुनत पिता रजाय रघुराई । चले लषण कर गहि अतुराई ॥
ड्योढी चारि नाँघि जब आये । रथपर भे सवार सुख छाये ॥
लियो लषण कहँ यान चढाई । सूत बाग गहि चल्यो तुराई ॥
पुरवासी रघुनाथं जुहारे । दोउ कर शिरधरिप्रभु सत्कारे ॥
राजमहल प्रविशे रघुराई । नाँघि तीनि ड्योढी युत भाई ॥
स्यन्दन ताजि गवनेरघुनन्दन । वृन्दन द्वारपाल किय वंदन ॥
तीनि पँवर नाके पुनि रामा । द्वारपसों कह वयन ललामा ॥
देहु पिता कहँ खबरि जनाई । दरश हेतु ठाढे रघुराई ॥
द्वारप दौरि कह्यो दशरथको । खडे राम जीते मन्मथको ॥
चहत रावरो दरश हुलासन । आवैं सभा होय जो शासन ॥

दोहा-बोल्यो हुलसि नरेश तब, आनहु आशुहि राम।
द्वारपाल द्रुत दौरिकै, कह्यो चलहु अभिराम॥

चौपाई।

चले लषण कर गहि रघुराई। पीछे चल्यो सचिव सुख पाई॥
मंदिर मंदर सरिस उतंगा। सुंदर रत्न खचित बहुरंगा॥
फटिकफरशमणिखचित सुपाना। मंद मंद चढि कियो पयाना॥
देख्यो पिता सभा रघुराजू। बैठे देश देशके राजू॥
पश्चिमके अरु पूरव केरे। उत्तरके दक्षिणी घनेरे॥
औरहु मध्यदेशके भूपा। बैठे सब निज निज अनुरूपा॥
बादशाह बहु म्लेच्छ अधीशा। गिर वनवासी विदित बलीशा॥
पुरवासी बहु दशहु वासी। सभ्य महाजन आनँदरासी॥
लसैं विप्र मंडल इक ओरा। ठाढे बैठे मनुज करोरा॥
कनकसिंहासन मध्य विराजा। तामें लसत अवध महराजा॥
दशरथ भ्रुकुटी लखैं नरेशा। किहि क्षण कापर होत निदेशा॥
जस सुरसेवत शक्र सदाहीं। तिमि महिमाहिपति दशरथकाहीं॥

दोहा-राज राज राजर्षिवर, राजत राज प्रधान।
मनहुँ मरुतगण मंडले, अतिमंडित मघवान॥

कवित्त

रघुराज आवत निहार प्राणप्यारे पुत्र, विक्रम अपारा ती
लोक उजियारा है। सजित शृँगारा लोक सुंदर उदारा मद, म
हजारा कोउ तारा बहु बारा है॥ गुणानि अगारा अनियारा वा
वारा वीर, धीर सरदारा जस भुवन पसारा है। हेरतहीं हारा हि
अति सुकुमारा कल, कौसिला कुमारा रघुवंशको दुलारा है॥

दोहा-सुत प्रधान आजानु भुज, गवन मत्त मातंग।

मदन मीत मद कदन हद, वदन मनोहर अंग ॥
हर्ष वर्ष जाको दरश, तरस परश हित होय।
सरस सकल गुण सरस चित, नीरस लखै न कोय॥
ग्रीषम आतप तपित जिमि, प्रजा पाय घनश्याम।
तिमि पाये आराम सब, देखि राम अभिराम ॥

चौपाई।

मन्द मन्द आवत रघुराई। नहिं अघात देखत नृपराई ॥
करहिं सभासद उठि अभिवंदन। पाणि उठाय लेत रघुनंदन ॥
राजमहल कैलास समानू। आये मनहुँ निशाचर भानू ॥
पिता समीप लषण रघुनाथा। पराशि भूमि जोरे युग हाथा ॥
आपन आपन नाम सुनाई। किये प्रणाम लषण रघुराई ॥
खडे पार्श्वमहँ जोरे हाथा। परम विनीत नवाये माथा ॥
उठि नरेश उर लियो लगाई। मानहुँ गयो मनोरथ पाई ॥
मंडित कनक मणिन सिंहासन। दिय शासन कीजे सुत आसन ॥
सकैं न बैठि राम भारि लाजा। पाणि पकरि बैठायो राजा ॥
परमासन शोभित प्रभु ठयऊ। उदय उदयागिरि रविजनु भयऊ ॥
रघुपति प्रभा सभामहँ पूरी। राज समाज शोभमय भूरी ॥
ग्रहनक्षत्र संयुत निशिराई। शरद निशासम सभा सुहाई ॥

दोहा-मुकुरमाहिं प्रतिबिंबनिज, तिमि लखि साजित शृँङ्गार।
कह्यो रामसों भूप जिमि, कश्यपँ नयन हजार ॥

चौपाई।

जेठ पट्टरानी कौसल्या। जिमि गौतमकी नारि अहल्या ॥
तिनके पुत्र भये रघुराजू। मम समान अधिकहु तुम आजू॥
वयते जेठ जेठ गुणहूंते। तुमते जेठ श्रेष्ठ उनहू ते ॥
लाल परमप्रिय पुरजन केरे। तुव गुण कहँ लगि कहौं घनेरे ॥

अपने शील जगत वश कीन्हें। शत्रु मित्र सब सम करिदीन्हें॥
ताते सुनहु कुँवर बड भागा। चौथो पन हमार अब लागा॥
भये केश सित रद बिलगाने। राजकाज महँ अंग थकाने॥
ताते अस मन होत कुमारा। सौंपहुँ तोहिं राज्य कर भारा॥
करौं भजन भगवतको प्यारे। बनत सकल परलोक सुधारे॥
घरमें वा वनमें हरि ध्याई। लेहुँ लाभ परलोक बनाई॥
ताते कालिह पुष्य नक्षत्रा। सुभग योगरुवार पवित्रा॥
गुरुसंयुत सम्मत सब केरो। तुव अभिषेक करन मन मेरो॥

दोहा—होय सुखद युवराज पद, को अभिषेक तुम्हार।
सभ्य पौर मंत्री नृपति, गुरुयुत किये विचार॥

चौपाई।

सकल गुणाकर जानि उदारा। सौंपहुँ तुमहिं राज्यकर भारा॥
बहुत बुझाय तुमहिं का कहहूँ। परम चतुर मैं जानत अहहूँ॥
तद्यपि उचित सयानन काहीं। देब शिखापन सुतन सदाहीं॥
नहिं अनरस मानब मनमाहीं। तुम्हरे हितमहँ हित सब काहीं॥
इन्द्रियजित रहियो सबकाला। सबसों राखहु विनय विशाला॥
तज्यो न कबहूँ शील सुभाऊ। दान देत महँ रहै उराऊ॥
युवा नारि मद शयन शिकारा। अतिअनुरत नहिं रह्यो कुमारा॥
काम क्रोध मद मत्सर मोहा। लोभहुसों राख्यो अति द्रोहा॥
कबहुँ काहु दीन्ह्यों ना गारी। बोल्यो वचन विशेष विचारी॥
किह्यो न बहुत हास रस प्रीती। जानेहु शत्रु मित्रकी रीती॥
आपन राज्य और पर राजू। लै सुधि सकल किह्यो सब काजू॥
वृथा खर्च कबहूँ नहिं करियो। सुमति संत संगति अनुसरियो॥

दोहा—सचिव सभ्य प्रकृती प्रजा, कारि रंजन विन रंज।
पालन कीन्ह्यों प्रीतियुत, जिमि करसों रवि कञ्ज॥

चौपाई ।

किह्यो कोष संचित धन भूरी । आयुध सकल रहैं नहिं दूरी ॥
कोष और आयुध आगारा । जो नृप संचित सविधि अपारा ॥
सैन्य सुहृद अरु सचिव सयाने । इनकी अनुमति मति मनुमाने ॥
जो पालत मेदिनी महीपा । रहत सुखित तिहि मित्रप्रतीपा ॥
राजनीति राजनको रामा । देवन यथा सुधाप्रद कामा ॥
ताते रघुवर प्राणपियारे । किहेहु काज सबभाँति सम्हारे ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई । लहे भूप सब पुण्य बडाई ॥
मोहिं शिखवत लागत अतिलाजू । रघुनायक लायक युवराजू ॥
कालिह सौंपि तुमको सब राजू । मैं करिहौं परमारथ काजू ॥
सुनि नृपवचन मुनीश सुजाने । मनहींमन कहि मुख मुसक्याने ॥
नारायण कर धारि सब भारा । परमारथकर करत विचारा ॥
अज शिव वंदित जिहि पद रेनू । अधिकफलत सुरतरु सुरधेनू ॥
दोहा-मानि विष्णुको पुत्र निज, चहत होन विन शोक ।
यह अचर्य कहि जात नहिं, नृप साधत परलोक ॥

चौपाई ।

रघुपति सुनत पिताकी बानी । बोले वचन विनय रस सानी ॥
नाथ सिद्धिकर आप प्रतापा । मैं किहि लायक कुमतिकलापा ॥
राउर शासन शिर पर मोरे । रथ लै बहत वाजि गुण जोरे ॥
दियो तात जिहि भाँति रजाई । करिहौं सकल भाँति मन लाई ॥
लैहै कृपा सुधारि तिहारी । नहिं शंका मति करति हमारी ॥
सुनि भूपति प्रसन्न अति भयऊ । जाहु भवन अस शासन दयऊ ॥
पितुपद वंदि चले रघुनाथा । गहे पाणि लक्ष्मणकर हाथा ॥
सुहृद सखा जे संग सिधारे । सुने वचन जे नृपति उचारे ॥
कौशल्याके भवन तुरंता । गवन किये मोदित मतिवंता ॥

सकल यथाक्रम खबारि बखाने । राम होहिं युवराज बिहाने ॥
सुत अभिषेक सुनत तहँ माता । आनँदमगन भनी असि बाता ॥
रामहुँते तुम मोहिं पियारे । नीक होय सो पुण्य तिहारे ॥
दोहा–चूमि वदन जननी सदन, आशुहि सखी पठाय ।
रत्न अनेकन आभरण, सुवरन कोटि मँगाय ॥

चौपाई ।

अपने कर दीन्हीं पहिराई । कह्यो लेहु धन खान मिठाई ॥
दियो पयोदधि सुरभि सुहाई । पृथकपृथक सब सखन बुलाई ॥
सखा जननि पद पंकज वंदे । गये राम ढिग आशु अनंदे ॥
गई रंगमंदिर महरानी । लगी मनावन शारँगपानी ॥
उत जब पिता चरण शिर नाई । मंडित महल चले रघुराई ॥
प्रजा प्रकृति नृप सकल जुहारे । कहे नाथ अब होहु हमारे ॥
हमरे भाग्यविवश रघुनाथा । नाथ भये हम भये सनाथा ॥
विनयसहित प्रभु उत्तर दीन्ह्यों । सोइभल जो पितुशासनकीन्ह्यों ॥
अस कहि भवन गये रघुलाला । समय जानि बोल्यो महिपाला ॥
निज निज भवन जाहु सब भाई । अइयो कालिह प्रभात तुराई ॥
सुनि नृपवचन सचिव पुरवासी । पायो मनहुँ महामुद रासी ॥
सुखी सकल उठि किये प्रणामा । गये भवन पूरे मनकामा ॥
दोहा–लगे मनावन देवतन, देव भवनमहँ जाय ।
कालिह राम युवराज पद, होय विघ्न टरि जाय ॥

चौपाई ।

सचिव महाजन नगरनिवासी । गये भवन जब आनँदरासी ॥
सभा भवनते उठ्यो नरेशा । गहि सुमंतकर चल्यो निवेशा ॥
निजमंदिरमहँ बैठि महीपा । कह्यो सुमंतहि बोलि समीपा ॥
पुष्य योग शुभकाल सुजाना । होय अवाशि अभिषेकविधाना ॥

हौं राजीव विलोचन काहीं । अभिषेकिहौं शंक कछु नाहीं ॥
जाहु सचिव तुम राम लिवावन । ल्यावहु सीयसहित सुखछावन ॥
सुनत सचिव स्वामीकर शासन । राम भवन गवन्यो दुखनाशन ॥
चढ्यो चारु रथ सचिव प्रधाना । राममहल कहँ कियो पयाना ॥
राममहल गवनत पुरवासी । लखे सुमंतहि आनँदरासी ॥
दौरि दौरि पूछहिं तिहि काहीं । आजुहि नृप अभिषेक कराहीं ॥
कह्यो सूत नहिं कारण जानौं । भूपति शासन रामहि आनौं ॥
घर घर मंगल बजत बधाई । पुरवासिन सुख नहिं कहिजाई ॥

दोहा—घर घर बाज बजायकै, प्रजा करहिं सब गान ।
सुखद राम युवराज पद, होई होत विहान ॥

चौपाई ।

रामकथा सब पुरमहँ पूरी । सुनत सचिव नेरेहु अरु दूरी ॥
प्रजा सजावहिं निज निज द्वारा । कदली खंभ कुंभ जलभारा ॥
लसैं कनक तोरण सपताका । मानहुँ अंबर उडत बलाका ॥
सींची गली सुगन्धित नीरा । थल थल भरी मनुजकी भीरा ॥
यहिविधि देखत सूत बजारा । देख्यो जाय रामगृह द्वारा ॥
अतिविचित्र नहिं जाय बखानी । मनु कैलासशृंग छबिखानी ॥
देख्यो रामभवन वर मंत्री । गायक खडे गहे बहु तंत्री ॥
शक्रसदन जिहि लखि लहलाजा । द्वारन कनक कपाट विराजा ॥
जटित मणिन मंदिर महरावैं । सुवरन सभा भवन अतिभावैं ॥
शरद अभ्र सम शुभ्र सुहावन । मनहुं सुमेरु शृङ्ग अतिपावन ॥
बनी देहरी विद्रुम केरी । मर्कत माणिक जटित घनेरी ॥
झूलत कुसुमसुगंधित माला । बिचबिचमणिमाणिकबहु प्रवाला ॥

दोहा—अगर तगर चंदन विमल, उडत सुगंधित धूम ।
भरयो भवनमहँ कढत नहिं, जिमि धन राखत सूम ॥

चौपाई।

निकसत पवन पाय बरि आई। यथा कृपणधन राजरजाई॥
मणिमय सारस शिखी विहंगा। तथा रत्नके विविध कुरंगा॥
कारीगर करि करि निपुणाई। विश्वकर्मते अधिक दिखाई॥
देखत मंदिर सुंदरताई। जहँ जात मन तहँ लुभाई॥
शशी सूर सम भवन विभासी। ब्रह्मसदनसम आनँदरासी॥
सत्य कुरंग विहंग अपारा। गृहाराम महँ करहिं विहारा॥
सदन सुमेरु समान उतंगा। प्रविश्यो सचिव विहाय सतंगा॥
अति उदग्र शरदभ्र समाना। प्रतीहार ठाढे तहँ नाना॥
ठाढे पुरवासी कर जोरे। लिहे नजरहित रत्न अथोरे॥
कुब्जक क्लीब विविध परिचारक। जे रनिवासन खबरि प्रचारक॥
खडे तयार मतंग उतंगा। बाजी ताजी तहँ बहुरंगा॥
खडे सुभट सायुध अति शूरा। अंगन मंगन गणते पूरा॥

दोहा—प्रथम पँवरि यहि विधि लख्यो, गयो दूसरे द्वार।
खडे नजर लै जोरि कर, बहु हजार सरदार॥

चौपाई।

शत्रुंजय कुंजर तहँ भावत। जाहि जोहि लाजत ऐरावत॥
राम सवारीके बहु बाजी। सोहत सज लगाये राजी॥
प्रतीहार तहँ देव समाना। कौन भाँति तिन करौं बखाना॥
लख्यो जाय पुनि तीसर द्वारे। कोटिन भूप खडे बलि धारे॥
रजत कनकके वृक्ष सुहावन। चहुँकितफटिकभवनअतिपावन॥
पहुँच्यो मंत्री चौथे द्वारा। ठाढे रघुकुल राजकुमारा॥
रघुपति सखा सुहृद सब नाना। बैठे विपुल मनहुँ मघवाना॥
गयो सचिव पुनि पंचमद्वारा। नर्म सखा तहँ लसैं अपारा॥
उठे सुमंतहि आवत देखी। बोल्यो सचिव काज निज लेखी॥

देहु राम कहँ खबरि जनाई । मैं आयों लहि राज रजाई ॥
नर्म सखा चलि खबरि जनाई । सचिव आशु लै चले लिवाई ॥
पहुँच्यो छठईं डेउढी जाई । शस्त्रधारिणी सखी सुहाई ॥

दोहा–नर्म सखन ताजि तहँ रह्यो, नहिं कहुँ पुरुष प्रचार ।
शस्त्रधारिणी नारि तहँ, सोहहिं अमित हजार ॥

चौपाई ।

गयो सातयें द्वार सुमंत्रा । बैठ्यो तहँ यक लषण स्वतंत्रा ॥
गहे पाणि कार्मुक अरु बाना । सोहत मनहु शरद सित भाना ॥
नर्म सखा अरु सखी हजारन । आवत जात किये शृङ्गारन ॥
मणिमय भूमिभवन अतिभारी । रंगमहल विकुंठ छबिहारी ॥
राम महल वरणौं किहि भाँती । नहिं जनात जाती दिनराती ॥
रवि शशि प्रभा लजावन हारो । सुर मुनि मानस चोरनवारो ॥
तहँ अशोक वाटिका सुहाई । सोहै सीय सखिन समुदाई ॥
चिंतामणि सिंहासन चारू । कल्पवृक्ष तर विशद विहारू ॥
बैठे सीयसहित रघुनन्दन । सोहि रहीं सखि वृन्दन वृन्दन ॥
अतिहि अरुण अंगन अँगरागा । निरखत शोभ मदन मद भागा ॥
चमर छत्र सजनी कर धारे । रति रंभामद हरहिं निहारे ॥
सीता राम उभय छबिखानी । मिलि सितश्याम प्रभा पसरानी ॥

दोहा–मनहु भानु मंडल उपर, सोहि रह्यो घनश्याम ।
अचल चंचला राजती, वाम भाग अभिराम ।

चौपाई ।

मनहुँ मेरु मस्तक शशि भानू । बैठे प्रभा पसारि दिशानू ॥
आलबाल बहु मणिगण केरे । कनक लता तमाल इव हेरे ॥
मनहुँ रमापाति रमा सुहाये । कनक शेष आसन छबि छाये ॥
कोवरणै छबि सिय रघुपतिकी । नहिं पहुँची कैसहु कविमतिकी ॥

निज पग अँगुठा डीठिहि राखी। कह्यो सुमंत बचनमृदु भाखी॥
करौं प्रणाम राम अभिरामा। आयों आप लिवावन कामा॥
चलहु कुँवर तुव पिता बुलाये। कारण कछु नहिं मोहिं बताये॥
गवनै अंतहपुरमहँ सीता। कौसल्याके निकट पुनीता॥
सचिववचन सुनि रघुकुल भानू। शंकित भये किये अनुमानू॥
पितुसमीपते अबहीं आये। कौन काज पितु बहुरि बुलाये॥
पितु शासन शिर धरि रघुराई। चले सुमन्त संग अतुराई॥
जनकसुता कहँ वचन प्रकाशा। शिबिका चढि गवनहु रनिवासा॥

दोहा–प्रभु शासन सुनि जानकी, सहितसखिनके वृन्द।
चढिशिबिका गवनत भई, जिमि तारन मधिचन्द॥

चौपाई।

सजीं बाहकी सखी सुहाई। लीन्हीं शिबिका कन्ध उठाई॥
कौसल्याके सदन सिधारी। सहसन सखी संग सुकुमारी॥
सासुसदन सिधारि शुचिसीता। करि प्रणाम ढिग बैठि पुनीता॥
इत रघुनन्दन स्यन्दन चढिके। पितुमंदिर गवने मुद मढिके॥
चलत पन्थ पेखत पुर शोभा। जिहि विलोकि वासव मनलोभा॥
भूपति सखा पौरि सरदारा। जात जनक गृह राम निहारा॥
आजुहि जानि राम अभिषेका। पूछहिं जुरि जुरि प्रजा अनेका॥
देत सुमंत सबन समुझाई। जात राम लहि पिता रजाई॥
लषणसमेत सखन प्रभु भाषे। ऐहौं द्रुत अस कहि गृह राखे॥
आप सुमंत गये पितु ऐना। कह्यो द्वारपहि राजिवनैना॥
शासन होय तो चलौं समीपा। बुलवायो सुनि राम महीपा॥
प्रविश्यो हिमगिरिसमपितु मंदिर। चोरत चित्त चारु चय चंदिर॥

दोहा–लख्यो दूरते भूपमणि, जोरि लियो युग हाथ।
करत प्रणाम चले पुलकि, बार बार रघुनाथ॥

चौपाई ।

उठि नृपनाथ लियो उर लाई । बार बार दृग बारि बहाई ॥
कनकासनमहँ सुत बैठायो । मंजुल वचन भूप मुख गायो ॥
सुनहु लाल मम प्राणपियारे । भये शिथिल सब अंग हमारे ॥
साठि सहस्र वर्ष वय मोरी । पाल्यो मही सहित बरजोरी ॥
भोग्यों भोग मनो अभिलाषी । सौख करन बाकी नहिं राखी ॥
भूरि दक्षिणा यज्ञ अनेका । अन्नदान दै सहित विवेका ॥
कीन्ह्यों सविधि सहित मुनिराई । भयो सुखी तुमसम सुत पाई ॥
मनभायो दीन्ह्यों सब दाना । पढ्यों वेद सब शास्त्र पुराना ॥
नहिं बाकी अनुभव सुख कोई । देव पितर ऋषि उऋण बनोई ॥
तुम अभिषेक छोडि रघुराई । अब बाकी कछु मुहिं न दिखाई॥
ताते कहौं जौन सो कीजै । अब नहिं और कछू मन दीजै ॥
पुरजन गुरुजन सचिव अनेका। चहत काल्हि राउर अभिषेका ॥

दोहा-ताते काल्हिं विशेषकै, करि तुम्हरो अभिषेक ।
सुखी चित्त करिहौं भजन,त्यागि सकल जिय टेक॥

चौपाई ।

लखेहुँ स्वप्न रजनी अति घोरा । गिरहिं लूक दिनमहँ करिशोरा ॥
मेरे जन्म नँछत्रहि काहीं । पीडित कुज रवि राहु कराहीं ॥
और अनेक होत उत्पाता । कहत ज्योतिषी सब असिबाता॥
जहँ अस अशकुन होत अलेखा । मरै भूप लहि विपति विशेषा ॥
ताते जबलगि रहै शरीरा । करहुँ तोर अभिषेक अपीरा ॥
आजु पुनर्वसु चन्द्र सुहावन । होई काल्हि पुष्यकर पावन ॥
सकल देव चिंतक गुणि शोधे । सुभग सुदिन अस मोहिं प्रबोधे॥
ताते अतिहि तुरा जिय लेखी । काल्हि करौं अभिषेक विशेखी॥
ताते वधूसहित रघुराई । कुश साथरी शयन करु जाई ॥

सुहृद सखा रक्षैं निशि सोवत। शुभकारजहि विघ्न बहु होवत॥
बसहिं विदेश भरत जबताईं। तबलगि मैं अभिषेक इहाईं॥
होय सुपद युवराज तुम्हारा। यही काल अस मतो हमारा॥

दोहा–यदपि भरत सज्जन सुमति, सेवक सदा तुम्हार।
इन्द्रियजित नित धर्मरत, दयावान सविचार॥

चौपाई।

तदपि मनोगति चंचल होई। क्षण क्षण फिरत न जानत कोई॥
संत धर्मरत जे बडभागी। कबहुँ कबहुँ तेउ होत सरागी॥
अस कहि मौन भये महराजा। उत्तर दियो न कछु रघुराजा॥
होत विलंब जानि अवधेशा। भवनजाहु अस दियो निदेशा॥
करि प्रणाम गवने रघुराई। आशु आपने आलय आई॥
कहा लषण पूछ्यो परिचारन। ते कह मातुसदन पगुधारन॥
अंतहपुरपंथ ह्वै भरि नेहू। रामहु गये कौशिलागेहू॥
रही न जननी महलनमाहीं। गई रंग प्रभु मंदिर काहीं॥
पहिरि पिताम्बर रघुपतिमाता। बैठी अचल न बोलति बाता॥
तहाँ रहे लक्ष्मण अरु सीता। आय सुमित्रा बैठि पुनीता॥
मूँदे नयन कौशिला देवी। रंगनाथ ध्यावत पदसेवी॥
सीता लषण सुमित्रा रानी। बैठे परममोद मन मानी॥

दोहा–सुतको सुनि युवराजपद, पुष्ययोग नृप देत।
प्राणायाम लगी करन, लालन मंगलहेत॥
ध्याय जनार्दन परपुरुष, रंगनाथकहँ रानि।
बारहिं बार मनावती, जोरे पंकजपानि॥

चौपाई।

तिहि क्षण आये रघुकुल चंदा। वंदे मातुचरण अरविंदा॥
जोरि पाणि अस वचन उचारा। सौंपत पिता राज्यकर भारा॥

अंब तोर शासन जो पाऊं । राज भार तो शीश उठाऊं ॥
काल्हि होत अभिषेक हमारा । ताते पुनि अस पिता उचारा ॥
वधूसहित व्रत करौं निशामें । उचित होय अब जस कहु तामें ॥
पुत्रवधू अरु पुत्रहु काहीं । करु निदेश मुद मंगलमाहीं ॥
सुनत प्राणप्रिय सुतकी बानी । कौशल्या बोली हुलसानी ॥
नैनन आनँद आँसु बहावत । गद्गद कण्ठ न कछु कहि आवत ॥
वत्स राम चिरजीवहु प्यारे । लहैं नाश सब शत्रु तिहारे ॥
सम्बन्धी बांधवसुख लीजै । लषण सुमित्रा अनुमति दीजै ॥
परम सुयोग नखतमहँ जाये । मोरि कुक्षि धनि पुत्र बनाये ॥
पितहि प्रसन्न कियो सब भाँती । धन्य लाल तुम रिपुगणघाती ॥

दोहा-श्रीइक्ष्वाकु नरेशते, अबलों यहि कुलकेर ।
श्री यश रीति बडापनो, बरिहैं तुहि नहिं देर ॥

चौपाई ।

पालेहु प्रजन पुत्र प्रिय प्यारे । ईश्वर होंइ सहाइ तिहारे ॥
करहु सीययुत निशि उपवासू । ध्यावहु दै मन रमानिवासू ॥
करैं विष्णु रक्षण सब काला । परै न कबहूँ कुँवर कसाला ॥
पूरण भयो मनोरथ आजू । निरखौं तोहिं होत युवराजू ॥
अस कहि मौन भई जब माता । तब रघुनन्दन आनँददाता ॥
गहे सुमित्रापद जलजाता । बोले वचन सनेह अघाता ॥
जननि तोरि दाया फलदाई । मुहिं अवलम्ब अंब सेवकाई ॥
लियो सुमित्रा प्रभु उर लाई । आँखिन आनँद अंबु बहाई ॥
जियहु चारि युग पुत्र पियारे । तुमहींसे सुख सकल हमारे ॥
कही लषणसों रघुपति बानी । प्राणसमान तोहिं जिय जानी ॥
तेरे कर करवैहौं काजू । मोसों कछु न काज तुव राजू ॥
सावधि करहु शासन वसुधाको । तव सहाय मोहिं पान सुधाको ॥

दोहा–बाहिचर मेरे प्राण तुम, भोगहु भोग अपार ॥
लेहु सकल यह राजफल, तुव हित हेत हमार ॥
मम जीवन अरु राज सब, लषण तिहारे अर्थ।
जो न लगै तुव हेतमहँ, सो हम जानहिं व्यर्थ ॥
लषण जोरि कर परशि पद, बोल्यो मंजुल बैन।
तुवपद सेवन त्यागि कछु, कारज जानौं मैं न ॥
सुनत लषणके वचन प्रभु, उरलगायगहिहाथ।
बिदा भये दोउ जननिसों, करि प्रणाम रघुनाथ ॥
दियो इशारा लषणसों, चलै जानकी भौन।
बिदा माँगि सिय सासुसों, चली महल सुखमौन॥
"कौसल्याके भवनते, लषण जानकी राम।
कनकभवन गवनत भये, ह्वै मन पूरणकाम ॥

चौपाई।

इतै भूपमणि मनहिं विचारे। होय राम अभिषेक सकारे॥
आज वसिष्ठ जाय रघुराजे। करवावैं विधि जो निशि काजे॥
अस विचारि नृप गुरुगृह गयऊ। करि प्रणामभल भाषत भयऊ॥
जाहु राममंदिर मुनिराई। आवहु सकल विधान कराई॥
करहिं सीययुत व्रत सविधाना। जाते राज लाभ कल्याना॥
निजअभिमतसुणिगुरुसुखपाई। कह्यो भूपसों अब हम जाई॥
रघुपतिके अभिषेकहि हेतू। करवाउब व्रत सीयसमेतू॥
अस कहि चढ्यो ब्रह्मरथमाहीं। श्वेत तुरंग बहे रथ काहीं॥
चल्यो रामके भवन मुनीशा। अति सुन्दर मन्दिर दृग दीशा॥
शरद अभ्रसम शुभ्र सुहावन। रंगमहल उतंग अति पावन॥
गये नाकि जब त्रय दरवाजा। गुरु आवत जान्यो रघुराजा॥
लषणसहित धायो अतुराई। पाँउ पयादे भवन विहाई॥

दोहा-गुरु स्यन्दनके निकट चलि, रघुनन्दन द्रुत आय।
लषणसहित वंदन किये, आनंदन शिरनाय॥

चौपाई।

कर गहि रथते लिये उतारी। चल्यो भवन लै वचन उचारी॥
भाग्यमान मोसम को आजू। आयो जासु भवन मुनिराजू॥
गुरुको सिंहासन बैठाई। पूजे सविधि सीय रघुराई॥
जोरि पाणि बोले मृदु वानी। आयसु काह होत गुरु ज्ञानी॥
बोल्यो मुनि त्रिकालको ज्ञाता। ह्वै विमनसमुख मंजुल बाता॥
रघुपति पिता प्रसन्न तिहारे। बखसत राजभार भिनुसारे॥
भूप तुम्हैं युवराज बनावैं। राज काजते वृत्ति हटावैं॥
ताते होहु निशा उपवासी। सहित जानकी आनँदरासी॥
एवमस्तु कहि प्रभु मुसक्याई। मुनि विधि मंत्रहु दियो बताई॥
राम सिया संयम करवाई। शंकित मन गवने मुनिराई॥
कढे भवनते नगर निहारे। अवध नारि नर परमसुखारे॥
उतै राम ढिग सुहृद सिधारे। बैठे हिलि मिलि भूपदुलारे॥

दोहा-हँसत हसावत राम कहँ, कहि कहि हित इतिहास।
बोले रघुपति बैन मृदु, जान चहौं मैं वास॥

चौपाई।

जानि समय सब सखा जुहारे। राम चले जानकी अगार॥
राम भवनते जब मुनिराई। चले राजमंदिर अतुराई॥
नगर लख्यो नर नारि समूहा। रामभवन जूहनके जूहा॥
यथा प्रफुल्लित कमल तलाऊ। वसैं विहंग अभंग उराऊ॥
रामभवनते कढ्यो मुनीशा। कोटिन मनुजवृन्द वर दाशा॥
कोशलनगर मनुज गण पूरा। हाटन बाटन निकटहु दूरा॥
परे नजर तहँ मनुजन भीरा। करहिं कुतूहल जन बिन पीरा॥

उठे मनुजगण अगणित रंगा । अति संघर्ष हर्ष बहुरंगा ॥
चारिहु ओर मच्यो अति शोरा । मनहुँमहोदधि रव अतिघोरा ॥
रथ तुरंग मातंग सवारा । पैदर पूरित भईं बजारा ॥
सींची गली सुगंधित नीरा । फूल फबित मंदिर जन भीरा ॥
लखी चहूँकित पुहुपजालिनी । अवधपुरी भइ मनहुँ मालिनी ॥

दोहा—कनक दंड फहरत विमल, घर घर तुंग पताक ।
अवधपुरीकी शोभकी, भइ सुरपुरलों धाक ॥

चौपाई ।

बाल वृद्ध युव पुर नर नारी । सुनत राम अभिषेक सुखारी ॥
कहत सबै कब निशा सिराई । आज उवैं अबहीं दिनराई ॥
सजैं सजावैं जन परिवारा । लखन हेत अभिषेक अपारा ॥
होत राम युवराज बिहाने । ये सुख मनुजनहिय न समाने ॥
करहिं विनय विधुसों पुरवासी । होहु मलीन देहु सुख रासी ॥
कब निशि बितै उवै दिननाहा । अवलोकैं अभिषेक उछाहा ॥
रही छाय धुनि यही बजारन । नरन नयन भै नींद निवारन ॥
यहिविधि लखतअनन्दबजारन । कसमसपरत कढत प्रतिद्वारन ॥
गुरु वासिष्ठ रथ चढ्यो सुजाना । मंद मंद मग कियो पयाना ॥
दौरि दौरि शिशु चढैं अटारी । पेखहिं पूरब उये तमारी ॥
लखत नगर कौतुक मुनिराई । पहुँच्यो राजभवन महँ जाई ॥
शरद सलिलधर घटासमाना । अति उतंग प्रासाद महाना ॥

दोहा—गुरु वासिष्ठ रथ तजि तुरत, चढ्यो नरेश निवेश ।
पहुँच्यो दरशन ढिग यथा, वाचस्पति अमरेश ॥

चौपाई ।

कौशलेश आवत गुरु देखी । उठ्यो नृपासन त्यागि विशेखी ॥
पूछ्यो गुरु कहँ शीश नवाये । नेम कराय रामकहँ आये ॥

कह्यो वसिष्ठ विधान कराई । राम सीय कहँ मन्त्र बताई ॥
जाहिर करन आप कहँ आये । जाहुँ भवन तुव शासन पाये ॥
सुनि मुनिवचन सभासद हर्षें । करि प्रणाम नयनन जल वर्षें ॥
कह वसिष्ठ भूपतिसों बानी । करहुगवन अब भवन विज्ञानी ॥
सकल सभासद मुनिहि सराहत। उठि उठि प्रणवतपद सुखगाहत॥
माँगि बिदा गुरुसों महिपाला । चल्यो कैकयी भवन विशाला ॥
जिमि गिरिगुहा जात मृगनाथा। तिमि रनिवासगये नृपनाथा ॥
अन्तहपुर डेउढी जब आये । सखी सहस्र लिये सुख छाये ॥
चलीं लिवाय कैकयी ऐना । जयजय कहत मधुरमुख बैना ॥
शक्रसदन सम सदन सुहावन । फैल्यौ मणिप्रकाश छबिछावन ॥

दोहा–सखि मण्डल मंडित महा, माध सोहत महिपाल ।
तारा मण्डल मध्य मनु, राकाचन्द्र विशाल ॥

चौपाई ।

उतै राम गुरु शासन मानी । जानकि सदन जानकी जानी ॥
जाय कियो मज्जन सविधाना । सीतासहित सुखी भगवाना ॥
पहिरि पितांबर रघुवर सीता । रचि पायस धरि पात्र पुनीता ॥
सीतासहित राम सुख छाये । नारायण मंदिर महँ आये ॥
वेदी विरचि अनलतिहि थापी । कियो हवनविधिसहित प्रतापी ॥
इष्टदेव नारायण ध्यायो । हवन शेष पायस पुनि पायो॥
युगल कुशा साथरी बनाई । बैठे सीयसहित रघुराई ॥
भये मौन नारायण ध्यावत । जनु सुरकारज सुरति लगावत ॥
बसे विष्णुमंदिर महँ राती । किये शयन नेसुक अरिघाती ॥
रही जबै यक पहर त्रियामा । उठे जानकी संयुत रामा ॥
सुहृद सखनको तुरत बुलाई । दियो सपदि शासन रघुराई ॥
करहु अलंकृत मंदिर मोरा। सजवावहु मतंग रथ घोरा ॥

दोहा–सुनत सकल शासन सुहृद, सुन्दर सदन सजाय।
रथ तुरंगमातंग बहु, द्वारदेश मँगवाय॥

चौपाई।

किये निवेदन कारज करिकै। बैठे द्वारदेश मुद भरिकै॥
तिहि अवसर तहँ परमअनंदी। आये मागध सूतहु बन्दी॥
बाँचन लागे सूत पुराना। मागध वंशावली बखाना॥
बन्दी बिरुद बखानन लागे। जाने प्रजा जगतपति जागे॥
प्रातकृत्य करि नाथ नहाये। पहिरि पीतपट अतिछबिछाये॥
करि प्रभात संध्या रघुराई। जपि गायत्री अतिचित लाई॥
मधुसूदनकी अस्तुति कीने। सीतासहित विनय रस भीने॥
करि प्रणाम अष्टांग उदारा। वैदिक विप्रन वेगि हँकारा॥
सहसन वादक विप्र सिधारे। ते पुण्याहवाचनहि उचारे॥
तिन पुण्याहवचन धुनि भारी। छाई अवधनगर मनहारी॥
सो धुनि सुनि परिजन जे द्वारे। लगे बजावन तूर्य नगारे॥
नौबत झरत सु द्वारन द्वारा। बाजे बजत अनेक अपारा॥

दोहा–कृतव्रत रघुपति जानकी, अवध प्रजा सुनि कान।
भये विगत संदेह सब, माने मोद महान॥

चौपाई।

निशा सिरानि भयो भिनुसारा। सजत सजावत पुरी अपारा॥
श्वेत जलध शृङ्ग सम नाना। सदनसदन प्रति फहरनिशाना॥
द्वार द्वारमहँ तने विताना। सुर मंदिर पूजन सविधाना॥
चौहट हाटन घाटन माहीं। ऊँची अटा गलिन लघु पाहीं॥
तोरण ध्वजा रंभके खंभा। भरे कनक कमनीय सुकुंभा॥
धनिक धनदसमअवधनिवासी। रचे दुकान मनोहर खासी॥
आपहु सजे सजाय कुटुम्बा। लखन महोत्सव मोद कदंबा॥

पुरबाहर जहँलगि अमराई। दिये निशान उतंग बँधाई॥
जहँलगि ग्रामदेवके नामा। रहे विटप चौरा अरु धामा॥
पूजे सब तहँलगि पुरवासी। रघुपति सुखी रहनके आसी॥
नट नर्तक गायक गण आये। रघुपति द्वार समाज लगाये॥
गावहिं मंगल गीत सुहावन। बाज बजावहिं विविधउरावन॥

दोहा–कोशलपुर चहुँ ओरमें, छाये मंगल शोर।
नटी नचहिं करि करि कला, द्वार द्वार सब ठोर॥

चौपाई।

औरहु वारवधुनके वृन्दा। मंगल गावहिं पाय अनन्दा॥
जुरिजुरि थल थलमहँ पुरवासी। रामकथा सब कहहिं हुलासी॥
चलहु चलहु अब भूपतिद्वारे। लखहु राम अभिषेक सुखारे॥
रघुपति कर अभिषेक उदारा। बालक खेलहिं खेल बजारा॥
कहहिं राम अभिषेक कहानी। पुरी राममय महा सुहानी॥
भवन भवन भो सुरभित धूपा। पुहुपजाल बँधिगये अनूपा॥
अवधसमान शोभ नहिं कतहूं। अलकावतिहूं अमरावतिहूं॥
गलिन गलिन सिगरे पुरमाहीं। झलकत पन्ना झाड सुहाहीं॥
रह्यो पूरि पुर परम प्रकाशा। दिवस समान भयो तमनाशा॥
जात न जाने निशि पुरवासी। पूरब प्रगट भये तमनासी॥
सकलप्रजा आपुसमहँ जुरिजुरि। कहहिं वचन मानहुतुमफुरिफुरि॥
युग युग जीवै दशरथराऊ। हमहिं दियो यहि भाँति उराऊ॥

दोहा–जानि जरठपन बयस निज, चतुरशिरोमणि भूप।
रामहिं दिय युवराज पद, करि अभिषेक अनूप॥

चौपाई।

कियो अनुग्रह हम पर पूरी। पालक राम भयो दुख दूरी॥
करहिं जगतपति कृपा अपारा। पालहिं प्रजा राम युग चारा॥

पूर्वापर जानत रघुराई । रहत सहज नृप गर्व बिहाई ॥
धर्मात्मा पंडित पंचानन । बंधुप्रजा कुलप्रिय असआनन ॥
भरतलषण रिपुहन जसजानत । तस हमहूं सबकहँ प्रभु मानत ॥
चिरंजीवि दशरथ नृप होहू । रामहिं कियो नाथ कारि छोहू ॥
अभिषेकित देखब रघुराजू । भाग्यवानको हम सम आजू ॥
यही शोर सब पुरमहँ छायो । देश मनुजगण देखन धायो ॥
आजुहिं होत राम युवराजू । भयो दिशानन शोर दराजू ॥
सुर नर मुनि जे जे सुनि पाये । प्रभु अभिषेक विलोकन धाये ॥
रह्यो भुवन भरि मंगल शोरा । यथा पर्व लहि सागर रोरा ॥
रह्यो जाहि जेतो अवकासा । चल्यो देन लै मणि धनवासा ॥

दोहा–होत राम युवराज पद, भरिगो भुवन उछाह ।
और सबै मोदित भये, दुखी भयो सुरनाह ॥
जिमि जलचरगणते उदधि, शब्दित पर्वहि पाय ।
शब्दवती कौशलपुरी, भय जिमि मोद निकाय ॥
भये देव संदेहयुत, राज काज रत राम ।
किहि विधि रावण मारि हैं, ठानि घोर संग्राम ॥
कैकयीकी दासिका, रही मंथरा नाम ।
धूम धाम सुनि नगरमहँ, चली विलोकन काम ॥

छंद चौबोला ।

चढी उतंग चन्द्रशाला महँ लखी अयोध्या नगरी ।
पूरित फूलन गली बजारहु सींची सौरभ सिगरी ॥
भवन अलंकृत ध्वजा पताके फहारि रहे चहुँ ओरा ।
खैर भैर माचि रह्यो नगरमहँ सुर पूजन सब ठोरा ॥
रघुपतिके धात्रीसे पूंछो कहा होत पुरमाहीं ।
रामजनानि रानी कौसल्या दोति वित्त सब काहीं ॥

कह्यो राम धात्री न सुने तैं होत राम युवराजू ।
करत काल्हि अभिषेक भूपमणि सौंपत सिगरी राजू ॥
सुनि पापिनि मन्थरा दुखित ह्वै गई कैकयी नेरे ।
तिहि जगाय अस कह्यो बैठि कस परै न लखि दृगहेरे ॥
केकै देश पठै भरतहि नृप करहिं राम युवराजू ॥
ह्वैगो सकल सुहाग भंग तुव भइ चेरी सम आजू ॥
सुनत कैकयी कह व्याकुल ह्वै दे अनुमति कछु मोहीं ॥
कह मन्थरा भूप दीन्ह्यों दुइ वर पूरब जो तोहीं ॥
क्रोधभवन चलि माँगि ठानि हठि देहैं नृप सतिवादी ।
चौदह वर्ष वसैं वन रघुपति लहै भरत नृपगादी ॥
सुनि कैकयी क्रोधगृह गवनी आये जब महिपाला ॥
मरण ठानि माँग्यो सुख द्वैवर भूपति भये विहाला ।
बोलि राम कहँ कह्यो जान वन रघुपति अति सुखमाने ।
सीता लषण समेत चले वन हर्ष विषाद न आने ॥
शृङ्गवेरपुर बसे जाय प्रभु मिलिके सखा निषादै ।
उतरि गंग पहुँचे प्रयागमहँ दियो मुनिन अहलादै ॥
भरद्वाजको मिलि पुनि रघुवर यमुना उतरि अनन्दे ।
वाल्मीकिके आश्रम आये विनयसहित पद वंदे ॥
वसे विचित्र चित्रकूटहि पुनि पर्णकुटी रचि नीकी ।
लह्यो महासुख सहित लषण सिय अवधपुरी भै फीकी ॥
रामविरह बिलपत आधी निशि भूपति तज्यो शरीरा ।
केकयपुरते भरत बुलायो गुरु वसिष्ठ मतिधीरा ॥
समुझायो बहु राज करनको भरत कियो नहिं राजू ।
चल्यो चित्रकूटहि मातन लै वसत जहां रघुराजू ॥
शृङ्गवेरपुर मिलि निषादसों पहुँचे भरत प्रयागा ।

पावँ पयादे चलत पंथमहँ भरे राम अनुरागा ॥
शत्रुशालयुत तीर्थराजमहँ भरद्वाज कहँ देखे ।
तिन अनुमति चलि चित्रकूटमहँ देखि राम मुद लेखे ॥
बहु विधि कियो विनय लौटन हित जनकभूपतहँआये ।
तेऊ बहुत भाँति समुझायो राम न कछु चित लाये ॥
पितुप्रण पालनहेत कृपानिधि देवन काज विचारे ।
दै पादुका बिदा करि भरतहि आप विपिन पगु धारे ॥
सानुज भरत नंदिग्रामहि चलि बसे वेष मुनिधारी ।
राम अत्रि अनसुइया आश्रम गये प्रमोद पसारी ॥
अनसुइया दिय सियहि शिखापन पट भूषण पहिराई ।
मुनिसों बिदा माँगि रघुनायक चढे शैल सुख पाई ॥
मिल्यो भयंकर तब मारगमहँ दानव आय विराधा ।
ताहि मारि महि गाडिदीनि गति मेटी सुरमुनि बाधा ॥
मुनिके अस्थिशैल दिखरायो मुनिजन विनती कीन्हें ।
करिहौं अवशि हनिनिशिचरमहि अस प्रणप्रभु करि दीन्हें ॥
गे शरभंग आश्रमहि रघुवर मुनि करि प्रभुहि प्रणामा ।
राम लखत तनु दाहि दहनमहँ गयो ब्रह्मके धामा ॥

दोहा—गये सुतीक्षण आश्रमहि, राम लषण सिय संग ।
मुनि नाचन लाग्यो पुलकि, पग्यो प्रेमके रंग ॥

छन्द चौबोला

चले सुतीक्षण आश्रम ते प्रभु धनु सायक करधारी ।
क्षात्रधर्मरत निरखि राम कहँ कह्यो विदेह कुमारी ॥
अवधराज तजि विपिन बसहु पिय वन वासिनकी रीती ।
काहेको शर धनु वर धारहु देखि लहत सब भीती ॥
पूरण करि वनवास यथा प्रण कोशलनगर सिधारी ।

राजतिलक करवाय धारि धनु होयहु बहुरि शिकारी ॥
सुनत जानकी वचन विहँसि प्रभु बोले मंजुल वाणी ।
कारण सुनहु विदेहनान्दिनी धरहुँ चाप शर पाणी ॥
क्षत्रिय धारत आयुध याहि हित आरत स्वर नहिं होई ।
धनु कहुँ धरे सुनै आरत स्वर ताते अधम न कोई ॥
वसत विचारे विपिन दीन द्विज मुनिजन राक्षस खाये ।
मोहिं देखि रक्षक अपनो गुनि मुनि शरणागत आये॥
दया लागि मुहिं कियो प्रतिज्ञा हरिलेहौं खल भीती ।
ताके हित मैं धरौं धनुष शर यह रघुकुलकी रीती ॥
तजहुँ प्राण वरु तजहुँ लषण वरु तजहुँ तोहिं वरु सीते ।
तजौं न प्रण मुनि विप्रनसों करि यही जानु सति जीते ॥
सुनत वचन पियके वैदेही कही जोरि युग पाणी ।
धर्म धुरंधर रघुकुल नायक कहहु न कस अस वाणी॥
यहिविधिवचनविलासकरतबहु विचरत विपिन मँझारी ।
बिते वर्ष दश राम लषण कहँ सहित बिदेहकुमारी ॥
कहुँ दशमास कहूं त्रयमासहु सात आठ कहुँ मासा ।
चित्रकूटते मुनि आश्रम लागि कीन्हें राम निवासा ॥
एक समय पुनि बहुरि सुतीक्षण आश्रममें प्रभुआये ।
बिदा माँगि मुनिते अगस्त्यके आश्रम गे सुखछाये ॥
मारगमहँ अगस्त्य भ्राता सो करि तिहि नाथ सुखारी ।
कुंभज कुटी जाय रघुनन्दन प्रणवे पाणिपसारी ॥
कुंभजोनि शारंग दियो धनु तथा अखण्ड निषंगा ।
पंचवटी महँ वसन हेत मुनि दियो निदेश अभंगा ॥
लषण जानकी युत रघुनन्दन पंचवटी पगु धारे ।
मिल्यो गीधपाति मारगमहँ जिहि नाम जटायु उचारे ॥

सो पूरबकी कथा कही सब दशरथ सखा हमारे।
पितु सम पूजि ताहि रघुनन्दन पुनि आगे पगु धारे॥
लषण जानकी सहित जगतपति गोदावरी निहारे।
परमरम्य कानन अस आनन खग मृग सुखित अपारे॥
पंचवटीमहँ पर्णकुटी रचि बसि सिय युत दोउ भाइ।
वलित विनोद विहार करत बहु दिय द्वै वर्ष बिताई॥
रावणकी भगिनी शूर्पणखा एक समय तहँ आई।
कोटि मदन मद मारक मूरति लखि सो रही लुभाई॥
जाय समीप करन रस वश महँ कही मनोहर वानी।
दियो लषण कहँ नाथ इशारा सीता भीता जानी॥
नाक कान बिन कियो लषणातिहि काढि कराल कृपानी॥
बूची नकटी पंचवटीते भगी महा भय मानी।
ताके बंधु बली खर दूषण त्रिशिरा लखि भगिनीको॥
चौदह सहस निशाचर लै सँग आये पंचवटीको।
राखि गुहामहँ लषण सहित सिय समर हेतु सजि रामा॥
करि कोदंड घोर टंकोरहि कियो सजुग संग्रामा।
चौदह सहस निशाचर मारे खर मंत्री संहारे।
रघुकुल भूषण दूषणको हति त्रिशिर बेशिर करि डारे॥

दोहा–कीन समर अति प्रखर खर, अग्निबाण तजि राम।
खडकि खाख खरको कियो, पूरे सुर मुनि काम॥
जनक लली पुनि चलि मिली, कीन्ह्यों लषण प्रणाम।
सुमन सुमन वर्षैं विपुल, राम धाम अभिराम॥
वर्णत ऋतु हेमंत प्रभु, पंचवटी निवसंत।
लहि अनन्द रघुनंद सिय, लषण सहित बिलसंत॥

कवित्त ।

छटी छल छद्मकी हटी ना सुकृत दान, घटी घटी पावनकी लगी चटपटी है । नटीसी नटात राम भक्ति लटपटी प्रेम, तटिनी गोदावरीकी तेजवन्त तटी है ॥ भनै रघुराज अटी कीरति न जाकी विश्व, प्रगटी न कलि नटखटी अटपटी है । शूर्पणखा नाक कटी रामपद चिह्न पटी, सोहै वैकुण्ठकी बटीसी पंचवटी है ॥

दोहा-खरदूषण अरु त्रिशिरको, जरत धूम दृग जोय ।
रावण आगे लंकमह, परी सुपनखा रोय ॥

छन्द चौबोला ।

सुनत लंकपति भयो कुपित अति गयो मरीच नगीचा ।
कह्यो ताहि शासन करु मेरो तैं मम अन्नहि सींचा ॥
ह्वै माया कुरंग संगहि चलु जनस्थानमहँ आजू ।
राजकुँवर दशरथके आये कीन्ह्यों मोर अकाजू ॥
अस कहि लै मारीच संग रावण दंडकवन आयो ॥
इत एकांत जानकीको लै राम वचन मुख गायो ॥
याही हित हमहूँ अरु तुमहूं लियो मनुज अवतारा ।
अब तुम वसहु अग्निमहँ जबलगि हरौं भूमिकर भारा ॥
छाया रूप जाय लंकामहँ बसो वर्ष पर्यंता ।
मिलहु मोहिं पावक ते पुनि तुम भये निशाचर अंता ॥
प्रभु निदेश सुनि पावक प्रविशी प्रमुदित जनककुमारी ॥
छायारूप कुटीमहँ राख्यो देवनहेत विचारा ॥
बनि माया कुरंग मारीचहुँ छाया सियहि लुभायो ।

धरि रघुवर धनु धर धनु शर कर हरबर मृगपर धायो॥
यती वेष रावण इत आयो छायारूप सियाको।
लै हरि चल्यो लंकधारि स्यंदन गीधराज लखि ताको॥
ठाढो रहु ठाढो रहु अस कहि मारि खरन रथ टोरयो।
लिय छडाय छायावपुसियको दशकन्धर मुख मोरयो॥
चल्यो गगनपथ छायावपु लै राख्यो लंकहि जाई।
इतै कपटमृग मारि लषणयुत लौटे द्रुत रघुराई।
कुटी सूनि लखि हेरत वन वन गवने दक्षिण नाथा।
मनहुँ विकलअतिविलपत पद पद चले लषणप्रभुसाथा॥
कछुक दूर आगे चलि रघुपति विकलविहंग निहारयो॥
कृपानिधान जटायु अंगरज निजजटानिसों झारयो॥
प्रभुपद परशि गीध तनु त्याग्यो निजहाथनकरिकरणी।
गीधराज कहँ दई राम गति वेद पुराणन वरणी॥
चले कछुक लखि अजामुखी राक्षसी भयानकरूपा।
काननाककुचकाटिलषण तिहि कीन्ह्यों बिकलविरूपा॥
पुनि कबन्ध योजनभुज पाशहि परे लषण रघुराई।
कियो बाहुयुग खंड खड्गसों दीन्ह्यों शाप मिटाई।
सो शबरी सुग्रीव सीयकी दीन्ह्यों सुरति बताई।
आये प्रभु पंपासर सानुज शबरी देखन धाई॥
ऐहैं प्रभु यहिहित शबरी फल चीखि चीखि धरिराख्यो।
शबरीकुटी जाय रघुनन्दन प्रेमविवश फल चाख्यो॥
दै शबरीको गति कोशलपति चलि पंपासर आगे।
विप्ररूप मारुतसुत मिलिकै कपिपतिसों अनुरागे॥
करि अविचल सुग्रीव मित्रता मीत दुखी जिय जानी।
एकहि बाण वालिवध कीन्ह्यों सप्तताल करि हानी॥

राजा तहँ सुग्रीव बनायो कारि अंगद युवराजू ।
वर्षा वसे प्रवर्षण हर्षण वर्षबितावन काजू ॥
पावसकी पूरण शोभा लखि जबै शरद ऋतु आई ।
सुरति दिवावनको सुग्रीवहि दीन्ह्यों लषण पठाई ॥
गवन्यो सखा समीप सुकंठहु कपि वाहनी बुलाई ।
चारि दिशन छाया सिय हेरन पठयो कपि समुदाई ॥
जाम्बवान अंगद हनुमानहु दक्षिणदिशिकहँ धाये ।
प्यासे प्रविशे स्वयंप्रभाबिल तिहि प्रभु पास पठाये ॥
तासु प्रभाव गये सागरतट शंकित भे सब भाँती ।
तहँ तिनको सब खबरि बतायो आय गीध संपाती ॥

दोहा-को शतयोजन सिंधुनाकि, जाय लंक निःशंक ।
लाग्यो होन विचार यह, मर्कट भये सशंक ॥
जाम्बवान तब ऋक्षपति, कीन्ह्यों मनहिं विचार ।
हनूमानकहँ मुद्रिका, दीन्ह्यों राज कुमार ॥
पवनपूत पूरण प्रबल, करिहै अवशि पयान ॥
अस विचारि बोल्यो विलखि, कस बैठे हनुमान ॥
लिये निशानी देनको, सुचित बैठ किहि हेत ।
कस न कूदि सागर सपदि, सिय सुधि ल्याय न देत ॥

कवित्त ।

वचन निबेरे ऋक्षपातिके घनेरे सुनि, बाढे वीर रंगके उमंग अंग तेरे हैं । नयननिको फेरे औ तरेरे दिशि दक्षिणपै, भुजनको रे त्योंही पूछको मुरेरे हैं ॥ मानि लंक नेरे है निशंक महावीर टेरे, मारि करौं ढेरे भट लंकापाति केरे हैं । राम केरे शारँगते चलैं प्रेरे सायक ज्यों, जैहौं लंक सुनौगे सबेरे गुण मेरे हैं॥ भयो विकराल मुख कालहूँको काल मानौ, लोचन विशाल लाल वीररस गाढ

भो। फरके प्रचण्ड दोर्दण्ड जे अखंड बल, मानो अण्ड खंड की-
बेको शरीर बाढ़ भो॥ रघुराज दायक अनंद अंजनीकोनन्द, की
कुल शालिबृन्द पालैको अषाढ भो। जानुते मसकि महि पूछ
पटकि कासि, कमर हुलसि कूदिबेको कपि ठाढ भो॥ मुजनि
बढाइ लामी लूमको उठाइ कारि, कानन चपाइ ग्रीवा नेकु
नवाइकै। पायनको रोपि महि कोपि त्यों रावणपै, कूदिबेको वारि-
निधि चोपि चित्त चाइकै॥ कटिको सकेल मुखमेलि मुद्रिका
कीश, झेलि उर आगू कहि रामै चित्त लाइकै। कीन्ह्यों अट्टहा
रघुराजै मोद राशि दीन्ह्यों, शैलै लीन्ह्यों ढाँपि बजरंग रंग छाइकै।

दोहा–वपु बढाय ऐंडाय कपि, भयो प्रलयरबिरूप।
कीन्ह्यों शोर कठोर आति, प्रलय जलद अनुरूप॥

कवित्त।

कैधौं कोटि कुलिशको भयो पुहुमीमें पात, कैधौं प्रलयकालके
पयोदकी अवाज है। कैधौं कोल डाढनते छूटी धरा धार्यो फो
धराधर गिरे सोई रव या दराज है॥ कैधौं उनचासो पौन के
एकबारै गौन, कढे फोरि मंदिरको सोई रवराज है। कैधौं के
पाय दंड लागे फाट्यो अंडकटा कैधौं आज केसरीकिशोर
गराज है॥ चल्यो लंकनगरको मारुत डगर ह्वैकै, मारुत
नंद मारुतैकी गति धारिकै। दूजो मार्तंडसों अकाश
प्रकाशमान, मार्तंड डरि भाग्यो ग्रसिबो विचारिकै॥ फूल
झरत फूले फूले तरु संग उडे, चले पहुँचावैं मनो बंधु
शोक टारिकै। रघुराज मोद छाये दुन्दुभी बजाये देव, जै
जै कहि गाये रामदूतको निहारिकै॥ बलकी अथाहैं वीर महिमें
मजाहैं करैं, हठि युद्ध चाहैं रणसिंधु अवगा हैं। कपिन पनाहैं
सर्वदा हैं राम जीतकी, ध्वजा हैं करि राहैं बहु लंकगढ ढाहैं हैं॥

दासन गुनाहैं नहिं गुनत क्षमाहै छई, वीरता नसाहैं फोरैं अंडहू
कटाहैं हैं। रघुराज छाहैं करैं शत्रुनको दाहैं उत, साहन उमाहैं भरी
हनुमंत बाहैं हैं ॥ कैधौं अहिराज आज राजत अकाशहीमें, कैधौं
यमराज कालपाश पसराई है ॥ कैधौं दशकंधरकी मीचु मडराती
व्योम, कैधौं महाकाल कोपि रसना लमाई है॥ कैधौं या त्रिनेत्रकी
त्रिनेत्रवाह्नि शिखा फैली, कैधौं हरि शारँगकी द्युति दरसाई है।
कैधौं रघुराज मोददाई छबि छाई मन, भाई वायुलाल जू लँगूर
लहराई है ॥ कैधौं प्रलय करिबेको आजु उदयाचलमें, उयो
दूजो मार्तंड परम प्रकाश है। असुर कतारन हजारनको मारि
मारि, रम्यो धौं हजार आर ताको या विकासहै ॥ कैधौं आसमान
अंबुनिधिमें अरुण अंबु, जातफूल फूल्यो सुठि शोभाको अवास है।
कैधौं रघुराज मोद देनवारो छबिवारो, केसरीकिशोरजूको वदन
विलास है ॥ देवन कतारे औकतारे त्योंहीं तारनके, होत भे किनारे
मगवारे आसमानके। मेघ बहु रंग केरे चले उडि संग घेरे,
करन सहाय मनो प्रेरे मघवानके ॥ तिनमें छिपात प्रगटात पुनि
बार बार, मोद सरसात राजो रूप अंशुवानके। रघुराज
करत बखान हरियान आज, वेगवान है नहीं समान हनूमानके ॥
कपिकुल मोद देनवारो यशवारो आति, कारज करनवारो सबै
जगदीशको। दनुजदलनवारो देव मुद देनवारो, युद्धै संतोष
करनवारो अहै ईशको ॥ उदधि नकनवारो सीयशोक हरनवारो,
प्रबल प्रतापबारो मंत्री है कपीशको। बडो उत्साहवारो
बडो बाहुबलवारो, बडो अनियारो प्यारो जनकललीशको ॥

दोहा–पवनपूत विश्रामहित, लहि सागर उपदेश।
मारगमें मैनाकागिरि, प्रगट भयो तिहिदेश ॥

कवित्त ।

करते परशि शृङ्ग हर्षै हिये बजरंग,बीररसके उमंग भरो गुणग्राम है । वचन विहँसि बोल्यो निज उर आशै खोल्यो, भयो व अमोल्यो सबै भाँति सुखधामहै ॥ आजते तू उभय अहै देववृन्द यश कहै, नहिं भ्रजी भ्रज जैहै रहै याहि ठाम है । विन अभिराम रा कामकीन्हें आठो याम, मोहिं न अराम नहिं करों विशराम है॥

दोहा–पुनि सुरसा रोक्यो जलधि, पन्थ लङ्कगढ जात ।
मेरे मुख ह्वै जाहु कपि, कही परिक्षन बात ॥

कवित्त ।

देखि भयवारी बडी देहधारी नारी पथ, हिये या विचारी य विचारीको न मारिहौं । जगमें अवध्य नारी कहैं दिविचारी मुनि ह्वैहै पाप भारी ताते युक्तिकै सिधारिहौं ॥होई जो पै हानि का रामकाजमें गँवारी, तौ तो जै है मारी नहिं नेकऊ विचारिहौं । रघुराज मोदकारी बात यों उचारी प्रभु, काज निरधारी तेरो कह्यो मैं सवाँरिहौं ॥ ताको माथनाय वेगि पितापथ जाय चल्यो, लंक मा छाय कपिराइ मजबूत है । चढे देव याननमें वरषैं सुमनवृन्द, मंदा मानो जल वरषै जीमूत है ॥ देखती जो काम यह बडो कठिना धाम,विबुध बखानैं सबै विक्रम अकूत है । आज रघुराजको अशोकको करनहारो, प्यारो रामदूत पौन पूत ईशपूत है ॥ छाया पा सागरमें मानिभारी जन्तु भक्ष, गहि ताको सिंहिकासो रोंकी ग गति है । मारुति विचारि कियो पारावार मध्य कहा, देखि राक्षसी मारिबेकी कीन्ह्यों मति है ॥ वेगसों सँभारि कोप धारि ताके मुख कूदि, उदरको फारि कढि चले ताहि हति है । मेटि महा विपति विचारे व्योमचारिनकी, दीन्ह्यों रघुराजै महावीर मोद अति है॥

दोहा–नांघि सिंधु शत योजनै, पार जाय कपिराय ।
चल्यो सीय खोजनद्रुतै, अतिलघुरूपवनाय ॥

कवित्त ।

होतही प्रदोषकाल उयो चन्द्र है विशाल, मनो रघुलाल द्रुत करत सहाई है । क्षोणी छाय छटा चहुँओरही छिटिकिरही, छोटिहू न वस्तु जामें छिपाति छिपाई है ॥ श्रमको हरनवारो सुखको करनवारो, बडो परकाशवारो देखि हरषाई है । रघुराज मोददाई मनमै न शंक ल्याई, सीय खोजिबेको कपिराई चल्यो धाईहै ॥ कंचनके कोटपै कँगूरे अति रूरे बने, खावाँ जलपूरे रक्षैं शूरे शस्त्र धारे हैं । गुरजै बनीहैं तापैं तिनपैं घनी हैं वीर, रंगमें सनी जे फौजें खडी चहुँ द्वारे हैं ॥ गति ना सुरेश औ दिनेश औ धनेशहूकी, जामें सब देशके महेश रखवारे हैं । तामें नहिं शंक धारे अति उतसाहवारे, कीन्हें हैं प्रवेश वेश केसरी दुलारे हैं ॥ करत प्रवेश देख्यो लंकपुरी नारी वेश, द्वारमें हमेश रहै रक्षणके हेत है । बोली कहाँ जैहै कीस कौन अहै तेरो ईश, कौन तोहि भेज्यो दशशीशके निकेत है ॥ शुण्यो सुनि ताके बैन ह्यांके प्रगटे बनै न, हनी बलऐन मूठी गिरी सो अचेत है । उठी कर जोरि कही कपिसों निहारि जान्यो, ऐहै लंकईश खेत बन्धुनसमेत है ॥ गयो मकराक्ष भौन त्योंही देवअन्तकके, प्रबल नरांतक औ अतिकाय आलै है । वज्रदंत धूम्रअक्ष महोदर महापार्श्व, त्रिशिरा अकंप इन्द्रजीतौके उतालै है ॥ युद्ध उनमत्त मत्त कुंभ औ निकुंभऊके, कुम्भकर्णहूके गयो ऐनहि रसाल है । खोजि सब ठौर गयो रावणके मन्दिरमें, केशरीकिशोर वीर विक्रम विशालै है ॥ सोहै खासो आमखास फैलिरह्यो है प्रकाश, दीपन माणिन दशवदन विलाशको ।

फैलीहै सुवास आसपास त्यों अकाशहूलौं, देवक हुलास देखिबेको
राखैं आशको ॥ ऋद्धिसिद्धिवास कीन्हें मानिकै सुपास आति,
कालपाशहूकी त्रास पावति विनाशको । भासमान वास
निवासहूको हास करै, देख्यो रामदास ऐसे, रावण आवासको ॥
सीको त्यों अशोकवाटिकामें जाइ देख्यो कपि, मेंघनके मध
शशी रेखासी सुहाई है। मैलते सहित मानो कंचनकी ल
लोनी, कंज लपटानी ज्यों मृणाली दरशाई है ॥ हंसहि वि
वायसीन मध्य मानो हंसी, सिंहके वियोग सिंहनीसी
बिलखाई है। देखि कपिराई हिय मानि सुचिताई मेटी
उबै दुचिताई चढि बैठ्यो तरु जाई है॥ वरण्यो कपी
रघुनाथजूके अङ्ग सबै, कह्यो तेरे हेत अति दुखि
रहतहैं। वसनको लीबो सब रसन चसन कीबो, नैननमें नींद
लीबो नेकु न चहतहैं ॥ कहूं तेरो ध्यान ठानि बोलहिं न
बानि कछू, कहूं तेरो नाम आठौं यामहि कहत हैं । तो
मिलिबेको योग करैं नित्त भोर उठि, तेरेई वियोग राम मोद
लहत हैं ॥ दियो न रजाय राम राय ल्यायबेकी माय-
नातो कंधमें चढाय प्रभुहि मिलावतो । परम कठोर घोर कैकै सो
चारों ओर, जोरकै उखारि लंक वारिधे बहावतो ॥ रणमें प्रचारि
दैत्य दलन सँहारि दशशीशै बेरि डारि नाथ पाँयन गिरावतो।
यश जग छावतो बढावतो अनंद वृन्द, कोसलेशजूको कोसलको
पहुँचावतो ॥ जानकी उतारि दीन्हीं चूडामणि हनुमानै, कैकै सो
प्रणामैं फल खानै मन आन्यो है । कह्यो जो निदेश पाऊँ क्षुधाको
मिटाऊँ खल, गण बिलखाऊँ मातु ऐसो ठीक ठान्यो है ॥ सुनिकै
दियो अशीश भावै सोई करो कीश, बीस बिसे तोसे नहिं उऋण
मैं मान्यो है । सीय पद वंदनकै वाटिका निकंदनको, चल्यो वायु-

नंदन अनंद अति सान्यो है ॥ लतन ततानके वितान तानि तानि तोरि, फोरि फोरि फसैं रोरि रोरि कारि डार्यो है । सरसीन दौरि दौरि धूरि भूरि घोरि घोरि, तरुणको टोरि टोरि ठोर ठोर पार्यो है । कोरि कोरि महल्ल कँगूरनको मोरि मोरि, खंभन उखारि खोरि खोरिमें पवार्यो है । बाहैं रज खौरि खौरि औधनाहै सौंरि सौंरि, केसरीकिशोरशोर कैकैजोरधार्यो है ॥ नैनन निहारे सबै वाटिका उजारे हनुमंतको हँकारे बलवारे रखवारे हैं । आयुधनि धारे निज नाथके प्रचारे तेवै, शस्त्र अनियारे एकै बारहीं पवारे हैं ॥ तिनहिं बिसारे गृह खंभ खाचि भारे भारे, महावीर रोषधारे मारि तिन्हैं डारे हैं । रघुराज मोद देनवारे राम जै उचारे, कूदिकै सिधारे द्वार केसरीदुलारे हैं ॥ मारे ते बच्यो जो कोई रणते सिधार्यो वेगि, भीति भरे रावणके द्वारेसों पुकार्यो है । कौनको प्रचार्यो कौन लोकते पधार्यो एक, कीश ना विचार्यो कछु वाटिका उजार्यो है ॥ रक्षकानि मार्यो फोरि डार्यो है अगारनको, कोप धर्यो जै जै राम वचन उचार्यो है । सीता शोक टार्यो नहिं जुरे जंग हार्यो नेकु, स्वयश पसार्यो ध्रुव मान मोरि डार्यो है ॥

दोहा–सुनि दशशिर दंतानि दरत किंकर असी हजार ।
पठयो निज सम बल प्रबल, जहँ रह पवनकुमार ॥
खंड खंड किय दंडमहँ, मारुति प्रबल प्रचंड ।
पुनि प्रहस्तसुत मंत्रिसुत, कियो समर बरिबंड ॥

कवित्त ।

मांत्रि पुत्र ओजमान कोप करिकै महान, काढि काढिकै कृपान कीशै घेरे आसमान । कोई वीरता बखान करि धरिकै कमान, बर वर्षैं हैं बान बे प्रमान भासमान ॥ तिन्हैं जंघमें

सुजान कपि मीज्यो दै भुजान, केते किये बिन जान जानमा राक्षसान । हते देखि नायकान भगे लंक यातुधान, जयवा बलवान हरषान हनुमान ॥

दोहा-अग्रगण्य पुनि सैन्यके, पंच महा बलवान ।
अमराषि पठयो लंकपति, धाये मग असमान ॥

कवित्त किरवान ।

जहाँ धाये यातुधान अस्त्र छोडें जे महान, मच्यो घमसान देव देखैं आसमान । जहाँ तट गज जान मीन औ कृपान, देखि शोणि सरितान होत भीति कादरान ॥ करै भूप गान करि शोणितको पान, गृद्धगन त्यौं अघान भयो जंबुकान । तहाँ रणमें सुजान तेजवान बलवान, कोपि हनुमान झुकि झारी किरवान ॥

दोहा-पंच अग्रगंता सयन, मारयो पवनकुमार ।
पठयो दशकंधर तुरत, मानी अक्षकुमार ॥

कवित्त ।

सुनिकै प्रतच्छ बीस अच्छवध रच्छसनि, बैठो जो समच्छ च्छ अच्छनिसों लक्ष्यो है । उठयो सो ततच्छन है समर बिल है, सँग वीर लच्छ जो देव दल भक्ष्यो है ॥ अच्छै स्वच्छ रथे चढिकै सुलच्छन है, बडो रण दच्छ तच्छकैसो कोपि है । पच्छवान शैलसों विपच्छ पर पच्छिनपै, कीशको क्षमा छोहरी जो रक्ष्योहै॥ गयो उडि आसमान हनूमान देखि किया है पयान चढयो यान यातुधान है । बलको सम्हारि तलको प्रहार कपि, घोडे मरि गिरे चारि टूट्यो आशु यान है ॥ दपटि सो तेग धारि झपटि कीशौ प्रचार, पटकि दियो है

गयो ताको प्राण है। निपट निशंक बंक लंकमें अतंक छाइ, आइ बैठ्यो तोरन तुरत तेजवान है॥

दोहा-सुनि कपीशकी जीति रण, इन्द्रजीतकहँ बाल।
जग रावण रावण तुरत, पठयो आशै खोलि॥

कवित्त।

अरि बरजोर देखि घोर शोर कीश कैकै, छाय चारों ओर दोरदंड ठोकि धायो है। त्यौंहीं ह्वै अभीत इन्द्रजीतहू सरोष अति, चोपि चोपि चोख चोख बाणन चलायो है॥ शरनि बचाय कर भूधर उठाइ हरि, उडि आसमानै जाइ विक्रम दिखायो है। परिघ परश नेजे मेघनादके जे भेजे, तिन्हैं कैकै रंजे रेजे महावीर भायो है॥

दोहा-अस्त्रशस्त्रनिजमोघलखि, इन्द्रजीत अतिकोपि।
तज्यो अमोघहि ब्रह्मशर, कपिबांधनचितचोपि॥
मानि ब्रह्मशर कपि प्रबल, दिनहूँ देखन लंक।
अपनेहींसों बँधि गयो, कियो न मन कछु शंक॥
बाँधि पवनसुत लै चल्यो, पिता निकटघननाद।
सुनि रावण आन्यो तुरत, सभा पाइ अहलाद॥

कवित्त।

देखि लंकनाथको निशंक कपि बोल्यो बैन, छोड़ि धर्म कीन्ह्यों है अधर्म कर्म भारी तू। जनस्थान जाइकै लुकाइकै चुराई शठ, लाजहिं विहाई हरि ल्याये परनारी तू॥ भयो जो सो भयो अब जनकसुताको ल्ये, प्रभु पाँय आशु परै दंत तृणधारी तू। सकैं नहिं राखि विधि हरि हर राम द्रोही, मारि जैहै हठि सीख मानिले हमारी तू॥ सुनत सकोप दशकण्ठ कह्यो वीरनसों, सुनत कहा

हौ वेगि कीश वाधि डारौ रे । उठतै भटन बैन बोलत विभीषण भे
दूत है अवध्य बैठौ सकल गवाँरौ रे ॥ नीति निरधारौ नहिं मा
नाथ दूतै कोपि, इनसों उचारौ अंगभंग कारि डारौ रे । मानि लं
राय अतुराय या रजाय दीन्ह्यों, पावक लगाय याकी पूँछि प्र
जारौ रे ॥ पाइ अनुशासन दशाननको छपाचर, चीरनको ल्या
जे हैं जीरन बनाइकै ॥ लूममें लपेटि ताहि दीन्ह्यो है बढाइ का
वसन न बाचे कहूं तब ते रिसाइकै ॥ तेलहिं सिंचाइ पुनि पाव
लगाइ दीन्हें, नगर फिराये सबै बाजन बजाइकै । आगि अवलो
लागि कोपरस पागि वीर, परिघ उठाइ लीन्हों बंधन छुडाइकै।
कोरि कोरि खलनके मुंडनको फोरि फोरि, दौरि दौरि खा
खोरि खलल मचायो है । कारि कारि कोप कूदि कूदि केसरीकिशो
कञ्चन कँगूरनमें कालहींसो भायो है ॥ घरन घरन घुसि घुसि घू
घूमि घोर, शोर कारि चहूँ ओर पावक लगायो है । कोई नहिं थ
बच्यो लंक हलकम्प मच्यो, कहा या विरंचि रच्यो यही रव छा
है ॥ पूतके पराक्रमको पेखि पूरो करिबेको, पौन उनचासौ कि
गौन तहाँ सरसात । भभाकि भभाकि भारी भारी भीमज्वालज
देखि देखि क्षपाचर भागि भागि विलखात ॥ हाटनमें बाटनमें घा
नमें हव्य बाढ, फालि फालि आटनमें ठाटनमें अधिकात॥ व्योमहूं
बाढि बाढि वारिधिते एकबार, मानो लंक बारबार बाडौनल द
शात ॥ करिनके यूह कारि,कूह भगे जात कहूं,हैबर समूह हिहिना
इकै पराने जात । केशनको छोरे अधजरे कहूं दौरे जात, राक्ष
अथोरे बरजोरे बहु विलखात ॥ कहूँ रोइ रोइ राक्षसी पुकारें हाय
पुत्र, पुत्रहू पुकार करै हाय तात हाय मात।गारी दै दै रावणको कहें
लंक नारी सबै, आजु अस्त्रधारी रक्षकारी कोई ना दिखात ॥

टघरि टघरि चामीकरके कँगूरे गिरैं, फटिक फरश फूटि फूटी फांके फहराहिं। चटक चटक्क चटकीले चट काहि नग, टूटि टूटि जरि जरि मुक्तागण छहराहिं॥ ताने जे विताने शोभा साने झरसाने सबै, विपुल किताके त्यों पताके व्योम लहराहिं। लपटि लपटि लावैं लपटैं सुगेहनको, लपकि लपाकि लूकैं लखन पै झहराहिं। अनल उदंडको प्रकाश नवौ खण्ड छायो, ज्वाल चण्ड मानोब्रह्मअण्ड फोरै जाइ जाइ। पुरि ना लखाति ज्वाल मालै दरशात एक, लोहित पयोधि भयो छाया धनी छाइछाइ॥ देवता मुनीश सिद्ध चारण गंधर्व जेते, मानि महा प्रलै वेगि व्योम आइ धाइ धाइ। देखि राम राइ हेत दीन्हीं लंक लाय सबै, चाइ भरे चले कपिराइ यश गाइ गाइ॥ कोई कहैं नंदीकी शराप साँच कारिबेको, कैधौं कपि रूप धरि आये कालिकाके नाथ। कोई कहैं कैधौं देखि मुनिनके दुःख दीबो, दुसह न सहि कोपि आये सरस्वती नाथ॥ कोई कहैं कैधौं देवराजकी पुकार सुनि, भेज्यो है प्रचण्ड चक्र रोषित ह्वै रमानाथ॥ कोई कहैं कैधौं सीय हेत रावणै निकेत, कपि कुलकेतु कालकीश भेज्यो रघुनाथ॥ बार बार होलि कैसी लंकै खूब जारि जारि, चाय सों प्रचारिकैकै महाघोर किलकारि। दीरघ दिवालन बिदारि खंभऊ उखारि, दोऊ कर धारि धारि अरिनको मारि मारि॥ यश विस्तारिकै खरारिको हिये सम्हारि, पूछको बुझायो वारिनिधि बारि झारिझारि। वाटिकै सिधारि शिरनाइ सीय शोक टारि, केसरी कुमार पार चल्यो राम जै उचारि॥ चढिकै गिरंदै पाँव मसाकि कपिंद कूद्यो, शैल गो पताल वायुलाल आयो पार है। नादको सुनाइ अंगदादिनको मोद छाइ, बैठो आइ शीशनाइ कीशन मँझार है॥ जानकी निहारि आयों कह्यो लंकजारि आयों, मारि आयों

रावनके वीर बे शुमार हैं। सुनि हरषाइ सबै जीवन सों पाइ तहाँ, उठि उठि धाइ धाइ भेंटे बार बार हैं॥ आगे करि हनूमान चले बलवान सबै, आइ मधु काननमें कीन्हें मधुपान हैं। दधिमुख कीशको कहा न माने मोद साने, अतिहि अघाने पुनि कीन्हें ते पयान हैं॥ आये कीशनाथ पास परम हुलास छाये, पौनपूत कियो काज कीन्हें या बखान हैं। मिलिकै सुकंठ तिन्ह अति उत्कंठित ह्वै, गौने तहाँ जहाँ बैठे भानुकुल भान हैं॥ देखत ही केसरीकिशोर कर जोरि दौरि, परि प्रभु पाँयनमें बोल्यो योंहीं बैन है। जनकसुताको देखि आयों वाटिकामें बैठी, रावरे प्रतापहीते देख्यो खल ऐन है॥ चूडामणि दैकै कह्यो फटिकशिलाकी बात, आपहीको नाम जपि काटै दिन रैन है। बाणनसों मारिये दशाननको चाहि नाथ, सीता दुख एक मुख कहत बनै न है॥ चूडामणि पाये रघुराजजू लगाये हिये, भारि आये पदुम पलास युग नैन हैं। क्षण एक रही नहिं अंगनकी सुधि नेक, थकित ह्वै रहे नहिं बोलि आये बैन हैं॥ सुख दुख रोष उर भये हैं समान तीनौं, सुरति सम्हारि मिले कीशै मुदऐन हैं। मानो रूपवान वातसल्य दास्य रस दोऊ मिलैं बार बार भूरि भरे चित चैन हैं॥ बोले हरषाय रघुनाथ बैन बार बार, देइबेको आज तीनौं लोक तोहिं थोरा है। ताते कै विचार मनमाहँ ठीक योंहीं दियो, उऋण न तोसौं सदा एही मन मोरा है॥ प्रभुके वचन सुनि कीश कर जोरि कहै, काज तू प्रतापै कियो मोहिं ना निहोरा है। कीश सेवकाई तैसे प्रभु प्रभुताई लखि, झूलै रघुराज मन हरष हिंडोरा है॥

दोहा–पवनसुवनके वचन सुनि, रघुपति कियो विचार।
विजय मुहूरत आज ही, चलौ लगै नहिं बार॥

छंद चौबोला।

अस बिचारि पुनि उठि रघुनायक मिले पवनसुत काहीं।
बोले वचन नयन जल ढारत तुहिं सम कोउ जग नाहीं॥
तोसे कबहुँ उऋण होवेको मोरन होत विचारा।
है नहिं सकै जन्म भरि मोसों तेरो प्रतिउपकारा॥
अस कहि बोलि कह्यो कपिराजहि अब बाहिनी चलाओ।
सिंधुतीर फल फूल बलित बन डेरा सैन्य डराओ॥
सुनि प्रभु शासन परम हुलासन शासन सुगल सुनायो।
जयति राम कहि दिशि दक्षिणको कपिवाहिनी चलायो॥
हनुमत कन्ध चढे रघुनायक अङ्गद कन्ध अनन्ता।
राजत मध्य सैन्य युग खगपति जनु युग वपु भगवन्ता॥
चली कपिवाहिनी विराजति मनो महोदधि फूटो।
भये पन्थ पाषाण रेणु सम वनवन तरुगण टूटो॥
वसत पन्थ प्रभु चारि दिवसमह गय तोयानिधि तीरा।
डेरा करवायो दै शासन कपिदलको रघुवीरा॥
उतै गयउ जबते मारुतसुत जारि निशाचर नगरी।
तबते कह नारि सिगरी तहँ बनी बात अब बिगरी॥
रावण मंत्रिन सकल बुलायो करन मन्त्र तहँ लाग्यो।
इन्द्रजीत आदिक तहँ बैठे कुम्भकर्णहूं जाग्यो॥
देन लगे मन्त्री अनुमति अस कपिन भीति नहिं भीजैं।
मर्कट मनुज अहार हमारे लखत विचारे छीजैं॥
बोल्यो तहां विभीषण वाणी सुनहु निशाचर राजा।
काल विवश भाषत सिगरे शठ होइ अवशि अकाजा॥
मोरि सलाह निशाचरनाह विचारि करहु यहि काला।

आगे कारि जानकी जाहु द्रुत जहँ कोशलपुरपाला॥
दाबे दन्त तृण परि प्रभु पायँन ह्वै शरणागत भाई।
निशिचर कुल अरु राज्य लंककी लीजै वेगि बचाई॥
भूको भार उतारनके हित लियो मनुज अवतारा।
विश्व विदित यह बात बिचारहु है संगर संहारा॥
सुनत दशानन शोणित आनन छाय दिशानन शोरा।
बोल्यो वचन अरे कादर तू भयो बंधु कस मोरा॥
मर्कट मनुज भक्ष रक्षसके तिनहिं डरात अपारा।
आखिन ओट होत तैं कस नहिं तोहिं धूर्त धिक्कारा॥
परुष वचन सुनि दशकंधरके उठ्यो विभीषण कोपी।
चारि साचव लै संग गगनते कह्यो वचन चित चोपी॥
मैं अब जाहुँ शरण रघुपतिके लीन्ह्यों लंक बचाई।
निशिचर कुल अरु जीव आपनो जतनकिह्यो भलभाई॥
मैं अब जाहुँ जहां रघुकुलमणि दूसर नाहिं दिखाई।
अस कहि चल्यो विभीषण नभपथ सिंधु पार द्रुत आई॥
कह्यो गगनते त्राहि त्राहि प्रभु मैं रिपुबंधु विख्याता।
होहुँ शरण रावरे कृपानिाध तुम मेरे अब त्राता॥
सुनत राम सब साचिव बुलाये कहहु मन्त्र का होई।
निज निज मत तहँ कह्यो विभीषण आवतमें सब कोई॥
बोले प्रभु सब सुनहु मोर मत यामें नहिं सन्देहू।
एक बार जो कहत तोर मैं ताहि अभय करि देहूँ॥
अस कहि पठै लषण करुणाकर लियोविभीषणआनी।
लंकराजको राजातिलक करि दियो बन्धु सम मानी॥
सिंधु तीर रघुबीर गये पुनि कियो धरन उतरनको।
तीनि दिवस बीते अमरषभारि छोड्यो आग्निशरणको॥

दोहा-अति व्याकुल ह्वै सिंधु तहँ, भरिभरिमणिगणथार ।
भयो राम शरणागतै, कहि तुमहीं रखवार ॥

छन्द चौबोला ।

उत लंकापति दूत पठायो दल देखनको आयो ।
देखि गगन सम महा रामदल जाय खबरि अस गायो ॥
सुनहु लंकपति साजि कीशदल रघुकुलमणि चढि आये ।
करबे होय सु करहु आशु ही पुनि नहिं बनी बनाये ॥
सुनि सारनके वचन लंकपीत शुक राक्षसहि बुलाई ।
कहन सँदेसो कछु सुकण्ठसों दीन्ह्यों ताहि पठाई ॥
शुक शुक रूप धारि नभ पथ ह्वै आयो सागर पारा ।
गगनहि ते कपि नायकसों असरावण वचनउचारा ॥
का हमरो अपराध समुझि तुम राजसुतन सँग तेखे ।
लंक दुरासद सुरासुरनको नर वानर किहि लेखे ॥
सुनि शुक वचन दौरि वानर बहु पंख उखार्यो पकरी ।
तिहि सुग्रीव समीपहि ल्याये जबर जँजीरन जकरी ॥
आरत वचन सुनत शुकके प्रभु आशुहि दियो छुडाई ।
कह सुग्रीव सँदेश हमारो कहौ रावणहिं जाई ॥
शिव अज शरण गये बाचिहै नहिं सावधान अब रहियो ।
राम द्रोह करि दुष्ट दशानन जीवन आशा जहियो ॥
सुनि सुकंठके वचन चल्यो शुक कह्यो रावणहिं जाई ।
तहँ सागर आयो प्रभुके ढिग अति दीनता दिखाई ॥
शासन देहु नील नलको प्रभु रचै सेतु मुहिं माहीं ।
अभयदान मोको अब दीजे क्षमि अपराधन काहीं ॥
अस कहि दै बहु रत्न नजरि तहँ अभय पाय सरितेशा ।
गयो आपने भवन इतैं नल नीलहि कह अवधेशा ॥

रचहु सेतु सागर महँ लै कापि अति आशु हि दोउ वीरा।
सुनि शासन रघुनायक को तहँ अङ्गदादि रणधीरा॥
चले नील नल संग कपिन लै राम चरण शिरनाई।
कोटिनके कोटिन कपाश गण दौरे अति अतुराई॥
तरुन गिरिनगन महा शिलागन ल्याये आशु उखारी।
पांच दिवसमहँ शतयोजनलों रचे सेतु अति भारी॥
दशयोजन विस्तार भयो तिहि शतयोजनको लंबा।
रच्यो सिंधुमहँ महासेतु द्रुत मिलिमिलि कपिन कदंबा॥
मारुतसुतक चढे कंध तहँ दीनबंधु रघुराई।
लषण लाल चढि अंगद कंधहि चले लंक हरषाई॥
चली सैन्य कछु वराणि जाति नहिं नभ सागर उपमाई।
वानरेश लंकेश उभयदिशि और वीर समुदाई॥
सिधु पार बानरीवाहिनी पहुँची शैल सुवेला।
डेरा परे लंक पारखा ह्वै अरु ह्वै सागरवेला॥
शुक सारन द्वै सचिव दशानन पठयो देखन सैना।
ते दोउ धरि कपिरूप प्रविशि दल देखे सकल सचैना॥
रावण मंत्री जानि बिभिषिण लियो दुहुन पकराई।
कोशलेश शासन लहि कपिपति दियो सैन्य दिखराई॥
देखि सैन्य गवने शुक सारन वरणे जाय हिवाला।
ते दोउ मंत्रिन लै शशिशाला चढि देख्यो दशभाला॥
मानहुँ भई वानरी वसुधा परै दाखे नहिं पारा।
बोरन चहत मनहु लंका को फूल्यो पारावारा॥
कह्यो लंकपति दे बताय सब कौन कौन कहँ वीरा।
शुक सारन तहँ तुरत बतायो अगदाद रणधीरा॥

अंगद हनुमत जांबवान नल नील विभषिण भ्राता ।
तिमि सुग्रीव कीशनायक जहँ ठाढो बली अघाता ॥

दोहा-जहां महा यूथप सकल, खडे बलीमुख वीर ।
अचल श्याममणि शैल सम, तहँ देखहु रघुवीर ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

जाको तनु देखि घनश्याम द्युति छाम होति, नैनन निहारि अरविंद हिय हारो है । शूरमें शिरोमणि त्यों दानिमें शिरोमणिहै, रघुकुल महारथी जग उजियारो है ॥ रघुराज राजराज राजनको शिरताज, धरमधुरंधर धरामें धीर धारो है । विक्रम त्रिविक्रमसों अस्त्रमें अनोखो वीर, देखु रघुवीर दशरत्थको दुलारो है॥ दुराधर्ष सांचो सुरासुरके समरहूमें, धुरा धरे धीरजको पूरा धनुधर है । चाहे वसुधाको वीर बाणन विदारि डारै, शरनि अकाश भरि निराकाश कर है ॥ क्रोधके नगीच जाके बसति हमेश मीच, विक्रम विलोकि शक्र होत दरबर है । निशिचर वर सुरवरके न धोखे रहौ, लगी करबर चढि आयो रघुवर है ॥

सवैया ।

देखु दशानन दाहिने ओर, दिपै भुज दाहिनोसों ढिग जाके ।
शुद्ध सुवर्णसों वर्ण विराजत, लाल विशाल विलोचन ताके ॥
श्रीरघुराजको है लघु बंधु, रहै निजबंधु हमेशहि ताके ।
घूँघुरवारी हलै अलकैं, अहैं लक्षन लाल ध्वजा वसुधाके ॥
पीन उरै सब अस्त्रको ज्ञाता, अमर्षी महा प्रभुको प्रिय भ्राता।
दुर्जेय विश्वमें जंगमें जेता, महाबली वीरन वीर विख्याता ॥
श्रीरघुराजके सेवनको गुणि, जीवन आपनो जीवन दाता ।
तच्छन तक्षकसों अरि भक्षक, लक्षहु लक्षन लक्ष निपाता ॥

सोरठा–संख्या कही न जाय, वरणि वानरी वाहिनी।
गगन समान दिखाय, भयो भुवन मर्कटनमय॥

छंद चौबोला।

सुनिशुकवचन कोपिअति रावणकह्यो परुष तिहि बैना।
तैं शठ भीरु मोहिं डरपावत मोहीं भीति लगै ना॥
पूरब जो उपकार किये कछु होते नहिं शुक सारन।
तौ दोहुँनको शीश काटि करतो पुनि कापिन विदारन॥
सुनि दशकंधर वचन उचारन शुक सारन भय भारे।
करि प्रणाम भागे निज भवनन अंतकविवश विचारे॥
कह्यो बुलाय महोदरको पुनि पठवहु दूसर चारे।
बोल्यो द्रुतहि महोदर दूतन दशमुख वचन उचारे॥
जाहु राम लक्ष्मण कहँ देखहु कपिवाहिनी निहारे।
नहि जानै जामें कोउ मर्कट आय हिवाल उचारे॥
चले दूत बानरको वपु धरि प्रविशे सैन्य मँझारी।
तिनकी माया जानि विभीषण लीन्ह्यों पकरि निहारी॥
मारनलगे कीश तिनको तब दीन्ह्यो राम छुडाई॥
भभरि लंक चलि लंकनाथके परे चरण शिर नाई।
रावण कह्यो कहहु व्याकुल कस दूत कहे कर जोरी।
खबरि लेन लायक नहिं कपिदल जानिलेत सब चोरी॥
का पूछहु देखहु बैठे इत देखि परत दल भारी।
बाँधि सेतु सागर ले कपिदल आयो उतरि खरारी॥
गरुडाकार बनाय व्यूह दल परे लंक कहँ घेरी॥
युद्ध करहु दशमुख सम्मुख की देहु जानकी फेरी॥
शार्दूल दूतनको पाति जो तिहि दशकन्धर माषी॥
कौन वीर किहि देव अंश है देहु सकल मुख भाषी॥

शार्दूल तब लग्यो बतावन ऋक्षराजसुत राजा ॥
सूरज अंश जानि सुग्रीवहि वालि अंश सुरराजा ॥
गद्गदको सुत जाम्बवान है जायो विधि जमुहातें ।
धर्मपुत्र जानहु सुषेणको दधिमुख शशि सुत ख्यातै ॥
दुर्मुख सुमुख वेग दरशी ये तीनों कपि पंचानन ।
मृत्युरूप विरच्यो इनको जग पूर्वकाल चतुरानन ॥
नील अग्निसुत पवनतनय पुनि जग जानै हनुमानै ।
वासवको नाती अंगद है तिहि युवराज बखानै ॥
मैन्द द्विविद अश्विनिकुमारके हैं कुमार लंकेशा ।
जाये यमके अंश पंच कपि वर्णहु नाथ विशेशा ॥
गज गवाक्ष अरु गवै शरभ तिहि गंधमादनहु जानो।
महाबली दशकोटि वलीमुख इनके सँगमहँ मानो ॥
और कहाँलगि मैं वर्णहुँ सब वानर ऋक्ष अपारा।
लह्यो रामकर राजतिलक सो भ्राता छोट तुम्हारा ॥
श्वेत ज्योति मुख सूर्य्य अंश द्वै जानहु काश प्रवीरा।
हेमकूट त्यों वरुण अंश विशुकरमा सुत नल धीरा ॥
जग जाहिर बडे वेगवान वसुसुत कपि दुर्धर नामा ।
ऋक्ष और गोपुच्छ अनेकन जाति महा बलधामा ॥
वरण्यो मुख्य मुख्य थोरे कपि और न जानौं स्वामी ।
दशरथ नन्दन रघुकुलचन्दन देख्यौं अंतर्यामी ॥
रघुकुल सिंह मदन मद मंदक सुंदर श्याम शरीरा ।
युवा वैस आजानुबाहु युग महावीर रघुवीरा ॥
चौदह सहस निशाचर मार्‍यो खरदूषणहि समेतू ।
हन्यो विराध कबंध निमिषमहँ अनुपम रघुकुलकेतू ॥
बली वालिको वेधि बाणसों सुग्रीवहि दिय राजू ।

आज न कोऊ महि मण्डलमहँ जस धनुधर रघुराजू॥

दोहा–लषण वीर ताको अनुज, मनहु मत्त मातङ्ग।
धर्मनिरत जिहि बाणपथ, जितै न वासव जङ्ग॥

छन्द चौबाला।

सुनि शार्दूलवचन दशकन्धर सचिवन आशु बुलायो।
करिकै मन्त्र काल अनुसारहि सचिवन भवन पठायो॥
गवन्यो आप राजमंदिरमहँ राक्षस दामिनि जीहा।
ताको बोलि कह्यो माया करु तैं मायावी दीहा॥
सो कीन्ह्यों मन मोहनि माया सीता लखि दुख पायो।
सरमा रही विभीषण नारी आय वचन अस गायो॥
यह माया राक्षसी जानु सिय अस समरथ कोउ नाहीं।
देव दैत्य राक्षस रघुवर कहँ जो जीतै रण माहीं॥
मैं अब जाति देखि आवति हौं अंतर्हित दोउ भाई।
अस कहि गई गगन मारग ह्वै लख्यो लषण रघुराई॥
परम अपार निहारि कीश दल आशु लौटि सो आई॥
कह्यो जानकी सुनो वचन सति कुशल अहैं दोउभाई॥
बाँधि सेतु प्रभु उतरि वारिनिधि कपिदल संग महाना।
घेरयो लंकहि बजति दुंदुभी सुनति शोर नहिं काना॥
सुनि सरमाके वचन जानकी दीन्ह्यों शोक विहाई।
पुनि सरमा बोली अस वाणी औरहु देत सुनाई॥
याह अवसर रावण दरबारै मैं गवनी सुधि लैनै।
तहँ आइ रावणकी जननी लगी शिषापन दैनै॥
देहु जानकी रामचन्द्रको लेहु कुटुम्ब बचाई।
औरहु वृद्ध कहैं बहुतक तिहि मान्यो नहिं चितलाई॥
लहत कालिह दशकण्ठ तासुफल राम सकुल यहिमारी।

अनुज सहित विजयी तुहिं लै प्रभु जैहैं अवध पधारी ॥
अस कहि गई भवन कहँ सरमा सीता अतिसुख पायो ।
उत रावण आवन प्रभुको लखि सचिवन वेगि बुलायो ॥
कह्यो काह देखत यहि अवसर दशरथ सुत चढि आयो ।
उचित होइ अब जौन कहहु सब दूतहु हाल सुनायो ॥
कह्यो वचन तब माल्यवान तहँ जो रावणको नाना ।
दै सीताको सब विधि कीजै निशिचर कुल कल्याना ॥
यदपि भीति नहिं सुरासुरनते विधि दीन्ह्यों वरदाना ।
अभय न माँग्यो नर वानरते यह संदेह महाना ॥
आय गयो सोई अब अवसर होत अमित उत्पाता ।
वर्षत रुधिर मेघगर्जत खर जानि परत कुलघाता ॥
व्याल शृगाल गृद्ध पुर प्रविशत बलिभक्षतघुसि श्वाना ।
श्वतदंत दरशाय नचैं हँसि काली तिय विधि नाना ॥
चाचा कूची पढत शारिका नभ कबन्ध दरशाहीं ।
ताते निशिचर कुलविनाश अब जानिपरत मनमाहीं ॥
माल्यवानके वचन सुनत अस रावण अमरष छायो ।
बोल्यो वचन अरुण करि लोचन तैं कस यहि कछुजायो॥
मिल बलीमुख बहुत रामको भरि तरुगण पाषाना ।
रच्यो सेतुका हानि हमारी कौन हेत भय माना ॥
तैं कादर निशिचर कुलदूषक कीजत मनुज बडाई ।
पठये देत निशाचर अबहीं लैहैं कपिदल खाई ॥
रोषित जानि रावणहिं भय भरि माल्यवान गृह गयऊ ।
द्वार द्वार लङ्का रक्षणको रावण शासन दयऊ ॥
महापार्श्व अरु वीर महोदर ताकैं दक्षिण द्वारा ।
सेनापति प्रहस्त पूरब दिशी रहै महा बलवारा ॥

मेघनाद पश्चिम द्वारे महँ रहै साहिनी लीन्हें।
शुक सारन उत्तर द्वारे महँ रहैं चित्त दृढ कीन्हें॥
दोहा–विरूपाक्ष माधि नगर महँ, रहैं सुराति सब लेत।
उत्तर दिशि हमहूं रहब, निज वीरन सुख देत॥

छन्द चौबाला।

इतै राम अरु लषण बैठि सब मंत्रिन तुरत बुलायो।
पवनसुवन अरु ऋक्षराज दशकंठ अनुजहू आयो॥
कपि कुलराज वालिनन्दन नल नीलादिक उत्साही।
सबसों कह्यो राम भाषहु अब समय उचित का चाही॥
भन्यो विभीषण आजु साचिव मम आय लंकते भाख्यो।
रावणहूं चारिहु द्वारन रक्षनहित राक्षस राख्यो॥
सुनत विभीषणवचन अवधपति कियो सैन्य चौ भागा।
कह्यो नील सेनापतिको तुम जाहु पूर्व बडभागा॥
दाक्षिण दिशिमहँ सावधान आति गवनैं वालिकुमारा।
तैसहि कपिन सैन्ययुत पश्चिम गवनैं पवनकुमारा॥
हम लछिमन लंकापति कपिपाति रहिहैं उत्तर द्वारा।
अस कहि चले सैन्य लै रघुपाति चढे सुवेल पहारा॥
गये त्रिकूटाचलहि शृङ्गपर लंका नगर निहारा।
विंशाति योजन लंबवान पुर दश योजन विस्तारा॥
अलकापुरी तथा अमरावाति अस शोभा नहिं होई।
देव दैत्य दानव समरथ नहिं जो प्रविशै पुर कोई॥
डेरा कियो वाहिनी सिगरी गर्जहिं तर्जहिं कीशा।
लंका सम्मुख शिखर चलावहिं कहि जै जै जगदीशा॥
सुनि हल्ला वानरी सैन्यको चढि रावण प्रासादा।
देख्यो धवलङ्कित धरणीको तदपि न लह्यो विषादा॥
सहस खंभ चामीकर मंदिर तहँ बैठ्यो दशभाला।

नाचन गावन लगीं अप्सरा लस्यो प्रकाशविशाला ॥
देख्यो दशकन्धरको कपिपति वासवसरिस विराजा।
तासु गर्व सहिगयो न मनमहँ लखि सन्मुख रघुराजा ॥
सकल यूथपनके देखतहीं देखत राम लषणके।
अति निर्भय कूदेउ कपिनायक सतिगुणकरनसखनके॥
दशकन्धरके आमखास महँ पर्यो दिनेशकुमारा।
महा मनोहर होतरह्यो जहँ अति सुंदर नटसारा ॥
लख्यो कीश दशवदनसदनमहँ मानहु जलधररासी।
उरमहँ ऐरावत दन्तन छत लंकानगरमवासी ॥
शोभित अरुण वसन तनु सुन्दर श्यामवर्ण दशशीशा।
मनहुँ साँझ सावन रवि आतप परे मेघ इव दीशा ॥
राकाशशिसम छजत छत्रवर चलत सुचामर चारू।
विमल रक्तचन्दन अनुलेपित मंडित माणिक हारू ॥
वासवसरिस विराजत दशमुख त्रिभुवन जीतनवारो।
मनहु गगनते गिर्यो हेमगिरितिमिकपिपतिहिनिहारो॥
चौंकिउठ्योदशमुखचितयोचकिहहालिमहल सब डोले।
ठाढे ह्वै सन्मुख दशमुखके अभय कीशपति बोले ॥
राक्षसेन्द्र मैं वानरेन्द्र हौं रामसखा अरु दासा।
मेरे प्रभु सन्मुख शठ बैठि विलोकन लगो तमासा ॥
नहिं जीवत तुहिं तजौं लंकपति राम प्रताप प्रचंडा।
अस कहि कूदिपर्योदशमुखउरमुकुट उतारि त्रिखंडा॥
दियो पटकि पुहुमीपर कपिपति छिटके नग जनुतारा।
उठ्यो कोपि लंकापति बोल्यो अब नहिं तोर उबारा ॥
ऋक्षराजसुत ह्वै कपिनायक मनुज चाकरी कीन्हीं।
नीच तोहिं लागति न लाज कछु फेरि बुद्धि विधि दीन्हीं॥

अस कहि गहि सुग्रीव चरण दोउ पटक्यो महि लंकेशा।
कंदुक सरिस उड्यो कपिनायक पहुँचि आशु तेहिदेशा॥

दोहा—पकरि दशानन हाथ कपि, दीन्ह्यों भूमि गिराय।
मल्लयुद्ध लागे करन, वानर राक्षसराय॥

छन्द हरिगीतिका।

श्रमस्वेद गातन वदत बातन रुधिरमय सब देह।
कार करि अनेकन पेच ठमकत लरत बिन संदेह॥
दोउ लसत किंशुक शालमली फूले सुतरुन समान।
कहुँ करत मुष्टिप्रहार तलहुप्रहार करत महान॥
कहु करत चरणन घात कहुँ बचि जात देखत घात।
कहुँ कूदिजात अकाश कहुँ महि परत जनु पविपात॥
कहुँ देह दोउ नवाय पद अरुझाय शीश भिडाय।
दोउ करि परस्पर जोर रेलत एक एक हटाय॥
अति फगी फटिकन फरश परफर कियो फोरिपषान।
उडिजात कतहुँ अटानमें कहुँ लडत उडि असमान॥
दशकण्ठ और सुकण्ठ दोऊ लरत लरत तुरंत।
दोउ दुर्ग परिषामें गिरे लागे लरनबलवंत॥
द्वै दण्ड भरि श्रम भरि खडे पुनि कोपि लपटे धाय।
दोउ दुहुन देहँन अतिहि पीडत दोर्दण्ड दबाय॥
पुनि परे उडि फड पर तुरत लागे लरन करि कोप।
दोउ करत अंगनको अलिंगन दरत रद जय चोप॥
दोउ परम शिच्छित वक्र विच्छित विजय इच्छित वीर।
शार्दूल सिंहसमान सोहत विदित जग रण धीर॥
मानहुँ युगल सिंधुर सुवन मदमत्त करतनि युद्ध।
गजशुण्डसम भुजदण्ड गहि दोउ करत दुहुँ अवरुद्ध॥

इक एक पुहुमि पछारि देत उछारि पुनि उठि धाय ।
रह सावधान बखान करि पुनि गँसत पेंच लगाय ॥
कहुँ चलत वक्र समान शक्र नवाय वक्र त्वराय ।
रेलत फिरत फिर चक्र समगति नक्रकी दरशाय ॥
कहुँ रहत मूठि उठाय घात लगाय अंग बचाय ।
पुनि जुरत जंग उमंग भरि रणरंग अंगनछाय ।
दोउ श्रमत नहिं पदझमत नहिं उरकँपत कोप न थोर ।
बहुविधि अखण्डल करत मण्डल तनु बराबर जोर ॥
कहुँ मंद मंदहि चलत गौं युत तडकि मारत लात ।
सो जानि छल प्रथमहि हनत तल लात घात बचात॥
दशकण्ठ जानत हनहुँ अब मैं बचत नाहिं सुकण्ठ ;
जानत सुकण्ठहु हनहुँ मैं दशकण्ठ कृपा विकुण्ठ ॥
दोउ लरत भट ललकारि हिय नहिं हारि ओज अपार ।
जिमि पदचरन नख चोथि अभिरत मांस हित मंजार ॥
जे मल्लयुद्ध हि पेच बत्तिस गतहु प्रत्यगतादि ।
ते करत लंकानाथ वानरनाथ ह्वै न प्रमादि ॥
कहुँ लपट पुनिछूटत छटकि कहु झटकि पीठहि जात।
कहुँचटकिपुनिअति रपटि दपटिसुछपटिपुनिछटकात॥
कहुँ देत झपकी झपाकि झपकहु देत खाली दाउँ ।
काढि जात कहुँ द्रुत बगल ह्वै बलगात दक्षिण बाउँ ॥
बहु कियो कर छल बल दशानन चह्यो जीतन युद्ध ।
सुग्रीवसों पायो न घत दल रह्यो ताको उद्ध ॥
दशमुख चह्यो तब करन माया जानि लिय कपिराय ।
उडिगयो आशुहि गगनमहँ नहिं परचो निकट लखाय॥
यहि भाँति करि कपि मल्लयुद्ध विशुद्ध बल दरशाय ।

प्रगटाय राम प्रताप रावण अंग समर थकाय॥
कीरति दशौ दिशि छाय रिपुसों जीति पाय उराय।
सुग्रीव आयो जहँ खडे लछिमनसहित रघुराय॥
दोहा—अतिहि लजाय डराय उर, प्रभुपद शीश नवाय।
कह्यो क्षमहु करुणायतन, खोरि मोरि रघुराय॥
मिले सखाको ललकि प्रभु, कहे वचन गहिहाथ।
अरिसमीप पूँछे विना, कस गवने कपिनाथ॥
गये अकेले शत्रुघर, जो कछु होतो तोहिं।
तौ सियते अरु अवधते, रहत्त हेतु नहिं मोहिं॥
कह कपि सन्मुख दर्प कर, दशमुख शत्रु हमार।
यंह मोंसे सहिजाय किमि, ह्वै कै सखा तुम्हार॥

छंद चौबोला।

कह्यो लषणसों पुनि रघुनायक होत अमित उत्पाता।
जानि परत राक्षस वानरको ह्वैहै समर निपाता॥
बहत परुष मारुत कंपति महि निकसत नाद पहारन।
जलधर करि कराल वपु वर्षत शोणित मांस अपारन॥
अनल पुंज रवि मण्डल ते बहु झरत होति दिगदाह
शशिमण्डलमहँ मण्डल अरुणपरत भयकर निशिमाह
रविमण्डलमहँ श्याम छिद्र लखि परतप्रलय जनु होई॥
काकसेन अरु गीध गिरत अध सिवा करहिं भय रोई॥
रुधिरामिषको करदम ह्वैहै कपि राक्षस संग्रामा।
चलहु लंककहँ व्यूह बाँधिकै अब विलंब किहि कामा॥
अस कहि उतरे शैल सुवेलहि सैन्यसहित रघुराई।
हनुमत अंगदादि वानर सब गये लंक नियराई॥
जिनको जिनको चारिहु द्वारन प्रथम लगायो रामा।

ते ते कपिवर तौन वाहिनी ले गवने तिन ठामा ॥
घेरि गई लंका चारिहु दिशि पवन कढन गति नाहीं ।
कोटिन कोटि ऋक्ष अरु वानर बढत क्रमहि क्रमजाहीं ॥
यहि विधि लंकाके मुर्चा कारि मंत्रिन राम बुलाई ।
कियो मन्त्र अंगद पठवनको साम करन रघुराई ॥
वालिकुमारहि बोलि कह्यो प्रभु लंक जाहु रणधीरा ।
कहँलगि कहौं बुझाय चतुर तुम जानत निज पर पीरा ॥
सब विधि कह्यो बुझाय दशानन उचित जौन तुहिं दीसै ।
अंगद चल्यो निशंक लंककहँ नाय रामपद शीसै ॥
कूदि गयो कपि एक फलंका लंकाको दरवाजा ।
लखी निशाचर सभा प्रभा भर राजत रावण राजा ॥
बैठ्यो तमकि मध्य कपि कुंजर मार्तंड इव भासा ।
कह दशशीश कौन तैं बंदर आयो किमि मम पासा ॥
अंगद कह्यो चह्यों तेरो हित मैं आयों इत धाई ।
नायक अखिल ब्रह्मअंडनके परब्रह्म रघुराई ॥
तिनको करि अपराध महाशठ हठवश चह कुशलाई ।
तेइ प्रभु तारनको तेरे चढि आये रघुराई ॥
जो नहिं शरण होत तैं दशमुख तौ जानहि यहिकाला ।
निशिचर हीन होति वसुधा हठि कोउ नहिं रक्षनवाला ॥
लंकराज दीन्ह्यों रघुनायक बोलि विभीषण काहीं ।
राम शरण विन तोहिं दशानन कतहुँ ठिकाना नाहीं ॥
मेरे पितुकी रही मिताई तोसे श्रवण सुनी मैं ।
आयों तोको वेगि बचावन तुव हित हेत गुनी मैं ॥
चतुरानन पंचानन अब जो चैहैं दशानन राखी ।
तौ अति काठिन बचव यहि अवसर खडे रामरण माखी ॥

रावण राम कोप पावक महँ होमहु वृथा शरीरा।
वासवसरिसविभूतिनशतिलखि मोहिं उपजत अतिपीरा॥
मुनि पुलस्त्यके नाती पुनि विश्रवापुत्र विख्याता।
करब अधर्म न उचित रह्यो तुहिं धर्म होत निज त्राता॥
ठकुर स्वहासित वदत सचिव तुव भये मीच वश सिगरे।
पाछे कोउ न बनाय सकत शठ निज ठाकुरके बिगरे॥
विधि वरदान विवश दर्पित ह्वै किय सुरमुनि अपकारा।
लहन चहत फल तासु आशुही करिले मनहिं विचारा।
राम प्रताप दीप तोरे पर विप्र शाप भय घोरा।
मंगल ह्वै है रामशरणमें यह मत मानहु मोरा॥

दोहा—वालिसुवनके वचन सुनि, कह दशवदन रिसाय।
को तैं को तेरो पिता, राम लषण को आय॥

छन्द।

कानन सुन्यों यक कीश। रह वालि वानर ईश॥
जो वालिसुत तैं होइ। तौ दई कुलकी खोइ॥
कहु कहु कुशल कहँ वालि। सो रह्यो अति बलशालि॥
तब कह्यो वालिकुमार। जिन करहु मनहिं खभार।
दिन दशक बीते जाय। पूँछेहु सकल कुशलाय॥
जश कुशल राम विशेध। सोइ करी सकल प्रबोध॥
मुहिं कहत तैं कुलबोर। तैं भुवन जाहिर चोर॥
सुनि वालिसुतके बैन। खल भन्यो शोणित नैन॥
गुण दूत देत बचाय। नहिं वसत यमपुर जाय॥
कह वालिसुत तब बैन। तैं सत्य धर्मंहि ऐन॥
परनारि चोरी कीन। सुर मुनिन अति दुखदीन॥
तापर न जानहु राम। यह और अद्भुत काम॥

लीजै भगिनिसों पूँछि। जो कान नासा छूछि॥
सो कही जो रघुनाथ। गुणि लिहे तब दशमाथ॥
तब कह्यो विंशतिबाहु। मुहिं जानु निशिचर नाहु॥
इन भुजनपर कैलास। बहु दिवस कीन्हें बास॥
अस सुन्यो कानन कीश। मुहिं कह्यो खबारि न बीश॥
नृपसुवन तापस आय। वानर अनेक बुलाय॥
रण करन चाहत मंद। करिकै अमित छलछंद॥
आवति हँसी सुनि कान। अब काल आय निरान॥
कहु कौन है रणधीर। जो लरी मोसन वीर॥
नर कीश राक्षस भक्ष। यह जगत है परतक्ष॥
दोउ बापुरो नृपनंद। बलहीन विगत अनंद॥
दोउ मनुज शत्रु तुम्हार। किय तुव पितहि संहार॥
दोहा-तापस जिहि कपिपाति कियो, सो वानर भय भीर।
मेरो अनुज समान तिहि और कौन रणधीर॥

छंद तोटक।

यक बानर है कछु वीर बडौ। पुर जारि अराम उजारि अडो॥
सुनि वालिकुमार कह्यो हँसिकै। कहु काह कियो पुरमें धासिकै॥
सिय खोजनहेत इहाँ पठयो। पुर जारि उजारि अराम गयो॥
अब जानेहुँ ताकर कर्म सबै। याहिते न गयो प्रभुपास अबै॥
भल खोजेहु ताहि मिल्यो न कहीं। नहिं रावण धावन वीर सहीं॥
अब तोहिं बुझाय कह्यों सातिकै। शठता ताजि दे मनते अतिकै॥
कुलनाश तुम्हार इतै जस है। तस तोहिं वधे न उन्हैं जस है॥
मृगनाथहि मेढुक हारतमें। श्रमका अस कर्म प्रचारतमें॥
सुनिकै दशकंठ ठठाय हँसो। यह वानरमें गुण खूब लसो॥
तनुपालत जो वरणै तिहि को। मुख भाषत है सिखयो वहिको॥

निज ठाकुरको उपकार करै। नचिकै नकलै करि चित्त भरे ॥
नहिं जानि छली कटु बैन सहे। नहिं मारनको तुहि को उमहे ॥
समरत्थ क्षमा कर होत सबै। दिय दूत विचारि बचाय अबै ॥
हँसि अंगद बैन कह्यो तबहीं। तुम सत्य क्षमाकर जाहिरही ॥
भगिनी अपराध समोखिलियो। खरदूषण घात बिसारि दियो ॥
पुर जारि उजारि गयो कपिहूं। दशकंधर माफ कियो तबहूं ॥
करि सागर सेतु तरे हमहूं। लिय लंकहि घेरि लखौ तुमहूं ॥
अब लेत घिराय पुरी सिगरी। क्षमहौ तबहूं जु कछू बिगरी ॥
दशभाल भन्योतिहि कालसुनो। जग जाहिर विक्रम मोर गुनो ॥
जब रावण हैं दश बीस नहीं। भुजको बल जानत देव सहीं ॥
तब अंगदहूं हँसि वाणि कह्यो। कहु लंकहि रावण कौन रह्यो ॥
हिरण्याक्षहि कुंडल एक लयो। बलि जीतन सोय पताल गयो ॥
यक हैहयराजहि जीतिलियो। हमरे पितुपै यक रोष कियो ॥
यक श्वेतहि द्वीप गयो चढिकै। सत्कार कियो रमणी बढिकै ॥
दोहा–बोल्यो दशकंधर तमकि, सो रावण तैं जान।
विरंचि कुसुम निज शीशके पूज्यों देव इशान ॥

छन्द हरिगीतिका।

उर कठिन जस दिग्गज गुणत्त बल बाहुको सुर सर्व।
करि तप लह्यो सबसों अभय गावत गुणनि गंधर्व ॥
मुख कहत लगति न लाजलघुनरसुयशकरासि बखान।
तब कह्यो अंगद मंदमति अबलों न जान अजान ॥
कीन्ह्यों अमानुष कर्म सागर सेतु रचि भगवान।
भुवभार हारनहेत लै अवतार कीन पयान ॥
जो कियो क्षत्र निक्षत्र यकइस बार भृगुकुल भानु।
रघुकुल कमल बल विपुल देखत गयो गोइ गुमानु ॥

बूझेहु न बूझत तैं अबूझ न सूझ निज कल्यान ।
मारीच खरदूषण त्रिशिर तरु ताल सिंधु महान ॥
वासव कुमार विराध वाली त्यों कबंध अमान ।
जानत सकल ये रामबाण प्रभाव तैं नहिं जान ॥
सो जानि लैहै लंकपाति हाठि होत कालिह विहान ।
तुहि कहे अब फल कौन सूखे काठ कस रस पान ॥
तब कह्यो दशकंधर विहँसि भल कही महिमा राम ।
जलमाहँ भरि पाषाण तरु उतरे कियो का काम ॥
दीन्ह्यों विरंचि विचारि वर नर वानरै बिसराय ।
भोजन हमारे जानि जिय कछु जठरपन दरशाय ॥
लै कपिनदल रचि सेतु सागर करनहित संग्राम ।
आये इतै अब कौन पंचाइत करनको काम ॥
उठि जाय वालिकुमार कहिदे होतही भिनुसार ।
देखहुँ सपूती तापसनकी कौन कस बलवार ॥
तब उठ्यो अंगद तमकि बोल्यो बैन परम कराल ।
रावण बचावन तोहिं पठयो मोहिं दीनदयाल ॥
उपकारमहँ अपकार मानत बीस लोचन अंधु ।
रिस लगति अस मुख टोरि गवनहुँ जहाँ करुणासिंधु॥
पै तोहिं मारे है न यश वशकालबात बतात ।
मम नाथ द्रोही महा कोंही गनत नाहिं निज घात ॥
तब कोपि दशकंधर कह्यो अब सुनत हौ भट काह ।
पटकौ पुहुमि मर्कट चटक अब होति अति उरदाह ॥
शासन सुनत दशवदनको धाये निशाचर वीर ।
गहि लियो अंगदको कुपित डोल्यो न कपि रणधीर॥
जब गसि गये कसि भुजनमहँ तब तुरत तमकितरक्कि ।

अंगद गयो मंदिर उपर भट गिरे सकल खरकि॥
टूटे भुजा फूटे वदन मारिगे निशाचर चारि।
अंगद उड्यो तहँते कहत जय लषण राम खरारि॥
आयो अकाश अकाश वानर बली वालिकुमार।
प्रभुचरण परशि प्रणाम कारि अस कियो वचन उचार॥
दशशीश है प्रभु कालवश मान्यो न मेरे बैन।
समुझाय भाँति अनेक भाष्यो तजत हठ शठ है न॥
अब उचित कोशलनाथ अस दीजै तुरंत रजाय।
लंका महल्लामें हुलसि हल्ला करैं कपिधाय॥
सुनि प्रभु हरषि निवसे निशा तिहि सावधान सचैन।
चारिहु दुवारन प्रथम भाषित पठै बानरसैन॥
हल्ला पऱ्यो कपि सैनमहँ तहँ होतही भिनुसार।
धाये अनेकन कोटि मर्कट विकट चारिहु द्वार॥
तरुपर परत तिमि शलभ वृन्दन वृन्द पत्रन छाय।
पूरित भई तिमि वानरन लंकापुरी न लखाय॥

दोहा—यूथप यूथप सकल कपि, धाये करि किलकारि।
मानहु एकहि क्षणहिं महँ, लंका लेत उखारि॥

छन्द।

धाये सुमर्कट वीर। चहुँ ओरते रणधीर॥
मुख सकल करत पुकार। जय राम लषण उदार॥
जय कीशपति सुग्रीम। अस कहत धाय न धीम।
परिघा विपाटन लाग। भरि तरु पषाण अदाग॥
चढि गये कोट कँगूर। लपटे दिवालन पूर॥
बहु घुसे नगर मझार। तहँ पऱ्यो हाहाकार॥
सुनिदशवदन अतिकोपि। गृह चढ्यो चितवन चोपि॥

चितयो चक्यो चहुँओर। बाकी न कौनौ ठौर॥
वसुधा भई कपिरूप। शंकित निशाचर भूप॥
श्रवणन सुनत यह शोर। जय राम राजकिशोर॥
जय लषण अतिबलसींव। जय कीशपति सुग्रीव॥
अस कहत गर्जत कीश। यह सुनि कुपित दशशीश॥
आशुहि सभामहँ आय। दिय भटन हुकुमसुनाय॥
धावहु धरहु सब जाय। लीजो कपिन कहँ खाय॥
रावण वचन सुनि कान। बाजे अनेक निसान॥
चाढ़िकै तुरंग मतंग। कोउ चढे विशद सतंग॥
राक्षस हजारन लाख। कपिजितनकीअभिलाख॥
निकसे सु चारिहु द्वार। गहि अस्त्र शस्त्र अपार॥
कपि रजनिचरन महान। माच्यो तहाँ घमसान॥
जय जयति लंकानाथ। राक्षस कहहिं यकसाथ॥
इत जयति रघुकुलचंद। बहु वदत वानर वृन्द॥
निशिचरहु मर्कट कोटि। गे लपटि बाहुनि जोटि॥
बरछी कटार कृपाण। कुंतल चले न प्रमाण॥
इत कीश तरु पाषाण। हनि करहिं रिपुबिनप्राण॥
दोहा–धूरि भूरि नभ पूरि लिय, भे अलोप दिनराय।
मारु मारु धरु धरु गिरा, रही महीमहँ छाय॥

छन्द।

शोणित नदीन प्रवाह। थल थल अपार अथाह॥
पुनि मांस कर्दम भूरि। तिहि महँ पटानी धूरि॥
तिहि समय निशिचरवीर। धाये महा रणधीर॥
कपि कदन कीन्हें आय। इतते बली कपि धाय॥
दीन्हें खलन कहँ रोंकि। भुजदण्ड चन्डन ठोंकि॥

घननाद अंगद वीर। भिरिगे समर अतिधीर॥
संपाति और प्रजंघ। भिरिगे उभय जनु सिंघ॥
पुनि जंबुमालि प्रवीन। हनुमानसों रण कीन।
शत्रुघ्न निशिचर आय। लीन्ह्यों विभीषण धाय॥
गजकीश तपनहिं लीन। नीलहि निकुंभ बलीन।
पुनि प्रघस निशिचर काहिं। सुग्रीव लिय रणमाहिं॥
विरूपाक्ष लछिमन वीर। दोउ समर किय रणधीर।
दुर्धर्ष रशमीकेतु। मित्रघ्न पावक केतु॥
अरु यज्ञ कोपहु पाँच। रघुवीरसों रण राँच॥
तिमि वज्रमुष्टि उदार। लिय मयंद समर मँझार॥
निशिचर असनि प्रभु आय। रोंक्यो दुविद कहँ धाय॥
प्रतपन महाभट घोर। नलसों लर्‍यो बरजोर॥
तहँ वीर विद्युतमालि। आभिर्‍यो सुषेण उतालि॥
यहि भाँति तजि छलछन्द। युध होन लाग्यो द्वंद॥
मार्‍यो गदा घननाद। अंगदहि करत प्रवाद॥
सोइ गदा रोंकि तुरंत। हनि वालिसुत बलवंत॥
रथ सारथी अरु बाजि। करि नाश दियो पराजि॥
शर त्रय प्रजंघ पँवारि। संपाति लीन हँकारि॥
संपाति वृक्ष चलाय। बिन प्राण कीन बजाय॥

दोहा—तहाँ जंबुमाली सुभट, हन्यो हृदयमहँ शूल।
दौरि पवनसुत तल हन्यो, गिर्‍यो भूमि तरु तूल॥
प्रतपन राक्षसको तरकि, नल मार्‍यो शिर मूठि।
निकासि परे दोऊ नयन, भई वीरता झूठि॥
भट प्रचंड शर दलित हिय, कीशनाथ तरु मारि॥
सरथ प्रजंघहिको दियो, मारि महीमहँ डारि॥

विरूपाक्षको तहँ लषण, एकहि बाण चलाय।
शीश काटि लीन्ह्यों तुरत, सारथि चल्यो पराय॥
चारि बाणते राम तहँ, मार्यो निशिचर चारि।
भाजि गयो तहँ पाँचयों, धनुष भूमिमहँ डारि॥
वज्रमुष्टिको मयँद कपि, मार्यो मूठी दौरि।
तोर्यो रथ वाजी हन्यो, वाहनमें रज खौरि॥
हन्यो निकुम्भ अनेक शर, नील सैनपति काहि।
नील दौरि रथचक्रको, लियो उखारि तहाँहि॥
सोइ चक्रते सारथी, शीश काटि मधि जंग।
गर्ज्यों कपि तव भगतमें, लिहे निकुम्भ तुरंग॥
दुविद असनिप्रभुको हन्यो, असनि सरिस तरुसाल।
सरथ सवाजी सारथी, भयो विवशसो काल॥
विद्युतमाली रजनिचर, हन्यो सुषेणहि बान।
मारि सुषेणहुँ शृंग इक, तोर्यो ताकर यान॥
दौरि सुषेणहिं शीशपर, हन्यो गदा बलवान।
तिहि सुषेण मारी शिला, भो निशिचर विनप्रान॥
भयो युद्ध यहि भाँति तहँ, राक्षस वानर केर।
बहुरि बहुरि पुनिलरत भे, करि करि कोप घनेर॥

छन्द भुजंगप्रयात।

चढे राक्षसा मत्त मातंग केते। चढे हैं तुरंगानि केते सचेते॥
किते स्यन्दनैमें सवारे चले हैं। महायुद्धके वे उछाही भले हैं॥
इते कीश धाये किये घोर शोरा। शिलावृक्षसों मारिकैशीश फोरा॥
उभय सैन्यको सो भयो युद्ध भारी। न कीशौ टरैं ना टरैं रात्रिचारी॥
उडी धूरि गैपूरि त्यों आसमानै। न देखो परै नयन आगे महानै॥
तहां राम सौमित्र कोपे अपारा। तजे चापते दापकै बाण धारा॥

लगै बाण मानो महा वज्रपाता । तुरंगौ मतंगौ शतांगौ निपाता ॥
रहे वाजि बाजे अनेके जुझाऊ । प्रवीरानिके युद्ध बाढ्यो उराऊ ॥
नदी रक्तधारानिकी बाढि धाई । मिली सिंधुको लाल रंगै बनाई ॥
नचैं योगिनीकी जमातैं अनन्ता । उठे हैं कबंधौ महा ओजवन्ता ॥
हनौरे हनौरे कहां जात भागे । मर्योरेमर्योरे अबै शस्त्र लागे ॥
कहां जात आवै रहै सावधानै । गिर्योंमैं हन्यो ना हनो जातप्रानै ॥
यही शोर छायो सबै ठौर माहीं । महा कीश रोषे मुरैं नेकु नाहीं ॥
भये अस्त ताही समयमें तमारी । लरै लागि लंकानिवासीसुखारी ॥
लसैं शर्वरी वीरकी प्राणहारी । झिलेकीश दैदै उभयहाथ तारी ॥
महायुद्धमें भो महा अन्धकारा । न सूझै कछू हाथहूके पसारा ॥
लरैं वानरै बानरे युद्ध आसी । लरैं राक्षसौ राक्षसौ ना निरासी ॥
महा संकुले संगरे रैन ठायो । लखैं आपनो ना लखैं नापरायो ॥
महा योगिनी प्रेतनी बोलि वानी । कियेरक्तपानैं अतीवैं अघानी ॥
भयो भूमि रक्तामिषै पंक भारी । परे घायले घूमि केते सुरारी ॥
गये लागि लोथीन केते पहारा । तरै भीरु नाहीं नदी रक्त धारा ॥
तहाँ रात्रिचारी चले यूथ बाँधे । कहाँ राम ठाढे कहैं चाप कांधे ॥
लखे राम आई चमू शत्रु आगे । सुआशी विषैसे तजै बाणलागे ॥
परैं भर भरैं बाणके वृन्द जाई । मघा मेघ मानौ झरीसी लगाई ॥

दोहा–यज्ञशत्रु दुर्धर्ष अरु, महापार्श्व रणधीर ।
मिल्यो महोदर आय तिमि, वज्रदंत बल वीर ॥

चौपाई ।

ते दोऊ राक्षस शुक सारन । लगे रामपर बाणन झारन ॥
निमिषमाहँ तिनको रघुनन्दन । किये व्यथित हनि बाणनवृन्दन ॥
आये राक्षस और अनेकन । जिमि पतंग पावक कहँ पेखन ॥
कनकबाण तजि तजि रघुनायक । कीन्हें सबन स्वर्गके लायक ॥

हनुमत अंगद हने निशाचर। आयो मेघनाद योधावर ॥
वालिसुवन तिहि दौरि सैलहानि। कियोविरथनिजनामवदनभानि ॥
राम लषण अङ्गदहि सराहत। भुज पूजत मर्कट अतिचाहत ॥
लियो जीति अंगद सुत रावन। भयो निशाचर सैन्य परावन ॥
कोपि इन्द्रजित गयो गगनमहँ। अन्तर्धान कियो निजतनुकहँ ॥
हनै लाग शठ बाण हजारन। भये सर्प करि चले फुकारन ॥
लपटे राम लषणके गातन। नागपाश प्रभु बँधे सकल तन ॥
यह लीला दासन सुखनाशनि। भई कीश माति युद्ध निरासनि॥

दोहा-हनुमत अंगद आदि भट, प्रभु कहँ लीन्हे घेरि।
आयो तहां विभीषणहु, विकल भयो प्रभु हेरि॥

छंद।

लंकेस सुरति सँभारिकै। बोल्यो सुवैन विचारिकै॥
यह काल है न विषादको। पैहौ अवसि अहलादको॥
घननाद उत घर जाइकै। बोल्यो वचन जय पायकै॥
हम युगल बंधुन मारिकै। आये समर महि डारिकै॥
दशकंठ सुनि सुत बैनको। पायो अमित उर चैनको॥
डौंडी पिटायो लङ्कमें। सुत हन्यो रिपु निइशंकमें॥
गमन्यो रही जहँ जानकी। बोल्यो गिराअभिमानकी॥
घननाद कारि संग्रामको। मारयो लषण अरु रामको॥
पुष्पक विमान चढायकै। ल्यावहु सियहि दरशायकै॥
अस कहि गयो रावण घरै। सिय विकल भै दुख निरभरै॥
त्रिजटा विभीषण कन्यका। सिय दासिका जग धन्यका॥
पुष्पक विमान मँगायकै। लै चली सियहि चढायकै॥
सिय लख्यो लछिमन रामको। पायो महा दुख धामको॥
त्रिजटा लगी समुझावने। लीला कियो जगपावने॥

तैं शोच मति करु जानकी । इनकी न द्युति बिन प्रानकी ।
तुहिं शपथ मेरे प्रानकी । लीला गुणैं भगवानकी ।
अस कहि बुझायो सीयको । राखौ यतन करि जीयको ।
पुष्पकविमानहि फेरिकै । सिय लै चली दल हेरिकै ।
राख्यो सियहि मनमंदिरै । कहि जियत है पति सुन्दरै ।
इत समर लीला देखिकै । देवर्षि कारज लेखिकै ।
गरुडहि पठायो आशुही । अहिकी छुडावन पाशुही ।
खगराज पंख पसारिकै । आयो अतुरता धारिकै ।
देखत गरुड अहि भगत भे । दोउ जगतपति द्युतजगतभे ।
कपि कियो जय जयकारको । लखि निरुज राजकुमारको ।
सोरठा–कीन्ह्यों गरुड प्रणाम, दै परदक्षिण परशि पद ।
गये आपने धाम, कपिदल जय जयकार भो ॥

छन्द ।

राक्षसहु जाय रावणहि द्वार । बहु बार बार कीन्हें पुकार ॥
आयो उदंड कोउ इक विहंग । जिहि निरखि भभरि भागे भुजंग ॥
दोउ निरुज प्रबल दशरथ कुमार । ठाढे प्रवीर युधको तयार ॥
अब होन चहत हल्ला तुरन्त । भेजहु प्रवीर बलवन्त कन्त ॥
तब कह्यो कोपि दशवदन बाणि । धूम्राक्ष वीर ले धनुष पाणि ॥
करु कीश सैन्यको अन्त आशु । धूम्राक्ष सुनत पायो हुलासु ॥
दल लियो दीह दौरचो तुरन्त । मर्कटन मारि बाणन अनन्त ॥
दीन्ह्यों पछेलि करि सिंहनाद । भट देनलगे तिहि विजय वाद ॥
दल विकल देखि मारुतकुमार । धायो प्रचण्ड कर लै पहार ॥
धूम्राक्ष हन्यो तिहि गदा धाय । सो लगी शीश जनु फूल आय ॥
धूम्राक्ष हन्यो गिरि हनूमान । सो गिरचो भूमि ह्वै विगत प्रान ॥
राक्षस पराय पुनि लंक जाय । धूम्राक्ष मरचो दीन्ह्यों सुनाय ॥

दशकंठ कोपि तब हुकुम दीन । हे वज्रदन्त तुम भट प्रवीन ॥
द्रुत हनौ जाय कपि सैन्य सर्व । लै वीर संगमहँ अर्व खर्व ॥
सुनि वज्रदन्त रावण निदेश । आयो तुरन्त जहँ समर देश ॥
मार्‍यो कपीन सायक अथोर । दोउ दलन भयो घमसान घोर ॥
कपि सैन्य डगत अङ्गद प्रवीर । अति बेग चल्यो जनु राम तीर ॥
लखि वज्रदन्त वालीकुमार । मार्‍यो रिसाय सायक हजार ॥
लै पाणि महा पर्वत प्रचंड । तहँ बालिसुवन विक्रम उदण्ड ॥
मार्‍यो पहार रथ भंजि तासु । बोल्यो सुबैन अब करहुँ नासु ॥
करवाल ढाल लै वज्रदन्त । अङ्गदहि उपर आयो तुरन्त ॥
अंगदहु लीन कहुकी कृपान । दोउ करत पैतरे लरि सुज्ञान ॥
दोउ रुधिर अंग करते प्रयास । जनुलसतफूलेशालमलिपलास ॥
दोउ हने बरोबर दुहुन घाउ । दोउ गिरे बरोबर खाय ताउ ॥

दोहा-वज्रदन्तके उठत में, अंगद उठि अतुराय ।
तासु आशु शिर काटिकै, बोल्यो जय रघुराय ॥

छन्द नाराच ।

निहारि वज्रदन्त अन्त यातुधान भागिकै ।
कियो पुकार रावणै दुवारदेश लागिकै ॥
दियो निपात वज्रदन्त वालिको कुमार है ।
चढे चहैं कपीश आशु लंककी प्रकार है ॥
दशाननौ प्रकोपिकै अकंपनै बुलायकै ।
कह्यो करौ निपात कीश शुद्ध युद्ध ठायकै ॥
दशाननै निदेशको सुने अकंपनो बली ।
चल्यो प्रकोपि युद्धको लिये सुसैन्यहूभली ॥
इतै बली कपीश देखि आवते अकंपनै ।
चले उछाह युद्धके न देह नेकु कंपनै ॥

लग्यो सुहोन उद्ध युद्ध कीश राक्षसानको।
हने पषाण कीश यातुधान त्यों कृपानको॥
अभय अकंपनो तहाँ धस्यो सुकीशसैन्यमें।
अनेक बाण मारिकै दियो चमू अचैनमें॥
चली पराय वाहिनी बली बली मुखानकी।
परी हरीन कान हाँक पवनपूत सानकी॥
सुकेसरी कुमार धाय आयगो तुरंतही॥
अकंपनै निहारि क्रोधवंत भो अनंतही॥
हने अनेक पादपान काटतो अकंपनै।
विरुद्ध क्रुद्ध युद्धमें सुमारुती छनै छनै॥
उखारि एक वृक्ष दौरि केसरी किशोर है।
दियो अंकपनै शिरै चल्यो न तासु जोरहै॥
गिर्‍यो मही मर्‍यो शरीर चूर चूर है गयो।
अनेक यातुधान रावणै पुकारको दयो॥
निशाचरे सुयुद्धमें अकंपनो हतो गयो।
करो विचार औरहू महा उपद्रवै ठयो॥
सुने निशाचरान बैन लंकनाथ शंककै।
कह्यो प्रहस्त बोलिकै करो सुरक्ष लंकके॥
तुम्हैं विना दिखात ना करै कपीश नाश जो।
चमूपते विचारु मोहिं देइ को हुलास जो॥
कह्यो प्रहस्त हस्त जोरि हौं प्रशस्त भाषहूं।
न युद्धके उमंगही न कातरी न राखहूं॥
अबै नशान नेकु ना निशाचरेश बूझिये।
बहोरि देहु जानकी न रामसों अरूझिये॥
न जंगमें जुरे जनाति जीति यातुधानकी।

चहौ जो लंक राज्य लंकराज देहु जानकी ॥
प्रहस्त बैन कानमें परे सुतप्त तेलसे ।
कह्यो अमर्षि बीश अक्ष कागदो गदेलसे ॥
अनेक भाँति भोग भोगि खाय खूब मोरई ।
प्रहस्त कामके दिना डिराय जीव चोरई ॥
त्रिशुद्ध होहु युद्धको विरुद्ध बात ना कहौ ॥
न बाचिहौ घरै घुसे लिडार होन ना चहौ ॥
प्रहस्त शीश नाइकै चल्यो तमंकि युद्धको ।
चली प्रचंड वाहिनी कपीनके निरुद्धको ॥
चले षटै अमात्य तासु वाहिनी बनावते ।
कढे जु लंकद्वारते लखे हरीन धावते ॥
भिरे प्रचंड यातुधान सिंहनादकै तहाँ ।
उछाहसों अनेक कीश कन्दनै कियो महाँ ॥
दोहा–तहँ प्रहस्त मन्त्री सबै, झिले समर शर झारि ।
हन्यो नरांतक को दुविद, शैल शृङ्ग यक मारि ॥

छंद चौबोला ।

हन्यो दुविद कहँ पुनि दुर्मुखभट अतिकराल इकशूला ।
दुविद हन्यो ताके शिर तरुवर गिर्‍यो तूलके तूला ॥
जांबवान पुनि हनि पषाण इक महानाद कहँ मार्‍यो ।
हन्यो कुंभहनुको अंगद तहँ वृक्ष शीशपर झार्‍यो ॥
लखि मंत्रिन विनाश सेनापति धस्यो कीश दलमाहीं ।
डार्‍यो मर्दि मर्कटन कोटिन जिमि मृगपति मृगकाहीं ॥
देखि कदन बंदरन विलोचन नील सैनपति धायो ।
महा एक वटवृक्ष उखारिन प्रहस्तहि ताकि चलायो ॥
सो तरु तिल तिल कारि प्रहस्तभट नीलहि बाणनछायो ।

तब मर्कट दल नायक कोपित शिला धारि कर धायो॥
मारयो शिला प्रहस्त शीशमें मरो तुरन्त प्रवीरा।
हत दलनायक निशिचर भागे लहि कीशनते पीरा॥
जाय पुकारे रावण द्वारे सेनानायक जूझा।
दिन दिन विजय लहत वानर रण अबहुँ न बूझ अबूझा॥
दशकंधर सुनि दरत अधर रद बोल्यो बैन रिसाई।
रोकहु वीर द्वार लंकाके सकैं न वानर आई
हमहिं जाब साजि समर हेत अब देखब कपि मनुसाई।
कहँ सुग्रीव कहाँ भ्राता मम कहाँ लषण रघुराई।
डंका दियो दिवाय दशानन लंकामहँ चहुँ ओरा।
निशिचरराज आज रण गवनत सजे वीर सुनि शोरा॥
राक्षसनाह सनाह पहिरि तनु चल्यो बजाय नगारा।
महावीर सब चले संगमहँ निकस्यो उत्तर द्वारा॥
महा सैन्य आवत लखि रघुपति कह्यो विभीषण पाहीं।
सखा कौन आवत निशिचर वर जानि परत कछु नाहीं॥
कह्यो विभीषण सुनहु नाथ· यह आवत रावण राजा।
यह महेन्द्र बल दर्प विदारक जाहि डरत यमराजा॥
इन्द्रजीत त्रिशिरा देवांतक नारांतक भट भारी।
और महोदर महापार्श्व भट तिमि अतिकाय सुरारी॥
कुंभ निकुंभ अकंपन दूजो सकल निशाचर वीरा।
आवत सकल एक नहिं आवत कुंभकर्ण रणधीरा॥
कह्यो राम तब बहुत दिवसमें यह खल दृगपथ आयो।
यहि सम जग नहिं वीर महाबल रूप भानु सम भायो॥
उत रावण बोल्यो वीरनसों ताकहु लंका जाई।
मैं अकेल लरिहौं कपिदलसों मानहु मोरि दुहाई॥

अस कहि सब मुरकाय भटनको धँस्यो कीशदल एका।
मारत बाण दशानन कोपित किय बिन प्राण अनेका॥
विकल देखि दल कपिपति धायो हन्यो भूमिधर भारी।
सो गिरि रावण रजसम कीन्ह्यों मार्‍यो बाण प्रचारी॥
लगत बाण सुग्रीव गिर्‍यो महि माच्यो हाहाकारा।
गय गवाक्ष नल ऋषभ जोतिमुख तिमि सुषेणबलवारा॥
रावण पै डारे धरणीधर सो बचाय शर मारी।
षट वीरन करि दीन्ह्यों मूर्च्छित बार बार ललकारी॥
भगे कीश सब चले पुकारत रक्षहु रघुकुलनाथा।
महाबली दल वलीमुखनको नाश करत दशमाथा॥
आरत वचन सुनत करुणाकर मृगपति गति रघुराऊ।
चले निशंक लंकपति सन्मुख लषण कह्यो भरि चाऊ॥
मैं प्रभु चहौं लरन रावणसों जो निदेश अब पांऊ।
कह्यो राम लरियो बचाय तनु छली निशाचरराऊ॥

दोहा-तिहि अवसर दशमुख शरनि,जाल फारि हनुमान।
भुज उठाय गहि रथ धुरा, कीन्ह्यों वचन बखान॥
सुरासुरनते अभय कर, पायो विधि वरदान।
नर वानरते रावरी, मीच नगीच निदान॥

छन्द चामर।

निहारु मोर हस्त सर्प तोर दर्प दारनै।
करै प्रवीरता प्रवीर नेकु ना बिसारनै॥
सुन्यो सुबैन अंजनीकुमार ओजवानके।
निशाचरेश हूं भन्यो तुरन्त बैन मानके॥
अरे विमूढ कीशतैं निशंकही चलायले।
हमू हन्यों निशाचरेन्द्र नाम यों बजायले॥

खिलाय तोहिं मारिहौं न बाचिहै परायकै।
कह्यो कपीश मैं वही दही पुरी बजायकै॥
अक्षयकुमारको हन्यों सुवाटिका उजारिकै।
प्रकोपि लंकनाथ घात पुत्रको विचारिकै॥
कियो तलै प्रहार कीश तू मर्‌यो उचारिकै।
लगे सुरारिको प्रहार बुद्धिको बिसारिकै॥
गिर्‌यो कपीश भूमिमें उठ्यो सुधीर धारिकै।
कियो तलै प्रहार देवशत्रुको प्रचारिकै॥
गिर्‌यो सुरेश शत्रु भूमि खायकै पछारको।
उठ्यो सराहि बार बार केसरीकुमारको॥
करै लगे प्रशंस देव केसरी किशोरकी।
कह्यो कपीश भै वृथा सुरीति मोर जोरकी॥
उठो सजीव दुष्ट तैं बहोरि मोहिं मारिलै।
पठायहौं यमालये विशेषि तू विचारिलै॥
प्रकोपि लंकनाथहू हन्यो सुरामदासको।
गिर्‌यो बिसंज्ञभूमिमें तज्यो नहीं हवासको॥
बिसंज्ञ केसरीकुमार देखि रावणो तदा।
चल्यो प्रकोपि नीलपै हन्यो पतत्रित्योंगदा॥
अखंडबाण धार नील लंकनाथकी हनी।
सहंत सन्मुखै चल्यो विहाय बानरी अनी॥
हन्यो निशाचरेशको पहार एक जायकै।
कियो सुशैल सात टूक बाणको चलायकै॥
उठ्यो इतै सुअंजनीकिशोर देखि रावनै।
निमग्न नील युद्धमें गुण्यो न योग धावनै॥
प्रकोपि नील वृक्ष वृन्द मारि राक्षसाधिपै।

अदृश्यकै दियो प्रकोपसों दशाननो तपै ॥
पवारि बाणजाल वृक्ष छिन्न भिन्नकै दियो ।
अखंड बाणधार झारिमूँदि नीलको लियो ॥
कियो स्वरूप छोट नीलहू चढ्यो ध्वजाग्रमें ।
कहुं दिखात कीट पै कहूं शरासनाग्रमें ॥
निहारि नील लाघवी प्रसन्न रामचन्द्र भे ।
सुकंठ लक्ष्मणादि वीर पावते अनंद भे ॥
निशाचरेश पावकास्त्र चापमें सँधानकै ।
कह्यो बचाउ कीश तोहिं देत मैं अप्रानकै ॥
चलाय नीलको वसुंधरा गिराय देत भो ।
दह्यो न आग्नि ताहि जाहि पुत्रराखिलेतभो ॥
निहारि नीलको बिसंज्ञ लंकराज त्यागिकै ।
हनै लग्यो अनेक बानरान कोप पागिकै ॥
चली पराय वानरानि बाहिनी दिशाननैं ।
निहारि कालसों कराल धावतो दशाननैं ॥
समर्थ कौन जाय जो निशाचरेश सन्मुखै ।
विचारि यों चल्यो निशंकलक्षणै भरोसुखै ॥

दोहा–रामानुज कोदंड लै, बली बाँकुरो वीर ।
ललकारयो दशकंठको, गिरा मेघ गंभिर ॥

चौपाई ।

रे रावण कपि क्षुद्रन काहीं । मारे तुहिं जगमें यश नाहीं ॥
चलो आउ अब सन्मुख मेरे । दरशावै बल जो कछु तेरे ॥
अस कहि कियो धनुष टंकोरा । भरो भयंकर भूमहँ शोरा ॥
सुनि टंकोर शोर अति घोरा । तिरछे चितै लषणकी ओरा ॥
सिंहनाद करि रावण धायो । निकट आय अस वचन सुनायो ॥

अरे बाल धरि दे धनु बाणा। भागु भागु रक्षै निज प्राणा॥
नातौ ह्वै है काल कलेवा। सकैं न राखि असुर मुनि देवा॥
रामानुज बोल्यो मुसक्याई। वदसि वचन बिन बलहि दिखाई॥
खडो धनुष शर लै तुव आगे। कस न दिखावसि ओज अभागे॥
इतनी सुनत लषणकी बातैं। हन्यो लंकपाति सायक सातैं॥
रज सम करि रावणके बाना। रामानुज नेसुक मुसक्याना॥
कुपित दशानन बहु शर मारा। रामानुज छोडी शरधारा॥

दोहा–विफल निरखि निज विशिख लै, सायक यक हविवाट।
तज्यो घोर शर जोर करि, लग्यो लषण ललाट॥

चौपाई।

लग्यो विभावसुसायक भाला। भयो समर कछु लषण विहाला॥
उठ्यो सँभारि तुरंत अनंता। काट्यो धनुष लषण बलवंता॥
रावण धनुष काटि रण धीरा। हन्यो ललाट माहँ त्रय तीरा॥
तहँ दशभाल भाल लगि बाना। गिर्यो विसंज्ञ तज्यो तनु भाना॥
चले भाल ते रुधिर पनारे। उठ्यो बहुरि सारथी हँकारे॥
जीतत नहिं लछिमन ते देखी। ब्रह्मदंड लै शक्ति विशेखी॥
उठत धूम निकसतमुख ज्वाला। तज्यो लषण पै शक्ति विशाला॥
हने हजारन लछिमन बाना। रुकी न शक्ति प्रचंड प्रधाना॥
लागी लछिमनके उर आई। मूर्च्छित भयो भरत लघुभाई॥
मूर्च्छित देखि लषणतहँ रावन। दौरि बीसभुज लग्यो उठावन॥
शैल हिमाचल मंदर मेरू। धरणी सातहु सागर फेरू॥
सकै उठाय भुजन दशशीशा। तिलभरि तज्यो न भूमि फणीशा॥

दोहा–लषण विकल लखि समर महँ, धायो पवनकुमार।
हन्यो जोर भरि मूठि तिहि, गिरिगो खाय पछार॥

चौपाई।

दृग श्रवणन ते शोणित धारा। निकसी रावणके बहु वारा ॥
झूमत झुकत भवँत पुनि भागत। विकलगिरचोरथपर नहिं जागत॥
मुर्च्छित देखि दशानन यानै। लगे सराहन सुर हनुमानै ॥
लियो उठाय लषण हनुमाना। फूलहु ते लघु लग्यो महाना ॥
यह जानहु सब भक्ति प्रभाऊ। रिपु गिरिगुरुनिजजनहरुआऊ ॥
पवनसुवन लै लछिमन काहीं। आयो रघुकुल भानु जहाँहीं ॥
प्रभुहि विलोकत शक्ति परानी। गई दशानन निकट महानी ॥
विकल देखि रघुपति लघु भाई। उर लगाय लिय आशु उठाई ॥
भयो विशल्य गई सब पीरा। उठ्यो कहत कहँ दशमुख वीरा॥
निरुज निहारि लषण कहँ कीशा। बोलेसब जय जयति अहीशा ॥
देखि कुशल लछिमनको रामा। आपुहि करन चले संग्रामा ॥
गहि कोदंड प्रचंड अखंडा। दशरथ सुवन वीर बरिबंडा ॥

दोहा–दशमुख समर पयान लखि, बोल्यो पवनकुमार।
नाथ हमारे कंध चढि, जीतहु रिपु यहि बार ॥
पवनसुवनके वचन सुनि, प्रभु नेसुक मुसक्यान।
चढे कपीशहि कंधपर, यथा गरुड भगवान ॥
सोह्यो हनुमत कंधपर, भानुवंशको भानु।
मनहुँ कनकगिरि मिलि उये, भानु कृशानु समानु॥

छन्द।

ले चल्यो मारुतनन्द श्रीरघुनन्द वेग अमंद।
रघुवंश पंचानन दशानन देखि भे सानंद ॥
प्रभु किये परम कठोर तहँ शारंगको टंकोर।
केते निशाचर कान फूटे भाजि चले चहुँ ओर ॥
बोल्यो दशाननसों गिरा गंभीर श्रीरघुवीर।

ठाढो रहै ठाढो रहै कहँ जातहै अब पीर ॥
दिनराज त्यों यमराज त्यों सुरराज अग्नि उदंड।
तुहि राखि सकत न आजु शंभु स्वयंभु ओज अखंड॥
दशहूँ दिशाननमें दशानन गोपि आनन भागि
बाचिहै न कौनौ भाँति खल मम शर शरीरहि लागि।
मम बन्धुको तैं हने शक्ति विशेषि लेहौं बैर।
तव पुत्र पौत्र सँहारिमैं दिखरायहौं रण सैर॥
चौदह सहस निशिचर प्रखर खर त्रिशिर दूषण संग।
मार्‍यो निमिषमहँ भागिनि सो पूछ्यो कि नहिं सो जंग॥
प्रभुके वचन सुनि लजत कोपत लंकपति बहु तीर।
मार्‍यो अनिलसुतकी सुरति करि बैर पूरब बीर॥
तिल तिल बिधे तनु बाण पै हनुमान तेज प्रभाउ।
क्षण क्षण बढत द्विगुणित समरलखि कुपित भे रघुराउ॥
रघुवंश मणि मंडलाकारहि करि कोदंड प्रचण्ड।
शर धार समर मँझार छोड्यो बार बार अखंड॥
छाये विदिशि दिशिराम सायक गगन महिं चहुँ ओर।
दशकंठ भान भुलान सरथ छपान बाणन झोर॥
प्रभु प्रथम रथ काट्यो सचक्र तुरंग डारे मारि।
काट्यो ध्वजा सारथि हन्यो तब उठ्यो कोपि सुरारि॥
लीन्ह्यों अशनि सम शूल सोउ कर मैं भई बहु खंड।
पुनि कियो कर करवाल सोउ दुइ टूट भयो उदंड॥
रघुवीर लै यक तीर रावणके हन्यो उर माहिं।
गिरिगो धनुष धरणी व्यथित तनु रही सुधि कछु नाहिं॥
जो लोक रावण वीर रावण लागि वज्र कराल।
कँप्यो न कछु सो राम शर लागि भयो भूरि बिहाल॥

पुनि बिहँसि प्रभु यक अर्धचन्द्र चलाय सायक घोर ।
काट्यो सुक्रीट सुपंच खंडहु क्षरे करत अजोर ॥
अति दीन आयुध हीन तहँ दशशीश शीश उघारि ।
ठाढो समर जनु बिन प्रकाश प्रयात अस्त तमारि ॥
विषहीन आशी विष यथा जिमि अग्नि ज्वाल विहीन ।
मुसक्याय कोशलनाथ मार्‍यो वचन बाण प्रवीन ॥
मारे अनेकन कीश कीन्ह्यों युद्ध परमकठोर ।
अब भये तैं रावण दयावन रह्यो नहिं भुज जोर ॥
अब-जाहि लंका रहित शंका थाक नेकुनिवारि ।
चढि रथ शरासन लै बहुरि अइयो समर पगु धारि ॥
तब लख्यो विक्रम तुम हमारो हनौं जो अब तोहिं ।
तौ थको रावण हन्यो रघुपति अस कही जग मोहिं ॥
सुनि राम बैन औचल रावण भग्यो छूटे केश ।
अवधेश सायक भीति भारि लंका घुस्यो लंकेश ॥
जयकार कीन्ह्यों देव सब प्रभु आय अपने सैन ।
कीन्ह्यों विशल्य कपीन लछिमन सहित फेरत नैन ॥
सुग्रीव अंगद आदि कपि सब करहिं राम प्रणाम ।
प्रभु बाहु पूजहिं जयति कहि कहि भये पूरण काम ॥

दोहा—उत लंकामहँ लंकपति, सुमिरत रघुपति बान ।
भय भारि बोल्यो निशिचरन, अबदिखातनहिं त्रान ॥

छन्द चौबोला ।

नल कूबर वेदवतीकी रंभाकी नंदीकी ।
तथा शाप अनरण्य भूपकी सत्य होति क्षति जीकी ॥
जाहु जगावहु कुंभकर्णको सो विशेषि जय पाई ।
निशिचर कुलकी बचन हेतु नहिं दीसत और उपाई ॥

कहुँ षट कहूँ सप्त कहुँ आठहुँ कहुँ नव कहुँ दश मासा।
सोवत कुम्भकर्ण भ्राता मम अब तिहि बलजय आसा॥
करि सलाह सोयो नव दिन गत ताहि जगावहु जाई।
चले जगावन कुम्भकर्णको निशिचर अतिभय पाई॥
लगे बजावन बाज अनेकन गये भवनके द्वारे।
कुंभकर्ण नासिका श्वास लगि उडि बाहिरे सिधारे॥
इक योजनको शयन अयन सो कुम्भकर्ण जहँ सोवै।
यक यक कर गहि जसतसकै घुसि कहे सकल का होवै।
चन्दन प्रथम लगाये तनुमें सींचे सुरभित नीरा।
बीणा बेणु मृदङ्ग शंखध्वनि कियो निशाचर भीरा॥
दश हजार निशिचर योधावर लगे जगावन ताको।
एक सहस दुन्दुभी बजाये करि नादित लंकाको॥
खैंचहिं कर गहि चरण दबावैं झिझकारहिं सब अङ्ग।
नहिं जागत उपाय कछु लागत कुम्भकर्ण अडबङ्ग॥
मूशल मुद्गर परिघ गदा लै जोर जोर भरि मारैं॥
तऊ न जागत नींदविवश खल गिरि तरु तनुपर डारैं।
खर तुरंग मातंग ऊँटगण तिहि तनुपर दौरावैं॥
करहिं शोर करि जोर घोर अति उडत विहङ्ग गिरिजावैं।
नहिं जाग्यो तब सहस मत्त गज तिहि तनुपर दौराये॥
तब जान्यो कोउ करत परश तनु तज्यो नींद सुख छाये।
कुम्भकर्ण उठि बैठ सेजपर मुख बगारि जमुहाना॥
महिष वराह मेष अज सहसन भक्षण कीन्ह्यों नाना॥
रुधिरकुंभ अरु सुराकुम्भ बहु मेदकुम्भ करि पाना।
पूछ्यो रजनीचरन हेतु किहि कीन्हें जगन विधाना॥
किहि कारण भूपाति जगवायो है सब विधि कल्याना।

तब यूपाक्ष जोरि कर बोल्यो कुंभकर्ण नहिं जाना ॥
लै वानरी सैन्य चढि आयो कौशलदेश भुवाला।
भट प्रहस्त आदिक रण जूझे घेरे लंक विशाला ॥
सुनिकै हँस्यो ठठाय गुण्यौ अस लियो विष्णु अवतारा।
भयो विनाश निशाचरकुलको कृत रावण अपकारा ॥
पुनि प्रभु कर निज वध विचारि मन कुम्भकर्ण बलवाना।
कारि मज्जन भूषण पट पहिरयो प्रभुपद दरश लुभाना ॥
द्वै हजार घट सुरापान करि भ्राता भवन सिधारा।
बाहरते लखि क्षुद्र कीश बहु भागे सागर पारा ॥
पूछ्यो राम विभीषणको तब यातुधान यह को है।
कह्यो विभीषण कुम्भकर्ण यह मारग जात चलो है ॥
दंशकदर्प सुरासुर केरो कबहुँ न लह्यो पराजै।
मानि रावरी भीति लंकपति जगवायो यहि आजै ॥
भक्षण करत देखि लोकनको हन्यो कुलिश सुरराई।
गड्यो न तनुमें उदाकि गयो सुरिशक्र भग्यो भय पाई॥
सावधान ह्वै समर किह्यो प्रभु कुम्भकर्णसों आजू।
प्रेमविवश मुहिं लगतभीति अति तुम समरथ रघुराजू ॥
देखत ही वानर सब भागत जुरी कौन बलधामा।
कह्यो राम जानि सखाभीति करु देख्यो मम संग्रामा ॥

दोहा-कुम्भकर्ण उत जायकै, रावणके दरबार।
अग्रजको वन्दन कियो, पूंछि कुशल व्यवहार॥

छन्द चौबोला।

तासों खबरि कही सब रावण कुंभकर्ण तब बोला।
निशिचर कुल क्षय कियो दशानन भयो दर्पवश भोला ॥
यहि विधि बातैं कह्यो उचित बहु राजनीति अनुसारा।

कह्यो बहुरि अब जाहुँ समरको वंदन लेउ हमारा ॥
अस कहि कुंभकर्ण संगरको चल्यो शुद्धमति क्रुद्धा ।
एक फलंक लंक दरवाजा आयो नाँघि विरुद्धा ॥
मर्कटकटक देखि चटपट शठ अटपट मनहिं विचारी ।
झटपट लटपट करन कीशदल उद्भट चल्यो सुरारी ॥
भगे बलीमुख महाबली लखि फिरैं न फर पर फेरे ।
अंगद अरु हनुमन्त धाय द्रुत बार बार अस टेरे ॥
कुलकी प्रभुकी और धर्मकी सुरति छोडि कस भागे ।
उभय लोक अबहीं बनिजैहैं रामकाजमहँ लागे ॥
अंगदवचन सुनत मर्कटभट जीवनआश विहाई ।
धाये कोटि कोटि चहुँ दिशिते लै तरु गिरि समुदाई ॥
कुंभकर्ण तनु चढे चटक सब हनि हनि वृक्ष पहारा ।
कपिन वृंद धरि धरि निज मूठिन लग्यौ करन अहारा ॥
कुंभकर्ण रण दुराधर्ष भट शत शत कपि मुख मेलै ।
कान नाक ह्वै कढहिं कीश बहु भयो वानरन खेलै ॥
शाखामृगन मही महँ पटकत मींजै चरण चलाई
मरद्यो हरिन हजारन हँसि हँसि धावत भूमि कँपाई ।
धायो द्विविद महीधर लैकर कुंभकर्ण कहँ मारचो ॥
नहिं पहुँच्यो ताके शिरपर गिरि गिरि महिसैन सँहारचो ॥
तब सहसान पषाणन मारचो ता कहँ पवनकुमारा ।
महाशूलसों छेदि छेदि सब शैल व्यर्थ करि डारा ॥
कुंभकर्ण रणदुर्मद धायो लीन्हें शूल कराला ।
महा शैल इत लियो पवनसुत हन्यो दौरि विकराला ॥
मारुति मारचो महा महीधर लग्यो माथमहँ जाई ।
कुंभकर्ण कछु भयो व्यथित तहँ सँभरि कोपआति छाई ॥

हन्यो त्रिशूल हनूमतके उर निकरि गई तनु फोरी।
शोणित वमत भयो कपि विह्वल भई मूर्च्छा थोरी॥
कुंभकर्णको काल विचारत भागे कीश अपारा।
करत किलकिला शोर चहूँकित माच्यो हाहाकारा॥
नील सैन्यपति कुंभकर्णको मार्‍यो दौरि पहारा।
वामपाणि मूठीसों गिरिवर रजसम सो करि डारा॥
ऋषभ शरभ अरु नील गवाक्षहु गंधमादनहु पाँचौ।
हन्यो कुंभकर्णै गिरि तरु तल जानि दुरासद साँचौ॥
भये पुहुपसमते प्रहार तनु कँप्यो न नेकु सुरारी।
कोहु कहँ पदते कोहु कहँ तलते मारि भूमिमहँ डारी॥
भागत वानर भक्षत रणमहँ मूर्त्तिमान जनु काल।
को समरथ सन्मुख गवनै तिहि मर्कट भये विहाला॥
दाहत यथा विपिन दावानल कुंभकर्ण तिहि भाँती।
धावत धरणि कँपावत नावत मुखमहँ कपिन जमाती॥
वालिकुमार पहार पाणि लै मार्‍यो रावणभ्राते।
अंग लागि फूट्यो पहारसो हँस्यो ठठाय अघाते॥
हन्यो मुष्टि यक वामपाणिकी गिर्‍यो मूर्च्छि युवराजू।
कुंभकर्ण धायो त्रिशूल लै कहत कहाँ कपिराजू।
आवत कुंभकर्णको लखि तहँ रह्यो कीशपति ठाढो।
कह्यो वचन सुग्रीव भीमबल रण उमङ्ग भरि गांढो।

दोहा-कुंभकर्ण लघु वानरन, मारे तुहिं यश नाहिं।
मेरे सन्मुख आयकै, दरशावै बल काहिं॥
कीशराजको जानिकै, कुंभकर्ण बलवान।
लै त्रिशूल सन्मुख भयो, कीन्ह्यों वचन बखान॥
हौ नाती करतारके, ऋक्षराजके नंद।
राम बाहुबल पायकै, गर्जहु गर्व बलंद॥

छन्द पद्धरी ।

सुग्रीव रहौ अब सावधान । हौंकुंभकर्ण नहिं वीर आन ।
अस सुनत कीशपति लै पहार । दशकंठ अनुजपै किय प्रहार ।
गिरि कुँभकर्ण तनु लागि तुरंत । छहराय परयो टूके अनंत ।
तब कुम्भकर्ण महि रोंकि पाँउ । घाल्यो सुकंठपै शूल घाउ ।
सो रह्यो शूल गुरु सहस भार । निर्माण भयो जनु कुलिशसार ।
दमक्यो दिगंत दामिनिसमान । घहरान घंट वानर परान ।
लखि शूल गुन्यो मन हनूमान । राजा विशेषि विन भयो प्रान ।
धायो अमंद अंजनीनंद । अति करी लाघवी कपि सुछंद ।
पायो न जान सुग्रीव पाहिं । गहि लियो शूल बीचही माहिं ।
दै जानु शूल टोरयो प्रवीर । लखि लगी प्रशंसन देवभीर ।
हनुमानसरिस नहिं कोउ दिखाय । कपिराज प्राण लीन्ह्यों बचाय ।
कपि लगे पुजन हनुमंत बाहु । भो यातुधान दल दीह दाहु ।
लखि कुंभकर्ण निज शूल भंग । लीन्ह्यों उखारि गिरिमहा शृङ्ग ।
धाये सुकंठके ओर घोर । मारयो पहार करि बाहु जोर ।
गिरि लगत गिरयो सुग्रीव भूमि । भोशिथिल अंग नहिं उठयो झूमि ।
तहँ कुम्भकर्ण धायो प्रचारि । लीन्ह्यों उठाय कपिपति सुरारि ।
तिहि काँख दाबि लै चल्यो लंक । दशकंठ अनुज दुर्मदनिशंक ।
अस कुम्भकर्ण कीन्ह्यों विचार । दशकंठ जेठ भ्राता हमार ।
तिहि गह्यो सुगल अग्रज बलीन । सोइ लेहुँ वैरकारि कपिन दीन ।
कपिराज हते दल गयो मारि । लै चल्यो कपीशहि अस विचारि ।
लै जात निरखि कपिराज काहिं । हनुमान गुण्यो अस चित्त माहिं ।
धरि प्रभुप्रताप शिर द्रुतहि धाय । लैहौं कपीशको मैं छड़ाय ।
सुग्रीव हीन बल कहा लोक । यश हानि होइगी यही शोक ।
सुग्रीव शीश रघुपति प्रताप । कबहूँ न पाइहै शत्रुताप ।

दोहा—अस विचारि हनुमान तहँ, लग्यो समेटन सैन ।
कुंभकर्ण सुग्रीव लै, गयो लंक भरि चैन ॥

छन्द चौबोला ।

माच्यो हल्ला लंक महल्ला कुंभकर्ण बलवान ।
काँख दाबि लायो कपिराजहि यातुधान हरषान ॥
कुंभकर्ण पहुँच्यो बजारमहँ कपिपति गहे प्रवीर ।
चढी अटारी निशिचर नारी वर्षहिं चंदन नीर ॥
वर्षहिं पुहुप लाज जय गावहिं पहिरावहिं जयमाल।
शीतल मंद समीर चलाव लै लै व्यजन विशाल ॥
सो शीतलता पाय कीशपति मुरछा तज्यो प्रवीर ।
दबे काँखमहँका करिये अब अस विचारि रणधीर॥
कढ्यो कुक्षते गयो कन्धपर दंतन काट्यो नाक ।
काटि कर्ण दोउ करन करजते फैलायो जस नाक॥
पदनखते दोउ पार्श्व विदारयो पुनि उडि चल्यो अकाश।
कुंभकर्ण पद पकरि पछारयो मान्यो प्राण विनाश॥
कंदुक इव उडिगयो गगन पुनि सुमिरत रामप्रताप ।
रामसमीप आय वानरपति गह्यो चरण विन ताप॥
नासा कर्ण विहीन महाभट बहत रुधिरकी धार ।
करि गलानि मन कुंभकर्ण तहँ कीन्ह्यों मरणविचार ॥
लौटि चल्यो पुनि समरहेत शठ लेकर मुद्गर घोर ।
प्रविश्यो पुनि वानरी वाहिनी लग्यो खान चहुँ ओर ॥
महामत्त रण कुंभकर्ण भट गयो भूलि तिहि भान ।
लग्यो खान निशाचर वानर कियो घोर घमसान ॥
भगे कीश हाहा पुकारि करि अब नहिं कोउ समुझात ।
डरत लोकके प्रजा यथा सब महाकाल मुख जात ॥

तहँ रामानुज महा धनुर्धर दुराधर्ष रणधीर ।
गवन्यो कुंभकर्णके सन्मुख लय आयसु रघुवीर ॥
हन्यो सात शर तासु शरीरहि निकरि गये तनुफोरि ।
मारयो बहुरि हजारन बाणन काटयो कवच बहोरि ॥
वेध्यो सकल शरीर शरनसों कुंभकर्णको फेरि ॥
रण बाँकुरा वीर रामानुज कह्यो वचन तिहि टेरि ॥
सत्य कालको जीतनवारो लख्यों पराक्रम तोर ।
अब देखन तुव सकल पराक्रम उत्साहित मन मोर ॥
चढि सुरेश ऐरावतपर यदि लोकपाल लै संग ।
भिरहिं देवदल लैकरि कर पवि तऊ न जीतहिं जंग॥
सुनत सुमित्रासुवन वचन तहँ कुम्भकर्ण रणधीर ।
बोल्यो वचन विहँसि संगरमहँ लषण लाल तुम वीर ॥
राजकिशोर सकल विधि समरथ मेरो करन विनाश।
पै तुम्हरे जेठ भ्राताकी लगी लखनकी आश ॥
देहु बताय कहाँ रघुनन्दन मुहिं अब कछु न दिखात।
सत्य भाउ ताको विचारि तहँ कही लषण अस बात
नालशलसम खडो अचल यह रघुकुलपंकज भान।
जाहु वीर अभिलाषा पूरहु निशिचरवंश प्रधान ॥
इतना सुनत बली रजनीचर पायो परम अनन्द ।
धायो रघुनन्दनके सन्मुख गर्जत जिमि घनवृन्द ॥
सज्यो समर कहँ शूर शिरोमणि लै धनु दशरथलाल।
रौद्र अस्त्र कहँ करि प्रयोग प्रभु छोडे विशिख विशाल॥
जिन बाणनमें एकबाणसों वालि विनाश्यो राम ।
खर दूषण त्रिशिरा कहँ वेध्यो सप्तताल अभिराम ॥
ते शर कुम्भकर्णके तनुमहँ व्यथा करत कछु नाहिं ।

तजत बाणधारा रघुनायक खैंचि खैंचि धनु काहिं ॥
दोहा-कुम्भकर्ण शर शैल भो, गई गदा कर छूटि ।
करपदसों मर्दन लग्यो, जूट जूट कपि कूटि ॥
वानर ऋक्षन राक्षसन, लक्षन भक्षत जात ।
समर विलक्षन रक्षपति, नहिं अक्षन दरशात ॥
प्रभुके सन्मुख आय शठ, मार्यो महा पहार ।
सात बाणसो राम तिहि, काट्यो लगी न बार ॥
सप्तखंड गिरि गिरिगयो, द्वै शत कोश चपाय ।
कह्यो सुमित्रासुवन तब, नेकु वचन मुसक्याय ॥

छंद चौबोला ।

नहिं जानत अपनो पराय शठ महामत्त रण रंग ।
देहि गिराय भूमिमहँ याको चढि चढि वानर अंग ॥
दियो रामशासन कपि वृन्दन चढि तनु देहु गिराय ।
धाय बलीमुख चढे तासु तनु रह्यो सोउ ठहराय ॥
जब जान्यो चढि आये मर्कट दीन्ह्यों देह कँपाय ।
कोटि द्वैक झरिपरे भूमि कपि लियो सबन कहँ खाय॥
यह अनरथ निहारि रघुनायक धनु सायक कर धारि।
धाये कुम्भकर्णपर कोपित बार बार ललकारि ॥
कीन्ह्यों धनु टंकोर घोर प्रभु भर्यो भयावन शोर ।
सुनि धनुकी ध्वनि कुंभकर्ण तहँ धायो रामहिं ओर ॥
कुंभकर्णसो कहे नाथ तब वचन मंजु मुसक्याय ।
चलो आउ मेरे सन्मुख शठ और ठौर नहिं जाय ॥
सुनि वाणी कोमल रघुपतिकी जानि राम यहि ठोर।
कुम्भकर्ण पुनि कह्यो वैन अस सुनिये राजकिशोर ॥
नहिं विराध नहिं मैं कबन्ध खर नहिं मारीचहु वालि ।

महाबली जानहु दशरथसुत कुंभकर्ण बलशालि ॥
देखहु मुद्गर मोर भयावन कपिदल नाशनहार ।
रघुनायक विक्रम दरशावहु जो कछु होय तुम्हार ॥
असकहि धायो राम ओर खल प्रभु पवनास्त्र चलाय ।
मुद्गर सहित काटि डार्यो भुज गिरो कपीन चपाय ॥
तब रावणको अनुज कोपि करि धायो ताल उखारि ।
ताल सहित काट्यो भुज सोऊ इन्द्र अस्त्र प्रभु मारि ॥
चपे निशाचर वानरहूं बहु दबे मतंग तुरंग ।
पुनि दिव्यास्त्र मारि रघुकुलमणि कियो जङ्घ युग भंग ॥
भयो विगत पद भुज रण दुर्मद कीन्ह्यों घोर चिकार ।
दशौ दिशानन शैल सिंधुमहँ भरिगो शोर अपार ॥
उड्यो गगन महँ राहुसरिस शठ प्रभुशरमुख भरि दीन ।
इन्द्र अस्त्र पुनि योजि राम धनु कियो प्रहार प्रवीन ॥
कुम्भकर्णको गयो शीश कटि गिरो लंक महँ जाय ।
गृह गोपुर प्राकार फोरिकै गिरिसों पर्यो दिखाय ॥
गिर्यो रुण्ड सागर महँ बूड्यो जलचर करतविनास ।
प्रविशि गयो पाताल प्रयंताहि दियो भुजङ्गन त्रास ॥
हर्षे सुर वर्षे बहु फूलन कीन्हें जयजयकार ।
नचन लगे मर्कट कहि प्रभु किय कुम्भकर्ण संहार ॥
डोली धरणि धराधर संयुत सुर नभ चढे विमान ॥
कहहिं सकलजयजयरघुकुलमणि जय जय कृपानिधान ।
मुख्य मुख्य शाखामृग पूजहिं रघुनन्दनकी बाँह ।
निर्मल रवि प्रकाश कीन्हों जगपवन बह्यो सुखमाँह ॥
कुम्भकर्णकी काय चपाने मर्कट युगल करोर ।
कपिपाति अङ्गद नील ऋक्षपाति तिमि केसरीकिशोर ॥

राम सुयश गावत शिर नावत पूरे विजय उछाहु ।
राजतरघुकुलमणिजिमि निकस्योनिशिकरतजिमुखराहु॥
भागे यातुधान मारे कपि गवने रावण द्वार ॥
भरे भीति लखि कपिन जीति रण कीन्हें विकलपुकार ।
महाराज तुव बन्धु विक्रमी करि कोटिन कपि नाश ॥
राम बाण लगि गयो ब्रह्मपुर करि जग सुयश प्रकाश ॥
रघुपति भुजबल महा मदोदधि सन्ध्या कालहि पाय ।
निशिचर दिनकर अस्त भयो तहँ बलप्रकाश बिखराय॥
दोहा-कुम्भकर्णको निधन सुनि, लहि दशमुख दुख भूरि ।
कीन्ह्यों विविधविलाप तहँ, विजय आशभय दूरि ॥

छन्द चौबाला ।

तहां महोदर महापार्श्व भट त्रिशिरा अरु अतिकाय ।
नारांतक देवांतक बोले युद्ध करन ललचाय ॥
कस शोचहु निशिचर कुलभूषण हमरे जीवित आज ।
कुम्भकर्ण मरि रह्यो वीर नहिं कारक शत्रु पराज ॥
हम षट वीर जात संगरको जीत लेब कपिसैन ।
अस कहि उठे तमाकि षटनिशिचर चले चटक चितचैन॥
लखे वानरी सैन्य सिंधु सम उठे वृक्ष पाषान ।
घुसी निशाचर सैन्य कीशदल मच्यो घोर घमसान ॥
निशिचर वानर रुधिर मांसको माच्यो फर पर कीच।
रावणनन्दन तहाँ नरांतक घुस्यो वानरन बीच ॥
चढि वाजी ताजी कपिराजी काट्यो प्रास चलाय ।
भगे कीश सुग्रीव शरणगे कपिपति कह्यो रिसाय ॥
रे अंगद ठाढो का देखत यह खल अश्व सवार ।
नाशत सकल वानरी सैना धाय करहु संहार ॥

धायो अंगद कहत बैन अस रे नारांतक वीर।
का मारत बापुरे बानरन मुहिं मारै रणधीर॥
अंगदवचन सुनत नारांतक तरल तुरंग धवाय।
मार्‍यो खड्ग वालिसुतके उर पर्‍यो टूटि महि जाय॥
अंगद हन्यो तुरंगहि थापर फाट्यो तासु कपार।
नारांतक तजि वाजि दौरि द्रुत हन्यो मूठि बलवार॥
लगत मूठि शिरगिर्‍योभूमिकपि उठ्यो झूमिललकारि।
हन्यो नरांतकके उर मूठी मरिगो आंखि निकारि॥
निहत नरांतक लखि देवांतक त्रिशिरा राजकुमार।
बली महोदर रावण भ्राता भयो मतंग सवार॥
देवांतक त्रिशिरा रथ चढिकै चले आशु भट तीन।
तिनि ओरते वालिसुवनको मारन लगे प्रवीन॥
जो जो तरु पषाण कर धारत अंगद मारन हेत।
तीनिहु भट करहीमें काटत करन प्रहार न देत॥
मारि मारि बाणन अंगदको दीन्ह्यों भूमि गिराय।
उठतवीर पुनि गिरत भूमि भ्रमिपर्‍यो विकलदरशाय॥
तब हनुमान नलि सैनापति कीन्हें धाय सहाय।
देवांतकको दौरि पवनसुत हन्यो मूठि नजिकाय॥
गयो विशाल कपाल फूटि तिहि मरिगो जीभ निकारि।
तब चढि महामतंग महोदर त्यों त्रिशरा शर झारि॥
मारि नीलको भूमि गिराये उठि दलपति गहि शैल।
सहित मतंग महोदरको तब दरशाई यम गैल॥
मरो महोदर कका हमारो त्रिशिरा मनहिं विचारि।
पवनसुवनको मारि शरनते लीन्ह्यों मूँदि प्रचारि॥
बाणजालको फोरि कढ्यो कपि हन्यो महा पाषाण।

भयो भग्न त्रिशिराको स्यंदन हन्यो सो कूदि कृपाण ॥
पवनसुवन करि परम लाघवी लियो कृपाण छडाय ।
तिहि कृपाणसों तासु तीन शिर काट्यो भूमि गिराय ॥
देवांतक नारांतक त्रिशिरा बली महोदर वीर ।
देखि निहत चारउ वीरनको महापार्श्व रणधीर ॥
धायो हनत कपीन अनेकन पारत हाहाकार ।
ऋषभ वीर वानर तब दौरयो सहत बाणकी धार ॥
मारयो शैल टूटिगो स्यन्दन लै कर गदा प्रचंड ।
धायो ऋषभवीर पर कोपित हन्यो गदा बरिबंड ॥
दोहा–ऋषभ गिरयो मूर्च्छित मही, उठ्यो सचेतत्वराय ।
कर मुरेरि ताको लपटि, लीन्हीं गदा छडाय ॥
महापार्श्वके शीशमें, हनी गदा कपि सोय ।
फट्यो शीश मरिकै गिरयो, भगे निशाचर रोय ॥
त्रिशिरा और नरांतकहु, देवांतक बलवान ।
अरु अतिकाय महाबली, रावणपुत्र प्रधान ॥
वीर महोदर अरु यही, महापार्श्व विख्यात ।
दोऊ भुजसम जानिये, दोऊ रावण भ्रात ॥
मरे पांच संग्राम महँ, रह्यो खडो अतिकाय ।
महाबली धनुधर प्रबल, शुद्ध युद्ध मन लाय ॥

छंद चौबोला ।

तिहि नहे स्यन्दन सहस घोडे सहस सूर्य प्रकाश ।
हैं चार साराथि सकल सायुध छत्र निशिकर भास ॥
रणभूमि आयो आत डरायो समरहित अतिकाय ।
निजबंधु निधन पितृव्य निधन निहारि रोषबढाय ॥
नहिं हन्यो कीशनको शरन नहिं वध्यो गर्वितवानि

सूधो चलो आयो समर मन द्वन्द्वयुद्धहि आनि ॥
तहँ मध्य बानरसैन्यमें है खडो भट अतिकाय।
विन भीत सुरगण जीति दीन्ह्यों वचन कपिन सुनाय ॥
जनि भगहु वानर बाण मेरे कपिन हनत लजात।
जिहि होय रणकी सान अब सो आय कस नहिं जात॥
अतिकायकी अतिकाय लखि भागे कपीश विचारि।
पुनिकै जियो रण कुंभकर्ण कपीन खैहै झारि ॥
गे राम लछिमन शरण कपि अतिकायके डर भागि।
पूँछ्यो विभीषणको विहँसि तब राम कोपहि पागि ॥
भाषहु सखा यह कौन राक्षस कुंभकर्ण समान।
आवत अभय रथमें चढो बल बुद्धि तेज निधान॥
बोल्यो विभीषण नाथ यह अतिकाय राजकुमार।
रथ चक्र घहरत ध्वजा फहरत लंकको रखवार॥
है महाधनुधर इन्द्रजितसम करत रण विनमाय।
जीत्यो सुरन बलवान याको नाम है अतिकाय॥
यह धान्य मालिनिको कुँवर तप कियो विपिन अपार
है सुरासुरते अवध अस वर दीन यहि करतार॥
नय साम दामहु दंड भेदहु मंत्र कहत निशंक।
जाके भुजनबल वसत निर्भय लंकपति अरु लंक ॥
यह समर अगणित वार जीत्यो सुरासुरन अपार।
शरधारसों रोंक्यो कुलिश शक्रहु भग्यो गुणि हार ॥
रोंक्यो वरुणकी पाश बाणन मारि समर मझार।
याके सरिस योधा न कोउ विक्रमी लंककुमार॥
कीजै यतन प्रभु जितनको नहिं कीशसैन्य अपार।
करि है सकोपित शरनसों इक याममहँ संहार ॥

रणभूमिमें उत आयकरि अतिकाय धनु टंकोर।
अपनो सुनायो नाम वानर भगे चारहुँ ओर॥
तहँ कुमुद द्विविद मयंद नीलहु शरभ पांचहु वीर।
गिरिशृङ्ग वृक्षन धाय मारे तिहि महा रणधीर॥
अतिकाय सहजहि काटि थंभित कियो पांचहु कीश।
नहिं लर्‍यो जो नहिं लर्‍यो तासों चल्यो मानहुँ ईश॥
पुनि कह्यो समर पुकारि अस कोउ वीर नहिं यहि सैन।
जो करै सन्मुख समर मोसे करि कछू जिय भैन॥
अतिकायके सुनि वचन तमक्यो लषण लाल सपूत।
हँसि सरुष सन्मुख धनुष लै धायो रुचिर रजपूत॥
कीन्ह्यों धनुष टंकोर घोर दिगंत छायो शोर।
लखि लषणको अतिकाय बोल्यो अरे भूपकिशोर॥
तुहिं देखि मुहिं लागत दया भजि जाय औरै ठौर।
सुनिकै सुमित्रासुवन कह बहु अर्थ आखर थोर॥
नहिं होहु वीरप्रधान भाषे विन दिखाये जोर॥
सुनि लषण वानी अर्थ सानी चितै ताकी ओर।
अतिकाय मार्‍यो एक शर कहि गयो अब जिय तोर।
काट्यो लषण तजि अर्धचंद्रहि बाणसों शर घोर॥

दोहा—तब अतिकाय प्रकोपि अति, छाँड्यो पाँच नराच।
लछिमन काट्यो बीचहीं, जिमि झूठे को साँच॥

छन्द चौबोला।

तिहि रह्यो कवच अभेद ताते लषण ताकि ललाट॥
मार्‍यो पतत्रि प्रचंड फैल्यो तेज जनु रवि बाट॥
अतिकाय भालहि लग्यो सायक विकल गिरि तिहि ठौर।
पुनि उठि सराहन लग्यो लषणहि वीरवर रिपु मोर॥

पुनि तज्यो बाणनधार रजनीचर प्रधान कुमार।
छायो गगन दशहूँ दिशन ह्वै गयो अति अँधियार॥
करि लाघवी लषणहुँ तहां शर काटि किय उजियार।
दोऊ बरोबर तजत शरवर दोउ उछाह अपार॥
शर गहत संधानत तजत खैंचत शरन पुनि लेत।
नहिं वीर दोऊ परत देखि सचेत करत अचेत॥
इक बाण लै अतिकाय वेध्यो लषणके उरमाहिं।
निज कर उखारयो बाण रामानुज सरायो ताहि॥
पुनि तज्यो पावक अस्त्र लछिमन चली ज्वालनिकाय।
परजन्य अस्त्र चलाय तिहि अतिकाय दीन बुझाय॥
लछिमन हन्यो पवनास्त्र तहँ बाढ्यो सुझंझा पौन।
अतिकाय पर्वत अस्त्र तजि रोक्यो अनिलको गौन॥
रुद्रास्त्र छोडत भो निशाचर जनु प्रलय करिदीन॥
रुद्रास्त्रहू मारयो लषण दोउ शरभये जरि छीन॥
ऐषीक अस्त्र चलाय तहँ अतिकाय जय गुणि लीन।
इन्द्रास्त्र लषण चलाय आशुहि शांत तिहि करिदीन॥
अति काय छोड्यो पुनि यमास्त्र दिखान काल समान।
सौमित्र मारयो पाशुपत यम अस्त्र तेज बुझान॥
पुनि तज्यो लछिमन बाणधारा शैल जिमि जलधार।
अतिकाय कवचहि लागि शर टूटे भये नहिं पार॥
भर भर हनत निर्भर शरन निर्भय सुमित्रानंद।
नहिं विधत कवच अभेद महँ गिरि परत महिमुखमंद॥
तब कह्यो लछिमनसो पवन ब्रह्मास्त्र येकरे मीच।
नहिं मरी और उपाय विधिवरदानते तनु सीच॥
सुनि लषण लीन्ह्यों ब्रह्मशिर शर मनहु यमकर दूत।

दिशि विदिश सूरज चन्द्र तारा उठी ज्वाल अकूत ॥
डोली धरणि जब तज्यो सायक कालसरिस कराल ।
अतिकाय लखन बाण मार्यो जरे शरकी ज्वाल ॥
जब गयो सायक निकट तब अतिकाय लाघव कीन ।
असि गदा शक्ति कुठार शूल चलाय आयुध दीन ॥
नहिं रुक्यो शर तिहि लग्यो कंठहि कट्यो ताकर शीश।
सुर मुनि गगनते वर्षि फूलन कहे जयति फणीश ॥
वानर सराहन लगे लषणहि धन्य रघुपतिभ्रात ।
सौमित्र वंद्यो रामपद स्वेदित श्रमित सब गात ॥
उत भगे रजनीचर किये लंकेशद्वार पुकार ।
अतिकायको लक्ष्मण हन्यो अब करहु जौन विचार ॥
सुनि भयो राक्षसराज नेसुक विकल बहुरि सम्हारि ।
बोल्यो वचन मरे निशाचर गये कपिकर मारि ॥
यह लगत मोहिं अचर्य्य अब विपरीति ह्वैगो काल ।
अब करिय कौन उपाय निशिचर वंश होत विहाल ॥
अतिदुखित लखि पितुको कह्यो घननाद वचन उदण्ड।
मेरे जियत नहिं सोच कीजे निरखि मम भुजदंड ॥
बोल्यो दशानन व्यथित आनन है भरोसो तोर ।
जिहि भांति जीतो कपिनको सो करौ विक्रम घोर ॥
दोहा-मेघनाद अस कहि चल्यो, शठ निकुंभिला जाय ।
कीन्ह्यों पावक होम खल, श्याम छाग कटवाय ॥
कीन्ह्यों तंत्र विधानते, महाघोर अभिचार ।
ब्रह्मअस्त्र अनुभव कियो, करण कीश संहार ॥
दिव्य धनुष अरु दिव्य रथ, प्रगट्यो अग्नि कराल ।
स्वै स्यन्दनमें चढि चल्यो, धारे धनुष विशाल ॥

बोल्यो रजनीचरनसों, करहु घोर घमसान।
आपु सरथ सह सारथी, ह्वै गो अन्तर्धान ॥

छन्द तोटक ।

ब्रह्मास्त्र कीन प्रयोग । शर तज्यो जनु अहि भोग॥
वर्षन लग्यो बहु बान । ह्वै गगन अंतर्धान ॥
माया कियो अतिघोर । अँधियार भो चहुँ ओर ॥
नव सप्त पंच कपीन । इक इक शरन वध कीन॥
लै वीर भूधर वृक्ष । धावहिं चहूंकित ऋक्ष ॥
देखहिं न मारत जोय । तब फिरहिं अतिभय मोय॥
व्याकुल भये कपिवृन्द । गे शरण रघुकुलचन्द॥
लै धनुष लछिमन राम । दोउ तजे शर बलधाम ॥
नहिं लखिपरत घननाद। सुनि परत केहरि नाद॥
जिहि पंथ आवत बान । तिहि पंथ करि अनुमान॥
शर त्यागि दूनौं भाय । घननाद तनु किय घाय॥
तब इन्द्रजित बरजोर । ब्रह्मास्त्र छोंड्यो घोर ॥
चहुँ ओरते तिहि काल । आवन लगे शरजाल॥
शर झरत सहसन लाख । जिमि भानुकर वैशाख॥
नहिं ओर कछू दिखाय । सायक रहे रण छाय॥
लागे कटन कपियूथ । गिरिगे वरूथ वरूथ॥
जे तकहिं आँखि उठाय । शर लगत नयनन आय॥
अति गाढ शर अँधियार। नहिं सूझ हाथ पसार॥
बोले लषणसों राम । घननाद यह बलधाम॥
ब्रह्मास्त्र कीन प्रयोग । तिहि मानि बो अब योग॥
जबलगि रहब हम ठाढ। तबलगि अमर्षेहि बाढ॥
छोडी विशिखकी धार । सब दल करी संहार॥

ताते गिरहु महिमाहिं । अब जतन दूजो नाहिं ॥
अस कहि शिथिलइव राम । लछिमनसहित बलधाम ॥
दोहा-किये शयन अस भूमि महँ, सहत ब्रह्मशर घोर ।
राम लषणको शिथिल लखि, कियो इंद्रजित शोर ॥

छन्द तोटक ।

सुग्रीव अंगद नील । नल द्विविद भारी डील ॥
गय जाम्बवंत सुखेन । गिरिगये समर अचैन ॥
औरहु बलीमुख वीर । गिरिगे समर शर पीर ॥
भे छिन्न भिन्न शरीर । कहुको रह्यो नहिं धीर ॥
कोइ रह्यो रण नहिं ठाढ। घननाद शर लगि गाढ ॥
करि विकल वानर सैन। लहि इंद्राजित अतिचैन ॥
घननाद किय घननाद । पायो परम अह्लाद ॥
लंका गयो जय पाय । दिय पितुहि सकल सुनाय ॥
दिनमणि भये तहँ अस्त। कपिसैन्य विकल समस्त ॥
लंकेश अनुज स्वतंत्र । ब्रह्मास्त्र वारण मंत्र ॥
जानत रह्यो यक सोय । ताते गयो नहिं सोय ॥
आशुहि विभीषण वीर । बोल्यो कपिन धरि धीर ॥
कोउ जियत है दलमाहिं। उत्तर दियो कोउ नाहिं ॥
उठि तुरत पवनकुमार । अस कीन वचन उचार ॥
ब्रह्मास्त्र शर लहि घात । हैं विकल कपि सब तात ॥
जो होय प्राणसमेत । तिहि खोजिये करि नेत ॥
दोउ लियो ठीक विचारि। यक लूक लीन्ह्यों बारि ॥
खोजन लगे रणभूमि । हनुमत विभीषण घूमि ॥
लगि गई लोथिन राशि। कपि मरे जीभ निकासि ॥
भे अंग भंग कपीश । नहिं परे जीवत दीस ॥

हनुमत विभीषण वीर। दोउ राजसुत रणधीर॥
ये अंग साबित चारि। नहिं और परचो निहारि॥
सरसाठि करोरि कपीन। घननाद बिन जिय कीन॥
षट दंडमहँ शर झारि। डारचो कपीशन मारि॥

दोहा–पवनसुवन लंकेशहू, खोजत खोजत जाय।
जाम्बवंतको लखत भे, शर जर्जरित बनाय॥
कह्यो विभीषण ऋक्षपति, जीवत हौ की नाहिं।
जस तसके बोल्यो वचन, जाम्बवान तिहि काहिं॥
अहौं बूढ शरविधित तनु, नयनन नहिं दरशात।
स्वरहीते जान्यो परत, अहौ लंकपति भ्रात॥
कहहु तात हनुमान कहुँ, जीवत हैं की नाहिं।
कह्यो विभीषण वचन तब, करि अचरज मनमाहिं॥
राम लषणको छोडिकै, अंगद सुगलसमेत।
पूछहु पवनकुमारको, ऋक्षराज किहि हेत॥
जाम्बवान बोल्यो वचन, सुनहु विभीषण भ्रात।
जिहि कारण हनुमानको, मैं पूछहुँ यह बात॥
जीवत हठि हनुमानके, मरेहु जियत सम कीस।
नहिं जीवत हनुमानके, जियत मरे सम दीस॥
ऋक्षराजके वचन सुनि, गह्यो चरण हनुमान।
कह्यो वचन मैं जियत हौं, देहु सीख मतिमान॥
जाम्बवान हनुमानको, बोल्यो कंठ लगाय।
प्राणदान दलको करहु, औषध पर्वत लाय॥
गगनपंथ सागर उपर, गमनहु उत्तर ओर।
तहाँ हिमाचल शैल लखि, नाकि केसरी किशोर॥
ऋषभ नाम गिरि कनकको, अरु कैलासहि बीच।

आषधपर्वत जानियो, तुरतहि जाय नगीच ॥
मृतसंजीवनि औषधी, अरु करनी संधान ।
अरु विशल्य करनी सुखद, ल्यावहु द्रुत हनुमान ॥

कवित्त ।

जांबवानको बखान सुनि हनुमान वीर, भयो बलवान मेरु मंदर समान है । आसमान पंथ ह्वै पयान अनुमान करि, उठि ऐंडाय उड्यो मानो हरियान है ॥ कीन्ह्यों शोर बे प्रमाण दीन्हों भीति यातुधान, लीन्ह्यों वीर वेगवान वेग बे प्रमाण है । रघुराज सुमिरि कृपानिधान भगवान, आति अतुरान देनहेत प्राण दान है॥ पहुँच्यो कपीश गिरि औषध समीप जाय, हेरै कौन औषध यों मनमें विचारिकै । केसरीकिशोर बरिबंड भुजदण्ड ठोंकि, चल्यो आशु ओषधीको पर्वत उखारिकै ॥ मार्तंड मारगमें मार्तंडही सो लस्यो, मार्तंड वंश मार्तंड उर धारिकै । दंड द्वैकमाँह नाकि वेगसों भरतखण्ड, आयो लङ्कखण्डमें कपीश किलकारिकै ॥

सोरठा–गई न आधी रात, आय गयो कपि सैन्यमें ।
लग्यो औषधीवात, वानर उठे अभङ्ग सब
उठे लषण अरु राम, मिले परस्पर हर्षि अति ।
कपि पूर्यो मनकाम, कहहिं कौन हनुमान सम ॥
कीन्हें केहरि नाद, विरुज भिशल्य कपीश सब ।
लहे परम अह्लाद, राम लषण कपिराजहू ॥

दोहा–मारि गयो जब इन्द्रजित, ब्रह्मास्त्रहि कपिसैन ।
जाम्बवंत पठयो जबै, पवनसुवन गिरि लैन ॥
तब रावण भेज्यो भटन, सपदि समरते आइ ।
मृतक निशाचर सिंधुमें, दीन्हें राति डुबाइ ॥
जब लै आयो शैलको, हनूमान दल माहिं ।

जिये बलीमुख गंध लहि, जिये निशाचर नाहिं ॥
यहि विधि सैन्य जियाइकै, सो गिरि को हनुमंत ।
पहुँचायो जहँको तहाँ, आयो बहुरि तुरंत ॥

छन्द तोटक ।

गत राति आधी जानि । कह राम कपिपति आनि ॥
यह दुष्ट माया कीन । कपिसैन्यको दुख दीन ॥
ताते सुमर्कट जाय । पुर देहिं आगि लगाय ॥
सुनि प्रभुनिदेश कपीश । शाखा मृगा अति रीश ॥
लै लूक निज निज हस्त । धाये तुरंत समस्त ॥
लंका चढे चहुँ ओर । करि शोर वानर घोर ॥
घुसि घरन घरनहिं घूमि । ऊँची अटारिन झूमि ॥
दिय अग्नि आशु लगाय । ज्वाला उठी नभ धाय ॥
लागे जरन खल कोटि । मग रहे निशिचर लोटि ॥
पुर मच्यो हाहाकार । नहिं देखि परत उबार ॥
भाजि चले छूटि तुरंग । भागे जरत मातंग ॥
तहँ बह्यो अनिल प्रचण्ड । उठि ज्वाल माल अखंड ॥
धावाति बजार बजार । भे रजनिचर जरि छार ॥
घर रजत कनक अनंत । महि टिघरि टिघरि चुअन्त॥
निशिचरी भागी जाहिं । अधजरी केश लखाहिं ॥
पितु मातु बालक छोडि । शिर ओद अंबर ओडि ।
सब करत हाहाकार । नहिं लखि परत रखवार ॥
जे निकसि बाहर जाहिं । वानर हनत तिन काहिं ।
पुर पर्‍यो कसमस भूरि । भे कूप सरसी झूरि ॥
आभरण वसन अनंत । जरिगये शोभावंत ॥
जे कोट बाहर जात । तिन करत प्रभु शर घात ॥

कोउ परे कूदि समुद्र। बूडे अनेकन क्षुद्र॥
जरि गई सिगरी लंक। लाये कपिन निश्शंक॥
जाग्यो दशानन वीर। लखि नगर जरत अधीर॥

दोहा–गुहरायो को द्वारमें, ठाढो वीर विचित्र।
बोले कुम्भ निकुम्भ दोउ, कुम्भकर्णके पुत्र॥
कहा होत शासन हमैं, करिहैं विनहि विचार।
कह रावण जारत नगर, वानर करहु सँहार॥
धाये कुंभ निकुम्भ दोउ, मारे रिकपिन प्रचारि।
लाय लंक निश्शंक कपि, आयेजहांखरारि॥

छन्द।

उतै निकुंभ कुम्भ द्वै निशुंभ शुंभसे चले।
सुकुंभकर्णपुत्र कुम्भकर्णसे लसैं भले॥
युपाक्षसों निताक्ष त्यों प्रजंघ औ अकंपनै।
अमात्य चारि कुम्भके प्रयात भे रणांगनै॥
चली सुयातुधानकी प्रवेगसों अनीकिनी।
बजे अनेक दुन्दुभी रथानकी सुकिंकिनी॥
बिहान होत वानरान यातुधान युद्ध भो।
निकुम्भ चाप तानि मारि मारि बाण क्रुद्धभो।
इतै बली बलीमुखान सैन्य वीर धाइकै।
हने निशाचरानको सुनामको सुनाइकै॥
कियो महा भयंकरै निशाचरै सुसंगरै।
अनेक यातुधान को विनाश कीन वानरै॥
निहारि यातुधानको दलै परात जंगमें।
अकंपनै हन्यो बलीमुखानको उमंगमें॥
इतै प्रकोपि वालि बाल पाणिमें पहार लै।

हन्यो अकंपनै मरचो गिरचो धराअधार लै॥
प्रचंड शोणिताक्ष आइ अंगदै प्रचारिकै।
हन्यो अनेक बाण तू बचै न यों उचारिकै॥
तुरंत दौरि अंगदौ छडाय लीन चापको।
निकारि खड्ग शोणिताक्ष देत कीशतापको॥
हनै चह्यो सुअंगदै प्रवीर वालि को बली।
मुरेरि पाणिको छडाय लीन तेग ना चली॥
दियो कृपाण कंधमें द्विधा शरीर ह्वैगयो।
प्रजंघ औ युपाक्ष देखि लोहिताक्ष छै भयो॥
चले उभय प्रकोपि वीर वालिपुत्र पै तहाँ।
लरचो दुहूंनसों विचित्र अंगदा सुखी महाँ॥
निहारि यातुधान द्वै अकेल वालि बाल है।
चलयो मयंद बंधु लै उखारि वृक्ष शाल ॥
हन्यो प्रजंघ वालिपुत्र के ललाट मूठि है।
गिरचो विसंग ह्वै उठ्यो तुरंग काश रूठह॥
प्रचारि दौरि कै हन्यो ललाट मूठि जोरसो।
कपाल तासु फूट ज्यों घटै पषाण कोरसो॥
कक्का विनाश देखिकै युपाक्ष दौरि दूरसों।
चलाय बाण अंगदै शरीर कीन पूरसों॥
तहां मयंद भ्रात यूप अक्ष ओर धायकै।
पँवारि शैल शृंङ्ग कीन भंज जान आयकै॥
हन्यो गदा तरक्कि कै युपाक्ष मैंद भ्रातको।
छुडाय कीश सो गदा कियो बहोरि घातको॥
मरचो युपाक्ष भूमिम गिरचो निकारि नैनको।
भगे अनेक यातुधान भीत मानि ऐनको॥

प्रचंड कुम्भकर्ण पुत्र कुम्भ आशु धायकै।
प्रवीर वालिपुत्रको लियो पतत्रि छायकै॥
गिराय दीन बाण मारि सानुजै मयंदको।
चल्यो प्रकोपि वालिपुत्र गौन ज्यों गयंदको।
हजार बाण मारि कुंभ अंगदै निवारतो।
रुक्यो न वालिपुत्र ताहि ताहि कै प्रचारतो॥
नराच पांच भौंह बीच मारि कुंभ देत भो।
सुपाणि नयन ढाँपि कै चल्यो नहीं अचेत भो॥

दोहा-कुम्भ करोरिनि बाण हनि, दिय अंगदहि गिराय।
भागे वानर भीति भरि, कहे सुकंठहि जाय॥
महाराज युवराजको, कियो कुम्भ विनप्रान।
आप चलहु कै भेजिये, हनन हेत हनुमान॥

छन्द चौबोला।

आरत वचन सुनि कीशपति लै संग पवनकिशोर।
धायो निकुंभहि ओर छावत दशहु दिशिमहँ शोर॥
आवत सुकंठहि देखि कुंभ हन्यो हजारन बान।
नहिं रुक्योझिलिताके निकट टोर्योछडायकमान॥
सुग्रीव बोल्यो वीर वाणी कुंभकर्ण किशोर।
तैं कुम्भकर्ण समान अब दिखराउ आपन जोर॥
सुनि कुपित कूद्यो कुंभ रथते गह्यो कपिपति काहिं।
दोउ करन लागे मल्ल युद्ध विरुद्ध शुद्ध तहाँहिं॥
सुग्रीव गहिकै कुम्भ कहँ फेंक्यो तुरंत उठाय।
सो पर्यो क्षुद्र समुद्र महँ सागर तलै लगिजाय॥
कढि कुम्भ सागरते सपदि इक मूठि मार्यो आय।
कछु विकल ह्वै कपिराज पुनि मारी समूठी धाय॥

कपिनाथकी लगि मुष्टि कुंभ गिर्यो मही बिन प्रान।
लागे सराहन कीशराजहि भगे खल भय मान॥
तहँ परिघै परम प्रचण्ड लै धायो निकुंभ प्रवीर।
परिघै भवांवत भ्रमत नभ भे देव मुनि भय भीर॥
आयो प्रभंजननंदके सन्मुख निकुंभहु धाय।
विधिदत्त परम प्रचंड परिघ झरै अँगार निकाय॥
बोल्यो प्रभंजननंद मन्द चलाउ परिघ प्रचंड।
मार्यो परिघ हनुमानके सो टूटि भो शत खंड॥
तिलि भरिन डोल्यो अनिलसुत मार्यो सुमूठी घाय।
सोऊ न कंप्यो वीर तिलभरि पवनसुत ढिग जाय॥
लीन्ह्यों पकरि हनुमानको निज अङ्क बाहु बढाय।
लै चल्यो अति निश्शंक लंकहि सिंहनाद सुनाय॥
हनुमान कूद्यो धरणिमहँ कर मध्य मूठी मारि।
पुनि लपटि कंठ नवाय लीन निकुंभ शिश उखारि॥
भय भरे भागे यातुधान निहारि बल हनुमान।
प्रभुके चरण वन्द्यो पवनसुत विजयमान महान॥
उत जाय खल दशकंठ द्वारे कह्यो समरहि बाल।
शोचन लग्यो रावण दुखित आयो निशाचर काल॥
खरको तनय मकराक्ष बोल्यो नाथ शोचहु नाहिं।
हम जात संगर मारि हैं हठि राम लषणहि काहिं॥
अस कहि चल्यो रथपै सवार अपार लै सँग सैन।
कीन्ह्यों पसर कपिसैन्यपर मनमें कियो कछु भैन॥
मारैं निशाचर बानरनको चले कीश पराय।
मकराक्ष रथहि धवाय बोल्यो रामको नाजिकाय॥
रे राम ठाढो रहु समर नहिं जाय अनत पराय।

होई हमारो द्वंद्वयुद्ध दिखाउ बल नरराय ॥
तब कियो धनु टंकोर भूपकिशोर मृदु मुसक्याय।
दिशि विदिश नभ मकराक्ष रथ दीन्ह्यों शरनसों छाय॥
मारयो तुरंगन सारथी रथ कवच धनु दिय काटि।
मकराक्ष कर लै शूल धायो रामको दृग डाटि॥
सो शूल शंकर शूलसम शंकर प्रदत्त प्रचंड।
मारयो प्रचारि खरारि किय तिंहि बाण हनि त्रय खंड॥
तब बाँधि मूठी कहत धायो ठाढ रहु रघुवीर।
प्रभु विहँसि ताको शीश काट्यो मारि पावक तीर॥
तहँ करत हाहाकार भागे यातुधान अपार।
मर्कट मरदि तिनको फिरे पहुँचाय लंकाद्वार॥

दोहा–सुनि रावण मकराक्ष वध, लाग्यो करन विचार।
पठयो तब घननादको, कहि सुत तुही अधार॥
चल्यो तुरत घननाद तहँ, करिकै पावक होम।
करिहौं महि विन वानरी, बाढी यह मन जोम॥
सरथ सवाजि ससूत शठ, ह्वैगो अन्तरधान।
मारन लाग्यो कुपित बहु, राम लषणको बान॥

छन्द।

करि दियो शठ अँधियार। माया करी बल बार॥
नभते शरनकी धार। धावति धरहि बहुबार॥
भे विकल कीश समूह। लागे करन अति कूह॥
कोपे लषण अरु राम। छोडे शरन बलधाम॥
नहिं लखि परत घननाद। यह भयो परम विषाद॥
तब लषण बोल्यो कोपि। सब राक्षसन वध चोपि॥
ब्रह्मास्त्र छोडहु तात। अब और नाहिं दिखात॥

जेते निशाचर भूमि । ते जरहिं जहँ तहँ घूमि ॥
प्रभु कह्यो करुण अगाध । इक हेत सब कर बाध ॥
नहिं करब तुमको योग । हँसि है सकल जग लोग॥
भागे लरै नहिं जोइ । लुकि रहै रूपहि गोइ ॥
कर जोरि शरणहि होय । तिन हनत नाहिं बुध कोय॥
लंकेश प्रबलकुमार । नहिं बची युद्ध मँझार ॥
पाताल स्वर्गहुँ जाय । मरिहै अवाशि दुख पाय ॥
अस कहि कुपित रघुवीर । लीन्ह्यों अवारन तीर ॥
घननाद निजवध जानि । लंका गयो भय मानि ॥
माया करी अनखाय । सियरूप लीन बनाय ॥
हनुमान सन्मुख जाय । तिहि हन्यो ताहि दिखाय॥
भे शिथिल हनुमत अंग । घटि गई युद्ध उमंग ॥
चलिदियो पवनकुमार । दृग तजत आँसुनधार॥
प्रभुसों निवेदन कीन । भो रामवदन मलीन ॥
गिरिगे मुराछि महिमाहिं । कपि देखि सब बिलखाहिं॥
बोल्यो लषण अनखाय । नहिं होत धर्म सहाय ॥
जो धर्म धराणि उदोत । तौ तुमहिं नहिं दुख होत॥
दोहा–धर्म सत्य होतो जगत, रावण नरकहि जात ।
धर्मधुरंधर आपको, अस दुख होत न तात ॥
राजत्याग वनवास पुनि, नारि हरन संताप ।
तुमहिं योग नाहिं लखि परत, धरा धर्मधर थाप ॥
ताते जाके अर्थ है, सोई जन मतिमान ।
सोई यशी बली विपुल, सोई पुरुष प्रधान ॥
यहि विधि भाषत बहु बचन, लछिमनके तिहिकाल ।

आयगयो लंकेश तहँ, प्रभु लखि भयो विहाल ॥
पूछयो का यह होत अब, कह्यो लषण बिलखात।
अनरथ कीन्ह्यों इन्द्राजित, कही पवनसुत बात ॥
कह्यो विभीषण यह मृषा, भाष्यो पवनकुमार।
अस दशमुख करिहै नहीं, जानौ भेद हमार ॥
पै अवध्य अब होत हठि महाबला घननाद।
करतो यज्ञ निकुंभिला, मानें हारि विषाद ॥
यज्ञ समापतिके भये, अजर अमर ह्वै वीर।
करी कपिनसंहार सब, सुनहु लषण रघुवीर ॥
पठवहु लछिमन आशुहीं अंगद हनुमत संग।
मैं सब भेद बताइहौं, जिमि होई मखभंग ॥
सुनत विभीषणके वचन, उठे राम अतुराय।
बोले लछिमनसों हरषि, सब दुख गयो पराय ॥
जाहु सखा लै लषण को, मर्कट कटक लिवाय।
हनुमत अंगद ऋक्षपति, वीरन वेगि बुलाय ॥

कवित्त।

रामको निदेश सुनि इन्द्रजीत युद्धहेत, नैन अरविंद नेकु ह्वै गे अरुणारे हैं। फरके प्रचंड दोर्दंड जे अखंड ओज, सायकको दंडको घमंडसों निहारे हैं ॥ उमँग्यो अनंत उत्साह उर आहवको, लौट वन आज बिन इन्द्राजित मारे हैं। रघुराज आज चढ्यो चौगुनो चलत चाउ, रामानुज अंग मनो बखतर फारे हैं ॥ मुख मुसक्याय गुन धनुष चढाय कसि, कंधमें निषंग करवाल कटि धारे। हैं वामपाणिमें कमान दाहिनेमें लीन्हें बान, पाहिरि सनाह माथ मुकुट सुधारे हैं ॥ उदैमान पूरण सुशारद शशिसों मुख, मंडल अखं-

डल प्रकाशको पसारे हैं । रघुराज उठिकै उदग्रपद अग्रजके,
वंदिकै लषण अस वचन उचारे हैं ॥ जोहि है जगत मेघनादको
हमारो युद्ध, एकही रहैगो पाय विश्वमें बडाई है । रघुराज रावरो
प्रताप रखवारो मोर, तातै कहौं आज मैं समाजमें सुनाई है ॥
इन्द्र यम वरुण कुबेर करतारहूं जो, करैं घननादकी सहाइ सैन्य
ल्याई है । त्र्यंबक त्रिशूल धारे त्राण काज आवैं आजु, बाचिहै
न वैरी राम रावरी दुहाई है ॥

दोहा–मेघनाद मारे विना, जो इत आऊं आज ।
तौ पुनि नहिं कर धनु धरौं, करौं शपथ रघुराज ॥

छन्द चौबोला ।

अस कहि लषण प्रभुचरण वंद्यो चल्यो तमकि तुरंत ।
हनुमत विभीषण अंगदादिक चले कपि बलवंत ॥
तहँ लख्यो लषण निकुंभिला ठाढी निशाचर सैन ।
मनु श्याम मेघ घटा घनी मनु मीचकी है ऐन ॥
तब कह्यो लछिमनसों बिभीषण हनुमदादिक वीर ।
मर्कट कटक लै विकट कपि धावैं चटक रणधीर ॥
ते जाइ सन्मुख सैन्यपर जहँ, खडो निशिचर यूह ।
यह यूथ फोरहिं प्रविशि दल करिकै भयानक कूह ॥
वानर विलोकत त्यागि मख ऐहै निकासि घननाद ।
तब तुमहिं हम लै चलहिंगे सहजै सहित अह्लाद ॥
तब दियो शासन लषण पवनकुमारको अतुराय ।
काजै न शर सन्मुख समर लै कपिनकी समुदाय ॥
धायो प्रभंजनपूत अंगद सहित खलदल ओर ।
मारयो निशाचर वृन्द फोरयो गोल कपि वरजोर ॥
घुसि गये वानर यज्ञशाला किये मख विध्वंस ।

नहिं सहि गयो अपचार धायो हंस राक्षसवंश ॥
भागे बलीमुख देखि वासवजीत आवत क्रुद्ध ।
धायो प्रभंजननंद तासों करन युद्ध विशुद्ध ॥
तब रावणी निजसारथीसों कह्यो वचन त्वराय ।
यह वीर वानर ओर अब लै चलहु रथहिं धवाय ॥
अस कहत सारथिसों हनत शर गयो जहँ हनुमान ।
इत लषण लै धाये विभीषण लेन ताको थान ॥
वटवृक्ष अंत निकुंभिला देवी भयंकर रूप ।
लषणहिं दिखायो तहँ विभीषण तासु यज्ञहि जूप ॥
बोल्यो लषण सों लंकपति मम बन्धु पुत्र प्रधान ।
यहि थानते युत यानते खल होत अन्तर्धान ॥
अब लेन पावै थान नहिं अस करहु राजकुमार ।
जो थान पाइ बहुरि शठ रण करी कपिसंहार ॥
हँसि कह्यो रामानुज बहुरि शठसकत इत नहिं आय ।
ठाढे हमीं वट पीठ दै नहिं टरब ध्रू टरि जाय ॥
उत मारि बाणन पवन सुतको इन्द्रजित लिय छाय ।
अगणित नुकीले शरन ते कपि भयो वेधित काय ॥
बोल्यो विभीषण बिलखि तब का लखहु राजकुमार ।
घननाद चाहत करन अब हनुमानको संहार ॥
तब लषण धनु टंकोर करि मारे अनंतन बान ।
लंकेशसुत पाछे चितै लखि लषण वीर प्रधान ॥
वटवृक्षकेतल जानि लषणहिं तासु मुख कुम्हिलान ।
जहँ ते रह्यो शठ होत मारन कपिन अंतर्धान ॥
सो लियो रामानुज बली थल जीति सकत न आय ।
लखिक विभीषणको तहाँ कह इन्द्रजित बिलखाय ॥

रे कुलकलंकी निर्दयी नहिं लगत तोकहँ लाज।
ल्याये लिवाय बताय भेदहि कियो अनुचित काज॥
बोल्यो विभीषण रामविमुखी सुखी को जग होय।
तुव पिताके अपराधते अब रही कुल नहिं कोय॥
मैं ताकि लीन्ह्यों रामशरन विचारि पापी भ्रात।
जो राम जन सो मोर भ्रातहु तात मातहु नात॥
इतना कहत लंकेशके तहँ धाय पवनकिशोर।
मार्यो महा गिरि ताहि भाषत काल आयो तोर॥
दोहा–दल्यो शरनसों तौन गिरि, सहजहि रावणनन्द।
लियो छाइ हनुमानको, मारि मारि शरवृन्द॥
बाणजालको फारिकै, कढि केसरी किशोर।
कह्यो वचन अति कोपि रे, मंदोदरी किशोर॥
बलको होय घमंड तुहिं, बाहुयुद्ध करु आय।
देख हमारो बाहु बल, यमपुर देत पठाय॥
इंद्रजीत बोल्यो हरषि, रे कपि बोलु सँभारि।
बाहुयुद्ध नहिं करत कहुँ, राजकुमार प्रचारि॥
हम न मल्ल नहिं मल्लयुध, सीखे बालहि काल।
विश्वविदित धनुधर अहौं, सकल कपिनको काल॥
तबहिं लषण हनुमानको, लीन्ह्यों निकट बुलाय।
रामानुजको पवनसुत, लीन्ह्या कन्ध चढाय॥

छन्द हरिगीतिका।

धायो प्रभञ्जननंद लीन्हें कन्ध लक्षनलाल।
उतते सरुष दशमुख सुवन आयो महा विकराल॥
तब इंद्रजित बोल्यो वचन रहु सावधान प्रवीर।
बोल्यो लषण विन बल दिखाये तोर बातैं जीर॥

अस कहि हन्यो सौमित्र पंच नराच ताहि कराल ।
ते बाण तनु घननाद के ह्वै गये आशु दुशाल ॥
घननाद लै पुनि तीर शर मार्‍यो लषण तनु माहिं ।
ते वेधि बख्तर बिधै तनुपै पीर कीन्हें नाहिं ॥
दोउ विश्व विदित प्रवीर चोखे दोउ महा रणधीर ।
दोउ परम दुर्जय दुराधर्ष सहर्ष वर्षत तीर ॥
दोउ तेज तुल्य घमड तुल्य उदंड तुल्य अशोक ।
दोउ लरत वासववृत्रसम जनु करत लोक अलोक ॥
दोउ भरे समर उमंग दोऊ चहत जीतन जंग ।
दोउ तजत भरभर शरनिकर नहिं शिथिल दोउ करअंग ॥
तहँ लषण कीन्हीं लाघवी कछु तजी सायकधार ।
करि घोर धनु टंकोर दश दिशि भर्‍यो शोर अपार ॥
कछु भयो विवरणवदन दशमुखसुवनको तिहि काल ।
बोल्यो विभीषण लषण याको आयगो अब काल ॥
अगणित शरण मार्‍यो लषण भो इन्द्रजीत विहाल ।
उठिकै मुहूरत एकमहँ बोल्यो वचन ततकाल ॥
रे राजसुत तुहि सुरति विसरी नागपाशहि केरि ।
जो लख्यो मम बल प्रथम रण सो लखहु आजहु फेरि ॥
अस कहि हन्यो शर सत त्यों हनुमानको दश बान ।
अपने ककाको हन्यो शत शर द्विगुण क्रोध अमान ।
बोल्यो लषण सायक तिहारे करत नेकु न पीर ।
करि जोर मारहु इन्द्रजित नहिं होहु समर अधीर ॥
तब हन्यो लछिमनको सहस शर इन्द्रजीत प्रचारि ।
काटि पर्‍यो बख्तर लषणको माची समर झनकारि ॥

तब हन्यो बाण हजार रामानुजहु वीर विशाल ।
काटि परचो बख्तर इन्द्रजितको मनहुँ तारण जाल ॥
दोउ हनहिं दोहुँनको परस्पर रुधिर बूडे अंग ।
निधूम पावक सरिस सोहत बढे युद्ध उमंग ॥
दोउ विधे सायक सकल तनु नाहिं रह्यो तिल भरि ठोर ।
दोउ बाण छाये गगनमहँ अँधियार भो चहुँ ओर ॥
दोउ छिपत प्रगटत बाण धारन श्रम शरीर न होत ।
जहँ जात बासवजित चढयो रथ तजत विशिख अकोत
लै जात लछिमन पवनसुत तहँ बाणवृन्द बचाय ।
दोउ तजत बहु दिव्यास्त्र रणमहँ निपुणता दरशाय ॥
देखत विमानन चढे सुरवर द्वंद्वयुद्ध कराल ।
उत राक्षसेंद्रकुमारइत सौमित्रवीर विशाल ॥
सागर पहारन दिशि विदिशि आकाश छाये बान ।
उत खडे राक्षस अचलइव इत खडे कीश समान ॥
दोउ सैन्य देखत समर कौतुक लिखित चित्र अकार ।
नहिं देखि परत प्रवीर दोउ करि समर शर अँधियार ॥
रावण अनुज तहँ लग्यो मारन राक्षसान अपार ।
शाखामृगन बोल्यो वचन निशिचर करहु संहार ॥
गे मारि रण भट कुम्भकर्णादिक अनेकन वीर ।
अब रह्यो एकहि बाचि यह मारहु सबै कपिधीर ॥

दोहा–सुनत विभीषणके वचन, धाये वानर ऋक्ष ।
मारन लगे निशाचरन, मेघनाद परतक्ष ॥
जाम्बवान लै विटप कर, हन्यो निशाचर वृन्द ।
गिरे परे डगरे भिरे, लरे करे बहु फन्द ॥

छंद चौबोला।

तहँ ऋक्षराज उखारि वृक्षन लक्ष ऋक्षन संग।
माऱ्यो अनेकन राक्षसान कियो ततक्षण जंग॥
नहिं भागि बाचत निरखि राक्षस लौटि लपटे आय।
तिहि देखि पवनकुमार लषणहिं भूमिमहँ बैठाय॥
धायो महीधर लै प्रचारत ऋक्षपति ढिग जाय।
करिकै कदन निशिचरणको दीन्ह्यों सुराशि लगाय॥
उत देखि लछिमन भूमि ठाढे तजि विभीषण काहिं।
आतकाप धायो इन्द्राजित अस कहत बचतो नाहिं॥
दोउ करन लागे युद्ध उद्धत हनि परस्पर बान।
शरजाल दोऊ दुरत दीसत यथा पावस भान॥
खचत गहत संधत धनुष कर्षत तजत तुकि तीर।
मण्डल करत कोदण्ड दोऊ लखिपरत नाहिं वीर॥
दोउ निरखि परत अलात चक्रसमान ज्वलित कृशान।
जनु चारि ओरहु अनलकन झरझर झरस झहरान॥
अवनी अकाशहु दिशन विदिशन रहे सायक छाय।
दोउ लरत कहुँ जुरिजात कहुँ बिलगात रोष बढाय॥
दोउ दुहुँनको नाहिं देखिपरत सु होत विभ्रम भूरि।
झारत शरन अति वेगसों कहुँ निकट है कहुँ दूरि॥
भरिगे निरंतर शर भयो अवकाश रहित अकाश।
सागर भयो शर संकुलित मुद्रित भई दश आश॥
मनु गये अस्ताचल दिवसपति भई भादों राति।
निशिचर कपिन शोणित सरित बहती अमित घहराति॥
किलकत भयंकर भूत चहुँकित करत शोणित पान।
नाहिं वात बहत न ज्वलत पावक देवऋषि अकुलान॥

मुनि लोक स्वास्ति सशोक भाषत प्रलय मानो होति।
नभते गिरत गिरवान अगन विमान छावत ज्योति॥
तिहि काल तजि शर चारि वेध्यो लषण तासु तुरंग।
ताजि भल्ल एक प्रबल्ल काट्यो सूताशिर माधि जंग॥
घननाद अति अविषाद पगसों गह्यो वाजिन बाग।
चालत तुरंगन शरन घालत कपिन अचरज लाग॥
तब लषण मारि पतत्रि अगणित लियो रिपु कहँ छाय।
तहँ लषणको लागे प्रशंसन कीश आनँद पाय॥
तहँ गंधमादन शरभ रभस प्रमाथि चारिहु रीसि।
कूदे तुरंगन उपर डारे अंग अंगनि पीसि॥
हत वाजि सारथि निहत लखि घननाद कूदि तुरंत।
धायो लषण पर बाण वर्षत वेगसों बर्षंत॥
तहँ भो बरोबर युद्ध दोऊ क्रुद्ध वीरन केर।
नहिं तजत निज निजनाथको कपि रजनिचर करि घेर॥
तब कह्यो रावणपूत सिगरे यातुधान बुलाय।
मैं करहुँ अब अँधियार सायक गगन महिमहँ छाय॥
जबलों गगनते गिरहि शर जबलों न होइ प्रकाश।
तबलों न भाग्यो वीर कोउ नहिं तज्यो समर हुलास॥
अस कहि सुराधिपजित धुन्यो शर कियो तम चहुँ ओर।
अतिलाघवी करि गयो लंक निशंक तजि रणठोर॥
चढि चारु रथ लै सुमति सारथि सैन्य संग लिवाय।
हय नाधि वर आयो समर कहुको पर्यो न जनाय॥
शर झरे भास भये लखे सब ताहि यान सवार।
लछिमन विभीषण पवनसुत संसन लगे बहु वार॥

दोहा–मेघनाद कोदण्ड तहँ, भयो मण्डलाकार।
महा लाघवी कारि प्रबल, कियो कपिन संहार॥
ताहूते कारि लाघवी, रामानुज रणधीर।
तासु चाप काट्यो चटक, दियो बंद करि तीर॥
धनुष दूसरो कर करत, सो काट्यो करमाहिं।
लषण पाँच सायक हन्यो, ताकि तासु उर काहिं॥
कवच फोरि तनु फोरिकै, धसे भूमिमहँ बान।
विकल भयो शोणित वमत, इन्द्रजीत बलवान॥
सम्हरिसाजि धनु शीघ्र अति, लाखन बाणचलाय।
लियो लषण कहँ तोपि तहँ, मघाझरीसी लाय॥
लषण काटि सिगरे शरन, तोपि ताहि शरवृन्द।
त्रय त्रय शर रचनीचरन, मार्‍यो दशरथनंद॥
मेघनाद रामानुजहि बारहिबार बखान॥
मार्‍यो भर भर शर निकर, प्रखर शरासन तान।

छन्द भुजंगप्रयात।

असंभ्रांत रामानुजो छोडि बाणा। कियो सारथीको तुरंतै अप्राणा॥
बिना सारथीके भये ते तुरंगा। करै मंडलै पंथ ले विद्ध अंगा॥
हनै लक्षनै ताकि तीखे तुरंगै। चलै एक संगै रुकै नाहिं जंगै॥
लभे पायकै सो सुमित्रा कुमारा। अभेदै सनाहै तनैं माहिं धारा॥
गडे नाहिं लागै शरै ते सनाहै। तहाँ रावणी बाण तीनै प्रवाहै॥
लगो लक्षनैके पतत्री ललाटे। लसे शृङ्ग ज्योतीन शैलै सबाटे॥
तहाँ वीर रामानुजौ वेग भारी। दियो पाँच बाणै मुखै तासु मारी॥
दुराधर्ष हर्षौ दोऊ युद्ध ठाने। लखै राक्षसौ वानरौ ते चकाने॥
फाटे देह दोहूनके रक्त बुल्ले। मनौ शाल्मली किंशुकै वृक्षफुल्ले॥
हतै राम भ्राता उतै इन्द्रजीतै। चहै वीर दोहूँनको दोउ जीतै॥

कियो लाघवी रावणैको कुमारा। यकै एक बाणै सबै शीश मारा॥
तहाँ यातुधानेशके भ्रात काहीं। हन्यो तीन बाणै मुखै शंकनाहीं॥
तबै लंक रामानुजैकोपि धायो। गदा मारि वाजीन भूमै गिरायो॥
द्रुतै इन्द्रजीतौ हत्यो शूल ताहीं। कियो खंड द्वै लक्ष्णैंलागिनाहीं॥
तज्यौ पंच नाराच लंकेशभ्राता। कियो रावणी अंगमें पंचघाता॥
कक्कापै महाकोपि सो इन्द्रजीता।दियो अंतकै जो शरै शत्रुजीता॥
कह्यो तू मरयो रे तज्यो बाणसोई। सखानाशत्योंलक्षणोलीनजोई॥
दियो स्वप्नमें बाण जो वित्तनाथा। लियो राम भ्रातासुईबाणहाथा॥
दुराधर्ष दुजैं तज्यो तानि काना। लरे बाण दोऊ गये आसमाना॥
गिरे खाक ह्वै भूमिमें बाण आई। रहे वीर दोऊ समानै लजाई॥
तहाँ वारुणास्त्रैतज्योरामभ्राता।चल्योकालसोंतीनलोकैविख्याता॥
तज्यो रौद्र अस्त्रै महेन्द्र प्रमाथी। दल्यो वारुणास्त्रै यथासिंहहाथी॥
महापावकास्त्रै तज्यो मेघनादा। बढीज्वालमालाकियोसोविषादा॥
इतै भस्करास्त्रै तज्यो रामभ्राता। भयो भासभारीदिशानैअघाता॥

दोहा—उभय शस्त्र लरि गगनमें, कारि प्रकाश चहुँ ओर।
गिरे दग्ध ह्वै धरणिमहँ, रहे बरोबर जोर॥
इन्द्रजीत असुरास्त्र तब, तज्यो लषणकी ओर॥
कढे ज्वाल मुद्गर खड्ग, तोमर पाशहु घोर॥
शूल भुशुण्डी असि गदा, कुंतल मुशल कुठार।
परे वानरी सैन्यमें, लगे करन संहार॥
लछिमन पाशुपतास्त्र तब, तजो भयंकर रूप।
भयो नाश असुरास्त्रको, कियो प्रकाश अनूप॥
जरन लगे सुरगण सकल, कीन्हें हाहाकार।
जानि व्यथा बाड़ि विश्वकी, लषण कीन संहार॥
पितरदेव गंधर्व मुनि, कारि आगे सुरनाथ।
लषण निकट ठाढे भये, सकल कपिनके साथ॥

कवित्त।

प्रबल प्रचंड पुनि लीन्ह्यों बाण रामानुज, दुराधर्ष दुसह दुरासद
ईशको। कै दियोप्रयोग त्यों महेन्द्र अस्त्र मंत्र पढि, बोल्यो वैन कै
भरोस राम जगदीशको ॥ सत्यसंध धरम धुरंधर जो रघुराज,
विक्रम अखंड होय जो पै जानकीशको। बाण तौ हमारो यहि
वारको पवारो काटि, डारै बिन बारै अब मेघनाद शीशको ॥

दोहा–अस कहि छोड्यो लषण शर, लग्यो कण्ठ महँ जाय।
इन्द्रजीतके शीश को, दीन्ह्यों काटि गिराय ॥

चौपाई।

लषण रहे छोडत बहु बाना। रँगे वीर रँग मरब न जाना ॥
कुंडल कीट सहित शिर ताको। कियो प्रकाशितअतिबसुधाको॥
चढे विमानन देव अपारा। एकहि बार किये जयकारा ॥
मर्कटहू रिपुनिधन विलोकी। जय जय लषण कहे बिन शोकी॥
जान्यो लषण मरचो रिपु मोरा। कीन्ह्यों विजय धनुष टंकोरा ॥
भगे निशाचर चारिहु कोरा। डारि डारि आयुध तिहि ओरा॥
घुसे जाय कोउ भय करि लंका। कोऊ बूडे उदधि सशंका ॥
लुके निशाचर शैलन माहीं। परे देखि फर पर पुनि नाहीं ॥
भये अस्त जिमि जग दिनराजू। रहति किराणि नहिं कतहुँ दराजू ॥
तिमि विलोकिघननाद विनाशा। तजे तमीचर जीवन आशा ॥
सुनासीर नभ दियो नगारा। लषण आजु सुर कंटक टारा ॥
बह्यो सुगंधित सीर समीरा। मिटी लोकपति लोकन पीरा ॥

दोहा–विमल भानुसित भानु भे, भई भूमि बिन भार।
गो ब्राह्मण कंटक टरचो, माच्यो जय जयकार ॥

चौपाई।

सुख रांचे कपि नाचन लागे। पूछ उठाये लषण के आगे।

शर जर्जरित शिथिल सब अंगा। रामानुज जय रंग अभंगा ॥
विजयी लषण महासुख पाई। चले जहाँ कपिपति रघुराई।
हनुमत और विभीषण काहीं। गहे कंध गमनत मग माहीं ॥
मंद मंद चलि सैन्य समेतू। आये जहां भानुकुलकेतू ॥
गह्यो लषण प्रभुपद अरविंदा। लिय लगाय उर रघुकुल चंदा ॥
मिलत प्रभुहि मिटिगे शरघाता। भयोदुगुनबलविमलविख्याता ॥
कियो प्रदक्षिण लषण रामको। बोल्यो वचन सुनाय नामको ॥
मैं लछिमन लघु दास तुम्हारा। तुव प्रताप सब काज सुधारा ॥
समर हाल लंकेश उचारा। जिहिविधि लषण इन्द्रजित मारा॥
रघुपति लषण अंक बैठाई। बोले वचन नयन जल छाई॥
रह्यो बन्धु जो तोहिं समाना। सहजै सकल कलेश सिराना॥

दोहा–तेरे भुजबल लषण मैं, निर्भय त्रिभुवन माहिं।
तरचों सिंधु गोपद सरिस, मुहिं शंका कछु नाहिं॥
अस कहि सूँघ्यो शीश पुनि,आशिषदियोअनन्त।
जियहु अनन्त अनंत युग, तुमसमनाहिं अनन्त ॥
तीन दिवस अरु तीन निशि, कियो युद्धघननाद ।
मारि ताहि आये सुखी, मोहिं यही अहलाद ॥
राम सुषेण बुलाय कै, कह्यो वचन सतकारि।
हनुमत अंगद आदिकन, करहु विशल्य जितारि ॥
लषणहुँ कहँ बिन व्रण करहु, औषध दै सुखदानि ।
तुम धन्वंतरिके सरिस, दिव्य औषधी ज्ञानि ॥
सुनि सुषेण रघुपति वचन, औषधिआशुहि ल्याय।
सो विशल्य करनी सुखद, औषधि दियो सुँघाय ॥
शस्त्रघात मिटिगे तुरत, जस की तस भै देह।
दुगुन पराक्रम दुगुन बल, भयो दुगुन तनु तेह ॥

हनुमत अंगद नील नल, और विभीषण कांहि ।
आघ्रान करवाय कै, कीन्ह्यों निरुज तहांहि ॥
जब औषधि गिरि पवनसुत, ल्यावत भो अधराति ।
तब सुषेण सब औषधी, धरि राखी बहु भांति ॥

छन्द चौबोला ।

भये विशल्य विरुज वानर सब ओज तेज बलभारी ।
बारहिं बार सराहत लषणहिं अजय शत्रु संहारी ॥
कोउ मन्त्रीसुनि इन्द्रजीत बध रावणसभा सिधारी ।
दियो सुनाय निशाचर राजहि गयो आप सुत मारी ॥
सुनि रावण ह्वै गयो विमूर्च्छित तनुकी सुरति विसारी ।
पुनि उठि आँसुन धार बहत दृग बोल्यो गिरा पुकारी ॥
मारुत बहहु आजु अपने मन सूरज तपहु सुखारे ।
इन्द्र वरुण कुबेर यम सुरगण सोवहु पाउँ पसारे ॥
अब का जिये जगतमहँ सुत बिन लगति देह मम भारा ।
हमहीं चलब समर सन्मुख अब देहु दिवाय नगारा ॥
अस कहि अतिहि कोपि सीता पर मारन कारन धायो ।
माल्यवान सोइ जठर निशाचर तिहि बुझाय सुरकायो ॥
एकादशि द्वादशी त्रयोदशि कियो इन्द्रजित युद्धा ।
आज चतुर्दशि चैत कृष्ण की होहु शत्रु पर क्रुद्धा ॥
जौन कोप सीतापर कीजै तौन कोप करि रामै ।
पैठ मूल बल सैन्य हजूरी करहु विजय संग्रामै ॥
माल्यवानको नाम सुपारसु रह्यो अविंध्य कहावत ।
तासु वचन सुनि कुपित दशानन भन्यो मूँछफरकावत ॥
ल्याउ मूल बल बोलि हमारो सोई सैन्य हजूरी ।
परचर दौरि बोलि ल्याये द्रुत सैन्य भयंकर भूरी ॥

दीन्ह्यों तब निदेश दशकन्धर जाहु सबै इत साथै।
नहिं मारयो कपीन विचारे गहि ल्यावहु रघुनाथै॥
सुनत मूलबलचल्यो महादल भट रथ तुरँग मतंगा।
महाबली धाये रजनीचर चारु चमू चतुरंगा॥
उडी धूर पथ पूरि रही नभ भयो भयावन शोरा।
कपिधुजिनीमहँ धसे धाय खल खल भल भयो न थोरा॥
क्रुद्ध कीश भे शुद्ध युद्ध कहँ कियो रुद्ध भट उद्धै।
अति विरुद्ध करते निरुद्ध कपि रण त्रिशुद्ध लघु बुद्धै॥
बलीमुखन कहँ बली निशाचर दीन्हें मारि हटाई।
राम शरनको ताकि वचन हित मर्कट चले पराई॥
विचलत लखि वानरी वाहिनी वीर शिरोमणि रामा।
कह्यो लषण कपिपति हनुमतसों लखहु सबै संग्रामा॥
हौं अकेल दल यातुधानके धसत धनुष कर धारी।
मति कोई आवहु सँग मेरे रुचि ऐसही हमारी॥
अस कहि कौसलपाल कराल कोदंड चण्ड टंकोरा।
धँस्यो निशाचर सैन्य अकेले दशरथभूप किशोरा॥
करि लाघव राघव झारयो शर चाप मंडलाकारा।
मनु घन मंडल महँ रवि मंडल झारत झुंड अगारा॥
झरत बाण दीसत चहुँकिततें लखि न परत रघुवीरा।
गिरत परत उठि भ्रमत भजत भट लटपट भटकत वीरा।
हटकत लटकत चटकत मटकत नटखट करहिं अनेका।
झटपट गिरहिं उठहिं भट चटपट अटपट भयोविवेका।
चट चट टूटत पट्ट पाश बहु फट फट फूटत मुण्डा॥
घट घट महँ सटपटी अँटी तहँ काटि काटि धावहिं रुण्डा।
शोणित तटनी तट घट घट महँ योगिनि नटनी नाँचैं।

घट घट करहिं पान शोणितको हटि हटि रटि रटि राँचैं ॥
विकट भूत भट निकट चटक चालि कटकट दन्त बजावैं।
मर्घट इव खटकत सबके घट लखि मर्कट सुख पावैं ॥

दोहा–पुनि छोंड्यो प्रभु समर महँ, मोहनास्त्र शर घोर ।
सकल यामिनीचरनको, भयो भामिनी भोर ॥

छन्द चौबोला ।

यक एकन को पकरत तिय गुणि यक एकन पर कोपै ।
यक एकन पर लोथिन तोपत शिर काटै हनि धोपै ॥
यक एकन कहँ जानत रामै हनैं तेग ललकारी ।
कोटिन राम रूपको देखहिं भ्रम वश निशि संचारी ॥
यह आयो यह आयो मारो मारो धरो धरो रे ।
करो करो बल लरो लरो भल हरौ प्राण न टरो रे ॥
दिशिमहँ राम विदिशमहँ रामहिं भू अकाशमहँ राम ।
जहँ देखैं तहँ राम रूप शठ करैं कौन संग्राम ॥
रामचक्र लखि पर्‍यो जगत सब झरैं बाण चहुँ ओरा ।
आपुस महँ लरि लरि सब मरिगे रजनीचर बरजोरा ॥
लखे हजारन रूप रामके कालचक्र सम धावत ।
कार्मुककनक मंडलाकारहि चारि ओर चमकावत ॥
महिते नभते सकल दिशिनते भरभर शर निकराहीं।
पैनिशिचरतहँसकलपरस्परकटिकटि गिरिगिरि जाहीं ॥
यहि विधि मारि मूल बल रघुवर ठाढो समर अकेला ।
मनहुँ मत्त मातंग वृन्द दलि राजत सिंहनवेला ॥
महारथी दश सहस निशाचर मारुत जव रथ रोहा ।
अष्टादश हजार गजवाहन सपन्यो जिनहिं न छोहा ॥
चौदह सहस तुरंग सँवारे महाबली अनियारे ।

पैदर वीर बली द्वै लाखहि निशिच नाथ प्रचारे ॥
आये काम राम संग्रामहि धूम धाम अति कीन्हें ।
चारि दंडमहँ रघुकुलनायक सब कर वध करि दीन्हें ॥
रथ तुरंग मातंग संग ते परे रहे रणभूमी ।
देखनवारे खबरि कहे भाजि चरन करन मुख चूमी ॥
देव प्रमोदित चढे विमानन फूलनकी झरिलाये ॥
जय रघुनन्दन वीर शिरोमणि गावहिं बाज बजाये ।
जहाँ लषण सुग्रीव विभीषण अंगद अरु हनुमाना ।
प्रभुविजयी सहजहिं पशु धारे भयो न नेकु गुमाना ॥
वंदि वंदि पद रघुनन्दनके कपिगण करहिं प्रशंसा ।
जय जय अप्रमेय प्रभु भुज बल हंस वंश अवतंसा ॥
ऋक्षराज कपिराजहि अंगद लंकेशहि प्रभु भाखे ॥
मोहनास्त्र यह की शंकर कर की हमहीं कर राखे ।
कहे जोरि कर सकल वीरवर तुम सर्वज्ञ सुजाना ॥
तुमहिं न बहुत निशाचर गंजन को करि सकै बखाना ॥
हल्ला परचो सुलंक महल्ला रोवहिं निशिचर नारी ।
हा पितु हा सुत हाय बंधु कहि देहिं रावणहिं गारी ॥
दै नारी रावणको गारी बोलहिं वचन पुकारी ।
निशिचरकुलक्षयकारणजानहुँ शूर्पणखा व्याभिचारी ॥
यहि विधि करहिं विलाप अनेकन जुरिजुरि रावणद्वारे ।
सुनि दशकंधर क्रोध शोक वश ऐसे वचन उचारे ॥
समर हेत हमहीं जैहैं अब देहु बजाय नगारे ।
जे कछु बचे होइँ रजनीचर ते सँग चलैं हमारे ॥
आजु बांधि बाणन बंदरदल उऋण होउँ सब काहीं ।
जे हतिगे कपि कर तिनकी जग वीर बडाई नाहीं ॥

दशमुख शासन सुनत निशाचर सजे समरहित शूरा ।
बीस लक्ष रथ तीस लक्ष गज पैदर पुहुमी पूरा ॥
साठि करोर तुरंग सँवारे सेनापति भट चारी ।
चली निशाचरकी अनीकिनी परी दिशन अँधियारी॥

दोहा-बजे जुझाऊ बाजने, रही धूरि नभ पूरि ।
चलत कटक कंपति धरणि, भे पषाण रज चूरि ॥

छन्द चौबोला ।

दशमुख लख्यो बानरी सैना पारावार समाना ।
धस्यो धुनत शर पैन अपारन अति उत्पात दिखाना ॥
भये मंद तहँ भानु विदिश दिशि अंधकार अति छायो ।
बोले सकल विहंग दीन सुर भूमि कंप दरशायो ॥
वर्षन लागे रुधिर बलाहक बैठ्यो गीध ध्वजामें ।
गिरहिं तुरंग संग सब सम थल शब्द भयो वसुधामें ॥
उल्का गिरि तासु स्यंदन पर फिकरन लगे सियारा ।
अशकुन भयो न कछु मनमें शठ सन्मुख समरसिधारा॥
मारन लाग्यो महा करालन बाणन सो दशभाला ।
दशमुख सन्मुख समर प्रखर शर सहै को वीर विशाला॥
बिन शिर बिनभुज बिन पद मर्कट होन लगे तिहिकाला ।
चली बलीमुखसैन्यविचलिजिमि निरखिसिंहगजमाला॥
आयो रावण प्रभुके सन्मुख तहँ तुरंत कपिराजा ।
धायो महा शालको तरु लै संयुत कपिन समाजा ॥
मार्‍यो अमित राक्षसन रोषित विरूपाक्ष तहँ धायो ।
अरु दुर्धर्ष चढ्यो इक सिंधुर कपिपतिके ढिग आयो॥
विरूपाक्ष दुर्धर्ष वीर दोउ एकहि नाग सवारा ।

मारि शरन छाये कपिराजहि जिमि घनगिरि जलधारा॥
हन्यो दौरि सुग्रीव महातरु गिर्‍यो भूमि गजराजा।
लै करवाल ढाल कूदे तहँ निशिचर वीर दराजा॥
विरूपाक्ष मार्‍यो सुग्रीवहि खड्ग शीश महँ धाई।
ह्वै विसंग कपि गिर्‍यो भूमि महँ नेसुक मुर्च्छा आई॥
पुनि उठि दौरि हन्यो मूठी उर विरूपाक्ष तहँ डाटी।
मारि कृपाण कंध कपिपतिके कनक कवच दिय काटी॥
तल प्रहार कीन्ह्यों कपिनायक गयो सो वीर बचाई।
कपिराजहु करि बहुरि लाघवी निशिचर निकटसिधाई॥
मार्‍यो थापर तासु ललाटै फाट्यो तासु कपाला।
विरूपाक्ष मरि गिर्‍यो भूमि महँ निकसे नयन विशाला॥
विरूपाक्षके गिरत समर महँ उभय सैन्य इक संगा।
हर्षित शोकित चली चहूंकित जिमि बरधित जलगंगा॥
विरूपाक्षको मृतक विलोकत रह्यो महोदर दूजो।
बोल्यो ताहि दशानन धावहु यही समय हित पूजो॥
धायो बली महोदर सन्मुख कियो कपिन दल भंगा।
तहँ कोपित कपिनायक आयो भरो वीररस रंगा॥
हनी शिला यक ताहि महोदर काट्यो बाण चलाई।
मार्‍यो वृक्ष ताहि पुनि काट्यो लियो परिघ कपिराई॥
मारि परिघ तोर्‍यो स्यंदन तिहि कीन्ह्यों तुरँग निपाता।
साल गदा हन्यो कपिपतिको राक्षस वीर विख्याता॥
परिघ गदा टूटे दोहुँनके लपटि गये दोउ वीरा।
मल्ल युद्ध तहँ करन लगे दोउ कपि राक्षस रणधीरा॥
झपटि महोदर लियो खड्ग यक हन्यो कीशपति काहीं।
लियो छड़ाय कृपाण कीशपति मार्‍यो हुमकि तहाँहीं॥

कढ्यो तासु शिर गिरयो महोदर भगी निशाचर सैना ।
दूजो महापार्श्व तहँ धायो लगी ताहि कछु भैना ॥
अंगद चमू व्यथित करि दीन्ह्यों मारि हजारन बाना ।
अंगद धाय उठाय परिघ यक हन्यो शीश बलवाना ॥
रथते गिरयो भूमि मूर्च्छित ह्वै ऋक्षराज तब धाई ।
मारि वृक्ष ताको दल नाश्यो निशिचर चले पराई ॥

दोहा-महापार्श्व उठि तुरत तहँ, लै कर कठिन कुठार ।
मारयो कुपित प्रचारिकै, बचैं न वालिकुमार ॥
वालिसुवन करि लाघवी, तासु कुठार बचाय ।
हृदय हनी यक मूठि तिहि, मरो भुजा पसराय ॥
भागी फौज निशाचरी, ओज मोज कपिसैन ।
निरखत दशकन्धर कुपित, कह्यो सूतसों बैन ॥
रे सारथि लैचलु रथहि, जहाँ लषण रघुवीर ।
विक्रम देखहुँ दुहुँनको, हने बहुत मम वीर ॥

चौपाई ।

रावण वचन सुनत सो सूता । लै धायो रथ अति मजबूता ॥
रावण तामसास्त्र शर घोरा । तजो चटक मर्कटगण ओरा ॥
हाहाकार रह्यो दल छाई । चली बलीमुख सैन्य पराई ॥
सहि न सके रावण शर धारा । भयो समर बाणन अँधियारा ॥
भागत सैन्य निरखि रघुराऊ । चले मन्दगति युद्ध उराऊ ॥
निरख्यो जाय राम कहँ रावन । मनहुँ नीलमणि शैलसुहावन ॥
राम लषण दहिने कपिराजू । खडो विभीषण वीर दराजू ॥
हनुमत अंगद अरु नल नीला । द्विविद मयन्द महाबल शीला ॥
लषण निरखि रणरावणआवत । बढ्यो युद्धहित बाण चलावत ॥
तजी लषण सायक वर धारा । मूँद्यो रिपुरथ लगी न बारा ॥

लषण बाण वारणकरि रावण । आयो जहां जगतपति पावन ॥
रामहिं देखि तजी शरधारा । इक दश शत सहस्र बिन वारा ॥
दोहा–तिल तिल करि रावण शरन, रघुनंदन रणधीर ।
मारि तीर अति पीर किय, रह्यो न धीर शरीर ॥

चौपाई ।

करन लगे दोउ युद्ध भयावन । जग अभिराम राम अरु रावन ॥
छूटी दुहुँ दिशिते शर धारा । ह्वैगो समरभूमि अँधियारा ॥
राम रावणहिं रावण रामहिं । छावत समर मत्त संग्रामहिं ॥
मंडल करहिं अनेक विचित्रा । यक अमित्र जग यक जग मित्रा ॥
चढे विमान देव समुदाई । देखहिं रावण राम लराई ॥
रावण राम समर जब भयऊ । भूरि भुवन महँ भय भारि गयऊ ॥
महा भयंकर धनुधर दोऊ । रह्यो न है होनो अस कोऊ ॥
भरिगे गगन बाण वर बृन्दा । परी मंदगति सूरज चन्दा ॥
जिमिदमकहिंदामिनि घनमाहीं । बाणवृन्द तिमि गगन सुहाहीं ॥
जहँ कहँ छिद्र होत शरजाला । सो गवाक्ष सम लसत विशाला ॥
ह्वै गो समर शरन अँधियारा । जिमि भादों निशि मेघ अपारा ॥
रहे अचल दोऊ दल ठाढे । रावण राम समर सुख बाढे ॥
दोहा–भयो वृत्त वासव समर, जैसे सतयुग माहिं ।
तिहिविधि ताते अधिक कछु, रावण राम लखाहिं ॥

चौपाई ।

उभय विशारद अस्त्र अनंता । उभय वीर संगर बलवंता ॥
उभय करत मंडल बहु भाँती । उभय तजत शरअगणित जाती ॥
उभय वीर जहँ २ रण जाँहीं । तहँ तहँ शर तरंग लहराहीं ॥
करि लाघवी तहाँ दशभाला । राम ललाट रच्यो शरमाला ॥
कमलमाल इव शोभित भयऊ । नहिं कछु व्यथा नाथकहँ दयऊ ॥
प्रभु रुद्रास्त्र तज्यो अतिघोरा । रावण छप्यो सरथ तिहि ठोरा ॥

कवच अभेद दशानन पहिरे। गये बाण ताते नहिं गहिरे॥
रघुनायक सायक पुनि पांचा। मारचो रावण भाल नराचा॥
भाल फोरि प्रविशे शर धरनी। देव सराहत प्रभुकी करनी॥
तनक विकल ह्वै उठ्यो दशानन। छोड्यो असुर अस्त्र पंचानन॥
सिंह व्याघ्र वृक कढे हजारन। काक कंक अरु गीध अपारन॥
रासभ कुक्कुट श्वान वराहा। सफरी सर्प मकर भय बाहा॥
किये भीति कपि दलमहँ आई। लिये एक एकन कहँ खाई॥

दोहा-तजो राम सूर्य्यास्त्र कहँ, चन्द्र सूर्य्यमुख बान।
उलका ग्रह नक्षत्र मुख, तिमि दामिनी समान॥

चौपाई।

जरे दशानन सायक घोरा। निशिचर जरन लगे चहुँ ओरा॥
मयकृत अस्त्र तजो दशभाला। निकसे शूल गदा करवाला॥
मूशल मुद्गर कामुक पाशा। कियो गाजसम शोर प्रकाशा॥
तब गंधर्व अस्त्र प्रभु त्यागा। मयकृत अस्त्र खोजनहिं लागा॥
सौर अस्त्र छोड्यो तब रावन। कढे चक्र बहु चमकिभयावन॥
चमकत चक्र गगनमहँ छाये। गिरि कपिदल अति भीति बढाये॥
चन्द्र अस्त्र छोड्यो रघुराई। गिरे लूक लाखन तहँ जाई॥
पुनि शर भरभर कोशलराऊ। ताजि वेधे तनु बच्यो न काऊ॥
तब त्यागे दशमुख दश बाना। वेध्यो सकल अंग भगवाना॥
प्रभु उखारि बाणन महि डारे। कहे वचन शर निबल तिहारे॥
तिहि अवसर रामानुज कोपी। मारचो सात बाण चितचोपी॥
इक शर काट्यो ध्वजा पताका। पुनि काट्यो सारथि शिर ताका॥

दोहा- कियो खण्ड कोदण्ड द्वै, मारि पञ्च शर घोर।
तहाँ विभिषण लै गदा, मारचो चारिहु घोर॥

चौपाई ।

देखि विभिषण रावण कोपा । चाह्यो करन बंधु कर लोपा ॥
वज्रसरिस इक शक्ति कराला । हन्यो विभीषणको दशभाला ॥
बीचहिं लषण कीन त्रय खंडा । हँसन लगे वानर बरिवण्डा ॥
तबहिं दशानन अतिहि रिसाई । ब्रह्मदत्त लिय शक्ति महाई ॥
तजत वदनसो पावक ज्वाला । मानहुँ कालरूप विकराला ॥
जान्यो लषण विभिषण नाशा । आगू भयो बचावन आशा ॥
हने शक्ति कहँ सायक लाखा । दियो नाशि दशमुख अभिलाष
तब लंकेश कोपि कह बाता । लियो बचाय मोर शठ भ्राता ॥
ताते सावधान रहु वीरा । भस्म करी यह शक्ति शरीरा ॥
अस कहि लषण ताकि रणधीरा। तजी शक्ति पुरदायक पीरा ॥
घण्टा अष्ट बद्ध विकराला । मय निर्मित घाई जनु काला ॥
आवत शक्ति देखि रघुराई । कह्यो स्वस्ति जीवै मम भाई ॥

दोहा—लगी लषण उर मॉंझसो, कियो धरणि लगि फोर ।
शिथिल अंग बिन संज्ञ ह्वै, गिरिगो राज किशोर ॥

चौपाई ।

रघुपाति विकल देखि लघु भ्राता । ह्वैगे सजल नयन जलजाता ॥
कियो विचार मनहिं रघुवीरा । यहि क्षण उचित न होब अधीरा ॥
नहिं विषाद कर अवसर आजू । पाय समर कहाय रघुराजू ॥
बढि आगे रघुकुल मणि वीरा । हन्यो कठिन कोटिन तहँ तीरा ॥
लषण विकल लखि अतिदुख पाये । हनुमत अंगद आदिक धाये ॥
लगे उखारन शक्ति कराली । कढै न कठिन लषण उर शाली ॥
राम बहुरि सो शक्ति उखारी । दै भुज बीच तोरि तिहि डारी ॥
शक्ति उखारत महँ लंकेशा । दियो छाय हनि बाण अशेशा ॥
प्रभु बिसराय बिपुल शर घाता ।लियो अंकमहँ निज लघु भ्राता॥

कपिपाति मारुति काहँ बुलाई। बोल्यो सरुष वचन रघुराई॥
हहु लषण कहँ घेरि कपीशा। विक्रम काल मोहि मह दीशा॥
मिल्यो बहुत दिनमहँ यह काला। नयनन देखि पर्‍यो दशभाला॥
दोहा-जिमि चातक चितवत रहत, स्वाती वारिद बुन्द।
तिमि चाहत हमहूं रहे, रावण समर अनंद॥

चौपाई।

राज त्याग दंडकवन धावन। सीताहरण शोक उपजावन॥
सहे नरक सम अमित कलेशा। आजु रही नहिं ताकर लेशा॥
सुनहु सबै चित दै कपि ज्ञानी। भुज उठाय भाषौं मैं बानी॥
की रहिहै रावण जग आजू। की रहिहैं जगमें रघुराजू॥
होई अब नहिं दूसर बाता। जानहु सत्य बीर विख्याता॥
यहि हित मर्कट कटक बुलायो। वालि मारि नृप सुगल बनायो॥
सागर सेतु रच्यो यहि हेतू। समय सु लह्यो बहुत करि नेतू॥
गरुड दीठि किमि बचै भुजंगा। दशमुख किमि जैहै करि जंगा॥
चढि गिरि शीश कपीश निशंका। लखहु मोर रावण रण बंका॥
आजु राम रामता निहारौं। नेकु शंक मनमहँ नहिं धारौं॥
करिहौं कर्म आजु मैं सोई। चारिहु युग गैहैं कवि जोई॥
तीनिहुँ लोक सिद्धि गन्धर्वा। चारण विद्याधर सुर सर्वा॥
दोहा-जबलगि जगती जग रही, तबलगि सहित समाज।
करहिं गान गिरवान सब, करौं कर्म जो आज॥

चौपाई।

अस कहि रघुकुलवीर उदंडा। कियो धनुष टंकोर अखंडा॥
हन्यो हजारन सायक घोरा। शर अँधियार भयो चहुँ ओरा॥
रावण राम बाण नभ छाये। लै विमान सुर विकल पराये॥
गिरहिं गगनते कटि कटि बाना। महा भयंकर लूकसमाना॥

मच्यो बरोबर ज्या तल शोरा। कियो जगतमहँ सब कहँ भोरा॥
प्रभु लाघवी वरणि नहिं जाई। मानहुँ मघा मेघ झरिलाई॥
मनहु कढत सब अङ्गन बाना। गगन मही न दिखात दिशाना॥
कसमस परचो लंकपति काहीं। धनुष धरत नहिं बनत तहांहीं॥
तिल तिल भयो तासु कटि याना। अङ्ग भङ्ग भे तुरँग महाना॥
छिन्न भिन्न भे सारथि अंगा। भये खंड बहु तासु निषंगा॥
मुकुट कटचो करि चटक चमंका। कटचो धनुष दामिनी दमंका॥
कसमसान, दशमुख मनमाहीं। देख्यो प्राण बचत अब नाहीं॥

दोहा–रामबाणके वेगसों, यातुधान रणधीर।
लंकद्वारलों उडि परचो, घुस्यो भवन भय भीर॥

चौपाई।

रावण जीति राम रणधीरा। आयो लखन लषण रघुवीरा॥
विकल अनुज लखि विकल खरारी। बोलि सुषेणहिं गिरा उचारी॥
रावण शक्तिनिहत मम भाई। तलफत अहिसमान दुखदाई॥
शोणितगात निहारु सुखेना। लगत फीक लछिमन बिन सेना॥
रण बाँकुरो लषण लघु भाई। तिहि विन जिये न मोरि भलाई॥
हाय लषण विन जीवहुँ आजू। धिक मम धनुष सकलधिक काजू॥
नहिं दिखात कछु आँखिन माहीं। भरे नयन जल पसरत नाहीं॥
लखौं स्वप्न धौं फुरि यह होई। आजु पीठ पाछे नहिं कोई॥
करिहै सिगरो जगत हँसाई। आये निज लघु बन्धु गँवाई॥
लषण विना नहिं जीवन योगू। त्रिभुवन भोग नरक कर भोगू॥
विजय पाय नहिं कीरति मोरी। देहौं लंकहि सीतहि छोरी॥
विना लषण जीवन तनु भारू। शशिमुख अंधहि कौन विचारू॥

दोहा–जयते सियते समरते, अब न प्रयोजन मोर।
कौन लाय मुँह अवधको, जैहौं तजि यहि ठोर॥

चौपाई ।

भवन छोडि मम संग सिधारा । लषण भ्रात प्राणहुँते प्यारा ॥
जस आयो मम सँग लघु भाई । हौं जैहौं तिहि सँग जहँ जाई ॥
अब नहिं मिलीलषण असभ्राता । चौदह वर्ष विपिन महँ त्राता ॥
देशन देश मिलैं बर नारी । देशन देश कुटुम्बहु भारी ॥
सो न देश मुहिं नयन दिखाता । मिलतो जहां सहोदर भ्राता ॥
कोसलराज लषण विन सूनी । मेरी भइ अपकीरति दूनी ॥
कहिहौं काह सुमित्रै जाई । जब पूछिहै कहां तुव भाई ॥
उत्तर का कौसल्यहि दैहौं । कौन भाँति भरतहि समुझैहौं ॥
रिपुहनसों किहि भाँति बतैहौं । अब तो अवध नगर नहिं जैहौं ॥
इहै मरण अब नीक दिखाई । पायों पूर्वपाप फल भाई ॥
हाय लषण मम प्राण पियारे । शूर शिरोमणि जग उजियारे ॥
मोहिं अकेले छोडि तुराई । देखहुँ स्वर्ग जात लघु भाई ॥

दोहा-तब तब समझायो हमैं, जब जब कीन विलाप ।
कस अब नहिं उठि लषण तुम, हरहु मोर संताप ॥

चौपाई ।

यहि विधि रघुपति करत विलापा । पावत लषण लखत संतापा ॥
कह्यो सुषेण सुनहु रघुवीरा । धर्मधुरंधर तजहु न धीरा ॥
बिना प्राण नहिं लषण शरीरा । यह विचारि कछु धारहु धीरा ॥
लषण वदन नहिं भयो मलाना । शरदजलद सम तेज महाना ॥
पंकजपाणि चरण अरुणारे । अतिकोमल प्रिय लगत निहारे ॥
करहु न रघुपति नेकु विषादा । देत आशु उठि अति अहलादा ॥
यहिविधि प्रभुहि सुषेण बुझाई । पवन सुवन कहँ कह्यो बुलाई ॥
जाहु आशु उत्तरदिशि प्यारे । ऋक्षराज जिहि पंथ उचारे ॥
दक्षिण शिखर द्रोणगिरि माहीं । औषधि चारिहु अहैं तहाँहीं ॥

यक विशल्य करनी सुखदाई। यक सुवर्ण करनी मन भाई॥
यक संजीवन करनी जोई। यक संधानकरन मुद मोई॥
ल्यावहु औषध लछिमनहेतू। अहै न रघुपतिके चित चेतू॥

दोहा–सुनि सुषेणके वचन तहँ, चल्यो तुरत हनुमान।
पहुँच्यो ओषधिशैल ढिग, लग्यो करन अनुमान॥

चौपाई।

जो ओषधि उखारि लै जैहौं। कौन कौनको ताहि चिन्हैहौं॥
जो ह्वै गयो मोहिं भ्रम भारी। तौ आवनि भइ वृथा हमारी॥
ताते ओषधिशैल उखारी। जाउँ आशु जहँ लषण खरारी॥
चीह्नत महँ बिलंब अति ह्वै है। प्रभुके मन नहिं शोक समैहै॥
अस विचारि तहँ पवनकुमारा। तुरत ओषधीशैल उखारा॥
लै धायो दक्षिणदिशि वीरा। सुमिरत मन निशंक रघुवीरा॥
आयो उभयदंडमहँ तहँवाँ। राम लषण कपिनायक जहँवाँ॥
कह्यो सुषेणहिं पवनकुमारा। लेहु ओषधी जौन विचारा॥
लै ओषधी सुषेण तुरंता। दीन्ह्यों लषण काहिं मतिवंता॥
सूँघत ओषधि लषण प्रवीरा। उठ्यो विशल्य मिटी सब पीरा॥
बोल्यो वचन लषण धनुधारी। कहँ रावण रण हतौं प्रचारी॥
रघुनन्दन उठि वचन उचारे। आवहु लछिमन प्राणपियारे॥

दोहा–अस कहि लषणहि लपटिगे, रघुनन्दन सानन्द।
मरत मिल्यो मानहु सुधा, छूटि गयो दुख द्वन्द॥

चौपाई।

मिल्यो बहुरि हनुमानहिं रामा। प्राणदान दीन्ह्यों यहि ठामा॥
किये कीश सब जय जय कारा। वर्षैं सुमन ससुमन अपारा॥
कह्यो लषणसों पुनि रघुराई। रह्यो न तुहिं विन जीवन भाई॥
तुहिं विन कौन सीय कर काजू। तुहिं विन विजय न कोसलराजू॥

बोल्यो वचन प्रभुहि कर जोरी। मानहु नाथ विनय अब मोरी ॥
पूरब प्रण कारि वृथान कीजै । पालिय वचन सत्य मन दीजै ॥
मैं न रहौं कि रहौं जग माहीं । मृषा प्रतिज्ञा करियो नाहीं ॥
धर्मधुरंधर रघुकुलराऊ । मृषा वचन मुख कढैं न काऊ ॥
प्रभु दशकंठ सकुल संहारहु । तिलक विभीषणको पुनि सारहु ॥
तुव प्रताप राखहुँ उर आशा । करौं सकुल दशकंठ विनाशा ॥
पाय बाणपथ राउर स्वामी । दशमुख ह्वैहै यमपुर गामी ॥
विजय सहित जो सीतहि चाहौ । मेरी विनय नाथ निरवाहौ ॥
दोहा-सुनत लषणके वचन प्रभु, लीन्ह्यों हृदय लगाय ।
बीर बली मुख बीचमें, राजत रघुकुल राय ॥

चौपाई ।

तहँ नवीन रथ चढि लंकेशा । आयो कुपित समरके देशा ॥
जिमि रवि पर धावत स्वरभानू। तिमिदशमुखकारिकोपकृशानू ॥
मारयो प्रभुहि अनंतन बाना । रामहुँ तज्यो बाण सहसाना ॥
भयो बरोबर दोहुँन युद्धा । इत रघुपति उत रावण क्रुद्धा ॥
रावण रथी राम पदचारी । सुरपति लखि मातली हँकारी ॥
बोल्यो वचन उचित नहिं होई । एक रथी यक पदचर जोई ॥
सायुध स्यंदन मम लै जाहूँ । तिहि पर चढैं भानुकुलनाहू ॥
करहिं विनाश निशाचर केरो । याके वध हित कति अवसेरो ॥
सुरपति शासन सुनि सुखपायो । मातलि रथ अवनी लै आयो ॥
करि प्रणाम बोल्यो कर जोरी । सुरपति विनय कियो प्रभु थोरी॥
रघुनंदन चढि स्यन्दन माहीं । हनैं बाण वृन्दन रिपु काहीं ॥
मातलि विनय सुनत रघुराई । दै परदक्षिण चढे तुराई ॥
दोहा-रघुनंदन स्यन्दन चढे, सोहे मधि संग्राम ।
मानहुँ भानु सुमेरु पर, उदित भयो अभीराम ॥

चापाइ ।

होन लग्यो तब द्वै रथ युद्धा। रावण राम भये अति क्रुद्धा ॥
तज्यो अस्त्र गंधर्व दशानन। पूरित भयो प्रकाश दिशानन॥
ताजि गंधर्व अस्त्र रघुराई। दियो शत्रु कर अस्त्र मिटाई॥
पुनि देवास्त्र तज्यो दशशीशा। प्रगटे देव अदेव खबीसा॥
देव अस्त्र रघुनाथ चलाइ। देव अस्त्र कहँदियो मिटाई॥
राक्षसास्त्र छोड्यो दशकंधर। प्रगटे राक्षस मनहुँ विषंधर॥
धाये फणी फणा बहु काढे। करत फुकार महारिसि बाढे॥
लिये भूमि नभ कपिदल छाई। भगे बलीमुख अहिन डराई॥
तज्यो राम गरुडास्त्र महाना। भक्षण कियो भुजंगन नाना॥
तब रावण रण कोपित भयऊ। सहस बाण प्रभुपर ताज दयऊ॥
पुनि मातलिको बहुशरमार्‍यो। वासवध्वजा काटि रथ डार्‍यो॥
कियो व्याथित वासवके वाजिन। प्रभुकहँ मूँद्योहनि शरराजिन॥

दोहा—मानहुँ राकाशशि ग्रस्यो, राहु पर्व कहँ पाय।
उठ्यो सिंधुमहँ धूम अति, भाकर भास छिपाय॥

चौपाई ।

रवि मंडल महँ पर्‍यो कबंधू। उदय केतु उत्पात प्रबंधू॥
कियो रोहिणी बुध आक्रमनू। किय कुज कोसल नखतहि दमनू॥
भुजाबीस दशशीश भयावन। देखि पर्‍यो रण रोषित रावन॥
शिथिलभयेमनुप्रभुशुभशीला। देखिविकल भे सुर रण लीला॥
देवन कपिन विकल लखि रामा। नेसुकभ्रुकुटि कियो तहँ बामा॥
नेसुक भये नयन अरुणारे। छोडे सातौ सिंधु करारे॥
प्रलय पयोधर गर्जन लागे। भये सुरासुर सब भय पागे॥
ऋषि गंधर्व सर्व सभयानन। गगन छोडि लै भगे विमानन॥
रावणहू जान्यो निज काला। हट्यो कछुक लै यान विशाला॥

पुनिथिराचितकरिकै दशशीशा । आयो सन्मुख जहँ जगदीशा ॥
जय रावणकी निशिचर भाषैं । रघुपतिकी जय सुर अभिलाषैं ॥
तहँ सकोप निशिचरगणनाथा । लीन्ह्यों महाशूल यक हाथा ॥

दोहा–बोल्यो वचन पुकारि कै, खडोरहै रघुनाथ ।
अब न बचैगो शूल ते, लगी बीचही माथ ॥

चौपाई ।

अस कहि तजो शूल बरजोरा । तडित प्रकाश भयो चहुँ ओरा ॥
हने राम सायक बहु लाखा । भस्म भये लगि शूलहि पाखा ॥
लियो महेन्द्र शूल रघुराई । शत्रु शूल पर दियो चलाई ॥
भयो खंड द्वै रावण शूला । मिटी देव मुनि कपिहिय शूला ॥
पुनि प्रभु हन्यो लंकपति वाजी । मार्यो तिहिउर बाणनराजी ॥
शर जर्जरित भये सब अङ्गा । हन्यो तीन शर भाल अभंगा ॥
भयो फुल्ल बंधूकसमाना । विकल भयो कछु रहो न भाना ॥
सम्हारि बहुरि कोप्यो लंकेशा । मानहु भयो काल कर वेशा ॥
मारि शरन मूँद्यो प्रभु काहीं । जिमिरवि अस्त विहँग तरुमाहीं ॥
रावण घन शर वर्षहिं पाई । कँप्यो न अचल शैल रघुराई ॥
दशमुख शर वारत निजबाणन । विचरत रण रघुकुल पंचानन ॥
तब दशमुख शर हन्यो हजारा । प्रभु तनु बही रुधिरकी धारा ॥
रघुनायक छबि समरप्रकाशा । उठ्यो फूलि मनु विपिनपलाशा ॥

दोहा–कियो मंडलाकार धनु, दशरथ राजकुमार ।
रावणतनु जर्जरित किय, हनि शर दशै हजार ॥

चौपाई ।

तहँ समर कोपे दोउ वीरा । किये शरन अँधियार गँभीरा ॥
रावणसों रघुपति मुसक्याई । वेधे वचन बाण बरिआई ॥
जनस्थानतैं जाय अभागी । चोरी करत लाज नहिं लागी ॥

अपनेको मानत अतिशूरा । हमहूँ लषण रहे अति दूरा ॥
जो हमरे देखत लंकेशा । चोरी करन जात तिहि देशा ॥
तौ पुनि लंक बहुरि नहिं आवत । अपने कर्महिं कर फल पावत ॥
पै निजकुल अब सब हतवाई । कढ्यो लंकते निशिचरराई ॥
बहुरि लंक जइबो कठिनाई । दे दिखाय अपनी मनुसाई ॥
अस कहि तजी राम शरधारा । गयो मूँदि निशिचर भरतारा ॥
दिव्य अस्त्र सब रघुकुलनाथै । दोउ दिशि खडे जोरि युग हाथै ॥
बाणवृन्द पुनि पुनि रघुनाथा । हनत कहत रहु थिर दशमाथा ॥
रोम रोम वेध्यो तनु बाणन । भयो शल्यकी सरिस दशानन ॥

दोहा—है विसंग रथपर गिर्‍यो, सारथि मृतक विचारि ।
लै भाग्यो रणते तुरत, आरत वचन पुकारि ॥

चौपाई ।

लंकद्वार लगि जब रथ गयऊ । सावधान दशकंधर भयऊ ॥
उठ्यो देखि भागत निज याना । बोल्यो वचन निकारि कृपाना ॥
रे शठ सारथि कहँ लै जाता । रावणसरिस न वीर पराता ॥
लै चलु लै चलु अब रथ मोरा । खडो जहां अवधेश किशोरा ॥
तब सारथि बोल्यो कर जोरी । नाथ न देहु मोरि कछु खोरी ॥
मैं सारथि कर धर्म निबाहा । मूर्च्छित देखि निशाचर नाहा ॥
अब करि कछुक नाथ विश्रामा । कीजै विजय राम संग्रामा ॥
सारथि वचन सुनत लंकेशा । दीन्ह्यों कंकन जडित सुवेशा ॥
है प्रसन्न सारथिपर रावन । बोल्यो वचन भीति उपजावन ॥
कीन्यों क्षमा तोर अपराधा । सूत धर्म गुणि करी न बाधा ॥
अब जो समर छुडै है मोहीं । तौ नहिं जियत त्यागिहौं तोहीं ॥

दोहा—अस कहि कछु विश्राम करि, वदन सलिलसों धोय ।
पहिरि कवच नव धनुष धरि, धायो संग न कोय ॥

सोरठा-दशरथराजकुमार, मारहु ते सुकुमार अति।
करत युद्ध निशि बार, भयो श्रमित स्वेदित वपुष॥

कवित्त।

धावत निहारि लखि रावणको आवतहीं, भक्तजन चिन्तामणि चिन्ता उपजी मनै। विक्रम विलोकि मेरो व्यथित पराय गयो, आवत बहोरि होन शरणागत या छनै॥ और नहिं शोच कछु रावण शरण होत, इक शोच करत उदोत जौ अवारनै। हौं तो रघुराज लंकराजै लंकराज दैकै, भोजि हौं बुझाय कौने भवन विभीषनै॥

सोरठा-प्रभु दुचिताई जानि, रहे गगन देखत समर।
मुनि अगस्त्य मतिखानि, आय कहे प्रभुसे वचन॥

दोहा-यह आदित्यहृदय सुखद, है दिनकर स्तवराज।
पढहु करहु धारण चितै, करी सिद्धि सब काज॥
मैं भाषा कीन्ह्यों नहीं, यह स्तोत्र महान।
समर विजय कर शंक हर, सुखकर वेद समान॥

अथादित्यहृदयम्।

ततो युद्धपरि श्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥
देवतैश्च समागम्यद्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवाँस्तदा॥
राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरिन्वत्स समरे विजायिष्यसे॥
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपेन्नित्यमक्षयं परमं शिवम्॥
सर्वमङ्गलमांगल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।

चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥
रश्मिमंतं समुद्यंतं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्व विवस्वंतं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः ।
एष देवासुरगणाँल्लोकान्पातिगभस्तिभिः ॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवःस्कंदःप्रजापतिः ।
महेन्द्रो धनदःकालो यमःसोमो ह्यपांपतिः ॥
पितरो वसवःसाध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राणःऋतुःकर्त्ता प्रभाकरः ॥
आदित्यःसवितासूर्यःखगःपूषागभस्तिमान् ।
सुवर्णसदृशोभानुर्हिरण्यरेतादिवाकरः ॥
हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ॥
तिमिरोन्मथनः शंभुस्त्वष्टामार्तंडकोंशुमान् ॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करोरविः ।
अग्निगर्भोदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः ॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः ।
घनवृष्टिरपांमित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः ॥
आतपी मंडली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः ।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोस्तुते ॥
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥
जयाय जय भद्राय हर्यश्वाय नमोनमः ।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमोनमः ।

नम उग्राय वीराय सारंगाय नमोनमः ।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचंडाय नमोस्तु ते ॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्य वर्चसे ।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥
नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥
देवाश्च ऋतवश्चैव ऋतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमः प्रभुः ॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कांतारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन्पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥
अस्मिन्क्षणे महाबाहो रावणं त्वं हनिष्यसि ।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम सयथागतम् ॥
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥
आदित्यं प्रेक्ष्य तेजस्वी परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत् ।

सर्वयत्नेन महता धृतस्तस्य वधेऽभवत् ॥
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयंविदित्वासुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥
दोहा–पढि आदित्यहृदय हरषि, दिनकरको शिरनाय।
समर सजे रघुवंशमणि, हर्ष न हिये समाय ॥

चौपाई ।

चढ्यो महारथ रावण राजा। धावत आवति संगर काजा॥
श्याम तुरंग उतंग पताका। घर घर करत शोर रथ चाका॥
महाभयंकर श्यामशरीरा। लखि रावण प्रमुदित रघुवीरा॥
मातलिसों अस कह्यो बुझाई। तुम सुजान सारथि सुरराई॥
लै चलु रथहि सवेग धवाई। परे वामदिशि निशिचरराई॥
तहँ मातलि प्रभुपद शिरनाई। रघुनंदन स्यंदनहि धवाई॥
वामओर लंकापति डारी। तुरत धूर लै गयो निकारी॥
जिमि रजकन तिमि रघुपतिबाना। मूँद्यो रथ युत रावण याना॥
कोप्यो यातुधान परधाना। करन लग्यो मंडलविधि नाना॥
रावण राम समर अति गाढा। देखइ कौतुक दोउ दल ठाढ॥
लखैं देव नभ चढे विमाना। लरहिं वीर दोउ सिंहसमाना॥
होन लगे तहँ अति उत्पाता। वर्षहिं रुधिर जलद नभव्राता॥
दोहा–रावण मुख लागत भयो, सन्मुख पवन झकोर।
जहँ जहँ गवनत लंकपति, तहँ तहँ गीध करोर ॥

चौपाई ।

भई विदिश दिशि शोणितरंगा। उल्का गिरहिं अमित यकसंगा॥
लग्यो दिवाकरग्रहण अकाला। नदहिं चहूंकित घोर शृगाला॥
रावणरथ गालरि रव करहीं। वाजिन आँखिन आँसुन झरहीं॥
देखि अशुभ रघुकुलमणि हर्षै। रावण गंन्यो न इन उतकर्षै॥

निशिचरदल कपिदल दोउ ओरा । लिखे चित्रसम तजहि न ठोरा ॥
रावण राम लरैं रणमाहीं । लखहिं देवचित चकित तहाँहीं ॥
तब दशकंठ तज्यो इक बाना । कट्यो इन्द्ररथ तुंग निशाना ॥
प्रभु इक बाण तुरंत चलायो । रावण रथ ध्वज काटि गिरायो ॥
राम तुरंगन रावण मारयो । पै रथ नेकहु टरयो न टारयो ॥
तब कीन्हीं रण रावण माया । अन्धकार दशहूं दिशि छाया ॥
गदा परिघ असि चक्र अनंता । कपिदल वर्ष्यों खल बलवंता ॥
प्रभु हँसि भास्कर अस्त्र चलायो। क्षण महँ माया सकल उडायो ॥

दोहा-महा धनुर्धर वीर दोउ, रचे गगन शरजाल ।
तिल भर अंतर नहिं रह्यो, सुर मुनि भये विहाल ॥

चौपाई ।

शरपंजर अंबर ह्वै गयऊ । एकहु बाण विफल नहिं भयऊ॥
लरि लरि बाण गिरे महिमाहीं। देखि परे दोउ वीर तहाँही ॥
महाधनुर्धर दोउ रणधीरा । पुनि हनिहनि नभ भरिदिय तीरा॥
रथ मंडल करि दक्षिण वामा । लरहिं समरमहँ रावण रामा ॥
उभय वीर रण कोपित्त गाढे । उभय वीर रण आनँद बाढे ॥
उभय वीर त्यागहिं शर धारे । उभय वीर रण टरहिं न टारे ॥
उभय वीर विक्रमी अनूपा । निशिचरभूप भानुकुल भूपा ॥
उभय परस्पर जय चित चाहे। छिन्न भिन्न भे उभय सनाहे ॥
राम रावणहिं रावण रामहिं । हनि शर करहिं घोर संग्रामहिं ॥
मंडल करत समर इक काला । भिरिगे स्यंदन उभय विशाला ॥
भिरिगे वाजिनके मुखमुखसों । धुरा धुरा जुरिगे यक रुखसों ॥
हन्यो दशानन बल करि बाना। वेधि गये सब तनु भगवाना ॥

दोहा-पुनि मातलिको लंकपति, हन्यो अनेकन बान ।
कियो नेकहूँ नहिं व्यथा, भे शर फूल समान ॥

चौपाई ।

तस तनु प्रभु शर कियो न पीरा। यथा मातली विधे शरीरा ॥
शर वैतस्तिक भर भर मारी । कियो विमुख रिपु राम प्रचारी ॥
बीस तीस शत साठिहु सायक। सहस लाख छोडत रघुनायक ॥
तिहि विधि रावणहू शर झारत। बार बार बाणन बढिबारत ॥
कहूँ गदा कहुँ मूशल बरषैं । कहूँ बाण हनि हनि हिय हरषैं ॥
रावण राम बाणके बाता । क्षोभित भये समुद्रहु साता ॥
सात लोक भूतल तल वासी । भे व्याकुल ताजि जीवन आसी ॥
सात लोक ऊरधके जेते । बाणवेग व्याकुल भे तेते ॥
तहँ देवर्षि महर्षि अपारा । अतिआरत अस करहिं पुकारा ॥
स्वस्ति होयगो ब्राह्मण केरी । प्रलय होति अब लगति न देरी ॥
सुन्यों न दीख युद्ध अस कबहूँ। लख्यो सुरासुर संगर तबहूँ ॥
यथा गगनके गगन समाना । सागर सम सागर जग जाना ॥

दोहा—तथा राम रावण समर, रावण राम समान ।
शेष शारदा शंभु विधि, लखे सुने नहिं कान ॥
तहँ राघव लाघव कियो, ताज शर तेज निकेत ।
रावण शिर काट्यो तुरत, कुंडलमुकुट समेत ॥

चौपाई ।

दूसर शीश भयो दशशीशा । लखि आश्चर्य गुन्यो जगदीशा ॥
सोउ रावणशिर काटि गिरायो । तीसर शशि तुरत ह्वै आयो ॥
यहिविधि शत शिरकाट्योरामा। भे नव नव शिरतिहि संग्रामा ॥
कौसल्यानंदन रण धीरा । निरखि दशाननको विन पीरा ॥
मनमहँ लाग्यो करन विचारा । दशकंधर कस मरत न मारा ॥
जिन शर हत्यो मरीच सुबाहू। किय त्रिशिरा खरदूषण दाहू ॥
जिन शर वध्यो विराध कबंधा। बेध्यो ताल सहित असकन्धा ॥

जिहि शरसिंधु उठीशिखिज्वाला । जिहिशरभयोवालिविकराला ॥
ते शर लगि दशकंठ शरीरा । समर करत नेकहु नहिं पीरा ॥
पुनि धरि धीरज रघुकुलवीरा । त्यागन लाग्यो तुकि तुकि तीरा ॥
कहुँ दोउ लरहिं अकाशहि जाई । कहूँ शैल शिर करहिं लराई ॥
कहुँ धरणी कहुँ लरहिं दिशानन । रावण अरु रघुकुल पंचानन ॥

दोहा–तहाँ राम रावणमयो, सिगरो जगत दिखान ।
कपि निशिचरमुनि सुर असुर, तनुमहँ तनक न भान ॥
दिवस निशा क्षण पल लवहु, घटी मुहूरत याम ।
समर राम रावण कियो, लह्यो न कछु विश्राम ॥

चौपाई ।

तब मातलि बोल्यो कर जोरी । सुनहु नाथ विनती इक मोरी ॥
कस भूले अपनी सुधि सारी । आपहि मधुकैटभ संहारी ॥
हिरण्यकशिपु कनकाक्ष सँहारे । आमितवार भुवि भार उतारे ॥
यह रावण है केतिक बाता । हनहु ब्रह्मशर करै निपाता ॥
मातलि कहे सुरति प्रभु कीन्हा । घोर ब्रह्मशर अस्त्रहि लीन्हा ॥
वसै पवन जाके दोउ पक्षा । मुखमहँ दिनकर पावक स्वक्षा ॥
गरुता मंदर मेरुसमाना । जासु शरीर अकाश प्रमाना ॥
उठत धूम निकसत मुख ज्वाला । भेदक चौदह भुवन कराला ॥
सो शर सन्धान्यो रघुराई । वेद मंत्र पढि आनँद छाई ॥
साजत शर काँपै त्रय लोका । उपज्यो रावणके उर शोका ॥
रावण हृदय ताकि रघुनायक । तज्यो अमोघ ब्रह्मशर सायक ॥
रावण हृदय लग्यो शर घोरा । पत्र सरिस ताको उर फोरा ॥

दोहा–रावण प्राणसमेत शर, फोरि सात पाताल ।
रुधिरमयो रघुनाथ शर, प्रविश्यो तूण विशाल ॥

गिरचो भूमिमें धनुष तिहि, मृतक भयो दशभाल ।
स्यंदनते धरणी गिरचो, कँपी धराणि तिहि काल ॥
सोरठा–रावण मृतक निहारि, देव दिये नभ दुंदुभी ।
इकएकनींह पुकारि, सुर मुनि जय जयकारकिय ॥
वर्षै कुसुम अपार, कहि जय जय रघुवंशमणि ।
उतरचो भूकर भार, देव विप्र कण्टक टरचो ॥

छन्द चौबाला ।

भागे निशाचर करत आरत शोर लंका ओरको ।
गरजे बलीमुख ऋक्ष वृक्षन हनत करि करि जोरको ॥
बरजे कपिन रघुवंशमणि अब यातुधान बचाइयो ।
इन कर कछुक अपराध नाहिं अबकोप मन नाहिं लाइयो ॥
वर्षत सुमन सुमनस कहत जय कौसलेश कुमारकी ।
नदत नगारे नाकवारे मिटी भय संसारकी ॥
पूषन प्रकाशित कियो पुहुमी विमल चन्द्रसतार भे ।
शीतल सुमन्द सुगन्ध मारुत बहुत मुनि सुखभार भे ॥
ब्रह्मर्षि हर्षि महर्षि जगमहँ याग करत अरंभ भे ।
द्विज पाठ पूजन करनलागे विगत भीति अदंभ भे ॥
प्रस्तुति करत रघुवंशमणिकी देव मुनि पद गायकै ।
नाचहिं विमानन अप्सरा बहु मधुर बाज बजायकै ॥
गंधर्व चारण सिद्ध विद्याधर सुकिन्नर गायकै ।
अस्तुति करैं प्रभुकी मुदित बहु गद्य पद्य बनायकै ॥
निर्मल गगन भुवि भय अभारा अति प्रसन्न दिशाभई ।
दिनमणि चले प्रभु सुयश गावत देवदारा सुख छई ॥
वैकुण्ठपति दशकण्ठ हनि द्रुत बोलि अति उत्कंठसों ।
लंकेश और सुकण्ठको कीन्ह्यों सुकंठहि कंठसों ॥

प्रभु मिले पुनि हनुमानसों अंगद लियो उर लायकै ।
पुनि मिले लषणहिंसों ललकि दृग वारिविन्दु विहायकै ॥
तहँ पृथक्क पृथक्क कपनिको लघु बड जहाँ जेते रहे ।
सबको मिले रविवंश रविसुहिं कहँ मिले अब सबकहे ॥
लंकेश और सुकण्ठके प्रभु कहे बचन बुलायकै ।
विजयी कियो तुम मोहिं दोउ यश दियो सखा सहायकै ॥
तहँ लषण सुगल विभीषणादिक परे रघुपति चरणमें ।
प्रभु दोर्दंड अखण्ड बल पूजत महामुद भरनमें ॥
मर्कट नचत रणभूमिमहँ लंगूर तुंग उठायकै ।
गावत अवधपति विमलयश केतींकलान दिखायकै ॥
राजत सुरघुकुल कुमुद चन्द्र महेन्द्र रथहिं सवार हैं ।
चहुं ओर प्रबल कपीश ठाढे लखत बारहिं बार हैं ॥
श्रमबिंदु शोणितबिंदु श्यामशरीर शोभित है रहे ।
जनु रायमुनिखगगणतमालहिं लसहिं थिर मोदितमहे ॥
रघुवंशनायक पाणि सायक सहज शोभित फेरहीं ।
जनु निजसुयश थल भुवनचारिहु ओरनयननहेरहीं ॥
शिरजटा मुकुट विराजमान निषङ्ग कंधन सोहहीं ।
दोर्दंड ओज अखंड धृत कोदंड सुर मुनि जोहहीं ॥
जयश्री विराजत प्रभुवदन अरविंद नयन विशाल हैं ।
तिहि काल दीनदयालुकपिन निहारिकरत निहाल हैं ॥
सुरव्रात वर्णत जात यश फहरात विजय निशान हैं ।
अतिमंदशीतल वात बहत बिलात श्रमबलवान हैं ॥
पुनि उतारि रथते मातली मिलि कहे रघुपति वैनको ।
कीन्ह्यो परम उपकार रथ लै जाउ सुरपति ऐनको ॥
कल्पांतकारि सुखभोग सुरपुर आइहौ मम धामको ।

सुरनाथको उपकार यह नहिं कबौं भूली रामको ॥
रघुनन्दके पद वंदि मातलि पाय परम अनंदको।
लै इन्द्र स्यंदन गगनपंथ पयान कीन अमंदको ॥
प्रभु बैठि रुचिर रसाल छाया सुखित कपिनसमाजमें।
तिहि समय सुखवर्णन करन कहु कौनमति रघुराजमें॥
दोहा–ज्येष्ठ बंधुको निधन लखि, तहां विभीषण जाय।
लाग्यो करन विलाप अति, उर अनुताप बढाय॥
सोरठा–बहुत बुझायों तोहिं, कालविवश मान्यो नहीं।
बहुरि कह्यो धिक मोहिं, लह्यो तासु फल भ्रात तैं॥
दोहा–धृति प्रबालसुम तेज तनु, सरस शूरतामूल।
रावणतरु राघवपवन, दिय गिराय समतूल॥
यश कीरति युगदन्त तन, जग प्रशंस मुनिवंश।
शुंड कोप लंकेश गज, रामसिंह किय ध्वंश॥
विक्रम ज्वाला तेज झर, श्वास धूमको धाम।
रावण अग्नि बुझाय दिय, समर राम घनश्याम॥
विक्रम दर्प विषान युग, डील धीर अघ नैन।
रावण वृषभ विनाश किय, राम बाघ बल ऐन॥
विकल सखा लखि अवधपति, बोले वचन बुझाय।
प्रेतकर्म दशकंठको, करहु बिभीषण जाय
कह्यो विभीषण जोरि कर, तव द्रोहीको नाथ।
प्रेतकर्म करिहौं नहीं, दियों छोडि मैं साथ॥
कह कृपालु जीवतहि लगि, रह्यो वैर मम घोर।
सखा तिहारे नात अब, यथा तोर तस मोर॥
प्रेतकर्म दशकण्ठको, करहु लंकपति जाय।
ह्वैहै अवशि पुनीत तुव, हाथ तिलांजलि पाय॥

प्रभु शासन धरि शीशमें, करन बन्धु मृतकाज।
चल्यो विभीषण विलखि उर, सुमिरत श्रीरघुराज॥

छन्द चौबोला।

तिहि समय रावण नारि निकसीं करत अतिहि विलाप।
रणभूमिमहँ सब जाय लखि पति मृतक लहि संताप॥
गहि चरण कर शिर लगीं रोवन करत आरत शोर।
जगदंबिका हरि कन्त कीन्ह्यों नाश कुल बरजोर॥
मान्यो विभीषणको कह्यो नहिं दियो ताहि निकारि॥
नहिं कुम्भकर्ण कह्यो गुण्यो हठ तजी नाहिं विचारि॥
नहिं माल्यवान कह्यो धरयो चित कंत है वश काल।
हमसे सहित लंका करी विधवा निशाचर पाल॥
मंदोदरी तहँ आय रोवनलगी करत प्रलाप।
जाहि देव सन्मुख रुकत नहिं तिहिमनुजते भयताप॥
ताते न मानुष राम हैं बैकुंठपति घनश्याम।
श्रीवत्स वक्ष विराजमान अनन्त सैन्य अकाम॥
धरि विष्णु मानुषरूप है दशरत्थराजकुमार।
भूभारहारन हेतु कीन्ह्यों कंत तोर सहार॥
नहिं आदि मध्य अनादि धाता ईश्वरहुको ईश।
वर शंख चक्र गदा विराजत चारि भुज जगदीश॥
पिय तोहिं बरज्यों प्रथम मैं मान्यो न मेरे बैन।
जगदंबिका घर लाये मंगल चह्यो भै कछु भैन॥
बरज्यो विभीषण कुंभकर्णहु माल्यवान प्रहस्त।
मान्यो न ताकर लह्यो फल तुम भये कुलयुत अस्त॥
जब समर खर दूषण हते माया मरीच दराज।
मारयो कबंधहि वालि मारि सुकंठ दीन्ह्यो राज॥

करि सेतु सागर कटक मर्कटसहित उतरे पार।
तब मोर जियडरप्यो अतिहिं पियकियो कछु न विचार॥
परब्रह्म योगी ज्ञानगम्य प्रणम्य त्रिभुवन ईश।
को कहत मानुष राम वंदत जाहि सुर विधि ईश॥
पिय मोहवश मान्यो नहीं करि जगतपतिसों द्रोह।
तुम कंतसहित कुटुंब नाश्यो तज्यो तनुकरि कोह॥
हनुमान आयो लंक लायो भयो तबहुँ न ज्ञान।
यह विष्णुको अवतार राम महान अज भगवान॥
सीता जगज्जननी रमा तिहि हरि चह्यो कल्यान।
निजकर्म फल पायो सकल रिपु गुण्योनिजभगवान॥
यह लंक राज लह्यो विभीषण राम भक्ति प्रभाव।
हम भईं सकल अनाथ सुरपति लह्यो परम उराव॥
पिय तोर समर निहारि मरन विचार कीन्हें आज।
मुहिंएक फल दीस्यो विमल सो कहत नहिं कछुलाज॥
तेरे जियत पिय तोर पुर नहिं लख्यो लषण खरारि।
उनके लखत उनको सदन पिय लियो समर प्रचारि॥
प्रिय विष्णुकर तीरथसमर कुलसहित तुमतनु त्यागि।
अपवर्ग लीन्ह्यो वर्गयुत इतनी भली मुहिं लागि॥
मंदोदरी यहि भांति करति विलाप रावण रानि।
कहि वचन परम कृपालु बोध्यो जाइ जानकिजानि॥
तहँ रामशासन मानि रावण अनुज जाय निकेत।
रचि कनक विमल विमान ल्यायो माल्यवान समेत॥
रावण शरीर उठाय तिहि धरि जाय मर्घटभूमि।
दीन्ह्योमुखानलविधिसहितचहुँओरतिहि क्षण घूमि॥
करि अग्निहोत्र विधान दाह्यो दिय तिलांजलि न्हाय।

आयो विभीषण राम जहँ, तियवृन्द नगर पठाय ॥
दोहा–दशरथ लाल रसाल तर, लषण सुकंठसमेत ।
बैठे कवच उतारि जिमि, शांत धूमको केत ॥

छन्द हरिगीतिका ।

तहँ सकल देव निहारि समर सुरारि रावण नाश ।
वर्णत रघूत्तम सुयश निज निज किये गवन अवास ॥
वर्णत त्रिविक्रमसरिस विक्रम रामको तिहि काल ।
अघटित पराक्रम कीन मर्कट विकट वीर विशाल ॥
तिमि लषणको हनुमान को पौरुष परम अनुराग ।
सुग्रीव और विभीषणहु जो मंत्र दिय बडभाग ॥
करनी सकल वानरनकी सीता पतिव्रतधर्म ।
वर्णत चले मुनि सिद्ध चारण देव ह्वै कृतकर्म ॥
पुनिपुनि मिलत सुग्रीव पुनि २ परत लषणहुँ पाय ।
पुनि २ चटक मर्कटकटक मटकत नटत सुखपाय ॥
रघुवंशमणि तहँ जानि अवसर कह्यो लषण बुलाय ।
कीजै विभीषण राजतिलक सुलंकनगर सिधाय ॥
याते अधिक नहिं काज कछु मन रह्यो शोच महान ।
सो करहु पूरण आज लछिमन जाय सहित विधान ॥
सुनि नाथशासन लषण गवने लै विभीषण संग ।
शाखामृगन दीन्ह्यों निदेश विचारि तिलक प्रसंग ॥
चारिहु दिशनते सिंधुजल ल्यावहु तुरत कपीश ।
रघुराज करत विभीषणै अब आजु लंकअधीश ॥
वानर तुरन्तहि जाय ल्याये सिंधुजल घट चारि ।
सौमित्र सिंहासन विभीषण दियो तहँ बैठारि ॥
पढि वेदमंत्र स्वतन्त्र लछिमन कियो तिहि अभिषेक ।

कीन्ह्यों तिलक पुनि राजको भेटी जु टेकी टेक ॥
पुनि सकलवानरत्यों निशाचर कियो तिहि अभिषेक।
पुनि ब्रह्मराक्षस ताहि सींच्यो यथा शास्त्र विवेक ॥
तहँ माल्यवानादिक निशाचर वृद्ध वृद्ध सिधारि।
कीन्ह्यों विभीषण नजरि माणिगण लंकनाथ उचारि।
जे संग गवने चारि मंत्री तिन विभीषण बोलि।
कीन्ह्यों अमात्यप्रधान मंत्री धर्मशासन खोलि ॥
उपहारको लै सकल धन सौमित्र संग सिधारि।
आयो विभीषण आशु प्रमुदित जहँ सुकंठ खरारि ॥
प्रभुके परयो अरविन्दपद परदक्षिणा दै चारि।
उठि नाथ लीन लगाय उर अहि भोगभुजनिपसारि ॥
उपहार दीन्ह्यों जो विभीषण लियो रघुकुलराज।
कृतकाज मान्यो आपनेको आय सहित समाज ॥
तहँ भालु गो लांगूर मर्कट श्यामतेज शरीर।
तिहिबार बारहिं बारकिय जयकार लखि रघुवीर ॥
तहँ खडो सन्मुख पवनसुत गिरिसरिस परम विनीत।
परशंसि तिहि रघुवंशमणि कह वचन परमपुनीत॥
जो होय कपि अब उचित तौ लै लंकनाथ निदेश।
तुम जाहु लंकहि आशु वैदेही वसति जिहि देश ॥
मेरी लषणकी सुगलकी कहियो कुशल भरिपूरि।
आवहु कुशल लै तासु इत नहिं विलम कीजो भूरि ॥
रावणनिधन संग्राम गाथा विजय भोरि सुनाय।
लै जानकी संदेश आय सुनाय देहु त्वराय ॥
सुनि पवनसुवन प्रमोद भरि प्रभुजलजपदशिरनाय।
ल लंकनाथ निदेश आशुहि चल्यो चौगुन चाय॥

निशिचर बतावत पंथ आगे चलत कपिहि डरात।
प्रविशत नगर निशिचर निहारत शीश नावत जात॥

दोहा-कुशल प्रश्न पूँछत सकल, लखि हनुमत मुसक्यात।
भाषत सकल निशाचरन, सुखी हमारे भ्रात॥

चौपाई।

गयो अशोकवाटिका जबहीं। जनकसुता कहँ देखत तबहीं॥
अतिमलीन तनुधृत शिर वेनी। जिमि शशिरेख सघनघन श्रेनी॥
वृक्ष शिंशपाके तर माहीं। बैठी चित ध्यावति प्रभु काहीं॥
जिमि रोहिणी लही ग्रह पीरा। धारे एक मलिन तनु चीरा॥
वृक्षमूलमहँ विगत अनन्दा। चहुँकित बैठि राक्षसीवृन्दा॥
देखि राक्षसी पवनकुमारा। बोलीं वचन भरी भय भारा॥
आवा कपि लंका जिहि जारा। यही प्रथम वाटिका उजारा॥
जोहि जानकीको हनुमाना। ह्वै विनीत कर जोरि सुजाना॥
दूरिहिंते कपि कियो प्रणामा। कहि जय जय जगदंब ललामा॥
लख्यो जानकी जब हनुमानै। महामोद मन किय अनुमानै॥
पीतम विजय समरमहँ पाये। मोहिं बुलावन कीश पठाये॥
यतना मन उपजत सियकाहीं। रही हर्षवशतनु सुधि नाहीं॥

दोहा-सियसमीप हनुमंत चलि, बार बार शिरनाय।
अभियधार जिमि मृतकमुख, दीन्ह्यों वचन सुनाय॥

चौपाई।

देवि कुशल कोसलपुरराजा। कुशल कीशपतिसहित समाजा॥
कुशल लषण देवर तुव माता। लह्यो विजय करि शत्रु निपाता॥
रावण कुंभकर्ण घननादा। मरे समरमहँ पाय विषादा॥
रावण कुंभकर्ण प्रभु मार्‍यो। लषण इन्द्रजित समरसँहार्‍यो॥
हने बलीमुख बली सुरारी। कपिपति अंगदादि बल भारी॥

यदपि विभीषण कियो सहाई । यदपि लषण कीन्हें सेवकाई ॥
हम सब लरे यदपि करि जोरा। यदपि कियो प्रभु विक्रम घोरा॥
तदपि विजय कर सत्य विचारा। कारण पतिव्रतधर्म तुम्हारा ॥
मैं जो कह्यों मृषा तुम मानी । सोइ बात अब सत्य दिखानी ॥
कह्यो कृपालु मातु संदेशा । सुनिये सुचित्त त्यागि अन्देशा॥
तुव हित नयन नींद नहिं लीन्ह्यों। महासेतु सागरमहँ कीन्ह्यों ॥
कियो दशानन हानि प्रण पूरा। तुव दरशन बिन तनु सुखझूरा ॥

दोहा-लषण कीशपति अंगदहु, भाष्यो तोहिं प्रणाम ।
मातु मृषा नहिं मानियो, भयो पूर मनकाम ॥

चौपाई ।

और एक सुख देत सुनायो । लंकाराज्य विभीषण पायो ॥
सुनि कपिवचन विदेहकुमारी । आनँदमगन न गिरा उचारी ॥
गद्गद कंठ नयन बह नीरा । शोचति अब लखिहौं रघुवीरा ॥
कह्यो पवनसुत वचन बहोरी । उत्तर न देहु विनय सुनि मोरी ॥
जस तसकै पुनि सुरति सम्हारी। बोली वाणि विदेहकुमारी ॥
रामविजय सुनु पवनकुमारा । भयो मोर जीवन रखवारा ॥
को कृपालु रघुनाथ समाना । सहि कलेश राख्यो मम प्राना॥
कंतविजय सुनि सुधि सब बिसरी।क्षणभरि वदन बात नहिं निसरी ॥
लगी विचारन मैं मनमाहीं । देहुँ काह मारुतसुत काहीं ॥
नाथविजय भाष्यो मुहिं आई । तिहि बदलो नहिं परै दिखाई ॥
आजु देहुँ जोतीनिहुँ लोका । तऊ लगत लघु उपजत शोका॥
रत्न कनक महि कोतिक बाता । ऋणी रहब यह भलो दिखाता ॥

दोहा-सुनि वैदेहीके वचन, बोल्यो पवनकुमार ।
जोरि पाणि सन्मुख खडो, बहत नयन जलधार ॥

चौपाई ।

कह्यो मातु जस मोंकहँ वानी । तुहि बिन को अस और बखानी ॥
कहहु मातु मैं काह न पायों । आजु धरणिमहँ धन्य बनायों ॥
मैं कपिजाति न कौनहु लायक । दीन जानि जन किय रघुनायक ॥
तापर ऋणी कहसि तैं माता । लाभ कौन अब अधिक दिखाता ॥
पायों आज त्रिलोकि विभूती । सकै कौन कपि करि करतूती ॥
विधि वासवते बड सुख पायों । रामविजय चलि तोहिं सुनायों ॥
सिय सुनि पवनसुवनकी वानी । बोली गिरा कृपारससानी ॥
सब लक्षण लक्षित हनुमाना । मति अष्टांगसहित मतिमाना ॥
जगत प्रशंसन लायक कीसा । धर्मधुरंधर धरणी दीसा ॥
बल सौरज निगमागम ज्ञाना । विक्रम बुद्धि प्रकाशमहाना ॥
तेज क्षमा धृति विनय बडाई । दिन दिन दून दून अधिकाई ॥
जीवहु चिर अनंद सन्दोहू । करहिं सदारघुनायक छोहू ॥

दोहा—होय जौन तेरे मनै, सो माँगै कपि आज ।
तोहिं देत लघु लगत सब, तीन लोककी राज ॥

चौपाई ।

सुनत वचन कह पवनकुमारा । अंब एक अभिलाष हमारा ॥
प्रथमहिं खबरि लेन जब आयों । इन राक्षसिनि देखि दुख पायों ॥
कहे वचन इन तोहिं कठोरा । तर्जन भर्सन कियो न थोरा ॥
कहे अनेकन अनुचित बाता । सो सुधिकरिअबनहिंसहिजाता ॥
यह पापिनी अभागिनि पूरी । धर्म बसत इनसे बहु दूरी ॥
देवि देहु मुहिं यह वरदाना । मारौं इनहिं यथा मनमाना ॥
मूठी चरण करन करि घाता । करौं घसीटि घसीटि निपाता ॥
अस रिसि लागत दाँतन काटौं । पेट फारि केशन उतपाटौं ॥
मम सन्मुख इन तुहिं दुख दीना । सहिन जात अपराधजुकीना ॥

सुनि कपिवचन विदेहकुमारी । बोली वचन दया करि भारी ॥
सुनु कपि इनकर नहिं अपराधा । परवशदियो मोहिं अतिबाधा ॥
जस जस रावण शासन दीन्हा । तसतस तिहि डरि इन सबकीन्हा॥

दोहा–परवशमहँ अपराध नहिं, बसीं हमारे पास ।
शरणागत मानौ इन्हैं, दीबो उचित न त्रास ॥

चौपाई ।

दीन हीन गुणि रावणदासी । कौन खोरि इन कर बलरासी ॥
निज अभाग्य करमैं फल पायों । प्रभुपद छोडि शत्रुगृह आयों ॥
अब दशकंठ नाश सुनि काना । हमसों चहहिं आपनो त्राना ॥
किहि विधि कहौं पुत्र तुम मारहु । अंब इनको अपराध बिसारहु ॥
सुनहु पवनसुत कथा पुरानी । वेद पुराण प्रथित जग जानी ॥
मधुफल खानहेतु यक भालू । रह्यो विपिन विचरत यक कालू॥
बाघ विलोकि ऋक्ष भय पाई । चढ्यो एक ऊँचे तरु जाई ॥
तहँ मधुफल बीनन हित कोई । आयो मनुज क्षुधावश सोई ॥
देखि बाघ भय लहि तिहि कालू । सोइ तरु चढ्यो जहाँ रह भालू ॥
कह्यो बाघ तब ऋक्षहि काहीं । हम तुम बसहिं एक वनमाहीं ॥
यह हमरो तिहरो अरि पूरा । देहु गिराय जाहु तुम दूरा ॥
ऋक्ष कह्यो तब धर्म विचारी । यह शरणागति लई हमारी ॥

दोहा–अस अधर्म नहिं और जग, जस शरणागत त्याग ।
भक्षण खोजहु और थल, यह मम पाछे लाग ॥

चौपाई ।

अस कहि रह्यो ऋक्ष तहँ सोई । कह्यो मनुजसों मृगपति सोई ॥
जब हम जाब और थलमाहीं । भक्षण करी भालु तुहिं काहीं ॥
ताते तुम गिराय यहि देहू । दै भक्षण मुहिं गमनहु गेहू ॥
ना तो दुहुँन खाय हम लैहैं । ऋक्षसंग नहिं तोहिं बचैहैं ॥

व्याध बाघ भय मानितुरंता। दियो गिराय ऋक्ष बलवंता ॥
गिरचो न भालु भूमिमहँ आई। शाखा पकरि चढ्यो तरु जाई ॥
कह्यो भालुसों बाघ बहोरी। अबहूँ नहिं समुझति मति तोरी ॥
दे गिराय लखु मानुष खोरी। कह्यो भालु विनती सुनु मोरी ॥
यह शरणागत भयो हमारे। हम याके अपराध विसारे ॥
अति अधर्म शरणागत त्यागा। यहि गिराय किमि होहुँ अभागा ॥
केसहु नहिं तजिहौं मैं येही। चल्यो बाघ भोजन संदेही ॥
ऋक्ष मनुज कहँ घर पहुँचाई। लग्यो विपिन विचरण सुख पाई ॥

दोहा–ताते पवनकुमार तुम, गुणि शरणागत धर्म ॥
दीन जानि कीजे दया, करहु न अनुचित कर्म ॥

चौपाई।

नहिं परपाप पेखि उपकारी। करहिं अधर्म धर्म धुरधारी ॥
साँकर समय परे मतिमाना। रक्षहिं धर्म यत्न करि नाना ॥
ते जग भूषण संत सुजाना। शरणागत हित त्यागत प्राना ॥
पापी अथवा पुण्यवान कोउ। यद्यपि वधके योग होय सोउ ॥
सज्जन करत न कहुपर बाधा। को अस जो न करै अपराधा ॥
क्रूर पापरत बहु संसारा। हिंसा करिकै करहिं अहारा ॥
तिन कर रीति संतजन देखी। करहिं आप नहिं पाप विशेखी ॥
मोर सकोच मानि हनुमाना। अभयदान दै राखहु प्राना ॥
जनकसुताके वचन सुहाये। सुनि हनुमन्त बहुरि शिर नाये ॥
कह्यो वचन धनि धनि जगदंबा। तैं शरणागत धर्म अलंबा ॥
रामप्रिया मिथिलेशकुमारी। अपने योगहि गिरा उचारी ॥
देहु रजाय मातु अब जाहूँ। जहाँ लषण अरु कोसल नाहू ॥

दोहा–पवनसुवनको गमन गुणि, कह्यो विदेहकुमारि।
कौन घरी प्यासे नयन, ह्वै हैं सफल निहारि ॥

पवनसुवन बोल्यो वचन, नहिं विलंब जगदंब।
पियपूरणशशिवदन लखि, पैहौ मोद कदंब॥
अस कहि सीताचरण युग, वंदि सुखद हनुमंत।
चल्यो तुरन्त अनन्त सुख, आयो जहँ भगवंत॥

चौपाई।

प्रभुपद प्रमुदित कियो प्रणामा। सीय खबरि पूँछी तहँ रामा॥
कह्यो पवनसुत जोरे हाथा। सिय दरशन चाहति रघुनाथा॥
जिहि हित सागर सेतु बँधायो। जिहिहित रावण सकुल नशायो॥
सो सियको प्रभु दरशन देहू। मेटहु विरहजनित संदेहू॥
महादुखित मिथिलेशकुमारी। बहत विलोचन वारिजवारी॥
जबलों प्रभुपद दरशन पावति।यक क्षण युगसम सीय बितावति॥
देखि तासु दरशनकी आसा। मैं बोध्यौं तिहि दै विश्वासा॥
सुनि हनुमन्त वचन रघुराई। लागे ध्यान करन दुख छाई॥
नीरजनयन नीर भरि आये। शोकित श्वासहि लेत अघाये॥
दीठ नीचकरि देखत धरनी। मानहुँ करत वृथा निज करनी॥
दंड द्वैक लगि राम विचारी। कह्यो विभीषण काहि हँकारी॥
जाहु सखा अति आशुहि लंका। नहवावहु सीतहि बिन शंका॥

दोहा—अति उत्तम भूषण वसन, सकल भाँति पहिराइ।
ल्यावहु मेरे निकट सिय, अब विलंब बिसराइ॥

चौपाई।

सुनि प्रभुशासन निशिचरराजा। चल्यो लंक भरि मोद दराजा॥
अंतहपुरहि प्रविशि लंकेशा। सरमै त्रिजटै दियो निदेशा॥
सकल राक्षसिन लेहु बुलाई। द्रुत अशोकवनिकामहँ जाई॥
सीतहि करवावहु अस्नाना। पहिरावहु भूषण पट नाना॥
अस कहि निशाचरिन मतिवाना। किय अशोकवाटिका पयाना॥

देखि जानकीको मातिधामा । कियो विभीषण दंड प्रणामा ॥
कर अंजलि करि धरि शिरमाहीं । बोल्यो वचन विनीत तहाँहीं ॥
जननि करहु मज्जन यहि काला । पहिरहु भूषण वसन रसाला ॥
करि उत्तम अंगन अँगरागा। शिबिका चढि गमनहु बडभागा॥
पुरुषसिंह विजयी पति काहीं । लखहु बीच वानरदलमाहीं ॥
यहि विधि शासन दियरघुनायक। प्रभु रजाय करिबो तुहि लायक
सीता सुन्यो विभीषणवाना । बोली वचन कछुक अकुलानी ॥
दोहा–बिन मज्जित तनु प्रभुवदन, लखन चहौं लंकेश ।
अबै न मज्जन नाथ किय, मोको परत भदेश ॥

चौपाई ।

कह्यो विभीषण सुनु जगदम्बा । तोरे एक राम अवलम्बा ॥
कही जौन प्रभु सो अब कीजै । राम रजाय शीश धरि लीजै ॥
एवमस्तु तहँ कहि वैदेही । उठी करन मज्जन पिय नेही ॥
तहाँ दैत्य दानवकी कन्या । सिय मज्जन करवाइ धन्या ॥
लेप्यो उत्तम अँग अँगरागा । पहिराइ पट भरि अनुरागा ॥
दिव्य विभूषण पुनि पहिराई । षोडश विधि शृँगार बनाई ॥
मणिन जालकी रुचिर पालकी । चढी सुता मिथिलाभुवालकी ॥
उभय ओर करि बंद उहारा । लई उठाइ निशाचरदारा ॥
सहसन निशिचर संग सिधारे । कनक छडी झरझर कर धारे ॥
यहि विधि लै सीतैं लंकेशा । गयो जहाँ रविवंश दिनेशा ॥
ध्यानावस्थित लखि रघुराई । कह्यो विभीषण सीता आई ॥
विमनस कही राम अस वानी । ल्यावहु सिय मेरे ढिग आनी ॥
दोहा–सुनि प्रभुशासन लंकपति, कह्यो बैन गुहराय ।
ल्यावहु आशुहि पालकी, वानर भीर हटाय ॥

चौपाई ।

प्रतीहार निश्चर बलधामा । पहिरे पाग फेट अरु जामा ॥
कनकछडी झरझर धरि पानी । फरक फरक बोले अस वानी ॥
तहँ सीताके दरशन काजा । झुकी वलीमुख वीर समाजा ॥
निशिचर कपिन हटावत जाहीं । घुसहिं कीश दरशन ललचाहीं ॥
भयो शोर संघर्ष महाना । जिमि लहि पवन सिंधु लहराना ॥
कसमस परचो कपिनको भारी । सहि न गयो प्रभु कह्यो पुकारी ॥
ये वानर मुहिं प्राणपियारे । जिन सहाइ दशकधर मारे ॥
जे कोइ वानर वीर हटाई । सो मोरे कर दण्डहि पाई ॥
सुनहु विभीषण सखा हमारे । बरजहु निज राक्षसन अपारे ॥
करैं शांत यह शोर महाना । बोले बहुरि सरुष भगवाना ॥
भये लाल रघुलाल नयन दोउ । चितै न सकत रामसन्मुखकोउ ॥
भन्यो राम दाहत दृग ऐसे । बाज झपट खग कुल चुप जैसे ॥
दोहा—नहिं घर नहिं पट कोट नहिं, नहिं भूपति सत्कार ।
नारिनको आवरण यक्क, होत धर्म संचार ॥

चौपाई ।

विपति परे अरु रोगहु माहीं । होय स्वयंवर युद्ध जहांहीं ॥
यज्ञ होत अरु होत विवाहू । परदा करै न तिय नरनाहूँ ॥
करै न षट थल तिय आवरना । देखे तियहि दोष नहिं बरना ॥
मोपर परी विपत्ति महानी । लाज काज भल परै न जानी ॥
सीता पगसों इत चलि आवै । लंका बहुरि पालकी जावै ॥
सुनत रामके वचन कठोरा । भये विषादित कपि चहुँ ओरा ॥
कहहिं लषण कपिपति हनुमाना । कोन चरित्र करहिं भगवाना ॥
प्रभुशासन सुनि जनककुमारी । तजि शिबिका पैदर पगु धारी ॥
चली विभीषणसंग सुहाई । लाजनसों निज अङ्ग छिपाई ॥

लखि लखि वानर करहिं प्रणामा। यहि हित भयो कहहिं संग्रामा ॥
लाजन मनहुँ गडी महि जाती। मन्द मन्द पियके ढिग आती ॥
चलत विभीषणके सिय पिछे। ताकाति पतिमुखं नयन तिरीछे॥

दोहा–बोले राम पुकारिके, लखहु सीय कपिवृन्द।
जाके हित निज जीवकी, तजे छोह छल छन्द ॥

चौपाई।

लषण सुकण्ठ और हनुमाना। अंगद आदि बलीमुख नाना ॥
किये जानकीचरण प्रणामा। प्रभु भय वश ठाढे थिर ठामा ॥
परिगो सिगरी सैन्य सनंका। काह करत प्रभु कहहिं सशंका ॥
मन्द मन्द चलि जनककुमारी। कीन्यों प्रभुहि प्रणाम निहारी ॥
पियमुख लगी लखन सुकुमारी। जैसे चन्द्र चकोर सुखारी ॥
सो सुख सियको किमि कहिजाई। विस्मय हर्ष सनेह बड़ाई ॥
प्रभु चितयो नहिं सियकी ओरा। कह्यो न आउ बैठु यहि ठोरा॥
भये सँदेह सहित वैदेही। देखत रघुपति वदन अनेही ॥
करि साहस बैठी ढिग जाई। घन समीप जनु तडित सुहाई ॥
निकट निहारि राम वैदेही। बोले जो सुनि दुख नहिं केही॥
जीत्यों मैं रिपु समर प्रचारी। जो कछु करन हतो निरधारी ॥
भयो कोप अब शान्त हमारा। ताते सुनु सिय मोर विचारा ॥

दोहा–सफल भयो ममश्रम सकल, विक्रम दियोदिखाय ॥
मोर अनादर मोर रिपु, परत न जगत लखाय ॥

चौपाई।

प्रण पूरण कीन्ह्यों रिपु मारी। जो तुहि हरचो लोकदुखकारी ॥
भयो अभाग्य जनित जो दोषू। दिह्यों मिटाय सकल करिरोषू ॥
नहिं क्षत्रिय जो निज अपमाना। नाशै करि विक्रम विधि नाना॥
करी करी करनी हनुमाना। कूद्यो शतयोजन बलवाना ॥

जार्‍यो लंक निशाचर मार्‍यो। सुग्रीवहु सनेह निरधार्‍यो॥
कियो विभीषण पूर सहाई। बंधु त्यागि मम शरण सिधाई॥
बांदर प्राण दिये हित मोरे। यह सब भयो न सियहित तोरे॥
मैं जीत्यों रिपु निजबलहीते। जिमिअगस्त्यदक्षिणदिशिजीते॥
कीन्ह्यों सकल हेतु मैं अपने। निज हित जानु सीय नहिं सपने॥
तुहिं रिपु भवन वसत सुख रीते। जनकसुता दश मास व्यतीते॥
करौं कौन विधि ग्रहण तुम्हारा। परघर वसत गहत को दारा॥
जिमि रोगी दृग लागत दीपा। तिमि सीता मुहिं लगति प्रतीपा॥

दोहा—ताते गवनै जानकी, जहँ होय मन तोर।
रह्यो विजय लगि हेतु मम, अब नहिं कारज मोर॥

चौपाई।

पीतम वचन सुनत सुकुमारी। मृगी सरिस ढारति दृग वारी॥
करति विचार मनहिंमन सीता। किहि अपराध भइउँ अपुनीता॥
उत्तर देन चहति वैदेही। कहि न सकति कछु कंत सनेही॥
जस तसकै धीरज धरि सीता। बोली वचन होत मन भीता॥
कहहु नाथ जस तस मैं नाहीं। तुव प्रताप रक्षिता सदाहीं॥
नाथ चरण तजि कहँ अब जैहौं। तुम्हरे देखत देह दहैहौं॥
पाणिग्रहण अवसर पितु हमहीं। बोल्यो वचन सुनावत तुमहीं॥
बिनु पति जियब उचित नहिं तोहीं।सीते दुर्यश दिहे न मोहीं॥
ताते जियब उचित नहिं मोरा। तुमहिं त्यागि जैहौं किहि ठोरा॥
लषण रहे दृग ढारत वारी। तासों कह्यो विदेह कुमारी॥
देहु लषण अब चिता बनाई। यह कुरोग कर यहै उपाई॥
लषण लख्यो रघुपतिकी ओरा। कहिनसकत प्रभु भयभरिभोरा॥

दोहा—प्रभु अभिमत निज जानि तहँ, सैनन दीन रजाय।
अनुशासन गुनि लषण तहँ, दीन्ह्यों चिता बनाय॥

चौपाई ।

बैठ अधोमुख प्रभु तिहि ठामा । मानहुँ कालरूप भय धामा ॥
कियो प्रदक्षिण पिय वैदेही । गई चिता ढिग राम सनेही ॥
दियो लगाय आग्नि तहँ बाला । उठी विशाल ज्वाल विकराला ॥
बोली वचन विदेह कुमारी । सुनहु सबै साखी असुरारी ॥
तन मन वचन राम यदि मोरे । लख्यों न और नयनहू कोरे ॥
तौ पावक रक्षै यहि काला । साखी सकल देव मुनि माला ॥
अस कहि प्रविशी अग्निमँझारी । लियो आग्नि जिमिपिताकुमारी ॥
प्रगट्यो पावक रूप पुनीता । बैठायो निज अंकहि सीता ॥
हाहाकार मच्यो चहुँओरा । कियो राक्षसी आरत शोरा ॥
रोवन लागे लषण पुकारी । वानरसैन्य व्यथा भइ भारी ॥
मारुतसुत कपिपति लंकेशा । मूछिंत गिरे भूमि तिहि देशा ॥
सीता पतिव्रतधर्म प्रकाशा ।पाय द्विगुण किय ज्वाल हुताशा॥

दोहा—चढे विमानन देव सब, कीन्हें हाहाकार ।
प्रविशत पावकमें सियहि, भयो दुखित संसार ॥

चौपाई ।

तहँ महेश वासव करतारा । आये जहँ रघुवंशकुमारा ॥
धनद वरुण यम लोकनपाला । आये सहित सकल सुरमाला ॥
प्रभुपदपंकज शीश नवाये । अतिआतुर अस वैन सुनाये ॥
यह चरित्र का कियो अनूपा । भूलि गयो धौं अपनो रूपा ॥
तुम नारायण लक्ष्मी सीता । जगज्जनानि यह परमपुनीता ॥
नित्य अहै सम्बन्ध तुम्हारा । दशमुख तकत होत जरिछारा॥
ज्वालमाल माधि राजकुमारी । दया न उपजति नयन निहारी ॥
कीन्ह्यो आति अनर्थ यहि काला । देखिचारित यह भुवनविहाला ॥
को जानै गति नाथ तिहारी । जग सिरजक पालक संहारी ॥

तब बोले प्रभु मृदु मुसक्याई। हमको तो अस परै जनाई॥
हम दशरथ महिपालकुमारा। जो हम होहिं सु करहु उचारा॥
बोल्यो वचन तहां मुखचारी। तुम नारायण हौ भुजचारी॥
दोहा-अस कहि कीन्ह्यों नाथकी, प्रस्तुति विमल बनाय।
सो नहिं भाषा मैं कियो, पढतहि पाप पराय॥

विधिस्तुति।

ततो हि दुर्मना रामः श्रुत्वैवं वदतां गिरः।
दध्यौ मुहूर्तं धर्मात्मा बाष्प व्याकुललोचनः॥
ततो वैश्रवणो राजा यमश्चामित्रकर्षणः।
सहस्राक्षो महेन्द्रश्च वरुणश्च परंतप॥
षडर्द्धनयनः श्रीमान्महादेवो वृषध्वजः।
कर्ता सर्वस्य लोकस्य ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः॥
एते सर्वे समागम्य विमानैः सूर्यसन्निभैः।
आगम्य नगरीं लंकामभिजग्मुश्च राघवम्॥
ततः सहस्ताभरणान्प्रगृह्य विपुलान्भुजान्।
अब्रुवंस्त्रिदशश्रेष्ठा राघवं प्रांजलिस्थितम्॥
कर्त्ता सर्वस्य लोकस्य श्रेष्ठो ज्ञानवतां विभुः।
उपेक्षसे कथं सीतां पतंतीं हव्यवाहने॥
कथं देवगणश्रेष्ठमात्मानं नावबुध्यसे।
ऋतधामा वसुः पूर्वं वसूनां त्वं प्रजापतिः॥
त्रयाणामपिलोकानामादिकर्ता स्वयं प्रभुः।
रुद्राणामष्टमो रुद्रः साध्यानामपि पंचमः॥
अश्विनौ चापि ते कर्णौ चन्द्रसूर्यौ च चक्षुषी।
अन्ते चादौ च मध्ये च दृश्यसे त्वं परंतप॥
उपेक्षसे च वैदेहीं मानुषः प्राकृतो यथा॥

इत्युक्तोलोकपालैस्तैः स्वामीलोकस्यराघवः ॥
अब्रवीत्त्रिदशश्रेष्ठान्रामो धर्मभृतां वरः ।
योहं यस्य यतश्चाहं भगवांस्तद्ब्रवीतु मे ॥
इति ब्रुवाणं काकुत्स्थं ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ।
अब्रवीच्छृणु मे राम सत्यं सत्यपराक्रम ॥
भवान्नारायणो देवः श्रीमांश्चक्रायुधोविभुः ।
एकशृङ्गी वराहश्च भूतभव्यसपत्नजित् ।
अक्षरं ब्रह्म सत्यं च मध्ये सत्ये च राघव ॥
लोकानां त्वं परोधर्मो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ॥
शार्ङ्गधन्वा हृषीकेशः पुरुषः पुरुषोत्तमः ।
अजितःखङ्गधृग्विष्णुः कृष्णश्चैव बृहद्बलः ॥
सेनानीर्ग्रामणीःसर्वं त्वं बुद्धिस्त्वं क्षमा दमः ।
प्रभवश्चाप्यजश्च त्वमुपेन्द्रो मधुसूदनः ॥
इन्द्रकर्मा महेन्द्रस्त्वं पद्मनाभो रणांतकृत ।
शरण्यं शरणं तं त्वामाहुर्दिव्या महर्षयः ॥
सहस्रशृङ्गो वेदात्मा शतशीर्षो महर्षभः ।
त्वं त्रयाणां हिलोकानामादिकर्तास्वयं प्रभुः ॥
सिद्धानामपिसाध्यनामाश्रयश्चासि पूर्वजः ।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमोंकारः परात्परः ॥
प्रभवं निधन वा तेन विदुः को भवानिति ।
दृश्यसे सर्वभूतेषु ब्राह्मणेषु च गोषु च ॥
दिक्षु सर्वासु गगने पर्वतेषु वनेषु च ।
सहस्रचरणः श्रीमाञ्छतशीर्षस्सहस्रदृक् ॥
त्वं धारयसि भूतानि पृथिवीं सर्वपर्वतान् ।

अंते पृथिव्याः सलिले दृश्यसे त्वं महोरगः ।
त्रीँल्लोकान्धारयन्राम देवगन्धर्वदानवान् ॥
अहं ते हृदयं राम जिह्वा देवी सरस्वती ।
देवा रोमाणि गात्रेषु ब्रह्मणानिर्मिताःप्रभो ॥
निमेषस्ते स्मृता रात्रिरुन्मेषो दिवसस्तथा ।
संस्कारास्तेऽभवन्वेदानैतदस्ति त्वया विना॥
जगत्सर्वं शरीरं ते स्थैर्यं ते वसुधातलम् ।
अग्निःकोपःप्रसादस्ते सोमः श्रीवत्सलक्षणः ॥
त्वयालोकास्त्रयः क्रांताः पुरा स्वैर्विक्रमैस्त्रिभिः ।
महेन्द्रश्च कृतोराजा बलिं बद्धा महासुरम् ॥
सीतालक्ष्मीर्भवान्विष्णुर्देवः कृष्णः प्रजापतिः ।
वधार्थं रावणस्येह प्रविष्टो मानुषीं तनुम् ।
तदिदं नः कृतं कार्यं त्वया धर्मभृतां वर ॥
निहतो रावणो राम प्रहृष्टो दिवमाक्रम ।
अमोघं देववीर्यं ते न ते मोघाः पराक्रमाः ॥
अमोघं दर्शनं राम न च मोघस्तव स्तवः ।
अमोघास्ते भविष्यंति भक्तिमंतस्तु ये नराः ॥
ये त्वां देव ध्रुवं भक्ताः पुराणं पुरुषोत्तमम् ।
प्राप्नुवंति सदा कामानिह लोके परत्र च ॥
इममार्षं स्तवं दिव्यमितिहासं पुरातनम् ।
ये नराः कीर्तयिष्यंति नास्तितेषां पराभवः ॥

दोहा–पंचवटीमहँ जानकी, राम रजायसु पाय ।
पावकमहँ प्रवेश किय, छायारूप टिकाय ॥
सो छाया वपु सिय मिल्यो, प्रगट्यो रूप प्रधान ।
सो पावक धरि अंकमहँ, निकस्यो अति हरषान ॥

चौपाई ।

कह्यो रामसों करत प्रणामा । लेहु शुद्धप्रभु आपनि वामा ॥
जगज्जनानि यह विगत विकारा । धर्मरूप कीरति आकारा ॥
कृपाहेतु रावण घर जाई । दियो परमपद सकुल पठाई ॥
कीरति करुणा भक्ति तुम्हारी । जानि जानकी लेहु खरारी ॥
तिहि अवसर प्रमुदित रघुराई । सीतै लिये निकट बैठाई ॥
सुर मुनि कपि कीन्हें जयकारा । वर्षै कुसुम देव बहु वारा ॥
विधि महेश पावक कहँ रामा । बोले वचन महामतिधामा ॥
जानत रह्यों यदपि सब भाँती । सियहि न दूषणताति नजिकाती ॥
जगअपवाद भीति उर लाई । पावक दियो प्रवेश कराई ॥
कछु कारण औरहु त्रिपुरारी । जानहु आपसहित मुखचारी ॥
तब बोले महेश करतारा । जानै को प्रभु चरित तुम्हारा ॥
आज पूजिगै आश हमांरी । तुम ढिग लखी विदेहकुमारी ॥

दोहा–राजहु राजसमाज नित, सहित सीय रघुराज ।
छायो सुयश दराज जग, भये देवकृत काज ॥

चौपाई ।

अस कहि भये मौन करतारा। तब बोले पुनि शंभु उदारा ॥
उर विशाल कोसल भरतारा । भुज प्रलंब गज कर मदहारा ॥
सकल देव कारज निरधारा । धर्म धुरंधर धरणि विहारा ॥
मेट्यो तीन लोक अँधियारा । निजयश कियो भुवन उजियारा ॥
समर दुरासद रावण मारा । करि प्रण तिलक विभीषणसारा ॥
देवकाज सब नाथ सम्हारा ।दुखित भरत अब अनुज तुम्हारा ॥
अवधि टरे जो अवध सिधारा। को पुनि भरत प्राण रखवारा ॥
कौशल्याके प्राण अधारा । कैकेयीके शोक अपारा ॥
दुखित सुमित्रा अति यहि बारा। देहु मातु सुख राजकुमारा ॥

करि सनाथ रघुकुल परिवारा । लीजै शीश राजकर भारा ॥
करि वसुधामहँ धर्मप्रचारा । थापन करि रघुकुल संसारा ॥
अश्वमेध करिकै बहु बारा । दै महिदेवन धन पट हारा ॥
बिहरि यकादश वर्ष हजारा । गवनहु नाथ विकुंठ अगारा ॥
दोहा–जब जैहौ प्रभु अवधको, होइ तिलक तुम्हार ।
तब मैं दरशन करन हित, ऐहौं लै निज दार ॥

चौपाई ।

तिहि अवसर दशरथ महराजा । आयो चढो विमान दराजा ॥
कोटिन सूरज सरिस प्रकासा । तब बोल्यो प्रभुसों कृतिवासा ॥
आवत दशरथ पिता तिहारे । तुव तारित सुरलोक सिधारे ॥
रघुपति लीला लखन तिहारी । भये महेन्द्रहि महल बिहारी ॥
लषण सीययुत करहु प्रणामा । अब पूरयो दशरथ मनकामा ॥
पितै निहारि लषण रघुराई । लषण सीययुत आगे आई ॥
कहि निजनाम राम अभिरामा । अनुज सीययुत कियो प्रणामा ॥
देखि राम नृप त्यागि विमाना । दौरयो तनक रह्यो, नहिं भाना ॥
लियो लाल कहि अंक उठाई । बार बार दृग वारि बहाई ॥
सीता लषण राम कहँ राजा । बैठायो लहि मोद दराजा ॥
पुनि पुनि मिलन सुबाहु पसारी । चूमिवदन शिर सूंघि सुखारी ॥
गद्गद कंठ बहत दृग वारी । कह्यो अवधपति गिरा उचारी ॥
दोहा–यदपि विभव वासवसरिस, लह्यो स्वर्गमें आय ।
तदपि न लागत नीक कछु, तुम विन तोरि दुहाय ॥

चौपाई ।

जौन कैकयी वचन उचारा । सो नहिं बिसरत मोहिं बिसारा ॥
तापसवेष विभूति निरासी । चौदह वर्ष राम वनवासी ॥
केकयिवचन बाणकी गाँसी । हियते निकसत नाहिं निकासी ॥

आयों इन्द्रलोकते धाई। सुनिकै रावण राम लराई ॥
कुशल जानकी लषणसमेतू। तुमहिं लख्यों पायों सुखसेतू ॥
कह्यो शक्र मुहिं सकल बुझाई। परब्रह्म जानहु रघुराई ॥
हरनहेतु अवनी कर भारा। तुव घर लियो विष्णु अवतारा ॥
करनहेतु रावण संहारा। भूप विष्णु तव भयो कुमारा ॥
पै मुहिं लागहु वैसहि रामा। पेखत प्रीति पूर प्रति यामा ॥
लगहु छोहरा सम रघुनायक। यदपि भुवनपालक गतिदायक ॥
पूरण भयो मनोरथ आजू। तुमहिं कुशल देख्यों रघुराजू ॥
तुव तारित मै स्वर्गहु माहीं। लह्यो इन्द्र अर्धासन काहीं ॥

दोहा—अष्टावक्र मुनीश जिमि, पिता कहोलो नाम।
तारचो जिमि तारचो हमहिं, तुमहुं राम अभिराम ॥

चौपाई।

आज कौशिला मोदित होई। तुमहिं अवध अभिषेकित जोई॥
करि वनवास शत्रु संहारी। जैहौ कौशलनगर सुखारी ॥
जे देखिहैं तुमहिं नर नारी। तेई भाग्यवंत जगभारी ॥
सुनहु राम त्रिभुवन भरतारा। होई जब अभिषेक तुम्हारा॥
धर्मधुरंधर धीरज सिन्धू। करुणाकर दीननके बन्धू ॥
तुमहि देखिहौं भरत समेतू। तब जैहौं पुनि आप निकेतू ॥
चौदह वर्ष भये वनवासी। मोरि प्रतिज्ञा पालेहु खासी ॥
सीतालषण सहित रघुराई। मम हित सह्यो कलेश महाई ॥
भयो राम पूरण वनवासा। रावण हानि यश कियो प्रकासा॥
कियो देवकारज सब भाँती। गावत कीरति देव जमाती ॥
अवधि माहिं अब अवध सिधारहु। अपनो राजतिलक सुतसारहु ॥
करहु बन्धुयुत कोशलराजू। राजहु कोटि बरिस रघुराजू ॥

दोहा–पिता वचन सुनि मोद भरि,कह्यो जोरि कर राम।
देहु मोहिं वरदान यक, बन्यो होय जो काम ॥

चौपाई ।

मम वनवास गवनके काला। कह्यो केकयीको महिपाला ॥
करहुँ तोर सुत संयुत त्यागा। रघुकुल विपिन दवारि अभागा॥
यह तुव शाप कैकयी काहीं। भरतसहित लागे अब नाहीं ॥
भरते जननि सहित महराजा। करहु अनुग्रह देव दराजा॥
सुनि सुतवचन भूप मुसक्याई। लीन्ह्यों रामहि हिये लगाई ॥
कह्यो वचन अब तुम विन आना। करै कौन अस वचन बखाना॥
तजो कैकयी करमैं द्रोहा। तुमहिं देखि लहि मुद संदोहा॥
बहुरि लषणको मिलि अवधेशा। चूमि वदन दीन्ह्यों उपदेशा ॥
कीन्ही सकल राम सेवकाई। लहहु धर्मफल सुयश बडाई॥
सुनहु सुमित्रानंदन प्यारे। सेवक धर्म सकल निरधारे॥
किय प्रसन्न रामहिं सब भाँती। तुहि विलोकि भइ शीतलछाती॥
रामकृपा सुधरहिं दोउ लोका। तोहिं कौन अब जगमहँ शोका॥

दोहा–सकल लोकहितमें निरत, राम विष्णु अवतार।
तीनि लोक वासवसाहित, भजत राम प्रतिवार ॥

चौपाई ।

सिद्ध सुरर्षि महर्षि अनंता। पूजहिं राम जानि भगवंता॥
परब्रह्म अक्षर अविनासी। माया जासु रामकी दासी॥
देवन हृदय निरंतर वासी। सकल प्रकाशन केर प्रकासी॥
राम परन्तप परम प्रभाऊ। अज अनादि अति सरल सुभाऊ॥
तासु चरणसेवन तुम कीन्हा। सहजहिसकल सुकृत फललीन्हा॥
सावधान है सेवन कीजे। सदा रामशासन शिर लीजे॥
राम सीय पितु मातु तिहारे। मानहु सब दिन सरिस हमारे॥

नृप लखि कर जोरे वैदेही । कहे वचन सुतवधू सनेही ॥
सुनहु पुत्रिका जनककुमारी । किहेहु रामसेवन सुखकारी ॥
कह्यो कटुक कछु जो रघुराई । दिह्यो ताहि स्वप्नेहु बिसराई ॥
तुव कीरति हित अग्नि प्रवेशा । फरमायो रघुवंश दिनेशा ॥
किहेहु अबहुँ पतिसों नहिं माना । स्वपनेहु कोप न होय महाना ॥
दोहा–यथा पतिव्रत धर्म तैं, सीता दियो निबाहि ।
तथा जगतमें दूसरी, नारि निबाही नाहि ॥

चौपाई ।

कस न होय मिथिलापतिबेटी । देवी सकल तोर हैं चेटी ॥
किह्यो अकाम राम सेवकाई । राम मातु पितु गुरु सुत भाई॥
सुयश सनेह प्रभाव बडाई । जैहौ अनपाई तुम पाई ॥
तेरो यश जग सेतु बँधायो । मैथिलकुल महिमा अति पायो ॥
अस कहि दशरथभूप सुजाना । जनकसुता शिर करि आघ्राना ॥
लषण राम मिलि बारहिं वारा । डारत दृग आनँद जलधारा ॥
दिव्यविमानहिं भयो सवारा । कियो प्रणाम राम बहु वारा ॥
कीन्ह्यों प्रणाति लषण शिरनाई । कहे जोरि कर तहँ दोउ भाई ॥
त्यागेहु नहिं सुधि पिता हमारी । तुव प्रताप पायों बडवारी ॥
कियो प्रणाम श्वशुर कहँ सीता । आशिष दीन्ह्यों भूप पुनीता ॥
चढि विमान दशरथ महराजा । गवन्यो शक्रसदन कृतकाजा ॥
गावत चले सकल गंधर्वा । नाचत चलीं अप्सरा सर्वा ॥
दोहा–कपिपति अंगद मरुतसुत, जाम्बवान लंकेश ।
करि दशरथ दरशन तहाँ, भये सुखी तिहि देश ॥

चौपाई ।

शक्रलोक जब गे अवधेशा । कह्यो रामसों तब अमरेशा ॥
लोकपाल हम रचे तुम्हारे । दरशन होत अमोघ हमारे ॥

करौं कौन तुम्हरी सेवकाई । पूरण ब्रह्म आप रघुराई ॥
कह्यो शक्रसों प्रभु मुसक्याई । यह वरदान देहु सुरराई ॥
जे वानर मम हित तनु त्यागे । मारि शत्रु मरिगे नहिं भागे ॥
छोडि कलत्र पुत्र घर आये । सकल काज मम हित बिसराये ॥
जियें सकल बलओजनिधाना । रह्यो जासु यश प्रथम प्रमाना ॥
कह्यो देवपति सुन रघुराया । अतिदुर्लभ जीवन मृत काया ॥
तुम समरथ जग अंतर्यामी । चहहु सु करहु ईश अज स्वामी ॥
कीश भालु जागिहैं अपारा । सोवत मनहु भये भिनसारा ॥
जसके तस ह्वैहैं कपि भालू । नीरुज निर्व्रण कृपा कृपालू ॥
जहँ रैहैं कपि भालु तुम्हारे । होहिं सरितसर सजल अपारे ॥

दोहा-जिहि वन वानर भालु तुव, करिहैं वास कृपाल ।
तहँ फुलिहैं फलिहैं विटप, पाय अकाल सुकाल ॥

चौपाई ।

असकहि सुरपति अतिहिय हर्षे । कपिदल उपर सुधाजल वर्षे ॥
उठे भालु कपि जसके तैसे । नीरुज निर्व्रण सोवत ऐसे ॥
एकहि बार किये जयकारा । मनहुँ महोदधि तज्यो करारा ॥
मिलहिं परस्पर वानर भालू । कहहिं कौन प्रभुसरिस दयालू ॥
तहाँ समिटि सब सुर यकबारा । करिप्रणाम अस वचन उचारा ॥
गवनहु नाथ अवधपुर काहीं । बिदा देहु वानर घर जाहीं ॥
जनकसुते आश्वासन कीजै । विरहजनितदुख शमन करीजै ॥
धृतव्रत आरत भरत निहारहु । जाय अवध मातनदुख दारहु ॥
दुखित शत्रुहन शोक नशावहु । राजतिलक आपन करवावहु ॥
अस कहि सुरकरि प्रभुहि प्रणामा । चढि विमान गवने निजधामा ॥
प्रभु कीन्ह्यों सुरपतिहि प्रणामा । गयो इन्द्रपुर पूरणकामा ॥
भये अस्त दिनकर तिहिकाला । आई निशा उदित उडुमाला ॥

दोहा-राम लषण कपि सैन्ययुत, कीन्ह्यों सुखित निवास ।
जोरि पाणि बोल्यो वचन, आय विभीषण पास ॥

चौपाई ।

मज्जन करहु भ्रातयुत रामा । पहिरहु भूषण वसन ललामा ॥
लेपन करहु अंग अँगरागा । तैसे वैदेही बडभागा ॥
सुर गंधर्व असुरकी कन्या । मज्जन करवावहिं जग धन्या ॥
यह विभूति रघुनाथ तिहारी । होय कृतारथ है न हमारी ॥
सुनत विभीषण वचन रसाला । हिय हर्षित हँसि कह्यो कृपाला॥
मोपर नेह अछेह तुम्हारा । करहु जु शासन होय हमारा ॥
कपिपति अंगद अरु हनुमाना । जाम्बवान आदिक बलवाना ॥
वानर वीरनको नहवावहु । विविध वसन भूषण पहिरावहु॥
सखा करहु सबकर सत्कारा । यह सब पूजन जानु हमारा ॥
सदा सुखोचित कपिकुलराजा । सह्यो दुसह दुख मेरे काजा ॥
मैं नहिं मज्जहुँ सो सुनु कारण । कीन्हें भरत मोर व्रत धारण ॥
राजकुमार बडो सुकुमारा । सखा भरत मुहिं प्राणपियारा ॥

दोहा-तिहि बिन मज्जन किमि करहुँ, धरहुँ वसन निज अङ्ग ।
किमि भूषण पहिरौं सखा, तजि न सकौं तिहि संग ॥

चौपाई ।

जैहौं अवध जु अवधि बिताई । मिली न जियत प्राणप्रिय भाई॥
सीता लषण सकल परिवारा । मोहिं भरतसम नाहिं पियारा ॥
जो मम करन चहहु व्यवहारा । तौ पहुँचावहु अवध अगारा ॥
विषम पन्थ दूरी अति देशा । बीतत अवधि होत अन्देशा ॥
कह्यो विभीषण तब कर जोरी । सुनहु नाथ विनती यह मोरी ॥
अवध एक दिनमहँ पहुँचैहौं । नाथ सकल सन्देह मिटैहौं ॥
है यक पुष्पक नाम विमाना । भानु समान प्रकाश महाना ॥

जीति कुबेर दशानन ल्यायो। मन अनुसारहि चलनै त्वरायो॥
सो विमान हाजिर तुव हेतू। मोरि विनय सुनु कृपानिकेतू॥
जो मोपर करियत अति छोहू। जो राखहु सौहृद संदोहू॥
तौ सिय लषणसहित रघुराई। बसौ दिवस द्वै युत कपिराई॥
जो कछु पूजन करहुँ तुम्हारा। सैन्यसहित अवधेशकुमारा॥

दोहा—करि कृपालु मोपर कृपा, सबै ग्रहण करि लेहु।
दीन जानि मुहिं मान दै, कीजै सफल सनेहु॥

चौपाई।

चरण शीश धरि नाथ मनाऊँ। कौन योग्यता तुम्हैं दिखाऊँ॥
यह संपति काके हित लागी। जो जोर्यो दशकण्ठ अभागी॥
सखा विनय सुनि दीनदयाला। बोले जल भरि नयन विशाला॥
कीन्यो सखा सकल सत्कारा। तुम्हैं उऋण मैं युगन हजारा॥
दै सलाह पुनि कियो सहाई। आपन तन धन प्राण लगाई॥
को अस करी मित्र उपकारा। यथा विभीषण सखा हमारा॥
कहँलगि कहौं न कहे सिराई। भरत विभीषण नेह बडाई॥
भरत प्राण अब हाथ तिहारे। करहु उचित जो मनहिं विचारे॥
भरत समीप बसत मन मोरा। तुमसों चलत सखा नहिं जोरा॥
चित्रकूटमहँ जब हम आये। घरते भरत मनावन धाये॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा। आईं सब मम मातु पवित्रा॥
सखा निषादराज मम प्यारा। भरत शत्रुहन संग सिधारा॥

दोहा—अवधनगरवासी सकल, चित्रकूट महँ आय।
मुहिं मुरकावनहेतु तहँ, कीन्ह्यों कोटि उपाय॥

चौपाई।

मुहिं ले चलन भरत अभिलाषी। मैं निज पिता प्रतिज्ञा राषी॥
भरत कह्यो कछु देहु अधारा। मैं पादुका दियों तिहिं बारा॥

भरत दियो पुनि वचन सुनाई । ऐहौ जो प्रभु अवधि बिताई ॥
तो मुहिं नाथ जियति नहिं पैहौ । यह कलंक किहि भाँति मिटैहौ ॥
भरतसनेह सकोच तुम्हारा । मम मन भ्रमत न पावत पारा ॥
भरत मरत मरिहैं सब माता । होई रघुकुल केर निपाता ॥
कहि नहिं सकत सकोच तिहारे । बनत मोर अब अवध सिधारे ॥
सखा क्षमहु यह चूक हमारी । किह्यो न कोप सनेह विचारी ॥
विनती करहुँ सखा कर जोरी । लाउ विमान जानि रुचि मोरी ॥
भयो सिद्ध सिगरो मम काजा । कीन्ह्यो तोहिं लंक महराजा ॥
अब भरतहु कर राखहु प्राणा । तोर निहोर मोर कल्याणा ॥
याहिविधि राम विभीषण बाता । करत परस्पर भयो प्रभाता ॥

दोहा—राम वचन कल्याण सुणि, लंकराज मतिमान ।
जाय लंक ल्याये तुरत, कामग पुष्पविमान ॥

सवैया ।

कंचनके मणिमंडित भौन, बनी फटिकैं फरसैं मनहारी ॥
सर्व अराम के धाम अनेक, लसैं वर राजत गोपुर भारी ॥
श्वेत पताके भले फहरैं, जिनमें अरुझात प्रयात तमारी ॥
श्रीरघुराज भये अति राजी, सियायुत पुष्पविमान निहारी ॥
किंकिणि जाल बँधे चहुँओर, भई घनि घंटनकी घहनारी ॥
त्योहीं अनेकन भाँति मणीनकी, छाय रही तिहि देश उज्यारी ॥
जोरि उभय कर जाय विभीषण, राम सों कीन्ह्यों विनय सुखकारी ॥
कोशलराज सुनो रघुराज, विमान तयार करीजै सवारी ॥

दोहा—काह उचित अब नाथ मुहिं, दीजै उचित निदेश ।
जामें परैं न मोहिं कछु, दोऊ लोक भदेश ॥

चौपाई ।

सुनत सखाके वचन कृपाला । मिले दौरि युग भुजन विशाला ॥

कही विभीषणसों मृदु वानी। सखा अहौ तुम बडे विज्ञानी॥
हमहूँ कहहिं उचित अस आजू। पूजहु सैन्यसहित कपिराजू॥
हमरे तुम्हरे हित कपि नाना। त्यागे समर परम प्रिय प्राना॥
वसन विभूषण धन बहु जाती। पूजहु सिगरी कपिन जमाती॥
सखा शक्ति अनुसार तुरंता। पूजहु सब वानर बलवंता॥
तुमहिं कृतघ्न दोष नहिं लागी। अवनी अनुपम कीरति जागी॥
रत्न कनक संपति विधि नाना। जोरै सकल काल मतिमाना॥
दान काल भूपति जो पावै। देत वित्त नहिं बार लगावै॥
सबसों करै प्रीति परतीती। जो जस होय यही नृप रीती॥
हीन दीनमति चित्त मलीना। क्षमत चूक नहिं गुणगणछीना॥
प्रीति प्रतीति न कहुपर राखै। देत दंड सबपर नित माखै॥

दोहा–ऐसे ठाकुरको तजत, काल पाय सामंत।
सैन्य करत विश्वास नहिं, होत पराजय अंत॥

चौपाई।

सुनत विभीषण रघुपति बैना। नाय माथ नाथहि मुद ऐना॥
गयो लंकमहँ खोलि भँडारा। पट भूषण ऐंचाय अपारा॥
अर्ब खर्ब चामीकर मुद्रा। जो संचित किय दशमुख क्षुद्रा॥
वसन विभूषण सकल भराई। आयो जहाँ कीश समुदाई॥
कपिपति अंगद अरु हनुमाना। नील सकल कपिसैन्यप्रधाना॥
बली बलीमुख और प्रधाना। यथा योग्य सबकहँ सन्माना॥
जोरि पाणि करि विनय बडाई। लंकराज दीनता दिखाई॥
पट भूषण सबकहँ पहिराये। वानर बली देवसम भाये॥
पट भूषण कपि ऋक्षहु पहिरे। नचैं नगरमहँ भीतर बहिरे॥
हेमहार अंबर जरतारी। दियो विभीषण कपिन पुकारी॥
जो जस रह्यो ताहि तस दीन्हा। निशिचरनाथ योग्यता चीन्हा॥

मर्कटकटक न कोउ अस बाकी। लेत लेत नहिं मति जिहि थाकी।।
दोहा—निशिचरनाथ उदारता, देखि कपिन व्यवहार।
लज्यो वित्तपति चित्तमहँ, कहि धनि अनुज हमार।।

चौपाई।

पूजित सैन्य सकल लखि रामा। भये प्रमोदित पूरणकामा।।
सखा सराहन लगे कृपाला। तुम सम को उदार यहि काला।।
वर्षें देव गगनते फूलं। कहि जय जय रघुपति सुखमूला।।
अवसर जानि भरत सुधि कैकै। वैदेही लछिमन सँग लैकै।।
पुहुपविमान चढे रघुराई। राजासन बैठे छबिछाई।।
खडे चहूँकित कीश अपारा। कपिपति अंगद पवनकुमारा।।
ऋक्षराज अरु राक्षसराजा। नील सैन्यपति सहित समाजा।।
बली बलीमुख मुख्य निहारी। बोले मंजुलवचन खरारी।।
कीन्ह्यों मोर मित्रकर काजा। करि विक्रम हनि शत्रुसमाजा।।
तुमसे उऋण कबहुँ हम नाहीं। जाहु सबै निज निज घरकाहीं।।
कपिपति निशिचरपति चित चाहे। हित कारज मित्रता निबाहे।।
किष्किधै कपिनायक जाहू। बसौ लंकमहँ निशिचरनाहू।।
दोहा—भालु कीश निज निज भवन, मोदित करहिं पयान।
संग हमारे अवधपुर, चलहिं एक हनुमान।।

चौपाई।

मोर प्रताप प्रभावहि पाई। सकैं न धर्षन करि सुरराई।।
शंभु स्वयंभु मानिहैं भीती। लोकपाल कोउ सकै न जीती।।
मांगि बिदा हमहूँ सब पाहीं। करहिं पयान अवधपुरकाहीं।।
अजर अमर रहियो सुख बोरे। प्राणहुँते प्रिय हौ सब मोरे।।
सुनत सुखद रघुनायक वानी। दुखी सुखी भे कपि बलखानी।।
कहिन सकत तहँ प्रभुहि डराई। देखन चहत अवध सँग जाई।।

तहँ निशिचर वानरकुलभूपा। कहे वचन कर जोरि अनूपा॥
सकल वीर चाहत अस स्वामी। तुम सबके हौ अंतयांमी॥
लखैं अवधपुर संग सिधाई। राजतिलक देखैं सुख छाई॥
लौटि आशु निज निज घर ऐहैं। जीवत भरि रघुवरयश गैहैं॥
निरखि राजधानी मनहारी। होब सकल सब भाँति सुखारी॥
कौसल्यापद वंदन कैकै। ऐहैं भवन कृतारथ ह्वैकै॥
दोहा–शाखामृग अस कहत सब, हमरहु अस अभिलाष।
उचित होइ सो करहु प्रभु क्षमहु चूक तजि माष॥

चौपाई।

संग चलब अभिलाष विचारी। कह्यो कृपानिधि वचन पुकारी॥
गवनहु संग सुकंठ हमारे। सहित वीर वानर बलवारे॥
चलहु विभीषण संग त्वराई। लखहु राजधानी मनभाई॥
यह अभिलाष तु रह्यो हमारा। लाजविवश नहिं वचन उचारा॥
सुनि प्रभुवचन कीश सुख पाये। मानहु मरत अमिय मुख नाये॥
चढे सकल कपि पुहुपविमाना। निशाचरेन्द्र कपीन्द्र महाना॥
कपि अनन्त कोटिन तहँ बैठे। मानहु मोद महोदधि पैठे॥
कोउ कपि लह्यो न कछु संकेता। पुहुपविमान प्रभाव निकेता॥
राजत राजसिंहासन रामा। वामभाग जानकी ललामा॥
दहिने लसत लषण रणधीरा। कपिपाति अंगदादि कपिवीरा॥
वामभाग निशिचरकुलभूषण। सन्मुख हनुमत बैठ अदूषण॥
कपिसमाज राजत रघुराजा। मनहु देवमंडल सुरराजा॥
दोहा–जानि समय शुभ राम तहँ, शासन दियो सुजान।
अवधओर उत्तरदिशा, गवनै पुहुपविमान॥

चौपाई।

राम रजाय पाय हरषाना। गगनपन्थ ह्वै चल्यो विमाना॥

मची तहाँ किंकिणि झनकारी। घंटानाद भयो अति भारी॥
सुरकुसुमावलि झरी लगाये। जय रघुवंश वीर मुख गाये॥
गयो गगन जब ऊंच विमाना। देख्यो समरभूमि भगवाना॥
कह्यो जानकीसों मुसक्याई। समरभूमि देखो मन भाई॥
वानर राक्षस समर महाना। यहि थल भयो घोर घमसाना॥
यहि थल मैं रावणको मार्‍यों। यहि थल कुंभकर्ण संहार्‍यों॥
यहि थल नीलहु हत्यो प्रहस्तै। धूमअक्षवध हनुमत हस्तै॥
हन्यो सुषेणहु विद्युन्माली। अंगद भयो विकट संघाली॥
यहि थल देवर लषण तुम्हारा। शक्रजीत कहँ समर सँहारा॥
यहि थल मारि गयो अतिकाया। लषण ब्रह्मशर बाण चलाया॥
विरूपाक्ष अरु महापार्श्व भट। हने अकंपन कपिवर चटपट॥

दोहा—देवांतकहु नरांतकहु, अरु त्रिशिरा बलवंत।
रण उन्मत्त विमत्त भट, कुंभ निकुंभ दुरंत॥
वज्रदन्त मकराक्ष भट, अरु दुर्धर्ष अकंप।
शोणिताक्ष यूपाक्ष दोउ, अरु रसना जिहि संप॥
ब्रह्मशत्रु आदिक सबै, जे निशिचर बलवान।
मारे सकल कपीश भट, तोरे हेतु निदान॥

चौपाई।

यहि थल मंदोदरी विलापा। कीन्ह्यों निहतकंत लहि तापा॥
मैथिलि लखहु महोदधि घोरा। उठैं तरंग तुङ्ग करि शोरा॥
यह देखहु मयनाक महीधर। जो विश्राम भयो हनुमत कर॥
यह उत्तर तट सागर हेरो। कियो प्रथम वानरदल डेरो॥
इतहीं मिल्यो विभीषण आई। किह्यो लंकपति मानि मिताई॥
सेतुबन्ध प्रद पुण्य ललामा। थाप्यो महादेव यहि ठामा॥

तीरथ महापाप कर हारी । सेतुबन्ध यह नाम उचारी ॥
इन शिवकर रामेश्वर नामा । पूरण करत मनुज मनकामा ॥
महा पवित्र पुण्यथल प्यारी । करहु प्रणाम महेश निहारी ॥
सीता किय प्रणाम कर जोरी । चल्यो विमान सवेग बहोरी ॥
किष्किंधाके उपर विमाना । गयो गगनमहँ वेग महाना ॥
तब सिय कह्यो सुनहु रघुराई । तारादिक तिय लेहु बुलाई ॥

दोहा—और बली वानरनकी, लीजे नारि बुलाय ।
चहौं राजधानी लखन, वानरीन लै जाय ॥

चौपाई ।

प्रभु कह उचित कही तैं सीता । तारादिक तिय चलैं पुनीता ॥
अस कहि राम विमान उतार्यो । सुग्रीवहि अस वचन उचार्यो ॥
तारा रुमा आदि तिय जेती । चलैं राजधानी मम तेती ॥
सुखी सुनत सुग्रीव तुरंता । गयो भवन वानर बलवंता ॥
बोल्यो वचन सुनहु प्रिय तारे । गवनहु अवध विमान सवारे ॥
जनकलली वानरी बुलाई । हैहौ शुचि सिय दरशन पाई ॥
अवध जाय देखब अभिषेका । कौसल्यादिक रानि अनेका ॥
सुनि तारा लहि मोद अपारा । बोलि बानरिनि करि शृङ्गारा ॥
परी जाय सिय चरणनमाहीं । भई विशोक देखि प्रभु काहीं ॥
उड्यो विमान गगनमहँ धायो । तब सीता कहँ राम बतायो ॥
यहि थल मैं मार्यों सिय वाली । बस्यों प्रवर्षन पादप माली ॥
ऋष्यमूक गिरि लखै जानकी । जिहि छवि घनदामिनिसमानकी ॥

दोहा—इहां मिल्यों सुग्रीवको, भयो सखा कपि मोर ।
कीन्ह्यों प्रण वालिवधन, लखे विभूषण तोर ॥

चौपाई ।

यह पंपासर विपिन सुहावन । शबरीको आश्रम अति पावन ॥

इत कबन्ध जिहि योजन बाहू । काटि भुजा मारे हम ताहू ॥
रावणसों इत लरयो जटाई । तुवहित तनु परिहारि गहि पाई ॥
पंचवटी लखु जनककुमारी । गोदावरी सरित सुखकारी ॥
लखै पर्णशाला नृपबाला । आयो इतै हरन दशभाला ॥
यह अगस्त्यआश्रम सिय देखै । इतै सुतीक्षण कुटी परेखै ॥
चल्यो सवेगहि व्योमविमाना । तव शरभंगाश्रम दरशाना ॥
कह्यो राम इत बासव आयो । मुनि तनु तजि परधाम सिधायो ॥
लखै जनकदुहिता पुहकरनी । मारि विराध गाडिदिय धरनी ॥
निवसहिं इते अत्रि अनुसुइया । कियो न कहु पर कबहुँ असुइया ॥
चित्रकूट लखु प्राणपियारी । जिहि दरशन अघ रहत न भारी ॥
लखै विमल मंदाकिनि सरिता । दरशत अघहारि आनँदभरिता ॥

दोहा–सुहिं सुरकावन भरत इत, आयो मातु समेत ।
चित्रकूट चितवत चतुरि, चित्त चैन अतिदेत ॥

चौपाई ।

चित्रकूट नाके रघुवीरा । लख्यो यमुन मर्कतमय नीरा ॥
अति उतंग नभ कियो विमाना । परचो देखि तीरथ परधाना ॥
गंग यमुन संगम शित श्यामा । तीरथराज सकल सुखधामा ॥
कह्यो राम सिय लखै प्रयागा । करु प्रणाम संयुत अनुरागा ॥
पुनि उत्तर लखि गिरा उचारी । शृङ्गवेरपुर दीसत प्यारी ॥
सखा निषादराज प्रिय मोरा । हैहै बसत विरह दुख बोरा ॥
पुनि उत्तर लखि पाणि पसारी । बोले राम त्वरा करि भारी ॥
लखु लखु लखु मिथिलेशकुमारी । राजधानि ममपैर निहारी ॥
देखु अवधपुर महल उतंगा । देखि परति सरयू सित रंगा ॥
करु अवधहि प्रणाम वैदेही । पुरी पियारि लगति नहिं केही ॥

लषण जानकी संयुत रामा । करत भये सानंद प्रणामा ॥
निशिचर वानर भे सब ठाढे । अवध लखन उर आनँद बाढे ॥

दोहा–चामीकर मंदिर विमल, चमकि रहे चहुँ ओर ।
मनु कनका चल शृङ्ग बहु, तुंग उठे रविओर ॥

चौपाई ।

किये कीश निशिचरौ प्रणामा । राम राजधानी छविधामा ॥
कोसलपुरी प्रशंसन लागे । मर्कट निशिचर अति अनुरागे ॥
पेखि प्रयाग विमान उतारे । प्रभु वेणी मज्जन पगु धारे ॥
सीय लषण युत मज्जन कीन्हें । विप्रन दान अनेकन दीन्हें ॥
भरद्वाज आश्रम प्रभु आये । मुनिहि विलोकि चरण शिरनाये ॥
पूंछि कुशल पुनि कह मुनिकाहीं । है सुभिक्ष कोसलपुर माहीं ॥
हैं अरोग कोसलपुर वासी । औरहु कहौ कछुक तपरासी ॥
जीवत भरत अहैं की नाहीं । जननी जियति बसति पुर माहीं ॥
राम वैन सुनि मुनि मुसक्याई । बोले वचन मोद उर छाई ॥
शिर शासन धरि भरत तुम्हारा । नंदिग्राममहँ वसत उदारा ॥
जटा जूट शिर मलिन शरीरा । विरह कृशित धारे यक चीरा ॥
तव पादुका पूजि दिन राती । भरत करत कछु शीतल छाती ॥

दोहा–सकल कुशल तौ महल में, आप विरह दुखघोर ।
पुरवासी अरु मातु सब, विकल फिरैं चहुँ ओर ॥
लषण जानकी सहित तुम, दंडक प्रविशे राम ।
निज पगसों परशत पुहुमि, पितु प्रणपूरण काम ॥
रह्यो एक दिन सो दुखद, दुवनहुँ देखत शोक ।
भयो एक दिन आज अब, आनँदभरयो त्रिलोक ॥

चौपाई ।

लषण सीय युत कुशल निहारी । भई पूरि अभिलाष हमारी ॥

जौन भयो दुख सुख वनमाहीं । तपबलसों मैं लख्यों इहाहीं ॥
सीता हरण मरीच विनाशा । कात्यो जो कबंध भुज पाशा ॥
शबरी दरश कपीश मिलापा । पंपासर जस कियो विलापा ॥
बाली निधन प्रवर्षन वासा ।सिय खोजन कपिगे दश आसा॥
कूदि सिंधु जिमि पवनकुमारा । हनि राक्षस लंका जिमि जारा ॥
जिमि कीन्ह्यों नल सागर सेतू । अंगद गवन सुरारि निकेतू ॥
भयो समर कपि राक्षस केरा । यथा आप लंका गढ घेरा ॥
कुंभकर्ण रावण घननादा ।जिहि विधि मारि लह्यो जयवादा॥
जिहि विधि देव सबै तहँ आये । सीतै अग्नि प्रवेश कराये ॥
भयो विदित सब मुहिं रघुराई । तुव प्रताप मैं तप बल पाई ॥
अस कहि भरद्वाज मुनिराई । पूज्यो प्रभुहि सविधि मन लाई॥

दोहा—कह्यो जोरि कर मुनि बहुरि, करौ आज विश्राम ।
कालिह करहु कोसल नगर, गवन लषण सियराम ॥

चौपाई ।

एवमस्तु कहि तहँ रघुराई । बसे प्रयाग महा सुख पाई ॥
भरद्वाज मुनि महा प्रभाऊ । कियो निमन्त्रण सहित उराऊ ॥
फूली फरी तरुन समुदाई । सकल विपिन ऋतु अनऋतुपाई॥
भये कल्पतरु सकल समाना । हरित विपिन वर भूरुह नाना ॥
वानरवर जस मनमहँ भावैं । मनवांछित तुरंत सो पावैं ॥
धरणी योजन तीनि प्रयंता । फरे अमियफल विटप अनंता ॥
नदी बहन लागीं पयधारा । दधि मधु घृत रस सिता अपारा ॥
भे सुन्दर मंदिर निर्माना । आवन लगीं अप्सरा नाना ॥
कह्यो राम मुनिसों कर जोरी । तुम दूसर विधि अस मति मोरी॥
यह मम विनय सुनहु मुनिराई । जो मैं चहौं जाउँ सो पाई ॥
तुम आतिथ्यकर्मके व्याजू । प्रगटहु वासव भोग दराजू ॥

सो विन भरत फीक सब लागै। अब तिहि देखनको जिय माँगै ॥

दोहा–ताते और न करहु कछु, देहु यही वरदान ।
इतते अरु मुनि अवध लगि, लखौं विपिन हरियान ॥
फूलैं फलैं अनेक द्रुम, किसलय होइ अनंत ।
नदी सजल निर्मल विपुल, सरसी सर जलवंत ॥

चौपाई ।

यही देहु मुनिवर वरदाना । करहुँ अवधपुर काल्हि पयाना ॥
एवमस्तु तहँ मुनिवर भाष्यो । प्रभुकी सकल भाँति रुखराख्यो ॥
लै प्रयागते अवध प्रयंता । पादप भये फूल फलवंता ॥
बोल्यो मुनि सुनिये रघुराई । जहँ रहिहै वानरसमुदाई ॥
फूलैं फलैं भूमिरुह नाना । देहुँ आजते यह वरदाना ॥
चैत्र शुक्ल पंचमि है आजू । आये रघुपति तीरथराजू ॥
चौदह वर्ष अवधि गै पूजी । अवध जाहु अब बात न दूजी ॥
आजहि भरतहि खबरि जनावहु। कोसलनगर महामुद छावहु ॥
प्रभु कह उचित कह्यो मुनिज्ञाता। अबहीं अवध जात कोउ ताता ॥
अस कहि सकल कपीश निहारा। तेज बुद्धि बल ओज बिचारा ॥
सब विधि योग जानि हनुमाना । कहे वचन मंजुल भगवाना ॥
जाहु अवध केसरीकिशोरा । जहाँ बैठ भ्राता लघु मोरा ॥

दोहा–सुन्यो वचन तुम भरतके, देख्यो सब व्यवहार ॥
ताकी मन अभिलाष गुणि, पेख्यो सकल अकार ॥

चौपाई ।

पूँछि सकल वृत्तांतहि जानी । ताकी रुख लीन्ह्यो पहिचानी ॥
होय राज्यलोभी यदि भ्राता । तौ न कह्यो मम आवनि बाता ॥
आशुहि आय खबरि मुहिं देहू। मैं नहिं तजिहौं भरत सनेहू ॥
करिहौं और ठौरकी राजू । होय भरत कोसल महराजू ॥

यदपि भरत मम अगम सनेहू। कंकर इंचे गिरत न गेहू ॥
तदपि पितामह पितुकी राजू । पाय काहि नहिं गर्व दराजू ॥
भरत खबरि लै कहो सुजाना । जबलगि करौं न दूरि पयाना ॥
शृङ्गवेरपुर प्रथमहिं जाहू । सखा निषादराज मम बाहू ॥
भरतहुते अति मोहिं पियारा । मेरे विरह सहत दुख भारा ॥
मम आवनिकी खबरि कहीजै । तासों पूछि अवधपथ लीजै ॥
पूछेहु भरतहु कर व्यवहारा । जाहु आशु अब पवनकुमारा ॥
सुनि प्रभु वैन अंजनीनंदन । चल्यो अवध कहँ करि पदवंदन॥

दोहा—भरद्वाजके आश्रमै, वसे निशा सो राम ।
चैत शुक्ल तिथि पंचमी, भो प्रयाग विश्राम ॥

चौपाई ।

प्रभुशासन शिर धरि हनुमाना। कियो पितापथ तुरत पयाना ॥
संगम यमुना गंगा केरो । नक्यो पवनसुत वेग घनेरो ॥
शृङ्गवेरपुर पहुँच्यो आई। लख्यो निषादराज तहँ जाई ॥
रामविरह अति कृशित शरीरा । जपत राम राघव रघुवीरा ॥
पर्णकुटी रचि सुरसरि तीरा । बैठ्यो मलिन अंग यक चीरा ॥
बीतत आवनि अवधि विचारै । बाँधत मनहुँ तजन तनु तारै ॥
रामसखा. लखि मारुतनंदन । धरि द्विजरूप कियो अभिवंदन॥
कह्यो वचन सुनु राजनिषादा । तजहु दुखद अब विषमविषादा॥
अवधधनी प्रिय सखा तुम्हारे । सीता लषण सहित पगुधारे ॥
लंकनाथ कपिनाथ समेतू । हैं प्रयाग भरद्वाज निकेतू ॥
समर दुरासद दशमुख मारे । त्रिभुवन महँ कीरति विस्तारे ॥
अब नहिं होहु निषाद विहाला । कालिह देखिहौ कौसलपाला ॥

दोहा—चैत शुक्ल तिथि पंचमी, रामसखा है आज ।
अवधि चतुर्दश वर्ष की, गुनि आये रघुराज ॥

चौपाई।

आजु प्रयाग पर्‍यो दल डेरा। रामहिं लखिहौ होत सबेरा॥
अमियसरिससुनि वचन निषादा। कढ्यो कुटीते त्यागि विषादा॥
पुलकित तनु आनंद अपारा। दोउ दृग बहति वारिकी धारा॥
गद्गद गर अस भन्यो निषादा। को हौ तात दियो अह्लादा॥
कहाँ राम कहँ लषण जानकी। करी तात मम रक्ष प्रानकी॥
इन लोचन अरविंद विलोचन। लखिहौं कबै कहौ दुखमोचन॥
कह्यो पवनसुत सुनहु निषादा। ह्वै हौ भोरहि विगत विषादा॥
अवधपंथ मोहिं देहु बताई। जाहुँ भरत पहँ आतुर धाई॥
बीते अवधि अनर्थ महाना। भरत त्यागिहै तुरतहि प्राना॥
अवधपंथ तब कह्यो निषादा। जाहु करहु भरतहि अविषादा॥
चल्यो पवनसुत शीश नवाई। ध्यावत भरत चरण मन लाई॥
लख्यो रामतीरथ चलि दूरी। निरख्यो सई सरित सुखपूरी॥

दोहा—बहुरि बरूथी सरित लखि, उतरि गोमती आशु।
निरख्यो साल विशाल वन, विविधविहंग विलासु॥

चौपाई।

प्रजा सुकोसल देश निवासी। रामविरह अतिशय दुखरासी॥
अतिसमृद्ध नर नारि हजारन। रामविरहअतिमलिनअकारन॥
गगन पंथ कपि कुंजर धायो। नन्दिग्राम आरामहि आयो॥
लखी प्रफुल्लित फलित द्रुमाली। बहु रसाल अवली रस साली॥
फूले फले भरत परभाऊ। त्यागे काल अकाल स्वभाऊ॥
अवध नगरते इत यक कोसा। नंदिग्राम लखि भयो भरोसा॥
नंदनवन सम विपिन सुहावन। चारु चैत्ररथ प्रभा लजावन॥
विहरि रहे कानन नर नारी। पुत्र पौत्र युत भूषण धारी॥
धर्‍यो पवनसुत विप्रस्वरूपा। भरत कुटीकहँ चल्यो अनूपा॥

लख्यो दूरते रघुपति भ्राता । राम प्रेम मूरति अवदाता ॥
राम विरह जनु पारावारा । लह्न चहत थकि पैरत पारा ॥
कृश शरीर सुंदर अति दीना । जटा जूट शिर वदन मलीना ॥

दोहा-जबते गवने राम वन, तबते कुटी बनाय ।
बस्यो भरत अति नेमते,मनहुँ धर्म वपुआय ॥

चौपाई ।

राम राम मुख कढत निरंतर । विकल होत कबहूं परि अंतर ॥
रहत सदा फल मूल अहारी । तापस वेष धर्मपथचारी ॥
ओढे वदन श्याम मृगछाला । पंहिरे वल्कल वसन विशाला ॥
विशद ब्रह्मऋषि सरिस प्रकाशा। लगी राम आवनकी आशा ॥
प्रभु पादुका पूजि कुलदीपा । शासत धरणि सातहू द्वीपा ॥
प्रेम नेम कीन्हें मन माहीं । टरे अवधि रहिहैं तनु नाहीं ॥
स्वाति बुन्द जिमि चहत पपीहा। ऐहैं नाथ लगी रट जीहा ॥
चारिहु वर्ण भूमितल त्राता । लख्यो पवनसुत रघुपति भ्राता ॥
रघुपति सेवन धर्म स्वरूपा । मानहुँ धरणि धीर कर जूपा ॥
बैठे सचिव पुरोहित ज्ञानी । धरे कषायवसन मतिखानी ॥
यथा भरत तस प्रजा दुखारी । राम विरह कृश तनु नर नारी ॥
निरखि भरतकहँ पवनकुमारा । गद्गद गर नहिं वचन उचारा ॥

दोहा-जस तसकै धरि धीर कपि, पाय परम अहलाद ।
रामबंधु जीवहु सदा, दीन्ह्यों आशिर्वाद ॥

चौपाई ।

भरत प्रणाम कियो द्विजजानी । आकस्मात बह्यो दृग पानी ॥
उमग्यो आकस्माद अनंदा । मनहुँ आगये रघुकुलचंदा ॥
आवहु विप्र भरत अस भाषा ।कहहुसकल आपनि अभिलाषा॥
जाय पवनसुत बैठ्यो नेरे । सुखी भये भरतहु तिहि हेरे ॥

पूज्यो भरत विप्र जिय जानी। पूछ्यो कहँसे आयो ज्ञानी॥
तहाँ पवनसुत वचन सुनाये। अतिप्रिय खबर कहन इतआये॥
जिहि वियोगवश कृशित शरीरा। ध्यावहु जाहि नयन भरि नीरा॥
जासु विरह यह दशा तिहारी। चौदह वर्ष जासु व्रत धारी॥
पूजहु जासु पादुका प्यारे। जिहि वियोग दृग बहत पनारे॥
सो कोसलपुरपाल कृपाला। आय प्रयाग बसो यहि काला॥
कुशल जानकी लषणसमेतू। पूछ्यो कुशल भानुकुल केतू॥
मर्कटकटक सहित कपि राजू। ल्याये संग अवध रघुराजू॥

दोहा—ऋक्षराज बहुऋक्ष युत, युत निशिचर लंकेश।
ल्याये अपने संगमहँ, अवध उदधि राकेश॥

चौपाई।

सहित वानरीसैन्य समाजू। आवत लषण सोय रघुराजू॥
तजहु शोक दारुण प्रभु भ्राता। लखिहौ कालिह भानुकुलत्राता॥
रावण कुंभकर्ण रण मारी। सहित जानकी सुयश पसारी॥
शची सहित जिमि सुखी सुरेशा। आवत रघुकुल कमल दिनेशा॥
इतना सुनत भरत तिहिकाला। भयो महामुद मगन विहाला॥
गिरच्यो भूमि सुखदंग विसंगा। दंड द्वैक भूली सुधि अंगा॥
सँभरि नयन ढारत जलधारा। रोमांचित तनु राजकुमारा॥
गद्गद कंठ बोलि नहिं आवत। हनुमतवदनलखत टक लावत॥
जस तसकै अस वचन सुनाये। को हो तात कहाँते आये॥
अस कहि पुनि उठिभरतसुजाना। लियो लगाय हिये हनुमाना॥
सींच्यो नयनन नीर शरीरा। बोल्यो भरत बहुरि धरि धीरा॥
देव अहौ की मनुज गोसाईं। मेट्यो मीच शंभुकी नाईं॥

दोहा—कह्यो वचन मुहिं परमप्रिय, राख्यो जात शरीर॥
देहु धेनु यक लक्ष तुहिं, तदपि होत नहिं धीर॥

चौपाई ।

देहुँ तोहिं शत नगर सुहावन । षोडश कन्या वपु अति पावन ॥
चन्द्रमुखी साभरण शरीरा । चितवत चैन चारु चय चीरा ॥
तदपि लगति लघु का अब देहूँ । मैं नहिं उऋण तोहिं विधि केहूँ ॥
बोल्यो हुलसि प्रभंजननंदन ।पुलकित भरतचरण करि वंदन ॥
मैं कपिहौं केसरीकिशोरा । रघुपति किंकर तैसहु तोरा ॥
नाम मोर जानहु हनुमाना । पठयो तुवहित कृपानिधाना ॥
धरचों विप्र वपु परिचय हेतू । दिय निदेश अस रघुकुलकेतू ॥
सुनि रामानुज रामागमनू । मंगलमूल अमंगलदमनू ॥
पुनि पुनि मिलिअसवचनउचारा । विधि आखर को मेटनहारा ॥
यह उपख्यान भनहिं मुनिज्ञानी । जिये वर्ष शत जो जग प्रानी ॥
होय कबहुँ तिहिअवाशि अनंदा । मिटै सकल दुख दारुण द्वन्दा ॥
भई कहाँ कपि राम मिताई ।किहि अवसर किहि कारण पाई ॥

दोहा–भरतवचन सुनि पवनसुत, कथा कहन सब लाग ।
सचिवसाहित केकयसुवन, सुनत सहित अनुराग ॥

चौपाई ।

भयो राम कर जिमि वनवासा । प्रेम विवश जिमि नृपतनु नाशा ॥
सहित जानकी लषण सुहाये । जिमि प्रभु चित्रकूट महँ आये ॥
राजत्याग पुनि आप पधारे । विनय वचन बहु भाँति उचारे ॥
पितु प्रण राखन हित रघुराई । गये न अवध नगर चित चाई ॥
लै पादुका आप पगु धारे ।सो सब विदित तुमहिं प्रभु प्यारे ॥
अब आगे कर सुनहु चरित्रा । कियो जु कोसलनाथ विचित्रा ॥
दण्डकवन प्रविशे रघुराई । सहित जानकी लछिमन भाई ॥
गये अत्रि अनुसुइया आश्रम । मुनि सत्कार कियो भारि संभ्रम ॥
पुनि निशिचर यक हन्यो विराधा। देत रह्यो वनवासिन बाधा ॥

पुनि प्रभु लषण जानकी संगा । आये जहँ मुनीश शरभंगा ॥
प्रभुहि पूजि मुनि तज्यो शरीरा । सुनासीर देख्यो रघुवीरा ॥
गये सुतीक्षण आश्रम रामा । पुनि अगस्त्यके भवन ललामा ॥

दोहा–लहि अगस्त्य उपदेश प्रभु, पंचवटी महँ जाय ।
वसे जानकी लषण युत, अतिशय आनँद पाय ॥

चौपाई ।

तहँ रावण भगिनी चलि आई । जनकनन्दनी को डरवाई ॥
काट्यो लषण नाक अरु काना । भगी विलाप करतविधि नाना ॥
खर दूषण त्रिशिरा बलवंता । आये अमरषवंत तुरंता ॥
चौदह सहस निशाचर भारी । हत्यो राम द्वै दंड मँझारी ॥
कानन तहाँ दशानन आयो । हरि सीता कहँ लंक सिधायो ॥
लख्यो गीधपति मारग माहीं । कीन्ह्यो पक्ष विगत खग काहीं ॥
लै सिय जाय लंक महँ राख्यो । इत प्रभु दशकन्धर पर माख्यो ॥
दै गति गीधराज कहँ रामा । हन्यो कबन्ध महा बलधामा ॥
पंपा चलि शबरी गति दीन्ह्यों । कपिपतिसों सनेह पुनि कीन्ह्यों ॥
मार्‍यो वालिहि एकहि बाणा । कपि सुग्रीव भूप निरमाणा ॥
बसे प्रवर्षण पावस काला । पठये कपि दश दिशा विशाला ॥
मोहिं मुद्रिका दिय निज हाथा । पठयो दक्षिण अंगद साथा ॥

दोहा–स्वयंप्रभा बिल में गये, तृषावंत सब कीश ।
सो पहुँचायो सिंधुतट, गवनी जहँ जगदीश ॥

चौपाई ।

तहँ संपाति गीध यक आयो । लंक माहिं जानकी बतायो ॥
मैं कूद्यों शतयोजन सागर । राम कृपा यश भयो उजागर ॥
सिय सुधि लै वाटिका उजारी । अक्षकुमार आदिकन मारी ॥
जार्‍यौं लंकपुरी तिहि यामा । आयों कूदि पार तिहि ठामा ॥

कियों निवेदन प्रभुहि हवाला । कियो राम सुनि कोप कराला
बांध्यो कपिन सिंधुमहँ सेतू । तरे लषण युत कृपानिकेतू ॥
तहँ बानर राक्षस संग्रामा । भयो पंचदश दिन वसुयामा ॥
रह्यो सैनपाति नाम प्रहस्ता । नील सैनपाति कीन्यो अस्ता ॥
बली इन्द्राजित अरु अतिकाया । कियो लषणविनाशिरतिनकाया॥
कुंभकर्ण अरु रावण राजा । मारचो समर मध्य रघुराजा ॥
आय देव सब सुस्तुति कीन्हें । दशरथ भूप दरश पुनि दीन्हें॥
जगत प्रतीति हेतुसिय काहीं । प्रविशायो प्रभु पावक माहीं ॥

दोहा–ब्रह्म रुद्र शक्रादि सुर, सीय प्रशंसन कीन ।
पावक लै निज अंकमहँ, आय राम कहँ दीन ॥

चौपाई ।

लंका राज्य विभीषण पायो । आशुहि पुष्पविमान मँगायो ॥
लषण जानकी संयुत रामा । चढिगे पुष्पविमान ललामा ॥
मर्कट कटकहु लियो चढाई । सखा कपीश निशाचर राई॥
किष्किन्धाविराम युग यामा । बसत प्रयाग राम अभिरामा ॥
खबर देन हित मोहिं पठायो । काल्हि अवध चाहत प्रभु आयो॥
भरत सुनी सब कथा सुहाई । पुलकित तनु दृग आँसु बहाई ॥
चौदह वर्ष बिते कपिराई । आज नाथ सिगरी सुधि पाई ॥
परचो नाथ कर कीर्त्तन काना । आजु कौन जग मोहिं समाना ॥
भयो मनोरथ पूरण आजू । लखिहौं कृपासिंधु कृतकाजू ॥
कह्यो पवनसुत भरत सुजाना । पुष्य योग है काल्हि महाना ॥
ऐहैं अवशि काल्हि रघुराजू । करहु अलंकृत नगर दराजू ॥
कह्यो भरत सुनु पवनकुमारा । लै चलु मुहिं जहँ नाथ हमारा ॥

दोहा–कह्यो वचन हनुमान तब, धरहु धीर मतिधीर ॥
सहित वानरी भीरते, काल्हि लखहु रघुवीर ॥

छन्द हरिगीतिका।

हरषत भरत तहँ बोलि रिपुहन कह्यो वचन उदार।
तुम जाहु आशुहि अवधपुर जहँ जननि दुखितअपार॥
दीजै खबरि रघुवंशमणि जानकी लषण समेत।
अबकाल्हिआवतअवधपुरकपिसैन्ययुतसुखसेत॥
देव देव मंदिर होहिं पुरमहँ ग्रामदेव समेत।
बाजन बजाय चढाय चन्दन पूजिये प्रभु हेत॥
बंदी विबुध मागध सुमाति वैदिक महीसुर सर्व।
जे वंश वर्णन करत बैतालिक सरिस गंधर्व॥
मंगलमुखी गावत सुमंगल विविध बाज बजाय।
अगुवान लेन सिधारहीं शृँगार सकल बनाय॥
सब मातु गवनहिं पालकी चाढि सहित सुभटवरूथ।
पुर नारि निकसहिं कनक घट शिर धरियूथन यूथ॥
ब्राह्मण सुक्षत्रिय वैश्यशूद्रहु प्रजा अवध अपार।
देखन चलहिं रघुनाथ मुख राका शशी मदहार॥
सुनि भरत शासन शत्रुहन लाखन सुदूत बुलाय।
दीन्ह्यों निदेश अनंद भरि रघुनन्द दरश लुभाय॥
अब अवधपुरते नन्दिग्राम प्रयंत धरणि समान।
कीजे समुन्नत नीच थल सम होय शोभामान॥
सींच्यो सुगंधित नीर मारग लाज कुसुम बिछाय।
अति तुंग विविध पताक बांधहु धाम धाम बनाय॥
अति स्वच्छ करहु बजार रंभाखंभ देहु गडाय।
चटपट पुरट घट धरहु द्वारन आम पल्लव लाय॥
घर घर रचहु कुसुमावली माला विपुल लटकाय।
सब सदन करहु विचित्र चतुर चितेर चटक बुलाय॥

जबलौं उवैं नहिं भानु तबलौं सकल साजहु साज।
रणजीति चौदह वर्षमहँ आवत अवध रघुराज ॥
सुनि शत्रुहन कर सुभग शासन सकल सचिव प्रधान।
सिगरे सजावन लगे पुर आनन्द उर न समान ॥
सिद्धार्थ साधक अर्थ विजय जयन्त धृष्टि अशोक।
तिमि जन्त्रपाल सुमन्त्र संयुत भये सचिव भये अशोक ॥
हल्ला परयो सब अवधपुर आवत सुरघुकुल केत ।
निज नाथ दरशन हेतु पुरजन करन लागे नेत ॥
आनन्द अवध समात नहिं सब कहैं पुरजन बात।
किहि भाँति आशु सिराय रजनी होय विमलप्रभात॥
को सकै वरणि प्रमोद कौसल्यै भयो जो आज ।
जिमि मरत सुखपरिगो सुधा जल परयो सूखत नाज॥
खर भर मच्यो सिगरे शहर हग तजत सब जलधार।
जनु नहिं समान करार बिच बहि चल्यो पारावार ॥
साजहिं सकल कलशावली कल धरहिं द्वारे दीप ।
पुर करहिं मंगलगान नारी देवि देव समीप ॥
यहि भाँति सजत सजावतै निशि रही बाकी याम।
निकसे सकलपुरजनसुखित अभिलषित देखन राम ॥
लाखन मतंग उतंग तनु जे शैल शृङ्ग समान।
राजत कनक हौदा बँधे अंवारि मानहुँ भान ॥
बहु झूल पंखे सिरी साजि घंटा सघन घहनात।
असमान लागि फहरैं निशान विमान जिन रुकिजात ॥
केते मतंगन दुन्दुभी धरि चले गजन गरघट्ट ।
तहँ अवध नंदिकग्राम लगि लगि गयो सिंधुर ठट्ट॥
सोरठा–चले तुरंग अपार, कोटि कोटिकी कोट करि।
सोहत सकल सवार, रामागमन अनंद भरि ॥

छंद हरिगीतिका।

बहु कनक भूषणरत्न भूषण चमर सहित सडाक।
अटपट चलत चटपट चमाकि दामिनि दमंक उडांक॥
सोहत सवार शृँगार करि बहु हंस वंश कुमार।
हलकत अलक छलकत ललक उर लषण राम उदार॥
करिनीन कुंभनि कनक कुंभ विराजमान अनंत।
गणिका चलीं गावत मनावत राम हित भगवंत॥
शृंगार करि पुरनारि प्रमुदित्त चलीं चारु सिधारि।
हम होब धन्य निहारि प्रभु यक एक हेलि हँकारि॥
रनिवासते मणिजालकी बहु पालकी पथ आय।
करि लियो आगू कौसलाको हौसिला न समाय॥
परिचरी वृन्दन वृन्द डगरीं पालकिनको घेरि।
गावत सुमंगल गीत लसि शृँगार यक यक टेरि॥
कलशावली तिय शीश लसि दीपावली तिन माहिं।
चमकति चटक हारावली तारावली समनाहिं॥
यक ओर पुरवासी लसत यक ओर सैन्य अपार।
यक ओर लसत करोर बहु रघुवंश वीर कुमार॥
नद्दत समद्द दुरद्द हद्द गिरन्द्रि कद्द चलंत॥
हिहिनात हय घहरात रथ दिशि विदिशी शब्द भरंत।
सब कहहिं किहि क्षण लखब रघुकुलचंद्र सीय समेतु॥
कपि कटक पुष्पविमानकर फहरात नभ कह केतु।
बाजत अनेक निशान राजत आशमान निशान।
खरभर परचो सिगरे शहर तजि गहर करत पयान॥
सब डगर डगरन नगरबिच युग बाल वृद्ध अपार।
भाषत परस्पर चलहु चलहुन आज सुखकर पार॥

कहुँकोउ प्रजा करि अतित्वराकटि फेंट कीन्हें पाग।
पदपट पाहिरि करमें चले उरउर जाग अति अनुराग॥
कोउ पाहिरि कंठाभरण चरणन बाँधि नूपुर शीश।
रघुपति दरश हितचले दौरत सुमिरि निज निजईश॥
जिमि उदितराकाचंद्र लखि उमगत उदधि बहु भंग।
तिमि राम दरशन लालसा बाढ्यो पयोधि अभंग॥
यक एक आगे होत पहिले लखब हमहीं राम।
पाछे रहत ते कहत तुम करि लेहु कछु विश्राम॥
बाढ्यो उछाह अथाह पुरजन धरत नहिं कछु धीर।
नर नारि कहत पुकारि कहाँ विमान जिहि रघुवीर॥
भरि गयो नंदीग्राम जनगण तिहि निशा अवशेश।
तब कहहिं सब अबरामकहँ अब राम कहँ अवधेश॥
कीन्ह्यों भरत मज्जन सहित सज्जन सरित सानंद।
करि पादुका पूजन विमल द्रुत बोलि मारुतनंद॥
बोले वचन तनु पुलकि हे प्रिय प्राण पवनकुमार।
अब चलहु देहु दिखाय कहँ प्रभु इष्टदेव हमार॥
चौदह वरष अँगुरी गिनत गे दिवस कल्प समान।
करुणानिधान सुजान रघुपति राखिलीन्ह्यों प्राण॥
तब कह्यो पवन सपूत पूत दुतीय तुम सम कौन।
प्रभु प्रेम नेम निबाहि हैं तप तपत भीतर भौन॥
अबलों सुन्यों श्रुति राम प्रेम न लखी मूरति तास।
तुव रूपलखिप्रभु प्रेमरूप भयो विशेषि विश्वास॥
इतते उअत रवि चलहु देखन नाथपद अरविंद।
रघुनाथ देखि सनाथ ह्वैहैं अवधपुरजनवृन्द॥

दोहा—पुरवासी भाषत सकल, चलहु भरत अतुराय।
बिन देखे रघुपति चरण, यक क्षण युग सम जाय॥

चौपाई।

कौसल्यादि मातु सब आईं। रिपुहन सहित मोद रस छाईं॥
कौसल्या तहँ भरत बुलाई। कह्यो लालको खबरि जनाई॥
कहँ राम लछिमन मम बारे। किहि पठयो हित खबरि तिहारे॥
तहाँ भरत अति पुलकित गाता। बोल्यो शीश नाय अस बाता॥
मात पवनसुत नाथ पठाये। भोर आगमन खबरि सुनाये॥
मैं नहिं वदन दिखावन लायक। नेह निबाहि दीन रघुनायक॥
तिहि अवसर आयो हनुमाना। गह्यो मातु पद नाम बखाना॥
जानि राम जन अति हरषाई। कौसल्या उर लियो लगाई॥
पवन पूत पूतहु ते प्यारो। लियो राखि तैं प्राण हमारो॥
कहु कपि कहँ मम पूत पतोहू। कब लखिहौं आनंद सँदोहू॥
कह्यो पवनसुत जननि सिधारहु। रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारहु॥
राम मातु तब भरत बुलाई। कह्यो पुत्र अब चलहु त्वराई॥

दोहा—नाथ पादुका माथ महँ, लियो भरत तब धारि।
चमर चलावत शत्रुहन, साथहि चल्यो सिधारि॥

चौपाई।

बाल विजन वर छत्र सुहावन। लियो सुमंत महा छबि छावन॥
भरत धारि शिर राम खराऊँ। चले शत्रुहन सहित अगाऊँ॥
पकरे पवनसुवन कर हाथा। पूँछत कहँ मिलिहैं रघुनाथा॥
चलीं भरत पाछे सब माता। चली सैन्य कछु वरणि न जाता॥
खुरन खनत मेदिनी तुरंगा। हुलसित हिहिनाते बहुरंगा॥
नदत मत्त मतंग हजारन। चले मनहुँ दिग्गज मद हारन॥
घहरत स्यंदन चक्र अपारा। मानहुँ तज्यो पयोधि करारा॥

गवने कोटिन नगर निवासी । रामचंद्र मुख दरशन आसी ॥
भये पषाण रेणु पथ माहीं । हौदन दचक टुटि तरु जाहीं ॥
सिगरे अवध नगर पुरवासी । कहैं राम कहँ दरशन आसी ॥
घरे पुरट घट शीशनमाहीं । चलीं मंगलामुखी तहाहीं ॥
गावत मंगल गीत अपारा । नगर नारि कीन्हें शृङ्गारा ॥
दोहा–उठत उमाहन पंथ पग, बढी त्वरा अभिलाष ।
जाय जाय हनुमानसों, पूँछाहिं जन बहुलाष ॥

छन्द अरिल्ल ।

वाजिरहे करनाल वेणु डफ दुंदुभी ।
वीण उपंग मृदंग नारि गावैं कभी ॥
राम दरश लालसा भरे पुरजन सबैं ।
मंगल मंजुल गीत गाय पुर तिय फबैं ॥
आवत रघुपति आजु अवध आनँद मच्यो ॥
अवध निवासिन जन्म बहुरि विधि नव रच्यो ॥
किहि क्षण रामसरोजवदन आलि दृग बसैं ॥
करि शोभा मकरंद पान देवन हसैं ॥
राम सरिसको धर्मपाल दूसर दुनी ।
अस करुणामय वानि न देखी नहिं सुनी ॥
बाँधि पयोनिधि सेतु लंकराजहि हने ।
सुगल विभीषण प्रभुप्रताप भूपति बने ॥
धन्य भरत रघुनाथ प्रेमको रूप हैं ।
रामविरह तनु क्षीण धर्मको जूप हैं ॥
भ्रात लेन अगुवान जात तनु सुधि नहीं ।
राम भरतको मिलन होत सुखसारिवहीं ॥
यहि विधि कहत अनेक वचन पुरजनचले ।

सुखकर शकुन अनेक पंथ सब कहँ मिले ॥
लखि जन दक्षिण ओर भरतसों भाषहीं ।
लखिनहिं परत विमान दरश अभिलाषहीं ॥
कियो भरत हँसि हँसी हेरि हनुमान को ।
करहु तु नहिं चपलई कीश ताजि ज्ञानको ।
नहिं दरशात विमान प्राण अकुलात हैं ॥
नहिं दिखात कपिवृन्द कहाँ दोउ भ्रात हैं ।
कह्यो पवनसुत जोरि पाणि प्रभु देखिये ॥
फूलि उठे तरु फले विश्वास परेखिये ।
भरद्वाज अरु इन्द्र दियो वरदान है ।
तीरथपतिते अवधप्रयंत प्रमाण है ॥
फलिहैं फुलिहैं विटप राम आगवनमें ।
जहँ रहिहैं कपि तहाँ यहीगति भुवनमें ॥
कहत भरतसों पवनसुवनके अस किशा ।
तिहि अवसर सुनिपर्‍यो शोरदक्षिण दिशा ॥
दोहा—जबते राम प्रयागते, भये सवार विमान ।
तबते कपि तिहि यानते, चले उडत असमान ॥
अवध लखन हित अति त्वरा, मर्कट पुलकित गात ।
पुहुपविमानहिं संगमें, गवने गगन उडात ॥
कोटिन मर्कट यानकी, छाया जहँ तहँ जाति ।
तहँ तहँ धावति भूमिमें, किलकिलाति कपि पाँति ॥
सोइ शोर सुनि पवनसुत, कह्यो भरतसों बैन ।
कपिदल शोर सुनात इत, मृषा बैन मम है न ॥

चौपाई ।

फूले फलित अमित तरुवृन्दा । सुरभित स्रवत मधुर मकरन्दा ॥

भरद्वाज वरदान प्रभाऊ। विपिन सोहावन बिनहिं उपाऊ॥
सुनहु शोर प्रभु दक्षिणआशा। किलकतकपितुवदरशनआशा॥
मोरे मन अस होत विचारा। तरत गोमती सैन्य अपारा॥
देखहु दक्षिण नयन उठाई। धूरि पूरि नभ उडी महाई॥
आवत अतिहि सवेग विमाना। धुंधुकार छावतो दिशाना॥
जानिपरत मुहिं राजकुमारा। करत सालवन कपि संचारा॥
लखहु भरत अब दक्षिण आशा। पूरण शशिसम भयो प्रकाशा॥
यह विमान पुहुपक जिहि नामा। सीय सहित लछिमन अरु रामा॥
मर्कटकटक सहित सुग्रीवा। लंकनाथ सोहत बलसीवा॥
तरुणतरणिसम तेज पसारत। देखि परत अब नयन निहारत॥
इतनी सुनत पवनसुत वानी। अवधप्रजा अतिशय हरषानी॥

दोहा-निरखन लागे निमिष तजि, भयो कुलाहल भूरि।
निरखौ निरखौ लखिपरत, वह विमान बडि दूरि॥

चौपाई।

बाल वृद्ध वनिता पुरवासी। सकल अवधपति दरश हुलासी॥
एक बार बोले अस वानी। आवत आजु राम रजधानी॥
महा शोर तिहि अवसर भयऊ। दिशि अरुविदिशिछायनभगयऊ॥
हय गय रथ निज निज तजि याना। भये भूमि महँ खडे सुजाना॥
राम लषण संयुत वैदेही। आवत कोसल प्रजा सनेही॥
सखा सुकंठ विभीषण संगा। मर्कटकटक विकट बहु रंगा॥
यही शोर छायो चहुँ ओरा। लखहिं विमानहि प्रजा करोरा॥
लंक जीति आवत रघुनंदा। लखहिं गगन जिमि पूरणचन्दा॥
भयो राम लखि भरत सुखारी। पुलकित तनु ढारत हग वारी॥
प्रेममगन भूल्यो तनु भाना। सावधान ह्वै पुनि मतिमाना॥
गिर्यो दंडसम भूतल माहीं। सो सुख कहत बनत मुख नाहीं॥
कह्यो पवनसुत लखहु विमाना। तुम सम कोउ नहिं प्रेमप्रधाना॥

दोहा-अर्घ्य पाद्य अरु आचमन, दियो भरत प्रभु काहिं।
लग्यो उतारन आरती, प्रेम विवश सुधि नाहिं ॥

चौपाई।

अवध प्रजा अम्बुधि उमगाना। निरखि राम राकाशितभाना॥
जिमि कपि कटकाविमान अपारा। तिमि कहि प्रजा लहै को पारा॥
सेन निरखि मर्कट मुद बाढे। लागे लखन ललाकि ह्वै ठाढे॥
मनुज यूह धरनी परि पूरी। रथ तुरंग मातंगहु भूरी॥
तब प्रभुनिकट वालि सुत जाई। कीन्ह्यों विनय सुनहु रघुराई॥
भरत लेन आये अगुवानी। आईं मातु परत अस जानी॥
भरत आगवन सुनि सुख छाई। गये विमान द्वार रघुराई॥
निरखि भूमि भरतहि भगवाना। सजल विलोचन कृपानिधाना॥
खडे विमान द्वार रघुराई। उदय मेरु मनु दिनकर राई॥
अवधप्रजा निरखैं प्रभु काहीं। गिरैं दंड सम भूतल माहीं॥
यक एकन अंगुली उठाई। अवध प्रजा भाषहिं गुहराई॥
वह विमानपर देखहु भाई। ठाढे अवध उदधि निशिराई॥

दोहा-कोलाहल माच्यो तहाँ, लोग लखन ललचान।
अवध अलंब बिलंब बिन, उतरे भूमि विमान ॥

चौपाई।

देखि विमान द्वार निज नाथै। प्रणवैं भरत भूमि धरि माथै॥
विह्वल भयो न उठैं उठाये। प्रेम दशा सिराय किमि गाये॥
कियो शत्रुहन दण्ड प्रणामा। को अस जो न नम्यो तिहि ठामा॥
तिहि क्षण अवधप्रजा चहुँ ओरा। भये राम सुखचन्द्र चकोरा॥
दुसह बिरहवश कृशितशरीरा। बहत निरंतर नयनन नीरा॥
आनँद मगन कढत नहिं वानी। प्रजन दशा किमि जाय बखानी॥
कहहिं परस्पर दरश उमाहे। महि आवत विमान नहिं काहे॥
बाल वृद्ध युत अवध निवासी। यकटक लखहिं विमान प्रकासी॥

विधि मानस विमान निरमानू । उदय गगन मनु कोटिन भानू ॥
निरखि अवधपुरप्रजा तयारी । मर्कटकटक करत किलकारी ॥
कपिपति निशिचरपति अरुनीला । द्विविद मयन्द महाबलशीला ॥
संयुत लषण विमानहि द्वारे । ठाढे अनिमिष भरत निहारे ॥

दोहा—लषण कह्यो कर जोरि तब, दीजै नाथ निदेश ।
उतरै भूमि विमान अब, मेटो भरत कलेश ॥

चौपाई ।

लखे दूरते भरतहि रामा । प्रेम विवश विह्वल तिहि ठामा ॥
गद्गद गर मुख कढे न वानी । धरि धीरज कछु जानकि जानी ॥
लगे विमान माहिं जे हंसा । बोल्यो तिनसों रघुकुलहंसा ॥
अब उतरै विमान महि माहीं । सानुज ठाढे भरत जहाँहीं ॥
राम रजाय पाय वर याना । उतरि चल्यो महि ओर तुराना ॥
राम भरत कर होत मिलापा । जानि प्रमोदित देव कलापा ॥
चडे विमानन नभमहँ आये । भरत भाउ लखि आँसु बहाये ॥
प्रजन कुलाहल भयो अपारा । मनहुँ सिंधु सब तजे करारा ॥
आवत राम विमान महीमें । भयो हमारे अब जिय जीमें ॥
गयो बैठि जब भूमि विमाना । कूदे तब तुरंत भगवाना ॥
कूदत प्रभुकहँ भरत निहारी । गिरचो दण्डसम भूमि मँझारी ॥
भूल्यो भरत भान सब अंगा । को वरणै कवि प्रेम प्रसङ्गा ॥

दोहा—रही सुरति नहिं रामतनु, धायो कोशलनाथ ।
कहुँ निषंग कहुँ धनु गिरचो, लियो न कछु कहँ साथ ॥

चौपाई ।

भरतहि लिये उठाइ रघुराई । गये लपटि विह्वल दोउ भाई ॥
को विलगावै को समुझावै । को कवि प्रेमदशा सो गावै ॥
राम भरत कर प्रेम निहारी । चले अवधपुरके नर नारी ॥
युगल बन्धु हग आँसुन धारा । कंपत तनु नहिं तनक सँभारा ॥

बित्यो मुहूरत छुटे न दोऊ । प्रेमविवश ठाढे सब कोऊ ॥
गुरु वसिष्ठ तिहि अवसर आये। जस तस कै दोहुँन बिलगाये ॥
गुरुपद परे पुलकि भगवाना । लियो अंक गुरु रह्यो न भाना ॥
मुनि पूँछी रामहिं कुशलाई। गुरुपद परशि कह्यो रघुराई ॥
कृपा रावरी कुशल हमारी । बीते मुदित वर्ष दश चारी ॥
तुम्हरी कृपा देवरिपु मारे । सुखी अवधपुर बहुरि सिधारे ॥
यतना कहत वदनसों बाता । गहे भरत पुनि पद जलजाता ॥
पुनि पुनि मिलत राम लघुभाई। सकै कौन उपमा कवि गाई ॥

दोहा–मनहुँ प्रयोजन पाय कछु, तापसरूप बनाय ।
वात्सल्य रस दास्य दोउ, मिलैं भुजानि बढाय ॥

चौपाई ।

प्रेमपवन प्रेरित छविधामा । मानहुँ मिलत युगल घनश्यामा ॥
पूरित दृग जल दोउ उत्साहे । प्रेम नेम करि नेह निवाहे ॥
भरतहि प्रभु अंकहि बैठावत । सूंघत शीश बोलि नहिं आवत ॥
भरत न छोडत पद अरविन्दा । धरि धीरज कह रघुकुलचन्दा ॥
सावधान ह्वै कुशल बखानहु । अब मम बिछुरनकी भय भानहु ॥
मिली न मोहिं तोहिं सम भाई। कहौं शपथ करि भुजा उठाई ॥
भन्यो भरत तब कछु धरिधीरा। तुम सम को दयालु रघुवीरा ॥
मो सम अघी लियो अपनाई । सब प्रकार अवगुण विसराई ॥
राम भरतकी मिलनि निहारी । सुगल विभीषण भये दुखारी ॥
तिहिअवसरलछिमनअरुसीता । त्यागे तुरत विमान पुनीता ॥
आवत निरखि भरत वैदेही । गह्यो दौरि पद परम सनेही ॥
जनकसुता दिय आशिर्वादा । जियहु लाल लगि महि मर्यादा ॥

दोहा–गह्यो लषण तब भरत पद, भरत लियो उर लाय ।
कह्यो भरत धनि धनि लषण, किय भलप्रभुसेवकाय ॥

चौपाई ।

शत्रुशाल गिरि प्रभुपद माहीं । लीन्ह्यों नाम बहत दृग जाहीं ॥
रिपुहन कहँ प्रभु हिये लगाई । सूँघ्यो शीश गोद बैठाई ॥
बार बार पूँछहिं कुशलाई । चूमत मुख दृग वारि बहाई ॥
तिहि क्षणभरतलषणअरु सीता। आये जहँ प्रभु परम पुनीता ॥
गह्यो जानकी पद रिपुशाला । प्रेम मगन तनु भयो विहाला ॥
सिय उठाय अंकहि बैठायो । सूँघि शीश दृग वारि बहायो ॥
रिपुहन गह्यो लषणके चरणा ।सो सुख कियो जाय किमिवरणा॥
चारिहु बन्धु और वैदेही । लखहिं परस्पर वदन सनेही ॥
कह्यो भरतसों तब रघुवीरा । आयो संग महा कपिवीरा ॥
निशिचरपतिअरुकपिपतिकाहीं। मो सम जानहु अन्तर नाहीं ॥
इनहीं केवल रावण मारे । इनसम नहिं कोउ मोहिं पियारे ॥
करहु सकल कीशन सत्कारा । भाव राखि सब माहिं हमारा ॥

दोहा—कहहु जननि किहि देशमहँ, दरशनकी रुचि होति ।
अवध प्रजा मुहिं प्राण सम, देखन प्रीति उदोति ॥

चौपाई ।

तिहि अवसर कपिनायक आयो । निशिचर नायक सहित सुहायो॥
अंगद द्विविद मयंदहु नीला । ऋषभ सुषेण महाबलशीला ॥
नलहु गंधमादन संपाती । गय गवाक्ष ऋच्छप अरिघाती॥
सरभ पनस आदिक कपि वीरा । धरे मिलन हित मनुज शरीरा॥
आवत कपिन देखि रघुराई । चले भरत कहँ संग लिवाई ॥
कपिपति निशिचरपतिहि चिह्नाई । मिलहु भरत भाषेहु रघुराई ॥
मिले भरत सुग्रीवहि धाई । वंदन कियो बहुरि शिरनाई ॥
कुशल पूछि कह करत विलापू । चारि बंधु हम पंचम आपू ॥
सत्य मित्रता आप निबाहीं । चारिहु बंधु उऋण हम नाहीं ॥
मित्र सोइ जो कृत उपकारा । शत्रु सोइ जो कृत अपकारा ॥

कह सुकंठ दृग वारि बहावत। रामकृपा यश को नहिं पावत॥
मिलत भरत लंकापति काहीं। करि वंदन अस कह्यो तहाँहीं॥
दोहा-राम सहाय करी भली, दै दै सुखद सलाह।
ज्येष्ठ बंधु हमरो समर, जीत्यो निशिचर नाह॥
कीन्ह्यो दुष्कर कर्म दोउ, कपिपति निशिचर नाथ।
तुम्हरी पुण्य प्रभावते, मिले मोहिं मम नाथ॥
उर लगाय पुनि अङ्गदै, भन्यो भरत अस वैन।
अहौ हमारे पुत्र सम, तुम सम जग को है न॥
ऋक्षराजको प्रणति करि, भरत मिल्यो बहु बार।
पिता सरिस मम वृद्ध वर, कियो महा उपकार॥

चौपाई।

द्विविद मयंद नील नल वीरा। गय गवाक्ष आरणदिक धीरा॥
मुख्य मुख्य कपि जे सब आये। मिले सबनसों भरत त्वराये॥
रामहि सरिस सबन कहँ माने। कहि मृदु वचन कपिनसन्माने॥
पूँछि कुशल सबसों कर जोरी। आशा पूरि भई अब मोरी॥
देखि राम सम भरत सुभाऊ। कपि माने मन महा उराऊ॥
कहनलगे सब आपुसमाहीं। भ्राता भूमि भरत सम नाहीं॥
पुनि कपीश निशिचरपति काहीं। राम चले कर गहि मुदमाहीं॥
गुरु वसिष्ठ कहँ दियो बताई। रविकुलगुरुविधिसुत मुनिराई॥
सुगल विभीषण औरहु कीशा। धरे वसिष्ठ चरणमहँ शीशा॥
आशिर्वाद दियो मुनिराई। चिरजीवहु संयुत रघुराई॥
तिहि औसर सुमंत तहँ आयो। देखत राम लषण शिरनायो॥
सुधि करि रघुपति भे वनवासी। ढारत अंबुक अंबु हुलासी॥
दोहा-राम लषण कहँ लपटिगो, त्यागे सुरति शरीर।
बहुत दिनन महँ मुहिं मिले, सीय लषण रघुवीर॥

चौपाई ।

पुनि सुधिकरिकियसचिवप्रणामा । पूछी कुशल बहुत विधिरामा ॥
अहो पिता सम सचिव हमारे । आये कुशल सुपुण्य तिहारे ॥
तिहि औसर कपि कटक अपारा । तजि विमान उतरचो इकबारा॥
इत कपिदल उत अवध निवासी । मिले सिंधु युग जनु सुखरासी ॥
तब सुमन्त बोल्यो करजोरी । सुनहु लाल विनती यह मोरी ॥
मातु सकल तुव दर्शन हेतू । आईं इतै मानि सुख सेतू ॥
आशुहि चलहु मिलहु रघुराई । दुसह विरह दुख देहु मिटाई ॥
राम भरत लछिमन रिपुशाला । लै जानकी संग तिहि काला ॥
निशिचरपति कपिपतिकरि आगे । मातु मिलन गवने अनुरागे ॥
आय गये जननी जिहि ठामा । कियो प्रथम कैकयी प्रणामा ॥
सकुचिविलखिपुलकिततनुमाता । उरलगाय लिय सुखनसमाता ॥
नयनानि बहति नीरकी धारा । गद्गद गर नहिं वचन उचारा ॥

दोहा—सूँघि शीश चूम्यो वदन, मणिगण अमित उतारि ।
भरत मातु बोली वचन, कछुक लाज उर धारि ॥
कामुँह लाय दिखाय मुख, कहौं लाल कछु बात ।
धर्मपाल युग युग जियो, तुम अस तुमहीं तात ॥

चौपाई ।

प्रभु कर जोरि कही अस वानी । सुनहु मातु हिय तजहु गलानी॥
मातु कृपावश जब रणमाहीं । मारे सकल निशाचर काहीं ॥
तब करि कृपा पिता तहँ आये । मोपर दीह दया दरशाये ॥
तुव अरु भरतहेतु तिहि काला । मैं मांग्यों वर जानि कृपाला ॥
दियो जु भरत मातु कहँ शापा । सो न करै दोहुन संतापा ॥
ताते दैव विवश जो भयऊ । सो परिताप सकल अब गयऊ॥
रहे प्रसन्न मातु सब काला । शोचविवश नहिं होय विहाला॥
दुख सुख होत भाग्यवश दोऊ । तासु प्रयोजक होइ न कोऊ ॥

मैं सुत तैं जननी सब भाँती । मुहिं निहारि करु शीतल छाती ॥
असकहिरघुकुलकुमुदनिशाकर । गहे चरण लछिमन जननी कर ॥
तहाँ सुमित्रा अति अतुराई । लियो लाल कहि गोद उठाई ॥
आँखिन बहति अंबुकी धारा । रह्यो न तनुमहँ तनक सम्हारा ॥

दोहा—शीश सूँघि जननी पुलकि, लीन्ह्यो हिये लगाय ।
विरहजन्य दुखसिंधु जनु, भई पार हरषाय ॥

चौपाई ।

अलक सँभारति चूमति आनन । अति सकुचत रघुकुल पंचानन ॥
त्रिशत साठि जे दशरथरानी । आईं सकल बहत दृग पानी ॥
पृथक पृथक प्रभु वंदन कीन्ह्यों । पृथक पृथक अंकहि सबलीन्ह्यों ॥
जानि पर्‍यो विभेद कछु नाहीं । न्यून अधिक मानत किहि काहीं ॥
पुनि प्रभु कौसल्या ढिग जाई । परे चरण निज नाम सुनाई ॥
जननी लियो अंक बैठाई । वत्स हिरान लह्यो जनु गाई ॥
फेरति पाणि पीठि महतारी । अलक सँभारति वदन निहारी ॥
जस कौसल्याहि भयो अनंदा । वरणि सकौं किमि मैं मतिमंदा ॥
शंभु स्वयंभु शारदा शेशू । वरणि सकैं न बिशेष अशेशू ॥
बोली वचन जननि मुद मोई । कहँ सुग्रीव विभीषण दोई ॥
उभय सखन कह राम बताये । दोऊ दौरि चरण शिरनाये ॥
प्रेमविवश रघुपति महतारी । हिय लगाय लिय दुहुन सुखारी ॥

दोहा—कह्यो वचन हे पुत्र दोउ, तुम रामहुँते प्यार ।
समरसिंधु तुव बल तरनि, चढि भो पार कुमार ॥

चौपाई ।

तुव बल पुण्यप्रभाव दराजू । देख्यो यह बालक कहँ आजू ॥
कौनहुँ जन्म उऋण हम नाहीं । तुम समान को प्रिय जगमाहीं ॥
तुम दोउ धर्म कुमार हमारे । जिन सहाय पुनि राम निहारे ॥
जननीवचन सुनत दोउ वीरा । बहत निरंतर नयनन नीरा ॥

बोले वचन धीर उर धारी । कस न कहै रघुपति महतारी ॥
उतरे तुव प्रताप रणसिंधू । सहजहि हन्यो शत्रु दशकंधू ॥
तुव समान तुव सुत रघुनायक । हैवो राम मातु तुहि लायक ॥
तिहिअवसर लछिमन अतुराई ।गिरचो कौसल्यापदमहँ आई ॥
लियो उठाय अंकमहँ माता । चूमति पुनि पुनि मुखजलजाता॥
लषण परे पुनि केकयचरणा । भरत मातु सुख जाय न वरणा॥
लषण बहुरि सब मातन वंदे । काटे मनहुँ विरह दुखफंदे ॥
सबके पाछे लषण ललामा । कियो जननि पदकंज प्रणामा ॥

दोहा–दे आशिष उर लाय पुनि, कह्यो सुमित्रा वैन।
निरखे पूत सपूत नहिं, लखी पतोहू नैन ॥

चौपाई ।

लषण कहाँ मिथिलेशकुमारी । देहु बताय विलंब विसारी ॥
तिहि अवसर सीता तहँ आई । लषण मातुपद गह्यो त्वराई ॥
लीन सुमित्रा अंक उठाई । चूमति वदन महा सुख पाई ॥
शीश सूँघि पुनि लेति बलाई । केकयसुता तुरत उठि धाई ॥
सिय हिय लाय अंक बैठाई । आँखिन आँसुन ओघ बहाई॥
हर्ष सकुचवश कढति न बाता । निरखति वदनशशी अवदाता॥
पुनि सिगरी दशरथकी रानी । आई सीतादरश लुभानी ॥
पृथकपृथकासियामिलि सब काहीं । कियो प्रणाम पराशि पदमाहीं॥
तिहि अवसर कौसल्या आई। गिरी जानकी चरणन जाई ॥
राममातु उर लियो लगाई । सो सुख कैसे वरणि बढाई ॥
सासु पतोह महासुख सानी । प्रेमविवश मुख कढति न वानी॥
पुनि पुनि सीय चरन लपटानी । सासु दशा किमिजाय बखानी ॥

दोहा–तहाँ सुमित्रा आयकै, सीतहि लियो उठाय ।
धरि धीरज बोली वचन, तुहि सम तुहीं दिखाय ।

चौपाई।

धन्य धन्य मिथिलेशकुमारी। दोउ कुल कहँ कीन्हीं उजियारी॥
भयो कृतारथ जन्म तुम्हारा। किय पुनीत रघुवंश हमारा॥
बोली कौसल्या महरानी। आजु सुखी भे रघुकुल प्रानी॥
जिहि हित लागि रहे तनु प्राना। समय दिखायो सो भगवाना॥
सियहि देखि मुहिं भा संदेहू। बहुत बुझायो मिटत न केहू॥
कमलकोषते कोमल चरना। सियकीन्ह्योंकिमिविपिनविचरना॥
अस कहि मीजाति सियपदकंजू। विरह जनितदुखकारि सब भंजू॥
बार बार फेराति शिर पानी। राई लोन उताराति रानी॥
मंगलवचन पढति अस गाई। जन्म नवीन सीय हम पाई॥
बृहद्वियोग सिंधु दुखदाई। पैरत थकी थाह जनु पाई॥
पुनि पुनि मुखचूमाति सब सासू। कहहिं कृशिततनु लहिवनवासू॥
भाग्य उदय अब भई हमारी। निरखी आजु विदेहकुमारी॥

दोहा–राममातु बोली वचन, लषणजनानि समुझाय।
नंदिग्रामको लै चलहु, सियहि विमान चढाय॥

चौपाई।

तिहि अवसर प्रभुदरशन आसी। वृन्द वृन्द सिगरे पुरवासी॥
आगे हमहिं लखब रघुराई। झुके कहत अस आश बढाई॥
जोरे सकल कमल कर नागर। देखि राम जग होब उजागर॥
कियो विचार राम मन माहीं। मिलौं एक बाराहि सब काहीं॥
अस कहि कियो अनन्तन रूपा। मिल्यो प्रजन कहँ कोसल भूपा॥
सब पुरजन ऐसहि मन माने। हमहिं मिले प्रभु अतिप्रिय जाने॥
जान्यो प्रभु चरित्र नहिं कोऊ। निकट रह्यो अरु दूरहु सोऊ॥
जय जयकार मच्यो यकबारा। जय रघुवंश भूमि भरतारा॥
तब उठि भरत सपुलकित गाता। बोल्यो मंजु वचन अवदाता॥

पहिरहु प्रभु पादुका सुहाई । जो लीन्ह्यों मम प्राण बचाई ॥
अस कहि प्रभु पदपंकजमाहीं । पहिरायो पादुका तहाँहीं ॥
तहाँ देव फूलन झरिलाये । बार बार दुंदुभी बजाये ॥

दोहा–जय कोसलपति प्रीतिरत, भरत सरिस कोउ नाहिं।
राम प्रेमको नियम करि, दीन्ह्यों नेह निबाहि ॥

चौपाई ।

शुनि करजोरि चरण शिरनाई । बोल्यो वचन प्रीतिरस छाई ॥
चित्रकूटमहँ मोहिं बुझाई । कह्यो नाथ करि कृपा महाई ॥
पितु प्रण पूरण करि जब ऐहौं । थाती राज्य आपनी लैहौं ॥
तब लगि शासहु तुम प्रिय भाई। देश कोश कछु बिगरि न जाई ॥
सो तुव शासन शिरधरि नाथा । लीन्ह्यों राज्यभार निज माथा ॥
नाथ अवध मोरे हित आये । मोहिं धन्य जगमाहिं बनाये ॥
पालेहुँ प्रजा शीश धरि शासन । प्रभु रजाय सुनिसहितहुलासन ॥
देश कोष बल प्रजा सुखारी । कीन्ह्यों दशगुण अधिक खरारी ॥
सो सब नाथ प्रताप प्रभाऊ । नहिं मम शक्ति न करहुँ दुराऊ॥
सो प्रभु लेहु राज्य कर भारा । एक मनोथर अहै हमारा ॥
होय नाथ राउर अभिषेका । पालहु प्रजा सदा सविवेका ॥
मैं अब करहुँ चरण सेवकाई । जामें सब विधि मोरि भलाई ॥

दोहा–शील सनेह सुभाउ बुधि, धर्म धीर सन्मान ।
निरखि भरतको कीशपति, लंकहुपति हरषान ॥

चौपाई ।

रुदन करनलागे सब कीशा । भरत योग्य भ्राता जगदीशा ॥
भरतवचन सुनिकै रघुराई । प्रेममगन हग वारि बहाई ॥
चूमत वदन अंक बैठाई । कह्यो वचन सब काहँ सुनाई ॥
जापर ईश प्रसन्न सदाई । तिहि जग मिलै भरतसम भाई ॥
राम भरत कर देखि सनेहू । भये सकलकपि पुलकित देहू ॥

भरत पाणि गहि रघुकुल राऊ । कह्यो वचन पुनि सरल सुभाऊ ॥
ऋक्ष कीश औरहु पुरवासी । आये जे मम दरशन आसी ॥
सिययुत मातु बंधु हम चारी । भरत लषण रिपुहनकी नारी ॥
चढै सकल मिलि पुहुपाविमाना । नंदिग्राम कहँ करहिं पयाना ॥
नंदिग्राम इक योजन होई । पुहुपप्रभाव लखैं सब कोई ॥
रामवचन सुनि अवधनिवासी । वानर भालु भये सुखरासी ॥
करि कोलाहल चढे विमाना । मिले परस्पर सुख न समाना ॥

दोहा–अंतः पुर अतिशय विमल, निर्मित रह्यो विमान ।
सीय सहित सब मातु तहँ, कीन्हीं मुदित पयान ॥

चौपाई ।

राजासनपर राम विराजे । सकलबंधु निज निज थल छाजे ॥
निशिचरपतिकपिपातिहनुमाना । अंगदादि वानर बलवाना ॥
सचिव सुमंतादिक प्रभु केरे । बैठे सब निज नाथहि घेरे ॥
वानर भालु और पुरवासी । मिलहिं परस्पर आनँदरासी ॥
दियो विमानहि राम रजाई । नंदिग्राम देवहु पहुँचाई ॥
प्रभु रजाय सो पाय विमाना । उड्यो गगन करि शोर महाना ॥
नन्दिग्राम क्षणहीमहँ आयो । सबके उर अचज अति छायो ॥
भरत कुटी जहँ रही सुहाई । रम्यो विमान भूमिमहँ आई ॥
रामसहित उतरे सब लोगू । दियो विमानहि नाथ नियोगू ॥
जाहु कुबेरसमीप विमाना । हम प्रसन्न तोपर विधि नाना ॥
जब स्मरण करौं तुहिं काहीं । आयो तुम मैं रहहुँ जहाहीं ॥
प्रभु वंदन करि तुरत विमाना । गयो धनद ढिग अतिहरषाना ॥

दोहा–तहँ वसिष्ठको पुत्र जो, नाम सुयज्ञ उदार ।
मिल्यो आय प्रभुको हरषि, बहति नयन जलधार ॥

चौपाई ।

पकरि चरण प्रभु कियो प्रणामा । बारबार मिलि लहि सुखधामा ॥

कनकासनमहँ तिहि बैठायो। आपहु सिंहासनमहँ भायो ॥
नाम सुयज्ञ वसिष्ठकुमारा। राम सखा वर बुद्धि उदारा ॥
पाणि पकरि पूँछी कुशलाई। बडो काम कीन्ह्यों रघुराई ॥
प्रभु कह सखा कृपावश तेरे। मैं मारे रिपु प्रबल घनेरे ॥
तहाँ भरत लक्ष्मण रिपुशाला। आये जिहि थल बैठ कृपाला ॥
लँकनाथ सुग्रीवहु दोऊ। आये हनुमदादि सब कोऊ ॥
प्रभुहि घेरि बैठो तिहि ठामा। तहँ कैकयीतनय महिधामा ॥
जोरि अंजली धरि निज शीशा। बोल्यो वचन सुनहु जगदीशा ॥
मम माता पितुसों हित मोरे। माँग्यो द्वै वर द्रोह न तोरे ॥
भरतराज रामहिं वनवासू। सुनि पितु भे हत जीवन आसू ॥
पर्‌यो धर्म संकट पितु काहीं। ताजि तनु राख्यो धर्महि काहीं ॥

दोहा—चित्रकूटमहँ मोहिं प्रभु, दियो राज्य कर भार।
पितु प्रण पाल्यो नाथ तुम, तज्यो न मोर दुलार ॥

चौपाई।

भयो जन्म धनि अस प्रभु पाई। बिसरायो ऐसिहु जड़ताई ॥
को जग मुहिं सम अधमस्वभाऊ। जिहि हित बसे विपिन रघुराऊ ॥
मैं निलज्ज पुनि सन्मुख आयो। नाथ दौरि मुहिं हिये लगायो ॥
तुम सम को दयालु रघुराई। मों सम कुटिल जन्यो नहिं भाई ॥
मै जान्यों प्रभु मुहिं अपनायो। मम अपराध सकल बिसरायो ॥
ताते कछु माँगहुँ रघुराई। दिहे नाथ सब विधि बनि जाई ॥
दीन्ह्यों मोहिं अवधको राजू। सो अब लेहु करहु कृत काजू ॥
वृषभ भार बालक नहिं लेई। यद्यपि होय सुमति जन सेई ॥
विन पषाण मृतिका अथोरे। फूट बंध तृण जुरै न जोरे ॥
बहे नखर वाजी कर भागा। चलै हंस गति कबहुँ न कागा ॥
तिमि तुम सम कैसे हम ह्वैहैं। तुव प्रभुता किहि विधि हम पैहैं ॥

दोहा–कहौं दूसरो हेतु प्रभु, हम सब प्रजा तुम्हार ।
सात द्वीप नव खंड लगि, होहु भूमि भरतार ॥

चौपाई ।

बोय कामतरु जो निज गेहू । भयो बढे तरु फल संदेहू ॥
सेय सींचि फल फूलन पायो । भयो वृथा श्रम जौन लगायो ॥
होति सोइ क्षति मातुन काहीं । राम प्रजा पाल्यो जो नाहीं ॥
ताते हम सब कोसलवासी । केवल यही लखनके आसी ॥
प्रगटि भानुसम भुवन प्रतापा । हरहु सकल दासन संतापा ॥
होय राम राउर अभिषेका । पालहु प्रजन सुधर्म विवेका ॥
तुव अभिषेक निरखि रघुनाथा । होब सकल हम प्रजा सनाथा ॥
सुर तरंग सारंग मृदंगा । बजत रहैं वसु याम अभंगा ॥
कांची नूपुर धुनि सुनि काना । जगहु नाथ नित होत विहाना ॥
तुव यश करत पुनीत दिशाना । करहिं मधुर गायकगण गाना ॥
सुनत सुयश सो बहु रघुराई । हम सब करहिं चरण सेवकाई ॥
जहँ लगि उदय अस्त रवि होई । जहँ लगि मानस भूधर जोई ॥

दोहा–तहँ लगि राम वसुन्धरा, नायक होहु नरेश ।
करहु मनोरथ पूर अब, चलै निदेश हमेश ॥

चौपाई ।

अस कहि भरत रहे कर जोरी । राखहु लाज नाथ अब मोरी ॥
भरत वचन सुनि दीनदयाला । प्रेम मग्न ह्वैगे तिहि काला ॥
गद्गद गर बोले रघुराई । अहै न भूमि भरत सम भाई ॥
भरत हेतु लागहिं जो प्राना । तो हम आपन अति हितमाना ॥
यथा भरत रुचि तैसहि करिहौं । नासा श्वास प्रयंत न टरिहौं ॥
वानर प्रजा सुनत प्रभु वैना । जय जयकार कियो भरि चैना ॥
तिहि अवसर कौसल्या आई । लषण मातु कैकयी लिवाई ॥

उठे कुमार जननि कहँ देखी। किये प्रणाति मुद मानि विशेखी ॥
कह्यो सुमंतहि रानि बुलाई। चारिहु सुवन देहु नहवाई ॥
भूषण वसन सकल पहिरावहु। अंगराग मृदु अंग लगावहु ॥
इनके विना नहाये सीता। नहिं नहाति निज धर्म पुनीता ॥
मातु निदेश सुमंत तुराई। कह्यो शत्रुशालहि समुझाई ॥

दोहा–शत्रुशाल सुनि सो सपदि, नापित परम सुजान।
बोल्यो विगत विलंब विन, क्षउर कर्म अभिधान ॥

चौपाई।

शीघ्रहस्त सुखहस्त सुखारी। केश विवर्धक भूषणधारी ॥
नापित निरखि राम अस गाये। नहिं नहाब निज भरत नहाये ॥
भरतहि अंक लियो अनुरागे। राम जटा निरवारण लागे ॥
भरत जटा निरवारि कृपाला। ऐंछि पोंछिमृदुअलक विशाला ॥
राम भरत निज कर नहवाये। भूषण वसन विविध पहिराये ॥
पुनि लक्ष्मणहि अंकमहँ लीन्हें। जटा विशोधन निज कर कीन्हें॥
तैसहि लषणहुँ कहँ नहवाये। दिव्य वसन भूषण पहिराये ॥
शत्रुशाल कहँ तिमि रघुराई। सादर लियो अंक बैठाई ॥
जटा शोध मज्जन करवाई। सुन्दर पट भूषण पहिराई ॥
अंगराग अंगनि लगवाई। बैठायो समीप सुख पाई ॥
मज्जित भरत कौसला देखी। सियसमीप गवनी सुख लेखी ॥
लषण जननि कयकेयी काहीं। कह्यो वचन अतिहुलसि तहांहीं॥

दोहा–मज्जन करवावहु सियहि, कबरी सुभग बनाय।
मैं सुग्रीव विभीषणहि, नहवाऊँ अब जाय ॥

चौपाई।

अस कहि गई जहां रह सीता। लषणमातु कैकयी पुनीता ॥
कह्यो दुहुँन कौसिला सुवानी। लियो बुलाय सकल नृपरानी ॥
मज्जन करवावहु सिय केरो। तनु मलीन लहि विपिन वसेरो ॥

घनमंडल राकाशशि जैसे । सीय वदन सोहत अब तैसे ॥
लषणमातु परिचरी बुलाई । सिय मज्जनहित कह्यो बुझाई ॥
लगीं सखी मज्जन करवावन । भरि घट पुरट सुरभिजलपावन ॥
धायो सलिल छोरि शिर वेनी । मनहुँ लसै अहिशावक श्रेनी ॥
धोय पोंछि वेणी रचि नीकी । जिहिलखिलगातिअवलिअलिफीकी॥
सुरभित सलिल सखी नहवाई । अतिसुन्दर सारी पहिराई ॥
अंगन अंगराग कर लेपा । भूषण पहिरायो संक्षेपा ॥
तहँ सिगरी दशरथकी रानी । रच्यो विविध भोजन हुलसानी ॥
इतै चतुर नापित सुख भीने । रघुपति जटा विशोधन कीने ॥

दोहा-जब मज्जन करिचुकत भे, रघुपति बन्धुसमेत ।
गुरु वसिष्ठ आवत भये, गवन करावन हेत ॥

चौपाई ।

कह्यो वचन गुरु सुनहु नरेशा । आजुसुभगादिनचलहुनिवेशा ॥
प्रभु तथास्तु कहि कियो प्रणामा । लै गुरु गये भरतके धामा ॥
सुगुरु सबन्धु समंत्रिन बैठे । मानहु मोद महोदधि पैठे ॥
उत कौसल्या अति अतुराई । गइ जहँ लंकापति कपिराई ॥
हनुमत अंगदादिकन आनी । तारा रुमा आदि कपिरानी ॥
सबहिं सविधि मज्जन करवाई । भूषण वसन सबन पहिराई ॥
जिमि सियपै किय प्रेमपसारा । मान्यो तथा रुमा अरु तारा ॥
राख्यो यथा राम वर प्रेमा । तैसे कपिन प्रेम कर नेमा ॥
तैसे पुनि लंकापति केरो ।निजसुत तिनको किय न निबेरो॥
कपिन सकल मज्जन करवाई । पट भूषण विचित्र पहिराई ॥
तहँ तारा अरु रुमा सयानी । करि प्रणाम बोलीं असवानी ॥
भये पूत तनु दरश तिहारे । सियदरशनकी आश हमारे ॥

दोहा-रामजननि निज संगमें, तारा रुमा लिवाय ।
आईं जनकसुता निकट, महामोद उर छाय ॥

चौपाई ।

एक संग भोजन करवाई । एक संग सुख सेज सुवाई ॥
लागे सकल सराहन वीरा । धन्य धन्य जननी रघुवीरा ॥
पुनि गुरुशासन लै रघुराई । भोजन करन गये लै भाई ॥
करि भोजन कीन्ह्यों विश्रामा । इतनेमें बीते युग यामा ॥
गुरुवसिष्ठ रिपुशाल बुलाई । बोले वचन मंजु मुसक्याई ॥
रघुनन्दन स्यन्दन अब आनहु । अवधनगर कर गवनहिं ठानहु ॥
कह्यो शत्रुहन सचिव बुलाई । ल्यावहु रथ सुंदर सजवाई ॥
शासन दियो सुमंत तुरंता । सजी सैन्य गज वाजि अनंता ॥
हल्ला पर्‍यो नगरमहँ जाई । आवत अवध आज रघुराई ॥
पुरजन सजे सकल सब भाँती । भई नारि नर शीतल छाती ॥
इतै राम रिपु शाल बुलाई । दीन्ह्यों हर्ष निदेश सुनाई ॥
आनहु सजे नाग नव लाखा । चढैं कीश सब अस अभिलाखा ॥

दोहा–शत्रुशाल कर जोरि कह, सजे खडे सब द्वार ।
चलहु नाथ महलन मुदित, करि सनाथ परिवार ॥
उठे राम गहि भरत कर, पर्‍यो निशानन घाउ ।
नौबत लागीं झरन बहु, भो न उराउ अघाउ ॥

चौपाई ।

भे सवार स्यन्दन रघुनन्दन । फहरि रहे पताक बहुवृंदन ॥
वाजिन बाग भरत कर लीनो । रिपुहन छत्र लियो मुद भीनो ॥
लषण चमर चालत सुखछाई । द्वितिय चमर लिय निशिचरराई ॥
रथ ध्वज लिये खडो हनुमाना । कियो राम इमि अवध पयाना ॥
तहँ महर्षि देवर्षि अपारे । देव मरुतगण गगन सिधारे ॥
प्रस्तुति करहिं वर्षि बहु फूला । बाज बजावहिं मधुर अतूला ॥
महा माधुरी ध्वनि दिशि छाई । पुरजन खडे लेन अगुवाई ॥

शत्रुंजय गज राम मँगाये। जिहि लखि मंदिर मेरु लजाये॥
करन हेतु सुग्रीव सवारी। पठयो रघुकुलकमल तमारी॥
तापर भो सुग्रीव सवारा। महा मनोहर मनुज अकारा॥
जे नवलाख मतंगज आये। कनक साज सब भाँति सजाये॥
चढे भालु कपि मनुज स्वरूपा। पहिरि विभूषण वसन अनूपा॥
दोहा–बजे शंख डफ दुंदुभी, जय जय परी पुकार।
चहुँ कित भर भर नरनिकर, हरवर किय संचार॥

चौपाई।

दुहुँ दिशि पंथ प्रजा कर यूहा। नारि बाल युव वृद्ध समूहा॥
खडे राम दरशनके आशी। तिहि दिन भयो भुवन सुखराशी॥
चल्यो कटक अति चटक अपारा। मनहुँ सिंधु तजि दियो करारा॥
सैन्य अग्र भे सुतर सवारा। पुनि वाजी असवार अपारा॥
तिनके पाछे पैदर वृंदा। धरे शस्त्र कर भरे अनंदा॥
पुनि परिकर चामीकर चारू। धरे दण्ड पहिरे उर हारू॥
छरी वेत्र झरझर कर धारे। फरक फरक मुख कहत सिधारे॥
चामीकर स्यंदन छबि छाजा। तापर अतिराजत रघुराजा॥
मनहुँ उदयगिरि उदय तमारी। प्रजाजलज लखि भये सुखारी॥
तिहि अवसर बोले प्रभु वानी। मारग चलहु मंद गति ठानी॥
चली मंदगति सैन्य अपारा। लखहिं मनुज अवधेशकुमारा॥
दोहा–कोउ प्रणाम पुरजन करैं, कोउ पुनि करहिं जुहार।
करहिं पुलकि कोउ दण्डवत, कोउ पुनि करहिं दुलार॥

चौपाई।

कृपादृष्टि चितवहिं रघुराई। देहिं मोदरस सब कहँ छाई॥
प्रभु पाछे नवलाख मतंगा। वानर भालु चढे यक संगा॥
राज राजसुत साचिव अनेकू। चले पंथ जिन यथा विवेकू॥

चढि सतांग मातंग तुरंगा । चले वीर सब भरे उमंगा ॥
तिनके पीछे अति सुख सानी । लै सीता गवनी सब रानी ॥
रत्न जालकी नवल नालकी । चढीं रानि सब अवध पालकी॥
कौसिल्है सीतै करि आगे । चलीं अवध मंदिर अनुरागे ॥
सहसन संग सहचरी भावैं । महा मनोहर सोहर गावैं ॥
विप्र वेदध्वनि मंगल करहीं । लिहे शकुन कर आनँद भरहीं॥
दैविक भौतिक शकुन सुहाये । कहत मनहुँ रघुपति घर आये॥
प्रकृति विप्र मंत्री पुरवासी । चले चहूँकित आँनदरासी ॥
चितवहिं प्रभु मुखठोरहिं ठोरा । यथा चन्द्रमाहि चितव चकोरा ॥

दोहा–आगे बजत अनंत तहँ, तुरही अरु करनाल ।
डिगत न तालविधानमें, गावत मधुर विशाल ॥

चौपाई ।

पढत स्वस्ति द्विज मङ्गल हेतू । मंगल द्रव्य लिये कर सेतू ॥
अक्षत सुवरण कन्या गाई । मोदक लिहे पाणि सुखदाई ॥
विप्र अनेकन रघुपति आगे । चलेजात अतिशय अनुरागे॥
करत जात प्रभु यही बखाना । सखा न जग सुग्रीव समाना ॥
कहौं सत्य नहिं करौं दुराऊ ।लख्यों न हनुमत सरिस प्रभाऊ॥
जिहिविधि कियो कर्मरण कीशा । सो अबलों नहिं सुन्यों नदीशा॥
सुनि सुनि सचिव औरपुरवासी ।गुणिअचरजअतिहोत हुलासी॥
समर कीश निशिचर कर जैसो ।भयो कहत प्रभु विधियुततैसो॥
निजदल कीशनकी अधिकाई । जिमि निशिचदलकी बहुताई॥
वर्णि कहत जब निज रणक्रीडा ।तब उपजति प्रभुके उर व्रीडा॥
लषण समरबल प्रभु जब कहहीं। सुनि सौमित्र अधोमुख रहहीं॥
यहि विधि वर्णत कथा सुखारी। मन्द मन्द गवनत धनुधारी ॥

दोहा–सुनत भरत हर्षाय अति, पुनि पछिताय लजाय ।
शशिनाय प्रभु पाँय परि, चितवत आँसु बहाय ॥

कवित्त ।

मंद मंद चलत गयंदनके बृन्द बृन्द, तरल तुरंग रंग रंगके सुहाये हैं । घर्घरत चक्र रथ भर्भरत पौरजन, खर्खरत शस्त्रगण शत्रु भीति भाये हैं ॥ देवताविमाननमें दशहू दिशाननमें, रामचन्द्र आननचकोर टक लाये हैं । राजनसमाज सँगराजराज रघुराज, अवध दराज दरवाजेलो सिधाये हैं ॥

छंद गीतिका ।

गति भी बजावत दुंदुभी सुर सुमनवृन्दन वर्षहीं ।
नाचहिं सुनाक नटी नवल यशविमलगावत हर्षहीं ॥
चहुँ ओर ठौरहि ठौर माच्यो जयति शोर अथोर हैं ।
चित चौरनृप शिरमौर निजयशभुवनकीन अजोर हैं ॥
अस कहहिं सुर पुर जन अगन सज्जन उरन सुखभूरिभो ।
रघुवंश हंस प्रशंस करि दिलते दुसह दुख दूरि भो ॥
निरखत नगरशोभा अमितलोभासुचित लखि सुरनको ।
माच्यो अखंडल मोद मंगल नगर मंडल नरनको ॥
जिहि भाँति बाजत व्योमबाजन नर्चीं जिमि सुरसुन्दरी ।
तिमि नगरतियं गावहिं सुनाचहिं करत कनक मुंदरी ॥
ऊँची अटा घन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं ।
कर लाज लीन्हें कुसुमवृन्दन राममुखशशि जोहहीं ॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं ।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं ॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके पर्सहीं ।

बहु विधि किताके नाक नाके तुंग ताके दर्सहीं ॥
धृत धनुष कंध सुदीनबन्धु सबन्धु आवत देखिकै ।
वर्षहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखिकै ॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकहिं झूमि झडाकदै ।
केती कुलीन सुकामिनी खोलहि कपाट कडाकदै ॥
तिहिसमयकोसुखअवधको को कहि सकतानिरअवधको ।
दशचारि वर्ष बिताय रघुपति दरश भो मुद उदधिको ।
दृग बहाति आँसुन धार प्रजन अपार बारहिं बारहीं ॥
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुवीर निमिष निवारहीं ।
दधि दूब तंदुल थार भरि भरि द्वार द्वार प्रजा खडे ॥
रघुवंशमणि कहँ बार बार उतारि मणिगण मुद मढे ।
बहु आरतीन उतारतीं तरुणी सु तन मन वारतीं ॥
जय वचन वदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं ।
यहि भाति प्रभु सुख देत बंधुसमेत जनक निकेतमें ॥
आये अनंदित देव वंदित अस्त गिरि रवि लेतमें ।
पितु महल द्वारे रोंकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझायकै ।
लै जाहु तीनहु मातु अंतहपुरहि विनय सुनायकै ॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारिकै ।
कपिराजको तुम कर पकरि लेजाहु प्रेम पसारिकै ।
मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं ॥
घर सैन्य आसन माणिन दीप प्रकाश करहिं अतूलहीं ।
वैदुर्य्यमणिमय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रवालके ॥
जहँ बने युत विस्तार वर प्राकार रत्नन जालके ।
जिहिं बीच बनी अशोक नामा वाटिका सुविहारकी ॥
मंदार द्रुम अरु पारि जातहुँ ऋतुन षट संचारकी ।

तिहि महल माहिं निवास देहु कपीशको यहि कालमें ॥
सब भाँति संचै करहु संच बिसंच वारि उतालमें ।
सुनि राम शासन भरत आशु हुलास भरि कपिराजको ॥
करपकरि लायो कनक भवन निवास दिय सुख शाहको ।
सरयू विपिनमहँ और वानर वसत भे सुख पायकै ॥
अनुराग नेह दिखाय बोले भरत सुगल बुलायकै ।
रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीरको ।
दीजे मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुवीरको ॥
अस कहि पुरट घट जटितरत्नन चारुचटकमँगायकै ।
दीन्ह्यौं कपिन कर भरत जिहिं जसअनुहरत अतुरायकै ॥

दोहा–दिय सुकण्ठ शासन तुरत, हरबर होतप्रभात ।
आनहु चारि समुद्रजल, वीर वेग विख्यात ॥

छन्द गीतिका ।

यक कुम्भ लीन्ह्यों राज ऋक्ष सुर्वणको सुवरन बनो ।
दूसर लियो घट पुरटको कपि वेगिदरशी बल घनो ॥
तीसर लियो कपि ऋषभकनक सुकलश रत्न प्रभाभरो ।
चौथो विमल घट हाटकी मारुतसुवन निज कर करो ॥
तब कह्यो केकयसुवन सुनहु सुकुण्ठ प्यारे मम सखा ॥
शत पञ्चसरिता सलिल देहु मँगाय नहिं भाषहु मृषा ॥
सुनि भरत वैन सचैन कपिपति पंचशत कपिभटनको ॥
दीन्ह्यों तुरत शासन हरषि लै चले पुरटन घटनको ॥
तहँ गवै और सुषेण आदिक वीर अतिअतुरातहीं ।
शतपंच सरिता सलिल ल्याये नेक नभ अरुणातहीं ॥
हनुमान आदिक चारि वीर सुनीर चारि समुद्रको ।

ल्याये निशा बीतत हरषि करि हरष सुर अज रुद्रको ॥
प्रभु सकल बन्धुन सहित दशरथ महल कीन निवास है।
तहँ गुरु वसिष्ठहु आय बोल्यो वचन बलित हुलास है ॥
सिय सहित कीजे नेम यहि निशि कालिह तुव अभिषेकहै।
विधि सकल जानी रावरेकी यथा जौन विवेक है ॥
प्रभु नाय गुरुपद शीश पंकज पाणे जोरे हँसि कह्यो।
अवलम्ब आप प्रतापको कछु और मेरे नहिं रह्यो ॥
गवने निवेसहि दै निदेशहि गुरु जबै हिय हरषिकै।
सब सहित सिय रघुनाथ निवसे नेम युत मुद बरषिकै ॥
तिहि रैन माच्यो चैन पुरजन शैन ऐन किये नहीं।
बोलत परस्पर बैन निरख बनै न प्रभु अभिषेकहीं ॥
जिमि हन्यो रावण कुम्भकर्णहि जिमि हत्यो रिपु दुंदुभी।
थल थल प्रजा यह सुयश गावत कर बजावत दुंदुभी ॥
विधिसों मनावत आजु आवत अबहिं रवि प्राची दिशा।
तौ जन्म भरि हम पूजते सुख गावते तेरी किसा ॥
नर नारि देव मनावहीं रघुनाथ तिलकहिं होतमें।
कीजै विघनको निधन सब मिलि हिये हर्ष उदोतमें ॥
जननी करहिं रनिवासमहँ सुविलास हास हुलासको।
वर बास बास सुवास वासित रचहिं भूषण बासको ॥
विज्ञाप्ति करहिं सवर्ग भर्गहि अग्र दिशि संसर्गको।
निशिके विसर्गहि गर्ग भार्गव किय तिलक उत्सर्गको ॥
असको भुवन जिहि रामतिलकहि लखनकी अभिलाषना।
प्रभु दास होन उपासनाकी कौन जाके आश ना ॥
खरभर मच्यो कोसलनगर सब डगर डगरहुँ बगरमें ॥
मणि जगर मगर प्रकाश सुरभित अगर माधि अरु कगरमें।

पुरजन सकल प्रभु नजरहित भूषण वसन साजन लगे ॥
बाकी निशा पूछहिं पहरुवन क्षणहिं क्षण प्रेमहिं पगे।
रिपुहन भरत सुग्रीव निशिचर नाथ एकहिं साथमें।
प्रभु निकट बैठे कहत गाथहिं प्रेम पगि रघुनाथमें ॥
जब रही बाकी याम निशि तब सचिव सब यक संगहीं।
रिपुशालसों कीन्हें विनय रघुराज तिलक उमंगहीं ॥
मज्जन करावहु नाथको सज्जन सकल बुलवायकै।
गुरुको बुलावहु आशु इत उत जाय पद शिर नायकै।
रिपुशाल सुनि मंत्रिन बचन चालि कह्यो जाय वासिष्ठको ॥
पग धारि तहँ सब साज साजहु करहु कारज इष्टको।
गुरु सुनत अति अतुराय मज्जन कीन सरयू जायकै ॥
आयो द्रुतहि पुनि राजमंदिर सकल सचिव लिवायकै।

सोरठा–मंदर मेरु समान, लजत हिमाचल जाहि लखि।
सोई भवन प्रधान, रामराज अभिषेकहित ॥
कोटिन भानुप्रकाश, सिंहासन बहु मणिमयो।
गुरु मँगाय सहुलास, धरवायो उत्तर मुखै ॥

कवित्त।

पूरी चौक मोतिनसों मंडित मणीन मंजु, राचि राचि वरण विचित्र रतनावली। विविध किताके फहरात हैं पताके मनौं, शरद घटाके मध्य राजतीं बकावली ॥ तोरन तडपदार झालरैं झुकीं अपार, राजैं वार बार मानौ थिर ताडितावली। राम रघुराज अभिषेककी सजी है साज, गाय उठे वंदीजन वेद विरुदावली ॥ चारि दंड बाकी निशी जानिकै भरत भूरि, भद्र भोर होत जेठ भ्राता भौन आयो है। कोमल कमल कर कमल चरण चापि,

उमँगिअनंद मंद मंदहीं जगायो है॥ भाष्यो रघुराज रघुकुलशिरताज सुनौ, आजु अभिषेक साज सकल सजायो है। मज्जन करीजै दान दीजै सब सज्जनको, छज्जनमें थोर थोर भानुभास छायो है॥ जानिकै प्रभात प्रभु मीजि जलजातनैन, उठे अँगिरात अलकावली सँभारचो है। आरत लषण रिपुदमन अनिलसुत, सुगल विभीषण प्रणामको उचारचो है॥ रघुराज आशिष दै कीन्हें प्रातकर्म सब, मज्जनकै नाथ रंगमंदिर पधारचो है। वंदि कुलदेव कारि सेव बोलि भूमिदेव, देनलागे दान भेव मनते बिसारचोहै॥ गजनगरट्ट दैकै वाजिनके ठट्ट दैकै, ग्राम धाम दैकै विप्र वृन्द सतकारे हैं। अन्नके अचल दैकै अविचल वृत्तिकैकै, दिये हमा चलते हिमाचलते भारे हैं॥ देखि रामदान मूँद्यो गिरिकी गिरिशमाया, मूँद्यो मघवाहू मेरु मेघन कतारे हैं। कोशलेश कीरति प्रकाशके करत रजताचलसुमेरु दुति दुगिनी पसारेहैं॥

दोहा–को वरणै रघुवंशमणि, दीन्ह्यों जेतो दान।
भूमंडलके द्विजनको, दारिद देखि डरान॥
सोरठा–उदयमान जब भानु, भे प्रसन्न प्राची दिशा।
बाजे अमित निशान, मच्यो नगर खरभर महा॥

चौपाई।

रामराज अभिषेक अनन्दा। सुनि सुनि आये नागरवृन्दा॥
नचहिं अंगना अंगन केती। प्रमुदित रामराज हित हेती॥
गायक गावहिं गुणगणगीता। होय सुयश सुनि भुवन पुनीता॥
नचहिं अप्सरा अनुपमरूपा। खडे देन बलि अगणित भूपा॥
खेर भेर माचिरह्यो अवधपुर। मंगल पढत अनेकन भूसुर॥
गुरु वासिष्ठ तिहि अवसर आये। मुनिन वृन्द सानन्द सुहाये॥
बोलि लषण बोले अस वानी। आनहु जनकसुता छबिखानी॥

सीतहि ल्याये तुरत लिवाई । रही तहाँ चहुँकित छबिछाई ॥
सीता रामहिं संग लिनाई । चले मुनीश स्वस्त्ययन गाई ॥
तीनिहुँ बन्धु संग अति सोहैं । होत लोकपति लखत लजोहैं ॥
कपिपति निशिचरपति दोउ राजैं । अंगद हनुमत सहित समाजैं ॥
देश देशके भूपति भारी । कियो सफल दृग राम निहारी ॥
करहिं दरश कहि जय रघुराजा । पावहिं प्रजा प्रमोद दराजा ॥

दोहा—राजतिलक रघुराज कर, होत आज छबि छाज ।
राज काज करि करहिंगे, प्रमुदित प्रजासमाज ॥

चौपाई ।

बजत मनोहर नोहर बाजे । जिन सुनि गमन सघन घन लाजे ॥
कलशावली मातु पठवाइ । सुन्दर सखी साजि सब आई ॥
भरि सब शकुन सुकञ्चनथारा । गावत मंगल बारहिं बारा ॥
आगे चलीं शृङ्गार सँवारे । प्रतीहार तिहि समय पुकारे ॥
निज निज थल बैठहिं सबभूपा । लै बलिनिज कर निज अनुरूपा ॥
होत तिलक रघुकुलमणि केरो । विरह निशा गइ भयो सबेरो ॥
निज निज थल बैठे सब राजा । खड़ी अवधपुर प्रजासमाजा ॥
तिहि अवसर रघुनन्दन आये । तिलक भवन अंगन छबि छाये ॥
जननी अटन झरोखन बैठीं । पेखि प्रमोद पयोनिध पैठीं ॥
रघुपति राजतिलक अनुरागीं । अगणित मणिन लुटावन लागीं ॥
बन्दी बिरुदावली उचारे । नभते कुसुम देवगण झारे ॥
भूमि गगन माच्यो जयकारा । रह्यो न तनुको तनक सम्हारा ॥

सोरठा—मुनि वासिष्ठ तेहि काल, कह्यो वचन हँसि रामसों ।
सिंहासन छबि जाल, बैठहु सीता सहित अब ॥

कवित्त ।

पद्मराग मर्कत मणीन्द्र नीलमणि केरी, विविध किताकी लता

लसैं चहुँ ओर हैं। सूर्य्यमणि चन्द्रमणि चिंतामणि चारु राजैं, औरहूं अमोल लागे तरन करोर हैं॥ कोटि भानु भास भायो रतनसिंहासनको, सुर नर मुनिनके मानस भे भोर हैं। गुरु अनुशासनते बैठिगे सिंहासनमें, जानकीसमेत रघुवंश शिरमौर हैं। राम वामभाग महाभाग मिथिलेशजूकी, राजति कुमारी जापै रति बलिहारी है। आभि नव विमल तमालके समीप मानो, सोनजुही बल्लरी प्रफुल्लित निहारी है। श्यामघनानिकट विराजै मनो राकाचंद्र, नीलमणि वाम हेम लीकसी निकारी है॥ सहित शृँगार ढिग वपुष शृङ्गार मानौ, राजे रघुराज रतिरूपको समारी है॥ ठाढो दिशि दाहिने लषण लीन्हें चारु चौंर, दूजो चौंर चालै वाम ठाढो शत्रुशाल है। छत्र छपानाथसों विराजित भरत कर, आतपत्र लीन्हें खडो कीशकुलपाल है॥ सिंहध्वज हेमदंड फहरैं पताक तुंग, ठाढो लै निशाचरेश विक्रम विशाल है। रघुराज राजराजवदन विलोकै खडो, लीन्हें छरी जोरे कर आगे वायुलाल है॥ पानदान लैकै ठाढो ऋक्षराज ओजवान, पीकदान लीन्हें त्यों निषादराज भायो है। नील नल द्विविद मयंद आदि कीश केते, सोंटे कर धारे महामोदरस छायो है॥ अंगद मुकुर लीन्हें थार लै सुमंत ठाढो, तैसहीं नरेन्द्रनको वृन्द छबि छायो है। एक ओर ठाढो पुरवासिनको मंडल, अखंड रु उदंड रघुराजयश गायो है॥

दोहा—आयो समय सुहावनो, देव दुंदुभी दीन।
गुरु वसिष्ठ सब मुनिनको, बोले परम प्रवीन॥

चौपाई।

सुनहु विनय कश्यप जाबाली। कात्ययन गौतम तपशाली॥
वामदेव आदिक ऋषिराई। राजतिलक वेला अब आई॥
करहु रामअभिषेक सुहावन। लेहु बनाय जन्म निज पावन॥

अस कहि लियो कमंडलु हाथा । लाग्यो पढन वेद मुद गाथा ॥
लग्यो करन रघुपति अभिषेका। वेदमंत्र पढि सहित विवेका ॥
वामदेव आदिक ऋषिराई । करनलगे अभिषेक तहाँई ॥
रही वेदध्वनि चहुँकित छाई । जय जय प्रजा करहिं सुखपाई॥
किय अभिषेक प्रथम गुरु ज्ञानी ।पुनिसबमुनिविधिवतमतिखानी॥
जिमि वसुकिय वासवअभिषेका। ।तिमि सब मुनिरघुपतिसविवेका॥
पुनि ऋत्विज अभिषेकहि कीन्हें । पुनि आभिषेक विप्र कारि दीन्हें॥
आई सुनि द्विजसुता कुमारी । किय अभिषेक सुगंधित वारी॥
मंत्री वर्ग सकल पुनि आये । करि अभिषेक महा सुख पाये॥

दोहा–सकल सुभट सामंत पुनि, कियो राम आभिषेक ।
वेदप्रमाण विधानते, भयो न कछुं व्यतिरेक ॥

चौपाई ।

तिहि अवसर आये सुर नाना । लगे गगनमहँ ठट्ट विमाना ॥
लोकपालयुत सब मुखचारी । लीन्ह्यों देवसमाज हँकारी ॥
आयो सभामध्य करतारा । सहित युगल अश्विनीकुमारा ॥
लीन्हें कनकथार करमाहीं । दिव्य किरीट धरयो तिहि पाहीं॥
कोटिभानु सम भास प्रकाशी । जटितादिव्यमणिगणछबि राशी॥
मनुअभिषेक भयो जिहि काला । रच्यो विरंचि किरीट विशाला ॥
सो किरीट प्रभुकहँ पहिरायो । बार बार चरणन शिर नायो ॥
लग्यो करन प्रस्तुति मुखचारी । बार बार हग ढारत वारी ॥
जय करुणाकर जय रघुनन्दन । सुरकुलसुखदायक मुनिचन्दन ॥
जय कमलासुख पंकज षटपद । त्वहते दीनोद्धर इति कोविद ॥
जय जय निशिचरवंशविनाशिन । परब्रह्म पराविभव विकाशिन ॥
जय करुणा वरुणालय रूपा । जय जय केशव कौसल भूपा ॥

दोहा–तव पदपंकजमिष्टदं, ये ध्यायंति परेश ।
तेषामिह भवसागरे, न भयं भवति रमेश ॥
तिहि अवसर कैलासपति, आये सभा मँझार ।
प्रभु प्रणाम करि पुलकि तनु, कीन्हें वचन उचार ॥

रूप घनाक्षरी ।

जय जय जय राम रमाप्रेष्ठ विश्वधार, सर्वगत सर्वपर सर्वनुत सुरपते । प्रथितप्रताप पूर्णरूप निगमागमज्ञ, धरणिभारहारक महोत्तम महामते ॥ रघुराज राजराज भूपतिसमाजवंध, मुनिजन मोद करापहृत स्वजनक्षते । पाहि रघुवंशकुलकमलदिनेश देव, देव शोकदावानलमेघ महतां गते ॥

दोहा–लोकपाल चारिउ तहाँ, जोरे देवसमाज ।
जोरि पाणि प्रस्तुति करत, कहि जय जय रघुराज ॥

छन्द गीतिका ।

जय राम राघव रामचन्द्र रमेश रघुवर वर हरे ।
रघुवंशभूषण रहितदूषण निहतदूषण नरहरे ॥
जय जय मुरारे रावणारे राघवेन्द्र दयानिधे ।
माधव मुकुंद महेशवंदित मधुविनाशन भानिधे ॥
संसार पारावारतारक विश्वधारक भूपते ।
आत्मप्रकाश निरस्तमायाभास सपदि सतांतते ॥
कलिकालविलुलितधर्मकर्मकुशीलकल्मषकारिणाम् ।
उद्धारकारणमिह जगति चरणांबुजं संसारिणाम् ॥
दशकंठकृतभयभारहारक सदुपकारक धर्मिणाम् ॥
सौजन्यमार्दवगुणबलित सहाय्यकर दिवि चारिणाम् ॥
जगदंबिकाश्रित वामभाग जनाघदाह विभावसो ।
रघुराज तव पदपंकजं बंदामहेऽखिलजगत सो ॥

दोहा—याहिविधि करि प्रस्तुति अमर, सहित सबै करतार ।
प्रभुपद वंदन करि सुखी, निज निज गये अगार ॥
तब देवर्षि महर्षिगण, प्रस्तुति किये बखानि ।
जय जगजीव जगतको, जान जानकी जानि ॥

छन्द नाराच ।

नमोच्युताय राघवाय रावणान्तकारिणे ।
विदेहकन्यका प्रियाय राजधर्मधारिणे ॥
श्रुतेः समुद्धराय मीनरूपिणेऽब्धिचारिणे ।
पयोधिमन्थनाय कूर्म्मरूपभृ-द्धिहारिणे ॥
नृसिंहरूपिणे प्रधान दैत्यवर्य्यदारिणे ।
धरोद्धरादि शूकराय हेम-हक्प्रहारिणे ॥
बलिच्छलाय वामनाय दैत्यराज्यहारिणे ।
निकृन्तदुष्टराजवंशसन्महो-पकारिणे ॥
रघूद्वहप्रभो विकुण्ठतोऽवतीर्य्य भूतले ।
निहत्य देवतारि-घून्विराजतोऽद्य कोशले ॥
ऋते भवन्तमद्यकोऽविता-सुरार्तिहारकः ।
दिगन्तकीर्तिकारको दशास्य दर्प्पदारकः ॥
नमामि कोशलाधिराज जानकीवरप्रभो ।
प्रसीद लक्ष्मणाग्रज प्रपन्नवृन्दको विभो ॥
अजश्शिवः सुराधिपः सुराश्च ते पदानुगाः ।
कृपाकटाक्षपालिता भवाविता द्विजांश्च गाः ॥

दोहा—यहि विधि करि प्रस्तुति जबै, सुरमुनिगे निजधाम ।
वासव प्रेरित वायु तब, आयो जहँ श्रीराम ॥

छन्द रोला ।

बेन कनकंके कमल प्रकाशित महा मनोहर माला ।
चन्द्रसूर्यमणि जटित रत्नबहु लख्यो न कोउ किहुँकाला॥
सो पहिरायो रघुनन्दनको चरणकमल शिर नायो ।
सानन्दन करि विनय प्रभंजन प्रस्तुति अमल सुनायो ॥
चिन्तामणिको हार दियो पुनि जनकलली पद वंदी ।
करि प्रणाम अभिरामपद गवन्यो अनिल अनंदी ॥
तिहि दिनको सुख कहो कौन विधि सकै न शेष बखानी ।
ताहूपै पुनि अवधनिवासिन जिन प्रभु मानत प्रानी ॥
बैठे अगणित भूप सभामहँ पृथक पृथकते आई ।
हय गय भूषण वसन रत्न गण दिये नजरि शिर नाई ॥
यथायोग्य सबको कीन्हें प्रभु सकल भाँति सत्कारा ।
पुनि पुरजन मंत्रीजन सिगरे दीन्हें नजरि अपारा ॥
नचहिं अप्सरा भाव बतावहिं चमकिचमकिचपलासी ।
करहिं गान गंधर्व सर्व तहँ क्षण क्षण दरशन आसी ॥
रामराज अभिषेक होत महँ अति प्रसन्न है धरनी ।
उपजायो सब अन्न अधिक अति भूरिभद्रभलभरनी ॥
फूले फरे वृक्ष गृह कानन काल अकाल पिसारी ।
रहीं छाय सुरभी चहुँओरन ठोरन ठोरन भारी ॥
दिशा प्रसन्न सन्न जग कंटक बहति सुमंद बयारी ।
भयो विमलजल सरित सरन सँबखगमृगभये सुखारी ॥
रहित उपाधि रोग अरु दोषहुँ भूमि भई रमणीया ।
काम क्रोध मद लोभ मोहवश कोउ न क्रियाकरनीया ॥
रह्यो दंड इक जातिन हाथमें रागतालमहँ भेदू ।
कुटिलाई केशनमहँ देखी श्रम शास्त्रन अरु वेदू ॥

रोष दोष परलोभ धर्म पर काम नारि निजमाहीं।
वैर पाप तजि ओर ठौर कहु रामराजमहँ नाहीं॥
आश एक प्रभुपद सेवनमहँ रह्यो पशुनमहँ मोहू।
मत्सर राग विभवमहँ रहिगो कुत्सित वस्तु न कोहू॥
रह्यो द्विरदगण महँ मदमंदित शारिलमें हठताई।
आतुरता तुरंगवन्दनमहँ गगन शून्यता छाई॥
जडताई रत्नमहँ देखी गर्व गुणनको बाढो।
बहत एक सारिताजल निरमल शोच समरको गाढो॥
जबते राजतिलक रघुपतिको अवधनगरमहँ भयऊ।
पितु आगे नहिं मर्यो कतहुँ सुत कहुँकर धर्मन गयऊ॥
रामराम मंगलमय वसुधा याग योग जग जागा।
बडभागा जनकृत अनुरागा वर्णहिं माहँ विभागा
तिहि अवसर कर जोरि सुमन्त महामतिवन्त बखान्यो।
दान द्रव्य हाजिर हुजूरमहँ देहु नाथ मन मान्यो॥
तब प्रसन्न ह्वै अतिहिं सचिवपर दान देन प्रभु लागे।
जनित अभाग भिक्षुकनके भवदारिद दूरहि भागे॥
रत्नसाज साजित तुरंग नव लाखन दियो तुरंता।
दियो अनेकन अर्बुद सुरभी सविधि सवत्स अनंता॥
दियो अनंतन वृषभ कनक मढि विप्रन पात्र विचारी।
तीस अर्व सुबरणकी मुद्रा पाये भूमि भिखारी॥
रत्न अदूषण भूषण अगणित पूषणसरिस प्रकाशी।
दियो द्विजन कहँ रघुकुलभूषण रण खरदूषण नाशी॥
मत्त मतंग उतंग डीलके सुवरण साजि समारे।
महा मौल्य अम्बर दिगंबरन दैदै बहु सतकारे॥

दोहा–रघुकुलकमल दिनेशकी, बही दान की धार ।
दारिद्रिनके दारिदन, कियो सिंधुके पार ॥

सवैया ।

शशि सूर मणीनकी माल मनोहर, सूरज ज्योतिसी भास करे ।
तिहुँ लोकमें मोल है तासु नहीं, सुरवृन्द विलोकत शंक भरे ।
पहिराय दियो कपिरायको सो, रघुराज सहर्ष उठाय करे ॥
मणिमालसों मंडित कीश भयो, कनकाचलमें चपला ज्यौं थिरे ॥

दोहा–पुनि अमोल अङ्गद युगल, अङ्गदको प्रभु दीन ।
लगीं अनेकन चन्द्रमणि, होत न कबहुँ मलीन ॥
उभय भुजन अंगद पहिरि, राज्यो वालिकुमार ।
मेरु उभय दिशि रवि शशी, यथा पर्व भिनुसार ॥

चौपाई ।

पुनि जो प्रभुहिं पवन दिय हारा । लगी महामणि सुछबि अपारा ॥
तेज तरंग उठै चहुँ ओरा । लै कर हार भूप शिर मोरा ॥
जनकसुतै दीन्ह्यों पहिराई । शशिकरसरिस रही छबिछाई ॥
सिय इक सखी तुरन्त बुलाई । अति उत्तम पट युगल मँगाई ॥
पवनकुमारहिं निकट बुलाई । अपने कर दीन्ह्यों पहिराई ॥
पुनि भूषण बहु विधि पहिरायो । हनूमान चरणन शिरनायो ॥
दियो जौन प्रभु उत्तम हारा । सिय उतारि गलते विन वारा ॥
लै कर हार विलोकन लागी । देहुँ काहि को पिय अनुरागी ॥
जानि जानकी रुख रघुराई । बोले वचन मन्द मुसक्याई ॥
जापर होहु प्रसन्न पियारी । दीजै हार विलम्ब विसारी ॥
तेज बुद्धि यश धीर बडाई । समरथता नय चातुरताई ॥
विनय बडाई विक्रम वारो । सो तुव कर पावै यह हारो ॥

दोहा–सिय पिय वाणी सुनतही, सब गुण सहित विचारि।
हनूमानके कंठमें, दियो हार सो धारि॥
पहिरि हार सोह्यो सभा, पवनकुमार अपार।
चन्द्रकिरणि सितघनसहित, जैसो पुरट पहार॥
दन्त दाबि यक हारमणि, फोर्‍यो पवनकुमार।
तब विस्मित ह्वै लंकपति, कीन्ह्यों वचन उचार॥
यदपि पवनसुत बुद्धिवर, विक्रम तेज अपार।
कपि नहिं जानत रत्नगति, फोरत कौन विचार॥
हनूमान बोल्यो वचन, मैं फोर्‍यों यहि हेत।
रामनामअंकित मणिन, देखन हित कुलकेत॥
साभिमान कह लंकपति, मणि अन्तर नहिं नाम।
तनु अन्तर कहँ नाम है, अस जानहु बलधाम॥

कवित्त।

सुनत विभीषणके वैन वायुसूनु बोल्यो, रामनाम अंकित न राखे तनु कौन काम। भाषि साभिमान निज वज्र नख नोकनसों, चीर्‍यो चित्त चायके चटक तनुहींको चाम॥ रघुराज जानकी लषण बहु वार्‍यो ताहि, हाय हाय ह्वै रह्यो सभामें अरु धाम धाम। चीरतहीं चाम चाम अन्तर चितै परे, चितेरके लिखेसे वर्ण सीताराम सीताराम॥

दोहा–लीन्ह्यो हिये लगाय उठि, आसनते रघुवीर।
सुत समीरको पीर बिन, सुन्दर भयो शरीर॥

छंद चौबोला।

यहि विधि राजतिलक रघुवरको भयो अवधपुरमाहीं।
तिहि दिनते सतयुग अस लाग्यो प्राणी सुखित सदाहीं॥

नित नित मंगल मोद महोत्सव देश देशमहँ भयऊ।
तीनिहुँ ताप विगत पुरजन सब स्वप्नेहुँ शोक न छयऊ॥
पृथक पृथक वानरन सयूथन प्रभु कीन्ह्यों सत्कारा।
नित नित नव नव भोजन पान सुभूषण वसन अपारा॥
द्विविद मयंद नील नल आदिक कपियूथपन अनेका।
भूषण वसन दिये प्रभु सादर जिहिं जस रह्यो विवेका॥
कछुक कालमहँ प्रभु कपि नायक निशिचरनायक आन्यो।
शील सकोच सनेह मित्रता संयुत वचन बखान्यो॥
अस अभिलाष होति मोरे मन कछु दिन कहँ दोउ मीतू।
किष्किन्धा लंका कहँ गवनौ संयुत सैन अभीतू॥
पालि प्रजा सुहृदनको सुख दै फेरि अवध कहँ आवहु।
सदा वसहु मोरे समीपमहँ नित नित सुख उपजावहु॥
कपिपति लंकापति तब बोले प्रभुशासन शिरमाहीं।
सहि न जात तुव विरह क्षणहुँ भर कछु अपनो वश नाहीं॥
तब प्रभु ह्वै प्रसन्न बोले पुनि शपथ मोरि सब काहीं।
निज निज नगर जाहु कछु दिनको पुनि आइयो इहाँहीं॥
कबहु हमार तुम्हार विछोह न जानहु सत्य सदाहीं।
अस कहि बहु समुझाय दुहुँनको बोल्यो भरत तहाँहीं॥
लक्ष लक्ष गज दश दश लक्षहु वाजी कनकसँवारे।
अयुत अयुत रथ अभरण अंबर आनहु आशुहिं प्यारे॥
भरत कह्यो हाजिर हुजूरमहँ जो मन भावै देहू।
हम नहिं उऋण जन्मभरि इनसों दोउ निबाह्यो नेहू॥
अस कहि सकल साज मँगवायो प्रभु दोहुँन कहँ दीन्ह्यों।
चले नाथ पहुँचावन दोहुँन भ्रातन संगहि लीन्ह्यों॥

दुर्गद्वारलों जाय भुवनपति मिले दुहुँन बहु बारा ।
शिथिल अंग भे प्रेमविवश प्रभु ढारत आँसुन धारा ॥
तहँ सुग्रीव विभिषण प्रभुके गये चरण लपटाई ।
पुनि उठि जोरि पाणि बोले दोउ आँखिन अंबु बहाई ॥
तजहु नाथ जानि सुरति हमारी जानि दुहुँन लघु दासा ।
बहुरि आय पद लखब आशुहीं तुव पदनिकट सुपासा ॥
पृथक पृथक प्रभु मिले कपिन सब लघुबडभेद न मान्यो ।
भूषण वसन कनक भाजन दै सब समान सन्मान्यो ॥
भरत लषण रिपुसूदनसों पुनि मिले सकल बहु बारे ।
राम कमलपद रेणु धारि शिर निज निज भवन सिधारे ॥
पवनसुवन कह कह्यो राम तब निंवसहु निकट हमारे ।
तिहि अवसर लंकापति प्रभुसों ऐसे वचन उचारे ॥
देहु नाथ कछु चिह्न आपनो जाते मोर उधारा ।
प्रभु कह जो चाहौ सो लीजे हमरे जौन तुम्हारा ॥
कह्यो विभिषण रंगनाथको दीजै दीनदयाला ।
मैं पूजन करिहौं निशि वासर तिहरो रूप विशाला ॥
प्रभु कह यदपि हमारे कुलधन रंगनाथ भगवाना ।
तदपि सखा कछु नहिं अदेय तुहिं लै गमनहु मतिवाना ॥
रघुकुलको धनपाय विभिषण प्रभुपदपंकज वन्दी ।
चल्यो लंककहँ धन्यजन्मगुणि बारहिं बार अनंदी ॥
द्राविड देश विभीषण पहुँच्यो कावेरीके तीरा ।
गरुआने तब रंगनाथ प्रभु सके न लै चलिवीरा ॥

दोहा—कियो विभीषण प्रार्थना, कह्यो रंग भगवान ।
यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंकन करब पयान ॥

तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु हमार।
भुक्ति मुक्ति फल पायहौ, छूटी तव संसार॥
एवमस्तु कहि लंकपति, कीन्ह्यों लंक पयान।
अबलों आवत रंगपुर, पूजन अन्तर्धान॥
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिं न तजहु कृपाल।
गयो वालि मुहिं घालि प्रभु, तुम्हरे गोदहिं हाल॥
लीन्ह्यों अंक उठाय प्रभु, अंगदको तिहि काल।
अभय हस्त मस्तक धरयो, बोले वचन रसाल॥
मोहिं प्राणप्रिय तुम सदा, जाहु भवन यहि काल।
आशुहि आवहु अवध कहँ, वीर वालिके लाल॥
करि प्रणाम अंगद चल्यो, मिल्यो पवनसुत आय।
बार बार दोऊ मिले, कह अंगद बिलखाय॥
विनय करहुँ कर जोरिकै, बारहिं बार निहोर।
कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर॥
यहि विधि करि सब कपिनकी, बिदाभानुकुलभान।
आय सभा बैठत भये, रघुपति कृपानिधान॥

छन्द रोला।

नित नवमंगल वसुन्धरामें प्रजा सरस सरसावैं।
सप्त द्वीप नव खंड धरामें शासन राम चलावैं॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवैं नित नव आनँद पावैं।
प्रभु कहँ अति भावैं प्राति जावैं संपूरण धन धावैं॥
पूरण मनकामैं ह्वै पुनि जावैं प्रभु छबि चित्त छकावैं।
पुनिर शिर नावैं जन बालि जावैं धानि निज भाग्यगनावैं॥
तिहुँ पुर अभिरामै जनश्रीरामै लखत जन्म फल पावैं॥

विरचित अर्थ धर्म अरु कामै मनहि दुचित नहिं ल्यावें ॥
एक समय प्रभु गये अरामैं जहँ षट ऋतु नित भावें ।
लषण भरत रिपुहन तिहि ठामैं आय कियो परनामैं ॥
लषण अंक बैठाय ललामैं बोले नाथ सभामैं ।
लषण लाल युवराज कहावैं यह हमरे मनशामैं ॥
मम शासन सब भरत सुनावैं रिपुहन चमू चलामैं ।
मैं बसिहैं अन्तहपुर धामैं वर अशोक वनिकामैं ॥
लषण जोरि कर बोल्यो रामै प्रभु यह देहु न कामैं ।
पद सेवन करिहौं वसुयामैं अति अभिरुचि मम यामैं॥
तब लागे भरतहि दुलरावैं अपनी शपथ धरावैं ।
ह्वै युवराज करहु यह कामैं किहि तुम सम हम पावें ॥
पालहु प्रजा करहु जस आवें तुम लायक वसुधामें ।
भरत मानि शासन श्रीरामै कीन्ह्यो चरण प्रणामैं ॥
सौंपे हु लषणहिं सैन्य सुदामै रिपुहनको धन धामैं ।
आप गये अशोकवनिकामें सियसहित अभिरामैं ॥
कोटिन सखी कला दिखरावैं राग अनेकन गावैं ।
नाचहिं अरु बहु भाव बतावैं बाजन मधुर बजावैं ॥
भरत लषण रिपुसूदन धावैं कारज सकल चलावैं ।
धनहुँ धरा अरु धर्म बढावैं प्रजा शोक नहिं पावैं ॥
पितु देखत सुत मृत्यु न पावै विधवा होइ न बामैं ।
कौनहु वस्तु न चोर चुरावै बली न निबल सतामैं ॥
कोउ नहिं पावक भवन लगावै पवन जोर नहिं आवै ।
माँगे धन बरसैं वसुधामें नहिं अकाल कर नामें ॥
अगणित आमय देह न आवैं जन आयुष बल पावैं ।

वेद शास्त्र सब पढैं पढावैं धर्म अनेक सिखावैं ॥
क्षुधाविवश नहिं कोउ दुख पावैं याग करन मन लावैं ।
वर्णाश्रमको धर्म चलावैं द्रोह कोह बिसरावैं ॥
भजहि रामपदकमल अकामैं प्रभु त्रयताप नशावैं ।
अवधप्रजाके धामन धामैं कबहुँ न दुख समुहावैं ॥
अश्वमेध कहुँ यज्ञ ललामैं पुंडरीक कहुँ भावैं ।
राजसूय कहुँ यज्ञ सुहावैं सकल महर्षि करावैं ॥
करहिं और प्रभु यज्ञ अकामै प्रजन सुधर्म सिखावैं ।
दीननके दारिद टरि जामैं विप्र दक्षिणा पावैं ॥
प्रभु आजानुबाहु अभिरामैं मन्द करैं दुति कामैं ।
यननसों सरसिज लजि जामैं वचन सुधा बरसावैं ॥
अवधपुरी अस कोउ न दिखावै जिहिं न प्राणप्रियरामैं ।
रामहेतु बहु देव मनावैं आशु तासु फल पावैं ॥
साँझ समैं प्रभु नित कढि आवैं प्रजन सुछबि दरशावैं ।
हास विलास अनेक मचावैं भाइन सखन बुलावैं ॥
प्रभु मातनको सुख उपजावैं बालकला दिखरामैं ।
श्रीरघुराज हर्ष अति पावैं आवै देवसभामैं ॥

दोहा–राजराज रघुवंशमणि, राजत सहित समाज ।
पालक त्रिभुवन भवन बासि, छावत सुयश दराज ॥

चौपाई ।

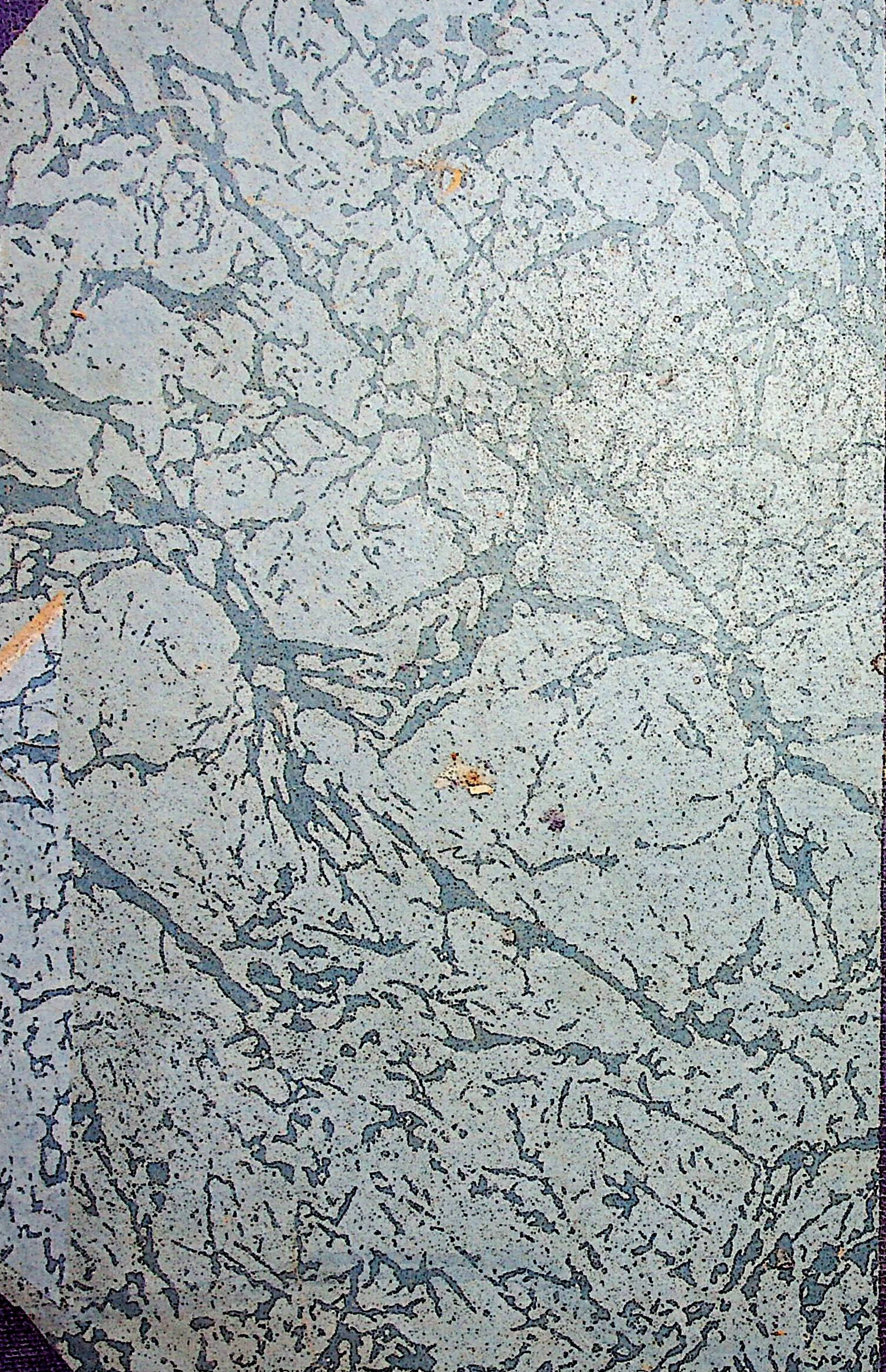क समय रघुवंशसमाजा । सहित सभा रघुराज विराजा ॥
अगस्त्य आदिक मुनिआये । प्रभु उठि भाइनयुत शिरनाये ॥
उ शीश जल चरण पखारी । सादर पूंछ्यो कुशल खरारी ॥
पुलकित तनु वदत न वाणी । ढारत नयन प्रमोदित पाणी ॥